

# मङ्गलकोष की भूमिका ॥

१०. वन्दि प्रथम परमात्मा कारण करता ज्ञेय । ग्रन्थकारके अर्थमार्थि के कृतग्रह सोय ॥ २ ॥  
 ११. सिध्दशाना गुणगण विमल सुमनि बद्रावनहार । करता हरता पालका तामुचरण आधार ॥ २ ॥  
 १२. युक्तज्ञाना वाणी विशद सुमनि समृद्धि सदाहि । करिप्रणामनेन मनवचन करी घोषचितचाहि ॥ ३ ॥  
 १३. ईशासन. विदु मुनि गयन धरा फरवरीमास । संवनविक्रमदीप चपनभमहितपसविलास ॥ ४ ॥  
 १४. आनंद महल सद्दमन पनेपुर चट्टशाल । कोपरच्योललिग्रन्थचंद्रशमनशब्दजनाल ॥ ५ ॥

जानना चाहिये कि यह आधीन मतिमन्द मङ्गलीलाल का  
 यस्थ श्रीवास्तव सरहीग्राम जिलअ शाहजहाँपुर का निवासी  
 १५ मई सन् १८५४ ई० संरिस्तहतालीम में कि २३ वर्षके अनु-  
 मान हुये नौकर है और अब मुख्य पाठक अर्थात् अफसर मुद-  
 रिस मदर्सह पैतेपुर प्रदेश सीतापुर का है कुछकालसे हिन्दीभाषा  
 के कोष के खोज में यत्न करताथा और बहुधा कोष फ़ारसीभाषा  
 आदि मिलित दृष्टिआये जिनसे कुछ प्रयोजन हिन्दीभाषा के  
 विद्यार्थियों का नहीं निकलसक्ता कोई ग्रन्थ हिन्दीभाषा का  
 ऐसा दृष्टिगोचर न हुआ जिसकी सहायता से हिन्दी भाषानु-  
 रागी विद्यार्थी रामायण आदि ग्रन्थों में संस्कृत भाषादि शब्दों  
 का अर्थ शिक्षककी कृपा विना विचार करलेते, यद्यपि बहुतेरे ग्रन्थ  
 नाममाला आदि भाषापद्य में पायेगये तथापि वे सब निरनुप्रास  
 अर्थात् बेरदीफ़ हैं उनमें भी शब्दार्थ शीघ्रता से नहीं मिलता है  
 जबतक समस्त पुस्तक सुखाग्र न हो, इसलिये आधीन ने निम्न  
 लिखित पुस्तकों और बहुत अन्य भाषाग्रन्थों के शब्द जो देखे  
 और स्मृत थे इकट्ठा करना प्रारम्भकिया कि जिसमें सामान्य भाषा  
 विद्यार्थियों को लाभ हो और जब बहुत से शब्द सार्थ इकट्ठा

होगये तब श्रीमन्निखिलसुखसंमान विराजमान विमल धार्मिकानेकसुरसमाज' समाप्त सामन्तोपहारीकृत कनकमय गजाश्व शब्दायित द्वारदेश प्रोइण्ड प्रचण्डाखण्ड विपन्नवल प्रोद्धटभट्टसमूहसंकर्तन निर्द्वयातिशय तीक्ष्णधार सहायीकृत खड्ग दिग्विजयी विनोदानन्दित महाभूताधिप शिव श्रीयुत कालिन् ब्रौनिंग साहव एम, ए. अवधदेशीय पाठशालाध्यक्ष वीरेशकी आज्ञानुकूल वर्णमाला के अक्षरानुहारि निज शिष्य सीताराम और हरदेववर्खा की सहायता पाकर सानुप्रास करके मंगलकोप नाम रख-रक्त साहव वीरेश साहसी की प्रतिष्ठित प्रति में निवेदन किया, तब साहव सुजान गुणखानने दृष्टिगोचरकर आज्ञादी कि यह पुस्तक और अधिक कीजवे और सहायता के निमित्त हिन्दीकोप कृपा क्रिया और एक ग्रन्थ तसलीसुल्लुगात द्वितीयभाग जिसमें भाषा शब्दोंकी फ़ारसीभाषा लिखी है हस्तामलक हुआ फिर सन् १८७२ ईसवी में यह कोप और अधिक किया गया परन्तु इसी अवसर में उक्त पाठशालाध्यक्ष वीरेश की नागपुर प्रदेश यात्रा से ग्रन्थकार के मनोरथ हृदय के हृदयमेंही रहगये थे कि दैवयोग से हम लोगों के आनन्ददायी स्वस्ति श्रीमदुद्दाम गुणगणग्राम विस्फुरत्कमल मुख भरत विशदीकृतानेक संगीत प्रकारास्मदीय विद्याप्रचाराग्रणीय गुणिजनजगीयमान यशोदानन्दकन्दकर्म पराक्रम श्रवण रसास्वादानन्दार्थि मनोभिलपित विविध पदार्थ दानसंसक्त मानस श्रीयुत जान सी, न्यस्फ्रील्ड साहव एम. ए. पूर्वोक्त, नागपुरगामी के स्थानपर अवधदेशीय पाठशालाओं के डैरेक्टर पब्लिक इन्स्ट्रक्शन् वीरेश नियत होय ब्रह्मलोक से सुशोभित हुये और ग्रन्थ को कृपाकटाक्ष से अवलोकन करतेही आधीन के

परिश्रमसफल करनेके हेतु सकलकलाध्यक्ष मुन्शी नवलकिशोर वर्मा के मुद्रालय में सीसाक्षरों से मुद्रित होने के लिये आज्ञादी अब यह ग्रन्थ अतिसावधानता से छपकर श्रीमहाशय की अनुमति से तय्यार हुआ इस कारण सम्पूर्ण विद्वानों की उत्तम सेवा में निवेदन है कि जिस शब्दकी लिपि वा अर्थ आदि में रूचक विभेद वा अशुद्धता पावे उसको कृपादृष्टि से शुद्ध करलेवें मेरी मूर्खतापर ध्यान न देवें क्योंकि इस अज्ञानमूर्तिने पूर्वोक्त साहब वीरेश पराक्रमी की अभिज्ञता देख अपनी मूर्खता विदित की ॥

### यथा सोरवा ॥

साहब पाय प्रवीन सब जनायत विज्ञता । पानी कर्मोपीन सब पायत गसा मह ॥ १ ॥  
जाकर गुणगण चक्र लखि भागत भवमुदता । यथास्ति शक्तिराम नहि आवत निरदही ॥ २ ॥

### दोहा ॥

अतिप्रवीण गाहक चतुर भिनप्रति ररन समोद । श्रीउत्तरविज्ञानमय सुयरा छया चहँकोद ॥ ३ ॥

### सवैया छन्द ॥

वीरनि सोहत देश विदेश प्रसिद्ध महागुण ज्ञान बड़ाई ।  
साहब कालि मौनिगर्भा रवि देखिगर्द ज्विरेनि पठाई ॥  
मृदस्तगामि अबुभ निशाकरमद रहे मर ठाम छिपाई ।  
ज्ञान गुणादि मरोन प्रफुलित वस सरोजर दैत दिवाई ॥ ४ ॥

### दोहा ॥

विद्यमान वीरनि विमल कनि पण्डित मनुहारि । धर्याद भाषत सबे आदरदानि विचारि ॥ ५ ॥  
सुनि अभिज्ञता स्वामिनी चितउच्छाद \*अज्ञान । रच्योकोपभगलसुनि निजभलललिसमान ॥ ६ ॥  
धीरालिन्मौनिग जू गमन गजपुरहि वीर । कोष छपनर्वा आसतव मनसार्म तमिर्दान ॥ ७ ॥  
अथ रचत जो धम किहौ जायहु भा बेनाम । देवयोग मे तुरही सजी तासु पुनि सान ॥ ८ ॥  
करुणालय ताही समय विद्याचय सुयराशि । नैसफान्टसाहब यहा आये सुयराप्रवाशि ॥ ९ ॥  
मे डेरैवदर अवर ये विद्याकेरि प्रचारि । पानवीचननु उरिसा सबवहँ लीन उवारि ॥ १० ॥  
सुयगाहव धनदायकहि रिके मे निज कोरा । जायदिलायरनिजप्रमुहि तामुजरवचरिपेश ॥ ११ ॥

तासु, स्वर्गो शाश्वती असा साहस दीन । यन्त्रितसा अथयह भया जाम निर्मित कीन ॥ १२ ॥  
 निजस्वामी सो विनय यह करत असे मनसा । वराह प्रण यहि काज की देसादा वदिनाइ ॥ १३ ॥  
 काज परिधम मे बहूत करत ताहि निमण्ण । सहस्रेषाम्त्रोपिकप्रियक यहर्हाध्याप्रमाय ॥ १४ ॥  
 गुपी यावहे अम अत्रिक वतु अविहे भूल । देवधराय दुइन का कविहे ह्यय न गन ॥ १५ ॥

### ग्रन्थनामानि ।

- |                                     |                               |
|-------------------------------------|-------------------------------|
| ( १ ) श्रीरामायण भाषा तुलसादासकृत ॥ | ( २ ) रामचन्द्रका केसवदसकृत ॥ |
| ( ३ ) मनविद्यासु मूनवामोदासकृत ॥    | ( ४ ) नाममाला तदसकृत ॥        |
| ( ५ ) अनकार्य नददासकृत ।            | ( ६ ) वसुसता चदनकविकृत ॥      |
| ( ७ ) ससरानिका विहारीमालकृत ॥       | ( ८ ) वैशम्पयण मदनमिहकृत ॥    |
| ( ९ ) अथ मप्रवाश सुन्दरकृत ॥        | ( १० ) हिदीकान पादगुणमकृत ।   |
| ( ११ ) अथ भाषा बहुम य ॥             |                               |

### चिह्न ॥

नाम आलग=ना० पु० । नाम स्त्रीलिंग=ना० स्त्री० । गुणवाचक=गु० । सकर्मक क्रिया=स० क्रि० ।  
 अकर्मक क्रिया=अ० क्रि० । अत्रय=अत्रय० । सर्वनाम=सर्व० ॥

प्रका हावे कि वतुन सा शब्द अत्रवालत इस मा में अनश्रगय० उन्फ उगाहरण अन्वकावदि सरकृत  
 और भाषा मभा में सा दिये है और जहा २ जावन हाव वद २ कविलाग और उगाहरण ददने ॥

अस पुस्तक से विद्यानुरागिणी का बहुत लाभ हुआ अर उन्की म्णामहृता से अन्वकावदि हाई  
 अन्वकावदि पंचवारा धरना है अशा है इसका गुणमाहक अर्थात्कार करें ॥

अ० अश्व० देवनागरी वर्षमाला का प्रथम अक्षर जिस शब्द व प्रथम में इसका सम्बन्ध होता है उसका अर्थ उलटा होता है यथा अकारण अर्थात् कारणरहित अ० स्त्रादि शब्द के पहिले जब अने तब अर् होजाता है यथा आन्त अर्थात् अन्तत ।

अंकवार० ना० स्त्री० गोदी, कौला ।  
 अंगरखा० ना० पु० पहिरने का व्यवहार ।  
 अंगिया० ना० स्त्री० चोली, वस्त्रविशेष ।  
 अंगीठी० ना० स्त्री० पाव, जिसमें आग रखते हैं ।  
 अंगूठी० ना० स्त्री० जो आभूषण अंगुली में पहिन्ते हैं ।

अगोछा० ना० पु० देह पाजोका वस्त्र, रुमाल ।  
 अत० ना० पु० अत, समाप्ति, पूरा ।  
 अंतर० अ० व० अंतर, परक ।  
 अंतर्गति० ना० स्त्री० भीतरी चाल ।  
 अंतरिक्ष० } ना० पु० अंतर ।  
 अंतरीक्ष० } ऊपर की जगह ।  
 अंतर्दामी० गु० अन्तर्दामी, जो दिलमें रहे यह शब्द ईश्वरके लिये है ।

अन्तर्धान० गु० अन्तर्धान, छिपना, गुप्तहोना ।  
 अंतपट्ट० ना० पु० भीतर का वस्त्र ।  
 अंधाकुंवा० } ना० पु० कुंवा, जो कुंवाआदि  
 अंधकूप० } से भरगया है ।

अन्धेर० ना० पु० अंधाप, उपद्रव ।  
 अन्धकार० गु० अंधेरा ।  
 अम्ब० ना० पु० आम ।  
 अम्बर० ना० पु० आकाश, काका ।  
 अंबारी० ना० स्त्री० हीदा जो हाथीपर रखते हैं ।  
 अशु० ना० पु० भाग, हिस्म दर्जो जो ईश्वर की सेवा है ।

अशी० गु० भागी अर्थात् हिस्मेदार ।  
 अशु० ना० पु० किरण ।  
 अशुमती० ना० स्त्री० शालग्रमी ।  
 अशुमान्० ना० पु० धर्म, धर्मवती राजा नि० ।

अशुमाली० ना० पु० सूर्य, चन्द्रमा ।  
 अस्त० ना० पु० कथा ।  
 अऊत० ना० पु० निर्वैशी, विन व्यादा ।  
 अनृण० गु० उदार, बेचार ।  
 अरुच्छु० गु० गमा, मेहरा, बस्त्ररहित ।  
 अकरटक० गु० वेतक, बेधक ।

अकथ० } गु० जो कहनेके योग्य न हो  
 अकथनीय० } जो वर्षानरहित होवे ।  
 अकथ्य० }

अकनि० अ० वि० सुनिके, रामायणे यथा ( तुल्य नचावहिं वृंर वर अकनि मुदगे िशाग ) ।  
 अकम्पन० गु० तल्लतविशेष, कम्पन ।  
 अकर्कश० गु० कामल, गरम ।

अकर्म० ना० पु० अपराध, दुकर्म ।  
 अकर्मक० गु० कर्मरहित धातु ना० क्रिया अर्थात् जो कर्त्ता की शक्ति में होवे ।  
 अकर्मण्य० गु० निष्कर्मा, बेकार ।

अकलंक० } गु० निर्दोष, बेदाग ।  
 अकलंकित० }

अकल्याण० गु० कल्याणरहित, अमंगल ।  
 अकघार० ना० स्त्री० अकवार ।  
 अकम्० ना० स्त्री० बर, यदावत ।  
 अकस्मात्० अ० अचानक, निमित्तहीन ।  
 अकाज० ना० पु० कामका विनाश, खराबी ।  
 अकाम० ना० पु० व्यर्थ, निष्फल, कामहीन ।  
 अकारण० ना० पु० निमित्तहीन, बेमनस्ये बेसन ।

अकारय० गु० व्यर्थ, निष्फल ।  
 अकारान्त० गु० जिसशब्दके अन्तमें अकार होवे ।  
 अकाल० ना० पु० दुर्मिद, कुसमय, बढत ।  
 अकालफल० ना० पु० कुसमयके फल, बे मीठिम की वस्तु, दुर्मिद की वस्तु का फल ।  
 अकालमृत्यु० ना० पु० कुसमय में मरना, धरते में मरना, बे मीठ मरना ।

अकाश० ना० पु० आकाश, प्रकाशात् ।  
 अकिञ्चन० गु० बगल, कद पाम नहीं, केवल  
 भगवान् भरोसे ।  
 अक्रिय० गु० बुद्ध नहाकरता, करनके योग्य न होने ।  
 अकुण्ठ० गु० तीक्ष्ण, तेज, विनाशरहित ।  
 अकुताना० अ० क्रि० उचना, घबडाना ।  
 अकुताही० गु० उचै, घबरावै ।  
 अकुल० गु० कद जानि नहीं, नीचपेराना, ना०  
 पु० विशेष ईश्वर ।  
 अकुत्ताना० अ० क्रि० व्याकुल होना, घबडाना ।  
 अकुलीन० } गु० धारर, कुलहीन, नीच ।  
 अकुलीना० }  
 अकेल० } गु० दुःखी, एकही ।  
 अकेली० }  
 अकुर० ना० पु० श्रीकृष्ण के द्रवी के स्वरुप,  
 गु० निराका अत वरण कौमल हो ।  
 अखण्ड० गु० समस्त, सम्पूर्ण, खण्डहीन ।  
 अखर्ष० गु० समस्त, बहुत ।  
 अखल० गु० अखिल, ना० पु० देवता, सर ।  
 अखाडा० } ना० पु० जहा मल्लयुद्ध होता है,  
 अखारा० } अनाई ।  
 अखिल० गु० समस्त, सम्पूर्ण, विन्दुल ।  
 अखेट० ना० स्त्री० मृगया, शिकार ।  
 अख्यवट } ना० पु० अल्पवृक्ष ।  
 अख्यवृक्ष }  
 अख्याति० ना० स्त्री० अपयश, अयश, बदनामी ।  
 अग० ना० पु० पर्वत, अगम्य, जहा जा न सके ।  
 अगम० } गु० जहा जाय न सक, जो बूझने के  
 अगम्य० } योग्य नहीं ।  
 अगर० ना० पु० मुगधप्रसिद्ध ।  
 अगस्त० ना० पु० वृत्तविशेष ।  
 अगस्ति० } ना० पु० मुनिविशेष जि होने समुद्र  
 अगस्त्य० } की मुला दिया था ।  
 अगणित० गु० बहुत, जो गिना न जावे, बेहिमाव ।

अगवान्नी० ना० स्त्री० आने जाकर लेना,  
 पेशाई ।  
 अगहन० ना० पु० नक्षत्रे महीना का नाम ।  
 अगाऊ० अ० पदिले से, आगे ।  
 अगाध० गु० अथाह, अत्यंत गम्भीर ।  
 अगार० ना० पु० घर, आगे ।  
 अगास० ना० पु० अपराज, दोष, नाममात्राया,  
 अथ अगास हेतन अहित औगुण जो बहुत पीय ।  
 अगुवा० ना० पु० मार्ग दिखानेवाला, सदेरी,  
 आगे चलनेहारा, प्रधान, चौधरी ।  
 अगुण० गु० अवगुण, गुणहीन, ना० पु० ईश्वर ।  
 अगुरु० ना० पु० मिसका उरु नहीं, नीच, हस्त ।  
 अगुई० गु० सुगम, जो गद नहीं ।  
 अगुहगन्धा० ना० स्त्री० हिंग ।  
 अगोचर० गु० अदृश्य, अलक्ष्य, अज्ञेय ।  
 अगोटन० } म० क्रि० चीकीनेवा, रस्ताना ।  
 अगारना० }  
 अगौनी० ना० स्त्री० अगवानी ।  
 अग्नि० ना० पु० अग्नि, अगुवा ।  
 अग्निका० ना० स्त्री० कलिहारी ।  
 अग्निजिह्वा० ना० पु० देवता ।  
 अग्निपाली० ना० स्त्री० चीता, कृती ।  
 अग्निमन्य० ना० पु० अरुणी ।  
 अग्निमुखी० } ना० पु० भिलवा वृक्ष ।  
 अग्निचक्रक० }  
 अग्निचन्द्रम० ना० पु० रात, रात ।  
 अग्निशिखा० ना० स्त्री० केसर, जाकरा ।  
 अग्निस्फुकार० ना० पु० दाह देना, मृत्तक की  
 जलाना वा टमके हेतु क्रियाविशेष ।  
 अग्निहोत्री० ना० पु० अग्नि पूजोहारा, ब्राह्मण  
 जानि विशेष ।  
 अग्र० ना० पु० अग्र्य, आगे, प्रथमभाग ।  
 अग्रगण्य० गु० जो पहिले होने, वा गिनाने ।

अग्रगामी० शु० आगे चलनेहारा, पेशवा ।

अग्रज० शु० जो पहिले प्रकट हुआ होवे, बड़ा ।

अग्रता० } ना० स्त्री० पु० अग्र्यापन, ना०  
अग्रत्व० } पु० पेशवाई ।

अग्रशोची० ना० पु० शु० पहिले शोचीपाला,  
प्रथमही समझनेहारा, दूर प्रदेश ।

अग्रसर० शु० वा० पु० मुलिया, प्रधात, पेशवा,  
आगे चलनेहारा, सरदार ।

अग्रहायण० ना० पु० अग्रहन ।

अघ० ना० पु० पाप, दोष, गुनाह, अपासुर देय ।

अघट्टित० शु० अग्राम्य, जा पूग न पौ ।

अघाई० शु० पूरी, भरी ।

अघाना० अ० कि० अफरना, आमदद होना  
शु० सतुष्ट, धनवान् ।

अघारि० ग० पु० भीष्मचक्रवर्ती ।

अघासुर० ना० पु० देवविशप, जिपना श्री  
कृष्णचक्रने वध किया था ।

अघी० शु० पापी, दीपी ।

अघोर० ना० पु० भैयाक, अरूफ, शिवकृत  
मन, धर्मविशेष, श्रीमहादेवजी ।

अघोरपन्थ० ग० पु० धर्मविशेष ।

अघोरपन्थी० } ना० पु० जो अघोरप यका  
अघोरी० } सेवन करे, मलादिभुक्त,  
सर्वभक्षी ।

अघ्न० शु० मारनेहारा, ना० पु० मारण, हनन ।

अंक० ग० पु० अलर, गोदी, बनिया, विद,  
सख्या, गिता के १५ अक्षर, निशाही ।

अंकदुन० ग० पु० दु रत, पीडा, जममाना,  
( विशुद्धदे १ अरु अकदुन गहन कृजिन  
अचनाउ ) ।

अङ्काना० अ० कि० मोल टहरना, परीक्षित होना ।

अङ्काना० स० कि० मोल टहराना, सोना ।

अङ्कित० शु० चिह्न किया गया, लिखित,  
परीक्षित ।

अंकुर० ना० पु० बीज बोने से जो अगुना  
पडिले निकलता है ।

अङ्कुरा० ना० पु० आङ्कुरी जिस से महावत  
हाथी को मारता है ।

अङ्गोल० ना० पु० आषय्यासिद्ध ।

अङ्ग० ना० पु० अयय, शरीर, देह ।

अगद० ना० पु० बालिका पुत्र, भूषण, वाञ्छन ।

अगदा० ग० स्त्री० नाम चन्द्रमा की एक  
कला वा, वा शरीर की दाता ।

अगन० ना० पु० आग, सहन ।

अगना० ना० स्त्री० पुंमी, जोर, स्त्री, आगन ।

अगवना० ग० कि० सहना, गँवारा करना ।

अंगरत्ना० ना० पु० उक्कन, केसर चन्दनादि  
का शरीर विषे मर्दन ।

अंगारक० ना० पु० मगल, भारा, पोदा ।

अंगाङ्गिमाच० ना० पु० शरीर के अययों  
का सम्बन्ध ।

अगिरा० ग० पु० मुनिविशेष, घृहरपति  
जी के पिता ।

अर्गाकार० ग० पु० स्वीकार, कबूल, मजूर ।

अगुल० ना० पु० आगुल ।

अगुली० ना० स्त्री० हाथ का अयय ।

अंगुष्ठ० } ना० पु० अंगुष्ठा ।  
अगुष्ठा० }

अगूठा० ना० पु० अगुष्ठ ।

अंगूठी० ना० स्त्री० अग्नी, सुदरी ।

अंगेठी० ना० स्त्री० अग्नी ।

अचगरी० ना० स्त्री० अनुचित, अक्षरकर्म,  
प्रनिलाले, यथा—सुनो महारि निज सुतकी  
करनी । करत अचगेरी जात न बननी ॥

अचम्भा० }  
अचम्भष० } ग० पु० आश्चर्य, तथ्य हन ।  
अचरज० }

अचल० गु० जा चल नहीं सका ना० पु०  
परिताद ।

अचला० ना० सी० पृथ्वी धरती ।

अचानक० अन्व० अचानक एकाएक ना०  
पु० कलकत्ता के निकट गरीबशेखर ।

अचानकक० अन्व० अचानक, नागहान ।

अचाना० स० कि० भोजन करके सुखभोग ।

अचार० ना० पु० आम इत्यादि का जो बन  
ता है और आचार ।

अचिन्त० गु० चिन्तारहित, निश्चिन्त ।

अचूक० गु० जा न चूँ टूँक ।

अचत० गु० सज्जारहित बहोश, मूर्खित ।

अच्छत० ना० पु० अक्षत धातुरहित ।

अच्छा० गु० भला सुखील सुन्दर ।

अच्छुत० गु० स्थिर, अचलविशेष इश्वर ।

अच्छुताप्रज्ञ० ना० पु० अचलदन्ती ।

अच्छेह० गु० बहुत, विहारीलालससरातिक्रिया  
धरे रूप गुणकी गरव किरी अक्षर उदाह ।  
अन० अन्व० आन, अवन, ना० पु०  
बन बकरा इश्वर, शिव, यौवन और  
आभरण गु० जो पैदा न होने वा उपजा  
फिस्सिते न हा ।

अक्षगर० ना० पु० बड़ा साग, अक्षरहा साग ।

अक्षगुत० गु० अक्षुण्ण अनाशन ।

अक्षगन्धा० ना० सी० बबरीबीषा ।

अक्षम० गु० नितका जम न हान ।

अक्षय० गु० जपरहित जा जीता न जाने  
गा० सी० बीरभूमि मिले की नदीविशेष ।

अक्षया० गा० सी० अना ।

अक्षर० गु० जराहित अर्थात् जो बूना न  
हा ना० पु० देवता ।

अक्षलोक० ना० पु० अथाप्यानी मङ्गलाक ।

अक्षयीपी० गा० सी० रुक्मी जो क्षी २  
धने तारागणा की आकारामें दीक्षितकी है ।

अक्षह० अन्व० अक्षी अर्धी ।

अक्षा० ना० सी० बबरी माया ।

अजात० गु० जमरहित, जा न उपज ।

अजातशत्रि० } ना० पु० राजा युधिष्ठिर ।

अजातरिपु० }

अजान० गु० अज्ञात, मूर्ख, नादात ।

अजामिल० } ना० पु० नाम एक मनन्य पा  
अजामाल० } पिष्टका जो गारायण बहक  
मरा और सुक्ति पाई ।

अजित० } गु० जो जीता न जासक, इश्वर ।

अजात० }

अजिन० ना० पु० सिंहइत्यादि का चर्म जा  
मन्त्रचारालाभ विज्ञाते हैं ।

अजिर० ना० पु० अगन सहन ।

अजीर्ण० ना० पु० कुपच, नाई जान ।

अजै० अन्व० अक्षतक, अभा ।

अज्जल० गा० पु० अन् और हल अर्थात् म्वर  
और अज्जल ।

अज्जल० ना० पु० आचल अचला बसका अत ।

अजन० ना० पु० बानज, सुरमा ।

अजलि० } गा० सी० दं गे हाथका सपु ।

अजली० }

अजि० नि० अजन लगाकर ।

अजित० गु० अना अर्थत् सुरमा लगाये ।

अटक० ना० सी० राक, प्रतिबध सिद्धनदी ।

अटकना० अ० कि० रुकना, लगना ।

अटकल० ना० सी० अतुमान, प्रमाद्य अदास ।

अटकलना० स० कि० ताड़का बूकना जाचना ।

अटका० गा० पु० आनगनाथ जयमें प्रसाद  
पकान वा पान या प्रसाद ।

अटकाना० स० कि० राकना उहराना ।

अटकाध० ना० पु० राक, प्रतिबध ।

अटखेल० गु० खिलाव चचल ।

अटखेली० गा० सी० खिलावपा, चचलाहट ।



अटन० य० कि० फिरना, घूमना, ना० पु० ऊपर की कोठी ।

अटना० अ० कि० समाना, भरजाना, फिरना ।

अटपट० गु० उलट, पुलट० गोल बात ।

अटपटी० गु० अशोच, अनरीति ।

अटल० गु० पूरा, दृढ़, अचल, जो न टरे ।

अटवी० ना० पु० वन, जंगल ।

अटा० } ना० स्त्री० ऊपरकी कोठी,  
अटारी० } कोठा ।

अटाला० ना० पु० दर, सामथी ।

अटूट० गु० जो टूट न सके ।

अट्टक० गु० जो टकराहित हो, सहाराविना ।

अट्टरन० ना० पु० फेंटी, चरोखी, धाँड़े को चकर देनेका स्थान ।

अट्टरना० स० कि० फेंटी बनाना, धाँड़े को चकर देना ।

अट्टरि० ना० पु० नगरविशेष ।

अट्टोक० गु० टोक निन, अडेङ ।

अट्टहास० ना० पु० ठंडा मार के हँसना ।

अट्टालिका० ना० स्त्री० अटारी ।

अट्टालीस० गु० चालीस और आठ ४८ ।

अट्टतीस० गु० तास और आठ ३८ ।

अट्टचार० ना० पु० आठवाँ दिन, सोमवार ।

अट्टसठ० गु० साठ और आठ ६८ ।

अट्टहत्तर० गु० सत्तर और आठ ७८ ।

अट्टाईस० गु० बीस और आठ २८ ।

अट्टानवे० गु० नव्वे और आठ १८ ।

अट्टारह० गु० दस और आठ १८ ।

अट्टासी० गु० अस्ती और आठ ८८ ।

अट्टेल० गु० जो टैला न जावे ।

अट्टे० ना० स्त्री० भगवा, विरोध, हट ।

अट्टंग० ना० पु० मंडी अर्थात् दिसावरकी वस्तु का उतार, गु० भगवा, टरी ।

अट्टना० अ० कि० रुकना, हटकरना ।

अट्टसा० ना० पु० बाँसा अर्थात् शीघ्रवि० ।

अट्टोल० गु० जो न डूले, अट्टल ।

अट्टि० ना० स्त्री० मोनी, अनी, भोक ।

अट्टिमा० ना० स्त्री० अन्तर्धान होने की शक्ति सिद्धिविशेष ।

अट्टु० ना० अत्यन्त सूक्ष्म, नस्तु ।

अट्टड० ना० पु० अंडा, आंडा ।

अट्टडकोप० ना० पु० अट्टडकाट ।

अट्टडज० ना० पु० गु० जो अट्टड से उपज्ज ।

अट्टडा० ना० पु० अट्टड ररड ।

अट्टडाकार० } गु० अट्टडे के डेलि ।  
अट्टडाकृति० }

अट्टनु० ना० पु० कामदेव, शरीराहित ।

अट्टक० गु० जो तर्करहित है, वेदलील ।

अट्टक्य० गु० जो लीपा न जावे, वेदलील ।

अट्टल० ना० पु० सात पातालों में से एक ।

अट्टलस्पर्श० गु० अथाह, अगाध ।

अट्टसी० ना० स्त्री० अलसी, जिसका तेल निकालते हैं ।

अट्टि० अत्य० जिन शब्द के प्रथम इसका मूल होताई उसका अर्थ अधिक लिखा जाता है यथा अट्टिमुन्दर अर्थात् अधिकमुन्दर ।

अट्टिकरट्टक० ना० पु० जवासा ।

अट्टिकाल० ना० पु० अवेर ।

अट्टिकाय० ना० पु० रावणका पुत्र ।

अट्टिकुचै० अ० कि० समिर्द, सकुचै, भूलें, रामचन्द्रिकायां, यथा कपे वर वाणी उगी उर बीटि तया तिकुचै सकुचै मतिवली ।

अट्टिगुहा० ना० स्त्री० शालपर्णी अर्थात् ।

अट्टिचंचुल० ना० पु० लाल अरुडग ।

अट्टिजिह्वा० ना० स्त्री० कलिहारी ।

अट्टिथ० } ना० पु० यागी, पाहुन, संग्यासी ।  
अट्टिथि० }

अट्टिपराक्रम० ना० पु० बड़ा प्रताप ।

अट्टिपान० ना० पु० अधिक मदिराका पीना ।

अट्टिपाश्व० गु० बहुत निकट ।

अतिरंजिका० ना० स्त्री० ऊँचाहोली, शीपथ ।  
 अतिरसा० ना० स्त्री० रासना, शीपथ ।  
 अतिरिक्त० पु० अनिराय, शीपथ ।  
 अतियक्ता० पु० बरुवादी, जो बहुत बके ।  
 अतिघटा० स्त्री० नलक, शीपथ ।  
 अतिविकट० पु० बहुत दुर्गम, जिस हाथी में  
 अचगुण हो ।  
 अतिवृष्टि० ना० स्त्री० बहुत वर्षा ।  
 अतिव्ययक पु० उदाऊ, बहुत खर्च करता ।  
 अतिव्याप्ति० पु० स्त्री० अलक्ष्य में लक्ष्य का  
 गमन ।  
 अतिशय० पु० बहुत, अधिक ।  
 अतिशयत पु० बहुत शक्ति ।  
 अतिसार० ना० पु० पेशाब, संग्रहणी ।  
 अतिस्थूल० पु० बहुत भारी ।  
 अतीत० पु० होबुका, व्यतीत, रहित ।  
 अतीस० ना० पु० शीपथविशेष ।  
 अतीसार० ना० पु० अतिसार ।  
 अतुल० } पु० जो तोला नहीं गया, जो  
 अतुलित० } तोलने के योग्य नहीं, बहुत ।  
 अतोल० }  
 अत्यंशु० ना० पु० सरन ।  
 अत्यन्त० पु० अनिराय, बहुत ।  
 अत्यन्तसुन्दर० पु० बहुत सुन्दर ।  
 अत्यल्पतर० पु० बहुतही थोड़ा ।  
 अत्यावश्यक० पु० बहुत आवश्यक, बहुत जरूरी,  
 जिसके बिना निराह न होसके ।  
 अन्युग्र० पु० बहुत दठिन ना० पु० हथि ।  
 अन्युत्तम० पु० बहुत अच्छा ।  
 अन्युत्तमा० ना० स्त्री० सुख्यचक्रा ।  
 अथ० अव्य० अनन्तर, आरम्भ, उपरान्त ।  
 अथर्वण० ना० पु० नाम अनुर्वेदका ।  
 अथवा० अव्य० वा, या, प्रथान्तर, किंवा ।  
 अथार० ना० स्त्री० बैठकका स्थान, समूह, शीपथ ।  
 अधान० पु० अचार, तयारी, बैठकाने ।

अथाह० पु० गम्भीर, अगार, गहरा, ना० पु० खेदि ।  
 अदत्त० पु० जो नहीं दिया गया, देनेके योग्य  
 नहीं है ।  
 अदत्ता० पु० स्त्री० अविवाहिता ।  
 अदर्शन० ना० पु० दर्शाना भाव पु० लुप्त,  
 अगोचर ।  
 अद्वायन० ना० स्त्री० पाँदनी की रस्मी ।  
 अदाता० } पु० लीचक, अनदेना ।  
 अदानी० }  
 अदिति० ना० स्त्री० कश्यप की स्त्री, देवमाना  
 अदिष्ट० ना० पु० विपत्ति, भाग्य, कर्म ।  
 अहश्य० पु० जो देखा न जावे, अगोचर ।  
 अदेय० पु० जो देने के योग्य नहीं ।  
 अदेय० पु० देय जो देने के योग्य न होवे ।  
 अदो० ना० स्त्री० दमड़ी का आश, कपड़ा  
 विशेष ।  
 अद्रुमुत्त० पु० अनोम्हा, अजायब ।  
 अघ० अव्य० आज ।  
 अघापि० अव्य० अवनक ।  
 अद्रक० ना० स्त्री० अद्रक, कन्दविशेष ।  
 अद्रि० ना० पु० पर्वत ।  
 अद्रिनीय० } पु० जिसके ममान दूभरा नहीं,  
 अद्रित० } पु० एकना-लासानी, भेदरहित  
 अथ० अव्य० नीचे ना० स्त्री० उगा शीपथ  
 अधकपाली० ना० स्त्री० आगसी शीपथ  
 आरोशिर की पूजा ।  
 अधगो० ना० स्त्री० गुरा, गोकु करने की शक्ति  
 अधन० } पु० बंगाल, रानी ।  
 अधनी० }  
 अधवर० अव्य० शीपथ दूर अथात् मध्य ।  
 अधम० पु० नीच, कुलित, प्रमत्तरहित ।  
 अधमाधम० पु० अतिनीच ।  
 अधर० ना० पु० नीचे का होंठ, शीपथ, अन्त  
 पु० मध्य ।

अधरबुद्धि० गु० नासमक नादात् ।  
 अधरामृत० ना० पु० होठामें की मिठास ।  
 अधर्म० ना० पु० पाप, अ भेद, अ वाय, अना  
 धर्महित ।  
 अधर्मी० गु० अयाया, पारी ।  
 अधि० अय० जिस शब्द क प्रथम म दसका  
 सयोग होनाह उतसा अर्थ साहित वा मालिन  
 वा हाथिम का हाना है यथा न्यायि अरिंत  
 नरा का मालिन ।  
 अधिक० गु० बहुत ।  
 अधिकता० ना० रता० } ना० पु० बहुतात ।  
 अधिकत्व० ना० पु० }  
 आधिकरण० ना० पु० सातवां कारकप्रियेय ।  
 अधिककोण० ना० पु० कान जो समरीण से  
 अधिक हो ।  
 अधिकाई० ना० स्त्री० बढ़ती, सरसाई, बहुतात ।  
 अधिकाना० स० वि० अधिक करना, बढ़ाना ।  
 अधिकार० ना० पु० पदवी, ओहदा, योग्यता,  
 स्वामित्व, राज्य, वर्गीती ।  
 अधिकारी० गु० पाते व यो य स्वामी, पुजारी,  
 पण्डा ।  
 अधिकाई० गु० बहुत सम्पदा ।  
 अधिरुत० ना० पु० निपुण, देतनेवाला ।  
 जाचनेवाला, पदाभिर ।  
 अधिप० ना० पु० नायक, मालिन, राजनीति  
 प्रनिपालन, वा प्रनापालक ।  
 अधिपति० ना० पु० अधिप ।  
 अधिवास० ना० पु० निवास, सङ्गनव ।  
 अधिभू० ना० पु० नायक, स्वामी, मालिन ।  
 अधिमास० ना० पु० साँद, मलमास ।  
 अधियाना० स० वि० अधाकरना ।  
 अधिराज० ना० पु० महाराज, राजाभिमान ।  
 अधिरूढ० ना० पु० सवार, अमृत ।  
 अधीन० गु० वर्गीभूत, आभारती ।  
 अधीनता० ना० स्त्री० अधीनता, परास,  
 दुमरे के शस्त्रिया में रहना ।

अधीर० गु० उतावले, धीररहित, व्याकुल,  
 चंचल ।  
 अधीरता० ना० स्त्री० उतावली, व्याकुलता ।  
 अधीश० ना० पु० स्वामी, मालिन ।  
 अधूरा० गु० अधपना, शैबना ।  
 अधेड़० गु० आना आहर्दीय व्यतीत भई ।  
 अधेला० ना० पु० पैसेका आधा ।  
 अधेली० ना० स्त्री० रुपया वा मुहरका आधा ।  
 अधो० ना० पु० नरक, नीचे ।  
 अधोव्यधन० ना० पु० जेरबंद नीचेका व-  
 धननिशेष ।  
 अधोमुख० गु० शिर ऊपर वा शिर नीचे  
 और पाव ऊपर कियेहुय ।  
 अधोयोनि० गु० नीचेयानि ।  
 अधोलोक० ना० पु० पाताल, नरक ।  
 अध्ययन० गु० पाठ पढ़ना, सीखना ।  
 अध्यक्ष० ना० पु० स्वामी, प्रधान, मालिन ।  
 अध्यात्म० ना० पु० आत्मज्ञान, अंतरिचर ।  
 अध्यापक० ना० पु० पाठपढ़ानेवाला, शिक्षक ।  
 अध्यापन० ना० पु० पठ पढ़ाना ।  
 अध्याय० ना० पु० पाठ, पत्र, प्रकरण, उद्-  
 दा, वान, हिस्सा ।  
 अध्याहार० ना० पु० वाक्य की पूर करने के  
 निमित्त बाहर से शब्द लेखन ।  
 अध्याहन० पु० अध्याय किया हुआ शब्द ।  
 अध्वग० } गु० व्याघ्र, कर्ण, मुनिदिग्ग ।  
 अध्वनी० }  
 अध्वान० ना० स्त्री० गृह, नाग, वाग ।  
 अन्न० अन्न० स्त्रियेकी शब्द, नदी ।  
 अन्नगु० ना० पु० दुग् ।  
 अन्नखाई० गु० जो कुछ मलमल ।  
 अन्नखाना० स० वि० अन्न खाने, उग  
 मलमल ।  
 अन्नगड० स० अन्न, अन्नमाला, जो वस्तु  
 खाई करती है ।  
 अन्नगडा० ना० पु० अन्नगड ।

अनगाही० ना० स्त्री० अनगद ।  
 अनगणित० गु० जो गिना नहीं वा गिना न  
 आवये वा दिमाव में न आवे ।  
 अनघ० गु० निष्पाप, निर्दोष, बेगुनाह ।  
 अनश० ना० पु० शरपेदर, रामाजनर, गु०  
 देहद्विज जो तन में न होवे ।  
 अनजाना० गु० विना पहिचाना ।  
 अनट० ना० स्त्री० गाटि ।  
 अनत० अ० अन्वय, और स्थान में ।  
 अनधन० ना० पु० मग्नाति वा लक्ष्मी अर्थात्  
 अन्ननामा लक्ष्मी ।  
 अनंत० गु० जिसका अन्त नहीं वा भाद्र  
 शुक्ल चतुर्दशी को जो मूर में २४ मन्त्रि देकर  
 पूजने हैं और बाह्यपर बाधने हैं बहुत० ना०  
 पु० भग्ना, आकारा, विष्णु जीके शेष जी,  
 लक्ष्मण जी ।  
 अनंतकाल० गु० बहुत दिन ।  
 अनंतर० ना० पु० अन्वय, समीप, पीछे,  
 दूरा, अन्वयद्वय ।  
 अनन्ता० ना० स्त्री० धरती, जवामा ।  
 अनन्य० गु० एक भाव, एक भरोसे ।  
 अनपदा० गु० मूल्य, छुपड़ा, अगानी ।  
 अनपायन० गु० अचल, दृढ़ ।  
 अनयुक्त० गु० जो समझा न जावे ।  
 अनमन० } गु० धारणा, उदास, बेदिल ।  
 अनमना० }  
 अनमिल० गु० मेलरहित, नादुस्तर ।  
 अनमिष० गु० समथ, बिना मिम, बेउत्तर ।  
 अनमेल० गु० अनमिल ।  
 अनमैल० गु० मेलरहित, उच्चल, माक ।  
 अनमोक्ष० गु० जिसका मोल नहीं अर्थात् जो  
 बहुत अर्द्ध है ।  
 अनायास० गु० बिना परिश्रम, बेमिहन ।  
 अनरस० ना० पु० रमरहित, भ्रमरा, धीका,  
 मियों में अनवभाव ।

अनशीनि० ना० स्त्री० कुचालि, अस्तमान,  
 अनादर ।  
 अनगल० गु० निर्दोष, स्वच्छ ।  
 अनर्घ० गु० अर्घ्य, अमूल ।  
 अनर्घ्य० गु० अर्घहीन, अनुचित, बेमतलब ।  
 अनर्घक० गु० निःप्रयोजन, निष्काम्य, भूटा ।  
 अनल० ना० पु० पाँव, अग्नि, धाम ।  
 अतलपल० गु० पु० पत्नी विशेष जो सर्वदा  
 मन्थ अगम में उदा करता है और जब  
 स्वरोच्चा मे उम के अर्ध होता है तो अर्ध  
 को आकारा से छोड़ देता है और वह अर्ध  
 पृथ्वी पर पहुँचने के पहिलेही मार्ग में पाव  
 फूटकर बहा बन जाता है और उदने  
 लगेता है और अपने माना बिना आ स्पर्श  
 कर ऊपर लीट जाता है, (यथा विचार-  
 मालायाम्) अतल पल की चेदवा गिरेउ  
 धरणि धरराय । बहु अलीन यह लीन है मि-  
 ल्यो तासु को धाय ।  
 अनधकाश० ना० पु० अन्वयारहित ।  
 अनघट० ना० पु० भूषणविशेष जो किया पाव  
 के अर्ध में पहनती हैं ।  
 अनवस्थित० गु० बेठिकाने, रग रग की ।  
 अनशत० ना पु० उपवास, लपन ।  
 अनश्वर० गु० जिसका नारा न हो, जो न मिटे ।  
 अनसीला० गु० अनपदा, अज्ञानी ।  
 अनसुनीकरना० अ० कि० आनाकानी करना ।  
 अनसूया० गु० स्त्री० अभिमुनि की पत्नी ।  
 अनहित० गु० स्नेहरहित, शत्रु, बैर, घुराई ।  
 अनहोना० गु० असम्भव, जो हीनहार नहीं ।  
 अनाहुतः ना० पु० वृक्ष, पेड़ ।  
 अनाचार० ना० पु० कुचाल, आचाररहित ।  
 अनाज० ना० पु० अन्न, गहल ।  
 अनाजक० ना० पु० कालाधगर ।  
 अनाही० गु० भेदमल, निर्गुणी, नगसिन्हा ।  
 अनाघ० गु० दुःखी, जिसका कोई रक्षक न  
 हो, यथा विधवा, पिताहीन पुत्र ।

अनादर० ना० पु० अपमान, निरस्वार ।  
 अनादि० शु० निमग्न आदि न हो, यथा ईश्वर ।  
 अनामय० शु० रोगरहित, निर्दोष ।  
 अनामिका० ना० स्त्री० तीमरी अंगुली ।  
 अनायास० ना० पु० यत्नविना, निरुपाय ।  
 अनावृष्टि० ना० स्त्री० मूला, पानी न बरसे ।  
 अनाश्रम० शु० विनमत्ता, विना टिप्पण और चारों आश्रमरहित ।  
 अनाहन० शु० वह शब्द जो ब्रह्माण्ड में अन्वय होना है, ना० पु० चमरिषेण ।  
 अनिरुद्ध० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का पोता ।  
 अनिर्वचनीय० } शु० जो कहने के योग्य  
 अनिर्वाच्य० } नहीं है ।  
 अनिल० ना० पु० परा, वायु, हवा ।  
 अनिशिचत० पु० जो निश्चय नहीं किया गया ।  
 अनिशिचतता० ना० स्त्री० जिसका निश्चय नहीं है उसकी स्थिति ।  
 अनिष्ट० शु० अप्रिय, अशुचि ।  
 अनी० ना० स्त्री० मेरा, बरखी और बाण आदि की नोक ।  
 अनीक० ना० पु० मूला, ना० स्त्री० सेन, समूह ।  
 अनीकिनी० ना० स्त्री० सेना, फौज ।  
 अनीति० ना० स्त्री० कुचाल, अयोग्य ।  
 अनीश० ना० पु० ईशरहित, जीव ।  
 अनीह० शु० बेघाररहित, तृष्णारहित ।  
 अनु० शब्द यह जिस शब्द के प्रथम म समुक्त होना है उसका अर्थ, कभी पुता, कभी सादर्य, कभी निषेध, कभी संग, कभी पीछे, कभी समीप का होता है ।  
 अनुकम्पा० ना० स्त्री० कृपा, दया, रहम, मेहरवाणी ।  
 अनुकरण० ना० पु० किसी के पीछे काम करना, किसीकी प्रति वा नकल करना ।  
 अनुक्त० शु० जो उक्त नहीं, ना० पु० दृष्टांत ।  
 अनुक्रम० ना० पु० क्रमसे, परिपाटी, रीति ।  
 अनुक्रोश० ना० स्त्री० दया, कृपा, रहम ।

अनुकारी० ना० पु० नोकर, सेवक ।  
 अनुकूल० शु० प्रसन्न, सहायक, व्याधिहीन ।  
 अनुख० ना० पु० आनस, बुराई ।  
 अनुखाल० ना० पु० किसी नदी का एक भान किसी देश में प्रविष्ट होने थोड़ी दूर और भेद न करे उसका नाम यूपान् छोटाखाल ।  
 अनुग० शु० सेवक वा सेवक, पीछे चलेया ।  
 अनुगत० ना० पु० आश्रित ।  
 अनुग्रह० ना० पु० कृपा, दया, मेहरवानी ।  
 अनुगामी० शु० सेवक, पीछे चलनेहारा ।  
 अनुचर० ना० पु० सार्थी, सहचर, दाम, सेवक ।  
 अनुचरी० ना० स्त्री० दासी, सेवक ।  
 अनुचित० शु० अयोग्य, जो वाचित न हो ।  
 अनुज० ना० पु० छोटाभाई ।  
 अनुज्ञा० ना० स्त्री० छोटीबहन ।  
 अनुत्तर० शु० उत्तरहीन, महजन, धेष्ट ।  
 अनुताप० ना० पु० पश्चात्ताप, रोच ।  
 अनुतारा० ना० पु० तारे के पीछेका तारा ।  
 अनुदिन० ना० पु० प्रतिदिन, निरन्तर ।  
 अनुनासिक० ना० पु० जो नासिकासे निकले ।  
 अनुपल० ना० पु० पलका साठिवा अशु ।  
 अनुपस्थित० शु० जो उपस्थित न होवे ।  
 अनुपान० ना० पु० औषध आदि के साथ और जो कुछ मिलाय के पीते हैं ।  
 अनुप्रास० ना० पु० समान जाति के वर्णों में रचितपद, समूह, रदीफ ।  
 अनुभव० ना० पु० मानसज्ञान, अदकल, निचार, ध्यान ।  
 अनुभूति० ना० व्याकरण के आचार्य का नाम है जिन्होंने सारस्वत बनाई और अपने चित्त के स्थिर निश्चय की भी कहते हैं, जिसका पर्याय अनुभव है ।  
 अनुभाव० ना० पु० महिमा, बढ़ाई ।  
 अनुभूत० शु० बीना, जो मनमें जानागया है ।  
 अनुमति० ना० स्त्री० अनुज्ञा, आज्ञा, सम्मति, सलाह ।

अनुमरण० ना० पु० एक चिन्ता म विरिपूरक  
 शरीर का दहन सती हाना ।  
 अनुमान० ना० पु० अफल यति स जा नि  
 श्चय हाने ।  
 अनुमति० शु० विचार गता ।  
 अनुमोदन० ना० प० प्रशंसा वा वार्त्ता करता ।  
 अनुयायी० शु० पाद जाननाला शरक ।  
 अनुरत० शु० मग्न रत मस्त ।  
 अनुराग० ना० पु० स्तह श्रानि भाङ्गालपा ।  
 अनुरागी० शु० प्रियतम दास ।  
 अनुराधा० ना० स्त्री० सप्रह्वता नक्षत्र ।  
 अनुरूप० शु० सश समान तुल्य ।  
 अनुरूपक० पु० समान करेनाला प्रनिमा ।  
 अनुरोध० शु० अपेक्षा उपेक्षा रोक मनाशक  
 अनुस्य हाना ।  
 अनुरोधी० शु० विराडी ।  
 अनुलाप० ना० पु० दु खित वार्त्ता ।  
 अनुवह० ना० पु० सुमयपान ।  
 अनुवाद० ना० पु० पत्र वार्त्ता, वाक्का पत्र  
 करना हठ करना ।  
 अनुशयना० ना० स्त्री० नायिकाश्रय ।  
 अनुशाखा० ना० स्त्री० पीडकी गाली प्रमाण ।  
 अनुशासन० ना० पु० आशा प्रकम ।  
 अनुसधान० ना० पु० कामना पीडे लगाना ।  
 अनुसरना० अ० कि० पीडे चलना वा आना ।  
 अनुसार० ना० पु० सश तुल्य अनुस्य होना  
 अथवा अनुस्य सुवाचिक ।  
 अनुस्वार० ना० पु० निरु जा अक्षर के मरक  
 पर त्ते है ।  
 अनुहर० ना० पु० तुल्य अनुहार ।  
 अनुहरण० ना० पु० उराग उखलना ।  
 अनुहार } शु० तुल्य सश समान,  
 अनुहारि० } गण्य ।  
 अनुपम० } शु० उपमादिन अर्थान् सब त  
 अनुपमा० } भला एकता वाचिक ।  
 अनुप० }

अनुटा० शु० अश्व निराला, तथा अजायव  
 अ-यू० शु० मव विलकल ।  
 अनुत० ना० पु० अश्व दिव्या ।  
 अनेक० शु० बहुत एक से अधिक ।  
 अनेकपर्णामक० शु० निम्न शब्द में एक  
 अर्थ वर्ण हों ।  
 अनेसी० ना० स्त्री० अनुचिन कुण्टि ।  
 अनेसे० शु० कुण्टि वा अण्टि रामायणे यथा  
 ( अनेहँ अनुन तय चित्त अशैत )  
 अनीपधि० शु० निस्ती आपधि तदा लाना  
 अन्त० ना० पु० समाप्ति गेराभाग समा द्दमरा  
 जाह् अथ- निदान ।  
 अन्तक० ना० पु० काल, यमराज ।  
 अन्तकाल० ना० पु० मर का समय ।  
 अन्तकरण० ना० पु० मन बुद्धि चित्त अर  
 अह्वार ।  
 अन्तकौण० ना० पु० भातर का कोण ।  
 अन्तपाती० शु० अन्तगत भातर ।  
 अन्तपुर० ना० पु० घर निस्सम राना आ  
 सिधा रहता है ।  
 अन्तसम्पात० ना० पु० भीतर छूना ।  
 अन्तही० ना० स्त्री० आत ।  
 अन्तर० अथ- बीच फर ना० पु० भातर,  
 समय भ- ह्यय ।  
 अन्तरग० ना० पु० आमाय अयना ।  
 अन्तर्हित० शु० छुपना गायव हाना ।  
 अन्तरा० ना० पु० गीत क पहिले पदका छाडके  
 जो पद है अथ मध्य बाहिर ।  
 अन्तरापत्ति० ना० पु० गम ।  
 अन्तरित० शु० छुपना गायव हाना ।  
 अन्तरिया० ना० पु० तिजारी वरविशय ।  
 अन्तरीप० ना० स्त्री० रात धरती की गज जा  
 समुद्र में खलागईहा ।  
 अन्तर्द० ना० पु० दरा जा गगा यमुना व  
 मध्य में है ।  
 अन्तस्थ० ना० बीच में दूरवाला अन्तर ।

अतावली० ना० स्त्री० अत।  
 अंतिम० गु० अन्तवा।  
 अंतेवासी० ना० पु० पीछे रहनेवाला, दूररहने  
 वाला शिष्य।  
 अन्त्य० गु० अन्तवा, पिछला।  
 अन्त्यज० ना० पु० धोबी, चमार, नट, बरट,  
 निरात, मेद, भिख, पीछे उपना, नीचजाति।  
 अंत्याक्षर० ना० पु० अन्तवा अक्षर।  
 अध० गु० अधा।  
 अधक० ना० पु० देवविशेष जो सदाशिव  
 से लड़ा था और मारा गया।  
 अधकग्रन्थ० ना० पु० देवविशेष।  
 अधकरिपु० ना० पु० श्रीमहादेवजी।  
 अधकार० ना० पु० अधेरा।  
 अधकारि० ना० पु० श्रीमहादेवजी।  
 अधला० गु० अधा।  
 अधसुत० ना० पु० दुर्गोभनादि सो १००।  
 अध्या० गु० नेवहीन।  
 अध्र० ना० पु० पत्र ओदनादि, अनाज।  
 अध्रकूट० { ना० पु० अधरा देर लगाना।  
 अध्रपर्वत० { हिन्दुधर्ममें त्याहार दीवालीके दूसरे  
 दिन होता है।  
 अध्रप्राशन० ना० पु० बालक को पुच्ये वा  
 छठेमास खीर चढाना, माड चाटना।  
 अध्रा० } ना० स्त्री० दाया, दाई, धाय।  
 अध्रनी० }  
 अन्य० गु० दूसरा, भिन्न, कोई और।  
 अन्यच्च० गु० अथ भी, और भी।  
 अन्यथा० अन्य० और प्रकार, प्रकारान्तर,  
 अशुद्ध, भूट।  
 अन्यथाचरण० ना० पु० उलटा चरण।  
 अन्यथासिद्धि० ना० स्त्री० और प्रकार से  
 टहराना।  
 अन्यदेश० ना० पु० और देश, गेरमुलक।  
 अन्यदेशीय० गु० परदेशी, विदेशी।  
 अन्यपुरुष० गु० जो परोक्ष में है, आननर।

अन्यरक्त० ना० पु० सालऊगा।  
 यथा, (अन्यरक्त वृत्तखलानसिर कापपिप्यती)  
 इति नियते।  
 अन्याय० ना० पु० अनीति, उपद्रव।  
 अन्याय० { गु० अयोग्य, अधर्मा, जालिम।  
 अन्यायो० }  
 अन्यत्र० अन्य० और वहाँ।  
 अन्योन्य० गु० परस्पर।  
 अन्यय० ना० पु० एकका एकके साथ  
 सम्बन्ध, कुल।  
 अन्यहं० गु० गिरतर, सयकर।  
 अन्यित्त० गु० समुक्त, मिलित।  
 अन्येषण० ना० पु० अनसंभार, खान।  
 अन्येषिणी० ना० स्त्री० सोननेवाला, दूहन  
 वाली।  
 अप० अन्य० जिस शब्द के प्रथम में यह समुक्त  
 होता है उसका अर्थ, बु० निषिद्धता, निरुद्धता,  
 भिन्नता, आसन्नता इत्यादि हाताई सर्वे आप।  
 अपकर्म० ना० पु० कुर्म, घुराकाम।  
 अपकार० ना० पु० अनिष्ट, विगाड, देव,  
 अधर्म।  
 अपकारी० गु० डेपी, कुकर्मी।  
 अपकृष्ट० गु० अधम, यून, छोटा।  
 अपक० गु० जा पका न हान।  
 अपघात० ना० पु० निज करसों आप की  
 मारना।  
 अपचय० ना० पु० टोटा, घाटा, हानि।  
 अपजस० ना० पु० कलक, अपमान, अपयश।  
 अपदु० गु० जो काम करने में प्रवीण नहीं,  
 निर्बुद्धि।  
 अपद्वार० ना० पु० भूटडर, निजघोर से दर  
 अपत० गु० पापी, बेशकत।  
 अपति० ना० स्त्री० अनादर, अपमान।  
 अपत्य० ना० पु० सतान, श्रीलाद।  
 अपथ० ना० पु० कुमार्ग, मार्गरहित।

अपथ्य० गु० जिसके तानेसे रोग अधिक होवे ।  
 अर्थात् जठरानल जिमें न पका सके ।  
 अपना० सर्प० निजका, स्वर्षय ।  
 अपनाहृत० ना० स्त्री० घराना, कुटुम्ब, सम्बन्ध ।  
 अपवस० गु० स्थापित, अपनेतरा में ।  
 अपभय० ना० पु० भूतदू, अपडर ।  
 अपभाषा० ना० स्त्री० गैतरीबोली, वा-  
 यवनादिवा की बोली, फारसीआदि ।  
 अपभ्रंश० ना० पु० अपशब्द, अशुद्धशब्द ।  
 अपमान० ना० पु० अन्याय, इन्जन घटना ।  
 अपमानो० गु० जो अपमान के योग्य है ।  
 अपमृत्यु० ना० स्त्री० अन्याय, रोगदान, म-  
 रणा, अकालमृत्यु ।  
 अपर० ना० पु० तगर धारण, गु० दूसरा,  
 अय, विरुद्ध ।  
 अपरम्पार० गु० जिसका पार नहीं है, अनन्त ।  
 अपरा० ना० स्त्री० जुड़ी ।  
 अपराजय० ना० पु० पराभव, हारता, हरि ।  
 अपराजित० गु० जो जीता न जावे ना० पु०  
 श्रीसदाशिवजी, श्रीविष्णुनारायण ।  
 अपराजिता० ना० स्त्री० देवीविशेष, पुण्य  
 विशेष, जिसको विन्दुमन्ता वा कौआ  
 गोड़ी कहते हैं ।  
 अपराध० ना० पु० दोष, पाप, पात, अपर्मा ।  
 अपराधी० गु० पापी, दोषी, अपर्मा ।  
 अपराड० ना० पु० तीसरापहर ।  
 अपरिचित० गु० जानिनाचकराशब्द, जिससे  
 परिचय न हो, जिसमें पहिचान न हो ।  
 अपरिमित० गु० जो नापा नहीं गया, बहुत ।  
 अपर्णा० ना० स्त्री० पार्वती ।  
 अपलक्षण० ना० पु० अपशकुन, घरे निह ।  
 अपलोक० ना० पु० अपयश, बदनामी ।  
 अपवर्ग० ना० पु० मुक्ति, मोक्ष, निजाल ।  
 अपवाद० ना० पु० विन्दा, अपयश, उलहना,  
 कुरीबाने अलको कहना, अनियमशब्द ।  
 अपवादी० गु० अर्थात् जो अपवाद करे ।

अपवित्र० गु० अशुद्ध, छूतहरा, नापाक ।  
 अपवित्रता० ना० स्त्री० अशुद्धता, छूत, ना-  
 पाकी ।  
 अपशकुन० ना० पु० उरासमुत्त ।  
 अपशब्द ना पु० शब्द जो अशुद्ध है ।  
 अपश्य० गु० जो देखा न जावे ।  
 अपसद्य० गु० दाहिना भाग अग्रा वा दा  
 हिना हाथ वा बाधा वा जलदान में अंगोदर  
 दाहिने कापेर रखना, विकट ।  
 अपस्मार० ना० पु० रोगविशेष, जिसको मि  
 रगी कहते हैं ।  
 अपस्तरा० ना० स्त्री० रसोश्या, परी ।  
 अपहरण० ना० पु० हरलेना, लूलेना, लूना ।  
 अपहृता० } गु० चोर, डाकू, लुटेरा ।  
 अपहृता }  
 अपहारी० }  
 अपहृत्वा० पु० पु० दिवान, गवत ।  
 अपहृत्वा० गु० पहरति ।  
 अपाक० गु० जो पका नहीं है ।  
 अपांग० ना० पु० नेत्रका अथ भाग, कटाह ।  
 अपादान० ना० पु० पाषाणकारक ।  
 अपान० ना० पु० गुदा, नीचेकी वायु, पाद-  
 प्राणविशेष, सर्व, अपना ।  
 अपाप० गु० पापरहित ।  
 अपामार्ग० ना० पु० ऊगा ।  
 अपार० गु० जिसका पारावार नहीं है, अनन्त ।  
 अपावन० गु० अशुद्ध, नापाक ।  
 अपूर्ण० गु० निर्वरा, कुपुन, कपुन ।  
 अपूर्ण० गु० जो अर्धी पूरा नहीं भया है ।  
 अपूर्णभूत० गु० अर्धी व्यतीत नहीं भया ।  
 अपूर्ण्य० { गु० जो पहिले कभी नहीं देखा  
 अपूर्ण्य० } अनुदा ।  
 अपि० अथ० निश्चय, ठीक, भी ।  
 अपिधान० ना० पु० पोशाक, वस्त्र ।  
 अपिङ्ग० ना० पु० शिला, भूषण ।



अपेय० गु० जो पीने के योग्य नहा है ।  
 अपेल० गु० अचल, जो टल न सके ।  
 अपेक्षक० गु० अपेक्षा करनेवाला, निम्नतररने-  
 हारा, अनुरोधक ।  
 अपेक्षा० ना० स्त्री० अनुराग, आशी, भरोसा,  
 रिश्तह, निश्चय ।  
 अपेक्षित० गु० आश्रय, अपेक्षा किया गया ।  
 अपौरुष० गु० निसर्ग सायता नहा है, ना  
 ताकत ।  
 अप्रकाश० ना० पु० अधरा, जा प्रकट नहा है ।  
 अप्रतिहत० गु० जिसकी रोक नहीं है ।  
 अप्रतीत० गु० प्रतीतिरहित अर्थात् जा नि-  
 श्वास के योग्य नहीं है ।  
 अप्रत्यय० ना० पु० अतिश्रवाप्त ।  
 अप्रत्यक्ष० गु० जो देता न जाय ।  
 अप्रधान० गु० मुख्यनहीं है, जो सरकार नहीं है ।  
 अप्रवन्ध० ना० पु० वैधर्मीरत, प्रामाण्यहीन ।  
 अप्रमाण० गु० बहुत, प्रमाणरहित, अत्यय ।  
 अप्रसन्न० गु० जो प्रसन्न नहीं है, बदला,  
 नाखुश ।  
 अप्रसिद्ध० गु० जिसकी कोई नहीं जानता  
 है, गुप्त ।  
 अप्राकृत० गु० जो प्राकृत नहा है ।  
 अप्राप्तयौवन० ना० पु० लड़का, नाबालक ।  
 अप्रिय० गु० अहित, जो प्रिय नहीं है ।  
 अपरना० प्र० कि० अपरिभोग्य से पैट  
 पूसा, अपरि धनवान् होना ।  
 अपराना० स० प्रि० अधिक भोजन कराना ।  
 अफल० गु० निरुक्त, व्यर्थ, बेकारदह ।  
 अच० अव्य० रसमय, इतनी, ना० पु० पानी ।  
 अचतक० } अ० अर्भक, रसमयवर्तक ।  
 अचतलक० }  
 अम्बरण० ना० पु० पानीभरना ।  
 अचल० गु० निर्बल, पौरुषरहित ।  
 अचला० ना० स्त्री० नारी, स्त्री० गु० बलहीन ।

दायस० गु० निर्बल, वशरहित ।  
 अचार० ना० स्त्री० विगमन, देर, कुसमय ।  
 अबुध० गु० मूर्ख, मूढ़, अस्मक, दल्य ।  
 अमूह्य० गु० नासमक, नादा ।  
 अमूह्य० गु० विना समझा, अनजाना ।  
 अनुक्षित० गु० जो झुका नहीं गया ।  
 अचेर० ना० स्त्री० अचार ।  
 अच्य० अव्य० अमो० गु० अनिश्चित ।  
 अञ्ज० ना० पु० दमस्त, अर्ध, च डमा, देव-  
 वध, रात, लक्ष्मिरीय ।  
 अञ्ज० ना० पु० तप, साल, सन् ।  
 अचि० ना० स्त्री० महुषी, सीपी, समुद्र ।  
 अभङ्ग० गु० जा मकू नहा, भक्तिहीन, ना  
 हिस्तह नहा हुआ है ।  
 अभंग० गु० जिसका नाग १ हों ।  
 अभय० गु० निर्भय, निडर ।  
 अभया० ना० स्त्री० हर् ।  
 अभरण० ना० पु० गहना, आभूषण, जेवर ।  
 अभरम० गु० पतिहीन, निडर ।  
 अभग० } ना० पु० दुर्गति, विपत्ति ।  
 अभग्य० }  
 अभागा० ना० पु० } गु० भागहीन, निपट ।  
 अभागी० ना० स्त्री० }  
 अभाय० ना० पु० अनहोना ।  
 अभार० गु० हलका ।  
 अभाव० ना० पु० अविद्यमान, नाश, मृत्यु,  
 अनहोना ।  
 अभास० ना० पु० छाया, प्रतिबिम्ब ।  
 अभि० अ० सव दिग्भिन्ने, यह निस शक्ति  
 प्रथमसे समुक्त होता है उसका अर्थ यथा, आग,  
 प्रत्येक इत्यादि होता है ।  
 अभिगम्य० अ० कि० आपुनारण्य ।  
 अभिचार० ना० गु० मन्त्र निससे बधकिया  
 जाना है ।  
 अभिजित्० ना० पु० सुदृत्त विशेष, इकांसरा  
 नष्ट ।

अभिधान० ना० पु० नाम, कौर ।  
 अभिनय० पु० नया, नृतन, नवीन ।  
 अभिनन्दन० ना० पु० सराई, मम्मति, सलाह ।  
 अभिप्राय० ना० पु० मतवच, सारार्थ, धर्म,  
 आशय, कारण ।  
 अभिभूत० पु० परानिभ, बह्वहीन ।  
 अभिमत० पु० वाञ्छित, इच्छानुसार, सम्मत ।  
 अभिमान० ना० पु० अक्षर, पमएड, गरूर ।  
 अभिमानो } पु० अक्षरी, मयूर ।  
 अभिमान्यो }  
 अभिमुख० पु० सन्मुख, सामने, पतमान ।  
 अभिरत० पु० सपुत्र, मिलित ।  
 अभिराम० पु० सुदर, उत्तम, रम्य ।  
 अभिधामी० पु० रमेशाला ।  
 अभिलाष० } ना० स्त्री० इच्छा, मनोरथ,  
 अभिलाषा० } तमसा ।  
 अभिवन्दन० ना० पु० नमस्कार करना ।  
 अभिवाद्० ना० पु० दुर्बचन, वृषपा श्रीर  
 पुत्र वनकहात ।  
 अभिवादन० ना० पु० चरण मर्हपदार्थक  
 नमस्कार ।  
 अभिविह्वल० पु० जितका अभिषेक भयहो ।  
 अभिवेक० ना० पु० जल धिरकना, शान्ति  
 रनात, पदधी प्राप्ति के लिये पहिछी निषा  
 रिता रागविषक ।  
 अभिसार० ना० पु० नायक, रवि ।  
 अभिसारिका० ना० स्त्री० नायिका, दिगायली ।  
 अभिसारिणी० ना० स्त्री० नायिका ।  
 अभिज्ञ० पु० प्रवीण, बद्धदान, गुणगाहक ।  
 अभिज्ञो० अज्ञ० श्लोसमय ।  
 अभिज्ञा० पु० शिष्ट, अभय ।  
 अभिज्ञित० पु० नियतभित्त, मनभावित ।  
 अभिज्ञा० ना० पु० जीव, माय ।  
 अभिज्ञा० पु० नियतभित्त, मनभावित ।  
 अभूत० पु० जो स्पर्शित नहीं भया, अमान ।  
 अभूतपु० पु० रावुरहित ।

अभेद० } पु० ऐक्य, परस्पर सम्बन्ध, प्रकृत ।  
 अभेदो }  
 अभ्यन्तर० ना० पु० भीतरी, भीतरका ।  
 अभ्यास० ना० पु० साधन, चिन्तन, कर्तव्य ।  
 अब्र० ना० पु० आकार, मेघ ।  
 अब्रक० ना० पु० अरक, धातुविशेष ।  
 अब्रगत० पु० मालरहित, अशोभा ।  
 अब्रत० पु० सीमा, मावधान, होशमें ।  
 अब्रर० पु० जो न दूर, ना० पु० देवता, निर-  
 वार, अविनाशा ।  
 अब्रपुर० ना० पु० ब्रह्मदेवाका गंगारविशेष,  
 इन्द्र, विष्णु, शिव, लोक, स्वर्ग ।  
 अब्ररस० ना० सा० आमका रस ।  
 अब्ररावनी० ना० स्त्री० इन्द्रपुरी ।  
 अब्ररीहत० ना० पु० कचनार वृक्ष ।  
 अब्रर्याद० } ना० स्त्री० अनीति, अपह्ला,  
 अब्रर्यादा० } अतमान ।  
 अब्रल० पु० निर्भत, उमला, मादकास्तु, रात्र्य ।  
 अब्रलतास० ना० पु० बद्ध, लाठी, शीघ्र  
 विशेष ।  
 अब्रमात्य० ना० पु० म श्री, शिवान ।  
 अब्रमान० पु० सौन्दर्यभाव, मानरहित ।  
 अब्रमाना० अ० जि० समाना, भरना, सपना ।  
 अब्रमान्य० पु० जो मानने के योग्य नहीं है ।  
 अब्रमानुष० पु० मनुष्यतरहित, विना मनुष्य ।  
 अब्रमायस० } ना० स्त्री० वृषारक्षणी समाप्ति  
 अब्रमारुखा० } की विधि बदी १५ ।  
 अब्रमावाखा० }  
 अब्रमर० } पु० रीतिरहित, अकोष ।  
 अब्रमर० }  
 अब्रमिट० पु० जो भिट न जाये या मेघ न  
 जासके ।  
 अब्रमित० पु० जो नाश नहीं गया, बहुत ।  
 अब्रमिय० ना० पु० अदृष्ट, आवहवात ।  
 अब्रमियमूरि० ना० स्त्री० सजीवन वृद्धी ।  
 अब्रमित० पु० सहा, जो न मिले ।

अग्नी० ना० पु० अमृत ।  
 अमुक० सर्व० कोई, वह, अपुत्रा, फलाना ।  
 अमूल० शु० निस्की जड़ नहीं है ।  
 अमृत० ना० पु० पीयूष, सुधा, त्रिप, पाना, देन-  
 ता, शु० जो न मरे ।  
 अमृतफल० ना० पु० आवला ।  
 अमृतवह्वरी० ना० स्त्री० गुरुच, गिलोय ।  
 अमृता० ना० स्त्री० हरे, गुरुच, पट्टरी, नाम  
 चन्द्रमा की एक कला का ।  
 अमृताक्ष० ना० पु० प्रद्यूता, यथा ( अमृताक्षी  
 दशाङ्गुली ) इति िपट ।  
 अमृतेश० ना० पु० देवता, इन्द्र ।  
 अमेध्य० ना० पु० निष्ठा, मल ।  
 अमेय० शु० अप्रमाण, यथा आभगनर्त्तु निसरा  
 प्रमाण कोई न जानसके ।  
 अमोघ० शु० जो व्यर्थ नहा, सफल, अचूक,  
 फलदाता, ना० स्त्री० न, निरोप ।  
 अमोघा० ना० स्त्री० हरे ।  
 अमोल० शु० मालरहित, अपूर्णस्तु, बेनामत ।  
 अम्यत० शु० खटा ।  
 अम्यक० ना० पु० नेत्र, आस, यथा म्यम्बक,  
 अर्थात् शिव ।  
 अम्यर० ना० पु० आदर, आभारी, रख ।  
 अम्वरमणि० ना० पु० सूर्य ।  
 अम्वरा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।  
 अम्वरीष० ना० पु० राजाविशेष ।  
 अम्वरकी० ना० स्त्री० मार्त अम्वर ।  
 अम्या० ना० स्त्री० माता, महतारी ।  
 अम्वारी० ना० स्त्री० हाथी परका आसन  
 विशेष ।  
 अम्बिका० ना० स्त्री० मार्त अम्वर, माता, देवी,  
 पार्वती ।  
 अम्बिष्ठा० ना० स्त्री० रायलना ।  
 अम्बु० ना० पु० जल, पानी ।  
 अम्बुज० ना० पु० कमल ।  
 अम्बुद० ना० पु० मेघ ।

अम्बुधि० ना० पु० समुद्र ।  
 अम्बुपति० ना० पु० वर्षादेव ।  
 अम्बुवह्वरी० ना० स्त्री० जलपिपल ।  
 अम्बुवह० ना० पु० मेघ ।  
 अम्बुवासिनी० ना० स्त्री० मद्यली, कुम्भी ।  
 अम्बुभृत्० ना० पु० मेघ ।  
 अम्ब्य० ना० पु० कमल ।  
 अम्भफल० ना० पु० आर्भमेघ, यथा ( अम्भ  
 फल चाप ) इति निवट ।  
 अम्भोज० { ना० पु० कमल ।  
 अम्भोरह० }  
 अम्भा० ना० स्त्री० माता, मा, चर्चा, यह  
 शब्द अरबी का है ।  
 अम्भ्र० ना० पु० अम्र, आम ।  
 अम्भ्र० शु० खटा, खटाई ।  
 अम्भ्रान० शु० निर्मल ।  
 अम्भिका० ना० स्त्री० शिमलीवृक्ष ।  
 अम्भिलेख० ना० पु० अमलवत ।  
 अय० ना० पु० लोहा, गमायय यथा ( अयमय  
 खड्ग जगामय अजहै मूक अमूक ) ।  
 अयं० अयं० सर्व, यह ।  
 अयन० ना० पु० वर्षमा आया अर्थात् उत्तरायण  
 वा दक्षिणायन, मार्ग, घर ।  
 अयधार्थ० ना० पु० अन्धकार, अज्ञेय ।  
 अयमा० ना० पु० खटा खटा ।  
 अयान० { शु० भेद, नदय, खटा ।  
 अयाना० }  
 अयुक्त० शु० अतुलित, निगमित ।  
 अयुत० ना० पु० दश लाख ।  
 अयोग्य० शु० अतुलित, अन्धार्थ, बेना ।  
 अयोध्या० ना० स्त्री० अय की नदयागद-  
 धानी जहा अंगमावकार भक्त का ।  
 अयोनि० ना० पु० ब्रह्मा ।  
 अरगत० ना० पु० सुगत, वृषट ।  
 अरगा० शु० अलग, विष ।

अरगाना न० क्रि० अरगाना, अ० क्रि० अरग  
 हाना, ना० पु० अरगाना ।  
 अरगानी० ना० स्त्री० अर, अरगी ।  
 अरगे० अ० क्रि० हूट किया ।  
 अरइना० अ० क्रि० उल्लंभना, फसना ।  
 अरणा० ना० पु० देशभिशेष ।  
 अरणी० ना० स्त्री० अग्निप्रचारक काष्ठविशेष ।  
 अरण्ड० ना० पु० रेंदी का मूल अण्डमूल ।  
 अरण्य० ना० पु० जंगल, वन ।  
 अरणा० ना० पु० जगनी भैमा ।  
 अरनी० ना० स्त्री० जगली भैमा ।  
 अरधराना० अ० क्रि० पकुराया इतराना ।  
 अरराना० अ० क्रि० विनाशक मिरनका शब्द ।  
 अरराय० गु० विनाशक विनासहारा ।  
 अरलू० ना० पु० स्थानावृत्त ।  
 अरविन्द० ना० पु० कमल ।  
 अराजक० गु० राजा विना दश ।  
 अरि० ना० पु० बंरा शत्रु, दुश्मन ।  
 अरिल० ना० पु० धनविशेष ।  
 अरिष्ट० ना० पु० अशुभा, मृत्युदायक, रोग  
 वृत्त ।  
 अरिष्टक० ना० पु० रीता ।  
 अरिहा० ना० पु० शत्रुभक्षक, शत्रुना ।  
 अरी० अ० क्रि० स्त्रीका सम्बोधन ।  
 अरु० अ० अ० अरु, पु० ना० पु० कुम्हड़ा ।  
 अरुचि० ना० स्त्री० मनन, अनिच्छा ।  
 अरण० ना० पु० सागर, सूर्य, शालअररुह,  
 स्य का सारथी ।  
 अरुणचूड० } ना० पु० उरुग ।  
 अरुणाशका० }  
 अरण० ना० अ० जपायुष्य सुहृत्सवा पूल ।  
 अरुणार्द्र० ना० स्त्री० लाली ।  
 अरुणारे० गु० शाल ।  
 अरुणोदय० ना० पु० सूर्योदय के पहिले का  
 घटन, सूर्योदय ।

अरुणक० ना० पु० अरुणा ।  
 अरु० अ० अ० नीच नर का सम्बोधन, गु० अरु,  
 हटा ।  
 अरुच्य० ना० पु० अरुणा ।  
 अरुग० गु० भलाचगा, रोगरहित ।  
 अरुग्यशिक्षी० ना० स्त्री० अरुवाली ।  
 अरु० ना० पु० स्य, मदारवृक्ष, रक्तिक ।  
 अरुगुप्ती० ना० स्त्री० उधारोली ।  
 अरुगिशादा० ना० स्त्री० बर्ही कर्मा ।  
 अरुगजा० ना० पु० सुगंधि द्रव्यविशेष ।  
 अरुगना० गु० जो अरु न से रगा गया ।  
 अरु० ना० पु० पूजा करने की पूर्ण क्रि, अरु  
 वस्तु को मिलायके अरु हेतु अरुण, सूर्य की  
 पूजा करके जल दना भाव ।  
 अरु० ना० पु० अरुविशेष जिसमें दवना को  
 राना ब्रुति है वा जल दते है ।  
 अरुच० गु० अरु ।  
 अरुचन० } ना० क्रि० आराधना, पूजाकरण ।  
 अरुचना० }  
 अरुचा० ना० पु० पूजा ।  
 अरुचि० ना० पु० अरु, टेम या निचमक ।  
 अरुचिस्त० ना० पु० अरुचि ।  
 अरुजन० ना० पु० अरुजन, कर्मा, प्राप्ति ।  
 अरुजेना० ना० क्रि० कमाना, उपार्जन करना ।  
 अरुजेन० ना० पु० अरुविशेष, रुद्र, सुवर्ण,  
 सहस्रवाह, पाहवा तीसरा पुत्र, बहुभुज  
 धवल ।  
 अरुजध० ना० पु० सागर, समुद्र ।  
 अरु० ना० पु० अरुविशेष, निमित्त, सापर्य,  
 धन, दीलत्र मा, मत्तलन ।  
 अरुशास्त्र० ना० पु० धन के उपार्जन करने  
 का शास्त्र, नीतिशास्त्र ।  
 अरुसाधन० ना० पु० रीता, अरु का ठिक  
 करना ।  
 अरुथात् अ० अरु जाना अरु, यह, यानी ।

अर्धाङ्गुरोध० ना० पु० नाम के अङ्गुरों का, अर्ध के अङ्गुरों का ।

अर्धान्तर० ना० पु० दूरात् अर्ध ।

अर्धो० गु० धनी, मादी, अर्धवक्त्रा, प्रयोजनयुक्त, ना० पु० यावत्, अर्धो, ना० स्त्री० छाग, ताम्र, टिकी ।

अर्धवा० ना० पु० मीमांसिन ।

अर्द्ध० गु० अर्ध ।

अर्द्धचन्द्र० ना० पु० आभाचन्द्रमा ।

अर्द्धचन्द्रिका० गु० चालानिसीत, आर्धवादी ।

अर्द्धजल० गु० आभाजानी, मरणकाल ।

अर्द्धरात्रि० ना० स्त्री० आधीरात्रि ।

अर्द्धाङ्ग० ना० पु० आधाशरीर, शीतानु ।

अर्द्धाङ्गी० गु० शीतानी ना० स्त्री० पत्नी ।

अर्धण० ना० पु० दान, देना को भेद देना ।

अर्धना० स० कि० अर्धकरण ।

अर्धे० ना० पु० सौ विरोध १००००००००० ।

अर्धुद० ना० पु० दशविरोध, पर्यवधि ।

अर्धक० ना० पु० पुत्र, शिशुवर्ध ।

अर्धमा० ना० पु० सूर्य ।

अर्धकृ० गु० नीच, अन्ध, पहिली ।

अर्धपरी० ना० पु० शुद्ध करने के लिये अन्न दिङ्कना, छूना ।

अर्धन्त० ना० पु० जेनी ।

अर्ध० अ० अर्ध, समर्थ, पूरण, ना० पु० आमरण, आलस, बहुतायत ।

अर्धक० ना० स्त्री० बाचों की लड़, पूषर ।

अर्धक० ना० पु० कुटुम्ब, महारण्युत ।

अर्धकारली० ना० स्त्री० एकधर के बालों की ली ।

अर्धस्व० गु० अगोचर, अनदेखा, जोन पहिचान जाने, यथा ईश्वर ।

अर्धग० गु० भिन्न, उदा, लगान नहीं ।

अर्धगनी० ना० स्त्री० रग्नी निवार करके धरते हैं ।

अलगाद० ना० पु० परिहासाप, यथा-अलगादी जलज्याल इत्यमरः ।

अलगना० गु० भिन्न, निर्ब ।

अलगाना० स० कि० जडागना, अ० कि० उदा हांगा, अलग हेंगा ।

अलङ्कृत० गु० अलङ्कारयुत, आभूषित ।

अलङ्कार० ना० पु० भूषण, महाम और शाध विशेष ।

अलंग० ना० स्त्री० शेर, पार ।

अलभ्य० गु० जो मिलन के योग्य न हो ।

अलम् अ० बहुत, देर ।

अलम्बुपा० ना० स्त्री० रामा जो मुल से निरसती है, शलासाराखरया यथा- ( मुलपरि पालम्बुपा निम्बानि, कुहिला, के देश विरामित ) ।

अलवारि० गु० बोदिदिनी म्यानी, रामचन्द्रिका या यथा- ( यों सुनको सुभी अलवारि ) ।

अल्लेश० गु० बहुतायत, अनिरावासेग, अन्-भिमान ।

अलश० ना० पु० आलस्य ।

अलसाना० अ० कि० श्रीपाना ।

अलसी० ना० स्त्री० तीसी, अन्सी ।

अलक्षग० ना० पु० दुष्टचर ।

अलात० ना० स्त्री० बनेटी ।

अलात० ना० स्त्री० हाथीनाभे की सीनीर । निताको आदू करेते हैं ।

अलाप० ना० पु० आलाप, उच्चरय ।

अलापना० अ० कि० आलापना ।

अलाप० ना० पु० धृती, पूरा ।

अलि० ना० पु० विष्णु, अमर, वृश्चिक सग, स्त्री० सर्ती ।

अलिक० ना० पु० माया, मूठ ।

अलिन० ना० पु० अमर, ना० स्त्री० धिया ।

अलिनी० ना० स्त्री० अमरी, भोरी ।

अली० ना० स्त्री० सर्ती, दुती, स्त्री ।

अलीक० ना० पु० मूठ, मिथ्या ।

अलीन० गु० अयोग्य, अनुचित, बेमेल ।  
 अलीह० गु० अयाम्य, मूढ ।  
 अलेख० गु० अयत, अगवित, बहुत ।  
 अलेखावलैया० ना० स्त्री० निखावर और दीर्घाली  
 में पूजा जहायसे मचीना ।  
 अलोन० } गु० लोनरहित, फ्रीका ।  
 अलाना० }  
 अलोप० गु० छुना, विगाडा, नष्ट, प्रकट ।  
 अलोपना० स० क्र० छुपाना, गुप्तकरना ।  
 अलोल० गु० अल, धिर, ना० स्त्री० रसलकृद ।  
 अलौकिक० गु० जा लौकिक नहीं है अर्थात्  
 परलोक वा लाकानिक ।  
 अल्प० गु० थोडा, किम्वत् ।  
 अल्पतर० गु० बहुतथोडा ।  
 अल्पमी० गु० लज्जुडा, नाममन्त्र ।  
 अल्पनिद्रा० गु० स्त्री० थोडासोना ।  
 अल्पज्ञ० गु० कमसमझ, थोडाज्ञानरत ।  
 अल्पजु० ना० पु० आलूवरकारी ।  
 अत्र० अत्र० जिस शब्द के प्रथम में यह  
 सयत हाता है उसका अर्थ कभी भिन्नता,  
 कभी फैला का हाता है कभी नास्तित्, कभी  
 अनादर ।  
 अवकाश० ना० पु० आनर, हावकाश ।  
 अवकेशी० गु० बाम ।  
 अवगति० ना० स्त्री० ज्ञान, वा उरदरसा ।  
 अवगाह० ना० पु० अथाह ।  
 अवगाहन० ना० पु० स्नान, तेरना, पाह  
 लगाना ।  
 अवग्रहादि० अ० क्रि० याहलगाहे ।  
 अवर्गात्० गु० निर्दिष्ट, दुग, ना० पु० निदा,  
 दाप ।  
 अवगुण० ना० पु० रोग, दाप ।  
 अवघट० गु० कुषाट ।  
 अवचट० गु० एकटि, एकाए ।  
 अवडेरि० अ० क्रि० बहकाय, धोला देकर,

रामायणे यथा ( पक्ष च्छे गित मती विनाही  
 पुनि अवेरि मरानि ताही ) ।

अयतंस० ना० पु० पताशा, शिरोमणि ।  
 अयतरना० अ० क्रि० उतरना, प्रगट होना ।  
 अवतार० ना० पु० इंद्रर वा मनुष्यादि के  
 रूपत पृथानलपर प्रकाशिन होना, न म ।  
 अयतारिक० } गु० परमामा, इंश्वरअयतार  
 अयतारी० } लंहरा, यथा राम, कृष्ण ।  
 अवदात० गु० उन्वल, उत्तम, सुदर ।  
 अयदीच० ना० पु० गुजरानी ब्राह्मणोंकी जाति ।  
 अयध० } ना० स्त्री० वचन, मर्याद, सामा,  
 अयधि० } समय वा श्रीअथाप्यानी वा उस  
 के अर पाठरा, दस प्रसिद्ध ।  
 अयधान० गु० चौकस, सावधान, ना० पु०  
 चान्तार, वचन ।  
 अयध्य० गु० जो वधकरने के योग्य नहीं है ।  
 अयधूत० ना० पु० यामी, शिवपूजक ।  
 अयधूतमी० ना० स्त्री० यागिन ।  
 अयनी० ना० स्त्री० पूजा, धरती, जमीन ।  
 अयनीश० ना० पु० राजा, वादगाह ।  
 अयन्तिकार० } ना० स्त्री० उन्नेननगरी,  
 अयन्ती० } नदीविशेष ।  
 अयम्० ना० पु० तिथिकाक्षर, गु० नीच ।  
 अययव० ना० पु० अय वा शरीर का भाग ।  
 अयराधक० गु० सेवक, प्याना ।  
 अयराधित० गु० सेवित, प्यान क्रियेगय ।  
 अयराधना० स० क्रि० सेनाकरना ।  
 अयरुद्ध० वैधाहुया ।  
 अयरेखना० स० क्रि० लिखना, लकीकरना  
 अयरेखी० स्त्री० क्रि० लिखी, लकीर को ।  
 अयरोघ्र० ना० पु० बध, रोग, अय ।  
 अयलम्ब० ना० पु० आथय, आसरा, सहाय ।  
 अयि० ना० पु० पर्वत, शेष, सूर्य, रवण ।  
 अयिलम्बित० } गु० आधित, लकटन,  
 अयिलम्बी० } पथी ।  
 अयिरलि० ना० स्त्री० पाणि, पक्ति, कतार ।

अवलोकन० ना० पु० दर्शन, दृष्टि, देखाव ।  
 अवलोकना० स० कि० दर्शना, ताकना ।  
 अवश० गु० पराधीन, असमर्थ ।  
 अवशिष्ट० गु० शेष, उच्छिष्ट, बाकी ।  
 अवशेष० ना० पु० शेषवत्ता, बाकीरह ।  
 अवशेषित० गु० जो बाका रह गया ।  
 अवश्य० अय० चाहिये, निश्चय, कर्तव्य,  
 जरूरी ।  
 अवसर० ना० पु० सावधानता, धाते, समय,  
 मौक्य, इतिहास ।  
 अवसान० ना० पु० अन्त, समाप्ति, आखिर ।  
 अवसेरि० ना० सा० दर, राहदेवना, बाट  
 हेरना ।  
 अवस्था० ना० स्त्री० दशा, उमर, हालत आर  
 दुर्दशा ।  
 अवज्ञा० ना० स्त्री० अपमान, निन्दा, अज्ञात  
 तुच्छता, अचम् उतारना ।  
 अवार्ह० ना० स्त्री० नागचा, आमद ।  
 अवाक० ना० पु० भुगा, मरु, मानी ।  
 अवाक्य० गु० अकथ्य, मौनी, विरथ, वृथा ।  
 अवधो० गु० सा० सुलभगी, नाधरहित ।  
 अवधो० गु० विना बाध, अतर्क्य ।  
 अवधोपक्रम० गु० बाजारहितकर्म, अतर्क  
 कर्म ।  
 अवारी० ना० स्त्री० दुआ, पक्ति, रामायणे  
 यथा ( चारु बजाव विचित्र अवारी, मण्डिमय  
 गिरा ननु खकर सवारी ) अम्नात् ।  
 अवस० ना० पु० घर, मकान ।  
 अविकल० } गु० निश्चित, थाप ।  
 अविकलित० }  
 अविकार० ना० पु० विकाररहित ।  
 अविकारी० गु० जमानविकाररहित ।  
 अविराग० गु० व्यापक ।  
 अविरागि० ना० स्त्री० जान ।  
 अविलल० गु० अचल, धिर, बायम ।  
 अविचार० ना० पु० भूल, अज्ञान, नादानी ।

अविचारी० गु० विचाररहित, अन्यायी ।  
 अविद्वरि० गु० प्लुत, निकट ।  
 अविद्या० ना० स्त्री० भूल, अज्ञानता, माया  
 विगाहीन ।  
 अविनय० गु० डिठार्ह, चवीलाहट, गुलाबी ।  
 अविनाश० ना० पु० नाशरहित, कुशल ।  
 अविनाशी० गु० कुशल, जिसका नाश न होवे ।  
 अविनीति० गु० चञ्चल, दीठ ।  
 अविन्दु० गु० विदुररहित ।  
 अचिरल० गु० निरन्तर, अभेद ।  
 अचिरोध० ना० पु० चैन, सुख आनन्द, गु०  
 विरोधरहित ।  
 अचिरोधनी० ना० स्त्री० } गु० सुखी, बेस-  
 अचिरोधी० ना० पु० } टक ।  
 अचिलम्ब० न० पु० शीघ्रता, जल्दी, यत्न ।  
 अधिलभित० गु० शीघ्र, जल्द ।  
 अधिवार्दी० गु० जो विवाद न करे, शांत ।  
 अधिवेक० ना० पु० अधिचार, अज्ञानता, गु०  
 जो विवेकरहित हो ।  
 अधिवेकी० गु० विचारहीन, अज्ञानी ।  
 अधिशेष० समान जा विशेष नह ।  
 अधिश्रास० गु० ना० पु० अमर्तात, बेपुतवार ।  
 अधिश्रासी० गु० जिसकी प्रताति नहीं वा जो  
 किसीकी प्रतीति न माने ।  
 अधिशीण० गु० निरन्तर, अखण्ड, पूरा ।  
 अधेगी० ना० पु० विभारार्थीपति गु० जो  
 बेगना रहितहो ।  
 अधेर० ना० स्त्री० टील, मिलन, कुसमय ।  
 अधेला० ना० स्त्री० कुसमय, बेवह ।  
 अध्यक्त० गु० जो व्यक्त नहीं अर्थात् मान्य  
 नहीं ।  
 अय्यय० ना० पु० स्वर्ग, अरर, गु० जो व्यय  
 न हो, जिस शब्दको कारक न हो, कृप ।  
 अय्यवस्था० ना० स्त्री० जो शान्त से सम्बन्ध  
 नहीं है ।  
 अय्यवस्थित० गु० जो ठौर नहीं है ।

अव्ययहारित० गु० त्यागिन, धोकाहुधा ।  
 अव्ययवहित० गु० मिला, व्यवधान रहित ।  
 अग्रप्राप्ति० ना० स्त्री० लक्ष्य में लक्षणेका जो नहीं  
 जाना, प्रकट में प्रकटता रहित ।  
 अव्याकुल० गु० विनरोध, मायाजित, रामायणे  
 यथा - ( अयाहम गनि शम्भु प्रसादा ) ।  
 अग्रशुन० ना० पु० अपराशुन, धुराशुन ।  
 अग्रशुनी० गु० अपराशुनी, वरे लक्ष्यशुन ।  
 अशक्त० गु० निर्बल, लाचार, अममर्थ ।  
 अशक्ति० गु० निर्बल, असमर्थता, शक्तिरहित  
 देव ।  
 अशक्य० गु० असम्भन, शक्यतारहित ।  
 अशंक० } गु० निश्चय, निडर, बेझांक ।  
 अशंका० }  
 अशन० ना० पु० भोजन, खाना ।  
 अशुनि० ना० पु० वज्र ।  
 अशरण० गु० रक्षारहित, पनाहनी ।  
 अशास्त्र० गु० जो शास्त्र से बाहर है ।  
 अशास्त्रीय० गु० जो शास्त्र में उक्त नहीं है ।  
 अशिव० गु० भगव रहित, अशुभ ।  
 अशिष्ट० गु० निस्समा व्यवहार निरिदत है ।  
 अशुक० गु० असौख्य, अदुःख ।  
 अशुचि० गु० अपवित्र, अशुद्ध, नापाक ।  
 अशुद्ध० गु० अपवित्र, जो टीक नहीं है, गन्ती ।  
 अशुद्धता० ना० स्त्री० अपवित्रता, पूरु, मूल ।  
 अशुभ० गु० अमंगल, जो अशुभा न है, ना०  
 पु० पाप, दोष ।  
 अशेष० गु० समूचे, सारा, समस्त, सब ।  
 अशोक० ना० पु० वृक्षविशेष, सुख, चैन ।  
 अशोभा० गु० अमंगल, कुख्या, ना० स्त्री०  
 सुदतरहित, शोभाहीन ।  
 अशौच० गु० नापाक, अशुद्ध ।  
 अश्म० ना० पु० पत्थर ।  
 अश्मरी० ना० स्त्री० पथरी वा मूत्रवृद्धिरोग ।  
 अश्मभेद० ना० पु० पातावभेद ।

अश्रद्धा० ना० स्त्री० विन, विद, अनिरताने ।  
 अशु० ना० पु० आयु ।  
 अशुपात० ना० पु० आशुओं का गिरना ।  
 अश्लेषा० ना० स्त्री० श्लेषा, मूर्खानवप ।  
 अश्वर० ना० पु० घोडा ।  
 अश्वरगन्धा० ना० स्त्री० अमल-व औषधि ।  
 अश्वतर० ना० पु० सशर ।  
 अश्वत्थ० ना० पु० पीपलवृक्ष ।  
 अश्वत्थि० ना० पु० यह राना जिसके पान  
 पीने वा घुड़चढ़ेहो ।  
 अश्वमेध० ना० पु० राजविशेष यह अश्व रा  
 धिरान करमका है, जो जगत् जीतहो ।  
 अश्वसुज० ना० पु० कुसामास ।  
 अश्वरक्षक० ना० पु० सारि ।  
 अश्ववार० ना० पु० अश्वार, सवार, घुड़व  
 अश्वशाला० ना० स्त्री० तबेला, घोड़तान ।  
 अश्वहा० ना० स्त्री० कनेरवृक्ष ।  
 अश्व० ना० स्त्री० अश्वगन्ध ।  
 अश्वारूढ़० ना० पु० अश्ववार, सवार,  
 घुड़चढ़ा ।  
 अश्विनी० ना० स्त्री० प्रथमनक्षत्र ।  
 अथय० गु० निस्समा लय नहीं, घमिद ।  
 अथयघट० ना० पु० वह बरगद जो ३  
 में है ।  
 अथाङ्ग० ना० पु० चतुर्भुजा, अथाङ्ग, अथा  
 अथ० ना० पु० अथ = ।  
 अथद्विस्तर० ना० पु० आठकरी सारो  
 अथात् अग्न १ राशुके २, तद्व ३ कर्कोट  
 रास ४ कुलिङ्ग ६ पञ्चक ७ महापञ्चक ८  
 अथकोण० ना० पु० आठमंते ।  
 अथच चारिण्य० गु० अठनालीन ४ = ।  
 अथदिशाग्रह० ना० पु० आठ दिशाके  
 अथात् सूर्य, शुक्र, मङ्गल, राहु, शनि  
 चन्द्रमा, बुध, शुक्र ।  
 अथघातु० ना० पु० आठधातु अथात् मंत्रा



रूपा, तावा, पीतल, रागा, काता, सोमा, सोहा ।  
 अष्टपञ्चाशत् ० गु० अष्टात्रय ५८ ।  
 अष्टप्रहर ० गु० आठप्रहर, दिनरात्रि ।  
 अष्टभैरव ० ना० पु० आठ-भैरव अर्थात् अस्ति  
 ताग रुद्र, चण्ड, उमत्त, कोप, कपाली, श्रीपण,  
 फाल ।

अष्टम ० गु० आठवा ।  
 अष्टमांश ० ना० पु० अष्टवामांश १ ।  
 अष्टमी ० ना० स्त्री० आठवी तिथि, आठ ।  
 अष्टवसू ० गा० पु० आठवसू अर्थात् गाव, धुन,  
 सोम, धर, अनिल, आल, प्रभूष, प्रभाव त ।  
 अष्टविंशत्युत्तम ० ना० पु० अष्टादशम  
 लण अर्थात् फल १ चन्द्र २ क्रियाहृत ३ दुवा  
 ४ लोम ५ लग्नता ६ अच जा ७ अविना  
 ८ अशोभा ९ आनम्य १० अतिभिन्ना ११  
 दुग्ना १२ अदया १३ कृपाया १४ दण्डित्यु १५  
 राग १६ मलिनता १७ कुमानदान १८ अरु  
 कता १९ भोग्यता २० अयाहा २१ अद्वार  
 २२ अदना २३ कुदा २४ दुर्भाना २५ अम  
 तीति २६ मोह २७ अग्यराक्यता २८ ।

अष्टविंशति ० गु० अष्टादश २८ ।  
 अष्टसिद्धि ० ना० स्त्री० आठसिद्धि अर्थात् अ  
 ष्टिमा १ महिमा २ गरिमा ३ लघिमा ४ भासि ५  
 प्राद्यम्य ६ परास्तरण ७ ईशना ८ ।

अष्टांगप्रणाम ० ना० पु० स्त्री आठ अङ्ग प्र  
 णाम वादयडवत् ० प्रणाम अर्थात् उर, शिर,  
 टि, मन, यचन, पद, कर, जात्रम नमस्कार  
 करना ।

अष्टांगयोग ० गा० पु० योगके आठअंग अर्थात्  
 यम १ सयम २ धामन ३ प्राणायाम ४ प्रया  
 हार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ ।

अष्टादश ० ना० पु० आठारह २८ ।

अष्टादशपुराण ० गा० पु० अष्टारह पुराण  
 अर्थात् भागवत १ भविष्य २ मार्कण्डेय ३ मे  
 ल्य ४ ब्रह्मण्ड ५ ब्रह्म ६ स्कन्दैवर्त ७ विष्णु ८  
 वासु ९ रामन १० बगह ११ अग्नि १२ अथर्व १३

पद्य १४ धर्म १५ अथर्व १६ लिङ्ग १७ गण्ड १८ ।  
 अष्टादशस्मृति ० ना० स्त्री० अठारह स्मृति ।  
 अर्थात् मनु १ अत्रि २ विष्णु ३ याज्ञवल्क्य ४  
 हारीत ५ उशाना ६ अगिरा ७ आपस्तम्ब ८  
 सरस्वती ९ यम १० कात्यायन ११ बृहस्पति १२  
 पाराशर १३ व्यास १४ शङ्खलितित १५ गौ  
 तम १६ वसिष्ठ १७ दक्ष १८ ।

अष्टापद ० ना० पु० कच्चा, धुरप, पशु ।  
 अष्टाशक्ति ० गु० अस्ती ८० ।

असत्ख्या ० } गु० अगणित, वशुमार, वसुत ।  
 असंख्यान ० }  
 असंशय ० ना० पु० निश्चय, निरपदह ।  
 असकति ० ना० स्त्री० अशुलस्य ।

असकृती ० गु० आलसी ।  
 असगन्ध ० ना० पु० अशोभनेशोप ।  
 असगन ० गु० भिन्ना, प्रनचित, अर्थ ।  
 असज्जन ० गु० कुपान, तीच, दुष्ट ।  
 असन् ० गु० अनाडु, अपमा ।

असन ० ना० पु० भाग, तागा, वृषभिगेर ।  
 असनि ० ना० पु० यत्र ।  
 असन्तान ० गु० पुत्रहीन विवरा ।  
 असन्तुष्ट ० गु० अप्रमन, धरनराहित ।  
 असन्तोष ० गु० अशरजता ।

असभ्य ० गु० जो सभाक योग्य नहीं, दुष्ट, अशुभ ।  
 असभ्यता ० ना० स्त्री० दुना, अशुभ  
 नैवारण, बहसत ।

असम ० गु० जो बराबर नहीं, विन ।  
 असमजस ० गा० पु० अविन, अशुभ, विन,  
 लगान ।

असमय ० गु० अशुभ, निगमित ।  
 असमर्थ ० गु० ना समर्थ न हो, निर्बल ।  
 असमशर ० ना० पु० कामन ।  
 असम्पूर्ण ० गु० ना पूरा न हो ।  
 असम्बन्ध ० गु० अन्वेष, प्रनर्प ।  
 असम्भर ० गु० अन्वेष, जो न होमके ।

असम्मत्त० गु० विरुद्ध, वसलाह ।  
 असह० } गु० जा सहीं न जाय, कठिन ।  
 असह्य० }  
 असमाधि० गु० जा दूर न होतक रामायण  
 यथा ( दत्तात्रेयापि अस्तापि वदि ) ।  
 असाद्यु० गु० अधर्मी, दुष्मति, कर्मीना ।  
 असाध्य० गु० जा कामसिद्धि न होमक, रोगी  
 जो जीवे नहीं ।  
 असामर्थ्य० } ना० पु० कुछ सामर्थ्य नही, लाचार  
 असामर्थ्य० } गु० कुछ सामर्थ्य रहा रखता ।  
 असार गु० छूटा पाग सुन्दा, कच्चा काठ,  
 विनापौष्य, निर्बल ।  
 असि० ना० स्त्री० तुलना, अन्य० है, एत ।  
 असिद्ध० गु० अनवका, अनपरा, ना सिद्ध रहा ।  
 असिधेतुक० ना० स्त्री० उती ।  
 असिनि० ना० स्त्री० तलवार  
 अलिपत्री० ना० स्त्री० सहड ।  
 असिपुत्री० ना० स्त्री० छुरी करी ।  
 असिद्धक० ना० पु० मर, मर ।  
 असीम० गु० सीमारहित अथवा अतर्क  
 असीमा० गु० शिररहित ।  
 असीस० ना० पु० आसीपाद दुष्का ।  
 असु० ना० पु० पचप्राण जीव, राक्ष ।  
 असुग० ना० पु० विरप, नाय ।  
 असुर० ना० पु० श्रेय, राक्षस ।  
 असुरविनायक० ना० पु० नापासुर ।  
 असुरारि० ना० पु० श्वता, श्रीरामकृष्णादि ।  
 असुहर० गु० प्रणहर, मारनाला ।  
 असुम्न० गु० अश्रय निरुप ।  
 असूया० ना० स्त्री० कलह दाप ।  
 असौ० अथ० यह वच, इस वर्ष ।  
 असोक० ना० पु० अशक ।  
 असोमी० गु० चत, जा विद्या वा विचार से  
 न होस्के, जा पदितान क याण्य रही ।  
 असोचा० पु० निर्मादा प्रमादी ।  
 असोस० ना० स्त्री० दुर्ती नदी ।

असौ० अथ० यह ।

असोध० ना० स्त्री० कुवात, बदव ।  
 अस्त० ना० पु० क्षिपान, छुपान ।  
 अस्तव्यस्त० गु० निरति गिज, उचन पुन  
 नपेल ।  
 अस्ताचल० ना० पु० वह पान विरिज ज  
 सूर्यनारायण अस्त होते है ।  
 अस्तित्व० ना० पु० मान्दगा ।  
 अस्थि० ना० पु० हाड, हड्डी ।  
 अस्थिमात्र० गु० हड्डीभर ।  
 अस्थिर० गु० चल, चलथमान ।  
 अस्थिरता० ना० स्त्री० चंचला अस्थिरताहीन  
 अस्थिरशृङ्खला० } ना० स्त्री० हरसिपाक ।  
 अस्थिसहार० }  
 अस्थूल० ना० पु० सूक्ष्म, सूत ।  
 अस्थूलभटा० ना० स्त्री० बहीकण ।  
 अस्तसार० ना० पु० लहा ।  
 अस्वल्लब्ध० } गु० अधान, अपराधीन जो अथ  
 अस्वतन्त्र० } वरा म रहा है ।  
 अस्व यामा० ना० पु० द्रोपाचार्य का पुत्र ।  
 अस्वकार० ना० पु० ताम्र, अस्वकार नहीं ।  
 अस्सी० गु० असा = ० ।  
 अस्तो० ना० पु० नितरा केवक मारत है यथा  
 वण्य आदि ।  
 अह० ना० पु० दिन, अहकार, कण ।  
 अह० म, मे, हम, गिका बोधक ।  
 अहङ्कार० ना० पु० गर्व, मद घमण्ड ।  
 अहङ्कारी० } गु० अभिमानि दम्भा, मयार ।  
 अहङ्कृत० }  
 अहमित० गु० अहङ्कारयुक्त, मयार ।  
 अहस्तेयुका० ना० स्त्री० रणुका, बालू ।  
 अहनिशा० ना० पु० रातदिन ।  
 अहनाद० ना० पु० प्रम, अन्तराग ।  
 अहल्या० ना० स्त्री० गीतमना ना स्त्री ।  
 अहह० अथ० आर्षे शब्द यथा हाय हाय ।  
 अहारा० ना० पु० आहार, कलउ, लई ।

दास्ता० स० क्रि० माझियाना, चिपकाना, खेई  
लगाता, जमाना ।

दासी० गु० लोनाला, छापीहुई लकड़ी, कोई  
पशु जा माझियाई गई ना० स्त्री० कंठल पत्नी ।

द्वि० ना० पु० रान, कपिर, देत्यविशेष ।

द्विसक० गु० माला, सामु जा द्विसा ७ करे ।

द्विहित० ना० पु० शत्रु, बेर, शत्रुता ।

द्विफेन० ना० स्त्री० अफ्यून, अफीम ।

द्विहमाली० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।

द्विहर० ना० पु० नारपर्व, जानिारोप ।

द्विघञ्जरी० ना० स्त्री० गावेसि, पातआदि ।

द्विहिवान० ना० पु० महास्तोत्रा ।

द्विघेडि० ना० स्त्री० नागबलि, पानआदि ।

द्विहीर० ना० पु० माला, आमीर ।

द्विहीरखी० ना० स्त्री० ग्वालिन ।

द्विहीला० गु० माहसी, निडर, बहादुर ।

द्विहीश० ना० पु० शेरान्दि, सर्पादि ।

द्विहे० अय० सम्बोधन, थे ।

द्विहेर० ना० स्त्री० आलेख, शिषार ।

द्विहेरिया० } गु० आलेखनी, शिषारी ।

द्विहेरी० } गु० आलेखनी, शिषारी ।

द्विहो० अय० सम्बोधन वा आश्चर्य वा दर्प म  
बोला जाता हे, यथा द्विहोभाग्य ।

द्विहोहात्र० ना० पु० दिनराति ।

द्विहो० अय० अहो ।

द्विहो० ना० पु० नेत्र, बहेरावृत्त, पत्ता ।

द्विहोत० ना० पु० चानल, जन पूजाआदिने

गु० धानराहित, फोडारहित ।

द्विहोर० ना० पु० बजारान्दि वर्षे, गु० सूत्रम,  
अनिनाशी ।

द्विहोविद्या० ना० स्त्री० रमल ।

द्विहोविद्वान्० गु० रमाल, पासानाला ।

द्विहोस० ना० पु० रेस्ता, भूमिके उत्तर वा द  
क्षिण के द्रतक नञ्चे २ अश ।

द्विहो० ना० पु० नेत्र, आसि ।

द्विहोसंकेत० ना० पु० आसिसे इशरह फरना  
कटास, हानभाव ।

द्विहोव्य० गु० शिर, शांत ।

द्विहोहिणी० ना० स्त्री० सैत प्रमाण, इसका  
कथा कई प्रकार का हे । यथा ( जवनामसह

स पि नागे नागे सा रथा, रथे रथे शतचाशना

अश्वेअश्वे शतघरा ) अथवा दश वाही

अथवा १०६३२० पैदल, ६२६१० सवार,  
२१००० रथ, २१००० हाथी ।

द्विहो० अय० यहा, इस जगह ।

द्विहो० ना० पु० चंद्रमा के रिता, मुनिविशेष ।

द्विहोज० ना० पु० चंद्रमा, दुर्गाता, दत्तात्रेय

द्विहो० गु० मूर्खे० अज्ञान, नादान ।

द्विहोता० ना० स्त्री० मूर्खता, नादानी ।

द्विहोता० गु० अज्ञान, नामालूम ।

द्विहोता० गु० मूर्खे० भोला, नादान ।

द्विहोता० गु० मूर्खे० मूर्खता ।

द्विहोतानता० ना० स्त्री० मूर्खता, नादानी ।

( आ )

आ० अ० अ० मिस० शब्द के प्रथम में यह संयुक्त  
होता हे उसका अर्थ न्यून वा उलगा होजाता हे

आर कभी श्रिया० के अरि का शापक होताहे ।

आं० अय० स्वदेक्षिणा सूचन शब्द ।

आंक० ना० पु० अर, चिद्र, मदार ।

आंकना० स० क्रि० लल्ला, अंझना ।

आंख० ना० स्त्री० चक्षु, नेत्र ।

आंग० ना० पु० अंग ।

आंगन० } ना० पु० अंगना, सहा ।

आंगना० } ना० पु० अंगना, सहा ।

आंच० स्त्री० अग्निकी ताप ।

आंचर० } ना० पु० अचला ।

आंचल० } ना० पु० अचला ।

आंडू० ना० पु० आडू ।

आंट० ना० स्त्री० गाडि, विरुडता, ताक ।

आंटना० अ० क्रि० समाना, पहुँचना ।

आंटी० ग० स्था० केंगी, अटिया ।	आनम० ना० पु० बलवा प्रसारा करक वि०।
आंड० ना० पु० वृष, अरुड ।	दान म दूसर से आक हाग, चदार ।
आत० ना० स्था० आनई ।	आखण्डरा० ना० पु० द्र ।
आधी० ग० स्था० ककक, भगनापु ।	आखण्डलपुर० ग० पु० इ द्रलाक, स्वर्ग ।
आव० ना० पु० आम ।	आखत० ग० पु० अथत ।
आअ० } ना० पु० प० में राग विशप, आम,	आखा० ग० पु० वात, गटिया, बलनी ।
आय० } आमाशु ।	आखात० ग० पु० खलान ।
आयला० ना० पु० वृष वा पन विशप ।	आखु० } ना० पु० मृदा, वृष्ट ।
आसू० ग० पु० आलाका पानी ।	आखुख० } ना० पु० मृदा, वृष्ट ।
आर० ना० पु० अर, मदार ।	आखेट० ग० पु० अर, शिमार, मृगय ।
आरर० ना० स्था० खानि अर्थात् धातु वा रत्नादि	आखेटकी० गु० गिकारा, अरि ।
व उत्पन्न हानना स्वात ।	आख्या० ना० स्था० सहा, गाम ।
आकरीय० गु० ज, खान स उत्पन्नहा ।	आग० ना० पु० अग्नि ।
आकपण० ना० पु० मूल स खानग ।	आगत० गु० उपस्था ।
आकपित० गु० जो खानगया ।	आगम० ना० पु० वद व शिवातरशास्त्र विरत
आकाक्षा० ग० स्था० वाळा, इच्छा, चाह ।	भविष्यत् वा इ अवाई ।
आकालित० गु० बंधित, चदिता ।	आगमन० ग० पु० अनाई, आ ।
आकांक्षी० गु० अकारनमाला चाहक ।	आगमवृक्षा० ना० पु० शिव, गु० जा आगमनी
आकार० ना० पु० रूप डाल, सैन, सुरति ।	वात १२ वा आगम का पाठरूढ़व ।
आकारान्त० गु० निरुक्त अ त म आकारहाव ।	आगमविद्या० ना० स्था० आगम कहने की
आकाश० ना० पु० गगन, अस्मान, अम्बर ।	विद्या ।
आकाशपवन० ना० पु० तनाविशप, आकाश	आगमशानी० ना० पु० तांत्रिक वा अगमके
बल वा आकाशवा पवन ।	जानूता हान ।
आकाशवाणी० ग० स्था० वाणा जा आकाश	आगर० ना० पु० आधक वावर ।
से हाता है ।	आगरा० ना० पु० नगर विशप ।
आकाशविलासी० ग० पु० देवता, नक्षत्र, गु०	आगरी० ग० स्था० काठरा ।
जा आकाशमें विलासकर यथा पदा ।	आगलान्त० अल्प गललग ।
आकाशयेलि० ग० स्था० अमरवाल ।	आगा० ना० पु० सामना अगवाका ।
आकाशी० गु० आकाशका, स्वर्गीय ।	आगामी० गु० अगमद्वारा, अवेया ।
आकुल० गु० अकुल, वातर ।	आगार० ग० पु० घर, मरान ।
आकृति० ना० स्था० रूप, आकार, सुरति,	आगिल० गु० पहिला ।
बील ।	आगू० } अगम सामने, बद्धि, अम ।
आकृष्ट० गु० स्तीचाहुषा ।	आगे० } अगम सामने, बद्धि, अम ।
	आगोट० ना० स्त्री० चौकरी, ईद ।
	आग्रह० ना० पु० उपकार, निहालित, प्रहृष्ट ।
	आघात० ना० पु० चार मारपीट ।

प्राघार० ना० पु० घृत, धी, विद्वत्ता ।  
 प्राघु० ना० पु० मोल, मर्थादि, यथा विहारीलाय  
 सत्तरादिनाया । दाहा ( जम जलानि पाणिप  
 विनल भाजय आउ अवार, रह गुणा इ गत्पर  
 भला न सुहाहार ) ।  
 प्रागिरस० ना० पु० बृहस्पति ।  
 प्राचमन० ना० पु० आचमन अर्थात् भोजन वा  
 पूजा करने दे पहिले भाङ्गानल इथली म रत्तन  
 पाना वा कुर्वादिना ।  
 प्राघरण० ना० पु० परवृत्त, चात, व्यरहा, ०  
 अचार, गन्नाक्त क्रिया ।  
 प्राचार० ना० पु० विचारकरना, पास्वरज, परहत्  
 र्गर्भ, फारस ।  
 प्राचारी० गु० जा मनय शास्त्रोक्त क्रिया या  
 समत कर ।  
 प्राचार्य० ना० पु० वदना उपदेशक, गुरु ।  
 प्राच्छादन० ना० पु० बस, टकना, षोषी,  
 पश्याव ।  
 प्राच्छादित० गु० वस्युत, स्काभवा ।  
 प्राद्ये० पु० अथवा बहुवच्य ।  
 प्राज० अय० अय, समरोत्त ।  
 प्राजनेय० ना० पु० घोडा यथा ( आजनेया कुली  
 न स्वारनीता साकुसाहिन ययमर ) ।  
 प्राजा० ना० पु० दादा, पिताका पिता ।  
 प्राजाना० अ० कि० अचातकआग, पइना ।  
 प्राजि० ना० पु० युद्ध, समर, लडाई ।  
 प्राजीव० ना० पु० } जीविनानिर्वाह, मभारा ।  
 प्राजीविका० स्त्री० }  
 प्राटना० स० कि० भरना ।  
 प्राटा० ना० पु० बीस, गुना, पिमान ।  
 प्राठर्का० ना० पु० तन जिनमें स तल नि  
 लता है ।  
 प्राङ्ग० ना० स्त्री० आ, परदा ।  
 प्राङ्गा० स० कि० अकरता, आङ्गदेना ।  
 प्राङ्गम्यर० ना० पु० उद्योग, अभिमान, हर्ष ।  
 प्राङ्गा० गु० निर्या, टना ।

प्राङ्गी० ना० पु० रत्तन, ना० स्त्री० गान म रत्त  
 विशय टना निर्या, बेंडी ।  
 प्राङ्गेआना० अ० ङ्ग० रखा करना, बचावहा ।  
 प्राङ्ग्य० गु० धनाव्य, धना, स्वामी ।  
 प्राङ्ग्य० ना० पु० भयमान, दु स टां डर, मनप  
 रत्त ।  
 प्रातताप्ये गु० उक्त, इत्यन्ता, परस्त्रीहत्व ।  
 प्रातप० ना० पु० घाम, धूप ।  
 प्रातपत्र० ना० पु० हन ।  
 प्रातपी० पु० धूप स विष्णु ।  
 प्राता० ना० पु० सतापल ।  
 प्रातिथेय० गु० अनिधिरा सकार करना,  
 प्रातिथ्य० } आतिथिपालन, मनमानी ।  
 प्रातुर० गु० दु सता राणी, यात्रल, घानरा ।  
 प्रातृ० ना० स्त्री० गुन्नायिन ।  
 प्रातमघात० ना० पु० अपनीहया, निनघात ।  
 प्रातमघाती० गु० निन जाहता, अर्थात्, जाव  
 का दु सदाना ।  
 प्रातमज० ना० पु० पुन, लहरा ।  
 प्रातमनामी० गु० जा आरत प्रसिद्ध है ।  
 प्रातमपालक० पु० आपरार्थी, अपकाजा ।  
 प्रातमभू० ना० पु० धना ।  
 प्रातममात्र० ना० पु० समस्तजीव, जातर ।  
 प्रातमरक्षा० ना० स्त्री० निनर्जावकी रखा, इन्द्रा-  
 र्या अपाध ।  
 प्रातमक्षक० गु० निनर्जावपावरु ।  
 प्रातमश्लाघा० ना० स्त्री० निन मग रा अपनी  
 बडाई ।  
 प्रातमहा० गु० निनजावघाती, धमरहित ।  
 प्रातमा० ना० पु० स्त्री० जाव, म, गुद्ध, दह,  
 स्वभाव, धा, अन्तर, अहङ्कार, आप ।  
 प्रातिक० पु० मनकर, अयना ।  
 प्रातिकता० ना० स्त्री० अपनाहव ।  
 प्रातीप० गु० आदिक, अयना ।  
 प्रादर० ना० पु० सकार, समान, मनसे लना ।  
 प्रादरार्थ० गु० निनम अदर पापनाता है ।

आदर्शः } ना० पु० दर्पण, दीप्ति ।  
 आदर्शनः }  
 आद्रकः ना० स्त्री० अद्रक ।  
 आदानः ना० पु० लेना ।  
 आदिः गु० पहिला, जफ वगेरह, शुक्ल ।  
 आदिश्रन्तः गु० आरम्भ से समाप्तिक ना आदि  
 और अन्त, आद्यन्त ।  
 आदिकः अर्थ० इत्यादि और मन्त्र ।  
 आदितः } ना० पु० सूर्य ।  
 आदित्यः }  
 आदित्यवारः ना० पु० प्रथमदिन इतवार ।  
 आदित्यहृदयः ना० पु० प्रथम विश्व ।  
 आदित्यः ना० पु० देवता, आदित्यनाम ।  
 आदेशः ना० पु० आदेश, अनमति, योगीशोक्तों  
 का प्रणाम, व्याकरण में एक अक्षर को दूसरे  
 अक्षर से बदलने को कहते हैं ।  
 आदौः अर्थ० प्रथम, पहिले ।  
 आद्यः गु० पहिला, प्रथमका ।  
 आद्योपान्तः गु० पूरा, मन्त्र, समस्त ।  
 आधुनिकः गु० इसकालका ।  
 आधर्षः ना० पु० भय, डर, कठिन ।  
 आधाः गु० अर्ध, ३ ।  
 आधानः ना० पु० गर्भ, गर्भका धारण ।  
 आधारः ना० पु० प्रतिपालन, अधिकार, सहारा,  
 यागमें एक चक्रका नाम ।  
 आधारीः गु० सहाय पानेवाला ।  
 आधासीसीः ना० स्त्री० अर्धकाली ।  
 आधिः ना० स्त्री० मनकी पीडा, उदासी ।  
 आधिक्यः ना० पु० बढ़ती, अतिशयता ।  
 आधिपत्यः ना० पु० ऐश्वर्य, स्वामित्व ।  
 आधीनः अर्थ० अधीन, नाबेदार ।  
 आधी }  
 आधी }

आनः ना० स्त्री० आन, न, स्त्री० आना; मञ्जीव  
 सीगन्ध ।  
 आनकः ना० पु० आनक, उषा ।  
 आनदेयः ना० पु० और देना ।  
 आननः ना० पु० सुन, अर्थ० और नहीं ।  
 आननाः तं वि० लाना ।  
 आनन्दः ना० पु० } हर्ष, सुख, सुगी  
 आनन्दनाः स्त्री० }  
 आनन्दितः गु० खुश, हर्षित, विहाय ।  
 आनीः ना० पु० सुनी, सुना ।  
 आनी }  
 आनी } कि० लाउना ।  
 आनुकूल्यः ना० पु० सहायता ।  
 आनुपूर्वाः ना० स्त्री० मूलारवि, क्रम ।  
 आनुमानिकः गु० युक्ति, सिद्ध ।  
 आन्ध्रः ना० पु० तेलगदेश ।  
 आपः ना० पु० पानी, सर्व० स्वकीय, निज ।  
 आपराजः ना० पु० अपनासाम ।  
 आपर्जितः गु० जो अपने काम में लगा  
 रहता है ।  
 आपणः ना० स्त्री० प्रण, शर्त ।  
 आपत्तिः ना० स्त्री० क्षिपति, आकृत दोष ।  
 आपदः } ना० स्त्री० निपति, अभाग, कठि-  
 आपदः } नता ।  
 आपन्नः गु० प्राप्त, शरण्य, प्रसन्न, अभाग ।  
 आपत्तिः ना० पु० वर्यदेवता ।  
 आपरूपः गु० आप, विशय ईश्वर ।  
 आपसः सर्वे अपने, मदिकद ।  
 आपस्तम्भः ना० स्त्री० स्मृति विशेष ।  
 आपाधानः ना० पु० युद्ध, समर ।  
 आनः गु० जो विश्वास के योग्य है, प्राप्त, सच्चा  
 आप्तुतः गु० जो नहायपुत्रा ।  
 आक्रियोः तं वि० दिया, बध्ना, यह शब्द  
 अर्थ का है ।  
 आफूः }  
 आफूः } ना० स्त्री० अश्वत्थ, अरीम ।

आवाल० ना० पु० लडकापन, बालकता ।  
 आभरण० ना० पु० भूषण, गहना, जेवर ।  
 आभा० ना० स्त्री० भङ्क, शोभा, चमक ।  
 आमार० ना० पु० बोम ।  
 आमास० ना० पु० अभिप्राय, थोड़ाधरा, क्षेत्र विशेष ।  
 आमीर० ना० पु० भीलादि, गोप, अहार ।  
 आभूषण० ना० पु० अलंकार, गहना ।  
 आम० ना० पु० कच्चा, आमफल ।  
 आमय० ना० पु० रोग ।  
 आमर्ष० ना० पु० क्रोध, गुस्सा, टाह ।  
 आमर्षण० ना० पु० क्रोध करना ।  
 आमर्षि० अ० कि० श्लोभपुस्त होकर ।  
 आमलक० } ना० पु० आमलाफलविशेष ।  
 आमला० }  
 आम्राज० ना० पु० कोरा अनाज, सीधा ।  
 आमाशय० ना० स्त्री० पेटरी बैली जिसमें खाना रहता है वा इकट्ठा होकर पचता है ।  
 आमिष० ना० पु० मांस, गोश्त ।  
 आमिषाहार० ना० पु० मांसखाना ।  
 आमिषाहारी० गु० मांसखानेवाला ।  
 आमोद० ना० पु० आनन्द, हर्ष, सुगन्ध, सुवास ।  
 आन्धर० ना० स्त्री० वस्तु विशेष अर्थात् कहरुआ ।  
 आम्र० ना० पु० आवका फल वा वृक्षविशेष ।  
 आय० ना० पु० लाभ, धनागम ।  
 आयत० गु० लंबा, दीर्घ, घर, चौड़ा, ना० पु० घाम, धूप ।  
 आयतन० ना० पु० घर, मकान ।  
 आयत्त० गु० नम्र, अर्धान, साज ।  
 आयसु० ना० पु० आज्ञा, हुकम ।  
 आया० ना० स्त्री० लडकों को खिलानेवाली ।  
 आयास० ना० पु० परिश्रम, मिहनत ।  
 आयु० ना० स्त्री० जीवन, काल, उमर ।  
 आयुध० ना० पु० हथियार, अस्त्रस्त्र ।

आयुर्दा० }  
 आयुर्दाय० } ना० स्त्री० जीवा, काल, उमर, हयात ।  
 आयुर्धल० }  
 आयुर्प० }  
 आयुस्० }  
 आरुक्० गु० लाल, सुर्ख ।  
 आरुग्ध० ना० स्त्री० किरवाली ।  
 आरज० ना० पु० मर्यादक, मानी, उत्तम जन, श्रेष्ठ, आर्य ।  
 आरगड० ना० पु० रगड, अरबी का वृक्ष ।  
 आरति० ना० स्त्री० दस्त, अनिप्रेम, इश्क वा पूजा प्रसिद्ध ।  
 आरती० ना० स्त्री० स्त्रीपक्ष जलायके दाना को दिखाना ।  
 आरम्भ० ना० पु० प्रारम्भ, उपक्रम, उद्घाटन, शुरू, लगा लगाना ।  
 आरा० ना० पु० ताक, आला, लकड़ी चोरने वा अस्त्रविशेष ।  
 आराति० } ना० पु० शत्रु, बेरी ।  
 अराति० }  
 आराधक० गु० सेवक, भजन करनेवाला ।  
 आराधन० ना० पु० पूजा, भजन, सेवा ।  
 आराधना० स० कि० पूजा करना, अर्चना ।  
 आराम० ना० पु० उपवन, बगीचह, चैन ।  
 आरि० ना० स्त्री० भगडा, जिद, हठ, ब्रम-विलासे यथा ( देखत रहे खिलोना चदा, आरि न कीजिये बालगोविदा ) ।  
 आरुय० } ना० पु० जगल, वन, पुस्तकविशेष ।  
 अरुय० }  
 आरिष्ट० } गु० कठिन, दुःखद, बुरा ।  
 अरिष्ट० }  
 आरुक्० ना० पु० आइका फल वा वृक्ष ।  
 आरुक्क० ना० पु० मिलावावृक्ष ।  
 आरुक्क० ना० पु० सवार, गु० जो, चद्राहोवे ।  
 आरु० ना० पु० आराका बहुवचन ।  
 आरोग्य० ना० पु० चैम, कुशल, नीरोग ।

- आरोपित० शु० कल्पना किया गया, बनाया गया, सौंपा गया ।
- आरोप० ना० पु० कल्पना, बनावट ।
- आरोह० ना० स्त्री० } ऊपर चढ़ना, सोंढ़ा,  
आरोहण० ना० पु० } रीना ।
- आर्त्त० } शु० पीड़ित, दुःखित, व्याकुल ।  
आरत्त० }
- आर्त्त० शु० गीला, सीला ।
- आर्द्रा० ना० स्त्री० छटानकर ।
- आर्य्य० शु० उत्तमकुलोत्पन्न, कुलीन, उत्तम, श्रेष्ठ ।
- आर्य्यावत्तं० ना० पु० इह पवित्रदेश जो पूर्व समुद्रतटसे पश्चिम सिन्धुतट तक और हिमालय से विन्ध्याचल तक है ।
- आर्त्ती० ना० स्त्री० भूषणविषय जो रिया अर्घ्ये में पहिनी है, दर्पण ।
- आल० ना० पु० वृक्ष वा उसका फलविशेष, पाला, हरताल ।
- आलम्ब० ना० पु० सहारा, मदद ।
- आलम्बन० ना० पु० आश्रय, अवलम्ब ।
- आलय० ना० पु० घर, मरान ।
- आलयाल० ना० पु० भाला, भावला ।
- आलस० ना० पु० ढील, झुकी, मिथिलता ।
- आलसी० शु० ढीला, सुप्त, शिथिल ।
- आलस्य० ना० पु० आलस ।
- (आला० ना० शु० चारा, ताक, ताल जिसमें चिराय आदि रखने हैं ।
- आलान० ना० पु० छाया जिसमें हाथी बाधा जाता है, बैरी, जनौर ।
- आलाप० ना० पु० बातचीत करना, स्वरमिलाप ।
- आलि० ना० स्त्री० सती, पति ।
- आलिगन० ना० पु० परम्पर गल्लगाथा ।
- आलिगित० शु० प्रसंगित, भंगीदुई ।
- आली० ना० स्त्री० सती ।
- आलु० } ना० पु० विलायती कड़विशेष ।  
आलु० }
- आलोक० ना० पु० ज्योति, दृष्टि, चापलोती ।
- आलोकन० ना० पु० दृष्टि देकर देखना ।
- (आवभ० ना० पु० बानाविशेष ।
- आवरण० ना० पु० टाल, आच्छादन, विरूप, भँवर, वेरा ।
- आवत्तं० ना० पु० भँवर जो पानीमें होता है ।
- (आवर्हा० ना० स्त्री० चाबुधार, उमर ।
- आवनो० अ० कि० आना ।
- (आवभक्ति० }  
आवभक्त० } ना० स्त्री० मान, ममान, आदर ।  
आवभक्ति० }
- आवलि० ना० स्त्री० पानि, पक्ति ।
- आवश्यक० शु० निश्चय वर्तव्य, जरूरीकाम ।
- आवश्यकता० ना० स्त्री० जरूरत ।
- आवा० ना० पु० ब्रह्म देवकी राजधानी ।  
कुम्हार जिसमें बर्तन पकाना है, अ० कि० आया ।
- आवाई० ना० स्त्री० चर्चा, समाचार ।
- (आवागमन० }  
आवागमन० } ना० पु० आनाजाना ।  
आवागमन० }
- आवाजाई० ना० स्त्री० बलिपड़ना, आना जाना ।
- (आवाती० ना० स्त्री० चर्चा ।
- आवाधा० ना० स्त्री० भूमिखण्ड ।
- आवास० ना० पु० घर ।
- आवाहन० ना० पु० सादर बुलाना, बुलाना ।
- आविर्भाव० ना० पु० प्रकटहोना ।
- आविर्भूत० शु० प्रकटवस्तु ।
- आविष्ट० शु० जो भूतादिक करके प्रस्त है ।
- आवृत० इ० चिराडुआ, वेष्टिन ।
- आवृत्तिक० ना० स्त्री० उद्गीरणी, पदाडुआ, इहराना, दब ।
- आसक्त० शु० मोहित, गट्टपट, लान और अतिरत ।



**आशक्ति०** ना० पु० चाह, प्यार ।  
**आशंका०** ना० स्त्री० भय, डर, सन्देह, शक ।  
**आश्रय०** ना० पु० अभिप्राय, आश्रय, मतलब,  
 मजमून ।  
**आशर०** ना० पु० निशाचर, दैत्य ।  
**आशा०** ना० स्त्री० आसरा, भरोसा ।  
**आशावन्त०** गु० आसरिका, उम्मेदवार ।  
**आशावसन०** गु० नगा, तृष्णा रहित ।  
**आशावान्०** गु० आशावत ।  
**आशिय०** ना० पु० } दुआ, भला मनाना,  
**आशिपा०** स्त्री० } अच्छा चाहना ।  
**आशीर्वाद०** पु० }  
**आश्चर्य्य०** ग० अद्भुत, ना० पु० अचम्भा,  
 विस्मय ।  
**आश्चर्य्यवन्त०** गु० तश्चद्भुत म, अचम्भित ।  
**आश्रक०** ना० पु० कपिर, लोह, मून ।  
**आश्रम०** ना० पु० हिन्दू लोगों म चारि आश्रम  
 अर्थात् ब्रह्मचारी १ गृहस्थ २ वनप्रस्थ ३  
 सन्यासी ४ आर ऋषियों रहनेका स्थान, परा  
**आश्रमी०** गु० आश्रम धरनेवाला ।  
**आश्रय०** ना० पु० आसरा, समीपता, गु० अधी  
 न, शरण, छल ।  
**आश्रित०** गु० आधीन, कानू परवश ।  
**आश्रयास०** ना० पु० भरोसा, समाप्ति, श्रयाय ।  
**आश्रयन०** ना० पु० कुवार सातवामास ।  
**आपत०** ना० पु० अचन चावलादि ।  
**आपर०** ना० पु० अरर वर्ष ।  
**आपाद०** ना० पु० आषाढ चौधामहीना ।  
**आस०** ना० स्त्री० आशा, भरोसा ।  
**आशंसार्थ०** गु० निससे इच्छा का बोध  
 होता है ।  
**आसक्त०** गु० आशक्त, फरेफनह ।  
**आसक्ति०** ना० स्त्री० आशक्ति, प्रीति प्रेम ।  
**आसन०** ना० पु० निस्तर, सेन, योगासन, बैठने  
 के लिये कुशा वा काष्ठ वा ऊनकी वस्तु बैठक,  
 जाप के भीतरी श्रौर ।

**आसनगत०** गु० बैठाहुआ ।  
**आसनी०** ना० स्त्री० ऊन वस्त्रादि विधीना ।  
**आसन्न०** गु० निकट, पास ।  
**आसन्नकोण०** ना० पु० पास का कोना ।  
**आसन्नभूत०** ना० पु० निकटही व्यतीतभया ।  
**आसपास०** गु० लगभग ।  
**आसमुद्र०** ना० पु० समुद्रपर्यंत ।  
**आसय०** ना० पु० आशय ।  
**आसर०** ना० पु० आगर, दैत्य ।  
**आसय०** ना० स्त्री० मदिरा निरोध, शरान ।  
**आसा०** ना० स्त्री० आगा ।  
**आसाम०** ना० पु० देशविशेष ।  
**आसागरी०** ना० स्त्री० रागिनी विगण, कपोत  
 विशेष, कपडा विशेष ।  
**आशिप०** ना० स्त्री० आशिप ।  
**आसीन०** गु० बैठाहुआ ।  
**आसीविप०** ना० पु० साप ।  
**आसील०** ना० स्त्री० आशीर्वाद ।  
**आसु०** गु० शीघ्र, शिताबी ।  
**आसुग०** गु० वाण, वायु, सूर्य्य ।  
**आस्तोप०** गु० शास्त्र प्रसन्न हानवाला ।  
**आसुर०** ना० पु० असुर वा कोई असुर ।  
**आसुरी०** ना० स्त्री० राक्षसीमाया, निशाचरी ।  
**आस्कत०** ना० स्त्री० आलस्य ।  
**आस्कती०** गु० आलसी ।  
**आस्ति०** ना० पु० वेदधर्मोक्तावत्, साधुता,  
 धर्मशक्ति, हस्ती ।  
**आस्तिक०** ना० पु० धर्म के धर्मों के फलक,  
 विश्वासी, साधु ।  
**आस्था०** ना० स्त्री० टक, सभा, परिश्रम ।  
**आस्पद०** ना० पु० स्थान, पद, सिताव ।  
**आस्पोत०** ना० पु० कचनारवृक्ष ।  
**आश्रप०** ना० पु० असुर, दैत्य ।  
**आस्वाद०** ना० पु० रसका अनुभव ।  
**आह०** ना० स्त्री० साहस, वीरता, धीरज ।  
**आहट०** ना० पु० घग, शब्द, आवाज ।

आहा० अव्य० खेदका सूचक शब्द ।  
 आहार० ना० पु० भोजन, खाना ।  
 आहारी० शु० भोजन करनेवाला, भोजन के  
 योग्य ।  
 आहि० अव्य० है ।  
 आहुत० } ना० स्त्री० देवताओं के लिये होमने  
 आहुति० } के लिये जो वस्तु घृतादि ।  
 आहवनीय० ना० पु० अग्निविशेष ।  
 आहुक० ना० पु० उमसेन राजाका पिता ।  
 आहुतदान० ना० पु० ब्राह्मणको युलाकर पर  
 पर दानदेना इसको मध्यम दान कहते हैं ।  
 आहिक० ना० पु० प्रतिदिन धर्मका कार्य ।  
 आहिकगति० ना० स्त्री० एक दिनकी चाय,  
 प्रतिएकग्रह का नित्यमचक्र ।  
 आहा० ना० पु० जलाशय ।  
 आहाद० ना० पु० हर्ष, आनन्द ।  
 आहादित० शु० हर्षित, आनन्दित ।  
 आहान० ना० पु० आवाहन, पुकारना ।  
 आक्षेप० ना० पु० दुर्वचन, निंदा ।  
 आक्षोदन० ना० पु० आलेट ।  
 आत्रेय० ना० पु० अत्रिका पुत्र ।  
 आत्रेयी० ना० स्त्री० नदी विशेष जो बंगालमें है ।  
 आक्षा० ना० स्त्री० आदेश, हुक्म ।  
 आक्षाकार० } शु० जो आक्षार चले, सेवक,  
 आक्षाकारी० } तावेदार ।  
 आक्षाद० ना० पु० जो आक्षा देवे, हाकिम ।  
 आक्षानुयायी० शु० अक्षानुवर्तनेहारा ।  
 आक्षानुसार० ना० पु० हुक्म के अनुविन ।  
 आक्षानुचरि० शु० तावेदार, सेवक ।  
 आक्षामिलापी० शु० आक्षावाहनेवाला ।  
 आक्षार्थ० शु० आक्षा का बोध निससे होता है ।  
 आक्षालंघन० ना० पु० उदूलहुक्मी, हुक्म न  
 मानना ।

( ३ )

इक० शु० एक ।  
 इकटक० ना० पु० एक ताक से देवना ।  
 इकट्टा०  
 इकट्टी० } शु० जो एक जगह में जमाहोवे ।  
 इकठौरा० }  
 इकठौरी० }  
 इकसार० शु० सरिता, सटरा, समान ।  
 इकारान्त० शु० जिस शब्दके अन्तमें इकार है ।  
 इका० शु० अकेला, अद्वितीय, एका ।  
 इंगलएड० ना० पु० देशविदेश, जिसमें लण्डन  
 नगर प्रसिद्ध है ।  
 इंगलएडीय० शु० जो इंगलएडका है ।  
 ईगित्त० पु० इच्छा, समान, चलनेवाला ।  
 इंगित० ना० पु० सैन, सकेत, आगमन, सौन ।  
 इच्छा० ना० स्त्री० मनोरथ, चाह ।  
 इच्छाचारी शु० मनोवत्गामी, मन्थरहित ।  
 इच्छित० शु० इच्छा समाना, चाहा हुआ ।  
 इच्छितफल० ना० पु० चाहाहुआ फल वा  
 धर्म ।  
 इच्छानुसार० ना० पु० इच्छावत्, चाहना ।  
 इच्छन० ना० पु० नेत्र, दृष्टि ।  
 इडा० ना० स्त्री० धरती, देवी, माई श्वास्त ।  
 इत० } अव्य० यहा, इधर ।  
 इते० }  
 इतना० शु० यह शब्द परिमाण वा अत्रि वा  
 शपक है ।  
 इतनी० ना० स्त्री० सैन्य, शु० इत प्रमाण ।  
 इतर० शु० अन्य, रहित नीच ।  
 इतरलोग० ना० पु० धोईजानि, लोकांतर ।  
 इति० अव्य० समाप्तिका बोधक है, अत्रि,  
 इसप्रकार ।  
 इत्याल० ना० पु० मिलान, सामाना, सुभाविलहा  
 इत्यादि० ना० पु० आदिक, वगैरह ।  
 इतिहास० ना० स्त्री० वृत्तांत, प्राचीन कथा,  
 पुराणादिनी वार्ता, तारीख ।

इतो० } शु० इतना ।  
इती० }

इदम्० सर्व० यह ।

इदानीम्० अव्य० यहा, इतनागह ।

इधर० अव्य० यहाँ, इसठीर ।

इन्दारा० ना० स्त्री० नक्षत्राणां कृशा ।

इन्दिरा० ना० स्त्री० लक्ष्मी ।

इन्दीवर० ना० पु० नील कमल, पौधा विशेष ।

इन्दु० ना० पु० चंद्रमा ।

इन्दुर० ना० पु० उदुर, चूहा ।

इन्दौर० ना० पु० नगरविशेष ।

इन्द्र० ना० पु० देवताओं का राजा, प्रभा ।

इन्द्रगोप० ना० पु० नीरवहूरी ।

इन्द्रशिल्प० ना० पु० मेषादा, शु० जो इंद्रको जीते ।

इन्द्रपुरी० ना० स्त्री० इन्द्रका नगर ।

इन्द्रप्रस्थ० ना० पु० दिल्लीनगर ।

इन्द्रधनु० } ना० स्त्री० नीरवहूरी कीका,  
इन्द्रधनुषी० } लाल रङ्गका वर्षा में हाताहे,  
इन्द्र की पत्नी ।

इन्द्रयव० ना० पु० कुटुज का फल, इन्द्र जी,  
श्रीपथि विशेष ।

इन्द्रवारु० ना० पु० }  
इन्द्रवारुणी० स्त्री० } श्रीपथिविशेष ।  
इन्द्रविपादिनी० }

इन्द्राणी० } ना० स्त्री० शची, इन्द्रकी पत्नी  
इन्द्रायणी० }

इन्द्रायन० ना० पु० वृक्षविशेष या उसकाफल  
जो अतिसुन्दर और कठुवा होनाहे ।

इन्द्रासन० ना० पु० इन्द्रका सिंहासन ।

इन्द्रिय० } ना० स्त्री० जिसे रूप रसादिका  
इन्द्रिणी० } ज्ञान होताहे वह दैवकार की दरा

हैं पाच कर्भोद्वय अर्थात् हाथ, पाव, मुदा विंग,  
मुख थार पाच ज्ञानोद्वय अर्थात् कान, नोक,  
कान, जीभ, त्वचा ।

इन्द्रघन० ना० पु० जलानेकी पत्नी इन्द्रादिदेव

इम० ना० पु० हाथी ।

इमपालक० शु० महापत पीलवान ।

इम्य० ना० पु० स्वामी ।

इमम्० सर्व० यह शु० ऐसा, इसप्रकार ।

इमि० शु० इसप्रकार ।

इला० ना० स्त्री० धरती, गारी, भवानी, देवा,  
बुद्धि, सरस्वती ।

इलायची० ना० स्त्री० फलविशेष, एला ।

इलावृत० ना० पु० पृथ्वीके नवतरणों में से एक ।

इला० ना० पु० मसा ।

इव० अव्य० तरह, प्रकार, जैसे ।

इष्ट० शु० पूजित, प्यारा, वांछित ना० पु०  
देवता, मनुष्य, चर्हीना, वस्तुचर्हीता ।

इष्टदेव० ना० पु० पूजित देवता, जिस देवकी  
सेवाकरे वा प्याव ।

इष्टा० ना० स्त्री० प्रिय, प्यारा ।

इष्टित० शु० विचारित, जो मातागया ।

इष्टासन० ना० पु० धनुष, रमटा, कमान ।

इष्टु० ना० पु० बाण, तीर, आश्विनमास,  
थार गणित में ५ ।

इष्टुधी० ना० स्त्री० पु० धनुष, कमान, कर्मग ।

इष्टुधीपति० ना० पु० धनुषके अर्जुनगदि ।

इष्टी० ना० पु० लोहे का यंत्र जिससे धनुष  
कैसे समालता है ।

इस्पात० ना० पु० पहाड़ ।

इह० सर्व० यह ।

इहलोक० ना० पु० मनुष्यलोक

इहु० ना० उत, उत

इष्टुगया० }  
इष्टुवर्ता० }

इष्टुसर्प० }  
इष्टुसर्प० }

इष्टुसर्प० }  
इष्टुसर्प० }

इष्टुसर्प० }  
इष्टुसर्प० }

ईडुचा० ना० पु० गिरपर बोझ रखने का टेंका  
जो कपड़ा वा सन मृन्धादिक होता है ।

ईकारान्त० गु० जिस शब्दके अन्तमें ईकार है ।

ईख० ना० स्त्री० उत्ख, उत्सारी, इखु ।

ईठ० गु० इष्ट, प्रिय, मित्र, ना० पु० गगन,  
देवता ।

ईडि० ना० स्त्री० दोस्ती, प्रीति, सखी ।

ईदि० ना० स्त्री० अग्नेको अधिकजानना, इठ ।

ईति० ना० स्त्री० बाधा, दुःख ।

इ० ना० स्त्री० सुमत्मानों और यहूदियों में  
एक पर्वहोता है रमजान के पीछे, अरबी  
शब्द है ।

ईदश० गु० ऐना ।

ईर्षा० ना० स्त्री० हिसक, द्वेष, डाह, इत्तद ।

ईशा० ना० पु० ईश्वर, प्रभु, स्वामीविशेष, शिवजी,  
विष्णु, नारायण ।

ईशाना० ना० स्त्री० प्रमानता, महत्त्व, माया,  
सिद्धिविधाप ।

ईश्वर० ना० पु० प्रभु स्वामीविशेष, परमात्मा,  
शिवजी, विष्णु, नारायण ।

ईश्वरता० ना० स्त्री० } मायायोगमाया, कु

ईश्वरत्व० ना० पु० } दत्त ।

ईश्वराराधन० ना० पु० परमेश्वरका भजन ।

ईशान० ना० पु० सदाशिव, ईशानकोष ।

ईशानकोष० ना० पु० पूर्व उत्तर का कोना ।

ईषत्० } गु० धोखा, - , गन्ध, ।  
ईषद्० }

ईस० ना० पु० ईसा, मालिक ।

ईह० } ना० स्त्री० चेष्टा, इच्छा, उत्पन्न ।  
ईहा० }

ईक्ष्ण० ना० पु० चक्षु, आत्ति, दृष्टि ।

( उ )

उचाई० ना० स्त्री० }  
उचान० ना० पु० } उचागा, उच्चति,  
उचाय० ना० पु० } बलदी ।  
उचाहट० स्त्री० }

उचाना० स० कि० ऊँचाकरना, उठाना ।

उडेलना० स० कि० धक्कादेकर गिराना, ड-  
लना ।

उफटा० गु० घसाकाष्ठ वा वृक्ष ।

उकत० ना० स्त्री० उक्ति, वृत्त ।

उकताना० अ० कि० धक्काना, धक्कना, छुड़ना

(उकतारू० ना० पु० उपनाऊ पर्वी ।

उकतारना० स० कि० सँभालना, पक्करना ।

उकसना० अ० वि० उठना, उपरको चढ़ना,  
वा नुदना ।

उकसाना० } स० कि० उठाना, चढ़ाना ।  
उकसना० }

उकू० गु० कथिन, कहाइथा ।

उक्लि० ना० स्त्री० कथन, भाषा, चतुराई,  
कहना ।

उखड़ाना० अ० वि० उजड़ग, निमस्थान से  
हटना ।

उखड़हा० गु० उखड़ाभया ।

उखड़ना० } स० कि० उजाड़ना, निमस्थान से  
उखाड़ना० } हिलाना ।

उगना० अ० वि० उतराहीना, जमना, व-  
दना ।

उगलना० स० कि० मुख में वाई बस्तु गल  
कर फिर निकालना ।

उगल० ना० पु० जो चबाय के मुख में से  
फँका ।

उगाहना० स० वि० जमथकरना, तहसीलना ।

उगाही० ना० स्त्री० भ्यानलेना वा वह रूप  
जो महाजन आटके नव वा नव के दरा  
दराके ग्यारह प्रतिमास एक २ रुपया कर  
लेता है ।

उग्र० गु० क्रीपी, कटोर, भयकर, तेज, ना०  
पु० धीराहुरजी ।

- उग्रगन्धा० ना० स्त्री० अजयान, मच श्रीर  
 लहसुन० गु० जिसकी गन्ध यठिन है ।  
 उग्रसेन० ना० पु० राजा कस था पिता ।  
 उघटना० स० वि० किसी पर उपकार करके  
 रहना वा बात मारना, ताना देना ।  
 उघड़ना० अ० क्रि० नगा होना, खुलना ।  
 उघरे० गु० खुले, प्रगटे ।  
 उघाड़ना० } स० क्रि० नगाकरना, सोलना ।  
 उघारना० }  
 उघारी० गु० नगी, खुली ।  
 उचकना० अ० क्रि० वृद्धिके उठाना, उद्धरना ।  
 उचकाना० स० वि० उपर की उठाना वा  
 चढाना ।  
 उचका० गु० खोर, उठाईगीर ।  
 उचटना० अ० क्रि० धनगर होना, बिछुडाना,  
 न लगना, उलटना, किसलना ।  
 उचरङ्ग० ना० पु० पनगा ।  
 उचरना० अ० क्रि० वात निरलना, उलटना ।  
 उचाट० गु० उदासी, जी न लगना ।  
 उचाटना० स० क्रि० उदासकरना, उलटना ।  
 उचारना० स० क्रि० उचारणकरना, निरलना ।  
 उचित० गु० योग्य, ठीक, मुनासिब ।  
 उचिलना० अ० क्रि० पटना, छुटिजाना ।  
 उचेलना० स० क्रि० मिली हुई वस्तु की अलग २  
 करना, उधेड़ना ।  
 उच्च० गु० उचा ।  
 उच्चाटन० ना० पु० जी नङ्कना, जी का न  
 लगना ।  
 उच्चार० ना० पु० पुरीष, मल, पाखाना ।  
 उच्चारण० ना० पु० शब्दकहा वा निकलना ।  
 उच्चारना० स० क्रि० उचारना, नङ्क रहना ।  
 उच्चैःश्रवा० ना० पु० सूर्य का घोड़ा ।  
 उच्छिन्न० गु० निर्मूल, उलझा, तराव ।  
 उच्छ्लित० गु० उद्वलता भया ।  
 उच्छिष्ट० ना० पु० जूठनि वा जूठा, भोजन  
 अवशेष ।  
 उच्छ्वास० ना० पु० श्वास, आशा ।  
 उच्छंग० ना० स्त्री० गोद, पनिया ।  
 उच्छरना० } अ० क्रि० वृद्धना, उठाना ।  
 उच्छलना० }  
 उच्छालना० स० वि० वृद्धना, उपर की  
 फेंकना ।  
 उच्छाह० ना० स्त्री० श्रान्त, सुखी ।  
 उजड़ना० अ० क्रि० नारा होना, मिटना,  
 भगना, वैरान होगा ।  
 उजला० गु० उजल, सफेद, निर्मल ।  
 उजागर० गु० यशान्त, चटकीला, सुन्दर ।  
 उजाड़० गु० सूना, वनतण्ड, वैरान ।  
 उजड़ना० स० क्रि० सूनाकरना, नाराकरना,  
 वैरान करना ।  
 उजालना० स० क्रि० उजाला करना ।  
 उजाला० ना० पु० ज्योति, तेज, प्रकाश ।  
 उजाली० ना० स्त्री० चादनी ।  
 उजास० ना० पु० उजैला ।  
 उज्जल० } गु० निर्मल, चोखा, चमकीला,  
 उज्ज्वल० } साफ, सुन्दर ।  
 उभक्तित्ति० गु० भावति, ताकत ।  
 उभक्तना० अ० क्रि० देखना, स० क्रि० नि-  
 भाना ।  
 उठंगन० ना० स्त्री० पोधा विशेष, और नदी जो  
 ग्यालियर के पास है ।  
 उठंगन० ना० पु० टेकन ।  
 उठना० अ० क्रि० खड़ाहोना ।  
 उठचैठ० ना० स्त्री० घबराहट, साधन विशेष ।  
 उठचैया० ना० पु० उठनियाला ।  
 उठाना० ना० पु० उरपा, दिताई ।  
 उठाना० स० क्रि० खड़ाकरना, उपर लेजाना ।  
 उठना० अ० क्रि० भागना ।  
 उठान० ना० स्त्री० उठने की चाल ।  
 उठाना० स० क्रि० उठादेना, भगादेना ।  
 उठाऊ० ना० पु० लुंरा, बहुत खर्च करवेया ।  
 उठु० ना० पु० पत्नी, नहन, मेघ, मह ।

उड्डगण० ना० पु० तारागण ।  
 उडुप० ना० पु० घनर्ष, वेडा ।  
 उडिया० ना० स्त्री० उडिसदेश की भाषा ।  
 उड्डी० ना० स्त्री० नाव ।  
 उडैसा० ना० पु० देशविशेष जहा भीमगन्धाय  
 पुत्रोत्तम विराजमान है ।  
 उड्डान० ना० स्त्री० उड्डा, सरकून में नपुंसक ।  
 उड्डना० स० क्रि० श्रौडना, ना० पु० श्रौडने  
 का नक्ष ।  
 उड्डाना स० क्रि० श्रौडना, टापना ।  
 उत० अन्य० उपर, उधर, जिस शब्द के प्रथम  
 में यह युक्त हो उसका अर्थ अधिक लिया  
 जाना है ।  
 उडुंग० } गु० ऊचा, धामायणे यथा ( धनि  
 उडुंग० } उतम जलनिधि चहुपासा ) ।  
 उतरना० अ० क्रि० नीचेआना ।  
 उतला० गु० उतावल ।  
 उताना० गु० उलग, ऊपर की पाव किये ।  
 उतार० ना० पु० नीचेआना, नीचला ।  
 उतारना० स० क्रि० नीचेलाया, दूर करना ।  
 उतारा० ना० पु० टालू, थपमा, हुडोती,  
 पारजाना ।  
 उतावल० ना० स्त्री० शीघ्रता, जल्दी ।  
 उतावला० गु० बेनी, शीघ्र, पुर्तीला ।  
 उतावली० ना० स्त्री० शीघ्रता, पुर्ती, गु० पु-  
 र्ताली ।  
 उताहिल० गु० शीघ्र, जल्द ।  
 उत्कट० गु० बरजस्त, उसी समय, तेजअधिक ।  
 उत्कण्ठ० ना० स्त्री० अभिलाषा, चाहना ।  
 उत्कर्ष० ना० स्त्री० बहाई ।  
 उत्कल० ना० पु० उडैसा देश, उडैसा के  
 वामा ।  
 उत्क्रम० ना० पु० उपर चढ़ना ।  
 उत्कृष्ट० गु० अद्भा, भेष्ट, उत्तम ।  
 उत्तमगन्धा० ना० स्त्री० मालती ।  
 उत्तमांग० ना० पु० शिर, शीश ।

उत्तमाशा० ना० स्त्री० अग्नि का के दक्षिण  
 की थतीर, कपयुद्धेश्वर ।  
 उत्तर० ना० पु० प्रश्न का नेतरक जसा  
 दक्षिण के समुत्त की दिसा, राजाविराट् का  
 पुत्र ।  
 उत्तरकेन्द्र० ना० पु० जिस की भास्कराचार्य  
 शास्त्री ने निज प्रसूति में छुमेक लिखा है, यह  
 स्थान अत्यन्त शीत के कारण अग्रग्न्य है ।  
 उत्तरकोशल० } ना० पु० अवधदेश ।  
 उत्तरकोशला० }  
 उत्तररश्मि० ना० पु० उत्तर का देश ।  
 उत्तरा० ना० स्त्री० राजाविराट् की कन्या जो  
 अभिमन्यु की विवाही थी ।  
 उत्तराधिकारी० ना० पु० मरने के पीछे जो  
 धनाधिकारी ।  
 उत्तराफाल्गुनी० ना० स्त्री० बारहबानसत्र ।  
 उत्तरामाद्रपद० ना० पु० क्षत्रीसत्वा नक्षत्र ।  
 उत्तरायण० ना० पु० माघदि द् मास ।  
 उत्तरार्द्ध० गु० पिछला आधा ।  
 उत्तराषाढ० ना० स्त्री० इक्षीसत्वा नक्षत्र ।  
 उत्तराहा० गु० जो उत्तर दिसा का है ।  
 उत्तरी० गु० उत्तर का ।  
 उत्तरीय० ना० स्त्री० श्रौडनी, रामचन्द्रिकाया  
 यथा ( पदपत्र की शुभ धूषरी, मयि नीलहा-  
 ट्य सा जरी, मुन उत्तरीय विचारके, भुव-  
 डारि दी पग टारिके ) गु० उत्तर देश क  
 पदार्थ व मनुष्यादि ।  
 उत्तरोत्तर० अ० अ० आगे आगे ।  
 उत्तानपत्र० ना० पु० दोना अरण्य ।  
 उत्तानपाद० ना० पु० राजा विशेष, भुव  
 का पिता ।  
 उत्ताल० गु० शीघ्र, जल्दी, तेग ।  
 उत्तीर्ण० गु० पार पहुँचा, निर्मुक्त ।  
 उत्तु० ना० पु० चमत्ति, बुनाई बस्तादिकी ।  
 उत्त्यान० ना० पु० उडान, उवाग ।

उत्थापन० ना० पु० उठाना, न थपना ।  
 उथित० गु० उठा हुआ ।  
 उत्पत्ति० ना० स्त्री० जन्म, पैदायश ।  
 उत्पन्न० गु० जन्मा, प्रकटा ।  
 उत्पल० ना० पु० कमल, कोई ।  
 उत्पाटन० ना० पु० जड़समेत उखाड़ना ।  
 उत्पात० ना० पु० अशुभ का सूचक, उपद्रव ।  
 उत्पादन० ना० पु० जन्मावना, पैदाकरण ।  
 उत्प्रेक्षा० ना० स्त्री० टील, सदृशाता ।  
 उत्सर्ग० ना० पु० देवतादि के लिये द्रव्य का त्याग, वितरण, किसी प्रकार की आज्ञा ।  
 उत्सव० ना० पु० आनन्द, यज्ञ, अर्धाञ्ज ।  
 उत्साह० ना० पु० उद्योग, आनन्द ।  
 उधपन० ना० पु० उखाड़ना, उठाना ।  
 उधपना० स० क्रि० उठावेना, उखाड़ना ।  
 उधपित० गु० उठाया गया ।  
 उधलना० अ० क्रि० उलटना ।  
 उधलपुधल० गु० उलट पुलट ।  
 उधला० गु० विध्वला, धाड़ा गहिरा ।  
 उदक० ना० पु० जल, पानी ।  
 उदघाटी० ना० स्त्री० उदयता, उदयाचलकी धारि ।  
 उदधि० ना० पु० समुद्र ।  
 उदधिन्द० ना० पु० चन्द्रमा ।  
 उदनपाक्य० ना० पु० पियावासा, पाषा ।  
 उद्वान्० ना० पु० समुद्र, सागर ।  
 उद्वमते० गु० मत्त, मत्न, मत्तमूर ।  
 उदय० ना० पु० प्रकटना, रोशा, ज्योति ।  
 उदयगिरि० } ना० पु० पर्वत विशेष तथा  
 उदयाचल० } सर्वोदय होता है ।  
 उदयास्त० ना० पु० सूर्योदय से सूर्यास्त तक,  
 उदयाचलसे अस्ताचलतक ।  
 उदर० ना० पु० पेट ।  
 उदरनि० ना० पु० पेटका बहुवचन भाषा में ।

उद्वृद्धि० ना० पु० जलधर रोग विशेष ।  
 उदरे० गु० पेट ।  
 उदान्त० ना० पु० ऊँचा स्वर ।  
 उदान० ना० पु० पंच प्राणमेंसे एक ।  
 उदार० गु० पु० दाता, बुराई ।  
 उदारता० ना० स्त्री० दातापन, दातव्यता ।  
 उदास० ना० पु० एकांत, गु० निराशा, नि-  
 मोह, दुःसहसमानता, मनमलिन ।  
 उदासी० ना० पु० एकांती, ना० स्त्री० मलि-  
 नता, गु० मनमलिन, एक प्रकार के सतों  
 का धर्म यथा नानकपंथी, जो मनुष्य शक्ति  
 रहित ससार में विचरें ।  
 उदासीन० गु० निसर्क। कुल शील नहीं जाना  
 अर्थात् पाहुन, समानपेती, गृहस्थाश्रमरहित ।  
 उदाहरण० ना० पु० दण्ड, मिसाल ।  
 उदित० आविर्भूत, प्रकाशित, रोशा ।  
 उदीची० ना० स्त्री० उत्तर दिशा ।  
 उदीच्या० ना० पु० सरावती नदी के उत्तर  
 और पश्चिम का देश ।  
 उदुम्बर० ना० पु० गुलरबूट, तानाधानु ।  
 उदुम्बल० ना० पु० शूज ।  
 उद्गार० ना० पु० डकार, बदन, क्षति ।  
 उद्गारघाची० गु० हीं हुंकार से उत्पन्न  
 हावा ।  
 उद्घाटन० ना० पु० कृ से पर्दा निकालने के  
 लिये बाल रम्यी, चम्पा मुन्दरी ।  
 उहाल० ना० पु० कचनार ।  
 उहालक० ना० पु० एकधुनिया नाम है ।  
 उद्दिष्टलोहित० ना० पु० पालकदन ।  
 उदीप्त० गु० प्रवर्धित, अतिप्रदीप्त ।  
 उद्देश० } ना० पु० अन्वेषण, प्रीतिकी कामना  
 उद्देश्य० } निमित्त, व्याकरण में जिसका समा-  
 चार वृत्तनि ।  
 उद्धत० गु० कचाप, अभिमान, ना० पु०  
 राजास मह ।  
 उद्धार० ना० पु० अकन, वाप, रक्षा, सुदी ।

उद्धारण० ना० पु० छोड़ना, छुटना ।  
 उद्धारना० स० कि० छुड़ाना, प्राण देना ।  
 उद्ग्रह० ना० पु० जन्म, पैदायश ।  
 उद्भिज्ज० } ना० पु० वृक्षवृक्षादि जो पृथ्वी पर  
 उद्भिद० } उगते हैं ।  
 उद्यत० ना० पु० शु० परिश्रमी, तैयार ।  
 उद्यम० ना० पु० उद्योग, उपाय रीतगार ।  
 उद्यान० ना० पु० राजाका उपवन, बाल निमित्त ।  
 उद्योग० ना० पु० उद्यम, उद्यान ।  
 उद्योत० ना० पु० प्रकाश, चमक ।  
 उद्वाह० ना० पु० विवाह ।  
 उद्भिन्न० शु० अर्थरत्न, व्याकुल ।  
 उद्योग० ना० पु० व्याकुलता, घनराइट, गढ़बढ़,  
 दुःख ।  
 उद्बोध० ना० पु० स्मरण ।  
 उधर० थय० वहा ।  
 उधार० ना० पु० करज ।  
 उधारन० ना० पु० छुड़ाने हारा ।  
 उधारना० स० कि० छुड़ाना, मुक्तिदेना ।  
 उधेइना० स० कि० सुतक्षाना, रीतना ।  
 उनचास० शु० बालीस और नी ४६ ।  
 उनतालीस० शु० तीस और नी ३६ ।  
 उनतीस० शु० बीस और नी २६ ।  
 उनये० शु० षट् दविषाये ।  
 उनसठ० शु० पचास और नी ५६ ।  
 उनासी० शु० सत्तर और नी ७६ ।  
 उनीडे० शु० नीदभरे ।  
 उनीस० शु० दस और नी १६ ।  
 उन्तुर० ना० पु० चूरा, मृम ।  
 उन्नत० शु० ऊचा, बलद ।  
 उन्नति० ना० स्त्री० उचार, बढ़नी ।  
 उन्मत्त० } शु० मतवाला, विक्षिप्त, सिद्धी और  
 उन्मद० } अष्टभेरव में एक उमननामी है ।  
 उन्माद० ना० पु० चित्तभ्रम, सिद्धपन ।

उन्मादन० ना० पु० रोगविशेष जिसमें चित्त  
 भ्रम होकर सिद्धपन होना है ।  
 उन्मुख० ना० पु० ऊर्ध्वमुख, ऊपर देखना ।  
 उन्मेष० ना० पु० पलक, क्षपक ।  
 उन्हार० ना० स्त्री० दाल, शु० रूप, समान,  
 सट्टा ।  
 उप० अव्य० समीप, यह जिस शब्द के प्रथम  
 में सयुक्त होता है उसका अर्थ कभी अधिकार  
 कभी समीपता कभी न्यूनता अधिक ही  
 जाता है ।  
 उपकण्ठ० ना० पु० किनारा, तट ।  
 उपकरण० ना० पु० सामग्री, सामान ।  
 उपकानन० ना० पु० वृत्रिमवन, नाप ।  
 उपकार० ना० पु० कृपा, सहायता, अहसान ।  
 उपकारी० शु० कृपावत, सहायक, भूमिद, लाभ  
 युत, फायद मंद ।  
 उपकाजिका० } ना० स्त्री० कलीजी ।  
 उपकुञ्चिका० }  
 उपक्रम० ना० पु० प्रारम्भ, धोखा ।  
 उपगति० शु० निमगस्तु के लिये वाचांदिश ।  
 उपग्रह० ना० पु० बुध्या, कृरा, सहायता,  
 अहस्तधी तारा ।  
 उपचारि० ना० पु० उपाय, मेवा, वैद्यरई,  
 व्यवहार, घूम ।  
 उपज० ना० स्त्री० जो तत्काल में कहानावे  
 अथवा पायाजावे ।  
 उपजाना० थ० कि० उमना, बढ़ना, जन्मना  
 उपजा० शु० जन्मा, उगा, पैदाहुषा ।  
 उपजाऊ० शु० उजनेहारा ।  
 उपजान्म० स० कि० उपसकरण, सिरजना ।  
 उपजित० शु० जो उत्पन्न भया, जन्मिन ।  
 उपजीविका० ना० स्त्री० जीविका, वृत्ति ।  
 उपइना० थ० कि० उलटना ।  
 उपताप० ना० पु० रोग, दुर्ग, उन्मता, पीडा ।  
 उपदेश० ना० पु० सनाद, मुजाब ।



उपदा० ना० स्त्री० भेंट ।  
 उपदेश० ना० पु० शिवा, मन्त्र, दान ।  
 उपदेशक० } गु० जो उपदेश देवे, युव ।  
 उपदेशी० }  
 उपद्रव० ना० पु० उत्पान, अत्याय और वि  
 मह, बल्लेष्ट ।  
 उपद्रवी० गु० बल्लेष्टिया, उत्पाती ।  
 उपद्वीप० ना० पु० द्वीप समीप, छोटापू ।  
 उपधान० ना० स्त्री० तक्षिया, रजार् ।  
 उपधि० गु० साथी राहका, धोखा ।  
 उपनन्द० ना० पु० नदी सतान वा उनके  
 सम्बन्धी ।  
 उपनयन० ना० पु० ब्राह्मणादि तीन वर्णों का  
 यज्ञोपवीत अर्थात् जनक धरणके हेतु संस्कार ।  
 उपनाम० ना० पु० पदवी, श्रिताव वा एकही  
 मनुष्य का द्वितीयनाम अपना कुटुम्बी यथा  
 लाला, साह, तिवारी ।  
 उपनिषद्० ना० स्त्री० वेदका रहस्यभाग ।  
 उपनेत्र० ना० पु० चर्मह, ऐक ।  
 उपपत्ति० ना० पु० जार, द्वितीय कृत स्त्रीका ।  
 उपपत्ति० ना० स्त्री० सुम्यता, सभूत ।  
 उपपातक० ना० पु० महापाप, यथा मोनधादि ।  
 उपमा० ना० स्त्री० समानता, दृष्टान्त, शरीर ।  
 उपमान० ना० पु० सादृश्य, जिसमें उपमा दीजाने  
 यथा कमलनयन यहा कमल उपमान और  
 नयन उपमेय है ।  
 उपमेय० ना० पु० जिसको उपमादीजाती है ।  
 उपयुक्त० गु० योग्य ।  
 उपयोगी० गु० अनुकूल, लाभकार, मुक्त ।  
 उपराम० ना० पु० चद्रमा सूर्य का ग्रहण वा  
 विषयभोग ।  
 उपराजा० ना० पु० सुवरान, राजा का नायक ।  
 उपरान्त० अल्प० पीछे, पश्चात् ।  
 उपराम० ना० पु० समारी सुव की निवृत्ति,  
 वैश्याय. उपरी ।

उपराला० ना० पु० सहायता, मदद, अधिक ।  
 उपरि० अत्य० ऊपर ।  
 उपरोध० ना० पु० सकोच, सहायता, बड़ाई,  
 गौरव ।  
 उपर्ना० ना० पु० अगौरी, एकपटा, श्रोतनी ।  
 उपल० ना० पु० पर्यट ।  
 उपलक्षण० ना० पु० थोड़ा जिसमें समूचा सम्-  
 भ्रान्तिये, गु० जिससे सुधी जागानिये ।  
 उपला० ना० पु० कण्डा ।  
 उपवन० ना० पु० कृत्रिम वन, आराम, बाग ।  
 उपवह्ण० } ना० पु० तक्षिया, सिरहाना ।  
 उपवह्ण० }  
 उपवास० ना० पु० अत, लपन, रोजह ।  
 उपधीत० ना० पु० यज्ञोपवीत, जनेड ।  
 उपवेद० ना० पु० जो विद्या वेदों से निकली है  
 और चारि उपवेद हैं अर्थात् आयुष, गार्ग्य, ध-  
 तुष, धर्मशास्त्र ।  
 उपशम० ना० पु० शांति, नमार् ।  
 उपशास्त्र० ना० पु० विद्या जो शास्त्रसे निकली है ।  
 उपस० ना० स्त्री० दुर्गंधि, सड़ाहिंद ।  
 उपसना० अ० कि० उपसना, सङ्गना ।  
 उपसर्ग० ना० पु० क्रिया के साथ समुक्त जो  
 प्र, पर, अप, सम् इत्यादि ।  
 उपस्थ० ना० पु० स्त्री० लिंग, योनि ।  
 उपस्थित० गु० समुत्तामन, प्राप्त, नैयार ।  
 उपसागर० ना० पु० छोटा समुद्र, समुद्रका  
 भाग ।  
 उपहार० ना० पु० भेंट, नजर, पूजा ।  
 उपहारन० ना० पु० दद्या, हँसी ।  
 उपाख्यान० ना० पु० पुराण की कथा ।  
 उपाटन० स० कि० उस्ताइता ।  
 उपादान० ना० पु० विवेकमय, निमित्त कारण ।  
 उपाधि० ना० स्त्री० उपद्रव, अत्याय, समीप, प्रा  
 ष, माया, नाया, ना० पु० स्वामी, मालिक, ध-  
 र्मकी चित्रा, गु० छल, कपट ।

उपाधी० गु० अधर्मी, उपद्रवी, अन्यायी ।  
 उपाध्या० ना० पु० ब्राह्मणजाति विशेष ।  
 उपाध्याय० ना० पु० अध्यापक, पदानिहार ।  
 उपाना० स० क्रि० सिरजना, उत्पन्न करना, उ-  
 पार्जन करना ।

उपानत्० ना० पु० जूता ।  
 उपान्त्य० ना० पु० अत्य अक्षर का पूर्ववर्णादि ।  
 उपाय० ना० पु० उद्योग, यत्न, रीति तदवीर ।  
 उपार्या० गु० उद्योगी, यमी ।  
 उपार्जन० ना० पु० निया वा धनादिका सम्रह,  
 कर्मार, प्राप्त ।

उपार्जित० गु० जो प्राप्त भया, कमाया ।  
 उपालम्भ० ना० पु० उल्लाहना ।  
 उपास० ना० पु० धन, उपवास ।

उपासक० } गु० जो उपासना करे, सेवक ।  
 उपासा० }

उपासना० ना० स्त्री० सेवा, दहल, प्रवृत्ति देना  
 दि विषय भावना विशेष ।

उपास्य० गु० उपासना के योग्य, आराध्य ।  
 उपेक्षा० ना० स्त्री० धोखा, त्याग ।

उफला० } अ० क्रि० उबलना, जोराखाना ।  
 उफलाना० }

उफाल० ना० पु० कूदना, कूदना, कूदना ।  
 उफकना० अ० क्रि० बमन होना, जामलकनाही ।  
 उफकारे० ना० स्त्री० बमन जीवी मलक ।  
 उफकारे० अ० क्रि० बमन, बरना, उछालकरना ।

उघटन० ना० पु० वस्तु आया वा बंठन वा सर  
 सों निमसे देहका मेल छुड़ाने हे ।

उघटना० स० क्रि० उबटन लगाना ।  
 उघटना० अ० क्रि० बचना ।

उघरा० गु० बचा ।  
 उबलना० अ० क्रि० खलपसाना, खीनना ।  
 उबला० ना० पु० खलपसाहट के पीछे उफनाना ।  
 उबसना० अ० क्रि० सड़ना, कृमि करना ।

उबसाना० स० क्रि० सड़ना ।  
 उबारना० स० क्रि० बचाना, छुड़ाना ।  
 उबार० ना० पु० बचाव, छुड़कारा ।  
 उबलाना० स० क्रि० पकाना, उर्सीनना ।  
 उभक० ना० पु० रीझ, भालू ।  
 उभय० सर्व० गु० दो ।

उभरना० अ० क्रि० उठना, निकलना, उमड़ना ।  
 उभार० ना० पु० उठान, फुलाना, उमड़ना ।  
 उभारना० स० क्रि० फुलाना उठाना ।  
 उभौ० ना० पु० दोनो ।  
 उमगा० गु० फुला, उठा ।

उमगारा० स० क्रि० फुलाना, उठाना, मन  
 बसाना ।

उमंग० ना० स्त्री० मग्नता, धुन, वृथा, चाह ।  
 उमंगना० अ० क्रि० उमंगसे आगेजाना ।  
 उमंगी० गु० धुना, अभिलाषी ।

उमण्डनु० } अ० क्रि० उभरना, धिरना ।  
 उमड़ना० }

उमरी० ना० स्त्री० ग्लरवृद्ध  
 उमहाना० अ० क्रि० उमड़ना ।  
 उमा० ना० स्त्री० पार्वती, भवानी ।  
 उमानाथ० ना० पु० श्रीमहादेव जी ।  
 उर० ना० पु० छाती, गोंदी, हृदय ।  
 उरग० ना० पु० माय, सर्प ।

उरगना० स० क्रि० सड़ना, जांगलना, राम-  
 चन्द्रिकाया यथा ( आर भरतय कहा थीं करे निय  
 भाय गुनी जो दुल देय तो से उरगी बादसुनी ) ।  
 उरप्र० ना० स्त्री० भेड़ी ।

उरगाह० } ना० पु० गरुड, मयूर और न्योला ।  
 उरगारि० }

उरकना० अ० क्रि० अटपना, लगाना ।  
 उरला० गु० इधरका ।  
 उरु० ना० स्त्री० जपका उपरीभाग, गु० बड़त ।  
 उर्य० ना० स्त्री० भेड़ी ।

विधि० ना० रथी० लहरी, वीची ।  
 र्द० ना० पु० माष, अधविशेष ।  
 र्वरा० ना० र्ही० उपजाऊ धरती, खेती के योग्य ।  
 र्विज० ना० पु० जो धरतीमें उपजाई, मंगल ।  
 र्विजा० ना० र्ही० धीजानकीजी ।  
 र्वशी० ना० र्ही० मुख्यअसरा, मगवसी, पुके-  
 धुकी, आभरण ।  
 र्वी० ना० र्ही० पृथ्वी, धरती ।  
 र्मएडन० ना० पु० कुच, स्तन, चूची ।  
 र्हन० ना० पु० गिला, शिकायत ।  
 रोज० ना० पु० कुच, स्तन ।  
 र्भनि० ना० र्ही० फँसाव, अटक ।  
 र्भना० अ० कि० फँसना, लपटना, स०  
 कि० भगवना ।  
 र्भाना० स० कि० फँसना, अटकना,  
 भिडाना, लपटना ।  
 र्भेडा० ना० पु० उलभन, फँसाव ।  
 र्भना० स० कि० पलटना, फेरना, अ०  
 कि० औंधा होना, उलटिजाना ।  
 र्भटा० गु० औंधा, पलटा ।  
 र्भटाना० स० कि० औंधाना, पलटना ।  
 र्भटापुलटा० गु० गटपट, नीचेऊपर ।  
 र्भयना० अ० कि० लहराना ।  
 र्भया० ना० पु० उल्था, तर्जुमा, रागिनी वि-  
 शेष, नृत्यभेद ।  
 र्भहना० ना० पु० दोष, निन्दा, गिला, अ० कि०  
 उगना, लहलहाना ।  
 र्भहना० ना० पु० गिला, शिकायत ।  
 र्भक० ना० पु० उल्लू, दिवाण, वृषपक्षी ।  
 र्भखल० ना० पु० घोसरी ।  
 र्भपी० ना० र्ही० मकली, बुधवाहनकी माना ।  
 र्भका० ना० पु० लूका, अग्नि वा तारा जो  
 आकार से गिरता है वा दीपक का फूल ।  
 र्भकापात० ना० पु० ताराबूटना, लूकागिरना,  
 उपद्रवीय कारण होना, आश्चर्य ।

रुथा० ना० पु० उल्था, तर्जुमा, नृत्यविशेष ।  
 रुमुक० ना० पु० लूका, कोयल, जलीलकड़ी,  
 रुलंघन० ना० पु० अन्वया, वा भंग करना  
 वा न मानना, लांघिजाना ।  
 रुलाला० ना० पु० छन्दविशेष ।  
 रुलास० ना० पु० मेल, लेश ।  
 रुलू० ना० पु० पक्षीविशेष, मूर्ख, अहमक ।  
 रुलूपन० ना० पु० मूर्खता, अहमकी ।  
 रुशीर० ना० पु० वृषविशेष की जड़ जिस  
 में गन्धि होती है छस ।  
 रुशाना० ना० पु० शुक्राचार्य, रघुविशेष ।  
 रुधू० ना० पु० ऊंट ।  
 रुष्णा० ना० पु० गर्म, तीप, तपन, गरमी ।  
 रुष्णकटिचन्ध० ना० पु० पृथ्वी का मध्यस्थान  
 अर्थात् मध्यरेखा के उत्तर २३ $\frac{1}{2}$  अंश और  
 दक्षिण २३ $\frac{1}{2}$  अंशतक ।  
 रुष्णज० ना० पु० वनस्पति जो पृथ्वी पर उ-  
 गते हैं ।  
 रुष्णीय० ना० पु० पगड़ी, मुकुट ।  
 रुसना० अ० कि० उबलना, पकना  
 रुसरना० अ० कि० टलना, पीठदेना ।  
 रुसाना० स० कि० उचालना, पुरकाना ।  
 रुसार० ना० पु० ओसारा, डेयड़ी ।  
 रुसाल० ना० पु० श्वात, दम ।  
 रुसाली० ना० र्ही० फुरसत, कल ।  
 रुसाहि० गु० कुसमय, बेमौसम ।  
 रुसीजना० स० कि० उबलना ।  
 रुसीसा० ना० पु० सिरहाना, तकिया ।  
 रुस्तर० गु० सत विनमोल ।  
 रुहरना० कि० बैठना, दबना ।  
 ( ऊ )  
 ऊंघ० ना० र्ही० सोवना, झपकी, नाँद ।  
 ऊंघना० अ० कि० नाँदधाना, झपकी आना ।  
 ऊंघाई० ना० र्ही० ऊंच ।  
 ऊंचा० गु० उच्च, नलद ।  
 ऊंट० ना० पु० पशुविशेष ।

(ऊटकटारा० ना० पु० भरमोंड़ ।  
 (ऊटकटीरा० ना० पु० पोधा विशेष ।  
 ऊकारान्त० गु० जिस शब्द के अंत में ऊ-  
 वार है ।

ऊख० ना० स्त्री० गर्मों वा गर्मोंवा खेत ।  
 ऊपल० ना० पु० बड़ी ऊखलौ ।  
 ऊप्राङ्गी० ना० पु० गर्मों का खेत ।  
 ऊत० ना० पु० मनुष्य जो सतानहीन भरे,  
 विरोध, अविवाहित, अतिदुष्ट वा मूर्ख ।

ऊतर० ना० पु० उत्तर, जवान ।  
 ऊत्तम० गु० विपरीत क्रम, निना मिलान,  
 बेमिलसिल ।

ऊदयिलाव० ना० पु० जलजनु विशेष ।  
 ऊदा० गु० भूरा ।

ऊदाई० } ना० स्त्री० कपिल भूरापन ।  
 ऊदाहट० }

ऊधौ० ना० पु० श्रीकृष्ण वा एक सत्ता ।  
 ऊन० ना० स्त्री० भेड़ी आदि के बाल, थोड़ा,  
 नून ।

ऊनविंश० } ना० पु० उनीस ।  
 ऊनविंशति० }

ऊना० ना० पु० सफ़रिशोष, धोप ।  
 ऊनी० गु० जो ऊनसे बना है ।  
 ऊपर० ना० पु० उपरि ।

ऊपरिस्थ० गु० ऊपर टहरा भया ।  
 ऊपट० गु० औपट, अगम्य, कुमार्ग ।  
 ऊमरि० ना० स्त्री० दूधरिका वृक्ष ।

ऊर्ज० ना० पु० कात्तिकमास ।  
 ऊर्ण० ना० पु० मेघादि के लोम, ऊन ।  
 ऊर्णनाभि० ना० स्त्री० मक्ड़ी ।

ऊर्णाणु० ना० स्त्री० भेड़ी ।  
 ऊर्ध्व० गु० ऊपर ।

ऊर्ध्वकण्ठा० ना० स्त्री० बड़ी सनावरि ।  
 ऊर्ध्वतिक्र० ना० पु० चिरायता ।  
 ऊर्ध्वपुण्ड० ना० पु० वैश्यावीतिलक ।

ऊर्ध्वरेता० ना० पु० सन्यासी, श्रमि और नि-  
 तेद्रिय, जिसरा धर्मसंग में काम पतन न हो ।

ऊर्ध्वश्यास० } ना० पु० ऊपरकी श्वासा ।  
 ऊर्ध्वसास० }

ऊर्ध्व० अन्व० ऊपर ।

ऊर्मिला० ना० स्त्री० सजा विशेष ।

ऊलूझा० ना० पु० कृष्य विशेष ।

ऊरण० ना० पु० दार्लामिरच और पीपरामूल ।

ऊप्पा० ना० स्त्री० गर्मी, क्रोध, रोष ।

ऊपर० ना० पु० ऊसर ।

ऊपरपा० ना० पु० तर रौलेन ।

ऊपा० ना० स्त्री० बाणासुर की कन्या ।

ऊपाकाल० ना० पु० प्रातः काल, तड़क ।

ऊसर० ना० पु० वह धरती जिसमें अन्न आदि  
 उत्पन्न नहीं होता है ।

ऊह० ना० पु० तर्क ।

( श्र )

श्रक० } ना० पु० प्रथम वेद ।  
 श्रग० }

श्रकारान्त० गु० जिस शब्द के अंत में श्र-  
 वार हो ।

श्रुचा० ना० स्त्री० वेदके मंत्र ।

श्रुजु० गु० सरल, सीधा ।

श्रुजुमुज० गु० संधिरेखा वा भुजा मेंड़ ।

श्रुजुमुजक्षेत्र० ना० पु० वह क्षेत्र जो कई  
 कभी रेखाओं से घिरा हो ।

श्रुण० ना० पु० उधार, कर्ज ।

श्रुणक० गु० कर्जदार ।

श्रुणिया० गु० धरता, बरती ।

श्रुणी० पु० कर्जदार ।

श्रुतु० ना० स्त्री० वसतादि छ, अर्थात् वसन १,  
 प्रीत्य २, वर्षा ३, शरद ४, हेमन्त ५, शिशिर ६,  
 और रज, समय, मौसम ।

श्रुतुमती० ना० स्त्री० रजस्वला, कपड़ों से ।

श्रुतुराज० ना० पु० वसत बहार ।

ऋद्धि० } ना० स्त्री० पार्वतीजी, औरधि, पो  
ऋद्धि० } धा विशेष, धन, सम्पदा ।

ऋषि० ना० पु० वेदज्ञ, मुनि आर तपस्वी ।

ऋषिपति० ना० पु० ऋषियों में जो प्रधान,  
बहु विद्यानिधान, भागवतधर्मी ।

ऋषिमित्र० ना० पु० शातमिय, कचारों का  
दास्त, रामचन्द्रिका में विश्वामित्र बाधक ।

ऋषिराज० }  
ऋषीश० } ना० पु० ऋषिपति ।  
ऋषीश्वर० }

ऋषभ० ना० पु० राग, स्वर, विशेष, श्रेष्ठ ।

ऋषू० ना० पु० भालू, रीढ़, तरा ।

ऋक्षपति० }  
ऋक्षराज० } ना० पु० जाम्बवत आर  
ऋक्षश० } चन्द्रमा ।

[ ए ]

ए० अव्य० ग्यारहवा अक्षर, सम्बोधनका सूचक ।

एक० पु० शिन्ती का प्रथम अक्ष, अद्वितीय ।

एककार० पु० समान समय, और एकसमय ।

एककारोन्त० पु० समानकाल में उपज भय,  
हम उमर ।

एकटक० ना० पु० एउ ताकसे देसना ।

एकट्टा० पु० जो एक स्थान में जमाकिया वा  
भ्रया हे ।

एकतराज्वर० ना० पु० अतरिया, तिजरा वा  
तिजारी ।

एकतही० ना० पु० एक जगह, ना० स्त्री० मि  
रजाई ।

एकता० ना० स्त्री० एकाई, मेल, समानता ।

एकतान० पु० एकमति, दुविधारहित ।

एकदा० अव्य० एकसमय ।

एकरस० पु० पदभाव विकाररहित ।

एकरूप० ना० समभान ।

एकलोटा० } पु० जो खड्कवा अपने मातापिता  
एकलोता० } का अकेलाहोने ।

एकघचन० पु० बात एक मुख्य नर ।

एकघर्णात्मक० पु० जिस शब्दमें एक अक्षरह ।

एकसर० पु० एकमति, दुविधारहित ।

एकसा० पु० समान, बराबर ।

एकसार० समान, एकरस ।

एकज्ञर० ना० पु० निनाज्ञटके, एकहोराव्य ।

एकत्र० अव्य० एकठार, एकस्थान ।

एकत्रता० ना० स्त्री० एकठोर होना ।

एकाई० ना० स्त्री० एकता ।

एकाएकी० अव्य० अचानक, एकवार म ।  
एकाकार० पु० समान रूप, कलिधर्म, एकजाति,  
एकाचार, मासखादि का निराप बर्ण धर्मको ल्या  
गिक पश्वादि समान रहना ।

एकाकी० पु० अनेला ।

एकाम्र० पु० एकमन, एकमति, दविधारहित ।

एकांक० पु० निश्चयकरि, सत्य ।

एकादर्शी० ना० स्त्री० पक्षी ग्यारहवातिथि ।

एकाधिपति० ना० पु० अनेकदेशोंका एकराना ।

एकान्त० पु० निराला, निपट, निर्जनस्थान ।

एकान्तर० ना० पु० एकचार ।

एकान्तरकोण० ना० पु० एकचारवा काना ।

एकायन० पु० एकमति, एकमार्ग ।

एकारान्त० पु० जिस शब्दके अन्तमें एकारहै ।

एकाक्ष० ना० पु० कान, काना ।

एकैआंक० अव्य० निश्चयकरि, सत्य ।

एकैक० पु० प्रत्यक, हरएक ।

एङ्ग० ना० स्त्री० घोडेका दोडान वा चलाने के  
निमित्त पावके पिछले भागरी ठोकरमारना ।

एङ्गी० ना० स्त्री० पावका पिछलाभाग ।

एण० ना० पु० पाप, हानि, मुग, हरिण, घ  
कपट ।

एणी० ना० स्त्री० हरिणा ।

एणीन० ना० स्त्री० एणीरा बहुवाक्य ।

एणमद्ग० ना० पु० क्लृरी, मुश्न ।

एतदर्थ० अव्य० इसलिये ।

एतना० पु० इतना, इतकर ।

एतान० पु० इतने, इसउदर, इसप्रकार ।

यतादृशं० गु० ऐसे, इसप्रकार ।  
 यतावता० अन्य० इसकरके, इसकारण ।  
 यतावन्मात्र० गु० इतनाही, यही केवल ।  
 परएड० ना० पु० अरएड, रेट ।

पलवा०  
 पलवालुक० } ना० पु० घोषधि विगेष  
 पलवालु० } अर्थम् सुसन्वर ।

यता० ना० स्त्री० इलायची ।  
 पलोर्० ना० पु० हे हमारे ईश्वर ।

पद्य०  
 पद्यं० } अर्थ० इसप्रकार, और ।  
 पद्यम्० }

पद्यमस्तु० अर्थ० ऐसाही हो ।

[ वे ]

पैच० ना० पु० सकोच, लैच ।  
 पैचना० स० भि० लैचना ।  
 पैठ० ना० स्त्री० बल, मझोड़ ।  
 पैठना० स० कि० मरोड़ना, बलदेना, अ० कि०  
 बलराना, मरड़िजाना ।

पेकाधिपत्य० ना० पु० अद्वितीय देशाधिपत्य,  
 पदवी ।

पेकाहिक० ना० पु० अतरिया ।  
 पेक्य० ना० पु० एकता, समानता ।

पेगुन० गु० ओगुण ।

पेनमैन० गु० प्योत्रायों ।

पेन्द्रजालिक० ना० पु० नटवर, दिठबध ।

पेरावत० ना० पु० इद्रका शर्पी ।

पेरावती० ना० स्त्री० नदी विशेष ।

पेघका० ना० स्त्री० ककरासियाँ ।

पेश्वर्य्य० ना० पु० विभव, माहाय, सम्पत्ति,  
 प्रताप, बढ़ती ।

पेश्वर्य्यदान्० } गु० सम्पत्ति करके दुरो  
 पेश्वर्य्यशाली० } भिन्न ।

पेसा० द० इसप्रकार, इससे समान ।

पेटिक० गु० इसलोक के भोग, जो इहा ही प ।

[ ओ ]

ओ० अर्थ० सम्बोधन, करुणा, स्मृति ।

ओठ० ना० पु० ओष्ठ, होंठ ।

ओडा० गु० गम्भीर ।

ओघा० गु० थीथा, रस्मी जो छपर म बा-  
 धने है ।

ओक० ना० पु० पर, आश्रय टिकाना, ना०  
 स्त्री० उबकाई ।

ओकना० अ० वि० यमन करना, उदात्त  
 करना ।

ओकारान्त० गु० जिम्मे अतम ओकार है ।

ओखली० ना० स्त्री० गान्धी, उल्लुखल ।

ओम० ना० पु० समुद्र, बहुतायत ।

ओछा० गु० विघोरा, हलका, छोटा ।

ओज० ना० पु० प्रताप, बल, तेज ।

ओमक० ना० पु० पचीनी, भाक, पेट ।

ओमकड० ना० स्त्री० भोक, धका ।

ओमकी० ना० स्त्री० पचीनी, घात ।

ओमख० ना० स्त्री० ओर, छुपार, दू० जो  
 छुपा है ।

ओमका० ना० पु० भोस, टोनहा, यत्री या  
 शाकधर्मी ।

ओट० ना० स्त्री० घाट, पस ।

ओटना० स० कि० आइ करना, बचाना, रेंवनी,  
 रईसे बिनाला निकालना, रोकना ।

ओटा० ना० पु० आइ, बैठन ।

ओटन० ना० स्त्री० ढाल, फरी ।

ओडना० स० कि० सहना रोकना ।

ओहा० ना० पु० साचा, बधा दोफरा ।

ओड़ना० स० कि० पहिरना, ना० पु० रजाई,  
 पट्ट, लोई आदि ।

ओड़ना० ना० स्त्री० स्त्रियों का ओड़ना ।

ओत० ना० स्त्री० बढ़ोतरी, बजती, हीनता

ओतओत० ना० पु० तानाबाना, चौदारी,  
 लम्बाई में अधिक, पल्ले पर बिनाह ।

ओदन० ना० पु० भात, चावल पके ।

ओदा० गु० नीला, भीमा ।  
 ओधे० गु० अश्विनी, शाम ।  
 ओप० ना० स्त्री० सुदरता, चमचमाह, घो ।  
 ओपना० स० कि० धारणा, साफकरण ।  
 ओपनी० ना० स्त्री० वह शिष्टाने जिस पर जिला  
 करते हैं ।  
 ओपी० अय० उधर, वि, गु० साफ की ।  
 ओर० ना० स्त्री० वगर, मार्ग, अलैंग ।  
 ओरी० गु० पक्क, पक्का, मदद, ना० स्त्री०  
 ओलती ।  
 ओल० ता० पु० सरण, निर्मासिन्द, मनानी, बदले ।  
 ओलती० ना० स्त्री० आरीनी, श्री ।  
 ओला० ना० पु० जलमय पथर और चीनी शक्कर  
 का जो बनता है ।  
 ओपधि० ना० स्त्री० जो पोधा फल भरजान के  
 पाले फिर से उत्पन्नहो ।  
 ओष्ट० ना० पु० दातों का टपना, हुंठ ।  
 ओस० ना० स्त्री० जो रात्रि समय छोटी २ फुहार  
 पड़ती है, शात ।  
 ओसर० ना० स्त्री० क्लोर भैस ।  
 ओसरा० ना० पु० } पारी, बारी, पती  
 ओसरी० ना० स्त्री० }  
 ओसीसा० ना० पु० उसीसा, सिगना ।  
 ओहो० अय० वाहवाह, आहा ।  
 [ औ ]  
 औ० अय० धार ।  
 औगी० ना० स्त्री० चुप्पी, कुणापन, चुपकीहई  
 गाड़ी ।  
 औघाना० अ० कि० कपकी आना ।  
 औड० ता० पु० बेलदार ।  
 औडा० गु० गम्भीर ।  
 औधना० अ० कि० उलटना, उमएटना ।  
 औधा० गु० उलटा ।  
 औधाना० स० कि० उलटना ।

औकारान्त० गु० जिसक अंतमें औकारहै ।  
 औघट० गु० अगम्य, जहा जाय न सके ।  
 औचक० } अय० अचानक, नागदान ।  
 औचट० }  
 औछ० ता० पु० जङ्गलविशेष ।  
 औटन० ना० पु० जलाव ।  
 औटना० स० कि० खाना, छलाना ।  
 औत्तानपादि० ना० पु० धुन, भक्त प्रसिद्ध ।  
 औत्कर्ष्य० ता० पु० श्रेष्ठता, उत्तमता ।  
 औत्सुक्य० ना० पु० चिन्ता, व्याकुलता,  
 पछिताना ।  
 औथरो० गु० उयला कम गहरा ।  
 औदात० गु० धवदल, स्वत ।  
 औदार्य० ता० पु० दातापन, उदारता ।  
 औदासीन्य० ता० पु० विषयों में बेराग्य ।  
 और० अय० पुन, फिर, गु० अशिक, दूतरा ।  
 औरस० ना० पु० व्याहिताना पुन ।  
 और्ध्वदैहिक० ना० पु० मृतकका क्रिया ।  
 औपध० } ना० स्त्री० रोगनाशक अय, दवा,  
 औपधि० } इलाज ।  
 औपधिपति० } ना० पु० चद्रमा ।  
 औपधाश० }  
 [ क ]  
 क० अय० ना० पु० जल, सुख, अग्नि, शिर,  
 काम, सुमर्थ ।  
 ककड़ी० ना० स्त्री० फल का तरकारी विशेष ।  
 ककरहा० } ना० पु० बारहसका वण ।  
 ककहरा० }  
 ककार० ना० पु० क ।  
 ककुभा० ना० स्त्री० दिशा और छन्दविशेष ।  
 ककुष्ट० ना० पु० नौबतूल ।  
 ककुस्त० ना० पु० धनिया मसाला करानीका ।  
 ककोरना० स० कि० खोदना, खराचना ।  
 कक्षरी० ना० स्त्री० काख, बगल ।  
 कक्षारी० } ना० स्त्री० काखका पीडा ।  
 कखारी० }

कगर० ना० स्त्री० घोर, अत, किनारा ।  
 कक० ना० पु० कुर्हापसी ।  
 कंकण० ना० पु० हाथका भूषणविशेष ।  
 कंकर० ना० पु० जिस से चूना बनता है, बहुत  
 कड़ी मिट्टी, नीच ।  
 कंकाली० ना० स्त्री० डाकिनी ।  
 कंगनी० ना० स्त्री० पीली विशेष, मालकगुनी ।  
 कंगरोड़० ना० पु० रीढ़, पत्तीविशेष ।  
 कंगाल० गु० अयनी, भित्तारी, दरिद्री ।  
 कंगालता० ना० स्त्री० दरिद्रता, निर्धनता ।  
 कंगालिन० ना० स्त्री० डाकिनी, जयन, दरि-  
 द्रिनि ।  
 कंगनी० ना० स्त्री० कंगनी ।  
 कंगरा० ना० पु० शुग्मद, मडादिक, बास्करः ।  
 कंधा० ना० पु० } बाल भाङ्गने के लिये लाथादि  
 कंधी० ना० स्त्री० } की वस्तु ।  
 कंच० ना० पु० बाल, बिरा ।  
 कचकना० अ० कि० सुरका, पिराना ।  
 कचकचाना० अ० कि० किरकिराना, गिनभि-  
 नाना ।  
 कचकाना० स० कि० सुरकाना ।  
 कचनार० ना० स्त्री० वृक्षविशेष ।  
 कचपचिया० ना० पु० गुच्छा तारोंका, कृत्तिस ।  
 कचरा० ना० पु० } फल विशेष ।  
 कचरा० ना० स्त्री० }  
 कचहरी० ना० स्त्री० सभा, समाज, मनलित ।  
 कचारी० ना० स्त्री० धनीप, कचपन ।  
 कचालू० ना० पु० कन्दविशेष ।  
 कचियाहट० ना० स्त्री० दिनविनाना ।  
 कचूर० ना० पु० औषध विशेष ।  
 कचारी० ना० स्त्री० पूर्वा पीठी या धोतीपरी ।  
 कचा० गु० आम, धनाई, धनपका ।  
 कचु० ना० पु० कछुवा व दिनाय विष्णुजी का  
 धनार, देरा जो गुनराजके पास है कचनी ।  
 कचुप० ना० पु० कूर्म, कछुआ ।

कच्छी० गु० जो कच्छदेरा का फेड़ा आदिहो ।  
 कछु० ना० स्त्री० काढ़ ।  
 कछुना० स० कि० धोना, पोखना, ना० पु०  
 काढ़ ।  
 कछुना० ना० स्त्री० काढ़वाना ।  
 कछुलम्पट० गु० बुकमा व्यभिचारी, अग्नि-  
 त्रेन्द्रिय ।  
 कछुवाहा० ना० पु० राजपुत्र का वर्ष जो श्री  
 रामचन्द्र के पुत्र कुरानामी से उत्पन्न भया ।  
 कछार० ना० स्त्री० नदी की तराई वा किनारा ।  
 फछारना० स० कि० छाटना, धोना ।  
 कछु० स्त्री० कुछ, किञ्चित् ।  
 कछुरा० ना० पु० जवाला ।  
 कछु० सर्व० कुछ किञ्चित् ।  
 कज० ना० पु० कज, कमल ।  
 कजरा० ना० पु० कानल, गु० कानललगाये ।  
 कजरारे० गु० कानललगाये हुये ।  
 कजला० शु० काला, कानल लगाये ।  
 कज्जल० ना० पु० कानल, धनन, सुरमा ।  
 कज्जलगिरि० ना० पु० कानलका पर्वत ।  
 कञ्चन० ना० पु० सुवर्ण, कनक, जातिविशेष ।  
 कञ्चनक० ना० पु० कचनार, मेनेकल ।  
 कञ्चनी० ना० स्त्री० कचन जातिकी स्त्री, नौची,  
 पुरिया, सैनीकी पुतली ।  
 कञ्चु० }  
 कञ्चुकी० } ना० स्त्री० धोली, अगिया ।  
 कञ्ज० ना० पु० कमल ।  
 कञ्जर० ना० पु० जानिविशेष जो रस्ती वा  
 गिरपी बेचते हैं ।  
 कजा० गु० जिसकी आसकी पुतली नीली पीली  
 है ना० पु० वृष वा उसका फल ।  
 कजिया० ना० स्त्री० आसकी पुकिया, छोटी ।  
 पुकिया ।  
 कञ्जुस० गु० शम, कृपण, सातर्षी ।  
 कञ्जुसी० ना० स्त्री० कृपणता ।



कटक० ना० पु० सैग, फ्रीज, ...दले, अंगार  
 विशेष जो उकैसादेरा में है।  
 कटकट० ना० पु० भगड़ा; दांतों से दांतलड़ाना।  
 कटकटाना० स० कि० चबाना किसी वस्तुका।  
 कटकटेरि० ना० स्त्री० दाढ़हल्दी।  
 कटकना० ना० पु० बांधना; उपाय; ठेका।  
 कटकाद्या० ना० स्त्री० सेपरवृत्त।  
 कटघरा० ना० पु० कटहरा।  
 कटकटी० ना० स्त्री० दाढ़हल्दी।  
 कटना० अ० कि० कटिजाना, लडितरीना, पायल  
 होना, मोहित होना।  
 कटनी० ना० स्त्री० कटार, अनाज काटने का  
 समय वा काटने की वस्तु यथा कैची।  
 कटफल० ना० पु० कायफल।  
 कटम्भरी० ना० स्त्री० स्यौना वृक्ष।  
 कटरा० ना० पु० हाट, चौक।  
 कटहरा० ना० पु० कटहरा, यज्ञपिण्ड।  
 कटह० गु० काटनेवाला।  
 कटा० ना० स्त्री० मारानाना बहुत लोगोंका।  
 कटाक० ना० स्त्री० जो दस दर्दहोर घंटे।  
 कटाना० स० कि० किसी पदार्थ के टुकड़ेकराना।  
 कटार० ना० पु० संजर।  
 कटारा० ना० पु० शीपथि, पौधा विरोध।  
 कटारी० ना० स्त्री० संजर, छुरी।  
 कटाह० ना० पु० कड़ाह, कड़ाही।  
 कटाक्ष० ना० पु० वानरविरोध, ना० स्त्री० निरखी  
 चितवन।  
 कटि० ना० स्त्री० सड़, कमर।  
 कटित० गु० सपत।  
 कटियन्ध० ना० पु० पृथ्वी के लक्षण करने के  
 लिये उसके पांच कटिवन्ध नियत किये उपरान्त  
 तीन कटिवन्ध दो, और सप्त कटिवन्ध दो, र,  
 उप्प ॥  
 कटीला० ना० पु० पांशुविरोध, गु० कटिवाला  
 सनीला, सारन्व।

कटु० } गु० कड़वा, कड़ा, पुरा।  
 कटुक० }  
 कटुकी० ना० स्त्री० कटुकी शीपथि।  
 कटुग्रन्थ० ना० स्त्री० शिपरामूल।  
 कटुकटे० } ना० स्त्री० सांठि।  
 कटुभद्र० }  
 कटुभी० ना० स्त्री० मालक्युनी।  
 कटुरोहिणी० ना० स्त्री० कटुकी शीपथि।  
 कटैया० ना० स्त्री० पौधा काठवाला विरोध।  
 कटोरा० ना० पु० } भोजन करने का पात्र  
 कटोरी० ना० स्त्री० } विरोध।  
 कट्टा० ना० पु० काठका जिसपर कपड़ा धोते हैं।  
 कटवानी० गु० रोमांगित, रोमलकड़ुये।  
 कटन्दर० ना० पु० काठादर, रोगविरोध।  
 कटडा० ना० पु० }  
 कटडी० ना० स्त्री० } काठकी थाली वा पात्र  
 कटरा० ना० पु० } विरोध।  
 कटरी० ना० स्त्री० }  
 कठवत० ना० स्त्री० काठका बतन विरोध।  
 कठारी० ना० स्त्री० काठका बतन, कमरवृत्त।  
 कठिन० गु० निष्ठुर, कठोर, कड़ा, सहिष्णु।  
 कठिन्ता० ना० स्त्री० } कठोरता, निष्ठुरता  
 कठिनत्व० ना० पु० } कठोरता, कठोरता।  
 कठिया० ना० स्त्री० काठकी कटिना, कटका  
 दोयासा प्राण।  
 कठिल० ना० पु० कटका दरवारी।  
 कठोटी० ना० स्त्री० कड़ा, कठिन।  
 कठार० गु० निष्ठुर, कड़ा, अतह, ना० पु० बत  
 वृद्ध वा टटका इट।  
 कठोरता० ना० स्त्री० निष्ठुरता, निष्ठुराई।  
 कठोलिया० ना० स्त्री० काठका दोयासा प्राण।  
 कठौता० ना० पु० } काठका कड़ाप्राण।  
 कठौती० ना० स्त्री० }  
 कड़क० ना० स्त्री० थकाका, कठक, गंभीर,  
 रुद्ध।  
 कड़कना० अ० कि० चटकना, भड़कना  
 गरजना।

कङ्कवा० ना० पु० युद्धमें बदावा देनेकी बात  
 कहना ।  
 कङ्कखैत० गु० भाट जो बड़ाव देना है ।  
 कङ्कआ० गु० तीता, तीक्ष्ण, निडर, योद्धा ।  
 कङ्कवाहट० ना० स्त्री० तीक्ष्णता ।  
 कङ्का० गु० कठोर, दृढ़, मगरा, ठीठ, निडर, गा०  
 पु० लोहेका वा चादीआदि का भूषण जो हाथमें  
 पहिात है ।  
 कङ्काड़ा० ना० पु० नदीना उचा किनारा ।  
 कङ्काह० ना० पु० दुग्धादि चीन्ने के लिये खोहे  
 वा पात्र, शुन्नानक का भोग ।  
 कङ्काही० ना० स्त्री० छोटा बड़ाह ।  
 कङ्की० ना० स्त्री० काड़ी, धरनी, धन्नी ।  
 कङ्कु० गा० स्त्री० खुनली, खारिश्त ।  
 कङ्काना० ध० क्रि० निक्लना, उठना, चितना ।  
 कङ्किल्लक० गा० पु० सालपुनर्नवा ।  
 कङ्की० ना० स्त्री० भोजन विशेष जो बेसन श्री  
 दही से बनाता है ।  
 कङ्कुआ० ना० पु० उधार, कर्त्त ।  
 कण० ना० पु० धाय, अनान, रायमाद्यन्वय,  
 जर् ।  
 कणा० ना० स्त्री० पीपरी ।  
 कणामूल० गा० पु० पीपरामूल ।  
 कणासुफल० ना० पु० अकेल धीपधि ।  
 कणिका० ना० स्त्री० सोनबूही, अणु, खेरा,  
 टुकड़ा, जर् ।  
 कणी० ना० स्त्री० किरक, टुकड़ा, जर् ।  
 कण्टक० ना० पु० बादा, गोखरू, रात्रु, कृष्ण,  
 पित्तपापडा ।  
 कण्टकलता० ना० स्त्री० खीरा फलविशेष ।  
 कण्टकारि० } ना० स्त्री० छोटीकटाई, सकेद  
 कण्टकिनी० } धीड़वारि ।  
 कण्टकिफल० ना० पु० कटहल ।  
 कण्टकी० ना० पु० मिल्क, बेलु ।  
 कण्टफल० ना० पु० गोखरू ।  
 कण्टार० गु० फीला ।

कण्टारिका० ना० स्त्री० छोटी सकेद कटाई ।  
 कण्टिया० ना० स्त्री० आकड़ी ।  
 कण्ट० ना० पु० गला, पाटी, उपस्थित, मुवाप्र ।  
 कण्टगत० गु० गल में जान वा लव ।  
 कण्टमाल० } ना० स्त्री० गलेकीमाला, मुख्य  
 कण्टमाला० } रोग जिसमें गला सड़जाता है ।  
 कण्टला० ना० पु० माला जो लडकों के लिये  
 बद्धयत्र गुन बनाते हैं ।  
 कण्टस्थ० ना० पु० मुस्ताप्र ।  
 कण्टा० ना० पु० बड़ी गुरियों का माला ।  
 कण्टाप्र० गु० मुस्ताप्र, जवानी ।  
 कण्टामैरण० ना० पु० गलेका भूषण ।  
 कण्टी० ना० स्त्री० छोटीमाला तुलसीआदि की ।  
 कण्टीरव० ना० पु० सिंह, व्याघ्र, शेर ।  
 कण्ट्य० गु० जिन अक्षरों का उच्चारण कठ से  
 होने ।  
 कण्डा० ना० पु० उपला ।  
 कण्डी० ना० स्त्री० छाटाउपला ।  
 कण्डुपुष्पी० ना० स्त्री० शक्ताह्ला ।  
 कण्डू० ना० पु० रोगविशेष, स्त्री० जमुहाई ।  
 कण्डूम० ना० स्त्री० पकर, धीपधि ।  
 कण्डेरा० ना० पु० घुनिया, जाति विशेष जो  
 तीर बूंगते हैं, कमानगर ।  
 कण्ड० ना० पु० मुनिविशेष ।  
 कत० अन्व्य० कहा, क्योंकर, किसलिये ।  
 कतना० ध० क्रि० वाताजाना ।  
 कतरन० } ना० पु० काटना ।  
 कतरा० }  
 कतरना० स० क्रि० काटना ।  
 कतरनी० ना० स्त्री० कटनी, कैंची ।  
 कतराना० स० क्रि० कटवाना ।  
 कतहु० अन्व्य० कमी ।  
 कताई० ना० स्त्री० कातने का काम, कातने का  
 पैसा ।  
 कतीरा० ना० पु० गोंदविशेष ।  
 कत्त० अन्व्य० कहा क्योंकर ।

कत्या० ना० पु० खदिर, खिर।  
 कत्सायल० ना० पु०, कालाहरिण।  
 कथक० गु० पौराणिक, पवारिया, कथिक।  
 कथन० ना० पु० कहना, वाक्यों को प्रयोग  
 कहना।  
 कथनां० अ० कि० कहना।  
 कथनीयं० गु० कहने के योग्य।  
 कथा० ना० स्त्री० कहानी, वृत्तान्त, पवारि।  
 कथित० गु० कहा हुआ।  
 कथोपकथन० ना० पु० आलाप, परिवर्तन बात  
 बात।  
 कथ्य० ना० स्त्री० हरि, गु० कहने योग्य।  
 कद० अव्य० कव।  
 कदवृष्वा० ना० स्त्री० अतिमार्ग, कठिनमार्ग।  
 कदन० ना० पु० नासक, अधिक।  
 कदम्य० ना० पु० समूह, वृक्षविशेष, कदम।  
 कदम्यक० ना० पु० समूह, गिरोह।  
 कदर्य० गु० लोभी, कज्जल।  
 कदली० ना० पु० केलावृक्ष।  
 कदत्तर० ना० पु० कुतिसत वर्षे।  
 कदा० अव्य० कव।  
 कदाचार० गु० राक्षस से विपरीत व्यवहार।  
 कदाचित्० अव्य० जो कभी होना हो,

कनंगत० ना० पु० आश्विनकृष्णपक्ष में पितरों  
 का आह्व।  
 कनिक० ना० पु० चून्, पित्तान, आटा।  
 कनियानां० सं० कि० संकोच से कतराये जाना,  
 आल धुपाना।  
 कनियाहट० ना० स्त्री० लोच, संकोच।  
 कनिष्ठ० गु० छोट।  
 कनिष्ठा० ना० स्त्री० पांचवां अंगुली, नीचस्त्री।  
 कनिष्ठिका० ना० स्त्री० पांचवां अंगुली।  
 कनिहा० गु० घृता।  
 कने० अव्य० पास, साथ।  
 कनेर० } ना० पु० करवीरवृक्ष जिसका फूल  
 कनेल० } देवताओं को चढ़ता है।  
 कनैया० ना० पु० कर्णवधन, ना० स्त्री० दासी  
 कनौज० ना० पु० प्राचीन नगर, विशेषदेश  
 कनौजियां० गु० कनौज देशका वासी।  
 कन्त० ना० पु० स्वामी, भर्तार, निर्वजन  
 मासिक।  
 कन्या० ना० स्त्री० कपड़ी, गूदही, नदी की  
 (शनेःकन्या शनेःपन्था शनैः  
 शनेविद्या शनेर्वित्तमते पंचरात्रेः)।  
 कन्द० ना० पु० जड़ विशेष का जो कड़क  
 लता है यथा, मूष, इत, कन्द

कन्धेली० ना० स्त्री० खोली, जो घोड़ों को उढ़ाते हैं ।  
 कन्यका० ना० स्त्री० कुमारी, कन्या ।  
 कन्या० ना० स्त्री० बेटी, छटी राशि, दश वर्ष तक की लड़की ।  
 कंस० ना० पु० श्रीकृष्णका मामू ।  
 कन्हाई० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजीका एक  
 कन्हेया० } नाम ।  
 कपना० अ० क्रि० धरधराना ।  
 कपकपी० ना० स्त्री० धरधराइट, पुरपुरी ।  
 कपट० ना० पु० छल, परेव, तोड़ाई, और भगल ।  
 कपटभू० ना० स्त्री० मायाभूमि, तिलतमाती जमान ।  
 कपटी० गु० छली, लोथ, बहुरूपिया ।  
 कपड़ा० ना० पु० वस्त्र ।  
 कपड़ोंसेहोना० अ० क्रि० रजोधर्म होना, कपटुमनी होना ।  
 कपर्दी० ना० पु० धीमहादेवजी, वरगद ।  
 कपाट० ना० पु० किवाड़, पट ।  
 कपार० } ना० पु० माथा, छलाट, भाग्य ।  
 कपाल० }  
 कपालभृत्० ना० पु० धीमहादेवजी ।  
 कपाली० ना० पु० धीमहादेवजी और धी-भरवनी ।  
 कपास० ना० स्त्री० रईका वृक्ष, कपास ।  
 कपि० ना० पु० वानर, वन्दर ।  
 कपिकुञ्जर० ना० पु० श्रेष्ठ वानर ।  
 कपितन० ना० पु० पारस, पीपल ।  
 कपित्थ० ना० पु० वैषाखा वृक्ष ।  
 कशिपुञ्ज० ना० पु० धरुन, पाण्डुर ।  
 कपिन्द० } ना० पु० सुन्य वानर और श्रेष्ठ  
 कपिन्द्र० } वानर ।  
 कपिपति० ना० पु० सम्राट, गु० जो वानरों का राजा होते ।  
 कपिपिप्पली० ना० स्त्री० सालज्जा ।

कपिभूत० ना० पु० पारस, पीपल ।  
 कपिल० ना० पु० मुनि विशेष, साख्यशास्त्र के वक्ता, पीतलधातु ।  
 कपिला० ना० स्त्री० पिंगलवर्णकीमाय, रेखुका ।  
 कपिलदेव० ना० पु० आदिशक्तार ।  
 कपिल्य० ना० स्त्री० कपाला धीपथि ।  
 कपीश० ना० पु० सम्राज कान्तोजा राजा ।  
 कपूर० ना० पु० सुगन्धि विशेष, कापूर ।  
 कपोत० ना० पु० कबूतर परेवा ।  
 कपोतवर्णा० ना० स्त्री० द्योतिलायची ।  
 कपोताक्ष० ना० पु० नद विशेष ।  
 कपोतिका० ना० स्त्री० मूली तरकारी ।  
 कपोल० ना० पु० गाव ।  
 कफ० ना० पु० खलार, श्लेष्मा, बलघम ।  
 कफोन्धिज० ना० पु० समुद्रकेन ।  
 कव० अ० व० कहा, वदा ।  
 कवड़ी० ना० स्त्री० गवड़ी लेल विशेष ।  
 कवन्ध० ना० पु० विनामस्तक की देह और पाली, भेष, राह, ( उभेपूर्वावस्थाके भिन्न पर्यायिभारत, उदवात्ममेयेयै क्वन्धेपरि वारित ) इतिमहाभारते ।  
 कवरा० गु० कर्तु, चित्तला, खलक ।  
 कवारू० ना० पु० वाय, उदम, तरकारी ।  
 कमी० } ना० पु० धन्य, कमी, कदली  
 कम्बू० } कधी ।  
 कमठ० ना० पु० कहुवा ।  
 कमठा० ना० पु० धनुष, कमान ।  
 कमठी० ना० स्त्री० कहुई, धनुही ।  
 कमण्डलु० ना० पु० इण्डियों का परवा ।  
 कमनीय० गु० सुन्दर, मनोवद् ।  
 कमन्दर० ना० स्त्री० सीरी यथा ( सुका रजोगन्धि महुवी शक्ति मौक्तिक मन्दरः ) इति निघंटे ।  
 कमरख० ना० पु० फल विशेष और क विशेष ।

LIBRARY

कमल० ना० पु० पद्म ।  
 कमलज० } ना० पु० ब्रह्मा ।  
 कमलमव० }  
 कमलवायु० ना० पु० कावर, रोगविशेष जिसमें  
 देह और आत्मा पीली होजाती हैं ।  
 कमला० ना० स्त्री० लक्ष्मी, श्री ।  
 कमलाकर० ना० पु० तालाव ।  
 कमलासन० ना० पु० ब्रह्मा ।  
 कमलासिनी० ना० स्त्री० सरस्वती ।  
 कमलाक्ष० ना० पु० कमलनयन ।  
 कमलिनी० ना० स्त्री० पद्मिनी ।  
 कामार्ह० ना० स्त्री० उपार्जन, प्राप्ति, पैदायश ।  
 कामाऊ० शु० उद्यमी, यमी, देशविशेष पु० ।  
 कामाना० स० कि० उपार्जन करना, पदा  
 करना ।  
 कामेरा० शु० परिक्रमी, मेहनती ।  
 कामोदिनी० ना० स्त्री० कमलविशेष जो रातको  
 खिलता हे अर्थात् फूल ।  
 कामोरी० ना० स्त्री० मटकी, हठी, दुग्धादि ।  
 काम्प० ना० पु० कम्पना, धरपराहट ।  
 काम्पना० अ० कि० कापना, धरधराना ।  
 काम्पवाय० ना० पु० रोगविशेष जिसमें सारा  
 शरीर कम्पा करता है ।  
 काम्पाहा० शु० धरपराहा ।  
 काम्पित० शु० कापता भया ।  
 काम्पनी० ना० स्त्री० साहिब लोगों के बहुता का  
 मेल वा साम्राज्य, अगरेजी शब्द ।  
 काम्यल० ना० पु० उनका बल ।  
 काम्यु० ना० पु० शाल, हाथी, कम्पासर ।  
 काम्युज० ना० स्त्री० हरसिंघाड़ ।  
 काम्युमालिनी० ना० स्त्री० शालहोली ।  
 काम्योज० ना० पु० घोड़ा, राजाविशेष ।  
 काम्यारी० ना० स्त्री० औषधि विशेष ।  
 काम्यल० ना० पु० रोम बल, कबल ।  
 कार० ना० पु० हाथ, रानधन, महामूल, क्रि,  
 पुस्त, विषया ।

कारक० ना० स्त्री० पीछा, दर्द ।  
 कारकस० शु० कर्करा, लडाहू ।  
 कारका० ना० पु० थाला, हिमोपल ।  
 कारकशा० ना० स्त्री० लडाही ।  
 कारज० ना० स्त्री० अगुल्ला, नस ।  
 कारट० ना० पु० कौआ ।  
 कारटी० ना० पु० रागा, गा० स्त्री० कावपवी,  
 कारण० ना० पु० साधन, करविशेष ।  
 कारणी० ना० स्त्री० कम, क्रिया, धरई वा एक  
 हथियार वरस सम्बन्धी ।  
 कारणीय० शु० अवरय कर्तव्य ।  
 कारतल० ना० पु० हथेला ।  
 कारतलगत० शु० हाथमें ।  
 कारताल० } ना० स्त्री० बाना विशेष वाडका  
 कारताली० } हथेला की ताल ।  
 कारतुति० ना० स्त्री० कर्तय, चाल, रङ्गी ।  
 कारतोया० ना० स्त्री० नदी विशेष जो बाले  
 में है ।  
 कारना० स० कि० बाना, रचना ।  
 कारनी० ना० स्त्री० मरही, कर्तय ।  
 कारपल्लव० ना० पु० धगुली वा उमका छोर ।  
 कारपृष्ठ० ना० स्त्री० हाथकी पीठ ।  
 कारवी० ना० स्त्री० ज्वाला पीसा ।  
 कारभ० ना० पु० हाथी ।  
 कारमपिय० ना० पु० पन्तुइ ।  
 कारभूषण० ना० पु० कङ्गादि आभरण ।  
 कारम० ना० पु० कम ।  
 कारमदो० ना० पु० बडाकरीदा ।  
 कारमूल० ना० पु० कमा ।  
 कारवार० शु० अलगनादि जिस मन्त्रिसामि  
 यथा, नन्द यशोनाथ भाग बहेरी, सुनकी बरबर  
 या छेरी ।  
 कारवाल० ना० पु० लवण ।  
 कारवीर० ना० शु० कर्नेलवृष विशेष ।  
 कारवीरक० ना० पु० कर्नेलवृष ।  
 कारवह० ना० पु० नस, नाहन ।

करसम्पुट० ना० पु० हाथनोदन ।  
 करहाट० ना० पु० सिफारन्द, मैनफल ।  
 करहाटक० ना० पु० सिफारन्द ।  
 करान्त० ना० पु० आरा ।  
 करान्ती० गु० आरसे, चीनेहारे ।  
 कराना० स० कि० बनाना, रचना ।  
 करायल० ना० पु० भोजनविशेष जूस ।  
 करार० ना० पु० किनारा, गु० भयङ्कर, कराल ।  
 करारा० ना० कधारा, किनारा ।  
 कराल० गु० भयङ्कर, टेढा, ना० स्त्री० विडम्बना  
 शीपधि ।  
 कराली० ना० स्त्री० भयङ्कर, वडिन ।  
 करावलि० ना० स्त्री० किरणों का समूह ।  
 कराहना० अ० कि० सप्तभरना, दु खकरना ।  
 करिया० ना० पु० केवट, मझाह ।  
 करिख० ना० पु० मठोर जिसका शिर टूटा है,  
 वासका नया पौधा ।  
 करी० ना० पु० हाथी ।  
 करीर० } ना० पु० वृक्ष विशेष जो काठों  
 करीरक० } वाला होता है ।  
 करील० }  
 करीप० ना० पु० गावर की माँदों वा सुतेकण्डों  
 और कोई २ कोपला बताने हैं ।  
 करुणा० ना० स्त्री० दया, दामलता ।  
 करुणाकर० गु० दयारर, दयायी राशि, जो  
 मलना की लग्नि ।  
 करुणाकरना० स० कि० गुण कहिकर रोग,  
 दया करना ।  
 करेरा० गु० दूध, कड़ा, नखाना ।  
 करेरी० ना० स्त्री० दूध, कर्षा ।  
 करेला० ना० पु० तरकारी विशेष ।  
 करेत० ना० पु० साप विशेष ।  
 करोड़० श० संज्ञासूत्र ।  
 करोड़ा० ना० पु० उगाहनेवाला, प्रधान ।  
 करौदा० ना० पु० वृष वा उतका फलविशेष ।

कक० } ना० पु० चौधाराशि विशेष ककौ,  
 ककट० } नैगय ।  
 ककटशुक्रिका० ना० स्त्री० ककरासिनी ।  
 ककटा० ना० पु० बेरफलविशेष ।  
 ककटाख्या० ना० स्त्री० ककरासिनी ।  
 ककटी० ना० स्त्री० ककड़ी, पिडलखर ।  
 ककन्धु० ना० पु० बरका वृक्ष वा पत्तों ।  
 ककल० ना० पु० अजमोद, घृदनवायु ।  
 ककज० गु० कड़ा, कठोर, लडावा, अमह ।  
 ककशुद्धा० ना० स्त्री० केतरी ।  
 ककार० ना० पु० कुम्हड़ा, लभहा ।  
 ककारज० ना० पु० घोड़ा ।  
 ककारक० ना० पु० मुख्य सर्प ।  
 ककारिका० ना० स्त्री० ककड़ी शीपधि ।  
 ककर० ना० पु० कपूर ।  
 ककरिका० ना० स्त्री० हाथकी चूड़ी, ककरी ।  
 कक्री० ना० पु० कपगीर, धमचा ।  
 कक्री० ना० स्त्री० छोटी ककरी ।  
 ककण० ना० पु० बान, पतवार, सूर्यसत, बमान  
 वा रोद, वतरे ।  
 ककणधार० ना० पु० माम्ही, घृदनदार ।  
 ककणकूल० ना० पु० कनका भूषणविशेष ।  
 ककणवेधत० ना० पु० कानका छेदना, कनछेदन ।  
 ककणवेष्टि० ना० पु० कुडल जो कानमें पहिनेते हैं ।  
 ककण्ट० } ना० पु० दक्षिण भरतगण्डका  
 ककण्टक० } एक भाग विख्यात ।  
 ककणालम्बित० गु० कानतक सौचनो ।  
 ककणिकार० ना० पु० दिववाली शीपधि ।  
 ककणी० ना० स्त्री० बिया, धर्म, करण, जात ।  
 ककण्य० ना० पु० वरदूति, करने के योग्य ।  
 ककण्यतृ० गु० स्त्री० चाल, वरदूति ।  
 ककर्ता० } ना० पु० किया में प्रधान होता है,  
 ककर्तार० } धरनेवाला, मिरजानहार, प्रभु, मतो  
 विशेष ब्रह्मा ।  
 ककर्तृकर्मभाव० ना० पु० कर्ता और कर्म का  
 सम्बन्ध ।

कर्तृत्व० ना० पु० कर्तात्त धर्म ।  
 कर्तृप्रधान० ना० पु० गु० जिस श्रद्धमें कर्ता  
 प्रधान है ।  
 कर्तृघाचक्र० गु० जिस श्रद्धमें कर्ता पाशाजति ।  
 कर्दम० ना० पु० कीचड़, कादा, लप और गुण  
 विरोध ।  
 कर्दमक० ना० पु० कीचड़ ।  
 कर्धनी० ना० पु० कटिबधन, सूत जो कमर में  
 बाधते है ।  
 कपर्दी० ना० स्त्री० कीड़ी, यथा कपर्दी च बरा  
 णिक इति निरुपद ।  
 कर्पास० ना० स्त्री० कपास, कपासका वृक्ष ।  
 कर्पूर० ना० पु० कपूर, कपूर ।  
 कर्म० ना० पु० द्वितीयकारक, काम, भाग्य, प्रारब्ध  
 शास्त्रविहित जप यज्ञादि ।  
 कर्मकर० गु० सेवक, नोकर ।  
 कर्मकाण्ड० ना० पु० जप यज्ञादि ।  
 कर्मकारक० ना० पु० कारण विशेष ।  
 कर्मच्युत० गु० काम से भ्रष्ट, क्रियाभ्रष्ट ।  
 कर्मनाशा० ना० स्त्री० नदीविशेष जो काशी  
 और गया के मध्य में है ।  
 कर्मप्रधान० गु० कर्म मुख्य, विहित कर्ता ।  
 कर्मभोग० ना० पु० प्रारब्ध का भाग और  
 उपरसा, पक्षी विशेष ।  
 कर्मरङ्ग० ना० पु० कमरव ।  
 कर्मकाल्य० गु० जिस क्रिया पदवा कर्म उद्दे  
 रपहो ।  
 कर्मघाचक्र० गु० कर्मघुचक्र ।  
 कर्मविपाक० ना० पु० कर्मों का फल, अथ  
 विरोध ।  
 कर्मसाक्षी० ना० पु० धरत ।  
 कर्मोपधर्मि० गु० जपन विद्या, भाग्यवान्, देवागत ।  
 कर्मोत्त० ना० पु० वात ।  
 कर्मिणी० ना० स्त्री० कागज, जया ।  
 कर्मो० गु० कर्मोंका करवाला ।  
 कर्मोद्भिद्य० ना० स्त्री० इन्द्रिया निवस कर्म

करते हैं, वह पाव है अर्थात् शुद्धा, लिंग, हाथ,  
 पाव, सुत ।  
 कराना० अ० कि० कदापङ्की ।  
 कर्तुक० } ना० गु० निशाचर, कन्याद ।  
 कर्णोद० }  
 कर्णुर० ना० पु० सुवर्ण, राहस ।  
 कर्प० ना० पु० प्रमाण, की, धैर ।  
 कर्पण० ना० पु० लेंच ।  
 कर्पफल० ना० पु० बहेडा ।  
 कर्पा० ना० स्त्री० ईर्ष्या, उताह ।  
 कर्पित० गु० लीचागया ।  
 कर्च० ना० स्त्री० चन, सुत, यत्र गु० अर्थक  
 सुदर, मीठा, मधुरशब्द, आजर्क पहिला वा  
 पिछला दिन ।  
 कलकण्ठ० ना० स्त्री० वायुल पर्वी ।  
 कलकृत्ता० ना० पु० नगर विशप ।  
 कलकल० ना० पु० कालाहल, शार, अगडा ।  
 कलकाची० ना० स्त्री० नगर विशप ।  
 कलक० ना० गु० अपवाद, विद, दाप ।  
 कलकी० गु० दार्पि, पापा ।  
 कलकिनी० ना० स्त्री० दूषिता, अपरादिनी,  
 जिसका कलफ लगा ।  
 कलधौत० ना० पु० साना, चादा ।  
 कलप० ना० पु० रंग, जिसमें बाल, रगनाते है  
 बसमा माड़ी ।  
 कल्पना० अ० कि० कृदना, इ चिन्तना, कल  
 पकरना, माडा लगला ।  
 कल्पाना० स० कि० कृदना इ लीमरना कल  
 पकरना, माडीलगवाना ।  
 कलम० ना० पु० हार्थी, कलम, उतालना सायु ।  
 कलम० ना० स्त्री० लुत्तना यह अर्थवा शब्द है  
 कलमलाना० अ० कि० कुलमलाना ।  
 कलरव० ना० पु० कर्नर, कोरिला ।  
 कलवल० ना० पु० कलकल, तातरी वात ।  
 कलविक० ना० पु० गरगीया पर्वी ।

कलश० ना० पु० घट जो विवाह आदिमें स्थापित करते हैं, घडा, गगरा ।

कलस० ना० पु० शल, कलश ।

कलसी० ना० पु० शीतकलरा, गगरी ।

कलह० ना० पु० विरोध, लड़ाई, झगडा ।

कलहंस० ना० पु० रानहंस, मैलाहंस ।

कलहा० } शु० लडका, झगडालू ।

कलहारा० } शु० लडका, झगडालू ।

कलही० ना० स्त्री० कर्कशा, लडाही ।

कलत्र० ना० स्त्री० पनी, स्त्री विवाहित ।

कला० ना० स्त्री० सोलहरा अरा, बाट ।

कलारि० ना० स्त्री० पहुचा, रंगामृत ।

कलावत० ना० पु० ग्नेया, गायक ।

कलाद० ना० पु० सुनासुनाति, यथा गार्दीधम ।

स्वर्णकार कलाशेखरमकारक त्यमर ।

कलाधर० ना० पु० चन्द्रमा, नृत्यक, बहुरूपी ।

कलाना० स० कि० भुनाना ।

कलानिधि० ना० पु० च द्रमा ।

कलाप० ना० पु० समूह, व्याकरण विरोध शुष्ण ।

तर्कशा, आभरण, चन्द्रमा, इ ल, हरिदूर भजन,

भौरा का समूह, ग्राम विरोध ।

कलापी० ना० पु० मयूर, मोर ।

कलापशाक० ना० पु० मयूका साग ।

कलार० } ना० पु० कलवार, छडी ।

कलाल० } ना० पु० कलवार, छडी ।

कलि० ना० पु० चोषायुगनो ४६४००० वर्ष रा

होना है वेदोक्त समय का नाशक, समय कलि

युग, युद्ध, पाप, केरा, सुर्मा, तर्कशा ।

कलिकवि० ना० पु० कालिदासादि ।

कलिका० ना० स्त्री० सारणेशा, कली, बिना पू

साधूल ।

कलिकारी० ना० स्त्री० कलिहारी ।

कलिंग० ना० पु० इद्रयव, तरबून, कटकजका

पौधा, देस विरोध, राना विशय ।

कलित० शु० बदकामया, सुन्दर ।

कलिद्रुम० ना० पु० बहेरा ।

कलिन्द० ना० पु० तरबून पर्वत विरोध ।

कलिमल० ना० पु० पाप, दोष ।

कलिमलसरि० ना० स्त्री० कर्मनाशानदी ।

कलियाना० अ० कि० बली निकलना; पूषना ।

कलिल० ना० पु० केरा, सकट, दु ल ।

कली० ना० स्त्री० कलिका, बरी ।

कलुप० ना० पु० पाप, दोष, गुनाह ।

कलेऊ० ना० पु० चामी रमोई, प्राण काल में

थोड़ाभोजन ।

कलेजा० ना० पु० अंग विरोध, सुर्मान, सा

हस ।

कलेवर० ना० पु० देह, तन ।

कलेया० ना० पु० कलेऊ वह जो विवाह में

दूह को निस्ताने है ।

कलेश० ना० पु० अशा ।

कलोर० ना० पु० ओमर, नदी गाय ।

कलोल० ना० स्त्री० सैल, मगनता ।

कल्की० ना० पु० दशवा अवतार, श्लेष्यातक

जो कलि के अन्त में सम्मल में होगा ।

कल्प० ना० पु० ब्रह्माका दिन रात, प्रलय,

वल्पवृक्ष, सामर्थ्य, विचार, रचना, बदलना,

शास्त्र विरोध ।

कल्पतरु० ना० पु० वल्पवृक्ष ।

कल्पना० अ० कि० सोदित होना, मान लेना,

प्रज्ञा करना, तर्क, लालसा, वष्ट ।

कल्पान्त० ना० पु० कल्पका अन्त, क्रयामन्ती ।

कलित० शु० रक्षित, विचारित, मानाहुया ।

कल्याण० ना० पु० कुशल, मगल, बदनी ।

कल्लर० शु० ऊमर ।

कल्लाना० अ० कि० जलनि पडना, पिराना ।

कल्लोलिनी० ना० स्त्री० तरंगपुत ।

कवच० ना० पु० किलय, बल्लर, रसक, प्रलय

विरोध ।

कव्य० ना० पु० कव्य विरोध ।

कवर्ग० ना० पु० कवरादि पञ्च अक्षर ।

कवरी० ना० स्त्री० केरापाग, बेठी, मावरी ।



कवच० ना० पु० ग्राम लुचमा ।  
 कवि० ना० पु० भाट, श्लोक व द्ध दकर्ता, शायर ।  
 कवित० ना० पु० छंद, पद्य ।  
 कविता० } ना० स्त्री० पद्य, श्लोक, छंद ।  
 कविताई० }  
 कविमाता० ना० स्त्री० शुभाचार्यकी माता ।  
 कविपुंगव० ना० पु० बड़ा कवि, श्रेष्ठकवि ।  
 कविराज० } ना० पु० बड़ाकवि, उत्तमकवि ।  
 कवीश्वर० }  
 कशर० ना० पु० कचनार ।  
 कशेरू० } ना० पु० कसेरू ।  
 कशेरुक० }  
 कश्मीर० ना० पु० काश्मीर ।  
 कश्यप० ना० पु० सुनि, मरीचि, भृशपाति  
 का पुत्र ।  
 कश्यपी० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती, क्षमीन जो  
 कश्यपसे सम्बन्ध रखते ।  
 कषाय० गु० कसेला रस ।  
 कष्ट० ना० पु० दुःख, पीड़ा, दर्द ।  
 कष्टनाश० ना० पु० नीलकण्ठ पत्नी जिसकी  
 कष्टनाश कहते हैं ।  
 कष्टित० } गु० दुःखित, पीडित, रजदि ।  
 कष्टी० }  
 कस० अय० केसा, कितप्रकार ।  
 कसक० ना० पु० पीड़ा, दुःख ।  
 कसकना० अ० कि० दुःखभोगना, दुःखहोना ।  
 कसकसा० गु० बालू मिलाहुआ पदार्थ ।  
 कसन० ना० पु० दृष्टा, यन्त्रणा ।  
 कसना० स० कि० खेचना, जाचना, धीमेधनना,  
 तलना, आकम्पाकरना ।  
 कसा० गु० खोँचाहुआ ।  
 कसाई० ना० स्त्री० खिचारी ।  
 कसाना० स० कि० खिचाना, जचाना, पी में  
 डुबवाना, तलना ।

कसान० ना० पु० वह पदार्थ जिससे कसानाये ।  
 कसुमिह्व० ना० पु० नींबूवृक्ष ।  
 कसेरू० ना० पु० जलका कन्द विरोध ।  
 कसेरुक० ना० पु० कसेरू ।  
 कसेरुका० ना० स्त्री० पीठकी हड्डी ।  
 कसेरा० ना० पु० कासकारक, कासगर, जाति  
 विशेष, बर्ता बनानेवाला ।  
 कसेला० } गु० कषाय, कसेला ।  
 कसेला० }  
 कसेया० गु० कसनेवाला ।  
 कसौटी० ना० स्त्री० स्वर्णादिपरीक्षकपाषाण ।  
 कस्तूरी० ना० स्त्री० मृगमद, सुश्च ।  
 कस्मल० ना० पु० पाप, मूर्च्छा ।  
 कस्मयी० ना० स्त्री० कम्भार ।  
 कास्मिन्० सर्व० कोन ।  
 कस्य० सर्व० किसको ।  
 कस्यप० ना० पु० कश्यपपुत्रि विशेष ।  
 कहतूति० ना० स्त्री० कहावत, मसल ।  
 कहना० स० कि० बोलना, जताना, आज्ञा  
 करना, बर्णन करना ।  
 कक्ष० ना० स्त्री० बाल, बगल ।  
 कक्षा० ना० स्त्री० ग्रहोंकी बालका मडलाकार  
 पन्थ ।  
 कहलाना० स० कि० बलाना, जलाना,  
 भुनाना ।  
 कहा० सर्व० क्या० ना० पु० आज्ञा ।  
 कहानी० ना० स्त्री० कथा, किस्सा, वृत्तान्त ।  
 कहार० ना० पु० जातिविशेष भीमर ।  
 कहावत० ना० स्त्री० बात, दृष्टांत, मसल ।  
 का० सर्व० किसी, क्या, संबन्धी ।  
 कांक० ना० पु० ककर ।  
 कांस० ना० स्त्री० कच, बगल, कराह ।  
 कांसना० अ० कि० बलाहना, घुरनाना, से०  
 कि० छेदना, दबाना ।  
 कांगनी० ना० स्त्री० पौधा विशेष, बीज उसका ।

कांच० गु० कच्चा, ना० पु० गुदा में रोग विशेष  
 ना० स्त्री० शीशा ।  
 कांजी० ना० पु० जल विशेष, मान की सहाय  
 के बनता है ।  
 कांटा० ना० पु० वस्त्र, स्वर्णादिक तौलनेका यंत्र  
 तुला, जलमें गिराहुई वस्तु निकालने का यंत्र ।  
 कांठा० गु० किनारा, अत, धोर, समीप ।  
 कांड० ना० पु० खण्ड, तीर विशेष ।  
 कांडी० ना० स्त्री० कड़ी, धरन ।  
 कांडू० ना० पु० चीनी पकनेका कड़ाह, भूजानाति  
 विशेष, भुनी ।  
 कांदौ० ना० स्त्री० लीज, कीचड, कादौ ।  
 कांधना० अ० नि० मलना, स्वीकारकरना ।  
 कांधा० ना० पु० कथा ।  
 कांपना० अ० नि० दलदलाना, थरथराना ।  
 कांस० ना० पु० वृष विशेष ।  
 कांसा० } ना० पु० धातुविशेष ।  
 कांस्य० }  
 कांक्षा० ना० स्त्री० इच्छा, मनोरथ ।  
 काई० ना० स्त्री० हरी वस्तु जो तालादि में  
 लगती है ।  
 काऊ० सर्व० निम्नों, किसी को ।  
 काक० ना० पु० कीया, पत्नी विशेष ।  
 काकजघा० ना० स्त्री० पीथा विशेष ।  
 काकटम्बपुष्पी० ना० स्त्री० महापुष्पी ।  
 काकतिक्रा० } ना० स्त्री० वागवधा ।  
 काकपदी० }  
 काकपक्ष० ना० पु० जुलू, नावरी, काकुल,  
 कीया के पक्ष ।  
 काकभुशुण्डि० ना० पु० प्रसिद्ध पक्षी श्रीरामा  
 मण वत्स ।  
 काकर० सर्व० कित्ता ।  
 काका० ना० पु० पिताका भाई, चचा ।  
 काकिणी० ना० स्त्री०, २० कीड़ी को कहते हैं,  
 लीलावत्या तथा वराहमिनाशकाय थत्ताका

किर्याताश्चपश्चतस्रः, तेषांऽश्राद्रम्मइहाभिगुप्सो  
 द्रग्मैत्रिणापोऽश्राभिश्चनिष्कः ।

काकी० ना० स्त्री० पाका की पत्नी, चाची ।  
 काकु० ना० पु० व्यग्नयचन, कड़ीवाद ।  
 काकोद्दर० ना० पु० सर्प, कोबाका पेट ।  
 काकोल० ना० पु० विष, हलाहल ।  
 काख० ना० स्त्री० काख, कच्चा ।  
 काखमलाई० ना० स्त्री० कसौरी ।  
 काग० ना० पु० काक, कौघा ।  
 कागासुर० ना० पु० काकरूपी देव, जित्तरी  
 जीम श्रीकृष्णचद्रगने तोड़दीधी ।  
 काच० ना० पु० काच, गु० कच्चा ।  
 काचक० ना० पु० वास ।  
 काचा० गु० कच्चा, असानी ।  
 काऊ० ना० स्त्री० शोकाका दूसरा तिरा जो  
 पीछे की संवत्ते हैं, कमर, जघाका ऊपरभाग ।  
 काछना० स० नि० काठमारना, चदाना, पो  
 धा, बेंगना ।  
 काछनी० ना० स्त्री० काठ विशेष ।  
 काछी० ना० पु० घुआऊ जाति विशय ।  
 काज० ना० पु० कार्य, काम ।  
 काजल० ना० पु० कज्जल, अमन, सरमा ।  
 काजी० गु० कार्य कर्ता, वामी ।  
 कांचन० ना० पु० सुवर्ण, सोनाधातु ।  
 कांचनपुष्पिका० ना० स्त्री० मूसली ।  
 कांचनार० ना० पु० कचनार वृक्ष ।  
 कांचनी० ना० स्त्री० हल्दी, सैनेकी पुनली  
 पर्वती वेश्या ।  
 कांची० ना० स्त्री० पुरीविशेष, जिसके दो  
 भाग हैं एक विष्णुकाची दूसरी शिवकाची ।  
 काट० ना० स्त्री० चारा, मेल, तीक्ष्णता, तेरी  
 काटना० स० नि० कटना, टुकड़े करना, का  
 टवाना, सवना, अर्थात् लानी, धाराकरना,  
 रहना, विनाश, रोकना, लजित, होने,  
 खालना, लजितकरना ।

काटमाण्डु० ना० पु० नेपालदेशकीरामधानी ।  
 काठ० ना० पु० काष्ठ, सूतीलकड़ी ।  
 काठिन्य० ता० पु० कठिनता, कठोरपन ।  
 काठियावाड़० ना० पु० देशविशेष ।  
 काठी० ना० स्त्री० घोड़े के उपरका काष्ठ का  
 आसन, मियाग निसर्ग तलवार रखने हैं, तग,  
 देह, डील, लकड़ी ।  
 काढ़ना० स० वि० निकालना, चमका उधेड़-  
 ना, कपड़े में पूल दूग बराना, चालमिताना ।  
 काड़ा० ना० पु० काष्ठ ।  
 काण० } यु० एकाक्ष, एकनयन ।  
 काणा० }  
 काणी० ना० स्त्री० एक आतिथाला ।  
 काण्ड० ना० पु० खण्ड, प्रकरण ।  
 काण्डरुहा० ना० स्त्री० कुटकी ।  
 कातना० स० कि० सूत रंगे से बनाना रईया के  
 द्वारा ।  
 कातर० यु० डरपोकना, व्याकुल, ना० पु० जगल  
 दुर्मिच, बोलहू की पाटि ।  
 कातिक० ना० पु० आठवा महीना ।  
 कातिकी० ना० स्त्री० कातिक की वस्तुआदि,  
 कातिककी पूर्यमासी ।  
 काती० ना० स्त्री० छोटी तलवार, कती ।  
 कात्यायन० ना० पु० मुनिविशेष, स्मृतिवि-  
 शेष ।  
 कात्यायनी० ना० स्त्री० देवीविशेष, स्मृति  
 विशेष, कात्यायन वशी ।  
 कादम्बिनी० ना० स्त्री० मेघमाला ।  
 कादर० यु० डरपोकना, व्याकुल ।  
 कादरता० } ना० स्त्री० भय, डर, डरपोकना  
 कादरार्थ० } पन ।  
 काधना० स० कि० काधना, काधे धरना ।  
 कान० ना० पु० कर्ण, श्रवण, ज्ञान, अदब ।  
 कानन० ता० पु० वन, जगल, बसाकापाल ।

कानि० ना० स्त्री० मर्याद, सकोच, अदब, ज्ञान ।  
 काना० ना० पु० अक्षर की सही लकीर, का-  
 षा, कड़ाही आदि का गढ़ना ।  
 कानी० ना० स्त्री० जो एक आल की होवे ।  
 कानीन० यु० नीच, लुद, स्त्री० लकड़ी, रामच  
 द्रिकाया अद्यापि आनीनरे बुद्धिमानन ।  
 कान्त० ना० पु० पति, स्वामी, सुदर ।  
 का०ता० ना० स्त्री० पत्नी, प्यारी ।  
 कान्ताह्ला० ना० स्त्री० मियगु थोपनि ।  
 कान्ति० ना० स्त्री० शोभा, चमक और नम  
 चंद्रमा की एक कला का ।  
 कान्तिपापाण० ना० पु० कुम्भक ।  
 कान्दा० ना० पु० जलका बंद, कलकदरा ।  
 कान्यकुब्ज० ना० पु० देश विशेष, ब्राह्मण  
 कान्हू० } ना० पु० श्रीकृष्ण जी का एकनाम ।  
 कान्हर० }  
 कापट्य० यु० शठता, बर्षट ।  
 कापथ० ना० पु० अनिमार्ग, कठिनमार्ग ।  
 कापुरुष० यु० कुसित, मनुष्य, बुरा आदमी  
 कुनन, कुकर्मी, नर ।  
 काम० ता० पु० भोगकार्य, अभिलाष; कामदेव,  
 ज्ञान, विषय, वधावा, सुदर ।  
 कामक० ना० पु० मेघ ।  
 कामकोलि० ना० स्त्री० दुलार, प्यार, सगम,  
 प्रसंग ।  
 कामचन्द्रिका० ना० स्त्री० प्रपत्नी ।  
 कामतरु० ना० पु० फलवृक्ष ।  
 कामद० यु० कामना दाता ।  
 कामदगो० ना० स्त्री० हृदकी गाय ।  
 कामद्वती० ना० स्त्री० वसुतकतु, कुर्मी ।  
 कामदेव० ना० पु० मदन, म मथ ।  
 कामधेनु० ना० स्त्री० इन्द्रकी गो, देवगो ।  
 कामना० ना० स्त्री० इच्छा, कामाभिलाष; मदन ।

कामपाल० ना० पु० बलदेवजी।  
 कामघन० ना० पु० जिस वृत्तमें भी सदाशिव  
 ने कामदेव का जलाया था।  
 कामरी० ना० स्त्री० वग्मत।  
 कामरूप० ना० पु० इच्छाचारी, सुन्दर, देश  
 विशेष।  
 कामरूपी० पु० बहुभुषिता, सुन्दर, कामरूप  
 वाली।  
 कामसखा० ना० पु० इन्द्र, घसन्तकृत।  
 कामांग० ना० पु० आम्रवृक्ष।  
 कामातुर० } पु० मदनमत्त, कामी, पुल-  
 कामात्त० } हारा।  
 कामिनी० ना० स्त्री० सुत्तम, सुदरी, ना० पुत्र  
 वृक्ष विशेष, कामातुर स्त्री।  
 कामी० पु० कामातुर, बहुभुषी, मनलती माधवी  
 वृक्ष।  
 कामुक० ना० पु० स्त्री के सुल में आनन्द,  
 कामातुर।  
 कामोद० ना० स्त्री० राशिनी विशेष।  
 कामोज्ञ० ना० पु० देव जो बगल के दक्षिण  
 पूर्व है।  
 काम्य० पु० सुन्दर, अष्टा।  
 काम्यकर्म० ना० पु० स्वर्गादि कला के लिये  
 जो कर्म करना।  
 काय० ना० स्त्री० देह, तन।  
 कायक० पु० देही।  
 कायफल० ना० पु० शीघ्र विशेष।  
 कायर० पु० भयमान, डरपोक, हेडा।  
 कायस्थ० ना० पु० जानिविशेष, पु० जो निज  
 काम में स्थितही अर्थात् सन्तुष्ट।  
 कायस्था० ना० स्त्री० हरि, काकाणी।  
 काया० ना० स्त्री० देह, तन।  
 कायाकल्प० ना० पु० देहका बदलना।  
 कारक० ना० पु० किया। साक्षात् विहित।  
 कारज० ना० पु० कार्य, काम।  
 कारण० ना० पु० निमित्त, लिये, सब, प्रवृत्ति।

कारणी० पु० कारण, कर्ता।  
 कारयल्ली० } ना० पु० करेला, तरकारी।  
 कारवेह्य० }  
 कारवी० ना० स्त्री० अजमोट, कसौजी।  
 कारागार० } ना० पु० बन्दीघर, जेलखाना।  
 कारागृह० }  
 काठ० } ना० पु० शिल्पकार, धरई  
 कारकर० }  
 कारुणिक० पु० दयालु, कृपालु।  
 कार्तस्वर० ना० पु० सुसर्प, कृचनू।  
 कार्तिक० ना० पु० कानिक।  
 कार्तिकेय० ना० पु० स्वामिकानिक।  
 कार्पण्य० ना० पु० दरिद्रता, दुनता।  
 कार्पास० ना० स्त्री० कपाम।  
 कार्मुक० ना० पु० धनुष, महान्त वृक्ष।  
 कार्पण्य० ना० पु० प्रयोजन, काम।  
 कार्याण्य० ना० पु० बीड़ी के सोलहपण्य का  
 मान अथवा तोल।  
 काल० ना० पु० मृत्यु, दुर्भिक्ष, समय, कल  
 काला, धर्मरान, सर्प, सुन्दर, यमरान ३।  
 कालक० ना० पु० कृपयता, बीजगणित में प्रयोग  
 का बोधक।  
 कालकृत्० ना० पु० विष, हलाहल।  
 कालपोनुक० ना० पु० तेंदुआवृक्ष।  
 कालपर्णी० ना० स्त्री० कालानिमान।  
 कालमेयिना० ना० स्त्री० मनोट, बाहुची।  
 कालमेयी० ना० स्त्री० कालानिमान।  
 कालयमन० ना० पु० नाम एक भ्लेच्छ  
 जिसका अदृश्यचन्द्र ने भ्रम किया था।  
 कालराति० } ना० स्त्री० प्रलयकाल की रा  
 कालरात्रि० } अर्धराति, देवी विशेष।  
 कालघाहन० ना० पु० भेसा।  
 कालवृत्तिका० ना० स्त्री० कुम्भी जो पानी  
 होती है।  
 कालशाक० ना० पु० सरफोका।  
 कालसार० ना० पु० तेंदुआ वृक्ष।

कालसूत्र० ना० पु० नख भेद ।  
 कालस्कन्ध० ना० पु० तमालवृक्ष ।  
 कालक्षेप० ना० पु० समय काटना, डे स भोग  
 करना, सुशरान करना ।  
 कालश० शु० व्यातिषा, परिष्क, यार्माशर, ज्ञाता,  
 सुसांपत्नी, शृगाल ।  
 काला० शु० शृङ्खनर्य, श्यामरग ।  
 कालिका० ना० स्त्री० धनिया, मसाला, काली  
 जति, दर्शविशेष ।  
 कालिरयात० ना० स्त्री० किन्दवाली ।  
 कालिन्दी० } ना० स्त्री० यमनामदा विशेष ।  
 कालिन्दी० }  
 कालियङ्ग० ना० पु० मलय, चन्दन ।  
 कालिया० ना० पु० कालीनाग, शु० काला ।  
 काली० ना० स्त्री० मसी, देवीविशेष, मिसर  
 देशकी नदी ना० पु० कालीनाग ज्ञा यमुना म  
 रहा करता था ।  
 कालोद्दह० ना० पु० यमुनाजी म विशेषस्थान ।  
 कालपानिक० शु० आरोपित, कल्पना विनाशया,  
 ना० स्त्री० तदी विशेष जो दक्षिण में है ।  
 कावेरी० ना० स्त्री० नदी विशेष ।  
 काव्य० ना० पु० पद, श्लीक, छन्द, पुस्तक,  
 जिसमें कविनाई हो, शुक ।  
 कास० ना० पु० सासी, लोम्बा ।  
 कासघ्नी० ना० स्त्री० भारगी औषधि ।  
 काश्मिर्द० ना० पु० कलौजी का शार्द ।  
 काश्मीर० ना० पु० देश विशेष जो पनाज के  
 उत्तर है, पुरस्कृत ।  
 काश्मीरी० ना० स्त्री० कसर, कम्भारी, का  
 श्मीरदेशवासी ।  
 काश्यप० ना० पु० कश्यपकी सत्ता ।  
 काश्यपी० शु० मृज या स्थान ।  
 काशी० ना० पु० नगर विशेष ।  
 काष्ठ० ना० पु० काठ, लकड़ी ।  
 काष्ठेता० ना० पु० बर्दा ।  
 काष्ठादला० ना० स्त्री० कुम्भी ।

काष्ठान्तर० ना० पु० काठके भीतर ।  
 काष्ठी० ना० स्त्री० कश्यपी ।  
 कासार० ना० पु० तालाफ, मैसा ।  
 कासु० सर्व० कित्तो ।  
 काहन० ना० पु० कापोपन ।  
 काहे० सर्व० क्यों ।  
 काक्षी० ना० स्त्री० कश्यपी ।  
 कि० अन्व० प्रथमवाक्य का द्वितीयवाक्य स  
 सम्बन्धकारक ।  
 किशुक० ना० पु० पलाश, दास, मेषु ।  
 किंकर० ना० पु० दहलुआ ।  
 किंकरी० ना० स्त्री० दासी, दहलुआ ।  
 किंकिणी० ना० स्त्री० अतिवध धरा समत,  
 पाकवृक्ष ।  
 किंपयान० ना० पु० धाड़ा ।  
 किचकिचाना० अ० कि० दातपीसना ।  
 किचठाना० अ० कि० आत्मा में कौतुहलाना ।  
 किचपिचाना० अ० कि० गड़बड़ाना ।  
 किचित् अन्व० थोड़ा, थल्प, कुछ ।  
 किचिन्मात्र० शु० कुछ, प्रतिथल्प ।  
 किञ्चुक० ना० पु० स्याविशेष ।  
 किञ्चुकी० ना० स्त्री० चाली थगिया ।  
 किञ्जरक० ना० पु० सिक्कानन्द ।  
 किटि० ना० पु० सुथर, सुकर, यथा, बराह-सकरो  
 शृष्टि कालपीनी विरिक्ति इत्यमर ।  
 किङ्किङ्गाना० अ० कि० क्रोधसे दातपीसना  
 किङ्गहा० ना० पु० जगा, शु० हुना ।  
 कित० अन्व० बढ़ा, फिर ।  
 कितना० } शु० प्रमाण का प्रश्नकारक  
 कितनी० }  
 कितनी० }  
 कितेक० शु० बहुत ।  
 कितै० अन्व० तिथर ।  
 कित्ति० ना० स्त्री० कति, यम, रामचन्द्रिकाया  
 यथा, यस्तरु बर्दा लेय मूमि देयमान ऐतिहे

किधर० अर्थ० पदा ।  
 किनारा० ना० पु० तट, कूल ।  
 किनारी० ना० स्त्री० गाय, मगाती ।  
 किन्० ना० पु० धाव, अर्थ० क्यों नहीं ।  
 किन्तय० ना० पु० धनूरा ।  
 किन्तु० अर्थ० परन्तु निमपरभी ।  
 किन्नर० ना० पु० यक्षद्वारा ।  
 किन्नरी० ना० स्त्री० सारंगी, यक्षिणी ।  
 किपलता० ना० पु० कैचा का वृष ।  
 किम्० सर्व्व० क्यों किसप्रकार ।  
 किमापे० सर्व्व० क्योंभी, किसप्रकार ।  
 किमर्थ० सर्व्व० किसलिये ।  
 किमाञ्च० ना० पु० खड्डा, चीच ।  
 किमि० सर्व्व० क्यों निमप्रकार ।  
 किम्पुष्टय० ना० पु० नवतरण धरानल में स  
 एक नाम, बुद्धेक पौष्पी ।  
 किंचा० अर्थ० अथवा ।  
 किरकिनी० ना० स्त्री० छाग सकडी ।  
 किरकिरा० श्रु० रतीला बालुष्पा ।  
 किरकिराना० अ० कि० किचकिचाना, बन  
 डाना ।  
 किरण० ना० स्त्री० ररिम, गुथा ।  
 किरात० ना० पु० भील जानिविशेष, चिरायना ।  
 किरातक० ना० पु० चिरायता ।  
 किराना० स० कि० साफ करना, ना० पु०  
 मसाला, औषधि वपरह ।  
 किरि० ना० पु० कि० शकुर ।  
 किरिच० ना० स्त्री० तलवार टुकड़ा ।  
 किरिया० ना० स्त्री० गणप, सीगद, सीह  
 किया ।  
 किरिटी० ना० पु० मुकुट, तान ।  
 किरिटी० ना० पु० अर्द्धन ना० स्त्री० शरता  
 हली भाषधि, श्रु० मुकुटधारी ।  
 किल० अर्थ० निश्चित ।  
 किलनी० ना० स्त्री० कीरविराज ।  
 किलाकिल० ना० पु० मानसों का शब्द ।

किलिम० ना० स्त्री० देवदास ।  
 किलकारी० ना० स्त्री० प्रसन्नता स हँसना ।  
 किलकारीमारना० अ० कि० प्रमत्तहोके जय  
 जयकार करना, मृग हँसना ।  
 किलकिलाना० अ० कि० चिन्चिवादाना ।  
 किह्नी० ना० स्त्री० गनी बीला ।  
 किरिय० ना० पु० धाव, दाप, गुनाह ।  
 किसलय० ना० पु० नर्तनपत्ता ।  
 किशार० ना० पु० तरुणधरण्या अर्थात् २६  
 वर्षक का लडका ।  
 किसनई० ना० स्त्री० खनाका काम ।  
 किखान० ना० पु० नातार, मत्त करोहता,  
 जान विशेष ।  
 कीचड० ना० पु० बडूल ।  
 कीव० } ना० पु० कादा, चहला ।  
 कीचड० }  
 कीट० ना० पु० कीड़ा ।  
 कीटनीरी० } ना० स्त्री० हसपादी पोषा ।  
 कीटसारी० }  
 कीडा० ना० पु० की०, कृमि, विरम ।  
 कीतनक० ना० पु० मुलहटी ।  
 कीना० स० कि० करना ।  
 कीर० ना० पु० तोतापत्नी यथा कीरशुकी सम  
 त्विभर ।  
 कीरत० } ना० स्त्री० कार्ति, चर्चार्ह, तारीक  
 कीरति० }  
 कीर्त्तन० ना० पु० गाना, कीर्त्तन, बहना ।  
 कीर्त्ति० ना० स्त्री० यश, सुनि, नेकनामी ।  
 कील० ना० स्त्री० लाहेका बाग ।  
 कीलना० स० वि० मन फूककर रोचना ।  
 कीला० ना० पु० लाहेका बाग ।  
 कीलाल० ना० पु० जल, पानी ।  
 कीश० ना० पु० यानर, नदर ।  
 कु० अर्थ० यह अक्षर जिस शब्द के प्रथम  
 सप्लुत होता है उसका अर्थ कभी सुरा,  
 निदिब, कभी न्यून होताहै, पृष्ठी,

कुंवर० } ना० पु० कुनार ।  
 कुंवारा० }  
 कुंवारी० ना० स्त्री० कुमारी ।  
 कुञ्जारा० ना० पु० विनाख्याहालङ्कार ।  
 कुञ्जारी० ना० स्त्री० कन्या विना विवाही ।  
 कुकन्या० ना० स्त्री० पृथ्वीकी कन्या विशेष स्त्री  
 सीताच, य० इष्ट कन्या ।  
 कुकर्म० ना० पु० बुराकाम ।  
 कुकर्मि० य० कुकर्म करनेवाला ।  
 कुकुरद० ना० पु० मुरगा ।  
 कुकुरदण्ड० ना० पु० सकेदमांसा, कुकुरका  
 धराज ।  
 कुकुरदंडी० ना० स्त्री० सुरसिया, मुरगी ।  
 कुकुरदंड० ना० पु० जंगली करीदा ।  
 कुकुरिया० ना० स्त्री० निन्दिताचरण, तुच्छकर्म ।  
 कुकुरि० ना० पु० लयावर, बुरापर ।  
 कुचाट० ना० पु० बज्रौल, बदसूरत, कुसितुवदि,  
 जहा घाट न हो ।  
 कुचात० ना० स्त्री० कुसमय मारता, बुरीवात् ।  
 कुकुम० ना० पु० केसट, जाकरत ।  
 कुकुमा० ना० पु० गुलाल भरने के लिये लो  
 लालका बनता है ।  
 कुच० ना० पु० स्नान, चूनी, उरोज ।  
 कुचन्दन० ना० पु० पतंग जिससे कपडा रंगते हैं ।  
 कुचलना० स० कि० बुरकरना, मसलना ।  
 कुचला० ना० पु० शीपधि विशेष ।  
 कुचिया० ना० स्त्री० तोलकी, कानका शोभा ।  
 कुचैला० य० मेला ।  
 कुचैना० य० दुःख, अयसूनना ।  
 कुच्छ० स्त्री० धोखा, रचक ।  
 कुज० ना० पु० मंगल, बुद्धि, भोमासुर ।  
 कुजाति० य० नीचजाति, या नीच ।  
 कुजित० य० धरलेदारवाले, गधुवारेवाले ।  
 कुञ्जिका० ना० स्त्री० कुंजी, तासी ।

कुची० ना० स्त्री० कलोजी ।  
 कुंज० ना० पु० बृष खतादि रचित रामायण  
 स्थान, तंगली, पृथ्वीविशेष ।  
 कुंजर० ना० पु० हाथी, मुख्यप्रधान, रामायण  
 यथा, कपि कुंजरहि बोलिलेथाय ।  
 कुञ्जिका० } ना० स्त्री० ताली, चामीस ।  
 कुंजी० }  
 कुटकी० ना० स्त्री० शीपधि विशेष, कटुविशेष ।  
 कुटज० ना० पु० इन्द्रयव ।  
 कुटना० ना० पु० गड्ढा, य० कि० पिटा ।  
 कुटनाना० स० कि० कुसलाना ।  
 कुटनी० ना० स्त्री० दूती, नायिका ।  
 कुटाना० स० कि० पिटा ।  
 कुटिल० य० देहा, कूर ।  
 कुटिलता० } ना० स्त्री० देहापन, कूरता ।  
 कुटिलाई० }  
 कुटी० } ना० स्त्री० मदी, शोपधी, प्रकृत  
 कुटीर० } स्थान, समिया ।  
 कुटीरा० }  
 कुटुम० ना० पु० कुटुम्ब ।  
 कुटुमी० ना० कुटुम्बी ।  
 कुटुम्ब० ना० पु० कुनका, घराना ।  
 कुटुम्बी० ना० पु० गृहक, घरवाला ।  
 कुटेव० ना० स्त्री० कुनाप, कुचालि, बुरी सो ।  
 कुटनी० ना० स्त्री० कुटनी ।  
 कुठार० ना० पु० फरसा, कुहरा, तरंग ।  
 कुठारी० ना० स्त्री० कुहरा, टांकी ।  
 कुठाहर० ना० पु० कुसमय, वै मौका ।  
 कुडकना० } य० कि० क्रोधयुक्त शिकर के-  
 कुडकुडाना० } हना, रिताय के बोलना ।  
 कुडना० य० कि० विलापकरना, कलफनी, ल-  
 हरना, हसकरना ।  
 कुडाना० स० कि० सताना, देहना ।  
 कुटन० ना० पु० स्थानावृत्त ।  
 कुटिलत० य० लज्जित, कुटली, अतीव ।

कुरड० ना० पु० आगिरसनेके लिये वृत्रिमकुरड,  
जलका विरोध स्थान, पवि विद्यमान होते जा-  
न पुन, गड्हा, तालाब ।

कुरडल० ना० पु० वर्षभूषण, घेरा, मडला मोती ।

कुरडलिया० ना० स्त्री० गोलार्ध, धादविशेष ।

कुरडलित० शु० गोहारा, कुडलसुत ।

कुरडली० ना० पु० बचनार, गुरब ।

कुरडी० ना० स्त्री० कोड़ी ।

कुतुप० ना० पु० दिनका आठका सुई ।

कुतर्क० ना० स्त्री० नीचविचार, बुरीदलाल ।

कुतर्की० शु० कुतर्क करनेहारा ।

कुतर्ना० स० कि० दातों से काटना ।

कुत्तल० ना० पु० धरुवल, रूपनर्मान ।

कुतिया० ना० स्त्री० कुत्तारी स्त्री शु० कूतनेहारा ।

कुतुक० ना० पु० कौतुक ।

कुतूहल० ना० पु० कौतुक, चौप, उतावली  
खेल, हँसी ।

कुत्ता० ना० पु० कुत्तर ।

कुरसा० ना० स्त्री० निन्दा, अक्ता ।

कुत्सित० शु० निन्दित, नीच, बुरा, छराब,  
निषेधित ।

कुदकना० अ० वि० उद्वलना, वृद्धना ।

कुदरा० ना० पु० अन्न विरोध, जिससे लकड़ी  
चरते हैं ।

कुदराना० अ० कि० उद्वलना, वृद्धना ।

कुदाना० स० कि० उद्वलाना, फँदाना ।

कुदारी० } ना० स्त्री० मिट्टी खोदने का अन्न  
कुदारा० } विशेष ।

कुदरि० ना० स्त्री० पापदृष्टि, बदनहार ।

कुदाल० ना० पु० बचनार ।

कुधातु० ना० पु० लोहा समयके यथा, पारस  
पारस कुधातु सोहार्द ।

कुधि० } शु० निन्दित, बुरीगति, बेनर्मात ।  
कुधी० }

कुनडी० ना० पु० मनसिल ।

कुनवा० ना० पु० कुणवा, धराना, खानदान ।

कुनीति० ना० स्त्री० कुचाल, बुरीगति, अन्याय ।

कुन्त० ना० पु० पानी, पवन, कमल, भाला,  
करान, राना विरोध ।

कुन्तल० ना० पु० नाल, केश, घनधार, बर्धा,  
हल, खेतनेतने का, राना विरोध, वानर  
विशेष, बपटी ।

कुन्तली० ना० पु० चिरपोटा ।

कुन्तिज० ना० पु० युधिष्ठिरादि पांडव ।

कुन्ती० ना० स्त्री० पांडवोंकी माता ।

कुन्द्रू० ना० पु० श्वेतवर्ण, पुन्य विशेष, उच्चल ।

कुन्दन० ना० पु० उत्तमस्वर्ण, अर्घ्यासोना ।

कुपति० शु० दुष्टपति, दुष्टस्वामी, बुरामालिक ।

कुपध० ना० पु० कुमार्ग, बुराह, बुरीराह ।

कुपथ्य० शु० जो पदार्थ पाचक न हो वा रोगी  
का उपकारी न होवे, बद्दहजम ।

कुपरामर्श० ना० पु० कुमन्थ ।

कुपात्र० शु० अयोग्य, नालायक ।

कुपुरुष० शु० पुरुषार्थ रहित, बुरा ।

कुपूत० ना० पु० कपूत, नालायक लकड़ा ।

कुप्य० ना० पु० चादी, रूपा ।

कुप्या० ना० पु० चर्मका, बड़ापान चमड़े का  
जिसमें धी आदि रखते हैं ।

कुप्या० ना० स्त्री० क्षीयकुप्या ।

कुप्य० ना० पु० कुबड़ा ।

कुषजा० ना० पु० कुञ्ज ।

कुवडू० ना० पु० टेढ़ा ।

कुवडा० शु० कुञ्जा ।

कुञ्ज० शु० कुञ्जा, बकपृष्ठ ।

कुञ्जा० ना० स्त्री० कुबड़ा, टेढ़ी, कुबरी प्रसिद्ध ।

कुधत० ना० स्त्री० निवृष्टवार्ता, बुरीबात ।

कुमएडल० ना० पु० धरामडल, राज्य ।

कुमति० ना० स्त्री० मूर्खता, अहमकी शु० उ-  
न्मत्त, मूर्ख ।



कुम्भद० ना० पु० कुम्भद ।  
 कुम्भदिन ना० पु० कभूल ।  
 कुमार० ना० पु० बालक, रामपुत्र, स्वामि  
 कार्तिक, कामरहित ।  
 कुमारिका० } ना० स्त्री० कया, नितरि रजो  
 कुमारी० } धर्म नहीं भया, साधारण सुता,  
 धांकुमारिपीथा ।  
 कुमार्ग० ना० पु० कुपथ, दुर्गताह ।  
 कुमुद० ना० पु० कभूल जो रात्रि को खिलता  
 है और दिनको सम्पुटित होताई उसको श्वेत  
 कमलभी कहते है और रामदल में बार विंगेय  
 था, चादनी, मुदरहित ।  
 कुमुदयन्त्रु० ना० पु० चद्रमा ।  
 कुमुदिनी० ना० स्त्री० कमलिनी ।  
 कुम्भ० ना० पु० घडा, बलश, बलशा ।  
 कुम्भक० ना० पु० कुम्हार, योगकियामें पवन  
 पेट वा ब्रह्माण्डमें रोकनेको कहते हैं ।  
 कुम्भकर्ण० ना० पु० रानण्या छोटाभार्द ।  
 कुम्भकार० ना० पु० कुम्हार, कुलाल ।  
 कुम्भज० } ना० पु० अगस्त्यमुनि ।  
 कुम्भजात० }  
 कुम्भयोनिका० ना० स्त्री० गोमापीथा ।  
 कुम्भघोर्य्य० ना० पु० रीडा ।  
 कुम्भा० ना० पु० छोटाकुम्भ ।  
 कुम्भिका० ना० स्त्री० कुम्भी ।  
 कुम्भिनी० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी ।  
 कुम्भी० ना० स्त्री० पीथा जो तालाबों में पानी  
 पर जमताई, ना० पु० हापी, बाथबल,  
 अगस्त्यमुनि ।  
 कुम्भीनस० ना० पु० साव ।  
 कुम्भीपाक० ना० पु० नरकविशेष ।  
 कुम्भीर० ना० पु० मगरमच्छ ।  
 कुम्भोरणा० ना० स्त्री० निसोत्र ।  
 कुम्भलाना० अ० स्त्री० सुम्भाना, मूलना ।  
 कुम्भार० ना० पु० जो निदी के बर्तन बनाताई ।

कुम्भारी० ना० स्त्री० जतुविशेष जो अपना घर  
 माथसे बनाय है ।  
 कुम्भयोग० ना० पु० दुष्टयोग, दु तदायक मह पड़  
 जाना, बुरामयोग, बुराउपाय ।  
 कुम्भोगी० पु० विषय मीगी रामायणे यथा पुत्र्य  
 कृयागी ज्यो उरगच्छी, मोहविम्प नहीं सन्नत  
 उतारी ।  
 कुम्भ० ना० पु० हरिण, मृग ।  
 कुरएटक० } ना० पु० पियावासा ।  
 कुरयक० }  
 कुरमा० ना० पु० कृपा, धराना ।  
 कुरारि० ना० स्त्री० सारसपत्नी ।  
 कुरी० ना० स्त्री० समुद्र, धराना ।  
 कुरीति० ना० स्त्री० कुचालि ।  
 कुरीर० ना० स्त्री० बुद्धी, मद्रा ।  
 कुर० ना० पु० राजा विशेष नितकी सत्तान में  
 कीरव और पाएउन थे, नरसएड पृथ्वी में  
 से एक ।  
 कुरुकेतु० ना० पु० दुर्घोषन, सुधिधिर, राजा  
 परीक्षित ।  
 कुरुचि० ना० स्त्री० नीचवासना, बदहजमी ।  
 कुरुपति० } ना० पु० दुर्घोषन, सुधिधिर,  
 कुरराय० } परीक्षित ।  
 कुरुषक० ना० पु० पूलविशेष ।  
 कुरुषश० ना० पु० राजाकुदकी सत्तान ।  
 कुरुक्षेत्र० ना० पु० पुण्यक्षेत्र जहाभारतभयाथा ।  
 कुरुप० पु० भौडा, बदमूत ।  
 कुरुटी० ना० पु० सेमर वृक्ष ।  
 कुरुवा० ना० पु० कुम्भ ।  
 कुर्याल० ना० स्त्री० पर्या जव आन्द में आकर  
 परत भाङ्गताई ।  
 कुल० ना० पु० बरा, वर, धराना ।  
 कुलटा० ना० स्त्री० अविचारियों, जो भी परपरि  
 रमय करे अर्थात् प्रतिप्रता नही ।  
 कुलचा० ना० पु० यह सम्पदा जो कोई परवर्ती  
 से धरायके इच्छाकरे, पृथ्वी, धरा ।

कुलतारण० ना० पु० पुन मा कुलकी यान  
रवन या सुहृन् नरकं पुत्रा यः तारः ।  
कुलतिय० ना० स्त्री० पतिव्रतः, सदा, यथा  
विश्रीलाज सप्तमानशाया, दाहा, नृहत न दार  
की कुसत कुलनिय कादि उत्पन्न, विरह दिग्ग भ  
जाताति कुकलो सुखानु जाय ।  
कुलत्रोही० य० गा मनुष्य कर्म करन बरा वा  
लाः नतरे वा ना । न कुलका वरीदाव ।  
कुलधर्म० ना० पु० कथा यनहाद, कुलधर्म ।  
कुलपूज० } ना० पु० कुलवादिता वा मोय  
कुलपूज्य० } वा पु० हित ।  
कुलधनु० ना० स्त्री० कुलन का, सुनि । ।  
कुलकुलना० थ० न् वैलमलाग, कुलकुलाग,  
पुनलाग ।  
कुलवती० ना० स्त्री० कुलानस्त्री, पतिव्रता ।  
कुलवन्त० } गु० जो अश्वत्थम उपलभया ।  
कुलवन्त० }  
कुलक्षय० ना० पु० कु विर, युवास्वभाव ।  
कुलक्षणा० स्त्री० } निराके लक्षण पुद्गो वा हे ।  
कुलक्षणी० य० }  
कुला० ना० स्त्री० मनमिल ।  
कुलांच० ना० स्त्री० कुद, कादि, जरे । ।  
कुलांगना० ना० स्त्री० कुलवादी स्त्री अवाहाङ्ग ।  
कुलाचार० ना० पु० यशां धर्म, अपने कुला  
की रिति ।  
कुलाल० ना० पु० कुम्हार ।  
कुलाहल० ना० पु० कोलाहल ।  
कुलिशा० ना० पु० वप, हीरा ।  
कुली० ना० स्त्री० बहीरयाई ।  
कुलीन० ना० पु० अक्षेपर वा बरा म जो उप  
धमया ।  
कुलीनता० } ना० स्त्री० भलवशादा आचार  
कुलीनार्ह० } वा बहीरया वा उत्पत्ति, धर्म ।  
कुलीरखंडी० ना० स्त्री० बहिराशिही ।  
कुहा० ना० पु० } सुव में अलने विरति के  
कुहा० ना० स्त्री० } केंका

कुहाड़ी० ना० स्त्री० बटाई भिससे लकड़ी  
आदि काग है ।  
कुहिया० ना० स्त्री० मागी का धर्म पात्र,  
भुरी ।  
कुवलय० ना० पु० कमल ।  
कुवादी० य० टण, कुवाचानकी  
कुचिन्दु० ना० पु० नीचरी, बदनुतका ।  
कुचिहंग० ना० पु० जरी, श्येन, बास  
कुचेर० ना० पु० यवराज, कमय ।  
कुश० ना० पु० तथाविश जो अति पतिन गिना  
जातां माताजी का पुन, दयविशेष, पापी,  
श्रीं न सान दीपो में से एक ।  
कुशमुद्रिका० ना० स्त्री० कुशम सुन्दर अश्वत्  
पैनी जा यशादमें पदिने है ।  
कुशल० ना० पु० भलाई, कल्याण, चतुष्टय  
कुशलता० ना० स्त्री० भलाई ।  
कुशलत्व० पु० कल्याण ।  
कुशलक्षेम० स्त्री० } सौख्यक्रियन ।  
कुशतान० }  
कुशली० य० सुवा, प्रसन्न, निपुण ।  
कुशासन० ना० पु० कुशा असास ।  
कुशील० य० शीत रहित, अशुक्ल ।  
कुशेशय० ना० पु० कमल ।  
कुष्ठ० ना० पु० कंद तोही ।  
कुष्ठहन्तन० ना० पु० पैसा, बूटी ।  
कुपेय० ना० पु० सद्, तुलवार ।  
कुष्ठसूदन० ना० पु० निरवाली ।  
कुष्ठी० कोठी ।  
कुसङ्ग० ना० पु० घुरे लोगों का साथ ।  
कुसमय० ना० पु० कठिन समय, घुरे दि  
पायत ।  
कुसरात० ना० स्त्री० कुसलात ।  
कुसीद० ना० पु० सार्भके लिये श्रेय देना न  
कुसुदा० ना० पु० कायकला ।  
कुसुम० ना० पु० कुसुम फूल, कुसुम ।  
कुसुमशर० ना० पु० कामद्व ।

कृतज्ञता० ना० स्त्री० गुणवाद, उपकार मानना,  
अहसान मानना ।

कृतान्त० ना० पु० यमराज, सिद्धान्त ।

कृतार्थ० शु० कृतसार्थ, निहाल, अराधारी, मुक्त ।

कृति० ना० स्त्री० काम करना ।

कृत्तिका० ना० स्त्री० तंजुरा मद्यत्र ।

कृत्तिमरुक्त० ना० पु० वाक् ।

कृत्तिभंताक्ष० ना० पु० रसोत ।

कृत्तिवासा० } ना० पु० भीमहादेवनी ।  
कृत्तिवासा० }

कृत्या० ना० स्त्री० देवी, विशेष राक्षसी ।

कृत्स्न० शु० अशेष ।

कृदन्त० ना० पु० जो शब्द धातु से बना है ।

कृपण० शु० क्षय, कञ्ज, अदाता ।

कृपणता० ना० स्त्री० समी, कञ्ज, अदातृत्व ।

कृपा० ना० स्त्री० दया, मेहरवानी, रहम ।

कृपाण० ना० पु० सख, तलवार ।

कृपालु० शु० दया शील, दयाकर, रहीम ।

कृमि० ना० पु० कीड़ा ।

कृमिघ्न० ना० पु० विडह खोपधि ।

कृमिजग्घा० ना० पु० काला अयुक्त ।

कृश० शु० दुर्बल, चीथ, लटा ।

कृशता० ना० स्त्री० दुर्बलता, क्षीणता ।

कृशाङ्गी० शु० जिसके अंग खिंचेहुये हैं ।

कृशानु० ना० पु० अग्नि, आगि ।

कृपाण० } ना० पु० विमान तेनीनाला ।  
कृपिक० }

कृपिकर्म० ना० पु० हलजोतना, तेनी करना ।

कृपी० ना० स्त्री० तेनी, किसनई ।

कृपीबल० ना० पु० किसान, कृषाण ।

कृष्ण० ना० पु० भीकृष्ण, श्यामशुदरनी, काला,  
नीरा, कालानीवर, कालाहरिण, शु० श्याम,  
कालाराम ।

कृष्णगन्धा० ना० पु० सईजन वृक्ष ।

कृष्णता० ना० स्त्री० शुष्नी, श्यामता ।

कृष्णपद्म० ना० पु० नदी, अवेरा पात्त ।

कृष्णफला० ना० स्त्री० बाकुची, बदाहरिदा ।

कृष्णमद्रा० ना० स्त्री० कुटकी ।

कृष्णवीर्य्य० ना० पु० तरपूत ।

कृष्णवृत्तिका० ना० स्त्री० कम्भारी ।

कृष्णसार० ना० पु० कालाहरिण ।

कृष्णा० ना० स्त्री० नदी विशेष, जो दक्षिण  
भरतखण्ड में है, पीपरी, यमुनानी ।

कृष्णाग्रज० ना० पु० शीबलदेवनी ।

कृष्णागर० ना० पु० काला अयुक्त ।

कृष्णाफल० ना० पु० स्याहमिर्च ।

कृष्णार्पणी० शु० भगवान्देव ।

कृष्णोपकुल्या० ना० स्त्री० पीपरी ।

कृस्मरी० ना० स्त्री० कम्भारी ।

कृत्रिम० शु० बनायाहुया, रचित ।

क्रे० अन्त्य० सबन्धबोधक ।

कैकयी० ना० स्त्री० भरतनी की माता ।

कैकड़ा० ना० पु० कर्कट, गेंगा ।

कैकय० ना० पु० राजा वा देस विशेष ।

कैकरा० ना० पु० कैकड़ा ।

कैका० ना० स्त्री० मोरखनि, मोरिका शब्द ।

कैकी० ना० पु० मोर, मयूर ।

कैतकी० ना० स्त्री० वेवडा वृक्ष वा पुत्र्य विशेष ।

कैतिक० शु० धोई, दोवार, किनना ।

कैतु० ना० पु० नवमग्रह, पुच्छलतारा, पताका  
मण्ड वा भरडी ।

कैतुकि० ना० पु० आकाश, पुपनिशेष, सूर्य,  
चन्द्रमा, कामदेव, छन्द ।

कैतुमाल० ना० पु० पृथ्वी नवखण्डों में से एक  
का नाम ।

कैन्द्र० ना० पु० मरुत्त, गोलाकार वा वृत्त-  
रेखा वह माथरथान जहा से परिधि तक  
नितनी रेखा खींची जावे वह सब परस्पर  
तुल्यहों ।

कैयूर० ना० पु० आभूषण जेवर ।

कैरि० ना० पु० केला वृक्ष, ना० स्त्री० कैलि ।

केलि० } ना० स्त्री० क्रीडा, विहार, ऐश  
केली० } आराम ।  
केवट० ना० पु० महाह, खेवक ।  
केवडा० ना० पु० पुष वा वृक्षविशेष ।  
केवल० अव्य० मान, प्रकृत शु० एवही ।  
केवली० ना० स्त्री० जम्पती ।  
केवा० सर्व० कोई ।  
केश० ना० स्त्री० बाल ।  
केशफला० ना० स्त्री० बेरी वृक्ष वा उसका फल  
यथा शिगम्यच्छदा केशफला सीमीरिका, इति  
निघण्टु ।  
केशर० ना० पु० केशर, नागकेशर ।  
केशरजन० ना० पु० भगरा पोधा ।  
केशरी० ना० पु० हनुमान्जी के पिता, सिंह ।  
केशव० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रना एक नाम ।  
केशवणी० ना० स्त्री० बालोंकी लट ।  
केशाकेशी० ना० पु० परस्पर बाला को पकड़  
के लड़ना वा लड़ाना ।  
केशी० ना० पु० दैत्यविशेष जिसको श्रीकृष्ण  
चन्द्र ने बध कियाथा शु० बालोंनाला ।  
केशरिया० शु० केशरसे रगामया, पीला ।  
केहरि० } ना० पु० सिंह, शेर, व्याघ्र ।  
केहरी० }  
कै० सर्व० कितना, अनेक ।  
कैचली० ना० स्त्री० सापका खोल ।  
कैटम० ना० पु० दैत्यविशेष ।  
कैत० ना० पु० वैषाखा वृक्ष ।  
कैतव० ना० पु० चिरायना, छल ।  
कैय० } ना० पु० वृक्षविशेष ।  
कैया० }  
कैथी० ना० स्त्री० नागरीका एक प्रकारका लेल  
जो शायरों ने कल्पना किया है ।  
कैरव० ना० पु० फूल, श्वेतकमल ।  
कैल० ना० स्त्री० अन्नुर, गाभा ।  
कैलाश० } ना० पु० पर्वतविशेष, जहा शिवजी  
कैलास० } श्री कुबेरभादि यक्षगण रहने हैं ।

कैव० ना० पु० वदम वृक्ष ।  
कैवत्त० ना० मल्लाह, वहा, भोगर, केवट ।  
कैवल्य० ना० पु० मोक्ष, मुक्ति ।  
कैशिक० ना० स्त्री० बालों की लट ।  
कैसा० सर्व० किस प्रकार ।  
कैहाँ० भवि० कि० करुणा वा बहूणा ।  
को० अय० कर्मणिसूचक द्वितीयाका, सर्व० जीन ।  
को० सर्व० श्रमिश्चय, एक, ना० पु० कमल  
विशेष ।  
कोऊ० सर्व० कोई जोहो ।  
कोचन० स० कि० वैदना, चुभाना ।  
कोपल० ना० पु० नयेपत्ते, शुद्धा ।  
कोक० ना० पु० अय विशेष जिस में स्त्री प्र-  
संग की प्रतिपादकता का वर्णन है, फूल ।  
कोकनद० ना० पु० लाल कमल ।  
कोकर्ण० ना० पु० अतगध ।  
कोका० ना० पु० चकई चकवा, दूधगई, फूल  
पिण्डलजूर ।  
कोकिल० } ना० स्त्री० पक्षीविशेष कोयल ।  
कोकिला० }  
कोकी० ना० स्त्री० चकई ।  
कोख० } ना० स्त्री० कुबि ।  
कोखा० }  
कोखवन्ध० शु० बाफ, बाध्या ।  
कोख० ना० स्त्री० कोल, कुबि ।  
कोझा० } ना० स्त्री० गोदी, घोड़े की भोली ।  
कोझी० }  
कोट० ना० पु० गढ़, किलब, नगर ।  
कोटर० ना० पु० वृक्षकी खोह ।  
कोटवी० शु० नगी स्त्री०, ना० स्त्री० नापाहरकी  
महतारी ।  
कोटा० ना० पु० रामपूताने का नगर विशेष ।  
कोटि० ना० स्त्री० एक धोरकी भुज, पहिला  
पक, किरोड़, सी छात ।  
कोठरी० ना० स्त्री० छोटा कोटा ।  
कोठा० ना० पु० पगहूआ एक बड़ा पट ।

कोटि० ना० स्त्री० कच्छ ।  
 कोठी० ना० स्त्री० म्हाणा वा राज्याया  
 ठाँकी नी केके का स्थान ।  
 कोटना० स० कि० सदायु ।  
 कोडा० ना० पु० चानर ।  
 कोल० ना० पु० का रैगवशर ।  
 कोडाा० घ० कि० दु काहा ।  
 कोही० ना० पु० कथा ।  
 कोर० ना० पु० काग दन घना ।  
 कोद० ना० स्त्री० अग पशु तरफ ।  
 कोदरड० ना० पु० काग कापडा धतुर ।  
 कोद्रव० ना० पु० कागी, अरु काग ।  
 कोना० ना० पु० नागा कथा रसायन  
 मिलावत स बनना है पदार्थ व रसा एक मूय  
 म न हा  
 कोपे० ना० पु० काय, सुतरा ।  
 कोपना० घ० कि० कापन हाता, सुस्मरना,  
 ना० स्त्री० रण  
 कोपर० } ना० पु० पद विराय ।  
 कोपल० }  
 कोपाचित० यु० कापन, त स भा  
 कोपी० यु० कापासन काग ।  
 कोपान० ना० स्त्री० काग, ल मी ।  
 कोमल० यु० नम, नया भला, नरम ।  
 कोनरता० ना० स्त्री० नरमा कापन ।  
 कोवल० ना० स्त्री० पसा, वरय, युय ल-  
 रा ।  
 कोयला० ना० पु० कार धुमाग ।  
 कोर० ना० स्त्री० कगर, डर धार ।  
 कोरु० ना० पु० कली ।  
 कोराडी० ना० स्त्री० काग कापना ।  
 कोरा० यु० विनाईत काग, विनाईत  
 कापत मिर्छा का नया धार जो धम मिन  
 कया हो ।  
 कोरार० ना० स्त्री० काग, विरद ।  
 कोरी० ना० स्त्री० ना० पु० काविभिरव ।

कोर्य० सूर्य० कित्त हनु, किस स्थि ।  
 कोल० ना० पु० शर, नावक ते विरय, काग  
 गती जा लकी सक्तहा ।  
 कोलवाहिनी० ना० स्त्री० विद्या शू ।  
 कोला० ना० स्त्री० पापरि ।  
 कोलाफल० ना० पु० महुका वृह ।  
 कोलाहल० ना० पु० कावत, रीला, सरा  
 कोलिनी० ना० स्त्री० काहीदिरष ।  
 कोलिया० स० कि० गरी में लेना ।  
 कोलू० ना० पु० गिरा तेव निरात्तन है वा  
 उत परत है ।  
 कोदिदु० यु० पणित उदी ।  
 कोश० ना० पु० कमय, मयगाय ।  
 कोशल० ना० पु० कुरान दशावशर ।  
 कोशलपति० ना० पु० दशरथ, श्रीरामधर्म,  
 धवध भूय  
 कोशलपुर० ना० पु० }  
 कोशतपुर० ना० स्त्री० } श्री अयायाली ।  
 कोशलाधीश० } ना० पु० कागलपति श्री-  
 काशखेश० } रामधर्मका ।  
 कोप० ना० पु० धनना, भयद, अण्ड,  
 लकाद की काग, सुर्ना कागना अजाग  
 कोष्ट० ना० पु० कात, काग का ।  
 कोष्टक० ना० पु० तला ।  
 कोस० ना० पु० २ माया का २००० दडम  
 कोशना० स० कि० कागदना, सुमानना  
 काह० ना० पु० कोष दु न बाद, फमें काग  
 लाना, दस्तनतता ।  
 कोशनी० ना० स्त्री० काग व न घरी गाग ।  
 कोशय० ना० पु० जहलना ।  
 कोशी० यु० कागी रामायण यथा, कर कुडम  
 में अकरप् वाहा । काग कापना सुतराहा ॥  
 को० कय० वा ।  
 को० अय० वा ।  
 कोशा० ना० पु० काग ।  
 कोष० ना० पु० मकर, मडप ।

क्रूर० गु० कटोर, निटुर, कपरी, टेढ़ा ।  
 क्रूरकर्मा० ना० स्त्री० ऊषाहोली ।  
 क्रूरवार० ना० पु० शनैश्चर, मगल, आदियवार ।  
 क्रोध० ना० पु० कोप, गुस्सह, भेरवविरोध ।  
 क्रोधानुर० } गु० कोपी, क्रोधमें अथ, क्रोधमें  
 क्रोधान्ध० } मस्त ।  
 क्रोधा० गु० कोपी, गुस्ता भ्रामया ।  
 क्रोश० ना० पु० कोस, दामील, दो हकार द  
 ष्टवी माप ।  
 क्रोष्टा० ना० पु० गोंदड़, भृताल ।  
 क्रिशित० } गु० दु खित, पीड़ित, रज्जद ।  
 क्रिष्ट० }  
 क्रीव० ना० पु० नपुसक, दिनडा ।  
 क्रेद० ना० पु० गीलापन ।  
 क्रेदित० गु० भीगाभया, तर ।  
 क्रेषा० ना० पु० दु ख, पीडा, रज ।  
 क्रेशित० गु० दु खित, पीड़ित ।  
 कश्चित्० अव्य० कहीं ।  
 कष्टि० ना० स्त्री० विपदलक्षर ।  
 क्राण० ना० पु० क्रीषा ।  
 क्राध० ना० पु० कादानोतोगीकोपिलायानाता है ।

## [ ख ]

खं० } ना० पु० आवारा, स्वर्ग, पर, अय, रभ्र  
 ख० } श्द्रिय ।  
 खंस्वारना० अ० कि० खासना ।  
 खगना० अ० कि० कमहाना, घटना ।  
 खगलना० } स० कि० धोना, अनवासना ।  
 खघारना० }  
 खग० ना० पु० पत्नी, मह, सूर्यादि, मेघ, पवन,  
 देवता धीर तारागण ।  
 खगकेतु० }  
 खगनाथ० }  
 खगनायक० } ना० पु० सूर्य, चंद्रमा, गुरु ।  
 खगनाह }  
 खगपति० }

खगमाळा० ना० पु० पक्षियों का समूह, तारा-  
 गण ।  
 खगहा० ना० पु० गेंडा, नाच, जरी ।  
 खगेन्द्र० } ना० पु० गुरु, चंद्रमा ।  
 खगेश० }  
 खगोल० ना० पु० आकाशमण्डल ।  
 खगग० ना० पु० वीर, महादुर ।  
 खचना० स० कि० रेखा करना, जड़ना ।  
 खपर० ना० पु० खप्पर, पशुविशेष, मेघ,  
 भद्रादि ।  
 खचा० } गु० जडाऊ, खिचाहुआ ।  
 खचित्त० }  
 खजुरिया० } ना० स्त्री० वृक्षविशेष ।  
 खजूर० }  
 खजुरि० }  
 खज्ज० गु० लगडा, ना० पु० खजन ।  
 खजन० ना० पु० पक्षीविशेष जिसे खड़ेचा  
 वा खिखिदा भी कहते हैं ।  
 खजनक० ना० पु० ममोला, खजन ।  
 खजरिठ० } ना० पु० खजन ।  
 खजरीठ० }  
 खट० ना० स्त्री० खाट ।  
 खटक० ना० पु० खटका ।  
 खटकर्मा० अ० कि० शब्द होना, भगइना,  
 लगना, शकाकरना ।  
 खटका० ना० पु० सदेह, शका, पावकीघाहट ।  
 खटकाना० स० कि० घाहटदेना, शब्दकरना ।  
 खटखटाना० अ० कि० ठकटकाना ।  
 खटछपर० ना० पु० छपरखट ।  
 खटपट० ना० पु० भगइना, लड़ाई ।  
 खटमल० ना० पु० खामेंका बीडा ।  
 खटाई० ना० स्त्री० अम्ल, खटापन, अचार ।  
 खटाका० ना० पु० शब्द, चटारा ।  
 खटास० ना० पु० खटापन, जन्तु विशेष ।  
 खटिका० ना० स्त्री० सेखलेदी ।  
 खटिया० ना० स्त्री० छोटी खाट ।

खटीक० ना० पु० जानि विशेष ।  
 खट्टा० शु० धम्ल, धम्लन् ।  
 खटिक० ना० पु० खटीक, आखेटकी ।  
 खट्टु० ना० पु० बनिहार ।  
 खट्टा० ना० स्त्री० खाट ।  
 खट्टक० ना० स्त्री० गोशाला ।  
 खट्टकना० अ० वि० मनभनाना ।  
 खट्टखट्टाना० स० कि० टफटफाना, खर्राय,  
 मारना, भनभनाना ।  
 खट्टवराहट्ट० ना० पु० शब्द होना, आहट ।  
 खट्टसान० ना० स्त्री० किसान जिसपर बाढ़ि  
 बनते हैं ।  
 खट्टा० शु० उठा, सीधा, अब, उचा, ठाढ़ा ।  
 खट्टाऊँ० ना० पु० पादुका, कठनई ।  
 खट्टिया० ना० स्त्री० छूहीभिठी, दूधिय भिठी ।  
 खट्टग० ना० पु० तलवार, गँडा, अमरे यथा ।  
 गण्डके खट्टगखट्टिनी ।  
 खट्टण० ना० पु० टुकड़ा, खाक, अप्याय, दिशा ।  
 खट्टणन० ना० पु० दूषण, मिटाना, काटना ।  
 खट्टणना० स० कि० दूषणदेना, तोड़ना, काटना ।  
 खट्टणनार्थ० शु० काटने के लिये ।  
 खट्टिनी० ना० स्त्री० काटनेवाली ।  
 खट्टपरशु० ना० पु० श्रीमहादेव ।  
 खट्टहर० ना० पु० ऊनड़, धीराना ।  
 खट्टहरना० स० कि० काटना, टुकड़े करना ।  
 खट्टहल० ना० पु० ऊनड़ मकान, धीराना ।  
 खट्टित० शु० काटगया, कमी, अपूर्ण ।  
 खट्टितकरना० स० कि० बातकाटना, खट्टना ।  
 खट्टिल० ना० पु० पोस्त या उसका निरना ।  
 खट्टा० ना० पु० } गण्डहा जिसमें घण भरते हैं ।  
 खट्टी० ना० स्त्री० }  
 खट्टिर० ना० पु० खैर, कथा ।  
 खट्टेड० ना० स्त्री० रगेद, अहेर ।  
 खट्टेडना० स० कि० रगेदना, भगाना ।  
 खट्टोत० ना० पु० धूर्य, तारागण और जगन् ।  
 कीट विशेष ।

खन० ना० पु० खण्ड ।  
 खनक० ना० पु० मूरा, चूहा ।  
 खनकना० अ० कि० बनना, शब्दहोना ।  
 खनन० ना० पु० खोदना ।  
 खनना० स० कि० खोदना ।  
 खपत० शु० जो विकगया, स्त्री० विचार ।  
 खपना० अ० कि० विकना, सूखना, ठहरना  
 पैठना, समाना ।  
 खपरा० ना० पु० परछावने के लिये जो मिट्टी  
 के बनते हैं ।  
 खपरी० ना० स्त्री० शिरका ऊपरी भाग ।  
 खपरैल० ना० स्त्री० घर, जो खपरों से छायाहो ।  
 खपाच० ना० स्त्री० वाट्टका टुकड़ा ।  
 खपाना० स० कि० विकवाना, पैठाना, भराना ।  
 खपित० शु० जो विकगया, स्त्री० निरान ।  
 खपुर० ना० पु० स्वर्ग, आकाश ।  
 खप्पर० ना० पु० खोपड़ी, माटी का पात्र जिसमें  
 योगी जलादि पीते हैं, अगेटी ।  
 खप्पा० ना० पु० बाया हाथ ।  
 खभारू० ना० पु० पैरमें आगि पड़ना, पवराहट  
 खम्बा० } ना० पु० स्तम्भ, धूनी,  
 खम्म० }  
 खम्मा० ना० पु० स्तम्भ, धूनी ।  
 खर० ना० पु० पराष्ठ, गधा, घाम, कुत्ता  
 अन्धा, तीव्य ।  
 खरक० ना० पु० खडक, गोशाला ।  
 खरखरा० ना० पु० खरहरा ।  
 खरपत्र० ना० पु० मरवा, सुगन्धित पोधा ।  
 खरवर० } ना० स्त्री० घोड़े के दोड़नेका शब्द  
 खरभर० } खलवली, शोरगुल, हुसड़, शीम ।  
 खरमञ्जरी० ना० स्त्री० ऊग ।  
 खरयाष्टिका० ना० स्त्री० खिरहटी ।  
 खरल० ना० पु० श्रीधर विसने का पात्र ।  
 खरहरा० ना० पु० घोषाभादि मलनेकी वस्तु  
 विशेष ।  
 खरहार० ना० स० कि० झारना, बुहारना ।

खरा० शु० चोगा, श्रेष्ठ, अर्थात् ।  
 खराई० ना० स्त्री० सर्वादि-उत्तमता, सूत्र, ज्ञान  
 खरारि० ना० पु० श्रीरामचन्द्रजी ।  
 खरिक० ना० स्त्री० राक्षस, घोडाहा ।  
 खरी० ना० स्त्री० सज्जोडा पीठा, गयी, अर्थात् ।  
 खरो० शु० खर, अदि, अर्थे ।  
 खरोट० ना० स्त्री० बरोट, लतोड ।  
 खरोचना० । से० कि० नोचना, लतोडनी ।  
 खरोटना० । से० कि० नोचना, लतोडनी ।  
 खज० ना० पु० रामोधारणा विशेष स्थान ।  
 खजूर० ना० स्त्री० चोई खजूर ।  
 खजुरिका० ना० स्त्री० पिण्ड, सूत्र ।  
 खजूरी० ना० स्त्री० प्रतिली ।  
 खपर० ना० पु० पीठ, शिर ।  
 खपर० ना० पु० तुच्छ, वीटा, वामन, भाषा  
 म सा अर्थो कर्ते हैं १००००००००००००० ।  
 खर्ग० ना० पु० मत्स्य, दहर, गस्तुरा, विद्य,  
 गस्तुरा ।  
 खर्गडा० ना० पु० सोने में पुराण ।  
 खन० शु० इष्ट, नीच, तुच्छ ।  
 खतता० ना० स्त्री० दुष्टता ।  
 खतखल० ना० स्त्री० हलखल ।  
 खतखलाना० अ० कि० खलनी ।  
 खलखली० ना० स्त्री० मलभर, दुष्ट ।  
 खला० ना० स्त्री० पुरिया, दुष्टिनि ।  
 खलान० शु० खलनी बंधने ।  
 खलारि० ना० पु० धीनारायण ।  
 खलाड० ना० पु० निचान, परती ।  
 खलियाण० ना० पु० खलियाण, खली ।  
 खलियाणा० से० कि० खलिया, उधेव्या ।  
 खलियाण० ना० पु० खलियाण, खली ।  
 का रथान विशेष पेहू ।  
 खली० ना० स्त्री० निहादि को गूद ।  
 खलीता० ना० पु० जेव, पारसी शब्द, ह ।  
 खदा० ना० पु० कथा ।

खस० ना० पु० व्यापारिणा ।  
 खसजना० अ० कि० गिररइना, सरकणा  
 इना ।  
 खसजाना० से० कि० सरजाना, इयना ।  
 खसखस० ना० स्त्री० सुगन्धित वृषपिशाच ।  
 खसना० अ० कि० धसना, गिरपना, विष्ट  
 पइन ।  
 खसरा० ना० पु० बही, खरी, गुमेही ।  
 खसना० से० कि० गिरान, गिगाडाण ।  
 खसीमाल० ना० पु० पत्तर विशेष, पीपीमात्र ।  
 खांचा० ना० पु० टंजन, मिनस विशेष ।  
 खांड़० ना० स्त्री० शर्करा, शकर ।  
 खांग्ना० से० कि० छाटना, कटना ।  
 खांडा० ना० पु० खड्गविशेष ।  
 खांसना० अ० कि० ख खना, टोडा बजा ।  
 खांसी० ना० स्त्री० लसा ।  
 खाग० ना० पु० गैरुन साग ।  
 खाड० ना० स्त्री० जूनली ।  
 खाजा० अ० पु० विष्ट विशेष ।  
 खाट० ना० स्त्री० ब्राह्मण ।  
 खात० ना० पु० गत, पड़ना, धु ।  
 खात० ना० पु० होनगुमा, खेतगुमा, गुमा  
 रत्नसा सत्ता ।  
 खाती० ना० पु० बड़, लसदी ।  
 खाद० ना० पु० खेसादि, धूस ।  
 खाद्य० शु० खाने व भोग जो वस्तु ।  
 खागा० से० कि० भोगा करना, धु, कि०  
 समाग, उपार्जन वा भोगकरना, ना० पु०  
 भोजन ।  
 खानि० ना० स्त्री० आर, अर्थात्, जुसति  
 स्थान ।  
 खानिड० शु० खानो जो वस्तु ।  
 खारका० ना० पु० दुष्टता ।  
 खारा० शु० खाना ।  
 खारी० शु० खड्ग गमत, खोईता ।  
 खाल० ना० स्त्री० वमना, पीतनी ।



खेटक० ना० पु० श्रृंखर, शिकर और अन्न-  
विशेष ।

खेटिक० ना० पु० बधिक, शिकारी ।

खेत० ना० पु० क्षेत्र, समरभूमि, पुष्पक्षेत्र, यह  
भूमि जहा अन्नदि उपनता है ।

खेतल० ना० पु० आकामण्डल ।

खेती० ना० स्त्री० किसानी, गु० जोताऊ ।

खेद० ना० पु० शोक, दुःख, परचात्ता ।

खेदना० स० क्रि० खदेदना, सजाना और पीछा  
करना ।

खेदित० गु० दुःखित, पीड़ित, सतायागया ।

खेरा० ना० पु० ऊनरूप, डंढ ।

खेरी० ना० स्त्री० खोहाविशेष, हल ।

खेल० ना० पु० शौडी, जीवहलात ।

खेलना० स० क्रि० क्रीडाकरना, जीवहलाना

खेवक० } ना० पु० नाविक, दादी और मछाह ।  
खेवट० }

खेवना० स० क्रि० दाइमारना, नावचलाना ।

खेवा० ना० पु० उतराई, भाग, पाडीदना,  
उतारा ।

खेह० ना० स्त्री० रात, धूलि, साक ।

खैच० ना० स्त्री० उस्ताइ ।

खैचना० स० क्रि० ऐचना, कसना, तानना ।

खैचाखैच० } ना० स्त्री० ऐचा ऐची, खैचा  
खैचाखैची० } खैची ।

खैर० ना० पु० कया ।

खैला० ना० पु० दोहान, नयानिल वा बद्धना ।

खोआ० ना० पु० खेड, सरसी, दूध ओ उबालके  
गादा कियानता है ।

खोसना० अ० क्रि० खासना ।

खोखी० ना० स्त्री० खानी ।

खोच० ना० स्त्री० चीर ।

खोचना० स० क्रि० खुसेदना ।

खोचा० ना० पु० भराव, झोक ।

खोडकल० ना० पु० गडहा ।

खोता० ना० पु० पोसता ।

खोसना० स० क्रि० दासना, खुसेदना ।

खोखला० गु० चाँगला, खानी ।

खोखला० ना० स्त्री० उपरका मदान, जो ठोस  
नहीं है ।

खोज० ना० पु० दूद, यध, विद्व, पहिचान ।

खोजना० स० क्रि० दूदना ।

खोट० ना० स्त्री० दोष, अवशुध ।

खोट० गु० भगली, दोषी, मूठा, अरमी ।

खोटाई० ना० स्त्री० भगलपन दोष ।

खोदना० स० क्रि० गोदना, करकोलना ।

खोना० स० क्रि० गैवाना, उदाना ।

खोपडा० ना० पु० ललाट के ऊपर का अंग  
नारियल की मूरी ।

खोपडी० ना० स्त्री० मस्तकके ऊपरका भाग  
दिलना ।

खोपर० ना० पु० शिर ।

खोपरा० ना० पु० खोपडा ।

खोपरी० ना० स्त्री० खोपडी ।

खोपा० ना० पु० नारियल का गोला, डुम ।

खोरि० ना० स्त्री० दोष, ग्लानि ।

खोरी० ना० स्त्री० गर्दी, मार्ग, दोष, ग्लानि ।

खोल० ना० स्त्री० कटी, टकना, दोहर, गदा ।

खोलना० स० क्रि० प्रकट करना, बिधाना,  
उदेदना, खगर उठाना ।

खोह० ना० पु० उफा, गडहा, कन्दरा ।

खोह० } ना० स्त्री० तिलक ।  
खोरि० }

खोलना० अ० क्रि० उबलना ।

ख्यात० गु० प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित, मराहूर ।

ख्याति० ना० स्त्री० यश, भाक, शुहरव ।

ख्यात्यापन्न० गु० कर्तिमान, नामी ।

ख्याल० ना० पु० बीजा खल ।

( ग )

गैवाना० स० क्रि० खोना, उठाना, बहाना ।

गंवार० ना० पु० गावकावाली, कुपदा ।

गगन० ना० पु० आकाश, आसमान ।

गगनचर० ना० पु० पक्षी, देवता, महादि ।  
 गगरी० ना० स्त्री० कलशी, घडा ।  
 गंगा० ना० स्त्री० भार्गवकी नदी प्रसिद्ध ।  
 गंगायमुनी० ना० स्त्री० कर्णभूषण विशेष ।  
 गंगाद्वार० ना० पु० गगोत्तरी, हरद्वार ।  
 गंगाघर० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।  
 गंगासागर० ना० पु० गंगा और समुद्र का  
 संगम जहा कपिलदेव का स्थान है ।  
 गंगेरुकी० ना० स्त्री० गंगेरुआ ।  
 गंगोत्तरी० ना० स्त्री० गंगाजी के प्रकाश का  
 स्थान जो बन्दीनाथ के आसन्न है ।  
 गंगोदक० ना० पु० गंगाजल ।  
 गच्च० ना० स्त्री० चूना, लोट ।  
 गच्चपच्च० ना० स्त्री० उलट पलट ।  
 गच्छ० ना० पु० मुकाम, चाल ।  
 गज० ना० पु० हाथी, दो हाथ की माप ।  
 गजकेसर० ना० स्त्री० नागकेसर ।  
 गजकृष्णा० ना० स्त्री० गजपीपरि ।  
 गजगामिनी० यु० जिसकी हाथीकीती चालही ।  
 गजगाह० ना० पु० अन्वेषित हाथीका भूषण ।  
 गजगौनी० यु० गजसुमनी ।  
 गजचिर्मंटी० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी ।  
 गज्जही० अ० कि० गरजता है ।  
 गजदन्त० ना० पु० हाथी को दात ।  
 गजपति० ना० पु० हाथियों का स्वामी अर्थात्  
 रामा वा जिसके हाथी हों ।  
 गजपाटल० ना० पु० वज्रजल ।  
 गजपाल० ना० पु० महावत, कीलवान् ।  
 गजपिप्पली० ना० स्त्री० गजपीपरि ।  
 गजभिपक्क० ना० पु० सोठि ।  
 गजमुख० ना० पु० गणेशजी, हाथी का मुँह ।  
 गजमोती० ना० पु० मोती जो हाथी के मस्तक  
 में होता है ।  
 गजरा० ना० पु० गजरकापत्ता, फूलोंकी माला ।  
 गजवदन० ना० पु० गणेशजी ।

गजबुसा० ना० पु० केलकृत् ।  
 गजानन० ना० पु० गणेशजी, हाथी का मुख ।  
 गजाशन० ना० पु० पीपल, पीपरि ।  
 गज्ज० ना० पु० रोगविशेष जो शिरमें होता है ।  
 गज्जा० यु० जिसके शिरमें गज रोग होवे, ना० पु०  
 गज्जा, भाग, रोगविशेष ।  
 गज्जित० यु० नशायागीया ।  
 गटपट० ना० स्त्री० उलट, पुलट, मिलित ।  
 गटी० ना० स्त्री० समूह, रामचन्द्रिकाया यथा  
 सब जात कटी दुल की दुपटी कपटी न रहे  
 जहें एक घटी, निपटी रुचि मीच घटीहू घटी  
 जगजीव यतीन की छूटी चटी, अथ ओष  
 कि वेरी कटी विन्टी निकटी प्रकटी गुण ज्ञान  
 गटी, चहुँ और न नीचत मुक्ति नदी गुण धून  
 जटी जटि पचवनी ।  
 गट्टा० ना० पु० कलाई, मिठाई प्रसिद्ध ।  
 गट्टा० ना० पु० बड़ागठरी ।  
 गठना० अ० कि० जुड़ना, मिलना ।  
 गठरी० ना० स्त्री० मोंढ, मोटरी, झुण्ट ।  
 गठाना० स० कि० सिलवाना, पंचदलगवाना ।  
 गठिया० ना० पु० गोन, यु० गाँडावाला ।  
 गठीला० } यु० गाठोवाला, गठाहुआ ।  
 गठिहा० }  
 गडक० } ना० स्त्री० मछली वा मछली वि-  
 गडका० } शेष ।  
 गडगडाना० स० कि० गरजना ।  
 गडरिया० ना० पु० जाति विशेष जो भेड़ें  
 पालते हैं ।  
 गडन० ना० स्त्री० धसन, दलदल ।  
 गडना० अ० कि० धसना, पैटना, बिदना ।  
 गडबड० ना० पु० गटपट, उलट पलट,  
 हल चल ।  
 गडयडा० ना० पु० सखली, मरोडा, यु० सड-  
 बना, धराराया भया ।  
 गडयडाना० अ० कि० धरराना, सखलीसखली ।  
 गडयडाहट० ना० स्त्री० हडनडाहट, भय ।

गदिला० ना० पु० मोघ बिदोना वा जिसमें बहुत रई भरकर पहिने है ।  
 गद्गद् ० शु० हर्षनाद, शोक वा आनन्दमें मग्न ।  
 गहर० शु० अधपका ।  
 गही० गी० स्त्री० तक्रिया या बिदोना वा आसन वा राजा का सिंहासन, जातिविशेष ।  
 गद्य० ना० पु० छंदविना कान्य, वार्तिक ।  
 गघा० ना० पु० गदहा ।  
 गण० ना० पु० गण ।  
 गनना० स० क्रि० गिनना, शुमारकरना ।  
 गन्ध० ना० पु० बदमवृक्ष, स्त्री० नास, वृष ।  
 गन्धक० ना० पु० श्रीपथविशेष ।  
 गन्धगर्भ० ना० पु० बेलवृक्ष ।  
 गन्धमादन० ना० पु० पत्तनविशेष ।  
 गन्धमूलक० ना० पु० रूचूर ।  
 गन्धमूढिनी० ना० स्त्री० कपूरभेद ।  
 गन्धमूली० ना० स्त्री० रासना ।  
 गन्धराज० ना० पु० चंदन सुगंधित, विशिष्ट पुष्प ।  
 गन्धर्व० ना० पु० देवता, रत्न के गायक ।  
 गन्धर्वनगर० ना० पु० सामाय गधर्वलोक विशेष मुख्य आषाक्षमें जो विप्र विविध की भूति दृष्टि आती है जब देवतक देखने से आत निरमिरा जाती है ।  
 गन्धर्वहस्तक० ना० पु० बेलवृक्ष ।  
 गन्धर्वह० ना० पु० वायु, पन्न, हवा ।  
 गन्धसार० ना० पु० चंदन ।  
 गन्धा० ना० पु० नामदान, बदमवृक्ष ।  
 गन्धान० ना० पु० सुवर्ण, सोना ।  
 गन्धाधूयमा० ना० पु० गंधक ।  
 गन्धार० ना० पु० रागका स्वरविशेष ।  
 गन्धारी० ना० स्त्री० दुर्योधनकी माता, स्वास जो वामाक्ष में प्रकाशित होती है ज्ञानंतरगे यथा, गंधारी वामाक्ष निमासी, इत्यं निहा दक्षिण दिग्मासी ।  
 गन्धि० ना० स्त्री० नाम, धूप, गन्धक ।

गन्धिकार० ना० स्त्री० आह्वेर ।  
 गान्धकारिणी० ना० स्त्री० लज्जान् ।  
 गन्धिलुब्ध० गु० जो सुगन्धि के लालच में हो ।  
 गन्धी० ना० पु० धतार, सुगंधित तेल बेचने हारा ।  
 गन्ना० ना० पु० ऊल, गाहा, खड ।  
 गप० } ना० स्त्री० बप, बरचन ।  
 गपशप० }  
 गप्पी० शु० बकवादी ।  
 गमस्ति० ना० स्त्री० विरथ, ज्योति ।  
 गभीर० शु० गम्भीर ।  
 गभुधारे० शु० छत्तेदार बाल, पेदायशीवाल ।  
 गमन० ना० पु० चलन ।  
 गमनागमन० ना० पु० जाना आना ।  
 गमनी० ना० स्त्री० चलनेवाली ।  
 गमनीय० शु० चलने के योग्य, चलनेवाला ।  
 गम्भीर० शु० गहिरा, अरगाह ।  
 गम्भीरता० ना० स्त्री० गहराई ।  
 गम्य० शु० जानेके योग्य, मिलनहार ।  
 गय० } ना० पु० हाथी ।  
 गयन्द० }  
 गया० ना० स्त्री० नगर वा तीर्थविशेष जहा द्विदूलोग पुरुषों को पिण्ड देते है ।  
 गयाली० ना० पु० गयावाल, गयाके ब्राह्मण ।  
 ग्यारस० ना० स्त्री० एरादशी ।  
 ग्यारह० गु० दश और एक ११ ।  
 गर० ना० पु० रोग, विप, गला ।  
 गरगराना० अ० क्रि० कच्चीकरना, गरजना ।  
 गरजना० अ० क्रि० घड़घड़ाना, शब्दकरना ।  
 गरल० ना० पु० विष, हलाहल ।  
 गरह० ना० पु० गठियावायु ।  
 गरागरी० ना० स्त्री० देवदाली ।  
 गरारी० ना० स्त्री० रस्ती वा सूत बटनेकार्येन, वृषके जल निकालनेकी गोल काठकी बेलु ।  
 गरिमा० ना० स्त्री० युक्ता, गन्धर्व, अहङ्कार यादृं सिद्धि में से स्वका नाम ।

गरी० ना० स्त्री० नारियलका गूदा, सुठली ।  
 गरु० ना० पु० गला ।  
 गरुड० ना० पु० पक्षी जो शक्तिशुक्ल वाहन है ।  
 गरुडाम्रज० ना० पु० सूर्य का रथवान ।  
 गरुता० ना० स्त्री० शुकता, बड़पन ।  
 गरुमान्० ना० पु० गरुड, सफेद हस्त ।  
 गरुव० गु० भारी, बोझिल ।  
 गरुण० ना०-पु० छुनिविशेष जो यदुर्वेशियों के पुरोहित थे ।  
 गरुज० ना० पु० दीना, बड़ ।  
 गर्ज० } ना० पु० उत्कट शब्द, गड़गडा  
 गर्जन० } हट ।  
 गर्त्त० ना० पु० गड ।  
 गर्हभ० ना० पु० गदहा ।  
 गर्भ० ना० पु० पेट, आधा, हमल ।  
 गर्भकण्टक० ना० पु० कटहल ।  
 गर्भकर० ना० पु० पतिनिशा यथा पुत्रजीत  
 गर्भकर शक्तिनिघण्टु गु० गर्भकारक ।  
 गर्भदास० ना० पु० भोलका दासी वा बेग ।  
 गर्भपात० गु० पेटका गिरना, हमलगिरना ।  
 गर्भपाता० ना० पु० रीठा ।  
 गर्भयता० ना० स्त्री० पेटसे गर्भिणी, गाभिन ।  
 गर्भस्त्राव० ना० पु० गर्भपात ।  
 गर्भित० गु० गर्भ अर्थात् पेट म रूहनेवाला ।  
 गर्द० ना० पु० अहङ्कार, दम्भ, शम्भ ।  
 गर्ववती० गु० स्त्री० अहङ्कारिन ।  
 गर्वित० गु० अहङ्कारी, मगरुपी ।  
 गर्हित० गु० निन्दित ।  
 गल० ना० पु० गला, फासी ।  
 गलकना० अ० कि० गलना ।  
 गलका० ना० स्त्री० फोडा विशेष, सगरविशेष ।  
 गलगण्ड० ना० पु० गण्डमाला ।  
 गलगल० ना० पु० चकोपरा, पर्वविशेष ।  
 गलना० अ० कि० पिपलना, पुलना ।

गलफटाकी० ना० स्त्री० बहार, धमएड ।  
 गलफड़० } ना० पु० गाल वा गालोकामास ।  
 गलफड़ा० }  
 गलगाह० ना० स्त्री० गोदी ।  
 गलसुई० ना० स्त्री० तकिया, सिराहना ।  
 गलस्तनी० ना० स्त्री० अक्षरी ।  
 गला० ना० पु० षठ, शब्द ।  
 गलाघोटना० स० कि० नष्टी दधाना, कट तो  
 बना ।  
 गलाना० स० कि० पिपलाना ।  
 गलात्र० ना० पु० पिपलाव ।  
 गलित० गु० पतित, द्रवाभूत, मग ।  
 गलियाना० स० कि० घुराहना, गालादेना,  
 बरबस भोजन कराना वा शीघ्र भूमना ।  
 गली० ना० स्त्री० छोटामारी ।  
 गल० ना० स्त्री० दाव, घात, मौक्य, लाम ।  
 गलन० ना० पु० गमन ।  
 गवरि० } ना० स्त्री० पार्वती ।  
 गवरी० }  
 गवलद० ना० पु० भैसा ।  
 गवादिनी० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी ।  
 गवात्रा० ना० पु० बसार्, स्लेच्छ ।  
 गवाश० ना० पु० भरोसा, मुख्य वानर ।  
 गवेयुका० ना० स्त्री० गगेरुचा ।  
 गवैया० ना० पु० गायक, गनिवाला ।  
 गवय० गु० जो गाय से सम्बन्ध रखता ही यथा  
 दुग्ध आदि ।  
 गसना० अ० कि० बधना, घिरना, रुकना ।  
 गहगह० गु० घना, जोरसे ।  
 गहन० ना० पु० भारी, ग्रहण, पढ़ना, दु ख  
 निराल, पन ।  
 गहना० स० कि० पढ़ना, ग्रहणकरना, ना० पु०  
 जेवर, गिरवा, भूषण ।  
 गहनी० ना० स्त्री० सनपरास फालीपत्ती ।  
 गहरा० ना० पु० गम्भीर ।  
 गहरु० ना० पु० ढील, देर ।

ह्वर० } गु० धानरा, रोधासा, घना, कठिन ।  
 हर० }  
 ॥ अय्य० गया ।  
 इंजा० } ना० पु० वृषविशेष की मन्त्री वा रस  
 इंभा० } आदि ।  
 इंठना० स० कि० बाधना, वशमें लाना, सी  
 वना ।  
 इंठि० ना० स्त्री० म्रिय, गिरह ।  
 इंठे० ना० स्त्री० उदा, वृक्ष, पुष्टी मिट्टी की जा  
 वृष म लगाने हैं ।  
 गांङ्कर० ना० स्त्री० तुषणविशेष ।  
 गाङ्गा० ना० पु० इन्द्र, गंगा, ऊल ।  
 गाङ्गु० ना० पु० भनेसिया, खतिशा, शैली ।  
 गांघ० ना० पु० ग्राम, पुर ।  
 गावना० स० कि० गाना ।  
 गांसना० स० कि० विरमाना, घेरना, वरमाना,  
 पियेला ।  
 गांसी० ना० पु० तीरका फल, लोहा जो तीर म  
 लगाते हैं ।  
 गागर० ना० स्त्री० गगरी, कलशा, घडा ।  
 गानेय० ना० पु० भीम, सुवर्ण ।  
 गाण्डु० ना० पु० वृष ।  
 गाज० ना० स्त्री० भाग, पेना, बिडली,  
 वज्र ।  
 गाजना० अ० कि० हथितहाना, गरजना ।  
 गाजर० ना० स्त्री० मूल, विशेष ।  
 गाजाघाजा० ना० पु० नानाप्रकार से बाजा  
 का शब्द ।  
 गाङ्गु० ना० पु० गद्गहा, गड्ढा, गर्त ।  
 गाङ्गुना० स० कि० तापना, समाधि देना, मिट्टा  
 देना, लगाय ।  
 गाङ्गा० ना० पु० भात, गड्ढा, भीज ।  
 गाङ्गी० ना० स्त्री० छत्रडा, लड़ी, रथ ।  
 गाङ्गु० ना० स्त्री० जजाल, विपत्ति ।  
 गाङ्गा० गु० भोग, चतुर, कठिन, ना० पु०  
 कपडा विशेष ।

गारडीय० ना० पु० नाम उल्लेखपूर्वक है जो  
 अग्निदेव के अर्चनकी दियाह ।  
 गारडीवधर० ना० पु० अर्चन, पाण्डुपुत्र ।  
 गात० ना० पु० शरीर, तद, देह ।  
 गाता० ना० पु० वायुनू निरस पुस्तककी जिल्द  
 बनाने हैं ।  
 गाता० ना० स्त्री० एकप्रकारकी चादरवा बाधना;  
 पट्ट, ऊर्णवस्त्र ।  
 गात्र० ना० पु० शरीर, देह ।  
 गाथरू० ना० पु० गायक ।  
 गाथना० स० कि० रूथना, गाना ।  
 गाथा० ना० स्त्री० कथा, समाचार ।  
 गाद्० ना० स्त्री० बरछा, गोंद ।  
 गाद्दी० ना० स्त्री० गद्दी ।  
 गाधि० ना० पु० विश्वामित्र के पिता ।  
 गाधिनन्द० ना० पु० विश्वामित्रमुनि ।  
 गाधिसुत० } ना० पु० विश्वामित्रमुनि ।  
 गाधेय० }  
 गान० ना० पु० गीत, राग, भजन ।  
 गाना० स० कि० अलापना, तानभरना ।  
 गान्धार० ना० पु० राजाविशेष, रागना स्वर  
 विशेष ।  
 गाम० ना० पु० गर्भ ।  
 गामा० ना० पु० केल के बृक्षवा नयापत्र, नया,  
 पत्ता ।  
 गामिन० ना० स्त्री० गमिणी ।  
 गाम० ना० पु० गाव ।  
 गामी० गु० चलनेवाला, रमनेवाला ।  
 गाम्भीर्य० ना० पु० गम्भीरता ।  
 गाय० ना० स्त्री० गौ ।  
 गायक० ना० पु० गायक, गानेवाला ।  
 गायत्री० ना० स्त्री० मात्र विशेष, छन्द, कथा,  
 महासिद्धि ।  
 गायन० ना० पु० गवया, गानेवाला ।  
 गार० ना० स्त्री० गारु ।  
 गारना० स० कि० निचोड़ना, धोना ।

गार्हपत्य० ना० पु० अग्नेभद्र ।  
 गारा० ना० पु० भीति बनाने क लिये बनाई हुई मिट्टी ।  
 गारी० ना० स्त्री० गाली ।  
 गारुडि० साप, सापरा विष मारनेवाला, मरु कान्य यथा, हार भद्रि गारुडी पुनस्तं आवत लहरि न जान कहीरी० ।  
 गारुमत्त० ना० पु० पत्रा ।  
 गाल० ना० पु० कपोल, मूत्रसार, भात ।  
 गालव० ना० पु० मुनि विशेष ।  
 गाला० ना० पु० रुद्र का पत्नी, धुपी हुई रुद्र का गाला ।  
 गाली० ना० स्त्री० अपमान का बोधक वाक्य, उखली ।  
 गाह० ना० पु० माह ।  
 गाहक० ना० पु० खरादार ।  
 गाहना० स० क्रि० दूधना, दाबना, धाह लगाना, माहना ।  
 गाहा० शु० गाथा, अथगाह, कथा ना० पु० वृद्धविशेष ।  
 गाहिगाहि० गु० वृद्धि दूधने ।  
 गाही० ना० स्त्री० पाव, माही, धाहा हुई ।  
 गिजाई० ना० स्त्री० कीटविशेष ।  
 गिच्चिपिच्चिया० ना० पु० वचपिच्चिया ।  
 गिदगिद्वाना० स० क्रि० विविधाना, खुरापन करना ।  
 गिद्ध० ना० पु० पर्वत विशेष, विरगित ।  
 गिनती० } ना० स्त्री० गणित,  
 गिन्ती० } गिती, गुमार ।  
 गिन्दुक० ना० पु० नेंद ।  
 गिन्ना० स० क्रि० गणन, गिन्तीमरना ।  
 गिरगिट० ना० पु० सरट, कृकलाम ।  
 गिरना० स० क्रि० पड़ना ।  
 गिरपड़ना० स० क्रि० बूदपड़ना, झुकपड़ना ।  
 गिरा० ना० स्त्री० सरस्वती, पापदेवता, वापी ।  
 गिराना० स० क्रि० शोधना, पटकना, कलकना ।

गिरि० ना० पु० अद्रि, पर्वत, पहाड़ ।  
 गिरिकद्रक० ना० पु० महा नीव ।  
 गिरिज० ना० पु० शिलानित ।  
 गिरिजा० ना० स्त्री० पार्वती ।  
 गिरिजानन्द० ना० पु० गणेशजी ।  
 गिरिधर० } शु० पर्वत उठानेवाला ना० पु०  
 गिरिधारी० } श्राकृष्णचन्द्रजी, श्रीहनुमान् ।  
 गिरिनाथ० ना० पु० श्रीशिवजी, सुमेरु, हिमाचल, हिमान्य ।  
 गिरि० ना० पु० लम्बा ।  
 गिरिराज० ना० प० श्रीशिवजी, हिमान्य । तावद्वेन, सुमेरु, श्रीकृष्णजी ।  
 गिरिवर० ना० पु० पर्वत, पहाड़ ।  
 गिरिच्छट० ना० स्त्री० नेरू ।  
 गिरिसाह्वय० ना० पु० शिलानित ।  
 गिरीश० ना० पु० आसदाशिव, सुमेरु, हिमालय ।  
 गिरिट० ना० स्त्री० नसों की गाठ ।  
 गिरिहरी० ना० स्त्री० नीव विशेष जो वृक्षोंपर रहता है ।  
 गिलोय० ना० स्त्री० शुरुच ।  
 गीजना० स० क्रि० मलना ।  
 गीत० ना० पु० राग, गान ।  
 गीता० ना० पु० कथा, अप्यामज्ञान, धा जिस पुरस्क म अप्यामज्ञान होने, यथा भगवद्गीता, रामगीता ।  
 गीदड़० ना० पु० शृगाल, सियार ।  
 गीर्वाण० ना० पु० अमर, देवता ।  
 गीला० शु० श्रोदा ।  
 गीष्पति० ना० पु० बृहस्पति ।  
 गुग्गुलु० ना० पु० गुग्गुलु ।  
 गुमा० } शु० गूमा, व कला ।  
 गुमा० }  
 गुच्छा० ना० पु० घोर, घोचा, बाल, पो ।  
 गुजरात० ना० पु० देशविशेष ।

गुह्य० शु० क्षिपा, पौराणिकः ।  
 गुह्यक० ना० पु० यक्ष, कुवेर के दूत ।  
 गुह्यकपति० ना० पु० कुवेर ।  
 गुह्यस्थल० ना० पु० एकान्तस्थान वा क्षिपा  
 श्रेय, यथा, भग ।  
 गुंज० ना० स्त्री० गुंजा, गुंजची ।  
 गुंजरना० अ० कि० देहाङ्गना, गुंजना ।  
 गुंजाने० शु० गादा, मोटा, घना, फारसी का  
 शब्द है ।  
 गुंजार० ना० पु० शब्द, देहाङ्ग, गुंज ।  
 गुंजारना० अ० कि० हुंजना, गुंजना, शब्द  
 करना ।  
 गुटफना० अ० कि० कू कू करना, कपाव का  
 बोलना, निगलना ।  
 गुटका० ना० पु० पुस्तक विशेष, वस्तुविशेष  
 जिसको योगी धूल में रतकर लोप होजाते हैं  
 मिठाईविशेष, चांदी की वस्तुविशेष जो मृत्क  
 की क्रिया में लगताहै, छोटी पीथी ।  
 गुटफाना० स० कि० कपोतको बुलाना ।  
 गुटकी० ना० स्त्री० दूध पांव समेटना ।  
 गुटिका० ना० स्त्री० गोली ।  
 गुठली० ना० स्त्री० फलका चीज ।  
 गुह० ना० पु० ईषका जमाहुआ रस, मिश्रण ।  
 गुहगुहाना० अ० कि० गहगहाना ।  
 गुहगुहो० ना० स्त्री० छोटा टुका ।  
 गुहपुत्रक० ना० पु० ऊस, गन्ना ।  
 गुहपुष्प० } ना० पु० महुआ ।  
 गुहफूल० }  
 गुहा० ना० पु० श्रेय, दात ।  
 गुहाकेश० ना० पु० अर्जुन, सदाशिवजी ।  
 गुहाना० स० कि० खुदाना, खुदवाना ।  
 गुहिया० ना० स्त्री० तिलोना, कपड़ोंकी पुतली ।  
 गुहूची० ना० स्त्री० शरव ।  
 गुहूी० ना० स्त्री० कनकीआ ।  
 गुहूी० ना० पु० क्षिपनेका स्थान ।

गुण० ना० स्त्री० विशेषण, स्वभाव, प्रवीणता,  
 विद्या, डील, श्रमा, रस्सी, धनुषकी 'पंचचरित्र'  
 यहसान ।  
 गुणक० ना० पु० जिस ग्रंथ से गुणन करें ।  
 गुणद० गु० गुणदाता, कामकारी ।  
 गुणन० ना० पु० गुणाकरण, जख ।  
 गुणना० स० कि० निचारना, गुणन करना ।  
 गुणधता० ग० माला० गुणधत् ।  
 गुणचांचक० गु० गुण बतानेवाला ।  
 गुणधान० शु० प्रवीण, पुण्यवान् ।  
 गुणज्ञ० शु० गुणी, ज्ञाना, चतुर ।  
 गुणी० गु० प्रवीण, पुण्यवान्, विद्वान्, विचारीः  
 ना० पु० संपरा ।  
 गुण्य० ना० पु० जिस ग्रंथ को गुणन करें ।  
 गुथना० अ० कि० पिनोना ।  
 गुथवां० शुभाहुआ ।  
 गुद० ना० स्त्री० मलस्थान, गांड, युदा ।  
 गुदगुदाना० स० कि० सहलाना, बुतबुलाना ।  
 गुदगुदाई० }  
 गुदगुदाहट० } ना० स्त्री० सहलाहट सुरसरी ।  
 गुदगुदा० }  
 गुदही० ना० स्त्री० तामाहुआ वस्त्र, गुनरी,  
 चाँक, बाजार ।  
 गुदा० ना० स्त्री० मलस्थान, गांड ।  
 गुदाभंजन० } ना० पु० गांड मरना, इष-  
 गुदमदन० } लाम ।  
 गुन० ना० पु० गुण ।  
 गुनगाहक० ना० पु० गुनका चारनेवा, जानने  
 वाला, विद्याका प्रतिपालक ।  
 गुनगुनाना० अ० कि० घोडा गरमहोना, अँर  
 नाकसे बोलना ।  
 गुनवन्त० } गु० गुणवान् ।  
 गुनवान्० }  
 गुनह० ना० पु० दोष, पाप, कर्म, रामायण  
 यथा, गुनह लपणवर हमपर रोपू, कौतहुं सुभारं त  
 वद दीपू ।

गुनानि० ना० स्त्री० मनमें कल्पना करना ।

गुनी० गु० गुणी ।

गुन्धनि० ना० स्त्री० शूनी, पोहानट ।

गुप्त० शु० लुका, विषा ।

गुप्तार० ना० पु० द्विपत्नी, लुक्ना, लुकाव ।

गुप्तारघाट० ना० पु० अयोध्याजी में स्थान विशेष ।

गुप्ती० ना० स्त्री० स्त्रविशेष जो सोंटे में रहते हैं ।

गुफा० ना० स्त्री० सोह, कन्दरा ।

गुमाना० स० कि० चुभाना, गाड़ना ।

गुमटी० ना० स्त्री० कपड़ानुशेष, कलरा ।

गुपार्ई० ना० स्त्री० बडपन, गोरापन ।

गुरु० ना० पु० आचार्य, शिष्य, बृहस्पति, पुरोहित, किमानिक अक्षर, गु० भारी, बडगुरुधा ।

गुरुतर० गु० अथतमारी, अथतमाय ।

गुरुता० ना० स्त्री० बडपन, आचार्यता ।

गुरुपाक० ना० पु० जो वस्तु बहुत दरम पचे ।

गुरुमुख० ना० पु० जिसने गुरु किया हो, शिष्या वा इष्टदेवका मन्त्र गुरुसे लिया, चेला ।

गुरुमुखहोना० अ० वि० बेलारोना, गुरु से इष्टदेवता का मन्त्र पाना ।

गुरुवाहन० ना० स्त्री० गुरुकी पत्नी ।

गुरुवार० ना० पु० बृहस्पतिवार शुभश्राव ।

गुर्जर० ना० पु० गुजराती वा गुजरातदेश विशेष ।

गुर्वादित्य० ना० पु० जब सूर्य और बृहस्पति एक राशि के होजते हैं वह समय ।

गुर्विणी० ना० स्त्री० गर्भवती, हामिल ।

गुल० बुझाना, दोषका उडाहोना ।

गुलगुला० ना० पु० पक्षान विशेष ।

गुलार्ई० ना० स्त्री० गोलडा, गोलाई ।

गुलाघ० ना० पु० वृक्ष वा उमके फूलोंका रस, तत्पर ।

गुलाळ० ना० पु० अतीर बूका जो मिथतमके ऊपर बालते हैं ।

गुलिक० ना० पु० मोती ।

गुलिया० ना० स्त्री० शिरके पंखे वा गहटा ।

गुलेल० ना० स्त्री० धनुष जिसमें गुहा बलाने हैं ।

गुल्याळ० ना० पु० गलेल ।

गुल्फ० ना० स्त्री० पीली, एकीं ऊपरका भाग ।

गुल्म० ना० पु० रोग विशेष, गुलाव, छाड़ ।

गुह्या० ना० पु० गुहेला, माटीका छोटागोला ।

गुह्याला० ना० पु० वृक्षविशेष यह शब्द फारसी का है ।

गुयाक० ना० पु० सुगरी का वृक्ष ।

गुयालियर० ना० पु० देग वा नगरविशेष ।

गुष्टि० ना० स्त्री० सम्मति, सलाह, भिन्नता ।

गुहू० ना० पु० स्वामिकर्तिक, निषाद, मल ।

गुहना० स० वि० गूदना ।

गुहा० ना० स्त्री० गुहा, कन्दरा ।

गुहाना० स० कि० गुपकाना ।

गुहारि० न० पु० ताडकासुर, ना० स्त्री० सहायता, सहाय, मदद ।

गू० ना० पु० गूद, निष्ठा ।

गूगा० गु० मूत्र, जो बानून करसके, ना० पु० वृषादि या दाट, मिटाई विशेष ।

गूज० ना० स्त्री० शब्द, भिन्नभिनाहट ।

गूजना० अ० कि० गूजरहना, भिन्नभिनाना ।

गूधना० } स० कि० विरोध, लक्षित ।

गूदनी० ना० स्त्री० वृक्षविशेष या फल जो पश्चिम में शीतकाल में होता है ।

गूधना० स० वि० सानना, गूधना, विना ।

गूजर० ना० पु० नीचजाति विशेष ।

गूजरी० न० स्त्री० गूजरकी स्त्री, गहना विशेष जो पाव में पहिनाजाना है ।

गूड० गु० सूत्र, कठिन, गुप्त, भीतर ।

गूदगिरा० ना० स्त्री० गुप्तवाणी गोलबाल, कठिन वचन ।

गूदता० ना० स्त्री० सूत्रता, कठिनता, विषाव ।



गुहपत्र० ना० पु० करील, नागपत्नी ।  
 गुहपा० } ना० पु० साप, यथा, कुडलीगुहपा,  
 गुहपात्० } चञ्चु श्रवा कसोदर पत्नी इत्यमर ।  
 गुहार्थ० पु० गुप्तार्थ, कठिनार्थ ।  
 गुहद० ना० पु० पुराना कपडा ।  
 गुहदा० ना० पु० भेजा, फलना साराश ।  
 गुहप० पु० युक्त, क्षिप ।  
 गुमडी० ना० स्त्री० } नाटि ।  
 गुमडा० ना० पु० }  
 गुञ्जन० ना० पु० प्याज, लहसुन, गाजा, गाजर  
 वा गानका साग यथा, लशुनशुक्रनागिष्टमहा  
 कदरसोना इत्यमर पलाइनिह्वराहचन्द्रनाक  
 ग्रामकुक्कुटलशुनगुननशेवधुक्ताचाद्रायणचरेत्,  
 इति सरोजसुन्दरे ।  
 गुञ्ज० ना० पु० गिद्ध ।  
 गुष्टि० ना० स्त्री० वाराहीकद ।  
 गुह० ना० पु० घर ।  
 गुहकन्या० ना० स्त्री० धीवृत्तारि ।  
 गुहगोधिकार० ना० स्त्री० विस्तुह्या, क्षिपकली ।  
 गुहस्थ० ना० पु० दूसरा आश्रम, धरवाला ।  
 गुहस्थाश्रम० ना० पु० गृहस्थका व्यवहार ।  
 गुहस्थ्या० ना० स्त्री० गृहस्थ का धर्म ।  
 गुहिणी० ना० स्त्री० पराधी, भार्या, जोरु, चौखट ।  
 गुह्या० ना० पु० गृहस्थ ।  
 गुह्य० पु० जो ग्रहण करने के योग्य है ।  
 गुह्यक० ना० पु० गुह्य ।  
 गुह्य० ना० स्त्री० खेलनेके लिये कपडे वा सूत आदि  
 का गोला ।  
 गुह्यश० ना० पु० के रुडा, सरता ।  
 गुह्यली० ना० स्त्री० मोदली ।  
 गुह्य्या० ना० पु०, तक्रिया, भिरहा, और टेंडी  
 दारसोदा ।  
 गुरु० ना० स्त्री० गेरिक, साल मिठी ।  
 गुरुश्या० पु० गेरुका रंगमया ।

गुरुई० ना० स्त्री० जो गेहुश्रा में सरदीके कारण  
 गेरुग का रंग होजाता है पु० गेरुका रंग ।  
 गुरु० ना० पु० घर, तलारा, चाह ।  
 गुरु० ना० पु० अन्नविशेष ।  
 गुरुश्या० पु० गेहूके रंग, ना० पु० पास विशेष ।  
 गुह्या० ना० पु० जन्तु विशेष जिसकी हड्डी अति  
 पवित्र होती है उसकी अणु, छल्ले, और तर्पण  
 करने क पवित्र अर्थ का पात्र बनता है ।  
 गया० ना० स्त्री० गाय ।  
 गौरिक० ना० स्त्री० गेरु, परितफा लालामिठी ।  
 गौरिय० ना० पु० शिलाजीत ।  
 गौल० ना० स्त्री० बाट, मार्ग ।  
 गो० ना० पु० पद, रूप, जल, यज्ञ, स्वर्ग, स्वर्ग,  
 छद्म, ना० स्त्री० गाय, गिरण, इन्द्रिया दग  
 गौडली० ना० स्त्री० वृष विशेष ।  
 गौद० ना० पु० लाला, चप ।  
 गौदनी० ना० स्त्री० नरकट विशेष ।  
 गौदा० ना० पु० मिट्टी का गिलाना, चिड़िया के  
 बुलानके लिये लोई वा पेड़ा ।  
 गोई० स० वि० भू, क्षिपार्, क्षिपी, ना० स्त्री० दो  
 बेलादि के जोड़ को कहत है ।  
 गोकण्ठी० ना० स्त्री० बेरीचक्र वा फल ।  
 गोकर्ण० ना० पु० वितरित, मृगविशेष, लक्ष्म,  
 गो का वान, साप आर शिवजीका स्थान  
 प्रसिद्ध ।  
 गोकर्णनाथ० ना० पु० श्रीशिवजीका तीर्थ  
 विशेष ।  
 गोकुल० ना० पु० गरीविशेष, गौकाकुल ।  
 गोकुलेश० ना० पु० श्रीगुरुचन्द्र ।  
 गोखुद० ना० पु० गोखुर, भूषण विशेष ।  
 गोचन्या० स० वि० पक्कलेना, गेहू चना ।  
 गोचर० ना० पु० समक, इन्द्रियज्ञान, गु०  
 समर्था ।

गोचरी० ना० स्त्री० दशा, प्रकट ।  
 गोजर० ना० पु० वनखजुरा ।  
 गोत्रिका० } ना० स्त्री० गामी ।  
 गोत्रिहा० }  
 गोठ० ना० स्त्री० चौपड़ादि खेलनेका छुटका  
 थमलपत्ती, निनारी ।  
 गोटा० ना० पु० निनारी ।  
 गोटी० ना० स्त्री० शीतला, मन्ना चक्र ।  
 गोड़० ना० पु० पाव पिडली, गु० खुदारा ।  
 गोड़ना० स० कि० सोदना, खुदना ।  
 गोड़िया० ना० पु० बहार, माति विशेष ।  
 गोड़ी० ना० स्त्री० चोरी ।  
 गोण० ना० पु० खोपा, आला, चोरा ।  
 गोत० } ना० पु० गौर ।  
 गोठा० }  
 गोती० ना० पु० गौर, गौमल, गु० गौरवाला ।  
 गोद० ना० स्त्री० कनिया, गौदी, रासि ।  
 गोदना० स० कि० चोखना, बिहना ।  
 गोदा० ना० पु० निशान, चिह्न, दरवा ।  
 गोदायरी० ना० स्त्री० नदीविशेष या दक्षिण  
 में है ।  
 गोदी० ना० स्त्री० अकवार, काला, कनिया ।  
 गोदोदनी० ना० स्त्री० दोहनी ।  
 गोधन० ना० पु० गौर, गायका धन, गामल की  
 प्रतिमा जो दीवाली की बनाते हैं ।  
 गोधूम० ना० पु० गेह, गेहू ।  
 गोधूलि० } ना० स्त्री० सायडाल, सन्धा ।  
 गोधोरा० }  
 गोम० } ना० स्त्री० गन्ध ।  
 गोमी० }  
 गोप० ना० पु० ग्वाल, बरतका भूषण, त्रिपा ।  
 गोपभाल० ना० पु० बरत ।  
 गोपद० ना० पु० गदगा भूषण ।  
 गोपन० ना० पु० त्रिपात, सुधन ।  
 गोपनीय० } गु० दिगने के योग्य ।  
 गोप० }

गोपाचल० ना० पु० ग्वालियर ।  
 गोपाल० ना० पु० ग्वाल, बहर, श्रीकृष्णचन्द्र ।  
 गोपालपुर० ना० पु० मधुराजी वा जहा गगा  
 जी और गोमती का संगम भया है ।  
 गोपिका० } ना० स्त्री० ग्वालों की स्त्रिया ।  
 गोपी० }  
 गोपीनाथ० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी ।  
 गोयर० ना० पु० गायत्री मिठा, गोमल ।  
 गोयरगनेश० गु० मोथा, भडा, भोजा ।  
 गोवरी० ना० स्त्री० मिठी और गोवर मिठा  
 हुआ रूपने के लिये बनाते हैं ।  
 गोभी० ना० पु० बर्डी, नररास ।  
 गोभी० ना० स्त्री० पोधा विशेष, तरकारी  
 विशेष ।  
 गोमका० ना० पु० सुन्दा, यथा, पुण्डला  
 महाकला गोमका राजवर्षी इति निषण्टे ।  
 गोमती० न० स्त्री० नदीविशेष ।  
 गोमय० } ना० पु० गौर ।  
 गोमल० }  
 गोटी० ना० स्त्री० गोरीपी, सुन्दरी ।  
 गोमदायन० ना० पु० इन्द्रधनुष जो वर्षा में  
 निकला करता है और सूर्य के सम्मुख होता  
 है, रामतादिकायास, पतु है यह गोमदायन  
 नहीं । शरभार बड़े जलधार ब्रह्माई ।  
 गोमस० ना० पु० इन्द्रियोंका स्वाद, दूध, दही-  
 मडा, लाडलादि ।  
 गोमसदायन० ना० पु० गोमदायन ।  
 गोमसी० ना० स्त्री० दोहनी ।  
 गोमस० ना० पु० नारगी ।  
 गोपा० गु० गौर, उज्वल ।  
 गोरी० ना० स्त्री० उत्तम स्त्री, सुन्दरी ।  
 गोहू० ना० पु० गाय भल ।  
 गोरोचन० ना० पु० गाय के मूत्र से उत्पन्न पीत  
 वस्तु, गाय के गिर में से उत्पन्न शीत वि-  
 शेष ।  
 गोख० गु० गोप, बकरीला, ना० पु० मरवा ।

गोलक० ना० पु० पति के मरने के उपरान्त  
जारजात, पुन, आंखका घर ।

गोलकुण्डा० ना० पु० नगर विशेष दक्षिण में है ।

गोलता० ना० स्त्री० गोलाई ।

गोलरूप० शु० गोलाकार ।

गोला० ना० पु० गोल वस्तु, खाता, धरन, लोहे  
का पिण्ड, जंगली कनूत और नारियलका पद ।

गोलाई० ना० स्त्री० परिधि, घेरा, गोलापत्र ।

गोलाकार० शु० गोलरूप ।

गोलाध्याय० ना० पु० सिद्धमन्त्रादिमात्रिका का  
एक प्रकार ।

गोलिका० ना० स्त्री० पति के मरने के उपरान्त  
जारजात कन्यका, गोली ।

गोली० ना० स्त्री० छोटागोला ।

गोलोक० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रमा विशेष  
स्थान ।

गोलोमा० ना० स्त्री० बच औरप ।

गोवना० स० क्रि० डिपाना, भूत, क्रिया, गौर ।

गोवर्द्धन० ना० पु० पर्वत विशेष जो ब्रज में है ।

गोविन्द० ना० पु० कृष्णचन्द्र, वेदलम्ब ।

गोविन्दचन्द्रिका० ना० स्त्री० पुस्तक विशेष ।

गोशाला० ना० स्त्री० गाय बिल रहनेका घर ।

गोष्ठ० } ना० स्त्री० बांधव, मेल, सम्पत्,  
गोष्ठी० } सलाह ।

गोष्पद० ना० पु० गायका खुर ।

गोसाई० ना० पु० ईश्वर, तपी, सन्तोंका मार्ग ।

गोसैयां० ना० पु० ईश्वर, परमात्मा ।

गोस्तनी० ना० स्त्री० दास, और ।

गोह० ना० स्त्री० बिसखरों के डौलका जीव ।

गोहरा० ना० पु० उपला ।

गोहार० ना० स्त्री० हुलक, रीला, सहायता,  
मदद ।

गोहू० ना० पु० गेहूँ, गोधूम, अन्न विशेष ।

गोहृष्यन्० ना० पु० सर्व विशेष ।

गोहुर० ना० पु० गोधुर, वीधा विशेष ।

गोत्र० ना० पु० वंश, धराना संज्ञा, पर्वत ।

गोत्रघात० } ना० पु० निनकुल का मनुष्य  
गोत्रवध० } मारना ।

गोत्रज० ना० पु० गोत्री, सम्बन्धी, अपन  
धराने का ।

गोत्रा० ना० स्त्री० धरती ।

गोत्री० ना० स्त्री० गोत्रन ।

गौ० ना० स्त्री० गाय ।

गौं० ना० स्त्री० दास, घात, और, लाभ ।

गौंगीर० शु० घाती, दाव खिलनेहार ।

गौगोड़० ना० पु० जब गाय अपनी दूध नहीं  
देती है तब ग्वाल उसकी घीनि में हाथ डालकर  
खड़ी करते हैं ।

गौड़० ना० पु० देशविशेष, ब्राह्मण विशेष, क-  
मरथ जाति विशेष ।

गौड़िया० ना० पु० गौड़देशवासी, चतन्य का  
शिष्य ।

गौड़ी० ना० स्त्री० गुड़की मदिरा, जहाँ गायों  
सखी होती है ।

गौण० शु० जो मुख्य नहीं, अर्थात् अप्रधान ।

गौतम० ना० पु० छुनि विशेष, पर्वत विशेष ।

गौधन० ना० पु० गायका स्तन ।

गौदन्ती० ना० पु० इरताल वा औरप विशेष ।

गौदान० ना० पु० गायका दान ।

गौना० ना० पु० विवाह करके थोड़े दिनों में  
स्त्री का अपने घर लाना ।

गौनहा० } ना० पु० गौने में दूध के साथी ।  
गौनहार० }

गौमला० ना० पु० गौरोचन ।

गौर० ना० पु० धवदूध, जाति विशेष, चिह्न,  
गुणवर्ण ।

गौरक० ना० पु० तीतरपत्ती, गेरू ।

गौरण्ड० ना० पु० गौर ।

गौर्या० ना० स्त्री० भवानी, पार्वती ।

गौरव० ना० पु० बङ्गपन, गुरुतार ।  
 गौरा० ना० पु० चटन, विद्या, स्त्री० पार्वती ।  
 गौरिया० ना० स्त्री० विद्या ।  
 गौरिला० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।  
 गौरी० ना० स्त्री० रागिनीरिरोष, हल्दी, रात,  
 पार्वती, तुलसी, गौरीचन ।  
 गौशाखा० ना० स्त्री० गाद्यों का स्थान ।  
 ग्रथित० यु० नधाहुथा, पिरोयाहुथा ।  
 ग्रन्थ० ना० पु० पुस्तक, पोथी, शास्त्र ।  
 ग्रन्थकार० ना० पु० ग्रन्थरत्नी, कवि ।  
 ग्रन्थनि० ना० पु० महापुण्ड्री, केलान्द्र ।  
 ग्रन्थि० ना० स्त्री० गांठि ।  
 ग्रन्थिक० ना० पु० पीपरामूल ।  
 ग्रन्थिमान्० ना० पु० हरशिपाड ।  
 ग्रन्थिल० ना० पु० कावईवृच, करील ।  
 अस्त० यु० शब्द जो चवाय के कहा गया, खारा,  
 गया, पिराहुथा ।  
 अह० ना० पु० सूर्यादि नवग्रह, घर ।  
 अहण० ना० पु० हाथ में लेना, अगीरार, चन्द्रमा,  
 सूर्य का गहन ।  
 अहस्थापन० ना० पु० नवग्रहों को बैठाय के  
 उनको आवाहन करना ।  
 अहीता० यु० ग्रहण करनेद्वारा ।  
 आम० ना० पु० गाव, पुर, रूखीवात, समूह,  
 रामचन्द्रिकाया, गिरिग्राम ले ले हरिग्राम मरि,  
 मनोपमिनी पनदती विद्वरि ।  
 आमनर० ना० पु० गैवार गाववासी ।  
 आम्य० यु० गाव में जो उत्पन्नमया ।  
 आमीण० ना० पु० गांव में बसनहारा, गवार ।  
 आव० ना० पु० पत्थर, पर्वत ।  
 आस० ना० पु० शीर, लुम्भा ।  
 आसक० यु० घेरनाला, रोक्नेहार ।  
 आसना० स० कि० घेरना, रोक्ना ।  
 आसित० यु० घेरागया, नाका ।  
 आह० ना० पु० मगर ।  
 आहक० यु० ग्रहणकरनेद्वारा, अनीकारवर्ती ।

आही० यु० आहक, लेनेवाला, स्त्री० नास्त्रि ।  
 आह्य० यु० जो ग्रहण करने के योग्य है ।  
 आवा० ना० स्त्री० गला, गर्दन, गलना पृष्ठभाग ।  
 आस्म० ना० स्त्री० तपन, गरमी ।  
 आवेय० ना० पु० गलक, गहना, हमली, माला  
 आदि ।  
 आनि० ना० स्त्री० पृष्ठा, लान, पकई ।  
 आल० } ना० पु० पशुपालक, अहीर ।  
 आला० }  
 आलिनि० ना० स्त्री० अहीरिनि ।  
 आवेय० अन्व० समीप, पास ।  
 आवेय० ना० पु० नगर व गावका आसपास ।

(घ)

अघोरना० } स० कि० मथना, मिलाया, धोना  
 अघोलना० }  
 अघरी० ना० स्त्री० लहगा ।  
 अघ० ना० पु० देह, मन ।  
 अघक० ना० पु० मन्थय, विचर्वेया, सदरी ।  
 अघज० ना० पु० अगस्त्यमुनि ।  
 अघना० य० कि० मदाहीना, कमहीना, योग्यहीना ।  
 अघनीय० यु० जो घटने के योग्य है ।  
 अघयोजि० ना० पु० अगस्त्य मुनि ।  
 अघा० ना० स्त्री० मेघोंका उमड़ना, मेघ, भौंड़,  
 टाग, मजुककई ।  
 अघाटोप० ना० पु० पालकी वा रथका आच्छादन,  
 गिलाक, चारों ओर से घिरना ।  
 अघाना० स० कि० कम करना ।  
 अघाय० ना० पु० कमती ।  
 अघायना० स० कि० घटना ।  
 अघिका० ना० स्त्री० पड़ी, मुहूर्त, ऐंड़ी के उपर,  
 का भाग ।  
 अघित० यु० योग्य, गम्य ।  
 अघिया० यु० थोड़े मोलका, सस्त्रा, घटिदेनेद्वारा,  
 धोका देनेद्वारा, कपनी ।  
 अघी० ना० स्त्री० कनि, हानि, कमी, पड़ी ।

घञ्यादि० ना० स्त्री० घटा आदि ।  
 घङ्घटाना० अ० कि० गरजा ।  
 घङ्गा० ना० पु० कुम्भ, घट, कलश मिट्टाका ।  
 घङ्गिया० ना० स्त्री० कुल्हिवा, मधुमक्खी का छत्ता, कोर, पियाली ।  
 घङ्गियाल० ना० पु० मगर, ग्राह, घस्या ।  
 घङ्गियाली० अ० घस्या बनानेद्वारा ।  
 घङ्गी० ना० स्त्री० साठिपल, समय मापों का यत्रविशेष ।  
 घङ्गीच० ना० पु० } निरुठी, तिपाई, पानी  
 घङ्गीची० स्त्री० } का घड़ा रखने के लिये  
 काष्ठ रचित वस्तु ।  
 घणा० अ० घा ।  
 घण्टा० ना० स्त्री० बाजा विशेष, अर्द्धदिग्द ।  
 घण्टालिक० ना० स्त्री० मधुक्कण घण्टी ।  
 घण्टाली० ना० स्त्री० छोटा घण्टा ।  
 घन० ना० पु० घन, मेघ, गु० आ, टट, विस्तार, मूर्ति ना० पु० लोहार का बड़ा हथौड़ा ।  
 घनक० ना० पु० समालु पोथा ।  
 घनगरज० ना० पु० गर्जन, गु० ऊचा शब्द ।  
 घनघनाना० अ० कि० भनभनाना, भूहराना ।  
 घनघोर० ना० पु० घटा, घेरा, घा गहन ।  
 घनतनवर्ण० अ० जिसका वर्ण मध क समान हो, ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी ।  
 घनरस० ना० पु० जल, पानी ।  
 घनश्याम० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी, गु० का ली घा ।  
 घनस० ना० पु० पत्नी निराप ।  
 घनसार० ना० पु० कपूर, जल, चन्दन ।  
 घना० अ० विचपिच, महत ।  
 घनासन० ना० पु० भैसा ।  
 घनाह्न० ना० पु० नागरपोथा ।  
 घनेरा० अ० बहुत, अधिक ।  
 घघराना० अ० कि० व्याकुल होगा, हडबडाना ।  
 घघराहट० ना० स्त्री० व्याकुलता, हडपई ।

घमण्ड० ना० पु० गर्व, अहकार, गरूर ।  
 घमण्डी० अ० अहकारी, मगरूर ।  
 घमरौल० ना० स्त्री० रोला भीड़ ।  
 घमसान० ना० पु० युद्ध, लड़ाई ।  
 घमाघम० अ० कचाकच ।  
 घमाना० अ० धूप ज्वाना, धूप में खड़ा होना ।  
 घमासान० ना० पु० घमसान ।  
 घमोई० ना० पु० वृहन्निशेष ।  
 घर० ना० पु० गृह, मघा ।  
 घरनई० ना० स्त्री० चापड़ा, वेडा ।  
 घरना० अ० कि० गडन ।  
 घरनी० ना० स्त्री० स्त्री ।  
 घरघार० ना० पु० घराना ।  
 घरघारी० ना० स्त्री० गृहस्थ ।  
 घराना० ना० पु० कुटुम्ब, घर के लोग ।  
 घरामी० ना० पु० छपेया ।  
 घरी० ना० स्त्री० लपटे हुय कपडा की गठरी, तह लये हुये कपड़े, घड़ी ।  
 घरैला० अ० घर का पालतू ।  
 घरौदा० } ना० पु० छोटा घर जा लड़के-  
 घरौर० } खेलन के लिय बनात है वा मिस  
 घरौशरा० } में खेलेना रखत है ।  
 घरघेर० ना० पु० चका आदि का शब्द ।  
 घरघेरा० ना० स्त्री० घाघरा ।  
 घर्म० ना० पु० प्रस्नद, जलन, धूप, घाम, बाल ।  
 घर्षण० ना० पु० घिसना, रगड़ना ।  
 घल्लुआ० ना० पु० रूक वा घाता जो तेल से अधिक लिया जाता है ।  
 घवरि० ना० स्त्री० गुच्छ, गुचा ।  
 घसन० ना० पु० घर्षण ।  
 घसना० अ० कि० घिसना, रगड़ना ।  
 घसियारा० ना० पु० घास काटनद्वारा ।  
 घसियारिन० ना० स्त्री० घसियारि की बारी ।

घसीटना० स० कि० खोंचना, कड़ेना ।  
 घसीटा० स० कि० जो कड़ेना गया ।  
 घसीला० गु० तृणस्थान, जहा घास ही ।  
 घहराना० अ० कि० गरजना ।  
 घाई० ना० स्त्री० घात, अगुली का मजस्थान  
 तब वा खह का चीरा ।  
 घाई० ना० स्त्री० शोर, पल ।  
 घाघ० ना० पु० प्राचीन, चतुर, गु० बाजीगर,  
 द्रवनालिन ।  
 घाघरा० ना० पु० लईगा, पौधाविशेष, नद  
 विशेष ।  
 घाट० ना० पु० नदीवा तालाब म उतरने वा  
 स्नान करनेका स्थान, वर्षाकदेशका पर्वत,  
 बौल, धरी, गु० मून ।  
 घाटा० ना० पु० चढ़ाव, धरी ।  
 घटिया० ना० पु० घाट परका भाग्य, जो स्नान  
 करनेवाले के कपड़े बचाते हैं ।  
 घाटी० ना० स्त्री० पर्वतों में संकेत मार्ग ।  
 घात० ना० स्त्री० दगा, मार, दाव, हत्या,  
 श्रेय ।  
 घातक० गु० हत्यारा, शत्रु, मारनेवाला ।  
 घाता० ना० पु० रूक, मोल वा तोल से अधिक  
 लेना ।  
 घातिनी० ना० स्त्री० हत्यारिन, मारनेवाली ।  
 घाती० गु० दाव लेनेवाला, मारनेवाला ।  
 घातुक० गु० अपकारी, निट्टर, हत्यारा ।  
 घान० ना० पु० उतली वा चकी आदि में  
 नितना एक बार डालते हैं, विवाह में कर्म  
 विशेष ।  
 घानी० ना० स्त्री० तिल आदि, चोन्ह, चर्बी ।  
 घायदा० } गु० व्याकुल, हैरान ।  
 घायरा० }  
 घाम० ना० पु० धूप ।  
 घामड़० गु० भोला, उल्लू, अहंमक ।  
 घायल० गु० हथियार लगने से जिसके घाव  
 भया ।

घाल० ना० स्त्री० घुलाई, विगाह ।  
 घालक० गु० बरिच, हस्तक, मारनेवाला ।  
 घालन० ना० पु० हनन, बधन, मारण ।  
 घालना० स० कि० विगाहना, उजाड़ना  
 धुत्तेइना, मारना, पटकना ।  
 घालित० गु० माराहुआ, उजाड़ाहुआ ।  
 घाय० ना० पु० चीरा, शम्भ ।  
 घास० ना० स्त्री० तृण, तर ।  
 घासी० } गु० पासनाया ।  
 घासू० }  
 घिविवाहा० अ० कि० आशुना करना, लड़-  
 लड़ाना, निगमिगी करना ।  
 घिचपिच० गु० घना, आसपास ।  
 घिन० ना० स्त्री० घृणा, असह, तच्छुन ।  
 घिनाना० अ० कि० छुटना, अस्व, देर के  
 उचना ।  
 घिनौना० स० जिस को दस्तकर विन जावे ।  
 घिया० ना० स्त्री० घुई, तरकारा विशेष ।  
 घिरना० अ० कि० घर म पटना, उमएना ।  
 घिरनी० } ना० स्त्री० गराती, गिरी, कपोत  
 घिरणी० } विगेष, चरती ।  
 घिराना० स० कि० घेरा करवाया ।  
 घिसना० स० कि० रगड़ना, स्थिगाय, स०  
 कि० मलना ।  
 घिसाना० स० कि० रगड़ना, मलाना ।  
 घिसाव० ना पु० }  
 घिसावट० स्त्री० } रगड़, रगड़ावट ।  
 घिसिपान० स० कि० घसीटना ।  
 घीनुघार० ना० स्त्री० शीघ्र पौधा विशेष ।  
 घुंघुची० ना० स्त्री० बेलिशेषकाफल वा बीज ।  
 घुंघुऊ० ना० पु० चौरासी, पीप ।  
 घुट्टा० ना० पु० जाडु गाडि पाव का ।  
 घुएडी० ना० स्त्री० बल आदि की गोले वस्तु  
 यथा अंगरते में होती है ।  
 घुटना० ना० पु० ठेकना, जाडु, अ० कि० वि-  
 सना, सात रजजाना ।

घुटाना० स० अ० मुडाना, चिकना करना ।  
 घुङ्गा० ना० पु० घोडा ।  
 घुङ्गकना० स० कि० दक्काना, धमकाना,  
 किङ्कना ।  
 घुङ्गी० ना० स्त्री० धमकी, भिडकी ।  
 घुङ्गचढ़ा० ना० पु० अश्वार, सवार ।  
 घुङ्गचहल० ना० छा० चोपहिया गाडा जिस में  
 घोड़े मचने हैं ।  
 घुन० ना० पु० कीट विशेष, ढोला ।  
 घुना० गु० जिस में घुन लग गया ।  
 घुनाश्वर० ना० पु० घुन कृत अश्वर ।  
 घुनिया० गु० घना, कपटी ।  
 घुमरी० ना० स्त्री० तिमिरी ।  
 घुमाना० न० कि० फिराना, फेरना, बहकाना ।  
 घुरकना० स० कि० बुझना ।  
 घुरूका० ना० पु० भीमसेन का पुत्र जो हिंड  
 स्त्री से उत्पन्न था जिस का घटीतक भी  
 कहते हैं ।  
 घुलना० अ० कि० गलना, पिघलना, नम्र हो  
 जाना, दुर्बल होना ।  
 घुलाना० स० कि० पिघलाना, गलाना ।  
 घुलावट० ना० स्त्री० पिघलावट ।  
 घुसना० अ० कि० पैटना ।  
 घुसपैट० ना० स्त्री० पट्टा ।  
 घुसाना० स० कि० पिलाना, पैटना ।  
 घुसेड़ना० स० कि० टासना, खोसना ।  
 घुग्नी० ना० स्त्री० उसना, चना, गेहू ।  
 घुग्गर० ना० पु० लहराये हुये बाल ।  
 घुग्गी० ना० स्त्री० घोंघी, छोटा घोंघा ।  
 घुग्घट० ना० पु० ओढ़ना, नक्का ।  
 घुग्घर० ना० पु० घृगर ।  
 घुग्घरू० ना० पु० नूर ।  
 घुटना० स० कि० निगलना, लालना ।  
 घुंसे० ना० स्त्री० बका चूहा ।  
 घुंसा० ना० पु० पसा, थपड़, मूका ।

घूघू० ना० पु० पर्जाविशेष, पाखंड ।  
 घूट० ना० पु० पाती की लिलावट ।  
 घूटना० स० कि० घटना ।  
 घून० ना० पु० द्वेष, कपट, झोहा, लाग ।  
 घूना० गु० कपटी, दोहा ।  
 घूमना० अ० कि० फिरना, चकरदेना, लीटना ।  
 घूर० ना० पु० खाद, मूका, ताज ।  
 घूरची० ना० स्त्री० उलकेना ।  
 घूरना० स० कि० तानना, क्रोध से देखना ।  
 घूस० ना० स्त्री० घुस, अश्वर, शिशपत ।  
 घूसत० ना० पु० उल्लू का बच्चा ।  
 घूसा० ना० पु० थपड़, मुका, मुकी ।  
 घूणा० ना० स्त्री० धिन, मूलानि ।  
 घूणि० ना० स्त्री० विरण ।  
 घूत० ना० पु० घी ।  
 घूताची० ना० स्त्री० मुख्य अ सरा ।  
 घूताकू० गु० चिकना ।  
 घूटि० ना० पु० शकर, वाराह ।  
 घेंटा० ना० पु० } शकर का बच्चा ।  
 घेंटी० स्त्री० }  
 घेगा० } ना० पु० गले में रोगविशेष ।  
 घेघा० }  
 घेतला० ना० पु० जती विशेष ।  
 घेर० गु० रूधा, घूमघुमान, गोलानार, ना०  
 पु० फेर ।  
 घेरना० स० कि० रूधना, मासना ।  
 घेरा० गु० जो रोंका गया, ना० पु० कुडल, म-  
 डल, दावा ।  
 घेवर० ना० पु० मिठाई विशेष ।  
 घोगा० ना० पु० शक वा घोषा जतु नि० ज-  
 न्तु का घर विशेष ।  
 घोंसला० ना० पु० पकी का घर, खोता ।  
 घोकना० } स० कि० रटना, याद करना ।  
 घोखना० }  
 घोधी० ना० स्त्री० बस विशेष जो बम्बल  
 आदि से बनाते हैं ।

घोणा० ना० स्त्री० नाक, नासिका, यथा ( स्त्रीनि  
प्राण गन्धवाद्यानां नासा च नासिका ) इत्यमर ।  
घोट० ना० स्त्री० चिकनाहक, आप ।

घोटक० ना० पु० घाडा, यथा ( घाटके वीति  
तुरगतुरगाश्वतुरग्मा ) इत्यमर ।

घोटना० स० कि० मलक चिकना करना, मु  
राना ना० पु० पीपाणयादिका वस्तु निसस स  
चिकनात है ।

घोटा० ना० पु० काटादिका वस्तु निसस घा  
टन है ना० स्त्री० सुपारी ।

घाडा० ना० पु० अश्व तुरग ।

घोर० ना० पु० शब्द, भय धडका शु० भया  
नक, कठिन, कडा ।

घोरनिद्रा० ना० स्त्री० सुतनाद, नवानाद ।

घोरफणा० ना० स्त्री० गाह ।

घोल० ना० पु० मडा, ढाल ।

घालना० स० कि० मिलाना ।

घोष० ना० पु० अहीरा का गाव, गाव, ग्वाल ।

घोषणा० स० क्रि० अभ्यास करना, याद करना,  
प्रतिद रूप से जगना ।

घोषा० ना० स्त्री० सीक, विडग ।

घोस० ना० पु० घाव ।

घोसी० ना० पु० ग्वाल अहीर ।

घौड़ि० } ना० स्त्री० शुद्धा, पवारि ।  
घौरि० }

घ्राण० ना० पु० नाक गंधिका ग्रहण ।

घ्राणेन्द्रिय० ना० स्त्री० नासिका, नाक ।

### [ च ]

चँवर० ना० पु० चमर ।

चक० ना० पु० चकवा पर्वी, जिस भूमि पर अ  
पा अधिकार हा ।

चकचका० शु० शब्द निर्मल, तेजोमय ।

चकट्टा० ना० पु० चकलस, आनन्द ।

चकता० ना० पु० बिह, निरान ।

चकती० ना० स्त्री० पाक भगला, पवद ।

चकनाचूर० ना० पु० कठरन, क्लीता, चूर,  
चूर्ण ।

चकलस० ना० स्त्री० चकवा, मगना, तमारा ।

चकलसी० शु० चरन्वावाला, मग्न ।

चकला० ना० पु० वरया का घर, वरविशेष ।  
जा पा और सन से बनता है, देरा का खण्ड  
जिसमें कई परगना हात है, शु० चौड़ा ।

चकलाई० ना० स्त्री० चौड़ाई ।

चकवा० ना० पु० राजहस जाति के पर्वी  
विशेष ।

चकवी० ना० स्त्री० चकवा की स्त्री ।

चका० ना० पु० पहिया, चक्र, कुलाल जिसपर  
बर्तन बनाता है ।

चकाचौध० ना० स्त्री० दृष्टि निरमिराना ।

चकाचू } ना० पु० चक्रचूह ।  
चकाचूह }

चकित० } शु० अचभित, भूलाभया तथश्चकिते ।  
चकृत० }

चकोतरा० ना० पु० गलगल फलविशेष ।

चकोर० ना० पु० पत्ता विशेष ।

चक्रद्वै० ना० पु० राजा चक्रवर्ती ।

चक्रर० ना० पु० दही, गाड़ी का पहिया ।

चक्रान० शु० गाढ़ा जमाहुआ ।

चक्रास० ना० पु० सुपियों का घर ।

चक्री० ना० स्त्री० दलैनी, जिससे आण पीमने है ।

चक्रू० ना० पु० हुरी चाक ।

चक्र० ना० पु० अरविशेष, पहिया, गोल भ  
मण, सुदशन, कुम्हार का चाक ।

चक्रहृ० ना० पु० तगर औषध ।

चक्रधर० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र जी, शु०  
चक्रपाणि० } जो चक्र बाधता हा ।

चक्रवर्ती० ना० पु० चारोमण्डल का राजा,  
सावभौराजा ।

चक्रचाक० ना० पु० चकवा ।



चक्रमदन० ना० पु० पवार, कौच, बीज ।  
 चक्रद्रुह० ना० पु० चक्रारार सेयरा गढ़  
 बनाकर समर करना ।  
 चक्रलक्षण० ना० स्त्री० गुरुच ।  
 चक्रा० ना० स्त्री० समूह, गिराह, टापी ।  
 चक्राकार० गु० पहिया के डाल ।  
 चक्रित० गु० चरित, प्रमित ।  
 चक्री० ना० स्त्री० चकला, गाथनों की मन्त्री  
 ना० पु० माप, कुम्हार ।  
 चख० ना० पु० चख, पेश ।  
 चपना० स० कि० जाचना, रमादलेगा, खाना ।  
 चपाचरती० ना० स्त्री० मिगाड़, लड़ाई, मूट ।  
 चग० ना० स्त्री० शूरी, बाजा, पत्रग ।  
 चंगा० गु० भला, अच्छा, सुखी ।  
 चंगेर० ना० स्त्री० फूल रखने का पात्र, कठी ।  
 चंगेरा० ना० पु० } ताचा, ताची, कठरा,  
 चंगेरी० ना० स्त्री० } कठी ।  
 चचा० ना० पु० पिता का भाई, चाचा ।  
 चची० ना० स्त्री० चचाकी स्त्री ।  
 चचुलाई० ना० पु० चंचेडा, तरकारी ।  
 चचोरना० स० कि० सूखी वस्तुना चूसना ।  
 चचनाना० स० कि० टीसना, क्रोधित होना,  
 झुझलाना ।  
 चचनाहट० ना० स्त्री० टीस, झुझलाहट ।  
 चंचरीक० ना० पु० भौरा ।  
 चंचल० गु० अस्थिर, चपल, कम्पाहा, खिलाड़,  
 नारा ।  
 चंचलता० ना० स्त्री० अस्थिरता, चपलता ।  
 चंचला० ना० स्त्री० बिजली, कौंधा, लक्ष्मी ।  
 चंचलाई० ना० स्त्री० टिड्डी ।  
 चंचलाहट० ना० स्त्री० अस्थिरता, टिड्डी ।  
 चंचु० ना० पु० कौंच, शुक्र पृथ्वी ।  
 चट० अन्व० तुरंत, उसी समय ।  
 चटक० ना० स्त्री० चमक, धकाका, चिंका, गु०  
 बुद्धिमान् चालाक बगी ।

चटकना० ना० पु० धका, थ० कि० फटना,  
 धडकना, तड़कना ।  
 चटका० ना० पु० भौरा, गरमोथा पत्ती, पत्ती  
 टापा, चटा, दरवा ।  
 चटकाना० स० कि० चुंकी बजाना, फटकारना,  
 पाडना, चीरना ।  
 चटकारन० स० कि० पैशुआदि के चटाने में  
 मुगसे ठिक ठिक करना ।  
 चटकाहट० ना० स्त्री० चमक, भडक, ना० पु०  
 चिड़ियों का शब्द ।  
 चटकीला० ना० पु० } चमकीला, भडकाला,  
 चटकीली० ना० स्त्री० } नमका ।  
 चटगांध० ना० पु० नगर जो बगाले के पूर्वेह ।  
 चटनी० ना० स्त्री० खाने क लिये खटी बनई  
 हुई वस्तु, चाटने की वस्तु ।  
 चटपट० अन्व० तुरंत, उसी समय ।  
 चटपटाना० अ० कि० व्याकुलहोना, फड़फड़ाना,  
 किसी वस्तु क लिये जी चलाना ।  
 चटपटाहट० ना० स्त्री० व्याकुलता ।  
 चटपटिया० गु० फुर्तला, चालाक ।  
 चटपटी० ना० स्त्री० उतावली, हड़बड़ी ।  
 चटवाना० स० कि० चटाके खिलाना ।  
 चटसार० } ना० स्त्री० पाठशाला, मदतह ।  
 चटसाल० }  
 चटार्ह० ना० स्त्री० विद्वाना विशेष ।  
 चटाक० ना० पु० धडाक, भडाका, एकाएक ।  
 चटाका० ना० पु० धडारा, चूमा खनेका शब्द ।  
 चटाचट० गु० दोहराय तिहराय के जो शब्द ।  
 चटाना० स० कि० चटवाना ।  
 चटिया० ना० पु० शिष्य, चला, गु० चाटने  
 वाला ।  
 चटी० ना० स्त्री० ध्यान, स्थिरता, गताबी, राम-  
 चंद्रिकाया वशा { सब जात घरी इह की  
 दुपरी कपटी न रहे जह एक घरी । निघरी  
 रुचि मीउ घयीहु घरी जग जीव यतीन कि  
 लूटी चटी ) ।

चटोरा० गु० रक्षिषा, पेट्ट, अर्धरत्न ।  
 चट्टा० ना० पु० चट्टाली बालक ।  
 चट्टान० ना० पु० पत्थरका छोटाभाग वा  
 टुकड़ा ।  
 चट्टावट्टा० ना० पु० लिखीना विशेष ।  
 चट्ट० ना० पु० कृषकी वाली लोहने का शब्द ।  
 चट्टबट्ट० गु० चम्बट, बिक्री ।  
 चट्टचट्टाना० अ० कि० फटना, तड़कना ।  
 चट्टबट्टिया० ना० पु० बकी ।  
 चट्टई० ना० स्त्री० परिचम में तैयारी की करते  
 हैं और अन्न में कूप गड़गने की ।  
 चट्टता० ना० पु० लाभ, बढ़ती ।  
 चट्टताहोना० अ० कि० निकलना होना, सरस  
 होना ।  
 चट्टना० स० कि० आरोहण करना, बिलिंगना,  
 उठना, धारा करना, समारहोना ।  
 चट्टवेया० गु० चट्टनेवाला, यथा पुट्टचट्टा ।  
 चट्टाई० ना० स्त्री० चट्टाव, धावा ।  
 चट्टाना० स० कि० आरोहण करना, बलिदान  
 करना, उठाना, टोल वा धनुष का तानना वा  
 कसना ।  
 चट्टाय० ना० पु० चट्टाई, भाटा ।  
 चट्टैत० } ना० पु० चट्टवेया ।  
 चट्टैता० }  
 चट्टीया० ना० पु० जूता जो एंड़ी से चट्टा  
 रहता है ।  
 चणक० } ना० पु० चना, अन्नविशेष ।  
 चणा० }  
 चण्ड० गु० प्रबल, प्रचण्ड, भैरव विशेष ।  
 चण्डांगु० ना० पु० सूर्य ।  
 चण्डागुप्त० ना० स्त्री० कोंच नील ।  
 चण्डाल० ना० पु० चांगल, अनिनीच, छुक्का ।  
 चण्डालिन० } ना० स्त्री० चांडालनी स्त्री ।  
 चण्डाली० }  
 चण्डिका० } ना० स्त्री० दुर्गादेवी ।  
 चण्डी० }

चण्डोल० ना० पु० पालकीविशेष, पदविशेष,  
 लिखीना विशेष ।  
 चतु० गु० चारि ।  
 चतुर० गु० निपुण, सुनारी, प्रवीण, इयाना, धूर्त,  
 ना० पु० कीचा ।  
 चतुरई० } ना० स्त्री० बुद्धिमानी, न्यायनन,  
 चतुरता० } धूर्तता ।  
 चतुरंग० ना० पु० चारिधंग की ।  
 चतुरंगसैन्य० ना० स्त्री० चारिप्रकारकी फौज  
 अर्थात् हाथी १ घोड़ा २ रथ ३ पदाति ४ ।  
 चतुरंगुल० गु० चारिअंगुल, स्त्री० चिरवाली ।  
 चतुरन्त्र० गु० चौगूट ।  
 चतुरा० गु० चतुर ।  
 चतुराई० ना० स्त्री० चतुरता ।  
 चतुरानन० ना० पु० नन्ना ।  
 चतुरवस्था० ना० स्त्री० चारिअवस्था, अर्थात्  
 जाम्बू, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय, अथवा चतुर्थ  
 प्रौढ, युवा, वृद्ध ।  
 चतुराश्रम० ना० पु० चारि आश्रम, अर्थात्  
 ब्रह्मचर्य्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यासी ।  
 चतुरास० ना० स्त्री० चारों ओर ।  
 चतुरासी गु० अस्ती और चार ८४ ।  
 चतुरासीयोनि० गु० चौरासी योनि अर्थात्  
 (दोहा) नव ६ जलचर दस १० व्योमचर ४  
 ग्यारह ११ वनबीम २०, ये चौरासी ८४ मानि  
 मनुज चारि ४ पशु तीस ३० ) ।  
 चतुरस्रपवेद० ना० पु० चारि उपवेद, अ  
 धुर्वेद, गङ्गर्वेद, आपुर्वेद और धर्मशास्त्र ।  
 चतुर्थ० गु० चौथा ।  
 चतुर्थावस्था० ना० स्त्री० पुत्रापा, मृत्युकाल  
 चतुर्थी० ना० स्त्री० चौथ, चौथी तिथि ।  
 चतुर्दश० गु० चौदह १४ ।  
 चतुर्दशविद्या० ना० स्त्री० चौदहविद्या,  
 नक्षत्रान् १ रसायन, २ वैद्यक ३ ज्योतिष  
 ४ अरण्य ५ धनुर्विद्या ६ कोक ७

नाज्ञान ६ वाहन केरन १० तन्मय ११  
ज्य १२ तस्वरी १३ स्वरज्ञान १४ ।

चतुर्दशरत्न० ना० पु० चोदहरन, अर्थात् अ  
मृत १ चन्द्रमा २ सधमी ३ धनुष ४ धव  
तरि ५ पूरावत् ६ कौस्तुभमणि ७ उच्चै श्रवा ८  
शङ्ख ९ अस्तरा १० कामधेनु ११ प्लपट्टम १२  
मदिरा १३ विष १४ ।

चतुर्दशमनु० ना० पु० चौदहमनु, अर्थात् स्वा-  
यम्भुव १ स्वारोचिष २ उत्तम ३ तामस ४  
रेवत ५ चाक्षुष ६ वैश्वानर ७ सावधि ८ द्रव  
सावधि ९ ब्रह्ममावधि १० धर्मसावधि ११  
ऋसावधि १२ द्रवमावधि १३ इद्रमाव  
धि १४ ।

चतुर्दशलोक० ना० पु० चान्ह लोक, अर्थात्  
सप्तसर्ग और सप्त पाताल, भू १ भुव २  
स्व ३ मह ४ जन ५ तप ६ सत्य ७ अत  
ल ८ त्रिल ९ सुतल १० रमातल ११ तला-  
तल १२ महानल १३ पाताल १४ ।

चतुर्दशी० ना० स्त्री० चौदहवा तिथि, चादस ।

चतुर्भुज० ना० पु० विष्णु, नारायण, शु० चारि  
भुजावाला, वा चारिमूर्तियों का स्तन ।

चतुर्भुजक्षेत्र० ना० पु० चामेडा क्षेत्र ।

चतुर्भुजी० ना० स्त्री० देताविशेष ।

चतुर्भोजन० ना० पु० चारिप्रकारका भोजन,  
अर्थात् भोज्य १ भक्ष्य २ लक्ष ३ चोष्य ४ ।

चतुर्मुख० ना० पु० ब्रह्मा ।

चतुर्मुक्ति० ना० स्त्री० चारिमुक्ति, अर्थात् सा  
लोक्य १ सामीप्य २ सारूप्य ३ सायुष्य ४ ।

चतुर्योगि० ना० स्त्री० चारियोगि, अर्थात् स्वेद  
न १ अष्टाङ्ग २ उद्भिन्न ३ जरायुज ४ ।

चतुर्ध्वज० ना० पु० चारिध्वज, अर्थात् ऋक् १  
यज्ञ २ साम ३ अथर्वण ४ ।

चतुर्ध्वजा० ना० पु० चौद्वि, चारिदेवता ।

चतुर्धर्म० ना० पु० चारिधर्म अर्थात् चारिकल ।

चतुर्धर्म्य० ना० पु० चारिधर्म्य अर्थात् मायण्य,  
क्षयि, वैश्य, शूद्र ।

चतुर्धाद्य० ना० पु० चारिप्रकार का राजा, अ  
र्थात् तन १ वित्त २ धन ३ शिम्बर ४ ।

चतुर्धाहु० ना० पु० चतुर्भुज ।

चतुर्विंश० शु० चौबीसवा ।

चतुर्विंशति० शु० चारिभू २४ ।

चतुर्विवाह० ना० पु० चारिप्रकार क विवाह,  
अर्थात् प्राजापय १ अर्ष २ गाधव ३ रा-  
क्षसी ४ ।

चतुष्कोण० शु० चौकोन, चौकाना ।

चतुष्पदधर्म० ना० पु० चारिपद धर्म क,  
अर्थात् विद्या १ सत्य २ तपस्या ३ दाता ४ ।

चतुष्फल० ना० पु० चारिफल, अर्थात् अर्थ  
धर्म २ काम ३ मोक्ष ४ ।

चतुष्पाद० ना० पु० पशु चारिपदवाला ।

चतुस्सहस्र० शु० चारिहजार ४००० ।

चतुस्संहिता० ना० स्त्री० चारिसंहिता, अर्थात्  
ग्राही १ भागवती २ वैष्णवी ३ सोरि ४ ।

चना० ना० पु० अक्षविशय ।

चन्द्र० ना० पु० चन्द्रमा ।

चन्द्रन० ना० पु० मधुसार, गणन, म  
दल ।

चन्द्रवा० ना० पु० मधुसार ।

चन्द्रा० ना० पु० चन्द्रमा मन्त्रिलालस यत्  
( दन्ति उही तिलीना चन्द्रा, अरि ३ कीजिय  
बालगोविदा ) ।

चन्द्रिया० ना० स्त्री० ट्टरी, चादि, छोनी  
रस्ती ।

चन्द्र० ना० पु० चन्द्रमा, चाद ।

चन्द्रक० ना० पु० कण्ठ, मयूर, नव म लो  
वस्तु ।

चन्द्रकला० ना० स्त्री० चन्द्रमा का सोलहवा  
भाग, भियों की धोनी विशेष ।

चन्द्रकान्त० ना० स्त्री० मणिशिरा ।

चन्द्रग्रहण० ना० पु० चन्द्रमा का गहन ।

चन्द्रघण्टा० ना० स्त्री० देवीशिरा ।

चन्द्रचूड० ना० पु० श्रीमहादेवीनी ।

चन्द्रभागा० ना० स्त्री० चिवाव नदी का पनाव  
में है ।

चन्द्रभाल० ना० पु० श्रीमहाकृष्णी, गणराजा ।

चन्द्रमल्लिका० ना० स्त्री० इलायची ।

चन्द्रमा० ना० पु० चांद, प्रतिविशय ।

चन्द्रमुखी० शु० निर्लम्बा सुत चन्द्रमा सरासा है  
श्रुतम् अतिहृदयी ।

चन्द्रमौलि० ना० पु० आमहादेवजी, गये  
शना ।

चन्द्रधनु० } ना० स्त्री० नीरवहणी कौड़ा जो  
चन्द्रधनुषी० } लालमकरीस होता है, राक्षसी ।

चन्द्रवरी० शु० जा चन्द्रमा से उपन्न भये  
स्वयिकी जातिविशेष श्रुतम् सामवरी ।

चन्द्रयाता० ना० स्त्री० छापी कर्गई, बडी इला  
यची ।

चन्द्रसिता० ना० स्त्री० कपूर ।

चन्द्रशेखर० ना० पु० श्रीमहादेवजी, पर्वत ।

चन्द्रहार० न० पु० मलका गहना विशय ।

चन्द्रहास० ना० पु० लक्ष्य तलवार, राजादि  
शेष ।

चन्द्रहासा० ना० स्त्री० गुरच ।

चन्द्रहासी० ना० स्त्री० छोटी कर्गई ।

चन्द्रा० शु० सुखडला, युवा, युद्धिमात् ।

चन्द्रातप० ना० पु० चादनी, चन्द्रिका ।

चन्द्राना० अ० कि० सूतना सुरभागा ।

चन्द्रायण० ना० पु० मन चाद्रायण जो एक  
महीने १ एक भाग भोजन में शुक्रपक्ष कृष्णपक्ष  
में बढ़ाने घटाने की रीति से होता है ।

चन्द्रिका० ना० स्त्री० चादना, वाहुची शोध,  
पुस्तकविशेष, शबोत ।

चन्द्रोदय० ना० पु० चन्द्रमा का उदय, शोध  
विशेष ।

चन्द्रन० ना० स्त्री० अगस्त्या विशय, कारती  
शब्द ।

चन्द्रना० अ० कि० मिलजाना, मित्रजाना,  
सन्ना विपन्नजाना, समिजाना ।

चपयाना० स० कि० मिलाना, बैंगना, चिप  
यना ।

चपयना० अ० कि० चपया होना, लपयना ।

चपटा० शु० बैठवा, लपग ।

चपयाना० स० कि० बैंगना, मिलाना ।

चपटी० ना० स्त्री० दो रिखा परस्पर प्रसंगिन,  
मिलाहुई वस्तु ।

चपचपडु० ना० पु० ताप समय सुस्त में का  
शब्द ।

चपडा० अ० पु० शास्त्रविशय ।

चपडाऊ० शु० निर्लम्ब, टीठ, ना० पु० झूठे  
पक्षि दुव ।

चपडान० स० कि० ताप करना, टीठकरना ।

चपना० अ० कि० लजित होना, शोधित  
होना, मसतजाना, दबजाना ।

चपनी० ना० स्त्री० टकना, टपा, धागा ।

चपरास० ना० स्त्री० पैदल क लिय स्वामीका  
शिर ।

चपरासी० ना० पु० चपरास बाधोहारा,  
दूत ।

चपल० शु० चचल, उज्वल, सुदर, ना० पु०  
पारा ।

चपला० ना० स्त्री० शोध, विमली ।

चपाती० ना० स्त्री० पुलका, यह शब्द का  
रसा है ।

चपाना० अ० कि० धारना, लजित करण ।

चपेट० ना० स्त्री० } धपा, धपक, धारतेसे जो  
चपेटा० ना० पु० } विपत्ति आनाव ।

चप्पा० शु० चारि श्रेणुली का प्रमाण ।

चप्पी० ना० स्त्री० देहना दबना वा मलना ।

चपार० ना० स्त्री० कुचलार्ग, चर्वण, शु० निदक,  
दूध, झीक, नकली ।

चपाड० ना० पु० बतवहाड, बहापुनी ।

चपाना० स० कि० कुचिलना, चानना ।

चपाधिन० ना० स्त्री० निन्दापुत्र, निदक ।

चपिड० ना० स्त्री० चाव शोध ।

चचेना० ना० पु० } धूनाहुआ अन्न ।  
 चचेनी० ना० स्त्री० }  
 चच्य० } ना० स्त्री० चार, आरथ ।  
 चच्यन० }  
 चमक० ना० पु० उक ।  
 चमक० ना० स्त्री० चक्क, भलक, भङ्क ।  
 चमकता० शु० उजागर, उजला ।  
 चमकना० अ० कि० भलकना, लारना, भाग्य  
 उदयहोना, कोधितहोना ।  
 चमकाना० स० कि० भलकाना, लुगना, धुमा  
 ना, नचाना, फलाना ।  
 चमकाव० ना० पु० } चमक, भङ्क ।  
 चमकाहट० ना० स्त्री० }  
 चमकीला० शु० चमकन द्वारा, चमकदार ।  
 चमकीना० ना० पु० चमकाने वाला ।  
 चमगाधर० ना० पु० }  
 चमगोदर० ना० पु० } राति वा उड़नेवाला  
 चमगुदरी० ना० स्त्री० } पक्षी दिवाध जो वृक्षा  
 चमगुदरी० ना० स्त्री० } में उलटा टंगता है ।  
 चमगोदर० ना० पु० }  
 चमगोदरी० ना० स्त्री० }  
 चमचमात० ना० पु० चमकित ।  
 चमचमाना० अ० कि० चमकना, झुनझुनाना ।  
 चमचमाहट० ना० स्त्री० चमकाहट ।  
 चमहा० ना० पु० चर्म, ताल ।  
 चमत्कार० ना० पु० अचम्भा, भङ्क, बङ्गी,  
 ऐश्वर्य ।  
 चमत्कारी० शु० भङ्कीला, चाम्पराजी ।  
 चमर० ना० पु० चवर, धरति गायत्री वृक्ष ।  
 चमरर० ना० स्त्री० चमारपन, चमार की चर्म ।  
 चमरी० ना० स्त्री० धरति ।  
 चमार० ना० पु० चर्मकार, नीचगानि निरोध ।  
 चमारिन् } ना० स्त्री० चमार की स्त्री ।  
 चमारी० }

चमू० ना० स्त्री० सैन्य, कौज ।  
 चमूप० }  
 चमूपति० } ना० पु० सेनापति, सिपहदर ।  
 चमूपाल० }  
 चमेटा० ना० पु० चवेगक  
 चमोटा० ना० पु० } लमका जिसपर नारें हुरा  
 चमोटी० ना० स्त्री० } किराते हैं ।  
 चम्पई० शु० नारजी रग ।  
 चम्पक० ना० पु० वृक्षरिषेय जिसका पूरा पाला  
 सुगन्धित होता है ।  
 चम्पत० ना० पु० भागना ।  
 चम्पतहोना० अ० कि० भागना, छुपना ।  
 चम्पा० ना० पु० चम्पक ।  
 चम्पावली० ना० स्त्री० चम्पाकी वली क समान  
 गहा पिंगेय गले में पहिनते हैं ।  
 चम्बू० ना० पु० जलपान निराप जिसस देवता  
 को जल चढ़ाते हैं ।  
 चम्बेली० ना० स्त्री० वृक्ष वा उतरा फूल ।  
 चय० ना० पु० समूह, ढेर, अश ।  
 चयन० ना० पु० आनंद, सुराल, धेम ।  
 चर० ना० पु० चारा, बाह, दूत, शु० जिस की  
 चलने की राति हा, या जो चलने व उठन के  
 योग्य हो यथा तर गिरि पशु पक्षी आदि, चारा ।  
 चरक० ना० पु० वैद्य त्रिया का प्रथ निरोध  
 वाद ।  
 चरकटा० ना० पु० चारा चानेवाला ।  
 चरका० ना० पु० श्वेतवृक्ष निराप, सरेद कोड़ ।  
 चरकी० शु० बोदी ।  
 चरचना० स० कि० दह में चन्दन लाना,  
 चर्वना ।  
 चरचर० ना० पु० पाव, बह ।  
 चरचराना० अ० कि० चरकना, मरमराना ।  
 चरचेला० शु० बधी, बकनादी ।  
 चरण० ना० पु० पाव, श्लोक प्राक्ता एकद्व

चरणपीठ० ना० पु० मङ्गाड ।  
 चरणामृत० } ना० पु० मूल, त्रिमये देवता  
 चरणोदक० } वा शुक्र वा मातृणादिके पात्र  
 धोयेगये हैं ।  
 चरती० शु० जा व्रत, नदी सरता, व्रती नहीं ।  
 चरन० ना० पु० चरण ।  
 चरना० श्र० क्रि० सुर्गना, निरना ।  
 चरनी० ना० स्त्री० थान वा कठरा निम में बैल  
 भूसा खाते हैं ।  
 चरन्ती० ना० स्त्री० चौधरी ।  
 चरपरा० शु० तीना, महुआ, तादण, पुर्नीता ।  
 चरपराना० श्र० क्रि० परपरागा ।  
 चरपराहट० ना० स्त्री० परपराहट ।  
 चरपरिया० शु० मनचला, सुषट् ।  
 चमर० शु० पिछला ।  
 चरवाई० ना० स्त्री० चराई ।  
 चरवाहा० ना० स्त्री० रखवारा, चरानेहारा ।  
 चरस० ना० पु० मादक वस्तु, मोठ, पुरषट् ।  
 चरसा० ना० पु० अयोही, खाल ।  
 चराई० ना० स्त्री० चराने के दाम, चराने का  
 वाम ।  
 चराक० शु० चरनेहारा, पशु ।  
 चराचर० ना० पु० चल अचल सजीव निर्जीव  
 जन्तु ।  
 चरान० ना० पु० तराई ।  
 चराना० स० क्रि० सुगाना ।  
 चराव० ना० पु० खेत वा धरती जा चरने के  
 योग्य ।  
 चरावना० स० क्रि० चराना ।  
 चरित० ना० पु० चरिय ।  
 चरितार्थ० ना० पु० कृतार्थ ।  
 चरित्र० ना० पु० स्वभाव, शील, वृत्तात् ।  
 चरुभा० ना० पु० भादा ।  
 चर्चक० शु० चर्चा करनेहारा, वादी ।  
 चर्चना० स० क्रि० विचारना, समझना, पूजना,  
 पहिचानना ।

चर्चरो० ना० स्त्री० छद्दविशेष, वडी, बिकी ।  
 चर्चा० ना० स्त्री० पस्ताव, बतकहाव ।  
 चर्चित० शु० लगया हुआ, कहा हुआ ।  
 चर्म० ना० पु० चमड़ा ।  
 चर्मकार० ना० पु० चमार ।  
 चर्मपात्र० ना० पु० चमड़ा का डोल, मरोती ।  
 चर्मयत्र० ना० पु० चमड़ा वा वस्त्र अर्थात्  
 थोड़ा ।  
 चर्या० ना० स्त्री० तपस्या करने में धुनि अ-  
 थवा रहनी ।  
 चर्वण० ना० पु० दौड़ों से पीमना, चर्चना ।  
 चर्स० ना० पु० चरमा ।  
 चल० शु० जो स्थिर न हो ।  
 चलत० शु० चलनी ।  
 चलदल० ना पु० पीपल ।  
 चलन० ना० पु० चालि, व्यवहार ।  
 चलमता० ना० स्त्री० विचनहार, खपती ।  
 चलना० श्र० क्रि० जाना, विदाहोना, चहना ।  
 चलनी० ना० स्त्री० हानी, शु० चलती ।  
 चलधिचल० ना० पु० चूक, भूल, भ्रम ।  
 चलधिघरा० शु० अहियल, मचला ।  
 चलयौवन० ना० पु० चलायमान यौवन ।  
 चलसुगन्धा० ना० स्त्री० शोचर लोन ।  
 चलाचल० ना० पु० } दोहे धूप ।  
 चलाचली० ना० स्त्री० }  
 चलान० ना० स्त्री० भेनाव ।  
 चलाना० स० क्रि० दोहाना, भगाना, खोहना,  
 बदाना, अग्यास डालना, सिललाना ।  
 चलायमान० शु० जो स्थिर न हो, लोल ।  
 चलाय० ना० पु० चलन ।  
 चलित० शु० जो चलता है ।  
 चलिनी० शु० खिलाही, चपल ।  
 चलू० ना० पु० आचमन ।  
 चप० ना० पु० जेप, थालि  
 चपक० ना० पु० पियाला, जिसमें जस्तादि  
 पीते हैं ।

चसक० ना० स्त्री० पीडा, टीस ।  
 चसकना० अ० क्रि० टीसना, गड़ना ।  
 चसका० ना० पु० लालसा, प्रेम, चाट ।  
 चसना० अ० क्रि० मसकना, चसकना, मसना ।  
 चहकना० अ० क्रि० चहचहाना ।  
 चहकार० ना० स्त्री० चहचहाहट ।  
 चहकारना० अ० क्रि० चहचहाना ।  
 चहचहाना० अ० क्रि० पहिया वा चोलना ।  
 चहचहाहट० ना० स्त्री० पहियों का शब्द ।  
 चहटी० ना० स्त्री० दो नखा से दबाना अर्थात्  
 चुकी बान्ना ।  
 चहला० ना० पु० धीचढ़ ।  
 चाहिये० अव्य० चाहिये ।  
 चाहु० गु० चारि, अत्र्य० चाहा ।  
 चाह्या० ना० पु० चारोंधोर ।  
 चाहुक० } गु० चाराधोर लग भग ।  
 चाहुदश० }  
 चाहुयुग० ना० पु० चारोंयुग ।  
 चक्षु० ना० पु० नेत्र, आसि ।  
 चक्षु श्रवा० ना० पु० साप, नाग  
 चक्षुय० ना० पु० भवविशेष ।  
 चा० ना० स्त्री० पोषाविशेष ।  
 चाउ० ना० पु० आा द, मंगल मुशु ।  
 चाऊ० गु० आाद म लाभयुत ।  
 चांड० ना० स्त्री० टर, धम्भ ।  
 चांद० ना० पु० चंद्रमा ।  
 चांदनी० ना० पु० उजाला, याति ।  
 चांदना० ना० स्त्री० चांदनी याति, सफेद  
 विर्णना ।  
 चांदनीचौक० ना० पु० चौका मारे ।  
 चांदा० ना० पु० विहरी, पत्नी, चडा ।  
 चांदी० ना० स्त्री० रूपा, रजत ।  
 चांप० ना० स्त्री० चट्ट की फल, काट ।  
 चापना० अ० क्रि० ठासा, जोसा ।  
 चाक० } ना० पु० चक्र निरंतर कृष्ण रंग  
 चाका० } बनाता है, पहिया ।

चाकी० ना० स्त्री० चकी ।  
 चाखना० अ० क्रि० खादलेना मसालेना ।  
 चाचा० ना० पु० पिताकाभाई, चाचा ।  
 चाची० ना० स्त्री० चाचा की स्त्री ।  
 चाञ्चल्य० ना० पु० श्रद्धिघरता ।  
 चाट० ना० स्त्री० चसका, साखच, पदार्थ ।  
 चाटक० ना० पु० भंगर विद्या, तिलस, इन्द्र-  
 जाली ।  
 चाटकी० गु० चाटक जाननेहार ।  
 चाटना० अ० क्रि० जीमसे रसगोचना, चमड  
 चमड करना ।  
 चाटी० ना० स्त्री० मथनिया ।  
 चाणक० ना० पु० वीरता, भङ्गना, प्राधकारक  
 वार्ता ।  
 चाणक्य० ना० पु० राजविशेष का मंत्री  
 नीतिप्रिय ।  
 चाण्ड० } ना० पु० राजाकसक मल ।  
 चाणूर० }  
 चाण्डाल० गु० निर्दयी, अभिनाचजानि ।  
 चाण्डूल० } ना० पु० पत्नी विशप ।  
 चाण्डोल० }  
 चातक० ना० पु० पपाडा पत्नी ।  
 चातर० ना० पु० महानाल ।  
 चातुर० पु० चतुर, चारि, प्रडिमान् ।  
 चातुरी० ना० स्त्री० मूर्तना, चालारी, वाडे  
 मानी ।  
 चातुर्य० ना० पु० चतुरा ।  
 चातुर्यदेश० ना० पु० देश, जहा चातुर्य  
 भावण, वनिय, वैश्य, ब्राह्मण रहते हैं ।  
 चातुक० ना० पु० पपीटा ।  
 चाण्डमास० ना० पु० कृष्णपक्ष प्रतिपदा से  
 पूर्वमासार्थत ।  
 चाण्ड्रापण० ना० पु० अत निमम भोजन प्र  
 त्तिदिन एकप्राम घडति है यथा चन्द्रमा प्रतिदिन  
 घटा है ।  
 चाप० ना० धनुस्, कमात, आवीति ।

चापकर्ण० ना० पु० रात, पनच कमान की ।  
 चापन० ना० पु० दावन, रामायण यथा—  
 ( शनिवर शयन काह तब जाई, लो चरण  
 चापन दोउ भाई ) ।  
 चापक्षेत्र० ना० पु० धनुषाकार क्षेपण ।  
 चाप्य० ना० पु० कूट ।  
 चाग्रना० स० कि० दांतसे कुचलना, कुचलना ।  
 चाघी० ना० रमा० कुन ।  
 चाम० ना० पु० चम ।  
 चामर० ना० पु० चमर, छन्दविशेष ।  
 चामोकर० ना० पु० छवण, साना ।  
 चामुण्डा० ना० स्त्री० योनिनीन्द, दवा विराय ।  
 चाम्पेय० ना० पु० चम्पक ।  
 चाय० ना० पु० चाप, हर्ष, स्ताद ।  
 चार० शु० गिती ४ ना० पु० दूत, पदाति ।  
 चारिखानि० ग० स्त्री० स्वेदनादि ।  
 चारण० { ग० पु० चरवैया भू, भाट,  
 चारन० } प्रत्य ।  
 चारा० ना० पु० पारगति, पशुभोजन, चारसी  
 राद है ।  
 चारी० शु० चलनेवाला ना० स्त्री० शपली,  
 चर, चारे ।  
 चारु० शु० सुदर, शब्दा, ना० पु० पदमाक ।  
 चारुपर्णी० ना० स्त्री० मधुसूतार ।  
 चारुफल० ना० पु० अणूर, दात ।  
 चारुवाङ्म० शु० वदवाद्य, तास्त्रिक विशेष ।  
 चाल० ना० स्त्री० गति, चलना, रीति ।  
 चालाग० स० कि० मझना, आला करना ।  
 चालनी० ग० स्त्री० आटा छनना का पात्र ।  
 चाला० ना० पु० गीता, छय, सायन ।  
 चाली० ना० पु० भित्तकारी, हालाचार ।  
 चाव० ग० पु० चाव, चारिधगुल की भाग  
 ३ स विशेष ।  
 चावल० ना० पु० दण्डल, निरज ।  
 चाप० ग० पु० नीलकण्ठ पर्या, लक्ष्मणवा, यथा  
 । लक्ष्मणसे एक स्तादय चार किंवादि

दि इत्यमर ) रामायणे ( चारा चाप चाग  
 दिशि लेई, मना सजल मगल कहि देई ) ।  
 चास० ना० स्त्री० हलचलाना ।  
 चासना० स० कि० हलचलाना ।  
 चासा० ना० स्त्री० हलवाहा ।  
 चाह० ना० स्त्री० इच्छा, प्रेम, रीम्, छोह ।  
 चाहक० ना० पु० स्त्री० छाही, हितकारी ।  
 चाहत० ना० स्त्री० चाह ।  
 चाहना० स० कि० प्रेम करना, इच्छा करना,  
 प्रार्थना करना, मागना ।  
 चाहिये० अय० अर्थश्रय ।  
 चाहिदा० शु० प्यारा, मन भाषित ।  
 चाहिती० ना० स्त्री० प्यारी ।  
 चाहो० अय० अर्थवा ।  
 चिक० ग० स्त्री० पाडागिराण, परदह ।  
 चिकटा० ना० पु० टसर का कपडा विशेष ।  
 चिकटा० शु० चिक ।  
 चिकना० ना० पु० तेल का घृत शु० उनली  
 सुदर, निलहा, अमिर्तद्रिय, चकला, श्री  
 चिकनिया ।  
 चिकनाई० [० स्था० धिनी, भा० वा० चकलाइ  
 शोप, नलक ।  
 चिकनीना० स० कि० उन्वल करना  
 शोपना ।  
 चिकनाहट० ना० स्त्री० उन्वलता, श्री  
 सुदगता ।  
 चिन्चा० ना० पु० जाति निराण जा मा  
 चत्ता है ।  
 चिकार० ना० पु० शार, चिराहट, बेंचें ।  
 चिकारना० अ० कि० बेंचें करना, नाकादन  
 शार करना, चिल्लाना ।  
 चिकारा० ग० पु० मृग विराय, छोरी सायन  
 चिकित्सक० ग० पु० चिक, तनीव ।  
 चिकित्सा० ना० स्त्री० बेदई निवाचन ।  
 चिकुर० ग० पु० बाल, क्य ।  
 चिकोरना० स० कि० चिन्होरना, शोचियाना



चिकोरा० शु० तरल, चचल ।  
 चिक० ना० स्त्री० क्वरी, अना, काव्ये यथा  
 ( पाही खेती चिक धा घर विटियन बंदवारि,  
 येते पर जो नहि नरो जाइ करै अथवारि ) ।  
 चिकट० गु० चिकटा, मलिन ।  
 चिकण० शु० चिकना ।  
 चिकहा० ना० पु० चिकरा, पुञ्जरसाव ।  
 चिकार० ना० पु० शोर, चिल्लाहट ।  
 चिंगडा० ना० पु० } भौंगा ।  
 चिंगडी० ना० स्त्री० }  
 चिंगनी० ना० स्त्री० } मुरगी का बच्चा ।  
 चिंगा० ना० पु० }  
 चिघाड० ना० स्त्री० किलकार, वृक ।  
 चिघाडना० अ० कि० किलकारना ।  
 चिघाडा० ना० पु० चिघाड ।  
 चिचडी० ना० स्त्री० किलनी ।  
 चिचिआना० अ० कि० चिल्लाना, मिमियाग ।  
 चिआ० ना० स्त्री० प्रमिलावृत्त ।  
 चिट० ना० स्त्री० खीर, धनी ।  
 चिटकारा० ना० पु० छीटा, चिट ।  
 चिट्टा० शु० गोरा, सपेद, ना० पु० एक रुपया ।  
 चिट्टा० ना० पु० दिन दिनका लेला वा कमाई वा  
 रोजनामा ।  
 चिट्टी० ना० स्त्री० पत्र, पाती ।  
 चिड० ना० स्त्री० भ्लानि, खिजाण्ट ।  
 चिडचिडा० शु० छुसाहा, मन्मन्ना, ना० पु०  
 पोधाविशेष ।  
 चिडना० अ० कि० भुँकलाना, खिजना, चि  
 याग ।  
 चिडपडा० शु० चरपरा, तीता, ताश्क, कडुआ ।  
 चिडा० ना० पु० कटुक ।  
 चिडाना० स० कि० खिजाना, खजाना, छे  
 डना ।  
 चिडिया० ना० स्त्री० गौरिया, पडा ।  
 चिडीमार० ना० पु० नडिया, बरिफ ।

चिरिड० ना० स्त्री० नृत्य विशेष ।  
 चित० ना० पु० चित्त, चैतय, शु० स्यालेटना  
 चितकधरा० शु० चितला, क्वरा, प्रबलक ।  
 चितना० अ० कि० रगा जाना ।  
 चितला० शु० क्वरा, चैतक्वरा ।  
 चितवन० ना० स्त्री० दृष्टि, दीटि ।  
 चितवना० अ० भि० देखना ।  
 चितहट० ना० स्त्री० लीं, चित हट जाग ।  
 चिता० } ना० स्त्री० सरा, मृत्यु के दाह  
 चिताखा० } देने का स्थान ।  
 चिताना० स० भि० जताना, मुचेत कराना ।  
 चिताभस्म० ना० स्त्री० चिता की राख ।  
 चितावना० स० भि० जताना, सचेत करना ।  
 चितावनी० ना० स्त्री० जतानी, चिह ।  
 चितेरा० ना० पु० चित्रकार, मुसन्निर ।  
 चितौना० स० कि० देखना, निखोचना ।  
 चित्त० ना० पु० मन, हृदय, छवि ।  
 चित्ता० ना० पु० शोध, पानविशेष ।  
 चित्ती० ना० स्त्री० चिट, लहहन, सर्पविशेष,  
 कोड़ी जो रगड़ के चिटनी होत ।  
 चित्र० ना० पु० मर्दि, रूप, आदि, चित्र, दौनों  
 अरएड, शुक्र, अर पही ।  
 चित्रक० ना० पु० चीना, पट्ट चित्रकारी ।  
 चित्रकन्दक० ना० पु० निर्मिकन्द ।  
 चित्रदार० ना० पु० मुसन्निर, चितेरा ।  
 चित्रकारी० ना० स्त्री० चित्रकार का काम, मुस  
 न्निरी ।  
 चित्रकाय० ना० पु० चय, शैर, गुलबपा ।  
 चित्रकूट० ना० पु० पर्वत विशेष ।  
 चित्रकेतु० ना० पु० रागा विशेष ।  
 चित्रगुण० ना० पु० यमराज भेद, यम के यहा  
 उरे भलेका लेलक ।  
 चित्रदेवी० ना० स्त्री० इन्द्राया ।  
 चित्रपत्त० ना० पु० तीतर पत्ती ।  
 चित्रमानु० ना० पु० मृत्यु, अग्नि  
 चित्रभयज्ञ० ना० पु० इन्द्रपति ।

चित्रविचित्र० गु० अनेक रंग का है ।

चित्रशाला० } ना० स्त्री० जिस स्थान में  
चित्रसारी० } बहुत चित्र हावें, नगाइछाना,  
नकारछाना ।

चित्रा० ना० स्त्री० अँदहवा नखन, इन्द्रवाग्णी ।

चित्रांगद० ना० पु० राजा विशय ।

चित्राफल० ग० पु० इन्द्रवाग्णी ।

चित्रित० गु० चित्रयुक्त, चित्र विषययुक्त ।

चित्रिणी० ना० स्त्री० चित्रविचित्र, भगवती  
का नाम है ।

चित्रो० ना० स्त्री० चित्रसारी ग० पु० चातापयु ।

चिथड़ा० ना० पु० गुदर, लता ।

चिथडिया० ग० गुदरिया ।

चिथाड़० ग० पु० फाड़ चार, तथाड़ ।

चिथाड़ना० स० क्रि० पानना, चारना,  
लथाड़ना ।

चिदाकाश० ना० पु० परमामा चेतन्य या  
कारा म ।

चिनग० ना० स्त्री० मृत्तन म जलन पड़ना ।

चिनगाना० अ० क्रि० दासना, चिल्लाना ।

चिनगारी० } ना० स्त्री० लूना, आगि का  
चिनगी० } क्षय सा पूल ।

चिनचिनाना० अ० क्रि० चिहाना, गारकरना ।

चिन्त० ना० स्त्री० चिन्ता ।

चिन्तन० ना० पु० अभ्यास, चिन्तवन ।

चिन्तना० अ० क्रि० अभ्यास करना ।

चिन्ता० ना० स्त्री० शोच, धर, जोखिम, स दह,  
भाइना ।

चिन्ताना० स० क्रि० अभ्यास करना ।

चिन्तामणि० ना० स्त्री० मणि विशय ।

चिन्तित० गु० शाचा, भागिन, विचारित ।

चिह्न० ना० पु० लक्षण पहिचान ।

चिह्नार० ना० पु० } चा हा, पहिचान ।  
चिह्नारी० ना० स्त्री० }

चिह्नित० गु० जो पहिचान गया, चिह्नयुक्त ।

चिपकना० अ० क्रि० लगना, लगना ।

चिपकाना० स० क्रि० लगाना लगना चिपकना ।

चिपचिपा० गु० लसलसा, लिजलिना ।

चिपचिपाना० अ० क्रि० लसलसाना ।

चिपटना० अ० क्रि० चिपना, लिपटना ।

चिपटा० गु० लगाहूआ, चिपचिपा ।

चिपटाना० स० क्रि० चपकना, चिप्या लगाना,  
लपकना ।

चिपड़ी० ना० स्त्री० मोहरा ।

चिपक० गु० लिपकाना, ना० पु० पर्चावि  
शय ।

चिप्या० ना० पु० चीप ।

चिप्या० ना० स्त्री० जेहा कागज आदि पत्र  
होता है वहा लगाई जाता है, छापी चीप ।

चिबुक० ना० स्त्री० ठाड़ी ।

चिमटना० अ० क्रि० चिपकना, लपकना ।

चिमटा० ना० पु० स्यूना, लाहे की वस्तु जो  
छापर और लाहार आदि रखते हैं ।

चिमटाना० स० क्रि० चिपकना ।

चिमटा० } गु० लचीला वडा ।  
चिमड़ा० }

चिमड़ा० ग० स्त्री० चिहान, एड ।

चिमड़ा० स० क्रि० वडा करना, अ० क्रि०  
कडाहोना, पेटजाना ।

चिमड़ाहट० ना० स्त्री० चिमड़ा, पटाई ।

चिमड़ी० ना० स्त्री० चिमटा ।

चिमसा० ना० पु० सरेस पानी का ।

चिर० अ० नहुत, नष्ट काल ।

चिरजी० } ना० पु० आर्यावाद विशय अ  
चिरजीव० } भाँत नहुन जीवन हाव ।

चिरजीवी० गु० नहुतदिगी, ना० पु० कीआ ।

चिरकार्ण० अ० क्रि० नित्य, सदा ।

चिरकुट० ना० पु० चिर ।

चिरकुटिया० गु० गुदरिया ।

चिरचिरा० ना० पु० शीप व पीपाविशय ।

चिरचिराना० अ० क्रि० चरचराना ।

चिरचिराहट० ग० स्त्री० भूलभुलाना ।

चिरना० अ० कि० कर्ना ।  
 चिरन्तन० गु० पुराना, प्राचीन ।  
 चिरयाना० स० कि० फड़वाना, चिराना ।  
 चिरांद० ना० स्त्री० जलतद्रुय चमक की कुशा  
 सना ।  
 चिराना० स० अ० फड़वाना ।  
 चिरायु० गु० बहुत जीवन ।  
 चिर० गु० बहुत ।  
 चिरकाल० गु० बहुत दिन, चिरकाल ।  
 चिरकालीन० गु० बहुतदिनी ।  
 चिरौजी० ना० स्त्री० शुष्ककल त्वराव ।  
 चिरौरी० ना० स्त्री० इनता, खुशामद ।  
 चिलक० ना० स्त्री० चमक, मडक, दद ।  
 चिलकना० अ० अ० चमकना, झलकना और  
 फाड़ा आदिका चिराना ।  
 चिलचिम० ना० पु० मकला ।  
 चिलचिलाना० अ० कि० चीलना, निवाड़ना ।  
 चिलम० ना० स्त्री० तमाकू आग भरन का  
 पात्र ।  
 चिलमची० ना० स्त्री० पात्र त्वराव जिस म सुह  
 हाय धाने का पानी रहता है, चिलम के नाच  
 रत्नका वस्तु ।  
 चिलचन० ना० स्त्री० चिक, कभरा ।  
 चिलचल० ना० पु० वृत्तावराव ।  
 चिल्लड० ना० पु० चालड, चिलुआ ।  
 चिल्लाना० अ० कि० पुकारना, चिंघाड़ना ।  
 चिल्लाहट० ना० स्त्री० पुकार, चिंघार ।  
 चिल्ली० ना० स्त्री० भोजनविशेष जा थण्डे से  
 बनात है, उल्लू ।  
 चिहटना० अ० अ० चिपटना, लगना ।  
 चिहुर० ना० पु० बाल, फेश ।  
 चींटी० ना० स्त्री० चाबगी, कागविशेष ।  
 चीक० ना० स्त्री० चीच ।  
 चीखुर० ना० पु० शिलहरी ।  
 चीतना० स० कि० चाहना ।

चीतल० ना० पु० जगला जतुविशेष, गु०  
 चित्तना ।  
 चीता० ना० पु० तेंदुआ, व्याघ्र, चाह, बद्धि ।  
 चीधना० स० कि० चिधाड़ना, फाड़ना ।  
 चीन० ना० पु० दश विशेष जा उत्तर पूर्व में है ।  
 चीनी० ना० स्त्री० खाड़पुराव गु० चानदरा ।  
 चीनीय० गु० चीनक मन्त्र्यादि ।  
 चीन्ह० ना० स्त्री० पहिचान, चिह्न ।  
 चीन्हना० स० कि० पहिचानना ।  
 चीन्हा० ना० पु० पहिचान, चिह्नार ।  
 चीर० ना० स्त्री० पकड़ा टकड़ा सारा, सार,  
 आदना ।  
 चीरना० स० अ० फाड़ना ।  
 चीरम० ना० स्त्री० चिरीया ।  
 चीरा० ना० पु० काड़, पात्र सुगंधपत्र, पगड़ी ।  
 चीरी० ना० स्त्री० भागुर ।  
 चील० ना० स्त्री० चालड, पत्ता जिसका मका  
 पर बैठक चिल्लाता अशुभ है ।  
 चीलड० }  
 चीलर० } ना० पु० टाल, बड़ाठुआ, चीन्ह ।  
 चीलहर० }  
 चुआन० ना० स्त्री० जल के निकलनकी भूमि ।  
 चुआना० स० कि० टपकना कूप में जल  
 निकालना ।  
 चुकती० ना० स्त्री० निपगता ।  
 चुकना० अ० कि० समाप्तहोना, निपगना,  
 टहरना ।  
 चुकाई० ना० स्त्री० चुकीना ।  
 चुकाना० स० कि० निपगना, टहराव ।  
 चुकौता० ना० पु० निपगता, टहराव ।  
 चुकिका० ना० स्त्री० अदिलीहल ।  
 चुगना० अ० कि० टाना, चुगना ।  
 चुगी० ना० स्त्री० अन्नका कर, महसुल ।  
 चुचकारना० स० कि० चंचलाकरना और  
 चुमकारना ।  
 चुचकारी० ना० स्त्री० चुमकारी ।

चुञ्च० ना० पु० सुानावशाप ।  
 चुञ्चक० ना० स्त्री० भेंडी चुचरु, ऊषापूरातनिषट् ।  
 चुञ्चड० ना० पु० चूचा, बर्फी चूची ।  
 चुटकी० ना० स्त्री० नीच, चुपटी, मुट्टीभर यम,  
 पावना अगुलाका बहना ।  
 चुटकुला० ना० पु० टटाली मन्नारु ।  
 चुटला० ना० स्त्री० चर्गी ।  
 चुटाना० } स० कि० धावकरना दूध पिछाग  
 चुटालना० } गाय त्रादिश ।  
 चुटवना० }  
 चुडवा० ना० पु० चूडा जो धान कृत्रे बनाते हैं ।  
 चुडेल० } ना० स्त्री० प्रेतिनी पू  
 चुडेलिया० } इड ।  
 चुनत० } ना० स्त्री० परत, तह ताड़ ।  
 चुनन० }  
 चुनगा० स० कि० कपडोंरा ताड़वा वा शकटा  
 करना, छाटना, टूटना बानना ।  
 चुनरी० ना० स्त्री० लालगोहूई आदनी ।  
 चुनयाना० } स० कि० दुगाना, विनवाना, छट  
 चुनाना० } याना कपड़का तह लगवाना ।  
 चुनावर० ना० स्त्री० चुनत ।  
 चुनी० ना० स्त्री० चूनी ।  
 चुनौटा० ना० पु० } पान जिसम पान तगवा  
 चुनौटी० ना० स्त्री० } खनिक लिय चूनासतव है  
 युद्धमें र बम्बे धादसना, प्रोनम से बलवानों  
 को धावा क लिये छटना, जेटमुनी एकादरी को  
 पैरके पारजाग जा करारीभीमें प्रचलितरीति है ।  
 चुनौटिया० य० पश्चिम में बैंगीरग को कहते हैं ।  
 चुनौती ना० स्त्री० तलाक शान बदनी बात  
 गिरानी, चिहारी, स्मारकवस्तु ।  
 चुन्धला० गु० याम, नयनरोपी ।  
 चुन्धलाना० य० कि० स्थापहोना ।  
 चुन्धा० य० यौधा, चिमधा ।  
 चुन्धा० स० कि० चुनना ।  
 चुन्धी० ना० स्त्री० षोटायाखिड ।

चुप० }  
 चुपका० } गु० मीनी, अवाल ।  
 चुपचाप० }  
 चुपचुपाना० य० कि० चुपचाप रहना ।  
 चुपहना० स० कि० चिकाना, मलगा ।  
 चुपही० गु० चिकना, चिकना ।  
 चुप्प० ना० पु० }  
 चुप्पी० ना० स्त्री० } मीनता खामशा ।  
 चुप्पा० य० मीन, चुपका, अवाल ।  
 चुमकी० ना० स्त्री० इवरी, गोतामारना ।  
 चुमना० य० कि० गड़ना, इसना, विधाग,  
 खिदना, पैना ।  
 चुमाना० स० कि० पुतेडा लदगा, पैना ।  
 चुमाना० स० कि० चूमदेना वा दिलवाना ।  
 चुम्कार० ना० पु० }  
 चुम्कारी० ना० स्त्री० } चुमकारी ।  
 चुम्भारना० स० कि० चुम्भारना ।  
 चुम्बक० ना० पु० लार् वा आकर्षक पथर ।  
 चुम्बन० ना० पु० चूमा राहवरा हार अग  
 में चाह परा करना ।  
 चुम्कट० ना० पु० चुम्की पूष ।  
 चुम्गना० य० कि० चूच कराना ।  
 चुम्राना० स० कि० चारा करना ।  
 चुम्गन्ध० य० कि० चूका बड़बड़ाना ।  
 चुल० ना० स्त्री० चुल्लान की इच्छा ।  
 चुलचुल० ना० पु० चचलाहट ।  
 चुलचुलाना० स० कि० चुललगा बुदयुगना ।  
 चुलचुली० ना० स्त्री० चचलाहट ।  
 चुलबुला० गु० चचल रंगीला ।  
 चुलबुलाना० य० कि० चचल होना ।  
 चुलबुलाहट० ना० स्त्री० उलबुलान ।  
 चुलबुलिया० पु० चुलबुला ।  
 चुलहाइ० ना० स्त्री० कामातुरी ।  
 चुलहारा० ना० पु० कामातुर ।  
 चुल्लू० ना० पु० एकहाथ वा सगुन, मुट्टीभर ।  
 चुसकर० ना० पु० चिक्कर ।  
 चुसनी० ना० स्त्री० चूचनी ।

चुहचुहा० शु० जो गहिरा रंगागया ।  
 चुहचुहाना० अ० कि० गहिरा रंगाजाना, म  
 चियों का शब्द जा प्रात फाल होता है ।  
 चुहल० ना० स्त्री० चर्चा, चहलचहल ।  
 चुहला० शु० ठटोल, हँसोहा ।  
 चुंगी० ना० स्त्री० चुगी ।  
 चुंची० ना० स्त्री० चुच, भिन्नी, धन ।  
 चुंटा० ना० पु० पृथ्वीमें रहनेवाला ज तु विशेष ।  
 चुंटी० ना० स्त्री० छोटा चूटा या उत्तरी स्त्री ।  
 चुक० ना० स्त्री० भूल, भ्रम, पीडा विशेष शु०  
 खटाविशेष ना० पु० श्रौषध विशेष ।  
 चुकना० अ० कि० भूलना, धोखा देना ।  
 चुका० ना० पु० खटा साग ।  
 चुची० ना० स्त्री० चुची ।  
 चुङ्गा० ना० स्त्री० सोने वा चादी की वस्तु जो  
 पिघवा पहिनी है, ना० पु० कड़ा विशेष जो  
 हाथी के दातों में पहिना है, खट की पट्टी  
 या मिरा वा नोरा ।  
 चुङ्गा० ना० पु० सस्कार की रीति से प्रथम मु  
 खडन, लाल का रूई, ललाट व ऊपर बंधेहुय  
 केश, चर्चण विशेष ।  
 चुङ्गाकरण० } ना० पु० मुखडन ।  
 चुङ्गाकर्म० }  
 चुङ्गामणि० ना० स्त्री० कण्ठ की मणि ।  
 चुङ्गी० ना० स्त्री० भिपोंके हाथमें पहिनीके लिये  
 जो चादा या लाल या काचरी जाती है ।  
 चुत० ना० स्त्री० योनि, आम्र ।  
 चुतटु० ना० पु० नितम्ब, जवारा उपरिभाग, मुहा ।  
 चुतिया० ना० पु० उरलू, प्रहमद ।  
 चुन० ना० पु० धारा, पिसान ।  
 चुना० ना० पु० चूर्ण, या जोषान में लगाने हे,  
 मिट्टी वा पत्थर वा कचर या सीप जली हुई  
 अ० कि० टपकता, रक्षिताना, धनना ।  
 चुनी० ना० स्त्री० दहाह्मा उदहधादि, सुती ।  
 चुनकपत्थर० ना० पु० चुक ।  
 चुमना० अ० कि० रूपावेना, मन्दी लेना ।

चूमा० ना० पु० मीठी, मन्दी ।  
 चूर० ना० स्त्री० चुकनी, चूर्ण ।  
 चूरन० ना० पु० चूर्ण ।  
 चूरना० अ० कि० चूर्ण करना ।  
 चूरा० ना० पु० रेतन, घूसा, चूसा ।  
 चूरी० ना० स्त्री० बहुत धी पड़ीहुई रोटी, चूड़ी ।  
 चूर्ण० ना० पु० रेश, चुनी ।  
 चूल० ना० स्त्री० एक खड्की या सिरा जो दूसरी  
 खड्कीमें डालते हैं, त्रिपाङ्केखूट नीचे ऊपरके ।  
 चूहा० ना० पु० } आग रखने वा रोटी पकाने  
 चूही० ना० स्त्री० } की वस्तु ।  
 चूसना० अ० कि० पीलना, सुङ्गना ।  
 चूहडा० पु० ना० मेहर, भगी ।  
 चूहड़ी० ना० स्त्री० भगिनि ।  
 चूहा० ना० पु० मूरा, मूरा ।  
 चूही० ना० स्त्री० छोटा मूरा, उमकी स्त्री ।  
 चूची० ना० स्त्री० वस्तु जिसमें सुई रखते हैं ।  
 चूचकरना० अ० कि० उडकना ।  
 चूडा० ना० पु० यौरन, छोटा ।  
 चूप० ना० पु० वृक्षना फल वा लता ।  
 चेटक० ना० पु० सेरक, नोर, नगरविद्या ।  
 चेटकी० ना० पु० इन्द्रनाल, ल्याल दिवानेहाला,  
 ना० स्त्री० दासी, सेपकिना ।  
 चेट्री० ना० स्त्री० दासी, सीडी ।  
 चेत० ना० पु० स्मरण, होरा, यद, हृषि ।  
 चेतक० शु० चेत करनेहाला, चेत में हो ।  
 चेतका० ना० स्त्री० सरा, चित्त, रामचन्द्रिका,  
 मनी चेतका में सर्ता सत धरी ।  
 चेतकी० ना० स्त्री० हुई ।  
 चेतना० अ० कि० न्याय करना, ध्यानलगाना,  
 निचालना, हृषि में जाना ना० स्त्री० हुई ।  
 चेटा० शु० चेत करनेहाला ।  
 चेटा० ना० पु० चेटा, चार, सेरक ।  
 चेटाई० ना० स्त्री० दासिनी, सेरक ।  
 चेटाई० ना० स्त्री० चेटा, दासी ।  
 चेटे० ना० पु० चेटाका बहुवाक्य ।

27  
 S.N.

चौरे० ना० पु० चतुर्वेदी, जानिविरोध, मयुरा तीर्थ क पुरोहित ।

चौमासा० ना० पु० बरसात, परदिल ।

चौमुखा० ना० पु० ब्रह्मा, चौमुखा दीवट, चारोंघोर ।

चौमुख्या० ना० पु० अष्टविशेष, चारमुखी दीवट ।

चौमुखी० ना० स्त्री० कदाच का फल ।

चौर० ना० पु० चोर ।

चौरकर्म० ना० पु० चोरी ।

चौरग० ना० पु० दावविरोध, बैलआदि के चारों पाव एक चपे में बाना ।

चौरभय० ना० पु० चोरोंका डर ।

चौरस० गु० समान, एकसा ।

चौरसाना० स० कि० समान करना ।

चौरसाई० ना० स्त्री० साधई, समादा ।

चौरा० ना० पु० चतुरा, चोतरा ।

चौरानये गु० नव्वे थोर चार १४ ।

चौरासी० गु० असी थोर चार ८४ ।

चौरादा० ना० पु० मार्ग चारों थोर जनिना ।

चौरी० ना० पु० चौनार धेईहुँ लास ।

चौलडा० ना० पु० } चरि लडकी माला वा  
चौलडी० ना० स्त्री० } फेई वस्तु ।

चौला० ना० पु० अन्नविरोध ।

चौलाई० ना० स्त्री० रागविरोध ।

चौवा ना० पु० पशु चतुपाद ।

चौवारं० ना० स्त्री० आधी, भकड ।

चौसठ० गु० सठि थोर चार ६० ।

चौसर० ना० पु० चार लडकार, चौपडा ।

चौहट० } ना० पु० चौराहा, चौसरका वा  
चौहडा० } चार ।

चौहसर० गु० सतर थोर चार ७४ ।

चाहान० ना० पु० रजपूत जातिविरोध ।

च्युत० गु० पतित, ऋणित, ब्रह्मा ।

च्युतता० ना० स्त्री० पवन, बदल ।

च्युति० ना० स्त्री० योनि, यदा ।

छुडडा० ना० पु० गाई, शफट ।

छुडडाना० स० कि० चौधियाना, चकराण ।

छुडना० थ० कि० स तुष्ट होना, भरना तुमहोना, दु खित, पाउल ।

छुडवाई० ना० स्त्री० तृप्ति, सन्तुष्टा ।

छुडकाना० स० कि० रातुण करना, तुमहरना, पेटमर भेजा करना ।

छुडकाड० ना० स्त्री० थण्ड, गु० अ दान का पशु आदि ।

छुडक० ना० पु० छ वा समूह, खल विशेष, जाल सहित थिनरा ।

छुडरं० ना० स्त्री० बचरी ।

छुडल० ना० पु० बचरी ।

छुंगुली० ना० स्त्री० कनिष्ठिना, पाचवीं अंगुली ।

छुडुन्दर० } ना० स्त्री० मूरा जो रातिके निक  
छुडुदर० } लन है थार कुवासित होताई ।

छुडु० गु० भाडसरण ।

छुडजा० ना० पु० बरामदह ।

छुडनी० ना० स्त्री० सनी ।

छुडजन० ना० पु० दावविरोध ।

छुडनाना० थ० कि० सत्सार्ग, सरीगदेना, चरपराना ।

छुडना० ना० पु० चलनाविरोध, थ० कि० धना, विच्छुडना, भिन्नभिन्न होना ।

छुडा० ना० स्त्री० उजाला, चमचमाहट, भिजला पीषा गु० उनाहुआ, छाहुआ ।

छुडांक० ना० स्त्री० सेरका सोलहवाभाग ।

छुडाना० स० कि० धनवाना ।

छुडे० ना० पु० उजेल का बहुवाक्य गु० बनेहुये, बुनेहुये अलगमेये ।

छुडु० ना० स्त्री० पधी, छड ।

छुडी० ना० स्त्री० छडुई, पधी, जूनन के पीडे बडे दिनका व्यवहार ।

छुड० ना० स्त्री० पधी, छडी ।

छुडी० ना० स्त्री० छडी ।

छुडु० ना० पु० भालेकी लकड़ी, उडा, डाडी आदि

छर, आंत में सफेद दाग ।  
 छटना० स० कि० चावलों का छटना ।  
 छड़ा० पु० थकेबा ना० पु० बान वा पवि में  
 पहिरने का भूषण ।  
 छड़ाना० स० कि० चावल साफकरना ।  
 छड़िया० ना० पु० द्योड़ीवाल, आसारदार  
 ना० स्त्री० छोटीगली, कोलिया ।  
 छड़ियाना० स० कि० छड़ीसे मारना ।  
 छड़ी० ना० स्त्री० नेत्र, बांतकी सूखी छड़ी,  
 छिड़नी ।  
 छड़ीला० ना० स्त्री० जटोमांसी ।  
 छया० ना० पु० छाया ।  
 छयटना० अ० कि० दुर्बलहोना, न्यून होना ।  
 छयटयाना० स० कि० छिद्र छेदना ।  
 छयटाई० ना० स्त्री० छानने का क्रम ।  
 छयटाव० ना० पु० कर्त, कर्त्तव्य ।  
 छयडना० स० कि० छेदना, टुकना, कटाना ।  
 छयडना० स० कि० छेदना, कटाना ।  
 छयडत० पु० छोटागया ।  
 छयडुआ० ना० पु० छुट शब्द ।  
 छयडौती० ना० स्त्री० छुट, छेदना ।  
 छत० ना० स्त्री० परके ऊपरकी छत का पदम ।  
 छतकुम्भक० ना० स्त्री० छत, छतक, वया  
 करवीरा श्वेतपुष्प, छतक छतकुम्भक इति

छनना० अ० कि० छानना, छिड़ना, मलहोना ।  
 छनारु० न० पु० छन, मदीया नांका छुटने  
 का शब्द ।  
 छनाका० ना० पु० तुलना जयमाना पानी का  
 छारने ।  
 छनिक० ना० पु० छनिक ।  
 छन्द० ना० पु० पद्य, रचना, गीतगादि ।  
 छन्दगति० ना० स्त्री० छन्दों की चाल ।  
 छन्दना० अ० कि० गटना, बगना ।  
 छन्ददन्द० ना० पु० दन्तवत्, छल ।  
 छन्दी० न० स्त्री० कसरी ।  
 छन्ना० न० पु० कदवा दूध आदि धाननेका ।  
 छन्नी० न० स्त्री० छोटा दूध, भूषणविशेष ।  
 छन्नू० न० स्त्री० धाननेवाला ।  
 छप० ना० पु० जलमें वृत्तरेखु गिरनेका शब्द ।  
 छपई० ना० स्त्री० छः पदका छन्द ।  
 छपकली० ना० स्त्री० जन्तुविशेष ।  
 छपकाना० स० कि० पानी जलना ।  
 छपका० ना० स्त्री० जन्तुविशेष ।  
 छपना० अ० कि० धापाहोना, लुकना ।  
 छपरा० ना० पु० छप्पर ।  
 छपरिया० ना० स्त्री० छोटा छप्पर ।  
 छपरी० ना० स्त्री० छपरा ।  
 छपारं० ना० स्त्री० छानने का काम या पीता ।

छमछमाना० अ० कि० चमरना, मालकना, बनना ।  
 छय० ना० पु० छय ।  
 छयरोग० ना० पु० चररा ।  
 छर० ना० स्त्री० जगमासी, गृह, गृह, नन्दी,  
 शिवायी ।  
 छरछोवी० ना० स्त्री० झाड़ निरने का स्था ।  
 छरस० ना० पु० परस ।  
 छरी० ना० स्त्री० लड़ी ।  
 छर्दायन० ना० पु० सींग ।  
 छर्दि० ना० स्त्री० वमन, ओकना ।  
 छर्ना० ना० पु० लार्डिआदिर्वां छागी छागी गोली ।  
 छल० ना० पु० वण, टगार्ड, धारता, धारल, मिषा  
 छलबना० अ० कि० निफलजान, दलकना ।  
 छलकाना० स० कि० गिरादेना ।  
 छलकारी० गु० कर्गी, टग दयावाज ।  
 छलांगना० अ० कि० बुदकना ।  
 छलछिद्र० ना० पु० कण, छल ।  
 छलछिद्री० गु० कपटी, छली ।  
 छलना० स० कि० छलकरना, टगना, भटकना ।  
 छलनी० ना० स्त्री० चलनी ।  
 छलांग० ना० स्त्री० बुदका, फलाग ।  
 छलावा० ना० पु० लूवा, आग रोवानी ।  
 छलिया० } गु० कपटी, टग, प्रपची ।  
 छली० }  
 छल्ला० ना० पु० अगुडी म पहिने का गहना ।  
 छवा० ना० स्त्री० एंडी पारवी ।  
 छवि० ना० स्त्री० शोभा, चमक, सुंदरता ।  
 छविभीर० ना० पु० वान ।  
 छवीला० गु० सुन्दर, शोभायमान ।  
 छवीया० ना० पु० छानेहरा ।  
 छारि० ना० स्त्री० क्षीप ।  
 छां० ना० स्त्री० छाया ।  
 छांट० ना० स्त्री० गूद, माई क्षीलन ।  
 छांटन० ना० स्त्री० टकना, धनी ।  
 छांटन० स० कि० वमन करना, बनना, चलन  
 करना ।

छांड० ना० स्त्री० किनारा, नदी का अगव, नदी  
 का मोना ।  
 छांडना० स० कि० छाड़ना ।  
 छांद ना० स्त्री० पगहा, पैकडा ।  
 छांदना० स० कि० बाधना ।  
 छांदा० ना० पु० मा, नरा, हिस्मह ।  
 छांव० } ना० स्त्री० छाया, परछाई ।  
 छाद० }  
 छांहारा० गु० छायावात ।  
 छाह० ना० स्त्री० कनवा ।  
 छाकना० स० कि० कृपण जल पजाना, पेटम  
 भूजन वा कोई वस्तुखाना ।  
 छाग० ना० स्त्री० बकरा ।  
 छागल० ना० पु० कृपी, बकरी या बकरीकीखान  
 छागी० ना० स्त्री० बकरी ।  
 छागलांगी० ना० स्त्री० विधारा ।  
 छाहू० } ना० पु० मट्टा, मथा रई ।  
 छाही० }  
 छाज० ना० पु० मूर ।  
 छाजना० अ० कि० छाना, फटना, सजना ।  
 छाजित० गु० पाबिन, छामकारी ।  
 छात० ना० स्त्री० छत्र ।  
 छाता० ना० पु० छत्र, छतुरी ।  
 छाती० ना० स्त्री० छागछाना, उर, रूची ।  
 छात्र० ना० पु० विद्यार्थी, शिष्य, चेला ।  
 छादन० ना० पु० कपाम ।  
 छान० ना० स्त्री० ग्नी, टाट, छपर, विचार  
 छानना० स० कि० निर्वोत्तना, स्वच्छ करना  
 हुदना, विचारना ।  
 छानवीन० ना० स्त्री० विचार, जप ।  
 छानवे० गु० नखे और छ १६ ।  
 छानस० ना० पु० चोकर, भूरी, बूरा ।  
 छाना० स० कि० छाजना छायाकरना, पा  
 छपर बनाता, नहरना ।  
 छानी० ना० स्त्री० छपर ।  
 छाप० ना० स्त्री० सुआ, सुहर अथवा चिद



छापना० स० क्रि० छापाकरना, चिद्रदना ।  
 छापा० ना० पु० वेथ्यनोंका तिलक, मुद्रा ।  
 छापाविद्या० ना० स्त्री० जिसके द्वारा अनेक पुस्तक छापी जाती हैं, सब वस्तु जानी जाती हैं ।  
 छाम० गु० दुबला, हलका ।  
 छाया० ना० स्त्री० परछाई, छाह, मिशाच मूत ।  
 छायावन्त० ना० पु० रागिनीविशेष ।  
 छायाधर० ना० पु० वृत्तादि ।  
 छायापाद० ना० पु० छाया के परिमाण से समयका स्थिरकरना ।  
 छार० ना० स्त्री० चार, ढला जो बड़ा है ।  
 छारदुबला० ना० पु० सुगन्धिवस्तु विशेष ।  
 छारी० ना० पु० छारी, श्रीमहादेवनी ।  
 छारू० ना० पु० निनावा ।  
 छाल० ना० स्त्री० बकला, झिलका ।  
 छाला० ना० पु० फटाला, चमड़ा खाल, फुरा ।  
 छालियां० ना० स्त्री० सुपारीविशेष ।  
 छावना० स० क्रि० छाना ।  
 छावनी० ना० स्त्री० पल्लवक रहनेका स्थान, लन छानका काम ।  
 छाह० ना० स्त्री० छाह ।  
 छिदनी० ना० स्त्री० छड़ी, चमची ।  
 छिका० ना० स्त्री० छीक ।  
 छिकिका० ना० स्त्री० नकछिदनी, पोधा ।  
 छिगुनी } ना० स्त्री० कनिष्ठिका, जनशरिया ।  
 छिगुली }  
 छिचटा० ना० पु० धावरा नया चमड़ा ।  
 छिचड़ेला० ना० पु० दुबला, चमचिचड़ ।  
 छिछड़ा० ना० पु० खलरी, छपर ।  
 छिछला० गु० उथला ।  
 छिछलाई० ना० स्त्री० उथलाई ।  
 छिछली० ना० स्त्री० लेखविशेष, भाङ्गीगहरा ।  
 छिछोड़ा० गु० झोला, हलका, नीच ।  
 छिटकना० अ० क्रि० फैलाना, बिथरना ।

छिटकनी० ना० स्त्री० विही जा निवाड़ोंमें लगती है ।  
 छिटकाना० स० क्रि० फैलाना, बिथरना ।  
 छिटकी० ना० स्त्री० छरी, छाट ।  
 छिटकना० स० क्रि० छीटना बिथरना ।  
 छिटकाना० स० क्रि० क्लिप्ताना, सिंचाना ।  
 छिङ्काव० ना० पु० सुँच, सिंचाव ।  
 छिङ्गना० अ० क्रि० चिदना, दुःखा होना ।  
 छिङ्गाना० स० क्रि० चिदना, चिदवाना, डलाना ।  
 छितनिया० } ना० स्त्री० उलिया ।  
 छितनी० }  
 छितरना० अ० क्रि० बिथरना, फलना ।  
 छितराना० स० क्रि० बिथराना, फैलाना ।  
 छिति० } ना० स्त्री० किति, धरती, जमीन ।  
 छिती० }  
 छिदना० अ० क्रि० बिथना, गड़ना, स० क्रि० राकना, रोक्न का काम करना ।  
 छिदनी० ना० स्त्री० छदने की वस्तु ।  
 छिदाना० स० क्रि० छदकराना, राकाना ।  
 छिद्र० ना० पु० छद ।  
 छिन० ना० पु० छण, लहमा ।  
 छिनकना० स० क्रि० नाक स्वच्छकरना ।  
 छिनला० ना० पु० व्यभिचारा, परकीगामी ।  
 छिनवाना० स० क्रि० और किसी से लिचवाना ।  
 छिनल० ना० स्त्री० व्यभिचारिणा, कुलया ।  
 छिनाला० ना० पु० व्यभिचार, कुलटारन ।  
 छिनेक० ना० पु० चणैक ।  
 छिन्न० गु० खण्डित, चाण, दुर्वल ।  
 छिन्नभिन्न० गु० अलग २, तित्तर भित्तर ।  
 छिन्ना० ना० स्त्री० शरत्, महासुईकी ।  
 छिपकली० ना० स्त्री० गृहगायिका, पिकटिकी ।  
 छिपका० ना० पु० छिपकाव ।  
 छिपना० अ० क्रि० लुपना, गुप्तहोना ।  
 छिपा० गु० लुका, गुप्त, अग्रकट ।  
 छिपाना० स० क्रि० गुप्तकरना, लुपाना ।

छिपाव० ना० पु० लुङ्घन उक्ता, गोपन ।  
 छिप्र० ना० स्त्री० शीघ्र, शानता ।  
 छिप्रोद्भवा० ना० स्त्री० गर्भ ।  
 छिमा० ना० स्त्री० क्षमा ।  
 छिमाजेष० पु० क्षमाशय्य ।  
 छियालीस० पु० चर्निम और छ ४६ ।  
 छियासठ० पु० साठ बारें छ ९६ ।  
 छियासी० पु० अस्मी और छ ८९ ।  
 छिलका० ना० पु० बरला, फनादक ऊपरकी  
 लचावराप ।  
 छिलना० अ० कि० रगड़ाना, उधड़ाना ।  
 छिलाना० स० कि० बगाना, रगड़ाना ।  
 छिलैया० ना० पु० दखनहारा ।  
 छिलौरा० ना० स्त्री० अगनीही शरपर फडिया  
 पिनही ।  
 छौं० अन्व० तु इकरने का वाक्य ।  
 छौंक० ना० स्त्री० मिनक, प्रमिड, अन्म ।  
 छौंकरना० अ० कि० मन्नारडम पवन उतरना ।  
 छौंका० ना पु० रसी का जाप । नमम् वस्तु  
 लके लका देने हे ।  
 छौंछडा० ना० पु० चमक व समान अमदगु माम ।  
 छौंनना० अ० कि० घन्ना, गिरना ।  
 छौंट० ना० स्त्री० छिन्नी, छा ।  
 छौंटना० स० कि० विधराना, पानी छिड़कना ।  
 छौंनना० स० कि० भङ्गलना, साधना ।  
 छौंप० ना० स्त्री० धार, लहसुन, निम लकड़ी में  
 बकिरावा सूत बांधने हे, साग म टकेलना ।  
 छौंपना० स० कि० पानी छिड़क देना, धीप निवा  
 लना, वख छापा ।  
 छौंपी० ना० पु० बरन, छापनेहारा ।  
 छौंमी० ना० स्त्री० फली, बिलका ।  
 छौंनन० ना० पु० बगाना, कतरना ।  
 छौंलना० स० कि० बगाना, कतरना, बिलका  
 उतारना, धौलना ।  
 छुंगलिया० ना० स्त्री० धनुनी ।

छुछकारना० स० कि० तु छ करव निकालना,  
 इतराना ।  
 छुछवाना० स० अ० गाड़ना, पूवना ।  
 छुटकारा० ना० पु० छुडाव, उदार ।  
 छुटकेलना० अ० कि० लुचापन कराना ।  
 छुटखेला० पु० लुचा, बरमारा ।  
 छुटना० अ० कि० उदारहाना, निकलना ।  
 छुटाना० } ना० स्त्री० मुर्बाना, छुटी ।  
 छुटानी० }  
 छुटापा० ना० पु० उगा, छापापन ।  
 छुट्टी० ना० स्त्री० छुटकारा, उदार, रत्नम् ।  
 छुड़वाना० स० कि० छुटारा कराना ।  
 छुटहरा० पु० जा अपविन हानया, पापात ।  
 छुट्ट० पु० छुट नीच, हलका, नकद्विनी ।  
 छुट्टभरिष्का० } ना० स्त्री० छुट्टभरिष्का, ता  
 छुट्टमेपला० } गर्भ करधनी ।  
 छुट्टा० ना० स्त्री० पनुरिया, छाहाग, चट्ट, कर्ग  
 पाथा, नीच स्त्री, नगा ।  
 छुट्टा० ना० स्त्री० मूर ।  
 छुपना० अ० कि० लुटना, गतहाना ।  
 छुपाना० स० कि० लुकाना, छिपाना ।  
 छुपा० पु० लुका, गुप्त, छिपा, अमक ।  
 छुरा० ना० पु० बगडुरी बालमूडेका अस्त्र ।  
 छुरिफा० ना० स्त्री० पालक का साग छुरी ।  
 छुरी० न० स्त्री० चाकू, लवा चाकू ।  
 छुलकना० } अ० कि० धाडा छोडा  
 छुलछुलाना० } मृत्तना ।  
 छुलाना० स० कि० छुवाना बिलाना ।  
 छुलाना० स० कि० उजलाना ।  
 छुहार० ना० पु० शूष वा उसका फलविशेष ।  
 छुहारट० ना० स्त्री० सगावट ।  
 छुमाना० स० कि० राराकराना छुलाना ।  
 छुरे० ना० स्त्री० दुनिया मंठी, लविचामंठी ।  
 छुकी० ना० स्त्री० मच्छक ।  
 छुल्ला० पु० नौदला, नावला ।  
 छुल्ला० पु० अन्व० सोमला, साली ।

छूली० ना० स्त्री० इरिमत, अपमानी, नीच, साली ।  
 छूट० ता० स्त्री० बटा, छुड़ान, भूपणकी चमक ।  
 छूटना० अ० क्रि० छुटना, निकलना ।  
 छूत० ना० स्त्री० अपभिरता, 'नापकी' ।  
 छूना० स० क्रि० स्पर्श करना ।  
 छेक० ना० स्त्री० रोक ।  
 छेकना० स० क्रि० रोकना ।  
 छेकवैया० ना० पु० रोकवैया ।  
 छेकान० ना० पु० रफान ।  
 छेड़० ना० स्त्री० खिनायत, दुःखाव ।  
 छेड़ना० स० क्रि० खिनाया दुखाना ।  
 छेड़० ना० पु० छिद्र, मुख, सुरास ।  
 छेड़क० ना० पु० छेड़कर्ता, बध ।  
 छेड़न० ना० पु० छेड़, वेधन ।  
 छेड़ना० स० क्रि० वेधना, बरमाना ।  
 छेना० ना० पु० खिरसा, छनना ।  
 छेनी० ना० स्त्री० छेवनी, छदनी ।  
 छेम० ना० स्त्री० छेम, कुशल ।  
 छेमदूरी० ता० स्त्री० छेमदूरी, भला चाहने वाला ।  
 छेरी० ना० स्त्री० बकरी ।  
 छेल० } ना० पु० बकरा ।  
 छेलक० }  
 छेय० ना० पु० पाख, कगन, चिराव ।  
 छेवना० स० क्रि० छेटना, कानना, फाड़ना ।  
 छेवनी० ना० स्त्री० काननी, टारी ।  
 छेवा० ना० पु० पुस्तकोंमें ठहरावके स्थानका चिह्न ।  
 छेय० ना० पु० चय, सेत ।  
 छेयफल० ना० पु० छेयफल ।  
 छेया० ना० पु० छोररा ।  
 छेल० } य० नाका, विजयिका,  
 छेलचिकनिया० } अरुईत ।  
 छेबा० }  
 छोआ० ना० पु० जमी ।  
 छोकड़ा० } ना० पु० लड़का ।  
 छोकरा० }

छोछो० ना० स्त्री० अग्नी, गादा ।  
 छोटा० गु० कृनिष्ठ, राउ, अल्प ।  
 छोटाई० ना० स्त्री० थोड़ाई, छेयपा ।  
 छोड़ना० स० क्रि० त्यागना, छमाकरना ।  
 छोडा० }  
 छोड़ाव० } ना० पु० छुफारा, छुडी, उडार ।  
 छोड़ावा० }  
 छोडावना० स० क्रि० छुफारा करना, उडार करना ।  
 छोडौती० ना० स्त्री० छुडा, छु ।  
 छोनी० ना० स्त्री० पृथा, धरती, क्षीषि ।  
 छोप० ना० पु० एकवार, रगभरन, भिस्न ।  
 छोपन० स० क्रि० भैरदना, रगदेना ।  
 छोरा० ना० पु० किनारा, बगर, सिरा ।  
 छोरा० स० क्रि० छोडा ।  
 छोरा० ना० पु० लडका ।  
 छोराछोरी० ना० पु० लडका, लडकी ।  
 छोरी० ना० स्त्री० लडकी, पुथा ।  
 छोखना० स० क्रि० छोखना ।  
 छोखनी० ना० स्त्री० छोखनेवा अन्न, सुर्मा ।  
 छोह० ना० पु० सह, प्रेम, दया ।  
 छोहरा० ना० पु० लडका ।  
 छोहा० य० स्त्री, प्रेमी, चाइक ।  
 छोफन० ना० पु० बगर ।  
 छोफना० स० क्रि० बघाना ।  
 छोफन० ना० पु० मन्ना मन्गी करेहारा ।  
 छोफना० स० क्रि० मन्ना मन्गी करना ।  
 छोना० ना० पु० जन्मुका बच्चा, बच्चा ।  
 छोनी० ना० स्त्री० छावनी, छपवदी करना ।  
 छोरा० ना० पु० छपडन ।  
 छोराक० ना० पु० नाई, नाऊ ।  
 छोराकम० ना० पु० छपडना, बालमुण्डना, हुनामन बनवाना ।

( ज )

ज० अय० शब्द के अन्तमें सपुन होकर, अतति का बोधक होताई ।

जकड़ना० स० कि० वसना बाधना ।  
 जकड़वन्द० ना० पु० अकड़वारी ।  
 जग० ना० पु० जगत्, सत्ता, यज्ञ, नीरि जहा जासके ।  
 जगच्चक्षु० ना० पु० सूर्य ।  
 जगजगा० ना० पु० पृथ्वीकी पत्नी ।  
 जगजगाहट० ना० स्त्री० चमचमाहट ।  
 जगजीवन० ना० पु० पानी, ईश्वर ।  
 जगण० ना० पु० गणविशेष ।  
 जगत्० ना० पु० सत्ता, दुनिया, टक ।  
 जगता० पु० जा साना नहीं, धनीदा ।  
 जगती० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी, सौग ।  
 जगत्प्राण० ना० पु० पवन, ईश्वर ।  
 जगदम्बा० ना० स्त्री० आदिशक्ति, देवी, भवानी,  
 जगत्की माता ।  
 जगदादि० ना० पु० पृथ्वीका आरम्भ ।  
 जगदाधार० ना० पु० शेष, दिग्गज, गौधादि, ईश्वर ।  
 जगदीश० ना० पु० परमात्मा, विष्णु, शिव  
 राजाधिराज ।  
 जगधर० ना० पु० शेषजी ।  
 जगना० थ० कि० नींदस उठना, चेतना ।  
 जगप्राप्य० ना० पु० पुस्तोत्तम, उकेसा देग में  
 धीकृष्णचन्द्रनी ।  
 जगन्मित्र० पु० सबका दोस्त, सबका मित्र ।  
 जगन्मित्रता० ना० स्त्री० सबकी मित्रतारसना ।  
 जगमगा० पु० चमकीला ।  
 जगमगाना० थ० कि० चमकना, झूमकना ।  
 जगयोनि० ना० पु० ब्रह्मा ।  
 जगयह्यभा० ना० स्त्री० बरवा, पतुरिया ।  
 जगह० ना० स्त्री० टीर, धरती, सपाई, गुनावरा ।  
 जगाजोति० ना० स्त्री० चक्र, भङ्क ।  
 जगाना० स० कि० सोनेसे उठाना ।  
 जगेश्वर० ना० पु० जगेश्वर ।  
 जघन० ना० पु० उरस्थल ।  
 जघन्य० पु० नीच ।  
 जङ्गम० ना० पु० चलनेवाला, वेपथी, पु० जो

चलने की सामर्थ्य रखता है, बैरागी ।  
 जगल० ना० पु० ११, अरण्य ।  
 जंगला० ना० पु० रागिनीविशेष ।  
 अंगली० ना० पु० बगैला, बनवासा ।  
 अंघ० ना० पु० जाघ, रान ।  
 अंघा० ना० स्त्री० जाघ, जातु ।  
 जचना० थ० कि० अटवलाजाना, परीक्षाहोना ।  
 जचना० स० कि० अकलकराना, कसवाना,  
 परीक्षा कराना ।  
 जचाघट० ना० स्त्री० परीक्षा, जाच ।  
 जजाल० ना० पु० उलझना, दु स, सरा ।  
 अंजाली० पु० ऊसी, दु सदाता ।  
 जट० ना० स्त्री० जटा ।  
 जटना० स० कि० चिपचिपाना, मूढ़ना ।  
 जटा० ना० स्त्री० बिगड़ेहुये बाल, भूषीता ।  
 जटाधारी० पु० जग रखनेवाला ।  
 जटामांसी० ना० स्त्री० झड़झोषधि ।  
 जटायु० ना० पु० श्मशिरेश ।  
 जटित० पु० जडाहुया, जडाऊ ।  
 जटिल० पु० पुराना, जगधारी ।  
 जटी० ना० पु० बरगद वृक्ष, शिवजी ।  
 जठर० ना० पु० पेट, उदर ।  
 जठरानल० ना० पु० पेटकी अग्नि ।  
 जठरा० पु० बडा, जठा ।  
 जठेरी० ना० स्त्री० बची, बूढ़ी ।  
 जट्ट० ना० स्त्री० मूल, पु० मूल, रथानर, नि-  
 जीन, दुष्ट, निशाचर ।  
 जट्टन० ना० स्त्री० जट्टने का काम ।  
 जट्टना० स० कि० लगाना, जोड़ना ।  
 जट्टपेड० ना० स्त्री० समुचापेड, अर्थात् सन ।  
 जट्टवट० ना० स्त्री० लग्न ।  
 जट्टहन० ना० पु० धान जो कातिक अग्रहन में  
 काटा जाता है ।  
 जट्टई० ना० स्त्री० जट्टने का काम वा जट्टने  
 का पैसा ।  
 जट्टाऊ० मथिपुस्तकदि से जडाभया, जडाहुया ।

जङ्गानां स० कि० जङ्गना, जाङ्ग खाना ।  
जङ्गव० ना० पु० जङ्गनेका काम ।  
जङ्गावर० ना० स्त्री० जाङ्गे के कपड़े ।  
जङ्गित० गु० जङ्गित, जङ्गाडुआ ।  
जङ्गिनी० गु० स्त्री० जङ्ग स्त्री, दुष्टिनी ।  
जङ्गिया० ना० पु० जङ्गनेवाला, जीहरी, सुनार ।  
जङ्गी० ना० स्त्री० श्रीशक्ति, पैथिकी जङ्गी ।  
जत्त० ना० स्त्री० रौति, वील ।  
जतन० ना० स्त्री० यत्न, तदचोर ।  
जतनी० ना० स्त्री० यथी, तदचोर करनेवाला ।  
जताना० स० कि० मृत्ताना, चिताना, धताना ।  
जतारा० ना० पु० खंरा, घराना, पीथी ।  
जती० ना० गु० यती, सन्यासी, शान्ति ।  
जतु० ना० स्त्री० छात ।  
जतुआ० ना० पु० खेदीका खूँट ।  
जथा० अर्थ० व्यथा, ना० पु० समूह ।  
जथार्थ० अर्थ० यथार्थ, सच ठीक ।  
जद० अर्थ० यदा, जब ।  
जदु० ना० पु० यदु ।  
जदुनाथ० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी ।  
जदुनाथक० }  
जदुपति० }  
जदुधंशी० गु० यदुधंशी ।  
जद्यपि० अर्थ० यद्यपि ।  
जन० ना० पु० मनुष्यलोग, नीकर ।  
जनक० ना० पु० पिता, धार्मीनामी के पिता ।  
जनकपुर० ना० पु० पिताका गाँव वा नगर, किर-  
हुत नगर ।  
जनता० ना० स्त्री० लोग वा लोगों का समूह,  
मनुष्यता, आदमियत ।  
जनन० ना० पु० जन्म, उत्पत्ति ।  
जनना० थ० कि० जन्महोना ।  
जननी० ना० स्त्री० माता, महतारी ।  
जनरथ० ना० पु० लोगोंका शब्द ।  
जनलोक० ना० पु० लोक विभाग, निष्कं सा-  
साग मरने के पीछे वास करते हैं ।

जनयित्री० ना० स्त्री० माता, जननी ।  
जनयासा० ना० पु० जहाँ बरात टहरती है ।  
जनश्रुति० ना० स्त्री० सन्देश, समाचार ।  
जनहाई० } अर्थ० मनुष्य, मनुष्यसहित, प्रत्येक,  
जनहार० } हरएक ।  
जना० ना० पु० लोग, मनुष्य, गु० पुत्र उत्पन्न  
हुआ, भया ।  
जनाई० ना० स्त्री० जो स्त्री लड़का जन्मातीदि, दिखाई ।  
जनाजात० अर्थ० जनहाई ।  
जनाती० गु० कन्याके धारके बराती, बराती लोग ।  
जनाना० स० कि० उत्पन्न कराना, जनाना,  
चिताना, दिताना ।  
जनाईन० ना० पु० श्रीकृष्णजी ।  
जनाव० ना० पु० जतन, लताव ।  
जनिका० ना० पु० द्रव्यनिष्ठाका दीपकार अर्थहोती ।  
जनित० गु० उत्पन्न भया, उपजा ।  
जनी० ना० स्त्री० दाक्षी, बहू, ध्यानी ।  
जनु० ना० पु० जन्म, उत्पत्ति, अर्थ० मानस ।  
जनक० अर्थ० जागो ।  
जनेऊ० ना० पु० यज्ञोपवीत ।  
जनेत० ना० पु० बरात ।  
जनेवा० ना० स्त्री० तुषाविशेष, कांभातोड़ी ।  
जनेश० ना० पु० राना ।  
जनो० ना० पु० जनेऊ ।  
जन्ता० ना० पु० तारखीचने का यन्त्र ।  
जन्ताना० स० कि० दराना, निचाइना ।  
जन्तार० ना० पु० यन्त्र ।  
जन्तु० ना० पु० जीवधारी, चुट्टनी ।  
जन्तुक० ना० पु० रिंग ।  
जन्तुदनन० ना० पु० रिङ्ग श्रीशक्ति ।  
जन्म० ना० पु० उत्पत्ति, पैदायशी ।  
जन्मदाता० ना० पु० पिता ।  
जन्मदिन० ना० पु० वर्षबन्धन, वर्षगांठ ।  
जन्मना० थ० कि० उपजना, पैदाहोना ।  
जन्मपत्री० ना० स्त्री० जन्मवृत्तिका, लम्बकुण्डली,  
वायवह ।

जन्मभूमि० ना० स्त्री० } उत्पत्तिके घर वा	जमहाई० ना० स्त्री० आलस्यपरा हस्ति मुख०
जन्मस्थान० ना० पु० } स्थान ।	का पसरता ।
जन्माना० स० क्रि० उपजाना, पैदाकराना ।	जमहाना० घ० क्रि० जमहाई ला ।
जन्मांतर० ना० पु० और जन्म ।	जमाई० ना० स्त्री० जामाता, दामाद ।
जन्मान्तरीय० यु० अगल जन्मका उपार्जित ।	जमाना० स० क्रि० उगाना, बाधाना, इच्छि
जन्मान्ध० यु० जन्मका अंधता ।	करना, बगारना, बैठाना ।
जन्मोत्सव० ना० पु० जन्महान का ध्यान, पूजनमौमरा ।	जमाखगोट्टा० ना० पु० औपनि विराप ।
जन्यजनकभाज० ना० पु० उत्पन्न कियाहुया और उपर कीहुई वस्तु इनका सम्बन्ध ।	जमाच० ना० पु० भीड़, बहुताता
जप० ना० पु० पाठ मन्त्रादिका उच्चारण ।	जमाघट्ट० ना० स्त्री० वैधव्य ।
जपन० ना० पु० मनउच्चारण पाठ ।	जमी० ना० स्त्री० रात यमी यमुनानी ।
जपना० स० क्रि० मन्त्रादिका उच्चारण ।	जमोगना० स० क्रि० सहजाना ।
जपन्ता० यु० जापक ।	जमोघ० } ना० पु० जमविराप आ लङ्कोफा
जपमात्रा० ना० स्त्री० जपनकी माला ।	जमोघा० } लगता है ।
जपा० ना० पु० हुक्हुक् का पृल ।	जमना० घ० क्रि० बढ़ना, पनपना ।
जपी० यु० जापक	जम्बाब० ना० पु० सियाल, बालू ।
जपीतपी० ना० पु० अचक भजनीक ।	जम्बीर० } ना० पु० नीबू ।
जप्य० ध्व्य० यत्न ।	जम्बारक० } ना० पु० नीबू ।
जपदा० ना० पु० जप ।	जम्बु० ना० पु० जादक, शृगाल यमुनाद्वीप ।
जपदा० ग० अक्षर, अनादी ।	जम्बुक० ना० पु० गीदक शृगाल ।
जपदिया० यु० बुरूप ।	जम्बुमाली० ना० पु० प्रहलवापुत्र राक्षसावशेष ।
जभा० ना० पु० जपका ।	जम्बुद्वीप० ना० पु० अथाके सात द्वीपामुम एकका नाम ।
जम० ना० पु० यम मृगण ।	जम्भमेदी० ना० गु० रद्र ।
जमअनुजा० ना० स्त्री० यमुनाना ।	जम्भल० } ना० पु० जम्भारी नीबू ।
जमक० ना० पु० यमक पहिला शब्द छदका ।	जम्भार० } ना० पु० जम्भारी नीबू ।
जमकना० घ० क्रि० बाना निभना ठहरना ।	जय० ना० स्त्री० पराभव करना, उन्नति, यु०
जमकाना० स० क्रि० बाना ठहराना बेगना ।	मिना जयति आशिष ।
जमघट्ट० ना० पु० मण्डना भाइ ।	जयजयकार० ना० पु० पराभव हाना, शत्रुका
जमजम० ध्व्य० निरन्तर मना ।	बनार का वा जीविका बाधक ।
जमदग्नि० ना० पु० परशुराम का पिता ।	जयजयवन्ती० ना० स्त्री० रागनी विशेष ।
जमदूत० ना० पु० यमदूत ।	जयदाक० ना० पु० दालविशेष ।
जमघर० ना० पु० घर ।	जयत० ना० पु० हुक्विशेष ।
जमना० घ० क्रि० उगाना, ठहराना, जमाना ।	जयान० क्रि० ज निहो ।
जमराज० ना० पु० यमराज ।	जयामर० ना० पु० राजपूताने का राजधानी
जल० यु० ना० ।	जयत० ना० पु० हदका पुत्र ।
	जयन्ती० ना० स्त्री० दुगादवी, वृषारसेप ।

जयन्तीपुर० ना० पु० शिलहट से दश क्रोमपूर  
 का देश जिसको जयन्ती कहते हैं।  
 जयवेर० गु० जितने बार ।  
 जयमान० } गु० जयकरनहारा, जीतनेवाला ।  
 जयवन्त० }  
 जयवान्० }  
 जयवती० ना० स्त्री अग्नि की जिहाविशेष  
 गु० जीतनेहारी ।  
 जयः० ना० स्त्री हर्ष, विशुक्कान्ताभाग, देवीविशेष।  
 जयी० गु० जय करनेहारा ।  
 जर० ना० पु० जड़ उवर विशेष ।  
 जरण० ना पु० नीरा सुकेद, जलन ।  
 जरन० थ० कि० जलन ।  
 जरना० थ० कि० जलना ।  
 जरा० ना० स्त्री बुढ़ापा, वृद्धावस्था ।  
 जरांस० ना० पु० ज्वरांस ।  
 जराना० म० कि० जलाना ।  
 जरायजरी० गु० स्त्री जड़ाज ।  
 जरायु० ना० स्त्री कौष, पेट, बुधि ।  
 जरायुज० ना० पु० जो कौष में उत्पन्नहो, जो  
 कितली में उत्पन्नहो धर्मान् मनुष्यादि ।  
 जरासन्ध० ना० पु० मगधका राजा जरानाम  
 राक्षसी में जोड़ागया ।  
 जर्जर० गु० निर्बल, नांजर, नीर्ण ।  
 जर्जरी० ना० पु० लहसुन ।  
 जल० ना० पु० पानी ।  
 जलशलि० ना० पु० पानीका भेवर ।  
 जलकन्द० ना० पु० जिहासा ।  
 जलकामा० ना० स्त्री कंधाहोली ।  
 जलक्रीडा० ना० स्त्री पानी में बा खेल ।  
 जलकुफड० } ना० पु० पनहथी, मु०  
 जलकुफकुट० } शक्ति ।  
 जलपानि० ना० पु० मेघ, समुद्र, नदी ।  
 जसगोजक० ना० पु० विलगोना ।  
 जलचर० गु० जलमनु, पंगिरी, जल के बने  
 हो मनु ।  
 जलचरेशु० ना० पु० मगर, मूष, माई ।

जलज० ना० पु० कमल, गु० जो कुलजलमें उपजे  
 जलजन्तु० ना० पु० जल में रहनेहारे जीव ।  
 जलजन्त्र० ना० पु० बग्गा, कच्चारह, जलयन्त्र ।  
 जलजला० गु० महाकोपी ।  
 जलजलाना० थ० कि० भाग ही जाना, कुम्भ-  
 लाना ।  
 जलजलाहट० ना० स्त्री कौष, क्रीष, कुम्भलाहट ।  
 जलजात० ना० पु० कमलादि ।  
 जलजान० ना० पु० नाव, जहाम् ।  
 जलामयु० ना० स्त्री सुलहरी ।  
 जलतरंग ना० पु० वामाविशेष जलकीलहरी ।  
 जलतरंगी० ना० स्त्री वामाविशेष वनानेवाला ।  
 जलतरण० ना० पु० तैरना, नाव या जहान  
 चलाने की विधा ।  
 जलथल० ना० पु० जल थीर स्थल ।  
 जलद० ना० पु० मेघ ।  
 जलधर० ना० पु० मेघ, समुद्र ।  
 जलधार० } ना० स्त्री पानी की धारा ।  
 जलधारा० }  
 जलधि० ना० पु० समुद्र ।  
 जलन० ना० पु० जलन, तप, क्रीष ।  
 जलना० थ० कि० बरना, दहकना ।  
 जलनिधि० ना० पु० समुद्र ।  
 जलनीम० ना० पु० क्षीरमि विशेष ।  
 जलन्धर० ना० पु० रोगविशेष निम्न शक्ति  
 पानी बहुत पीना है, राजा विशेष ।  
 जलपाई० ना० स्त्री वृषविशेष ।  
 जलपान० ना० पु० पानी पीना, क्लेश ।  
 जलपुट० ना० पु० पानी का बरतन ।  
 जलपल० गु० जो जलन से जोड़ागया ना० पु०  
 पान, केवल ।  
 जलमय० ना० पु० जलान्त, प्रलय ।  
 जलमानुष० ना० पु० मनुष्यकी जलमनु ।  
 जलमार० ना० पु० पीर, ब्रह्म ।  
 जलमाल० ना० स्त्री नदी ।  
 जलराशि० ना० पु० समुद्र ।

जलरहः ना० पु० कमल ।  
 जलवैया० ना० पु० जलानेहृद्य ।  
 जलशायी० ना० पु० विन्दु, नारायण ।  
 जलशयनी० ना० स्त्री० जल में सोना, जल में रहना, तपस्याविशेष मत्स्य ।  
 जलसूत० ना० पु० नट्टया ।  
 जला० ना० स्त्री० भौल ।  
 जलाकार० ना० पु० जलका अकार ।  
 जलाना० स० क्रि० बालना, दाहना ।  
 जलबला० } गु० विविधा, बाधी ।  
 जलभुना० }  
 जलार्णव० ना० जल प्रलय, जलका समुद्र ।  
 जलावन० ना० पु० ईधन ।  
 जलाशय० } ना० पु० तालाब, पेसर ।  
 जलाश्रम० }  
 जलाश्रय० ना० पु० जल के भरोठे ।  
 जलिया० ना० पु० कहर, धीमर, मछुया ।  
 जलेयो० ना० स्त्री० मिठारि विशेष ।  
 जलेश० ना० पु० वरुणदेव, समुद्र ।  
 जलोद० ना० पु० धीरोद, मेघ ।  
 जलोदर० ना० पु० जलधर ।  
 जलौका० ना० स्त्री० जोर ।  
 जल्पना० अ० क्रि० बचना, निम बकार करना ।  
 अस्तार्थ बात कहना ।  
 जल्पक० शु० बकनादी, निमबकारि करिनेहारा ।  
 जव० ना० पु० यव, जौ, जल्दी ।  
 जवन० ना० पु० यव, धोडा ।  
 जवस्था० ना० स्त्री० हूर ।  
 जवनष्टे० ना० पु० लहृष्टा ।  
 जया० ना० पु० अगुली की गांठि में बिर पुत्र विराय ।  
 जयाहा० ना० स्त्री० अन्नहार ।  
 जयाद् ना० स्त्री० केसर ।  
 जयाधिक० ना० पु० पाडा ।  
 जयानी० ना० स्त्री० अन्नवारने, सुरासानी ।

जयानिक० }  
 जयासाहा० } ना० पु० अन्नवाह ।  
 जयाखाह० ना० पु० औषधि, तपविशेष ।  
 जयासा० ना० पु० काशीलाविशेष ।  
 जस० ना० पु० यरा ।  
 जसत० }  
 जसता० } ना० पु० धातु विराय ।  
 जसयत० }  
 जसयति० }  
 जसवन्त० } शु० कर्त्तमान्, प्रतिष्ठित, यरी ।  
 जसस्वी० } यशस्वी ।  
 जसी० }  
 जसुमति० }  
 जसोदा० } ना० स्त्री० नहराना, यशोदा  
 जसोमति० }  
 जहर्षमी० ना० स्त्री० कौच बल ।  
 जप्र० अत्र्य, जहा, यत ।  
 जहु० ना० पु० मुनि विशेष ।  
 जहुसुता० ना० पु० गगानी ।  
 जहां० अत्र्य० जव, यत, निसरधान में निधर ।  
 जहीं० अत्र्य० निसकी जगूह ।  
 जा० सर्व० निस ।  
 जाई० शु० जनी, ना० स्त्री० बेगी ।  
 जांगर० स्त्री० पु० पिण्डली समेत जाव, बुधना ।  
 जांघ० ना० स्त्री० जघा, जातु ।  
 जांधिया० ना० पु० कदना ।  
 जांच ना० स्त्री० अटवल, परत, वस ।  
 जांचना० स० क्रि० कसना, परतना, देतना, डहराना, ठीककरना, परीक्षाकरना ।  
 जांता० ना० पु० पाषाणका यत्र निसमें गिह-पीसते है, चकी ।  
 जाकड़० ना० पु० जाकर, बभक, रहना ।  
 जाकर० ना० पु० निसहाय में सर्व निसका ।  
 जाग० ना० पु० निद्राका त्याग, यह ।  
 जागत० ना० स्त्री० चौकसाई ।  
 जागतीज्योति० शु० अद्भुत पराकमी ।  
 जागना० स० क्रि० नींदसे उठना, चेतना ।



जागरण० ना० पु० नींदकावाग, रातिकी  
व्रतादि में जागना ।

जागल० ना० पु० श्याम, अगद ।

जागा० ना० पु० जातिविशेष ।

जागू० ना० पु० जागने हारा ।

जाग्रत० ना० स्त्री० स्वप्न और सुषुप्ति से भिन्न  
अवस्था ।

जांगली० ना० पु० विधारा ।

जाचक० ना० पु० याचक, मागनहारा ।

जाचना० स० कि० मागना चाहना ।

जाचा० शु० मागा, चाहा ।

जाच्यमान० शु० मागा वा चाहाभया, प्रथमदान ।

जाजक० ना० पु० भाक वा टालकजनानहारा ।

जाजा० ना० स्त्री० क्लीत्री ।

जाजामन्ती० ना० स्त्री० जयजयवती ।

जाट० ना० पु० रागपूतों में जातिविशेष ।

जाठ० ना० स्त्री० बाहरी धुरी ।

जाड़० ना० स्त्री० मसूदा ।

जाढा० ना० पु० शीत, ठंड, शीतकाल ।

जाढी० ना० स्त्री० दावोंकी पाति ।

जाढ्य० ना० पु० जड़ता, शीतलता, मूढ़ता ।

जात० ना० स्त्री० जाति, यात्रा, मैला, मुर्दुजना ।

जातक० शु० पुत्र, वचा ।

जातकर्म० ना० पु० जन्म सुस्कारविराज यथा  
छ्त्री आदि ।

जातना० ना० स्त्री० पीडा, दुःख दण्ड, वदा ।

जातपांत० ना० स्त्री० पीड़ी, वरावली ।

जातरूप० ना० पु० सुवर्ण, वाचा ।

जातघेद० ना० पु० अग्निद्वार ।

जाति० ना० स्त्री० वर्ण, क्षीम, एक रूपसे बहुत  
स पिण्डों में समानधर्म, यथा पशु, मनुष्य,  
उत्तम ।

जातिकोप० ना० स्त्री० जातिद्वै ।

जातिपत्री० ना० स्त्री० जातिवी विरादोंकी  
चिह्नी ।

जातिभ्रष्ट० शु० पापारि के कारण जाति से  
निवालामया वा निकलमया ।

जातिवाचक० शु० जिस सहा से जातिमानका  
बाधहोन यथा पशु, पत्नी ।

जातिवृज० ना० पु० जायफल ।

जाती० ना० स्त्री० मालती, जातिनी, पुष्पविशेष ।

जात्यायत० शु० जिस क्षेत्रकी आमनेसामनका  
भुजा तुल्य और चारों काण सम हैं ।

जात्यत्रिभुज० ना० पु० त्रिकोण जिसका एक  
कोण समकोणो ।

जात्रा० ना० स्त्री० यात्रा, चलना ।

जात्री० ना० पु० यात्री, जानेवाला ।

जान० ना० पु० निमान, सवारी, वाहनादि छीट,  
बुद, ज्ञान, सब शु० ज्ञानी ।

जानकी० ना० स्त्री० श्री सीतानी ।

जानपहिचान० ना० पु० चिह्न, गुलाकाव ।

जाना० अ० कि० चलना ।

जानु० ना० पु० पुत्रा, गाठि ।

जानो० अर्थ० सम्भ्रा, अ० कि० जाना ।

जानना० स० कि० पहिचानना, सम्भ्राना ।

जाप० ना० पु० जप, पाठ ।

जापक० } शु० जप करेहारा ।  
जापी० }

जाव० ना० पु० टापी ।

जावी० ना० स्त्री० दाडी टापी ।

जाम० ना० पु० पहर ।

जामदन्य० ना० पु० परशुराम, जमदग्निपुत्र ।

जामन० ना० पु० वृष वा उत्तका फलविराज,  
जाड़न, जमावा ।

जामवन्त० ना० पु० श्रद्धाका प्रथमविराज ।

जामघन्ती० ना० स्त्री० कृष्णचद्रिका स्त्री ।

जामा० ना० पु० एकीक पहिरोराज्य विशेष ।

जामाता० } ना० शु० बेगी की पति ।  
जामातु० }

जामिनी० ना० स्त्री० राति, यामिनी, जमन  
देराधी भाषा वा यमु ।

जायपत्री० ना० स्त्री० जायित्री ।	जिगना० ना० पु० वृक्षविशेष ।
जायफल० ना० पु० फलविशेष ।	जिगीया० ना० स्त्री० इन्द्रा, जयकी इन्द्रा ।
जाया० ना० स्त्री० पत्नी, स्त्री, भर्त्या, सु० जती ।	जिगर्णा० ना० पु० जिग्ना ।
जार० ना० पु० उपपत्ति, यार, दूरापत्ति ।	जिजिया० ना० स्त्री० वृक्षरक्षा, वृक्षी ।
जारज० } ना० पु० विनमा, सकरवर्षा ।	जिठनिया० } ना० स्त्री० जेन्धी स्त्री ।
जारजात० } उपपत्तिजन, यारकानमाया ।	जिठानी० } ना० स्त्री० जेन्धी स्त्री ।
जारन० ना० पु० जलावन ।	जितना० ना० पु० } परिमाण वा अक्षि वा
जारना० म० क्रि० जन्माना, पूरना, दाहना ।	जितनी० स्त्री० } मन्था वा बाधन ।
जारल० ना० पु० काष्ठविशेष ।	जितयोनि० ना० पु० हरिण ।
जाल० ना० पु० निम्न मङ्गलीआदि पशुवत् है	जिता० } सु० परिमाण वा अक्षि वा सु०
भकरा, माया, पावण, भय, पाता ।	जितक० } वायव ।
जालधि० अर्थ० निम्न लिय, सर्व० निसके	जितेन्द्रिय० } ना० पु० निम्न इन्द्रियों को
लिय ।	जितेन्द्री० } न्य किया है ।
जालरन्ध्र० ना० पु० कराता, जाल वा	जिघर० अर्थ० यथ जहा ।
जा० ना० पु० निम्न मङ्गली बनाया है, धरा,	जिन० ना० पु० ऋषापावराण ।
मोनियविन्दु ।	जिभारा० सु० रणी जा कटार चत रहता है ।
जालिका० ना० स्त्री० भकरा ।	जिम० अर्थ० जिभि, यथ, जम ।
जालिनी ना० स्त्री० सुरदा, दवदाता ।	जिमाना० म० क्रि० विलाना ।
जालिया० ना० पु० झलिया, जालराया	जिमि० अर्थ० यथा० जिम ।
जाल० ना० स्त्री० बहन दिनों की विहकी वा	जिय० } ना० पु० जामा, प्राण, ज्ञान ।
कण्डा आदि ।	जियरा० } ना० पु० जामा, प्राण, ज्ञान ।
जालीन० ना० पु० बदलवर्षाका नारविशेष ।	जियान्ठ० म० क्रि० विलाना प्राणदान देना ।
जायव० ना० पु० आलता, महाकर, मदुर ।	जियावन० म० क्रि० मियाना ।
जायका० ना० पु० स्त्री० लीन ।	जियौ० सु० स्था० श्रुता, श्र, योद्धा ।
जायनी० ना० स्त्री० अनवान	जिलाना० म० क्रि० प्राणदान देना जीना करना ।
जाया० ना० पु० उपशपावरोष ।	जिवाना० म० क्रि० निमाणा विलाना ।
जाया० ना० पु० दापुत्र वा एकहीमाय उपधर्म ।	जिष्णु० ना० पु० अन्न, इन्द्र ।
जायालि० ना० पु० मनिविशेष ।	जिम० सर्व० नग्नथ म आता है ।
जायित्री० ना० स्त्री० वृक्षारण की लाल ।	जिहि० सर्व० निम्न ।
जासु० मन्त्र० निम्न, निम्नको ।	जिह्व० ना० पु० कण, मूत्रना ।
जाह्वी० ना० स्त्री० गगानी	जिहाकर० सु० बपरी, धरती ।
जाहि० सर्व० निम्न ।	जिह्वग० ना० पु० बाण, शर ।
जाही० ना० स्त्री० जनी जानी ।	जिह्वग० ना० पु० सप्त, माप ।
जिगजिगिया० सु० चातुर्वी करानाला ।	जिह्वता० ना० स्त्री० अधिक वाता की शक्ति ।
जिगजिगी० ना० स्त्री० लार, मय, चातुर्वी ।	

नेहा० ना० स्त्री० रसना, जीभ ।  
 नेहाग्र० ना० पु० मुखग्र, अभाती ।  
 नेहासा० ना० स्त्री० जानने की इच्छा ।  
 नेहासी० } गु० अभिलाषी, जानने की इच्छा ।  
 नेहासु० } रत्नेहार ।  
 नेहास्य० गु० जानने के योग्य है ।  
 नि० ना० पु० जीव, प्राण, मर्यादा का सूचक ।  
 निक० ना० स्त्री० जीविका ।  
 निगुराना० स० कि० तिष्ठेइना ।  
 नित० ना० स्त्री० जय, फल ।  
 नितना० स० कि० जय करना, हराना ।  
 नितव० ना० पु० आत्मा, हिया, निन्दगी ।  
 नितवन्त० } ना० पु० जिसकी जय हुई ।  
 नितवैया० } जयमान ।  
 नित्ता० गु० प्राणधारी अर्थात् मरानही ।  
 नित्ति० ना० स्त्री० जय, जीव ।  
 नित्तिया० ना० स्त्री० लक्ष्मी के जल के लिये  
 धियों का वनविशेष ।  
 नित्त्वा० ना० पु० जयवन्त, अतिवैया ।  
 निना० अ० कि० जीता रहना ।  
 निभ० ना० स्त्री० निहा, रसना, जवान ।  
 निभारा० गु० गणों, बकी ।  
 निभी० ना० स्त्री० जीभ का मूल उतारने की  
 वस्तु ।  
 निभार० गु० जो इनने के योग्य है, निभ इच्छा  
 मानेहारा ।  
 निभूत० ना० पु० मेष, देवदाली ।  
 निभूक० ना० पु० जीता संकेत ।  
 निभूत० गु० जीव, पुराना ।  
 निभूरा० ना० पु० औषधि विशेष का बीज ।  
 निभूण० गु० बुद्धि, पुराना, रुदा, जाजर ।  
 निभूण० ना० स्त्री० गनि में धातु-तीक्ष्णत्व ।  
 निभूण० ना० पु० प्राण, शरीरदि का धारक, बुद्धि-  
 स्थिति, चन्द्रमा सदात्रियो

जीवधानि० ना० पु० ईश्वर, अनादि पुरुष ।  
 जीवंगर० } गु० मृत्, पोदा,  
 जीवट० } इतता ।  
 जीवङ्गा० ना० पु० प्राण, प्रियतम ।  
 जीवत० गु० जीव ।  
 जीवदान० ना० पु० रक्षाकरण, प्राण-वचाना ।  
 जीवधारी० ना० पु० प्राणी, देवान् ।  
 जीवन० ना० पु० जीविका, जन्म सम्प्रसुप्त  
 का काल, जल ।  
 जीवनमूल० ना० स्त्री० जीविका-मूल, हियाव  
 की जड़ ।  
 जीवना० अ० कि० जीतारहना ।  
 जीवनि० ना० स्त्री० } सनी-  
 जीवितिया० ना० स्त्री० } वनवृद्धी ।  
 जीवन्त० गु० जीता ।  
 जीवन्ती० ना० स्त्री० सजीवनवृद्धी, सुरच ।  
 जीवभन्ना० } ना० स्त्री० सजीवन  
 जीववर्द्धिनी० } वृद्धि ।  
 जीवा० ना० स्त्री० जीवन्ती, जो चापके एकामने  
 द्वितीयावतक ।  
 जीविका० ना० स्त्री० वृत्ति, निर्वाह का उपाय  
 जीह० ना० स्त्री० जीभ, रसना ।  
 जीहारना० अ० कि० निरास होना, दर में दर  
 रहना ।  
 जुझा० ना० पु० छल रम, धीमन्निरोप, मार्ची ।  
 जुझारि० ना० स्त्री० अन्न विशेष ।  
 जुझारी० ना० पु० सूतकर्मा, छलकारी, दुष्ट ।  
 जुग० ना० पु० पुग ।  
 जुगति० ना० स्त्री० युक्त, श्लेषव्यर्थ ।  
 जुगती० गु० धर्ता, चतुर, टटोल, द्रव्यार्थ कोल  
 नेहारा, उपायी ।  
 जुगनी० ना० स्त्री० } मक्खी जो रातको चमक-  
 जुगनु० ना० पु० } तीरे, गलेका भूषण विशेष ।  
 जुगधना० स० कि० रचाकरना, रचाना ।  
 जुगवैया० ना० पु० जुगनेहारा ।

जुगाना० स० कि० यत्र करना, किसी के उप-  
कार हेतु उपकार करना ।

जुगालना० स० कि० पागुराना, पागुरकरना ।

जुगाली० ना० स्त्री० पागुर ।

जुगुप्सा० ना० स्त्री० निदा, दुःखा ।

जुगुप्सित० गु० निदिप्त, कुम्भित ।

जुभावट० ना० पु० युद्ध वा समरभार ।

जुभावना० स० कि० युद्धमें मरवाइलना ।

जुटना० अ० कि० भिड़ना, मिलना, सटना ।

जुटाना० स० कि० भिड़ाना, मिलाना ।

जुटैया० ना० पु० भिड़ैया, लड़ाका ।

जुठारना० स० कि० जुड़ा, करना ।

जुड़ना० अ० कि० मिलजाना, सपिजाना ।

जुड़ाई० ना० स्त्री० जोड़ने का पैसा, जोड़ने का  
पाम और जुगाम, श्लेष्या, ठट्टी ।

जुड़ाना० स० कि० मिलाना, मिलवाना, अ०  
कि० ठट्टाना, सुखाना, दम लेना ।

जुड़िया० } ना० पु० दो लड़के जो एक  
जुड़िया } साथ उपजें ।

जुताई० ना० स्त्री० खेत जोतने का काम वा जो  
तने का पैसा ।

जुताना० स० कि० हल चला के खेत दुस्त  
करना ।

जुतियाना० स० कि० अंतों से मारना ।

जुद्ध० ना० पु० युद्ध ।

जुधिष्ठिर० ना० पु० मुधिष्ठिर ।

जुन्हरी० ना० स्त्री० जुधार ।

जुन्हारी० ना० पु० चंद्रमा, स्त्री० चादनी ।

जुन्हार० ना० स्त्री० अन्न विरोध जुधार ।

जुन्हैया० ना० स्त्री० चादनी, चंद्रमा ।

जुरादेना० स० कि० पाना ।

जुराना० अ० कि० धीरज होना, स० कि० ए-  
कठा हाना, पाना ।

जुरायना० गु० जो पाने के योन्यदे, मिलनहार ।

जुरआ० ना० स्त्री० जोर, पत्नी ।

जुना० अ० कि० मिलना, प्राप्तहोना, सटना,  
भिड़ना, एकठा होना ।

जुल० ना० पु० धूल ।

जुवती० ना० स्त्री० युवती, जवान औरत ।

जुवराज० ना० पु० युवराज, बलीशुद्ध ।

जुवा० गु० युवा० ना० पु० ज्य, जुवा ।

जुवार० ना० पु० अन्न विरोध ।

जुवारी० ना० पु० जुवारी, ज्य ।

जुहार० ना० पु० सलाम, प्रणाम ।

जू० अर्थ० जी ।

जूआ० ना० पु० गाड़ी वा हलका कठ मिलने  
बल मचते हैं, मार्ची, घूत, ज्य ।

जूआट० ना० पु० जूआ ।

जूआरी० ना० पु० जूआ खिलने में चतुर ।

जू० ना० स्त्री० चीलक ।

जूक० ना० पु० युद्ध, समर ।

जूकना० अ० कि० लड़ना, लड़ाई में कट  
धपाई लड़करना ।

जूट० ना० पु० कुपड ।

जूठ० ना० पु० स्याबाभया ।

जूठन० ना० स्त्री० भोजन के पीछे शेष रहवा

जूठा० गु० जुठ, स्याबाहुथा ।

जूई० गु० ठटा, शीतल, ना० पु० शीत ।

जूड़ा० ना० पु० ठटा, शीत, शिरके पाके ग  
दियेहुये बाल ।

जूड़ी० ना० स्त्री० अन्तरिया, जाक का रोग ।

जूता० } पनही, चमके की पादुका ।

जूता० } पनही, चमके की पादुका ।

जून० ना० पु० समय, काल, वक्त ।

जूना० ना० पु० तृणकी, रस्ती, पेंटाहुई धान

जूप० ना० पु० जूआ ।

जूपी० गु० जुवारी ।

जूरा० ना० पु० नातों की गांठि, चोरी ।

जूरी० ना० स्त्री० समूह, जुरी ।

जूस० ना० पु० परेह, रोगी का पथ,

जूह० ना० पु० समूह, जूआ ।

ही० ना० स्त्री० पुष्प का वृक्ष विशेष ।  
 ० सर्व० जो, सब ।  
 ट० ना० स्त्री० देर ।  
 ठ० ना० पु० पतिका बढाभार, व्येष्ट ।  
 टारा० गु० पहिलीठा, पतिका बढाभार ।  
 ठा० गु० पहिलीठा, बडा, कुसुम का पहिलारंग ।  
 ठानी० ना० स्त्री० जेठकी स्त्री ।  
 ठी० गु० बड़ी ।  
 तंठीमधु० ना० पु० मुलहठी ।  
 तंठीत० ना० पु० जेठका पुत्र ।  
 तैता० } गु० जितना ।  
 तैतिक० }  
 जेच० ना० पु० सलता, पाकट, फारसी शब्द है ।  
 जेयमान० गु० जीतनेवाला, जयमान ।  
 जेर० ना० पु० खेरी ।  
 जेबडा० ना० पु० रस्ता, डोर ।  
 जेवना० स० कि० खाना, भोजन करना ।  
 जेवनार० ना० स्त्री० खाना, भोजन, यज्ञ ।  
 जेवरी० ना० स्त्री० रस्ती, डोर ।  
 जेहर० ना० पु० शिवों का भूषण विशेष ।  
 जैत० ना० पु० वृक्ष विशेष, रागिनीविशेष ।  
 जैन० ना० पु० नास्तिकों का मत विशेष ।  
 जैनी० गु० जैन मतवाला, सरावक, सरौगी ।  
 जैमाला० ना० स्त्री० जयमाला, जीति की माला ।  
 जैमिनि० ना० पु० मुनि विशेष ।  
 जैमिनी० गु० ब्रह्मवादी ।  
 जैसा० अव्य० यथा ।  
 जैहें० अ० कि० जायेंगे ।  
 जो० सर्व० यह शब्द सम्बन्ध का बोधक है अव्य० यथा, यदि ।  
 जोआरभाटा० ना० पु० समुद्र के जलका चढ़ाव उतार ।  
 जोह० ना० स्त्री० जोरू, दुलहन ।  
 जो० अव्य० जो, यदि, जैसा, ज्यों ।

जौक० ना० स्त्री० जलीका, रक्तता, जलजंतु ।  
 जौकर० अव्य० निसप्रकार ।  
 जौही० अव्य० निसतैमय ।  
 जौख० ना० स्त्री० तोख ।  
 जौखना० स० कि० तोखना ।  
 जौखिम० ना० स्त्री० चिन्ता, शंका, परी ।  
 जौखिमी० ना० पु० जौखिम उठानेहारा ।  
 जौखों० ना० स्त्री० जौखिम ।  
 जोग० ना० पु० योग ।  
 जोगमाया० ना० स्त्री० मायारूपीशक्ति जो शिवियों में है निसकरके वे कहते हैं कि हम अपना स्वरूप अपने वश रारें ।  
 जोगवत० कि० परखत, राखत, रक्षत ।  
 जोगा० गु० योग्य ।  
 जोगाभ्यास० ना० पु० जोग का अभ्यास ।  
 जोगिन्० ना० स्त्री० जोगिन्, जोगी की स्त्री ।  
 जोगिनी० ना० स्त्री० देवी की सहचरी ।  
 जोगिया० ना० पु० जोगी० गु० रंग विशेष ।  
 ना० स्त्री० रागिनी विशेष ।  
 जोगी० ना० पु० योगी, शान्त ।  
 जोगेश्वर० ना० पु० योगेश्वर, तपस्वी, पुजारी विशेष थी महादेवजी, श्रीविष्णुनारायण ।  
 जोग्य० गु० योग्य, उत्तम, अच्छा ।  
 जोजन० ना० पु० योजन, चारकोम ।  
 जोट० ना० पु० साथ, जोड़ी गु० सम ।  
 जोटा० ना० पु० जोड़ा ।  
 जोड़० ना० पु० मेल, गांठ, घेगली, मीठान ।  
 जोड़ती० ना० स्त्री० लेखा, गिनती ।  
 जोड़न० ना० पु० सोहागा, सांठन, जोमन ।  
 जोड़ना० स० कि० मिलाना, एकट्टा करना, खगाना, संकलन करना, धन बटोरना, मनाना, गांठना ।  
 जोड़ा० ना० पु० सुम्, दूसरा, जता, धोती, एक बार पहिनने के कपड़े ।  
 जोड़ाई० ना० स्त्री० जोड़ने का काम या पैसा

जोड़ी० ना० स्त्री० युग्म, दूसरा ।  
जोत० ना० स्त्री० उजाला, प्रकार, ज्योति, हल  
प्रवाह, निरख, टम, छीटे ।  
जोतना० स० क्रि० नामना ज्ये में लगाना,  
हलाई करना, स्तन बनाना ।  
जोतमान्० गु० यानिमान, चमकदार ।  
जोतार० ना० पु० हलवाहा, किमान ।  
जोति० ना० स्त्री० जान, प्रकाश, तारा, जुनि,  
शक्तिआदि की ईज्वर ।  
जोतिप० ना० पु० योतिप, नक्षत्र ।  
जोतिपी० गु० योतिपी, राजनी ।  
जोति स्वरूप० गु० तजन्वी पर नाम श्रामग  
वान् का हे ।  
जोती० ना० स्त्री० तगजू क पय का रस्ती, स  
काऊ की रस्ती ।  
जोत्स्ना० ना० स्त्री० चित्रिका, चन्द्रकला ।  
जोत्स्मी० ना० स्त्री० राति, रेण, निरा ।  
जोयन० ना० पु० लड़ाई, समर ।  
जोधा० ना० पु० याडा ।  
जोन० } ना० स्त्री० यानि ।  
जोनि० }  
जोन्ह० ना० पु० च द्रमा, चान्नी ।  
जोयन० ना० पु० यौवन, छात्री स्तन ।  
जोयनवती० गु० यौवनवती ।  
जोयनमा० } ना० पु० जायन, यौवन ।  
जोयना० }  
जोय० ना० स्त्री० पत्नी, भाष्या, आर ।  
जायसी० गु० योतिपी ।  
जोरु० ना० स्त्री० पत्नी, भाष्या बँदि ।  
जोला० ना० पु० छल, धोला ।  
जोयत० क्रि० वाह, देतन ।  
जोयमा० स० क्रि० देतना दाहना ।  
जासी० ना० पु० योतिपी, जाति विशेष ।  
जोहना० स० क्रि० बाट देना, दुहन ।  
जो० ना० पु० अविशेष, यत्र, अथ जत्र, यदि ।

जौतुक० ना० पु० यौतुक, दायजा ।  
जौन० सर्ग जा ।  
जौलौ० अथ जवनक ।  
ज्या० ना० स्त्री० माता, पृथा, वमानकरादह ।  
ज्याना० स० क्रि० पातना, निलाना ।  
ज्येष्ठ० ना० पु० जन्म महीना, वज्रभाई, गु०  
अथ उत्तम ।  
ज्येष्ठा० ना० स्त्री० अथारहका नक्षत्र ।  
ज्योति० ना० स्त्री० ज्योति, कालचन्दन ।  
ज्योतिर्गण० ना० पु० तरागण ।  
ज्योतिष० ना० पु० विद्या विशेष,  
रत्ननक्षत्र ।  
ज्योतिषी० ना० पु० ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता,  
राजनी, पण्डित ।  
ज्योतिष्मती० ना० स्त्री० मालवर्गा ।  
ज्योतिष्मान्० गु० प्रनापी, तेजस्वी ।  
ज्योत्स्ना० ना० स्त्री० चादनी ।  
ज्योनार० ना० स्त्री० ताना पाऊ, भाजन ।  
ज्वर० ना० पु० तप, ताप, बुलार ।  
ज्वरविनाशिनी० ना० स्त्री० गुरच, मर्जा ।  
ज्वरा० ना० स्त्री० मृदु, भौत ।  
ज्वरान्तक० ना० पु० विरायना ।  
ज्वरान० ना० स्त्री० जलन, आगकी जीभविशेष ।  
ज्वार० ना० पु० धन विशाप ।  
ज्वारी० ना० पु० बुधारी ।  
ज्वाला० ना० स्त्री० आच, ली, लपक, आग ।  
ज्वालामुखी० ना० स्त्री० स्थान विशेष जिस में  
अग्नि सदैव प्रवृत्तित रहती है ।  
[ भ ]  
भस्त्री० ना० पु० विना पत्त के वृद्ध ।  
भस्मट्ट० ना० पु० भगवा, घनराहद ।  
भस्मटी० गु० वडिन, भगपाल ।  
भस्मना० गु० विडविडा ।  
भस्मलाना० स० क्रि० टनटनाना, बनना औ  
पण्डाना ।



भ्रपकना० स० कि० भ्रलना, पत्ता हिलाना,

अ० कि० लपकना, भ्रपलेना, पलभारना ।

भ्रपकाना० स० कि० पलभारना, मटकाना ।

भ्रपकी० ना० स्त्री० लपक, मटकी, नौद । -

भ्रपट० ना० स्त्री० लपक, चढाई, टाट । -

भ्रपटना० अ० कि० लपकना, चढ़ि दौड़ना ।

भ्रपट्टा० ना० पु० धृवा, दौड, लपक । -

भ्रपट्टामारना० स० कि० भ्रपट्टेना ।

भ्रपलाना० स० कि० सगालना, धाना । -

भ्रपामपी० ना० स्त्री० उतारली, इडवकी ।

भ्रपात० ना० स्त्री० सृष्टि, जल्दी । -

भ्रपाना० अ० कि० भ्रपनीलना, टपाना ।

भ्रपास० ना० स्त्री० फूही, भासी ।

भ्रपासिया० गु० छली, अधमी ।

भ्रयकाना० स० कि० पावरा करना ।

भ्रविया० ना० पु० भ्रुवविशेष ।

भ्रुव्या० गु० जिस कते वा बकरे के बाल बड़े बड़े हों, भ्रुकाहुया ।

भ्रव्या० ना० पु० लपकना ।

भ्रमक० ना० स्त्री० चमक ।

भ्रमकड़ा० ना० पु० चमकीला, भ्रक ।

भ्रमकना० अ० कि० चमकना, नाचना ।

भ्रमका० ना० पु० प्रताप, ज्ञान ।

भ्रमकी० ना० स्त्री० भ्रमक, मलक, चमक ।

भ्रमभ्रम० अव्य० लगातार ।

भ्रमभ्रमाना० अ० कि० चमकना ।

भ्रमभ्रमर० अ० व० बूद बूद से ।

भ्रमाका० ना० पु० भ्रडी, वेगदार ।

भ्रमाम्रम० अव्य० भ्रममम ।

भ्रम्पा० गु० भ्रगाइया, टकामया, ना० पु० चगुल ।

भ्रर० ना० पु० सोता, भरना, भ्रडी, जलन ।

भ्ररना० ना० पु० सोता, भरना, भरनेवाला ।

भ्ररोव्या० ना० पु० भ्रमरी, सिङ्गरी । -

भ्रभ्रर० ना० पु० भ्रभ्रर ।

भ्रर्ना० ना० पु० सोता भ्रानेका करड़ा, बहून  
ठेदका रूप विशेष, अ० कि० भ्रडना, गिरना ।

भ्रल० ना० स्त्री० क्रोध, जलजलाहट, घापी  
उप्यता ।

भ्रलक० ना० स्त्री० चमक, उनाला ।

भ्रलकना० अ० कि० चमकना ।

भ्रलका० ना० पु० फर्पोला, फाला ।

भ्रलकाना० स० कि० चमकाना, उचल  
करना ।

भ्रलकी० ना० स्त्री० टटि ।

भ्रलभ्रल० ना० पु० चमक, लटक । -

भ्रलभ्रलाना० अ० कि० चमकना, धापित  
होना ।

भ्रलभ्रलाहट० ना० स्त्री० चमक, परपराहट

भ्रलना० स० कि० भ्रकना, अ० कि० सुधरना ।

भ्रलमल० ना० पु० चमक ।

भ्रलहाया० गु० वसनासी, चलित ।

भ्रलाभ्रल० गु० व्याविष्मान्, स्त्री० भ्रलक ।

भ्रलावोर० गु० चमकीला, भ्रडकीला, ना० पु०  
चमकट ।

भ्रलाना० स० कि० सुधारना, जोडना । -

भ्रलार० ना० पु० भाडी ।

भ्रर० ना० पु० मलली, मत्स्य ।

भ्ररकेतु० ना० पु० वामदेव, प्रसुभनजी । -

भ्ररि० ना० स्त्री० परजारी, लहसुन, सुधपर  
श्यामिता होनाता ।

भ्ररक० ना० पु० ताकना, हिरण वा पक्षियों  
का झुण्ड ।

भ्ररकड० ना० पु० भाडी ।

भ्ररकना० स० कि० भ्ररकेदेस्तना, ताकना ।

भ्ररकाभ्ररकी० ना० स्त्री० देखादासी, ताक  
ताकी ।

भ्ररख० ना० पु० हिरणविशेष ।

भ्ररभ्र० ना० स्त्री० बड़ा मनीरा, भ्रगडा ।

भ्ररभ्रट० ना० पु० भ्रगडा, रगडा ।

भ्ररभ्रभा० ना० पु० वीरविशेष, भ्रगडा ।

भ्ररभ्रिया० गु० क्रोधी, बलाहिया ।



भांभी० ना० स्त्री० सेल विशेष ।  
 भांपना० स० कि० दापना, छुपाना ।  
 भांवराना० शु० बाला ।  
 भांवली० ना० स्त्री० चौचला, हावभाव ।  
 भांवा० ना० पु० अयत पक्षी ईट ।  
 भांसना० स० कि० उभारना ।  
 भांसा० ना० पु० फुसलाना, धोखा ।  
 भांसी० ना० पु० बुदेलखण्ड में नगर विशेष ।  
 भांखू० ना० पु० फुसलाऊ, धोखाना ।  
 भाऊ० ना० पु० छोटा ब्रह्म विशेष ।  
 भाग० ना० पु० देना ।  
 भाभा० ना० पु० मादक वस्तु ।  
 भाङ्ग० ना० पु० छापाट्ट जो पीतलआदि का बनता है ।  
 भाङ्गखण्ड० ना० पु० वा, बजनाथ के पास का वा विशेष, शु० भण्डूला, धन ।  
 भाङ्गन० ना० पु० बहारन, कचरा, फर्क, बुडा, पौधन ।  
 भाङ्गना० स० कि० बहारना, फर्काकरना, परना, निकालना ।  
 भाङ्गन्त० अर्थ० सभी ।  
 भाङ्गा० ना० पु० उह, मलकायाग, हगना ।  
 भाङ्गी० ना० स्त्री० बधना, बन, जगल ।  
 भाङ्गू० ना० स्त्री० नदनी, बुहारी ।  
 भापा० ना० पु० टोकरी विशेष ।  
 भापा० ना० पु० चमड़ का पात्र, तेल, पी मापने के लिये ।  
 भापा० ना० पु० भावा ।  
 भापा० ना० पु० आगधी लज, शाना, सब, धन्य० कदथाइट ।  
 भापा० अर्थ० सब, तमाम, कमाल ।  
 भापी० ना० स्त्री० घाली, भाड़ी, दो सक्का नक्षत्र विशेष ।  
 भापल० ना० पु० कदथाइट, बड़ी टोकरी, धानुका घराना ।  
 भाखना० स० कि० बिकाना, खोपना, जोड़ना ।

भालर० ना० स्त्री० आचल, गुच्छे ।  
 भालरा० ना० पु० सोता, गु० बदाहुआ ।  
 भिभक० ना० स्त्री० चौक, भडक, डर भय ।  
 भिभकना० अ० कि० चौकना, भडकना, डरना ।  
 भिभकाना० गु० चौशाहुआ, भयवान् ।  
 भिभकाना० स० कि० भडकाना, डराना, चौकाना, भडकाना ।  
 भिभक्री० ना० स्त्री० भडकी, चौक, डर ।  
 भिभका० ना० पु० जिगनाहृत्, फूटाकोड़ी ।  
 भिभकाणी० ना० स्त्री० जिगनाहृत् ।  
 भिभका० ना० स्त्री० फूटीसीड़ी ।  
 भिभक० ना० स्त्री० धमकी, भवकी, गटकी ।  
 भिभकना० स० कि० बुडकना, दबकाना, धमकाना, भटकादना ।  
 भिभकाकिभक्री० ना० स्त्री० भगडा, भिगडी ।  
 भिभकी० ना० स्त्री० बुडकी ।  
 भिनहडा० } शु० सुलग ।  
 भिनहडा० }  
 भिरभिर० शु० जो पनलाधार से नहता, पतला ।  
 भिरभिरा० शु० तनह पतला ।  
 भिरभिराना० अ० कि० बहना, निरतिराना ।  
 भिलगा० ना० पु० सप्तकी पुरानी और टूटी रस्सा की बिगाना, शु० पुरानीखाना ।  
 भिलगा० ना० पु० पदानि विशेष ।  
 झिलम० ना० स्त्री० युद्धमें पहिरने के लिये लोहे की कुर्ती, टोपपर लोहेका बगेरा, बल्गर ।  
 झिलमिल० ना० पु० डार विशेष ।  
 झिलमिलाना० अ० कि० लहराना, चिनगी निकलना ।  
 झिशिका० ना० स्त्री० भांगुर ।  
 झिड़ी० ना० स्त्री० भांगुर, अति सूत्र चमड़ा, लोही ।  
 झीकना० अ० कि० पक्षिताना, शोकित होना, पीनक में घाना ।  
 झीगट० ना० पु० मारपी, पटनी ।  
 झीगा० ना० पु० जपघटी प्रतिद्व ।

झींगुर० ना० पु० कीट विशेष, घुरघुरा ।  
 झीण० }  
 झीन० } य० सूक्ष्म, पतला, बारीक ।  
 झीना० }  
 झीरका० ना० स्त्री० झींगुर कीट ।  
 झील० ना० स्त्री० बहुत बड़ा जलसाय, बड़ा ताल ।  
 झोसी० ना० स्त्री० पूड़ी, पुहार, छोरी २ वृद्धे ।  
 झुकना० अ० क्रि० निहुरना, जलना, क्रोधित होना, व्याकुल होना ।  
 झुमाना० स० क्रि० निहुराना, लचाना, क्रोधित करना, अ० रि० क्रोधित होना ।  
 झुकावट० ना० स्त्री० चलावट, निहुराई ।  
 झुंझलाना० अ० रि० विडविडाना, जल जलाना ।  
 झुठलाना० } स० क्रि० झूठा करना, मिथ्या  
 झुठालना० } मतलाना, अशुद्ध करना ।  
 झुराड० ना० पु० मडल, समूह, अस्तादा ।  
 झुराडा० ना० पु० पताका, झंडा ।  
 झुराड़ी० ना० स्त्री० भाड़ी, वृक्षाणां समूह ।  
 झुन० ना० पु० थोड़ी समानता ।  
 झुनझुनाना० ना० पु० तिलोना विशेष ।  
 झुनझुनी० ना० स्त्री० पेजनी ।  
 झुमका० ना० पु० कानका भूषण विशेष, पूल वा फलका गुच्छा, पूषण विशेष ।  
 झुरमुट० ना० पु० भाड़, मडला, भूमक ।  
 झुराना० अ० क्रि० सतना स० रि० सुताना ।  
 झुराने० य० स्त्री० ।  
 झुरियाना० स० क्रि० सिर्बाना, सोहना पोंडना, उज्ज्वल करना ।  
 झुरी० ना० स्त्री० शरीरके मासका सिक्का ।  
 झुना० अ० क्रि० फुन्हाना, सतना ।  
 झुलकाना० स० क्रि० जलादेना, सुलसाना ।  
 झुलना० अ० क्रि० लटकना, डलना ।  
 झुलमुली० ना० स्त्री० कानकेपात्र ।  
 झुलसना० अ० क्रि० झुलसाना, जलसाना ।  
 झुलसाना० स० क्रि० झुलसाना, जलादेना ।

झुल्ला० ना० पु० पहिरने का वस्त्र विशेष ।  
 झुंझल० ना० पु० क्रोध का आदेश ।  
 झुंझर० ना० स्त्री० भूमि निम में वर्षा में दो बार अन्न बोते हैं ।  
 झुंठनझांठन० ना० पु० झूठा, बचा ।  
 झुठ० य० मिथ्या, अशुद्ध ।  
 झुठा० य० मिथ्यवादी, झूठहथा, ना० पु० उच्चिष्ट खाना खानेके इहगया ।  
 झुना० ना० पु० पकानारियल, महीन वस्त्र, चूल्हे में ईंधन और आग रखना ।  
 झुमक० ना० स्त्री० झुमट ।  
 झुमझूम० ना० पु० घन, लटक लटक ।  
 झुमना० अ० क्रि० लहरना, हिलाना, ऊचना, उमडना, धरना ।  
 झुरना० स० क्रि० चूरना, पेड़से फल झड़ना, सतना ।  
 झुरा० गु० सूता, झुरभाया हुआ ।  
 झुल० ना० स्त्री० बेलादि पशुधों का झोडना ।  
 झुलना० अ० क्रि० डोलना, हिलना, लटकना, ना० पु० छद्म विशेष ।  
 झुल्ला० ना० पु० दिवोला, टारत वृक्ष ।  
 झोक० ना० स्त्री० टकेल, धका, भकौड़ ।  
 झोकनी० स० क्रि० टकेलना, फेरना, ईंधन भाड़ में डालना ।  
 झोटा० ना० पु० } शिरके पाखे के बाल मूले का  
 झोटो० ना० स्त्री० } हिलाना ।  
 झोपडा० ना० पु० } मदी छप्परका छोटा  
 झोपड़ी० ना० स्त्री० } घर ।  
 झोपा० ना० पु० फलका गुच्छा, बाल, धिराव ।  
 झोरा० ना० पु० गुच्छा ।  
 झोक० ना० स्त्री० भोक ।  
 झोका० ना० पु० भास, टोकर, टैस, भकौरा ।  
 झोझ० ना० पु० खाता, शोभ, बड़ापेट ।  
 झोझा० ना० पु० शोभा, बड़ापेट, बड़ापेट ।

भोटिंगं ना० पु० प्रतभद ।  
 भोटो० ना० स्त्री० चोर्ग ।  
 भोल० ना० स्त्री० बपड़े की सकोठ वा चुनत,  
 बचे ।  
 भोखा० ना० पु० भेला, अर्डीग ।  
 भोली० ना० स्त्री० धला ।  
 भौरा० गु० सौंसा, पीला ।  
 भौंसना० अ० कि० बहुत जलजाना ।  
 भौंसा० गु० जो बहुत जलमया ।  
 भौड़० ना० पु० भगड़ा ।  
 भौरी० ना० स्त्री० सेतवा घास ।

[ ट ]

टक० ना० स्त्री० स्वभान ताक, दष्टे ।  
 टकटकी० ना० स्त्री० धूर, ताक ।  
 टकना० अ० कि० सिलना सितजाना ।  
 टकराना० स० कि० टकर सिलनाना टकर  
 मारना, अ० कि० टगलना ।  
 टकवाना० स० कि० सिलवाना, डिलाना ।  
 टकसाह० ना० पु० स्थान, जहा रुपया आदि  
 बनाया जाता है ।  
 टकसालिया० } ना० पु० टकसाल का काम  
 टकसाली० } करनहार ।  
 टका० ना० पु० दा पस ।  
 टकाई० ना० स्त्री० सिलारि, कर ।  
 टकां० ना० स्त्री० ताक, दुका ।  
 टकुआ० ना० पु० तकला, तकुआ ।  
 टकैत० } गु० धनवान् मालदार ।  
 टकैता० }  
 टकोर० } ना० पु० चुचकारी, चुमकारी, अति  
 टकोरा० } खोग कच्चा आव, ढोल बजाने की  
 गति वा शब्द ।  
 टकोरना० स० कि० सेवना, ततारनु ।  
 टकौना० ना० पु० टवा ।  
 टकर० ना० स्त्री० टोकर, टलाठली, शिरसे शिर  
 सड़ाना, जैसे मद्र लड़ते हैं ।  
 टखना० ना० पु० गुल्फ, छुना ।  
 टघलना० अ० कि० पिघलना ।

टघलाना० स० कि० पिघलाना ।  
 टक० ना० पु० चार मारा की ताल, खड ।  
 टकण० ना० पु० सोहागा ।  
 टकोर० ना० स्त्री० धनुष व राद का शब्द ।  
 टकोरना० स० कि० धनुष की पनच भाडना ।  
 टगना० अ० कि० लट्कना ।  
 टगड़ी० ना० स्त्री० टाग, गाड़ ।  
 टख० गु० सूय, वृषण ।  
 टटका० गु० नया, नवान ना० पु० उतरा  
 पुतारा ।  
 टटकी० ना० स्त्री० नई, नवीन, ताजा ।  
 टटवानी० ना० स्त्री० छोटी घापी ।  
 टटिया० ना० स्त्री० टट्टा भाप्यं द्वार बंद करन  
 वा जो तृणादि की बगती ह ।  
 टट्टीहर० } स्त्री० पक्षीनिशप ।  
 टट्टीहरी० }  
 टट्टुआ० ना० पु० छोटा घोड़ा ।  
 टट्टुई० ना० स्त्री० छापी घापी ।  
 टटोलना० स० कि० थायागई करना, अगाल  
 यों से दवाना ।  
 टट्टी० ना० स्त्री० चादी बाण ।  
 टट्टर० } ना० पु० बडी टट्टी ।  
 टट्टा० }  
 टट्टी० ना० स्त्री० टाया, फरकिया ।  
 टट्टू० ना० पु० छाग घाडा ।  
 टट्टा० ना० पु० बलदा, लडाई, सप पगी ।  
 टप० ना० पु० बूद फाद बूद ।  
 टपक० ना० स्त्री० पीड़ा टपकन का शब्द ।  
 टपकना० अ० कि० टपपाना, चूना, चूना,  
 रिसना, टीसना ।  
 टपका० ना० पु० पानी की बूद, फल वा बूद  
 स पककर गिरता है यथा आव ।  
 टपकाना० स० कि० सुधाना, क्षनना रमना ।  
 टपजाना० अ० कि० भूलजाना, बूदनावा ।  
 टपपड़ना० स० कि० आँके कममे हापदना ।

टपना० अ० क्रि० मूलना, वृद्धना ।  
 टपाना० म० क्रि० भुलाना, धृदवाना, कुद-  
 वाना ।  
 टप्या० ना० पु० डाकभर, डाकघर, मैदान, जहाँ  
 तक गौली जाती है, रागिनीविशेष ।  
 टभक्र० ना० स्त्री० जो खन्द पानी गिरने से किसी  
 गढ़े वा बरतन में होता है ।  
 टभकना० अ० क्रि० चूना, टभरहोना, गोलना ।  
 टर० ना० स्त्री० शैली, ऐंड शु० मतवाला,  
 धचेत ।  
 टरटर० ना० स्त्री० बकबक ।  
 टरटराना० स० क्रि० बकबक करना ।  
 टरटरी० ना० स्त्री० बकबकी ।  
 टरना० अ० क्रि० हलना, टलना, हटना ।  
 टराना० स० क्रि० टलवाना, हटाना ।  
 टरी० शु० मगरा, दुष्ट, बकी, बलवान् ।  
 टरीना० स० क्रि० बकबक करना, मगराना, ऐ-  
 ठके बात करना ।  
 टलजाना० } अ० क्रि० हटाना, जाना  
 टलना० } रहना ।  
 टलप० ना० स्त्री० टुकड़ा, छाट ।  
 टलमलाना० अ० क्रि० डगमगाना, ललचाना ।  
 टलाटली० ना० स्त्री० मिष, हीलावासी ।  
 टलाना० स० क्रि० हटाना, छिपाना ।  
 टवर्ग० ना० पु० टकारादि पाचप्रत्तर ।  
 टसक्र० ना० स्त्री० चमक, टीस ।  
 टसकना० अ० क्रि० हिलना, चसकना, चटना ।  
 टसकाना० स० क्रि० हिलाना, चसकाना ।  
 टसना० अ० क्रि० मसकना, फटना ।  
 टहक० ना० स्त्री० गाठकी पीड़ा ।  
 टहकना० अ० क्रि० इतना, पीड़ापाना ।  
 टहटह० } ना० पु० छदरता, नवीन ।  
 टहटहा० }  
 \*टहना० ना० पु० धारता, दाल ।  
 टहनी० ना० स्त्री० शाखा वाली ।

टहल० ना० स्त्री० गृहस्थी, सेवा, काम ।  
 टहलना० स० क्रि० हवाखाना, नाहर फिरना ।  
 टहलनी० ना० स्त्री० गृहस्थिनि, दासी, लौड़ी ।  
 टहलाना० स० क्रि० चलाना, फिराना, हवा-  
 मिलाना ।  
 टहलुआ० ना० पु० सेवक, दास, परिश्रमी ।  
 टहलुई० ना० स्त्री० दासी, लौड़ी ।  
 टहो० ना० पु० जन्मते पुत्रका शब्द ।  
 टहोका० ना० पु० घमा, चपेया ।  
 टांक० ना० पु० टक ।  
 टांकना० स० क्रि० सीवना, लिलना ।  
 टांका० ना० पु० लपकी, तेषकी, साटन, जोइन ।  
 टांकी० ना० स्त्री० चट, लसरा, कुदरा, कुल्हाड़ी ।  
 टांकू० शु० टाकनेहारा ।  
 टांग० ना० स्त्री० ऐँसिसे घुटने तक का गाम,  
 लटकान ।  
 टांगन० ना० पु० पहाड़ी घोड़ाविशेष ।  
 टांगना० स० क्रि० लटकाना, हिलगाना ।  
 टांगी० ना० स्त्री० टांकी ।  
 टांच० } शु० हठीला, टेढ़, कुजाति, ऊजड़ा ।  
 टांचड़ा० }  
 टांट० ना० स्त्री० चादी ।  
 टांठा० पु० पोटा, बड़ा, टोस, फम ।  
 टांठाई० ना० स्त्री० पोटाई, बड़ाई ।  
 टांडू० ना० पु० मचान ।  
 टांडा० ना० पु० खेप, बानेजार की वस्तु ।  
 टाट० ना० पु० सनका विनाहुधा विडोना,  
 घमाइ ।  
 टाटक० शु० टटका ।  
 टाटा० ना० पु० दाटा, बड़ी टट्टी ।  
 टाटी० ना० स्त्री० टट्टी ।  
 टाड़ी० ना० स्त्री० छोटी कुल्हाड़ी ।  
 टानना० स० क्रि० तानना, खेचना ।  
 टाप० ना० स्त्री० घोड़े के खुरका शब्द, घोड़े  
 की घमले खुरोंकी मार ।  
 टापना० अ० क्रि० टापमारना, हूँदना ।

टापा० ना० पु० ताचा ।  
 टापू० ना० पु० दीप, जसीरह ।  
 टावर० ना० पु० छापी भाल ।  
 टारना० स० कि० टाला ।  
 टाल० ना० खा० टालमगल, छलकरके काल का  
 टा, अथवा लखड़ी आदिका दर, टाल, मलपुत्र  
 करन म छल ।  
 टालटोल० ना० पु० टालमगल ।  
 टालना० स० रि० छल करके कत करना वा  
 बदलना वा उड़ाना, हटाना ।  
 टालमटोल० ना० स्त्री० चकरमकर, हीला  
 बाजी ।  
 टाला० ना० पु० टाल ।  
 टिकटिकी० ना० स्त्री० विपक्का ।  
 टिकठी० ना० स्त्री० काकी विपदि वा चापारि,  
 अर्थी ।  
 टिकना० अ० कि० रहना टहरा ।  
 टिकली० } ना० स्त्री० निदी जिससे शिवा  
 टिकुली० } माथपर लगाता है ।  
 टिकाऊ० गु० ठहराऊ, चलाऊ ।  
 टिकाना० स० रि० रखना, टहराना, अ  
 वाप ।  
 टिकाव० ना० पु० टहरान, अक्षा ।  
 टिकासर० ना० पु० टिकनी जगह, स्थान ।  
 टिकासा० गु० टिकोहरा, टहरानाला ।  
 टिकिया० ना० स्त्री० बगी, अगाकड़ी, अगारोगी,  
 किसी वस्तुको बाध गानाकार चपरी वस्तु  
 वाप ।  
 टिकोर० ना० पु० लावदा, लोपड़ी ।  
 टिकड़० } ना० पु० अगाकड़ा, कभी गोलगोरी  
 टिकर० } विशेष ।  
 टिकली० ना० स्त्री० टिकी ।  
 टिकी० ना० स्त्री० टिकिया ।  
 टिकलना० अ० रि० विपलना, गलना ।  
 टिकलाना० स० रि० विपलाना, गलना ।  
 टिटकारना० स० रि० टिटकार करके पशुको  
 चपाना वा हांकना ।

टिटकारी० ना० स्त्री० टिटकार करना ।  
 टिट्टीहरी० } ना० स्त्री० पलाविशप ।  
 टिट्टिम० }  
 टिट्टा० ना० पु० } उड़ाना बीजा ।  
 टिट्टी० स्त्री० }  
 टिपका० ना० पु० रंगका चिह्न जो अंगुली स  
 लगा है ।  
 टिप्पना० ना० पु० टीका विवरण ।  
 टिप्पस० ना० स्त्री० अभिमान, दास ।  
 टिभाना० स० रि० प्रातदिन थकीला जीव  
 वा दना ।  
 टिभाव० ना० पु० प्रातदिन थोड़ी सी जीविका ।  
 टिमटिम० ना० पु० सरांग, शब्द ।  
 टिमटिमाना० अ० रि० झलझलाना, जगम  
 गाना ।  
 टिहरा० ना० पु० छोटागाव, पुरवा ।  
 टिहरी० ना० स्त्री० छापीली बस्ती ।  
 टोट० ना० स्त्री० करील का पल ।  
 टीक० ना० स्त्री० शिर वा गलब रहना ।  
 टीका० ना० पु० निलक, अपन, मधेका रहना  
 । अथ, अर्थ पहना वा लिखना, अह मे कना  
 को धोरसे लम्बवधन क तिर अथन का बुद्ध  
 जाना है, रायानक ।  
 टीटली० ना० स्त्री० टिट्टी ।  
 टीड़ी० ना० स्त्री० टिट्टी ।  
 टीप० ना० स्त्री० अथन, समझकर तस का  
 सेवना, सर उठाना, दवाह ।  
 टीपटाप० ना० स्त्री० बन्दन, मगल ।  
 टापना० स० रि० टपना, टपटना, निचाह  
 न, निरी टपना, टिपना ।  
 टीला० ना० पु० दाउ, पहड़ी ।  
 टीस० ना० स्त्री० टपना, टपक, धडक ।  
 टीसना० अ० रि० टीसमारना, धमकन,  
 धडक ।

दुक० गु० थोड़ा, अल्प, तरा ।

दुकड़ा० ना० पु० एक तरफ, चिट ।

दुकसा० गु० थोकासा ।

दुगा० ना० पु० धोरा पद ।

दुघा० } ना० पु० दुग्धा, गुण्डा, संपना, तुच्छ ।  
दुचा० }

दुजा० ना० पु० नहा ।

दुएदुक० ना० पु० स्थानावृत्त ।

दुएदुनाना० अ० कि० गुनगुनाना, धारण से  
अलापना, धीरे धीरे बचाना ।

दुण्ड० ना० पु० हाथ फटा, डाली का वृत्त ।

दुण्डा० गु० हाथ फटा, लूला, थपाक ।

दुण्डयाचढ़ाना० स० कि० हाथ पीछे बाधना ।

दुण्डी० ना० स्त्री० नाभि, ए० जिस स्त्रीका हाथ  
का या टूटा हो ।

दुसकना० } अ० कि० राकना, कुकना ।  
दुसुकना० }

दुं० ना० पु० वायु सहने का शब्द अर्थात् पादने  
का शब्द ।

दुगना० स० कि० चिचियाना, चिचोरना, सुट  
कना ।

दुंही० ना० स्त्री० नाभि, टूट ।

दुक० } ना० पु० टुकड़ा, टेलक का एक  
दुका० } शब्द ।

दुट० ना० स्त्री० सपन, पूटना, योग, लिखने में  
जो मूलके उपर लिखादिना, पुं ।

दुटना० अ० कि० टुकना, दौटना, चढ़ाई, करना,  
पूटना, फटना, फटहोना, गढ़ना छुटना, गलीका  
उपरस नीचे उतरना ।

दुटा० गु० फूटा, टुकड़े भया, ना० पु० टाटा,  
रूना ।

दुम० ना० स्त्री० थोड़ी बात, भूषणविशेष, धनरी ।

दुमट म० ना० पु० कुछ थोड़ी बात ।

दुसा० ना० पु० आकाश फल, मदारका फल ।

दुसा० ना० स्त्री० कंसल, कली ।

दुंगरा० ना० पु० } मङ्गलविशेष ।  
दुंगरी० स्त्री० }

दुंटा० ना० पु० करील वा कपास का पछा फल,  
फुसी ।

दुंटर० ना० पु० फलविशेष, आलका दीदा बदा  
दुधा अर्थात् आलका निकाम होजाना ।

दुंटा० ना० पु० } करीलका बदा पकाफल,  
दुंटी० स्त्री० } व्यर्थभाषण, कर्तारो  
विशेष, कटि, बेलका काथा ।

दुंटाआ० ना० पु० नरी, सासी, नोटी गलेकी  
पोगली, हठी ।

दुंटे० ना० पु० चेंचें, किलकिलाइट ।

दुंरे० ना० स्त्री० आड़, धूनी कि० पीना करी ।

टेक० ना० स्त्री० धूनी, अड़, टेकनी, प्रतिज्ञा ।

टेकन० ना० स्त्री० आड़, धाम ।

टेकना० स० कि० आड़ना, धामना, सहारा  
सगना ।

टेकनी० ना० स्त्री० टेकन, धूनी ।

टेकर० } ना० पु० टीला, उंचा ।  
टेकरा० }

टेढ़० ना० स्त्री० वक्रता, ऋज ।

टेढ़ा० गु० वक्र जो सूझा नहीं है ।

टेढ़ाई० ना० स्त्री० वक्रता, वाक्यन, ऋज ।

टेढ़ी० ना० स्त्री० गर्व, अहंकार, हट, नाफी ।

टेनी० ना० स्त्री० धोरा दण्ड जो थहर रखते हैं ।

टेम० ना० स्त्री० शीपक की जलन वा लान वा  
जोति ।

टेरे० ना० स्त्री० स्वर, लय, पुकार ।

टेरना० अ० कि० पुकारना, ललकारना, अ-  
लारना ।

टेलना० सु० कि० पेलना, घुसेड़ना ।

टेच० ना० स्त्री० चात, चाट, समान ।

टेचकिया० ना० स्त्री० छोटी टेचकी ।

टेचकी० ना० स्त्री० धूनी, तग्मा थाम्मल ।

टेचना० म० कि० बादना, बाढ़ रखना वा  
रखाना ।

देवा० ना० पु० जमपत्नी का देखना वा िका  
लना, चार ।  
देहरा० ना० पु० धौगान, पुरवा ।  
देहला० ना० पु० विवाह की रीति ।  
दोआई० ना० स्त्री० दुआई ।  
दोंटा० ना० प० पगवा, सुरी, पोड़, नारत की  
पुड़िया, नासका पोड़ ।  
दोंटी० ना० स्त्री० पर्माला, मारी ।  
टोक० } ना० स्त्री० अण्कान, रुवाय  
टोकटाक० } छड़छाड़ ।  
टोकना० स० कि० पूड़ना, रोचना, बाहलगाना,  
सुरा दृष्टि स दखना ।  
टोकरा० ना० पु० टोरा, बलिया, आया ।  
टोकरी० ना० स्त्री० डारी, बलिया ।  
टोकाटोकी० ना० स्त्री० रुवाय, पूछपाछ, छट  
छाड़ ।  
टोटका० ना० पु० मोहनी लगना, वशीकरण ।  
टोटक० ना० पु० पूष विशेष ।  
टोटा० ना० पु० पटी, हानि, यूनता ।  
टोटी० ना० स्त्री० रागिनी निराय ।  
टोना० ना० पु० जादू वशीकरण, स० कि० ट  
दालना ।  
टोनहा० ना० पु० गमा, आ-ना, नहा, नूनदुगर ।  
टोनहाई० }  
टोनही० } ना० स्त्री० गटिगी जादूगरी ।  
टोनहैया० }  
टोप० } ना० पु० बाननक शिरदकने का वस्त्र  
टोपा० } निराय ।  
टोपी० ना० स्त्री० शिर दकने का वस्त्र विशेष,  
बूताइ ।  
टोरा० ना० पु० भीतिमें पानी के बचाव के लिये  
बाइलगाकर धारा अर्थात् धम्ना निकालने की  
वस्तु, दास ।  
टोल० ना० स्त्री० समा, मगति ।  
टोला० ना० पु० मण्ड, स्त्री का मुह्ला ।

टोली० ना० स्त्री० टोल, समूह ।  
टोहना० स० कि० दूड़ना, टगलना ।  
टोना० ना० पु० टनहा ।  
[ ठ ]  
ठई० ध० कि० ठहराई, मुकररका ।  
ठकठक० ना० पु० बहुत परिश्रम का काम्य,  
युद्धता शब्द विशेष ।  
ठकठकाना० स० कि० टारना, खल्लगना ।  
ठकठकिया० ना० पु० बलेडिया, भगडालू ।  
ठकटला० ना० पु० धकापत्नी, भगडा बलहा ।  
ठकठैआ० ना० स्त्री० पनसोई ।  
ठकुरसोहाती० पु० मुसदेखी बातवहना, श्रौता  
क मनभापित वार्ता बरना ।  
ठकुराई० ना० स्त्री० ईश्वरता, प्रमानता, राय ।  
ठकुरायन० ना० स्त्री० टाकुरवी रना, रानी ।  
ठग० ना० पु० गटिग, चार, प्रतारक, धाखा  
दाहरा ।  
ठगाई० ना० स्त्री० प्रतारण, चारी ठगाई ।  
ठगना० स० कि० छलना, चोराना, धासदेना ।  
ठगनी० ना० स्त्री० टगकी स्त्री, चोटी ।  
ठगाई० ना० स्त्री० प्रतारण, चारी, छल ।  
ठगाना० स० कि० छलाना, चारीकरण ।  
ठगिन० ना० स्त्री० टगिनी ।  
ठगिया० ना० पु० टग, प्रतारण, चार, छली ।  
ठगौरी० ना० स्त्री० टाई ।  
ठकरा० ना० पु० बमडा, भाड़ा ।  
ठठ० ना० पु० नीड़, मडली ।  
ठठक० ना० स्त्री० रुवाय, अण्कान, दर निगान ।  
ठठकना० ध० कि० म्कना, अण्कना, आश्चर्य  
में हागाना, गिना ।  
ठठना० स० कि० बनाना, सजाना, दुरुस्तकरण,  
ध० कि० गिना, मारेजाना ।  
ठठरा० ना० पु० छाड़, धेरा ।  
ठठरी० ना० स्त्री० टाट, रपी, दुर्मल शरीर ।

ठठाना० अ० कि० पीटना, मारना, कूटना, दुःख  
में अपना शिर पीटना, सजाना ।

ठठेरा० ना० पु० कशेरा, आतिथिशेष ।

ठठेरिन० } ना० स्त्री० ठठेरेकी स्त्री ।  
ठठेरी० }

ठठोर० } गु० हूँसोड, ठठोराज ।  
ठठोल० }

ठठोली० ना० स्त्री० परिहास, हाठी ।

ठठु० ना० पु० ठठ ।

ठठ्ठा० ना० पु० परिहास, खिची ।

ठठ्ठा० ना० पु० शरीर के बीचका बाँध, मूँडा ।

ठण्ड० ना० स्त्री० शीत, जाड़ा, हिम ।

ठण्डक० ना० स्त्री० शीतलता, सरदी ।

ठण्डा० गु० शीतल, सर्द ।

ठण्डाई० ना० स्त्री० शीतलता, ठण्डी श्रीपथि,  
जुड़ाई, ननार्हुई भग ।

ठण्डी० ना० स्त्री० शीतल ।

ठण्ढा० गु० जाड़ा ।

ठनकना० अ० कि० धीसना, टपकना, झनकना ।

ठनठनाना० अ० कि० झनझनाना, झनकना ।

ठनाक० ना० पु० झनक, झनकार ।

ठन्ना० अ० कि० ठहरना, जचना ।

ठपना० अ० कि० छपना, छपजाना, भरजाना ।

ठप्पा० ना० पु० छापनेका यंत्र, साचा, सिका,  
ठस्सा ।

ठमकना० अ० कि० मकड़ाकर चलना ।

ठरन० ना० स्त्री० नडतजाड़ा, नही सर्दी ।

ठरिया० ना० पु० माटीका हुकाविरोध ।

ठरना० ना० पु० मारक वस्तुविरोध, अ० कि०  
ठहरजाना ।

ठवन० ना० स्त्री० चाल, उठनेकी रीति ।

ठसक० ना० स्त्री० महल, पति, दस्ताव, सजाव ।

ठसकना० अ० कि० ठसकना, स० कि० पटकना ।

ठसफा० ना० पु० पक्की, अहकार ।

ठसनी० ना० स्त्री० ठसने की वस्तु ।

ठसाठस० गु० कचाकच, मचामच, गचागच ।

ठस्सा० ना० पु० अहकार, साचा, टाचा ।

ठहरठहर० गु० कलहना ।

ठहरना० अ० कि० रुकना, रहना, ठहरहाना,  
निष्पना ।

ठहराव० ना० पु० रुकान, निपटान ।

ठहराना० स० कि० रखना, रोकना, निष्पाना ।

ठहाका० ना० पु० धमारा, भदाका, भडाका ।

ठां० } ना० पु० स्थान, जगह ।  
ठांव }

ठांसना० स० कि० ठूसना, घुसेटना ।

ठाई० ना० स्त्री० ठाव, ठौर ।

ठाड० ना० पु० ठांव ठौर ।

ठाकुर० ना० पु० ईश्वर, देवता, शालग्राम,  
मूर्तिदस, पति, राजा, नाई ।

ठाकुरद्वारा० ना० पु० देवालय, चौहरा ।

ठाठ० } ना० पु० ठठरी, सैतार, चुकाता, भुङ्क,  
ठाट० } भौकभक, समूह रचना ।

ठाड़ा० गु० सड़ा, सीधा भी बेड़ा नहीं ।

ठाढ० गु० उचा, श्रीपू, सड़ा ।

ठाढ़ा० } गु० सड़ा, सड़ी ।  
ठाड़ी० }

ठानना० स० कि० मन लगाना, ठहराना, नि  
श्चय करना ।

ठाला० गु० साली, कार्यरहित समय ।

ठाहर० ना० पु० ठिकाना, जगह ।

ठिकरा० ना० पु० पूटे बर्तनरा टुकड़ा, ठीकरा ।

ठिकाना० ना० पु० स्थान, वास, छोर तिथाना ।

ठिकानी० गु० ठिकनिवाला, ठिहारा ।

ठिगना० गु० नाग, चौथा नासन बीठा ।

ठिठक० ना० स्त्री० आश्चर्य में होना, भयपरा  
होना ।

ठिठकना० अ० कि० भयपरा होकर वा आश्च-  
र्यित होकर सड़ा होना ।



ठिठरना० अ० कि० जमना, ठठ, होना, अक  
इमाना ।

ठिठरा० गु० अरुडा, शय, जडाया हुआ ।

ठिठराहट०  
ठिठुर० } ना० स्त्री० ठण्डक, अरुडाहट ।

ठिठुरना० अ० कि० ठिठुरना ।

ठिठुरा० गु० ठिठुरा ।

ठिलिया० ना० स्त्री० षडा, भगरी ।

ठीक० गु० शुद्ध, पूरा, याग्य, सत्य, उचित  
अदाता, लीचक, ना० पु० जोड ।

ठीकठाक० गु० शुद्ध, योग्य, दुरुस्त ।

ठीकमठाक० अ० शुद्धता से ।

ठिकिरा० ना० पु० ठिकरा ।

ठीकरी० ना० स्त्री० छाया ठिकरा, गिटकी योनि  
में स्थानविशेष ।

ठीका० ना० पु० भाडा, इकैता, इजारह ।

ठुकराना० स० कि० दोर मारना ।

ठुड़ी० ना० स्त्री० ठोड़ी, जोहरी वा मखाना  
जो भूने से खिला नहीं अर्थात् खावा नहीं  
भया ।

ठुनुक० ना० स्त्री० सिसक ।

ठुनुकना० अ० कि० सिसकना ।

ठुमक० ना० स्त्री० सुदरघालसे चलन, पैटक ।

ठुमकना० अ० कि० सुडौल से चलना, अरुड  
से चलना ।

ठुमका० गु० छेडा, नाग, पाडा ।

ठुमकी० गु० आलसी, डिगनी, ना० स्त्री० पतग  
को उडाके हिलाग ।

ठुसकना० अ० कि० हवा छोडना, पारना, धीमे  
धीमे रोना ।

ठुसकी० ना० स्त्री० शब्दरहित वायुको छोडना ।

ठुसाना० स० कि० ठसाना, ठासना ।

ठूठ० ना० पु० पत्ररहित लोड़ी हुई जली वा बाल  
पात्ररहित वृक्ष, दुग्ड ।

ठूठा० } गु० तुपडा वृक्ष जिसकी डालियाँ  
ठूठियाँ } वागिद, सखावृक्ष ।

ठूठी० ना० स्त्री० गूठी, अनाजकी ।

ठेवुना० ना० पु० टपना ।

ठेंगा० ना० पु० लाठी, अग्रुष्ट, लिंग ।

ठेंगावाजना० स० कि० बिगाडना ।

ठेंठ० गु० निपट, चोखा, केवल, निरा ।

ठेंठी० ना० स्त्री० कानका मेस, बडा, धोती ।

ठेक० ना० स्त्री० टकनी, आड, बडाबारा जो  
अध से भरा है ।

ठेका० ना० पु० टडा, टीका, इजारह ।

ठेकी० ना० स्त्री० शिरस बोझ उतारके मुस्तानेका  
स्थान, जहा अध वा लकडीका भज है ।

ठेई० ना० स्त्री० टडा ।

ठेलना० स० कि० टकेलना, रलना, भोकना,  
हगना ।

ठेला० ना० पु० धका ।

ठेलाठेली० ना० स्त्री० धकाधकी ।

ठेवना० ना० पु० उटना, जाड ।

ठेस० ना० स्त्री० ठावर, चपेट, भोर ।

ठेसना० स० कि० धदना, ठाकरलगाना, ठासना

ठेसरा० ना० पु० नाकचढो ।

ठोंकना० स० कि० मारना, गाडना, अगुली से  
बजाना ।

ठोंग० ना० स्त्री० चोंच वा अगुली से मारना ।

ठोंगना० } स० कि० चोंचियाना बिहारना ।  
ठोंगना० }

ठोंक० ना० स्त्री० चोंच, ठोर ।

ठोक० ना० स्त्री० मार, ठोके का शब्द ।

ठोकर० ना० स्त्री० ठस, ठसलगनेका बस्तु, पा  
वकी हल ।

ठोड़ी० ना० स्त्री० ठुडा ।

ठोल० ना० स्त्री० चोंच ।

ठोला० ना० पु० शुकादिके, निमित्तपान जिसमें  
दानापानी रसत है अगुलियों की गाठ ।

टोस० शु० टाटा, जो खोखला नहीं है ।

टोसना० स० क्रि० टासना ।

टोसाई० ना० स्त्री० टाटार, टैना ।

टौर० ना० स्त्री० स्थान, जगह ।

[ ड ]

डकराना० थ० क्रि० डूकमार के रोना ।

डकार० ना० स्त्री० उग्रार, आरोग्य ।

डकारना० थ० क्रि० डिकारना, हुकारना और पचात्राना ।

डकैत० ग० पु० डह, चोर, बन्मार ।

डकैती० ना० स्त्री० चौरी, बन्मारी, छान ।

डकौत० } ना० पु० वर्षेसकरकी जातिविशेष

डकौतिया० } जिसका बाप ब्राह्मण और महरारी  
व्यालिन थी ।

डग० ना० पु० चलावा, फाल, पद, डग ।

डगडगाना० थ० क्रि० हिलना, चमचमाहट स  
चलना ।

डगना० थ० क्रि० हिलना, डिगना ।

डगमग० शु० चचल, चलापमान ।

डगमगाना० थ० क्रि० खडखडाना, हिलना ।

डगर० ना० स्त्री० मार्ग, सडरु, पैडा ।

डगरना० थ० क्रि० हिलना, फिरना ।

डगरा० ना० पु० नासका बनायाहुआ पात्र  
विशेष ।

डगा० ना० पु० दुर्बल घोड़ाविशेष ।

डङ्ग० ना० पु० चेमक, निम्बू, आदि का विषयुक्त  
फाग ।

डङ्गा० ना० पु० दहा, धौगा, नक्कारह ।

डङ्गिनी० ना० स्त्री० डाकिनी ।

डङ्गियाना० स० क्रि० डकमारना, चमकना ।

डङ्गिला० शु० जिस जनुके डकरो ।

डटना० थ० क्रि० धरना भिड़ना, वकवा, बनना ।

डटैया० ना० पु० टानेवाला ।

डटना० थ० क्रि० जलनाना, मुननाना ।

डडमुण्डा० शु० दादीरहित ।

डडियल० शु० दादीवाला ।

डडुआ० } शु० जलाहुआ, जलगया ।

डडोई० } शु० जलाहुआ, जलगया ।  
डडड० ना० पु० बाहू, भुजा, व्यायाम करना,  
साधनविशेष, डडट ।

डडडधत० ना० स्त्री० दण्डन प्रभाम विशेष,  
पायेंलागी ।

डडडा० ना० पु० सोंग, सीढ़ीका पाया, दण्ड ।

डडिडया० ना० पु० शियों के पहिनेका बेल  
विशेष और बाजारका कर उगाइनेदारा ।

डडडी० ना० स्त्री० बेंदी, बेंड, तराजूकेपलङ्गोंमें  
लगानेका फाट, सयासी, हरसिपाइ आदि की  
नलक डडडी ।

डडडीर० ना० स्त्री० धारी, लवीर, लीर ।

डडटना० थ० क्रि० पुकारना, टाटना, सरपट  
देना ।

डडफ० ना० पु० बाना विशय ।

डडफारना० थ० क्रि० डूकमारना, विलसना ।

डडफाली० ना० पु० छप बनानेदारा ।

डडय० ना० पु० बल, पराक्रम, जव, चमका  
मिससे कुथा बनाने हैं ।

डडयका० ना० पु० टटका, वृषभानल, शु० मोटा ।

डडडयाना० थ० क्रि० भरना, जिस आस थपू  
स भुआती है ।

डडरा० ना० पु० सीताभूमि, लिवार, छपरा ।

डडरिया० शु० सधवा, बायाहाथ, वामदथा ।

डडोना० स० क्रि० डवाना ।

डडया० ना० पु० बधी डिविया ।

डडनू० ना० पु० लोहेका कर्डी ।

डडमरुआ० ना० पु० छटना की गाठि ।

डडमरु० ना० पु० बाना विशय ।

डडमरुमध्य० ना० पु० डडमरुका मध्यभाग,  
साधनाय जो अपन से दो बडे स्थलेके भगों  
का मिलाने ।

डडर० ना० पु० मय, मीत, राका ।

डडरना० } थ० क्रि० भयलाना ।

डडरपना० } थ० क्रि० भयलाना ।

डरपोक० गु० डरनेवाला, भयवान् ।  
 डरपैया० गु० भयवान्, हेठा, डरपाक ।  
 डराऊ० गु० भयकर ।  
 डराक० गु० भयवान् ।  
 डराना० } स० कि० भय दना, भय खि  
 डरावना० } लाना ।  
 डरी० ना० स्त्री० मासकी बीगी, छोटादुक्का,  
 टेला ।  
 डरीला० गु० मांस बाणियोंवाला ।  
 डरीना० गु० डराऊ ।  
 डलया० ना० पु० टाकरा ।  
 डलयाना० स० त्रि० भौंरवाना गिरवीन् ।  
 डलवाना ।  
 डला० ना० पु० बड़ा टुकड़ा वा दला टाकरा ।  
 डलिया० ना० स्त्री० छाटी टाकरी ।  
 डली ना० स्त्री० छाया टुकड़ा वा दला,  
 धपारी ।  
 डस० ना० स्त्री० तराजूकी रस्सी दरा ।  
 डसना० स० कि० कटना, चमकना बरु  
 याना ।  
 डसौना० ना० पु० विछौना ।  
 डदरु० ग० पु० गुहा, रोह चोरगड्ढा, लालच,  
 विगाह, डीर ।  
 डदकना० थ० त्रि० डीकना लालच करना  
 विगाहना ।  
 डदकाना० स० त्रि० निराशकरना, छलवाना,  
 विगाहना ।  
 डददहा० गु० प्रप्रकृत, तिलाहुआ, चेतय ।  
 डददहाना० थ० कि० सिलना, फूलना ।  
 डाक० ना० पु० जगजगा, विच्छुआ देवा डक ।  
 डाग० ना० स्त्री० लाठी, पहाड़की चोरी ।  
 डागर० गु० दुर्बल, ना० पु० दुर्बलपशु मूला  
 वा फूलाहुआ पत्ता ।  
 डाटना० स० त्रि० ताड़ित करना घुड़कना ।  
 डांठल० ना० पु० } लण्डी, बों ।  
 डाटा० ना० स्त्री

डांड० ना० पु० बदला, दड, ताड़ना, नासुखेवने  
 वा थल, चापू रीढ़, डरडीर ।  
 डांडना० स० कि० बदला लना, दण्डलना ।  
 डांडा० ग० पु० मेंड, सताना धूरा ।  
 डांडी० ना० स्त्री० खेरीहारा, खेवया ।  
 डामाडोल० ना० पु० श्वर स उधर रचकना ।  
 डांवरु० ना० पु० शरका बच्चा ।  
 डांस० ग० पु० डक, मखड़ ।  
 डाक० ना० स्त्री० टप्पा, अतररहितामन, डाकिनी  
 वा पति, डाका, डाक ।  
 डाकना० स० कि० घमनकरना, उछालकरना ।  
 डाका० ना० पु० चारोंका धावा ।  
 डाकिनु० } ना० स्त्री० हायन, उईल, या  
 डाकिनी० } गिना भेद ।  
 डाकिया० ना० पु० बार्, डाक सजानवाला ।  
 डाकी० गु० लाउ, पट्ट ।  
 डाकु० ना० पु० डनेत, चार, बटमार ।  
 डाट० ना० स्त्री० घुड़क, धमर, टट्टी ।  
 डाटना० स० कि० टाटना, माथसे दस्तना ।  
 डाढ़० ना० स्त्री० पिछल दान ।  
 डाड़ी० ना० स्त्री० टुड़ीपर क बाल ।  
 डाय० ना० पु० परतला बच्चा नारियल, वृथ  
 निरोप ।  
 डायर० ग० पु० हाथ धोका पात्र, गाल तालाब,  
 कावर ।  
 डाम० ग० पु० बुशा, डान दर्भ ।  
 डामर० ना० पु० धूना, राल ।  
 डायनू० ना० स्त्री० डाकिना ।  
 डार० ना० स्त्री० बाली, डाल ।  
 डारना० स० कि० डालना ।  
 डारिम० ना० पु० दाहिम, धनोरफल ।  
 डाल० ना० स्त्री० डाली, शाखा, टहनी ।  
 डालना० स० कि० फेंकना, घुसकना, भोंकना ।  
 डाला० ना० पु० डोला, बड़ीडाली ।  
 डाली० ना० स्त्री० टहनी, शाखा फलादिका भेद,  
 पुष्पादि रखने के लिये भासरा पाय ।

ढाक० ना० पु० पलाशकावृक्ष, शुद्धत छुपान, साय  
वा निष उतारने में एक नुमाका बना ।

ढाका० ना० पु० बंगालका नगर विशेष ।

ढाटा० ना० पु० अग्नीवपन, ष्टा ।

ढाटी० ना० स्त्री० बसन, यत्रया, फादा जा धोके  
व सुस्तर बाधने हैं ।

ढाड़स० ना० स्त्री० धारम, सूमापन, दिवासा  
शाति भरोमा ।

ढाड़िन० ना० स्त्री० दाढ़ी का रत्न ।

ढाढी० ना० पु० जातिविशेष जा बन्ना और  
गाते हैं ।

ढाना० स० क्रि० गिराना, उजाड़ना ।

ढावर० पु० मेला, गदखा ।

ढावा० ना० पु० जाल, आरी, आलता ।

ढार० ना० स्त्री० भाति, वानका गहना विशय ।

ढारना० स० क्रि० ढालना ।

ढारी० पु० मरीहूर ।

ढारू० पु० ढालू ।

ढाल० ना० पु० उतारू, ना० स्त्री० फरी ।

ढालना० स० क्रि० साचे में उतारना, औधाना,  
विगाड़ना ।

ढालवा० पु० उतरू, जो साचे में उतारागया ।

ढालू० पु० उतारू, बेंडा, विगाड़, साचेका उता  
रना ।

ढाड़ना० स० क्रि० गिराना, उजाड़ना ।

ढाहा० ना० पु० नदीका कनाका ।

ढिग० ना० स्त्री० पात, समीप ।

ढिठाई० ना० स्त्री० चचलता, सुस्तारी ।

ढिड़िम० ना० पु० ट्ठीहरी, पत्नी ।

ढियका० ना० पु० उभार, गुमहा ।

ढिमढिमी० ना० स्त्री० सनरी विशेष ।

ढिल्लड़० } पु० आलसी, सुस्त ।

ढिल्लर० } पु० आलसी, सुस्त ।

ढीठ० } पु० चचल, निडर, बध्दव, धीतल

ढीठा० } मगरा ।

ढीठींदे० पु० धीतली वा चचलता से ।

ढील० ना० स्त्री० आसक, मिलान, दर, ष्ट ।

ढीलारि० ना० रया० शिथिलता, आलस्य ।

ढीहा० ना० पु० धीला ।

ढुकना० अ० क्रि० झुकना, शिरझुमाना ।

ढुकी० ना० स्त्री० ताक ।

ढुरना० अ० क्रि० फिरना, लुटकना ।

ढुलना० अ० क्रि० डलना, दरना मरना ।

ढुलारि० ना० स्त्री० उठाना वा पैसा वा काम ।

ढुलमाना० } स० क्रि० उठवाना छलकाना ।

ढुलाना० } स० क्रि० उठवाना छलकाना ।

ढूआ० ना० पु० दूदा, मेंड, मिट्टीका पिण्ड ।

ढूढंडंढ० ना० पु० सान, झाडा भूडा ।

ढूढन० ना० पु० सोज ।

ढूढना० स० क्रि० सोजना, तलाराकरना ।

ढूढार० ना० पु० देशविशेष ।

ढूढिया० ना० पु० जैनताओं में भित्तारी, पु०

ढूढनेवाला, द्वाव ।

ढूक० ना० स्त्री० ढुकी, ताक, पद ।

ढूकना० अ० क्रि० बंद करना, मूचना, धुंकि  
पाम आना पैठना ।

ढूसर० ना० पु० जातिविशेष ।

ढेकली० ना० स्त्री० कूपसे जन निमालन का  
यन्त्र ।

ढेका० ना० पु० } कूत्ने का यन्त्र ।

ढेकी० ना० स्त्री० } कूत्ने का यन्त्र ।

ढेहस० ना० पु० तरकारी विशेष ।

ढेड़ी० ना० स्त्री० पोस्तानामूल ।

ढेड़ा० ना० पु० गर्भ, गर्भता, बहापि, दानोंपरी  
का बीच, गदरा ।

ढेक० ना० पु० पवीविशेष ।

ढेहुली० ना० स्त्री० रूही, चरली ।

ढेड़० ना० पु० चमारकीजातिविशेष, काँया ।

ढेड़ी० ना० स्त्री० वानका गहनाविशेष ।

ढेर० ना० पु० रात, टाल, बहुताय ।

ढेरा० ना० पु० भेगा, जिससे बाधी एंठे हैं ।

ढेरी० ना० स्त्री० धोण्डेर ।

देलाना० ना० पु० माटीना लौदा ।  
 देलाचौथ० ना० स्त्री० माटीकी चौथ ।  
 देया० ना० स्त्री० श्रद्धया ।  
 देयाटेकर० गु० जो उजड़गया ।  
 दोचा० ना० पु० परं वा लोहारमें फल या फूल जो  
 छोटे लोग लाते हैं ।

दोऊ० ना० स्त्री० दण्डवत्, प्रियात् ।  
 दोरुना० स० कि० पीना, घूटना ।  
 दोका० ना० पु० पत्थर आदिका टुकड़ा, टेर ।  
 दोडा० ना० पु० लड़ना ।  
 दोना० स० कि० लेनाना, उठाना ।  
 दोर० ना० पु० मायगोरु ।  
 दोरा० ना० पु० ताकिया जो मुसल्मान बनाते हैं ।  
 दोरी० ना० स्त्री० दीरी चौप ।  
 दोल० ना० पु० बाजा विशेष ।  
 दोलक० ना० पु० छोटा दोल ।  
 दोलकिया० ना० पु० दोलबनानेहारा ।  
 दोलकी० ना० स्त्री० छोटीदोल ।

दोलन० ना० पु० प्यारा, रसिया ।  
 दोलना० ना० पु० दोल के समानयंत्र विशेष ।  
 दोला० ना० पु० झोकरा, रागविशेष ।  
 दोलिया० } ना० पु० दोल बनानेहारा ।  
 दोलैत० }  
 दोली० ना० स्त्री० दोली पानका परिमाण ।  
 दोचा० गु० सादेचार ४२ ।  
 दोरी० ना० स्त्री० डोरी, दहक, चौप ।

[ त ]

तई० अर्थ० तलक, लग, ना० स्त्री० दृष्टि, ताज ।  
 तऊ० अर्थ० तीभी, तपापि, तदपि ।  
 तक० अर्थ० तलक, लग, ना० स्त्री० दृष्टि, ताक,  
 तराजू, तखड़ी ।  
 तकतक० ना० पु० पशु आदि चलान का शब्द ।  
 तकना० स० कि० ताक लगाना, अ० कि० दृष्टि  
 देना ।  
 तखला० ना० पु० तख्खा ।

तकली० ना० स्त्री० अटेन, परेता ।  
 तकवाहा० ना० पु० रखक, चौकीदार, पहरू ।  
 तकाना० स० कि० दुकी लगाना, लखाना ।  
 ताकिया० ना० स्त्री० सिरहाने की वस्तु  
 विशेष ।

तकुआ० ना० पु० सूत कातों के लिये लोहेकी  
 शलाका जो चरते में लगती है ।  
 तक० ना० पु० मछ, छाव ।  
 तखड़ी० } ना० स्त्री० तुला तराजू ।  
 तखरी० }  
 तखान० ना० स्त्री० बर्द ।  
 तगण० ना० पु० जिसके अतना अचर लपड़ोता  
 है, गण विशेष ।  
 तगना० स० कि० तागा उलाना ।  
 तगाई० ना० स्त्री० सिलाई, सिलाईका पैसा ।  
 तगाना० स० कि० तागा उलाना, सिलाना ।  
 तग्गा० ना० पु० सीने के लिये बनाया हुआ  
 सूत ।

तगड़ी० ना० स्त्री० करघनी ।  
 तगा० ना० पु० दो पैसा ।  
 तचना० अ० कि० गर्म होना ।  
 तचाना० स० कि० गर्म करना या करना ।  
 तच्छरीर० ना० पु० उसका शरीर ।  
 तज० ना० पु० श्रापण, वृष्ट विशेष ।  
 तजन० ना० स्त्री० धोड़न, त्यागन ।  
 तजना० स० कि० त्यागना, धोड़ना ।  
 तजिय० अर्थ० धोड़िय ।  
 तज्जन० ना० पु० उसका मनुष्य ।  
 तट० ना० पु० तीर, पात, किनारा ।  
 तटस्थ० गु० तीरवासी ।  
 तटिनी० ना० स्त्री० नदी ।  
 तट्टीका० ना० पु० उसका टीका ।  
 तट्ट० ना० पु० पक्ष ।  
 तट्टक० ना० स्त्री० तर्क, टेढ़, आड़ ।  
 तट्टकना० अ० कि० फटना, घूटना ।  
 तट्टका० ना० पु० शत काल, भीर ।

तडके० अर्थ० संवरे ।  
 तडतडाना० अ० कि० रिस्तूना, भिरभिराना,  
 षट्ने का शब्द ।  
 तडप० ना० स्त्री० चटफ, भपट, उचर, उ  
 तावली ।  
 तडपना० अ० कि० तूलकाना, धडकना, बुद  
 कना, फफगना, हाथ पार पटकना ।  
 तडपाना० स० वि० तलपाना, धडकाना ।  
 तडपीला० अ० पु० पुतीला, चटपटिया ।  
 तडफ० ना० स्त्री० व्याकुलता, धडक ।  
 तडफडाना० अ० कि० धडकना, घवराना ।  
 तडफडाहट० ना० स्त्री० व्याकुलता, घवराहट ।  
 तडफना० अ० वि० व्याकुल होना, षटफडाना ।  
 तडफाना० स० कि० तडपाना ।  
 तडा० ना० पु० टापू, द्वीप ।  
 तडाक० अ० भडकीला, चमकीला ।  
 तडाका० ना० पु० मारेना का शब्द, चयाका ।  
 तडाग० ना० पु० टालाव, पोखरा ।  
 तडाहा० ना० पु० जलकी धारा, तरङ्ग ।  
 तडाया० ना० पु० चटक, भडक ।  
 तडावा० ना० पु० हहा, बनार ।  
 तडित्० ना० स्त्री० भिनती ।  
 तडित्वान्० ना० पु० भेष ।  
 तडुल० ना० पु० तडुल, चावल ।  
 तत्० अर्थ० वह, सो, चीन, समूह ना० पु०  
 ईश्वर ।  
 तताना० स० कि० गर्भ करना ।  
 ततेडा० ना० पु० पानी गर्भ करने का पात्र  
 विशेष ।  
 तत्कन्द० ना० पु० अदरक, नाराहीकन्द ।  
 तत्काल० अर्थ० उसी समय ।  
 तत्कार्य० ना० पु० उसी उसी काम में ।  
 तत्ता० अ० गर्भ, ज्वलित, क्रीडी ।  
 तत्पर० अ० आसक्त, चतुर, निपुण, समेत ।  
 तत्फल० ना० पु० पीड़ वृक्ष, गजपीपरी, जामुन  
 वृक्ष, उत्तका फल ।

तत्त्व० ना० पु० सार, प्रकृति, यथार्थ, मूल, सर्व  
 भाव जो किसी स बना नहो ।  
 तत्त्ववल्का० ना० स्त्री० सुरद्री ।  
 तत्त्वज्ञ० अ० मनुष्यादि जो बोलसकते, बानकरे,  
 तत्त्व वस्तु जाननेद्वारा, यथा मन्त्रवेत्ता ।  
 तत्त्वज्ञान० ना० पु० ब्रह्मज्ञान, अयाम्ज्ञान ।  
 तत्त्वज्ञ० अर्थ० उसीसमय, गुरत, उसीरथ ।  
 तत्र० अर्थ० तहा ।  
 तथा० अर्थ० निम्नी प्रकार, तेसा, वैसाही ।  
 तथाच० अर्थ० जैने, युनाचि ।  
 तथापि० अर्थ० तोभी ।  
 तद० अर्थ० तब निससमय ।  
 तदनन्तर० अर्थ० तिसके पीछे ।  
 तदनु० अर्थ० तेहि अनुसार, निसपीछे ।  
 तदा० अर्थ० तब, तहा ।  
 तदपि० अर्थ० तोभी ।  
 तद्गत० अ० उस में गयाहुआ ।  
 तद्गति० ना० स्त्री० उसकी दशा, उसकी माया  
 तद्गुणविशिष्ट० अ० वहगुण निसमें हे ।  
 तद्भवि० ना० पु० उसकी यज्ञका ह्य ।  
 तद्भय० ना० पु० उसके डर ।  
 तद्भावरोधक० अ० उसभावका बोधक ।  
 तद्भी० अर्थ० तिसी समय, तभी ।  
 तन० ना० पु० शरीर, देह, पुत्र, और निस्तर ।  
 तनक० अ० थोडा, अल्प ।  
 तनय० ना० पु० पुत्र, लडका, सुत ।  
 तनया० ना० स्त्री० पुत्री, कन्या, सुता ।  
 तनापा० ना० पु० जवानी, तरुपार्ह ।  
 तनी० ना० स्त्री० अंगरले का बंधन, तनया ।  
 तनु० ना० पु० शरीर, देह ।  
 तनुक० अ० थोडा, अल्प ।  
 तनुजा० ना० स्त्री० तनया, पुत्री ।  
 तनुप्राण० ना० पु० बहुर, बचच ।  
 तनुदरी० ना० स्त्री० स्त्री, नारी, धवला ।

तनूरुह० ना० पु० शरीर व बाल ।  
 तनोति० अ० क्रि० विस्तारकर ।  
 तन्त० ना० पु० तार, सुप्त सिद्धि, तुरत, सतान,  
 श्रौषधि, तदधीर ।  
 तन्तनाना० अ० क्रि० पिनपिनाना, मजाना ।  
 तन्तनाहट० ना० स्त्री० नमन्नाहट, जलन स जो  
 पीडा ।  
 तन्तु० ना० पु० सूत, रार ।  
 तन्तुना० ना० पु० तनुना, तार ।  
 तन्त्र० ना० पु० तोटना, लटना, शास्त्रोक्त मन्त्र  
 शिवकृत ग्रन्थ निराप, वीणा ।  
 तन्त्री० शु० तनका करनेवाला, गानेवाला ।  
 तन्त्रीनाड० ना० पु० वीणाका शब्द ।  
 तन्द्रा० ना० स्त्री० थकाई, अम, मूच्छी ।  
 तन्द्री० ना० स्त्री० भीह, भुङ्गी ।  
 तन्दुल० ना० पु० चावल ।  
 तन्ना० अ० क्रि० लिखना, फेलना ।  
 तन्नाना० अ० क्रि० पिनपिनाना, मोहितहोना ।  
 तन्नेत्र० ना० पु० उसकी आसि ।  
 तन्मय० शु० उसमें भराहुआ ।  
 तन्मात्र० अ० य० वेवल, वह ।  
 तत्र० ना० स्त्री० नाप, उष्ण, ना० पु० तपस्या  
 मापका महीना ।  
 तपत० ना० स्त्री० उष्ण, शु० गर्म, तत्ता ।  
 तपन० ना० पु० उष्ण, उला, सूर्य, शीर नि  
 लावावृष्ट ।  
 तपना० अ० क्रि० ऐश्वर्यवान् होना, उष्णहाना,  
 अतिनेत्रयुतहोना ।  
 तपनीय० ना० पु० सूर्य ।  
 तपलोक० ना० पु० स्वर्गविशेष, लोक विशेष ।  
 तपसी० ना० पु० तपसी ।  
 तपस्य० ना० पु० पागुनमास, यथा मधुस्तथा  
 माधव सप्तक च शुक्र-शुचिश्चायनभो नभस्यौ  
 तपेषु ऊर्जश्च सहस्रहस्यौ तपस्तपस्याविति  
 तैकमेव १ ।  
 तपस्या० ना० स्त्री० तप, याग, ईश्वरभजन ।

तपस्विनी० ना० स्त्री० तपस्या करनेहारी स्त्री ।  
 तपस्वी० ना० पु० तपस्या करनेहारा यागी ।  
 तपा० ना० पु० अचक्र, योगी, जेली ।  
 तपाना० स० क्रि० गर्म करना तताना, धरपना ।  
 तपास० ना० स्त्री० विरय, धूप, पारश्रम दोड  
 धूप ।  
 तपिच्छु० ना० पु० तापिच्छ, तमाल वृक्ष ।  
 तपी० ना० पु० तपा, मुनि ।  
 तपेश्वर० )  
 तपेश्वरी० ) ना० पु० तपी, मुनि ।  
 तपोधन० )  
 तपोधना० ना० स्त्री० मुण्डी, आर तपोधन की  
 स्त्री, तपश्वरिन स्त्री ।  
 तपोमय० शु० तपस्यायुक्त ।  
 तप्त० शु० तत्ता, गरम, तपत ।  
 तप्तांग० ना० पु० त्वर विशेष, दहगरम ।  
 तप्य० अ० य० तिससमय ।  
 तपी० {  
 तपी० { अ० य० तिससमय ।  
 तम० ) ना० पु० अधनारका गुण, अरेरा तमो  
 तम ) गुण, राहुमह, काथ, अज्ञान, अति, प-  
 दात में बहुतातका बाधक ।  
 तमक० ना० स्त्री० गर्व, घमण्ड, मुखका लाल  
 होना, भुम्भाहट, टर ।  
 तमकना० स० क्रि० मुखलाल हाना, दहकना,  
 दगदगाना, निरारण्यकाथ ।  
 तमका० ना० पु० धूपकीनार, बहुतगर्मी ।  
 तमचुर० ना० पु० कुक्कुट, सुरगा ।  
 तमतमाना० अ० क्रि० मुस्त में लाली होना,  
 दगदगाना ।  
 तमस० ना० पु० तम, मत्त निराप ।  
 तमस्विनी० ना० स्त्री० राति, रन ।  
 तमारि० ना० पु० सूर्य ।  
 तमाल ना० पु० वृक्ष विशेष, तिलक जो  
 दन से बनाते हैं ।

तमालपत्र० ना० पु० तमाह ।  
 तमिस्र० ना० पु० तम, अनावार ।  
 तमी० ना० स्त्री० रात, निरी ।  
 तमीचर० ना० पु० निगाचर चोर, उल्लू,  
 चमगौदड ।  
 तमोगुण० ना० पु० मनोवृत्ति विशेष या दोष  
 विससे काम घोषादि उपजते है ।  
 तमोल० ना० पु० ताम्बूल, पान ।  
 तमोलिन्० ना० स्त्री० तमोली की छाँ ।  
 तमोली० ना० पु० आनि विशेष जो पान  
 बेचते है ।  
 तम्बू० ना० पु० रातड़ी, फाल, कपड़े का बँटा ।  
 तम्बूल० ना० पु० ताम्बूल ।  
 तम्बेरम० ना० पु० तम्बेरम, हाथी ।  
 तर० अर्थ० तल, पदात में अधिवृत्ता का चिह्न,  
 बहुतायत का सूचक ।  
 तरई० ना० स्त्री० तारा, नक्षत्र ।  
 तरकारी० ना० स्त्री० भारती ।  
 तरंग० ना० पु० लहर, उमग, लहर ।  
 तरंगिनी० } ना० स्त्री० नदी ।  
 तरंगिनी० }  
 तरंगी० ना० पु० बहुगी, लहरी ।  
 तरण० ना० पु० सुनिमय, पारहोना, उज्जर ।  
 होना ।  
 तरणि० ना० पु० सूरज, नाव ।  
 तरणी० ना० स्त्री० नाव, तरनी ।  
 तरन० ना० पु० तरण ।  
 तरफना० अ० कि० तर्फनाना ।  
 तरवूज० ना० पु० हिन्दवाना, फल विशेष ।  
 तरल० अ० चञ्चल, तीक्ष्ण घोड़ा, ना० पु० धूरा  
 वृष्ट ।  
 तरलता० ना० स्त्री० चञ्चलता, तेजी ।  
 तरला० ना० पु० वाम विशेष, अ० जो सव से  
 नीचला वा दूसरे से नीचला ।  
 तरलाई० ना० स्त्री० तरलना ।  
 तरव० ना० पु० वृष्ट ।

तरवर० ना० पु० बड़ा वृष्ट ।  
 तरस० ना० पु० शीघ्र, जल्दी, लालच, दया  
 वृथा, कल्प ।  
 तरसना० अ० कि० जी लगाकर रहना, ललच  
 ना, दयालुहोना, परतानना ।  
 तराई० ना० स्त्री० दलदल, चराओ, नीचान  
 तरान्० ना० पु० उगाही, प्राप्त ।  
 तराना० स० कि० पारकराना, पैराना, बचाना  
 तरि० } ना० स्त्री० नाव, नौका ।  
 तरी० }  
 तरीन० ना० स्त्री० तरीना बहुवचन, नाँव ।  
 तद० ना० पु० वृष्ट ।  
 तदण० अ० युग, जवान ।  
 तदणता० } ना० स्त्री० यौवन, किरीट  
 तरुणार्थ० } जवाना ।  
 तदणी० ना० स्त्री० पुवती, जवान स्त्री ।  
 तरेड़ा० ना० पु० डेही से पानी का गिरना ।  
 तरया० ना० पु० तारागण, तारा, कविपत्नी  
 यथा ( दोहा० यथा तरेया प्रात के सव नृप  
 उदास, लखिदिनमाधि कर राम छवि सकुच  
 बहुआस ) ।  
 तरौस० ना० पु० तिनारा, विहारीलाल स  
 राविकाया ( श्यामसरति करि राधिक तव  
 तरुणमार्तद, अशुनकरत तरौस बौ स्तिनक  
 रौहीनीर ) ।  
 तरौना० ना० पु० कर्प भूषण विशेष विहारील  
 सससविकाया ( ससत श्वेत सारी दम्प्यो त  
 तरौनाकान, पथो मनी सरसरे सखिल रवि  
 विन्म विहान ) ।  
 तर्क० ना० स्त्री० बुद्धिसे विवेचना, अनुमान  
 न्यायशास्त्र, दर्शन ।  
 तर्कखर्च० ना० पु० यूनन, नई वाद बनाना,  
 करना ।  
 तर्कित० अ० राहित, लघिन, तर्क क्रियागया  
 तर्की० ना० स्त्री० तरपनिया, नाइपत्र  
 कानका भूषण विशेष ।



तर्कुल० ना० पु० ताडका फल ।  
 तर्क्या० गु० धारा जो बहुत शीघ्र बहती है ।  
 तर्जन० ना० पु० कोप ।  
 तर्जना० अ० कि० कौपसरना, कूदना ।  
 तर्जनी० ना० स्त्री० अगुष्ठके पामकी अगुली ।  
 तर्तयाना० गु० जो बहुत भिकना गोलार्ध में जो  
 उपपत्ता है, अ० कि० सभाया भरना, गलफण  
 की बरना ।  
 तर्तारदृष्ट० ना० स्त्री० सजाया, गीदकभवकी,  
 गलफटाकी ।  
 तर्पण० ना० पु० पिनादिके निमित्त जलदानदना  
 मगल, दुलास ।  
 तर्पना० अ० कि० बड़बडाना, सुनसाना, कुड़  
 बुडाना ।  
 तर्परा० ना० पु० शीघ्रता ।  
 तर्परिया० ना० पु० लहर, तलवार बाधने,  
 द्वारा ।  
 तर्पे० ना० स्त्री० दया, कृपा, रहम ।  
 तर्पे० अर्थ० परसों के आगे का दिन ।  
 तल० ना० पु० अयोभाग, पाताल विशेष, दृष्टि ।  
 तलक० अर्थ० तक, श्लग ।  
 तलछुट० ना० स्त्री० निचोड़, मल, मूद ।  
 तलतलाना० स० कि० हिसाना ।  
 तलना० स० कि० धी वा तेलमें धूनना ।  
 तलपट० गु० मलमेड, चोपाट ।  
 तलफना० अ० कि० तरफना ।  
 तलमलाना० अ० कि० ललचाना ।  
 तलवरिया० ना० पु० तर्वरिया ।  
 तलवार० ना० पु० खड्ग, तरवार ।  
 तला० ना० पु० पैदा, थाह, जूतीके नीचे का  
 भाग, पद, देवता ।  
 तलातल० ना० पु० पाताल विशेष ।  
 तली० ना० स्त्री० तला, बुकनी, निस्पर्शा ।  
 तलुआ० } ना० पु० पाक के नीचे का भाग ।  
 तलुआ० }  
 तले० अर्थ० नीचे ।

तलया० ना० स्त्री० छागनालाय ।  
 तल्प० ना० स्त्री० शय्या, सज, निस्तर ।  
 तरजाला० ना० स्त्री० उसरी लीला ।  
 तवर्ग० ना० पु० तकारादि पाच अक्षर ।  
 तवदकार० ना० पु० छतार तरालितादुआ ।  
 तट्टना० स० कि० भुगदना, वाटना ।  
 तट्टित० गु० भाजित, बागागया ।  
 तसला० ना० पु० खानापन्नोकापात्र विशय ।  
 तस्कर० ना० पु० चोर ।  
 तस्करना० न० स्त्री० }  
 तस्करत्व० ना० पु० } चोरी ।  
 तस्करी० ना० स्त्री० }  
 तस्मिन् सव्य० तानमें, उद्यमें ।  
 तस्य० सव्य० उसका ।  
 तस्व० ना० पु० माप विशेष, फारसी शब्द है ।  
 तहा अर्थ० तिसस्थान, उस जगह ।  
 तहिया० गु० पहिले ।  
 तहाँ अर्थ० तिथी वा उस स्थान ।  
 तलक० ना० पु० मुरयसाय ।  
 तश० गु० शाता, ज्ञानी, स्वरूप साना ।  
 ता० सव्य० उसको ।  
 ताशत ना० पु० यत्र, मयज ।  
 ताई० ना० स्त्री० चाची ।  
 ताऊ० ना० पु० बड़ा चचा ।  
 तागा० ना० पु० गाड़ी विशेष जो सजी  
 नहीं है ।  
 तांत० ना० स्त्री० चण्ड का रस्सी ।  
 तांतयांधना० स० कि० बक्का का चुपाना ।  
 तांता० ना० पु० पानि, पक्ति, तार ।  
 तांती० ना० पु० धुनिया, बिहना, पट्टकार ।  
 तांबड़ा० ना० पु० तांबेका वर्ण, माथिकव के  
 समान मूटापत्थर ।  
 तांया० ना० पु० धातु विशेष ।  
 ताक० ना० पु० दृष्टि, डुका ।  
 ताकना० स० कि० देलना, भावना, घूरना ।  
 ताकयाक० ना० स्त्री० ठोक समय, दृष्टिरतना ।

ताग० ना० पु० सूत, धागा ।  
 तागना० स० कि० सीवना, सूत बाजना ।  
 तागा० ना० पु० सूत, धागा ।  
 ताजक० ना० पु० ज्योतिष का ग्रन्थ विशेष ।  
 ताजन० ना० पु० कौडा ।  
 ताटक० ना० पु० कर्णभूषण विशेष ।  
 ताटु० ना० पु० वृष विशेष, ना० स्त्री० परि-  
 चान ।  
 ताडक० ना० पु० ताड, ताडने हारा ।  
 ताडन० ना० पु० निडकी, दड, छोट ।  
 ताडना० स० कि० परिचानना, वृम्भना, अटकल  
 ना, दण्डदेना, मारना ।  
 ताडनीय० गु० ताडना करने के योग्य ।  
 ताडका० ना० स्त्री० सुबाहुकी माता, रासली ।  
 ताडित० गु० ताडन दियागया, मारागया ।  
 ताड्डी० ना० स्त्री० ताडकारस ।  
 ताण्डव० ना० पु० ताण्डव, नृत्यविशेष ।  
 तात० ना० पु० विना, गुरु, मित्र, पुत्र, भाई, राजु,  
 श्वशुरादिना बोधक, गु० तत्ता, गरम,  
 उष्ण ।  
 तातनी० } सर्व० उसकी, उसका ।  
 तातनी० }  
 तात० } सर्व० निसने, उससे, निसकारण ।  
 ताते० }  
 तातकालिक० गु० उसी समयका ।  
 तातपर्यं० ना० पु० अभिप्राय, प्रयोजन, मतलब  
 शामिल ।  
 तादात्म्य० ना० स्त्री० तन्मत्त्वपना ।  
 तादृस० गु० वैसाही ।  
 तान० ना० स्त्री० रागका जो उच्चारण, स्वर ।  
 तानसेन० ना० पु० रागी विशेष ।  
 ताना० ना० पु० बरकका लम्बापुत ।  
 तानी० गु० रागी, गवैया, ना० स्त्री० तानी ।  
 तात्रिक० ना० पु० सिद्धान्तका ज्ञानने हारा ।  
 विद्वान्, वन्य शास्त्रज्ञ ।  
 तान्ना० स० कि० कनना, मीचना, कैशाना ।

ताप० ना० स्त्री० उष्णता, तन, चर, मनका दुःख  
 दण्ड ।  
 तापती० ना० स्त्री० नदीविशेष ।  
 तापना० स० कि० आच लेना, पमाता ।  
 तापस० ना० पु० तपस्वी, शान्त ।  
 तापिच्छ० } ना० पु० तेंदुना वृष, तमाल ।  
 तापिच्छ० }  
 तापी० ना० स्त्री० नदी विशेष जो विन्ध्यके  
 दक्षिण आर है ।  
 तापीय० ना० पु० सोनामक्सी ।  
 तासू० ना० पु० तमालपत्र ।  
 ताप्य० ना० पु० सोनामक्सी ।  
 ताफता० ना० पु० रेशमी, कपडा निसको धूँ  
 धाई कहते हैं ।  
 तामचीनी० ना० स्त्री० तावा निममें ओर ध  
 भी जडाहोवे ।  
 तामड़ा० ना० पु० ताबेके रगकी मण्डी ।  
 तामपुष्प० ना० पु० कुम्भी ।  
 तामरस० ना० पु० कमल ।  
 तामल० ना० पु० देशविशेष ।  
 तामलकी० ना० स्त्री० भूषण ।  
 तामसू० ना० पु० तमोगुणका कार्य, काम, बोध ।  
 तामसिक० } गु० तमोगुण युक्त, कोधी ।  
 तामसी० }  
 तामसी० ना० स्त्री० रान, कोधी ।  
 तामह० सर्व० उसमें ।  
 तामा० ना० पु० तावा ।  
 तामिली० ना० स्त्री० भाषा विशेष ।  
 तामेश्वर० ना० पु० ताबेकी बग ।  
 ताम्बूल० ना० पु० पान ।  
 ताम्र० ना० पु० तावा ।  
 ताम्रचूड़० ना० पु० मुरगा, करौडा ।  
 ताम्रवर्ण० ना० पु० हरिन, ताबेकारण ।  
 ताम्रबल्ली० ना० स्त्री० मँजोठ ।  
 ताम्रसार० ना० पु० लाञ्छनन्दन ।

ताम्राक्ष० ना० पु० वीर्य ।  
 तार० ना० पु० बानर विशेष, मोतीमाला, निर्मल  
 मोता, उच्चस्वर, ताड़ ।  
 तारक० ना० पु० मुक्तिदाता, रागाधातु, गुरु,  
 उद्धारकरनेहारा, जा पारलगावे, मन विशय दैत्य  
 विशेष ।  
 तारकारि० ना० पु० स्वामिकासिक ।  
 तारकी० ना० स्त्री० देवदाली ।  
 तारकूट० ना० पु० रूपा, पीतल ।  
 तारकेश्वर० ना० पु० सगशिवजी ।  
 तारण० ना० पु० उद्धार करनेहारा, उद्धार का  
 करना, मुक्तिदाता, तारनेहारा ।  
 तारणीय० गु० शत्रुहारा, योग्य, उद्धार करने  
 लायक ।  
 तारतम्य० ना० पु० गूनाधिक, धाड़ा बहुत ।  
 ताग्रथं १० पु० उसका अर्थ, उसके लिये ।  
 तारना० स० क्रि० उतारना, पारकरना, मुक्ति  
 देना ।  
 तारा० ना० पु० नक्षत्र, ग० स्त्री० तैरनी पुत  
 ला, अङ्गदकी महतारी ।  
 तारागण० ग० पु० नक्षत्रों का समूह ।  
 तारापथ० ना० पु० आकार ।  
 तारिका० ना० स्त्री० पुतला, नक्षत्र ।  
 तारिणी० ना० स्त्री० उद्धार करनेहारी ।  
 तारण्य० ग० स्त्री० तन्त्रता, ज्ञान, युग ।  
 तारु० ना० पु० ताल ।  
 तारुकीरुना० पु० नैपायिक-यामशाश्वजानुहारा ।  
 तादर्थ्य० ना० पु० रसीत, गुरुपत्नी ( पतिनाश्या  
 गम्पती शकुन्तामासपत्निषा इत्यमर ।  
 ताल० ना० पु० ताडवृक्ष, तालान, हस्ताल, ना०  
 स्त्री० बरताल, रागका परिभाषा, महदुद्ध भ  
 वादपर बाहु पञ्चना ।  
 तालखजूही० ना० स्त्री० दुपहरिया वृक्ष ।  
 तालध्वज० ना० पु० शीलरामना ।  
 तालपत्नी० } ना० स्त्री० मृमती औषधि ।  
 तालमूलिका० }

तालचूर्ण० ना० पु० ताडका पत्ता ।  
 तालव्य० ना० पु० जो अक्षर तालसे उच्चारण  
 किये जायें यथा त, थ, द, ध, न, ल, श ।  
 ताला० ना० पु० कुकल, द्वार बंद करने का  
 यंत्र ।  
 तालाक० ना० पु० श्रीरामदेवजी ।  
 ताली० ना० स्त्री० कुजी, चानी, दोनों हाथों की  
 आपस में मारने से जो शब्द होता है ।  
 तालीस० ना० पु० वृक्ष विशय ।  
 तालु० } ना० पु० मुसमें ऊपरका भाग ।  
 तालू० }  
 ताव० ना० पु० ताप, दाप, पल चटक, एठ,  
 कापनका तखता, वस ।  
 तावत् अन्त्य० इत्ता, यहातक, तन्तक ।  
 तावना० स० क्रि० गरमकरना, कसना, ऐठना ।  
 ताशु० } ना० पु० गजीकह, लप्पा, पारसी है ।  
 तासु० }  
 तामुकी० } रर्ध्ना० उत्तरो उसका ।  
 ताहि० सर्व० उसका ।  
 ताहिरी० ना० स्त्री० भोजन विशेष ।  
 तिकातिक० ना० पु० गाड़ी आदि के बल चलाये  
 में यह शब्द बोलानाता है ।  
 तिहरी० ग० स्त्री० तिहाई, तिसरा ।  
 तिकोनिया० गु० तीन कोणका पदार्थ ।  
 तिङ्गा० ना० पु० मामल छोटा टुकड़ा ।  
 तिकु० गु० तीना चरपरा, ना० पु० चिरायठा ।  
 तिकुका० ना० स्त्री० विरपाग ।  
 तिकुचक्रा० ना० स्त्री० कम्पी ।  
 तिकुना० ना० स्त्री० कालामिरच, सारा ।  
 तिकुरा० गु० निवार, निहा ।  
 तिचराकरना० स० क्रि० लीनकर जंगना ।  
 तिचराना० स० क्रि० टहराना, सचकरना, यत्न  
 पूरना लीनकर जेठना ।  
 तिगुण० } ५ विन्ना ठकटय है, तिह  
 तिगुना० } रत्ना ।

तिग्म० ना० पु० पीरो ।

तिजरा० ना० पु० } अठरिक् तीसरे दिन  
तिजरी० ना० स्त्री० } नाश आर विषमका  
तिजारी० ना० स्त्री० } आना ।

तिणुका० ना० पु० घाम, घामरा टुकड़ा ।

तित० अ० निधर, तन ।

तितना० ना० पु० } सु० प्रमाण वा अन्वि  
तितनी० ना० स्त्री० } वा निश्चय बोधक ।

तितरथितर० गु० भिन्न भिन्न, मगगूटनाना ।

तितरी० } ना० स्त्री० नीट विशेष जो उ  
तिनली० } दना है ।

तिथि० ना० स्त्री० चांद्रकला की क्रिया से उपल  
भिनकाल, दिन, तारीख ।

तिथिपत्र० ना० प० पत्रा, जप्री ।

तिथिक्षय० ना० पु० तिथिमा अन्वय, इति ।

तिदरा० ना० पु० } तीनद्वार का स्थान ।  
तिदरी० ना० स्त्री० }

तिघारा० ना० पु० पीसा निराप, तीन धारका  
नाम ।

तिनकना० अ० ङि० मन्ना, पकड़ाना,  
टीमना ।

तिनका० ना० पु० डाँही या टहनी वा घासका  
योगटुकड़ा ।

तिन्तिजा० ना० स्त्री० घनिली वृष्ट ।

तिन्दुक० ना० पु० तेंदुरा, तमालवृष्ट ।

तिन्दुला० ना० स्त्री० पीपरी ।

तिन्नी० ना० स्त्री० चाकस वा उसका पीसा  
विशेष ।

तिघारा० गु० तीनिरे ना० पु० तीन दरका ।

तिध्वत० ना० पु० देश विशेष जो हिमालय के  
उत्तर में है ।

तिमि० ना० स्त्री० मधली, अ० देगे, उर्मा  
तिमि ।

तिमिचित० ना० पु० मन्थ, मधली ।

तिमिर० ना० पु० अन्धकार, अज्ञान ।

तिमिरहर० ना० पु० मृग ।

तिय० } ना० स्त्री० योषिता,

तिया० } स्त्री, नारि ।

तिरकोना० गु० तीनकोनवाला मदारथे ।

तिरखूँटी० ना० स्त्री० तीनकाने का अल्प वि-  
शेष ।

तिरछा० गु० टेढ़ा, आड़ा, हटीला । १

तिरछाना० स० कि० टेढ़ा करना, अ० जि०  
हटीला होना, हठकरना ।

तिरछी० गु० टेढ़ी, बाकी ।

तिरतिराना० अ० जि० गिसाना, झिरझिराना ।

तिरना० अ० जि० पेरना, तैरना ।

तिरपद० ना० पु० } त्रिपदी, तीनपद ।  
तिरपदी० ना० स्त्री० }

तिरपन० गु० पचास और तीन, ५३ ।

तिरपौलिया० ना० पु० धनुषधार के तीनद्वार  
का स्थान ।

तिरफला० ना० पु० फिफला, तीन फल का  
अर्थान् आरला, हर, बहेरा ।

तिरभंगा० गु० निरक्षा सहायोग ।

तिरभंगी० ना० स्त्री० छन्द विशेष ना० पु०  
श्रीकृष्णचन्द्रनी का एक नाम ।

तिरस्काद० ना० पु० निद्रा, भजन, अरला,  
अपमाद ।

तिरसठ० गु० सठि और तीन, ६३ ।

तिरहुत० ना० पु० देश विशेष, नगर विशेष ।

तिरोधान० ना० पु० पीगाव, आस्थादत्र, परत्र ।

तिरोहित० गु० छपाइया, गुप्त; ना० पु० मि-  
थिलादेश ।

तिमिरी० ना० पु० तेलकी बुद जो पानीपर बहनी  
है थर थरा ।

तिमिराना० अ० कि० झूलना, लहरना, अ०  
धराना, चमकना यथा तेलकी बुद पानीपर ।

तिमिराहट० ना० स्त्री० धरधराहट, अ०  
धराहट ।

तिमिरी० ना० स्त्री० डमरी ।

तिर्यङ्गपति० } ना० पु० शार्दूल, सिंह ।  
 तिर्यङ्गपति० }  
 निन्न० ना० पु० पोत्रा विशेष जिसके बीज से  
 तेल निकालने हैं, शरीर में बाला बिद्ध निशप,  
 घृष ।  
 तिलक० ना० पु० ललाट में विहित चन्द्रादि  
 का टीका, पीना, खली, अर्थ करना, अर्थ, वृत्त  
 विशेष यु० शिरोमण्डि ।  
 तिलकुट० ना० पु० तिल और मिठाई विशेष ।  
 तिलंगा० ना० पु० तेलगा, सिपाही ।  
 तिलगी० ना० स्त्री० गृहा, पतन । }  
 तिलचट्टा० ना० पु० कीर्तिशेष ।  
 तिलचावली० ना० स्त्री० तिल और चावलों की  
 मिलायी, बाले और सकेद बालों की  
 मिलाया ।  
 तिलचूरी० ना० स्त्री० मिठाई विशेष ।  
 तिलडा० ना० पु० } तीन लडना, भूषण वि  
 तिलङ्गा० ना० स्त्री० } शेष ।  
 तिलपर्णी० ना० स्त्री० चन्दन ।  
 तिलपिटक० ना० पु० पीना, तिलकी खली ।  
 तिलवट० ना० पु० पक्षी विशेष ।  
 तिलभेद० ना० पु० पोस्त का भिखा ।  
 तिलहा० गु० तेलिया ।  
 तिलुआ० ना० स्त्री० तिलई ।  
 तिलोत्तमा० ना० स्त्री० सुगन्ध अमरा ।  
 तिष्ठना० अ० वि० टहरना, स्थिरहोना, वि  
 राजना ।  
 तिष्ठित० गु० टहराहुआ ।  
 तिथ्य० ना० स्त्री० आठवा नवम पु प ।  
 तिसका० स० उमका, गिसना ।  
 तिसरायत० ना० पु० मन्वन्ती गौरवण, दुना  
 गी, अरायतारहि ।  
 तिसून० ना० पु० धोष विशेष ।  
 तिहत्तर० गु० सत्तर और तीन, ७३ ।  
 तिहरा० गु० तिगुणा, तिहका ।  
 तिहराना० स० दि० तिहरा करना ।

तिहरावट० ना० स्त्री० तिगुण करने का काम ।  
 तिहरे० स० तिहारे ।  
 तिहाई० ना० स्त्री० तीसरा भाग ।  
 तिहायत० ना० स्त्री० तिमरायत ।  
 तिहारा० ना० स्त्री० }  
 तिहारे० ना० पु० } मर्त्य० तेरी, तेरे ।  
 तिहारो० ना० पु० }  
 तिहु० गु० तीनों, तीन ।  
 तिहुपुर० } ना० पु० तीनोंलोक  
 तिहुलोक० }  
 तीखा० गु० तीक्ष्ण, चरपरा ।  
 तीखी० गु० उदमस्वार, पनी ।  
 तीखुर० ना० पु० शीत वस्तु, गिसरा व्रत के  
 दिन कलाहार करते हैं ।  
 तीलुन० गु० ताक्ष्य, तीव्र, तेज ।  
 तीज० ना० स्त्री० तृतीया ।  
 तीजा० गु० तीमरा, मृतक के तीमरे दिन का  
 काम व तीमरा दिन ।  
 तीजिया० } ना० स्त्री० अथवा सुदी तीज का  
 तीजे } त्याहार ।  
 तीत० गु० तीता ।  
 तीतर० ना० पु० पर्लाविशेष ।  
 तीतरी० ना० स्त्री० तिनरी, पतगाविशेष ।  
 तीना० गु० बडना, पडपडा, तीना ।  
 तीन० गु० दि, ३ ।  
 तीनतेरह० गु० तिसर तिसर ।  
 तीय० ना० स्त्री० अथवा, स्त्री ।  
 तीयल० ना० स्त्री० स्त्री के पहिरने के चीन्हे  
 यज्ञ ।  
 तीर० ना० सनुद्र वा नदी का तट, अर० -  
 दिग, पाम ।  
 तीरथ० ना० पु० पुण्यस्थान, यात्रा ।  
 तीरथराज० ना० पु० प्रसा ।  
 तीर्थ० ना० पु० तीर्थ ।  
 तीली० ना० स्त्री० मित्रता की कामी ।  
 तीय० गु० अन्वय बडना, तीना, पेना ।

तीसरा० गु० वृषाधि ।

तीसी० ना० रघु० अलसी, निसका तेल निका  
लने हे ।

तीक्ष्ण० ना० पु० मरुआ, मिरच, गु० पद्मपदा,  
तत्ता, शंश, भाभिया, पैना, तीता ।

तुक० ना स्त्री० पद, रम्बध ।

तुफला० ना० पु०  
तुफली० ना० स्त्री० } छोरी पतम विशेष ।  
तुफल० ना० पु०

तुका० ना० पु० बाण जिसकी नोक नहीं है, छोटा  
पर्जन ।

तुगावंशी० } ना० पु० बशरोचन ।  
तुकादीरी० }

तुग० गु० ऊचा, लम्बा, समूह ।

तुंगवृक्ष० ना० पु० नारियल ।

तुच्छ० गु० शय, कुपित, अपमायी ।

तुङाना० स० कि० तोङना ।

तुण्ड० ना० पु० चोंच, घुस ।

तुतरा० गु० जो तुतलाता हो ।

तुतराना० थ० कि० यथुरा बोलता जैसे बालक  
बोलते हे ।

तुतला० गु० तुतरा ।

तुतलाना० थ० कि० तुतराना ।

तुत्थ० } ना० पु० नीलाधोया ।  
तुत्थिक० }

तुनतुनाना० थ० कि० सरांग देना ।

तुन० ना० पु० वृषविशेष ।

तुन्दिल० गु० तोदेल, बकी तोदका ।

तुध० ना० पु० तुध, टूटा ।

तुपक० ना० पु० बन्दूक ।

तुपकिया० ना० स्त्री० छोरी बन्दूक ।

तुम० सर्व० मध्यमपुरुष का सूचक वा वाचक ।

तुमतनौ० सर्व० तुम्हारा ।

तुमार० ना० स्त्री० तुमाने का पैसा ।

तुमाना० स० कि० धुनवाना ।

तुमुल० ना० पु० रौला, इतलक ।

तुम्या० ना० पु० लौका, कद्दू ।

तुम्बिका० } ना० स्त्री० लौकी, कद्दू, बज्राने ।

तुम्बी० } की तोंबी जो मदारी लौग रख-  
ते हे ।

तुम्ह० ना० स्त्री० तरकारी विशेष ।

तुम्हक० ना० पु० तुम्ह, देशविशेष ।

तुम्हग० } ना० पु० घोड़ा ।

तुम्हगम० }

तुम्हगहा० ना० स्त्री० अलगध ।

तुम्हत० } अन्ध० शीघ्र, यमी ।

तुम्हत० }

तुम्हपना० स० कि० सोना, टाकना विशेष ।

तुम्हही० ना० स्त्री० बाना विशेष नरमिषा ।

तुम्हई० ना० स्था० तोराक, रजाई ।

तुम्हाना० थ० कि० छूजाना, छुडाना, मर्यादा हे

बाहिर चलना, नहिचलना ।

तुम्हापाद्० ना० पु० इन्द्र ।

तुम्हिय० ना० पु० घोड़ा ।

तुम्ही० ना० पु० घोड़ा ना० स्त्री० तुम्ही ।

तुम्हीय० ना० पु० सुकृष्णरथा, मुक्ति, मोक्ष चौथ

तुम्हक० } ना० पु० यवन, देश विशेष ।

तुम्हकद्दू }

तुम्ह० } अन्ध० तुम्ह, शीघ्र ।

तुम्हफुर्त० }

तुम्हाव० }

तुम्हाफुर्ती० }

तुम्ह० गु० तुल्य ।

तुम्हना० थ० कि० तुलापरचदना, तुल्यहोना ।

तुम्हसा० } ना० स्त्री० छोटा वृष जिसकी प

तुम्हसी० } निम्न वा शालग्राम की चकती हे-

तुम्हसीदास० ना० पु० प्रतिद भक्त श्रीरामा

भाषा बनानेहारे ।

तुम्हा० ना० स्त्री० तराजू, अपनी देहकी चरा

दान देना, रातकी राशि विशेष ।

तुम्हाना० स० कि० तोलाना, -तुलापर चदना



तेजस्कर० ना० पु० वाय्व्यं वनानहारा, द्रव्य,  
कुण्ड ।

तेजस्वी० } गु० प्रनारी, संसिमान्, तेज वा  
तेजोमय० } प्रकाश से युक्त ।

तेता० गु० विदना ।

तेमन० गु० आदा, गीलाई, व्यजन ।

तेरस० ना० स्त्री० अयोदशी ।

तेरह० गु० दश और तीन, १३ ।

तेरस० ना० पु० टीमरा वष, त्योरस ।

तेल० ना० पु० चिकना, चिकनाइट, तिलादि  
का रस ।

तेलिन० ना० स्त्री० तेली की स्त्री ।

तेलिया० ना० पु० तेलकासा रोगविशेष ।

तेली० ना० पु० तैलकार जाति विशेष ।

तेघर० ना० स्त्री० सुपनी, सुपनी गु० तैलका ।

तेघराना० अ० कि० सुपनी में होना, गिर-  
पड़ना ।

तेघरी० ना० स्त्री० सुपनी, सुपनी रति ।

तेवहार० ना० पु० पर्व, त्योहार ।

तेह० ना० पु० श्लेष, भाङ्ग, बहादुरी, साहस ।

तेहर० ना० स्त्री० स्त्रीके पाशका गहनाविशेष ।

तेहा० ना० पु० तेह ।

तेही० अन्व० अभी, सर्व, उमकी ।

तैतिख० ना० पु० करपविशेष ।

तैरना० स० कि० परना ।

तैल० ना० पु० तेल ।

तैलकार० ना० पु० तेली ।

तैलंग० ना० पु० कर्पाङ्क देरा वा उसके  
वासी ।

तैलगा० ना० पु० तैलगरा के लोग, और  
अगरेसों के प्यारि ।

तैसा० गु० तिमके समान, अ य० त्योहर ।

तो० अन्व० तब, नदा, निम्नदेह, सर्व, तुम्ह ।

तौ० अन्व० दोहर ।

तौह० ना० पु० बड़ा पेट ।

तौदी० ना० स्त्री० नगमि ।

तौदेल० } गु० जिसका पेट बड़ा है ।  
तौदला० }

तौही० अन्व० तथा, उसी समय में ।

तोकह० सर्व० तुम्हको ।

तोड़० ना० पु० पूट, नदी की धारा का बल,  
दही का पानी ।

तोड़जोड़० ना० स्त्री० गन बनाना ।

तोड़ना० स० कि० फोड़ना, हथपा, दुनाना, झं-  
पडा करना ।

तोड़ख० ना० पु० बड़ा, सगीरा हाथ के ।

तोड़वाना० स० कि० फोड़वाना, टुकड़े कराना,  
हथपा धुनवाना वा धुनाना ।

तोड़ा० ना० पु० चटका, सहस्र रुपयों की धैली,  
रनक में आगि लगावेकीरस्तु, चरची, गलेकी  
साकर, धर्षीका टुकड़ा ।

तोड़ाना० स० कि० तोड़वाना ।

तोतला० गु० हथला ।

तोतलाना० अ० कि० हकलाना ।

तोता० ना० पु० शुक, सुगा ।

तोपना० स० कि० टपना, गाडना ।

तोपाना० स० कि० गडबुना ।

तोवड़ा० ना० पु० धैली निममें ढोडे का दागा  
दिया जाता है ।

तोमर० ना० पु० बाबू तार, छन्द विशेष ।

तोय० ना० पु० जल, पानी ।

तोयनिधि० ना० पु० मयूद्र, जलधि ।

तोयपिप्पली० ना० स्त्री० जलपीपल ।

तोरा० ना० पु० दहल विशेष, सर्व० तेरा ।

तोरण० ना० पु० पूखोकी मात्रा जो धानद  
वा त्योहरके दिन वाधत है ।

तोरी० ना० स्त्री० ककरी विशेष ।

तोख० ना० स्त्री० तौल ।

तोखक० } ना० पु० बाट जो बारह मासो भर  
तोखला० } हावाई वा सोडह मासो भर ।

तोय० ना० पु० हर्ष, वृषि, धैर्य ।

तोयक० गु० हर्षदाना, धीगजदाना ।



तोषित० गु० हृषित, धीरजनात् ।  
 तोहि० सर्व्य० तुभक्तौ ।  
 तौ० अन्व्य० तन, तौ ।  
 तौसना० अ० क्रि० मुपके कारण से सिधिल  
 होना ।  
 तौल० ना० पु० जाल, परिमाण की मिया ।  
 तौलना० स० क्रि० जोलना, परिमाण करना ।  
 तौलवारं० } ना० स्त्री० तौलौ का काम या  
 तौलारं० } पैसा ।  
 तौलाना० स० क्रि० जोलवाना ।  
 तौलिया० } ना० स्त्री० पात्रविशेष ।  
 तौली० }  
 तौही० अन्व्य० अभी ।  
 तौहू० अन्व्य० तथापि ।  
 त्याग० गु० जिसका त्यागदिया ।  
 त्याग० ना० गु० छुड़ान, बेराग्य ।  
 त्यागन० ना० पु० तजन, विराग, छोड़न ।  
 त्यागना० स० क्रि० छोड़ना, तजना ।  
 त्यागी० गु० बेरागी, छोड़ेहुये ।  
 त्याग्य० गु० जा त्यागने हे योग्य हे ।  
 त्यौ० अन्व० तम, इस प्रकार, एकही समय में ।  
 त्यौधा० गु० उपला ।  
 त्योनार० ना० स्त्री० चतुराई, चालाकी ।  
 त्योनारी० ना० स्त्री० स्त्री जा अथवा काम बड़ी  
 चतुरता से स्वच्छ बनाती हे ।  
 त्योदस० ना० पु० दो वर्ष पहिले ।  
 त्योरी० ना० स्त्री० मधे की सकोइ, पुमनी ।  
 त्योरोचदाना० अ० क्रि० मोषित हाना ।  
 त्योदार० ना० पु० पर्व, पर्वी, आदकारदिन ।  
 त्रपा० ना० स्त्री० लाग, इया ।  
 त्रय० गु० त्रि, ३ ।  
 त्रयईपां० ना० स्त्री० त्राय ईपां अर्थात् उप, संपत्ति, पत्नी ।  
 त्रयगमा० ना० स्त्री० तीनगमा अर्थात् मदाकिनी, मन्त्रैरपी, प्रभायती ।

त्रयताप० ना० स्त्री० तीनताप अर्थात् देहिक, देविक, भोक्तिक ।  
 त्रयपाचक० ना० पु० तीन अग्नि अर्थात् आह्न-  
 वनीय, दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य अथवा जटरानल,  
 दावानल, बद्रवानल ।  
 त्रयरेखा० ना० स्त्री० तीनुरेखा अर्थात् त्रि-  
 चादि, तीन लकीर ।  
 त्रयरोग० ना० पु० तान रोग अर्थात् नात,  
 पित्त, कफ ।  
 त्रयोतनु० ना० पु० सूर्य ।  
 त्रयोदशी० ना० स्त्री० तेरस ।  
 त्र्यम्बक० ना० पु० श्रीशिवजी ।  
 त्रसित० गु० डरता हुआ, भयवान् ।  
 त्रस्त० गु० शय्य, डरपाक, नामर्द ।  
 त्राण० ना० पु० रक्षा, निस्तार, उद्धार ।  
 त्राणकर्त्ता० गु० रक्षक ।  
 त्राणी० गु० राण्यकर्त्ता रक्षक ।  
 त्रात० गु० बचायागया, रक्षित ।  
 त्राता० रक्षक, पालक ।  
 त्रास० ना० पु० भय, डर ।  
 त्रासक० गु० भयदायक, डरदाता ।  
 त्रासा० } गु० भयान, डराहुआ ।  
 त्रासित० }  
 त्राह० } अन्व० दयाचाहा वा शब्द, परचा  
 त्राहि० } ताप का शब्द ।  
 त्रि० गु० तीन, ३ परन्तु यह शब्द त्रिशाप क  
 आगे योगहीना हे यथा, त्रिभुवन, त्रिपुर ।  
 त्रिश० गु० तीसरा ३ ।  
 त्रिशति० गु० तीस, ३० ।  
 त्रिक० } ना० पु० गान्धर्व ।  
 त्रिकटु० }  
 त्रिकाल० ना० पु० तीनकालअर्थात् भूत, मने  
 प, वर्तमान अथवा प्रात का, मध्याह्न, मया  
 त्रिभुट० ना० पु० त्रिधाका ।  
 त्रिभुटा० ना० पु० गौत्र, निरक्ष, पातर ।  
 त्रिकूट० ना० पु० पर्वत त्रिगण त्रिमया रक्षाई ।

तेजस्कर० ना० पु० वाँघ्यं नडानेहार, द्रव्य,  
पुष्टि ।

तेजस्वी० } यु० प्रतापी, दीप्तिमान्, तेज वा  
तेजोमय० } प्रकारा से युक्त ।

तेता० शु० विना ।

तेमन० यु० आदा, गालाई, व्यजन ।

तेरस० ना० स्त्री० तयोदसी ।

तेरह० गु० दश और तीन, १३ ।

तेरस० ना० पु० तीसरा वर्ष, लोहस ।

तेल० ना० पु० चिकना, चिकनाहट, निलादि  
का रस ।

तेलिन० ना० स्त्री० तेली की स्त्री ।

तेलिया० ना० पु० तेलमत्ता रगविशेष ।

तेली० ना० पु० तेलकार जाति विशेष ।

तेयर० ना० स्त्री० प्रमत्नी, प्रमत्नी शु० तीलदा ।

तेयराना० थ० कि० घुमड़ी में होना, गिर-  
पड़ना ।

तेयरी० ना० स्त्री० प्रमत्नी, प्रमत्नी दृष्टि ।

तेघहार० ना० पु० पर्व, लोहार ।

तेह० ना० पु० षोडश, भाग, बहादुरी, साहस ।

तेहर० ना० स्त्री० स्त्रीके पारका गहनाविशेष ।

तेहा० ना० पु० तेह ।

तेही० थ० धर्मी, सच, उगड़ी ।

तैतिख० ना० पु० करपविशेष ।

तैरना० स० कि० पैरना ।

तैल० ना० पु० तेल ।

तैलकार० ना० पु० तेली ।

तैलंग० ना० पु० कर्पटक देस वा उसके  
वासी ।

तैलगा० ना० पु० नैलगदेश के लोग, धोर  
धरोसों के प्पादि ।

तैसा० यु० त्रिकके ममान, थ० य० पौधर ।

सो० थ० तब, तदा, निम्नदेह, मर्त्य, तुम्हें ।

सो० थ० योद्ध ।

सोद० ना० पु० रक्षा पेट ।

सोदो० ना० स्त्री० नाभि ।

तोदैल० } गु० जिसरा पेट बड़ा है ।  
तोदैला० }

तोही० थ० तर्फी, उसी समय में ।

तोकह० सचं० तुम्हें ।

तोह० ना० पु० पूट, नदी की धारा का बल,  
दही का पानी ।

तोहजोह० ना० स्त्री० बन्ध बनाना ।

तोहना० स० कि० फोड़ना, करार, अनुना, इ-  
पड़ा करना ।

तोहल० ना० पु० कड़ा, सगोरा हाथ के ।

तोहवाना० स० कि० फोड़वाना, टुकड़े कराना,  
हथिया धुनवाना वा धुनाना ।

तोहा० ना० पु० चटका, सहस्र रूपयों की धैली,  
रजक में आगि लगावैकीरस्तु, चरचौ, गलेकी  
माकर, धर्मीका टुकड़ा ।

तोहाना० स० कि० तोड़वाना ।

तोतला० यु० हथला ।

तोतलाना० थ० कि० हठवाना ।

तोता० ना० पु० शुक्र, सुगा ।

तोपना० स० कि० टापना, गाड़ना ।

तोपाना० स० कि० गहबुना ।

तोपडा० ना० पु० धैली जिसमें मोड़े का दाग  
दिया जाता है ।

तोमर० ना० पु० बाण, तीर, छन्द विशेष ।

तोय० ना० पु० जल, पानी ।

तोपनिधि० ना० पु० समुद्र, जलधि ।

तोपिप्पली० ना० स्त्री० जलपीपल ।

तोरा० ना० पु० दहल छिपर, मरें, हेरा ।

तोरण० ना० पु० फूलोधी माना जो आनन्द  
वा लोहके दिन जायते हैं ।

तोरी० ना० स्त्री० बकरी विंगेप ।

तोल० ना० स्त्री० नील ।

तोल्क० } ना० पु० बट जो बारह मांसे भर  
तोला० } होनाई वा सोलह मांसे भर ।

तोप० ना० पु० हथ, मुक्ति, धैर्य ।

तोपक० गु० हथदाना, धैर्यदाता ।

तोषित० गु० हर्षित, धीरजनात् ।  
 तोहि० सर्व० तुम्हको ।  
 तौ० अय० तव, तौ ।  
 तौसना० अ० क्रि० श्रुके कारण से शिषिल  
 होना ।  
 तौल० ना० पु० जात, परिमाण की मिया ।  
 तौलना० स० क्रि० जोखना, परिमाण करना ।  
 तौलवाई० } ना० स्त्री० तौलने का काम वा  
 तौलवाई० } पैसा ।  
 तोलाना० स० क्रि० जोखवाना ।  
 तौलिया० } ना० स्त्री० पात्रविशेष ।  
 तौली० }  
 तोही० अव्य० अभी ।  
 तौहू० अव्य० तथापि ।  
 त्यक्क० गु० जिसको त्यागदिया ।  
 त्याग० ना० गु० छुड़ान, बेराम्य ।  
 त्यागन० ना० पु० तजन, निराग, छोड़न ।  
 त्यागना० स० क्रि० छोड़ना, तजना ।  
 त्यागी० गु० बेरागी, छोड़ेहुये ।  
 त्याज्य० गु० जो त्यागने के योग्य है ।  
 त्यौ० अव्य० तैसे, इस प्रकार, एरुहा समय में ।  
 त्यौधा० गु० चुभला ।  
 त्योनार० ना० स्त्री० चतुराई, चालाकी ।  
 त्योनारी० ना० स्त्री० स्त्री जो अपना काम नहीं  
 चतुरता से स्वच्छ बनाती है ।  
 त्योरस० ना० पु० दो वर्ष पहिले ।  
 त्योरी० ना० स्त्री० मत्थे का सकोड़, डुमनी ।  
 त्योरीचढ़ाना० अ० क्रि० क्रोधित होना ।  
 त्योहार० ना० पु० पर्व, पवनी, आनन्दकादिन ।  
 त्रपा० ना० स्त्री० लाज, हया ।  
 त्रय० गु० त्रि, ३ ।  
 त्रयईर्ष्या० ना० स्त्री० तीन ईर्ष्या अर्थात् पुन,  
 सम्पत्ति, पत्नी ।  
 त्रयगगा० ना० स्त्री० तीनगगा अर्थात् मदाकिनी,  
 भागीरथी, प्रभावती ।

त्रयताप० ना० स्त्री० तीननाप अर्थात् दार्दिक,  
 दैविक, भौतिक ।  
 त्रयपाचक० ना० पु० तान अग्नि अर्थात् आह-  
 वनीय, दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य अथवा जटरानल,  
 दावानल, वडवातल ।  
 त्रयरेखा० ना० स्त्री० तीनरेखा अर्थात् त्रि-  
 चादि, तीन लकीर ।  
 त्रयरोग० ना० पु० तीन रोग अर्थात् वान,  
 पित्त, कफ ।  
 त्रयोतनु० ना० पु० सूर्य ।  
 त्रयोदशी० ना० स्त्री० तेरस ।  
 त्र्यम्बक० ना० पु० श्रीशिवजी ।  
 त्रसित० गु० डरता हुआ, भयजान् ।  
 त्रस्त० गु० यायर, डरपान, नामर्द ।  
 त्राण० ना० पु० रक्षा, निन्तार, उद्धार ।  
 त्राणकर्त्ता० गु० रक्षक ।  
 त्राणी० गु० त्राणकर्त्ता, रक्षक ।  
 त्रात० गु० बचावयोग्य, रक्षित ।  
 त्राता० रक्षक, पालक ।  
 त्रास० ना० पु० भय, डर ।  
 त्रासक० गु० भयदायक, डरदाता ।  
 त्रासा० } गु० भयजान्, डराहुआ ।  
 त्रासित० }  
 त्राह० } अव्य० दयावाहा का शब्द, परचा  
 त्राहि० } ताप का शब्द ।  
 त्रि० गु० तीन, ३ परंतु यह शब्द विराप के  
 आगे योगहोता है यथा, त्रिभुवन, त्रिपुर ।  
 त्रिश० गु० तिसवा ३० ।  
 त्रिशति० गु० तीस, ३० ।  
 त्रिक० } ना० पु० गोलुरु ।  
 त्रिकटु० }  
 त्रिकाल० ना० पु० तीनकालअर्थात् भूत, भवि  
 व्य, वर्तमान अथवा प्रात काल, मध्याह्न, मध्याह्न ।  
 त्रिकुट० ना० पु० सिवाड़ा ।  
 त्रिकुटा० ना० पु० साठ, मिरच, पापर ।  
 त्रिकूट० ना० पु० पर्वत त्रिग्रेष त्रिसपर लकड़ि ।

त्रिकोण० ना० पु० तीनकान, तीनकोनेवाला  
सिपाड़ा ।

त्रिगुण० ना० पु० तीनवेर, तीनगुण अर्थात् सा  
त्विक, राजस, तामस ।

त्रिजग० ना० पु० तीनलोक, त्रिर्गुण ।

त्रिजगयोनि० ना० पु० पशु पक्षा आदि ।

त्रिज्या० ना० स्त्री० व्यासार्ध, आसविस्तार ।

त्रिदन्ता० ना० पु० महामदा ।

त्रिदश० ना० पु० दशता, गु० तरह, १३ ।

त्रिदशारूपपद्मो० ना० स्त्री० तेरहकरूप की  
स्त्री अर्थात् दिति, अदिति, रुद्र, विाता, शीघ्रा  
मा भातुरागेश्वरी, श्राणतिलका, पस्तिका,  
परावता, मवावती, कतकदश्या, म्प्या व  
रकमला १३ ।

त्रिदोष० ना० पु० तीनदोष अर्थात् रुक, वात  
शोर पित्त ।

त्रिदशास्य० ना० पु० स्वर्ग ।

त्रिदिव० ना० पु० स्वर्ग ।

त्रिधा० गु० तीनधाम, तीनप्रकार ।

त्रिधामि० ना० स्त्री० तीनभूमि अर्थात् मरु,  
मद, मग्भार ।

त्रिधामन० } ना० पु० तीसदारिद्र्य ।  
त्रिनेत्र० }

त्रिनेत्रा० ना० स्त्री० भवानी विशेष ।

त्रिपथगा० ना० स्त्री० शीमलानी ।

त्रिपद्० ना० पु० } तिपाई ।  
त्रिपदी० ना० स्त्री० }

त्रिपर्णा० ना० स्त्री० शालपर्णी ।

त्रिपादिका० ना० स्त्री० हसपादी ।

त्रिपु० ना० पु० सासा, धातु विराय ।

त्रिपुस्ता० ना० स्त्री० इत्रवादी ।

त्रिपुटा० ना० स्त्री० हसपादी ।

त्रिपुटी० ना० स्त्री० निसाव ।

त्रिपुण्ड्र० ना० पु० शालमनका तिलक जो आड़ा  
हाडा है, वैष्णवमनका तिलक जो दादा होता है ।

त्रिपुर० ना० पु० त्रिलाक, दत्यविशेष ।

त्रिपुरारि० ना० पु० श्रीमहादेव जी ।

त्रिपुरस० ना० पु० सारा ।

त्रिपौलिया० ना० पु० तीन द्वारका मार्ग ।

त्रिफला० ना० पु० तीनफल अर्थात् आवला,  
रूफ, बहेडा ।

त्रिभगा० गु० तिरछा सदाशेना ।

त्रिभगी० ना० पु० छंद विशेष श्रीकृष्णचञ्चरी  
का एक नाम ।

त्रिभुज० गु० तीन भुजावा, त्रिकोण ।

त्रिभुवन० ना० पु० तान तान अर्थात् स्वर्ग,  
मय, पाताल ।

त्रिभुहानी० ना० स्त्री० विशेष ।

त्रिय० } ना० स्त्री० अचला, पत्नी नारी ।  
त्रिया० }

त्रिलोक० ना० पु० त्रिभुवन, और ऊर्ध्व मध्य  
अथ वा उत्तम मध्यम और नीच ।

त्रिलोकी० ना० पु० तीनलाहडा सशुदाय ।

त्रिलाह० ना० पु० पीतल ।

त्रिशकु० ना० पु० राजा विराय ।

त्रिशूल० ना० पु० महादेवका अस्त्र विशेष ।

त्रिसन्ध्या० ना० स्त्री० तीन सन्ध्या अर्थात्  
शान्प्रकाल, मध्याह्न, सन्ध्या ।

त्रिसन्ध्यास्वरूप० ना० पु० रक्त, शुक्र, श्याम

त्रिसोता० } ना० स्त्री० शीमलानी ।  
त्रिस्रोता० }

त्रुटि० ना० स्त्री० टूट, न्यूनता ।

त्रेता० ना० पु० युग विशेष ।

त्रैशिक० गु० तीनराशि का गणित ।

त्रोटक० ना० पु० छंद विराय ।

त्रोण० ना० पु० दूध, तरकड़ा ।

त्व० सर्व० ह् ।

त्यक्० ना० स्त्री० छाल, स्पर्शोद्भय, स्याल ।

त्यचा० ना० स्त्री० छितरा, बकला, स्याल

त्यची० ना० पु० नास, गु० त्वचाधारी ।

त्यदग्नि० ना० पु० तुम्हारे चरण ।

स्वदीय० सर्व० तुम्हारी, रामायणे यथा ( ल-  
दीयभक्तिस्तुतं ) ।

त्वराना० ना० स्त्री० उतावली ।

[ थ ]

थई० ना० स्त्री० यथादि का ढेर ।

थंघ०  
थंघा०  
थंभ० } ना० पु० लम्भ, धूनी, लम्भ ।

थंभना० अ० कि० ठहरना, रुकना, संभलना ।

थक० ना० पु० थका ।

थकथक० गु० लथपथ ।

थकना० अ० कि० माँदा होना, हारना ।

थका० गु० माँदा, हारा ।

थकाना० स० कि० माँदा करना, हराना ।

थकित० गु० थका, जो रुकगया, अचम्भित ।

थकाना० ना० पु० चकान ।

थन० ना० पु० गौ आदि का स्तन ।

थनी० ना० स्त्री० घोड़े का दीप विशेष ।

थनैला० ना० पु० धनका रोगविरोध ।

थनेसरी० ना० पु० कुद्वेज के ब्राह्मण ।

थपक० ना० पु० थापी ।

थपडा० ना० पु० थपड़, चपेटा ।

थपड़ी० गौ० स्त्री० नाली ।

थपना० स० कि० स्थापना, बैठाना, अ० कि०  
स्थापित होना, बैठजाना ।

थपा० गु० स्थापित, बैठयाहुआ ।

थपाना० स० कि० स्थापित करना, बैठाना ।

थपेडा० } ना० पु० चपेटा ।

थभना० अ० कि० रुकना ।

थम्भना० } अ० कि० रुकना ।

थर० ना० पु० सिंह, और शेरका खोह ।

थरथर० गु० कम्पा ।

थरथराना० अ० कि० कांपना, कम्पाना ।

थरथराहट० } ना० स्त्री० कपकपी, कम्पाहट ।

थरथराना० } अ० कि० कांपना, कम्पना,  
थरथराना० } हलहलाना ।

थल० ना० पु० भूमि, स्थल ।

थलकना० अ० कि० धक्कना, तलपना ।

थलथलकरना० } अ० कि० हिलाना, यथा  
थलथलाना० } स्थूल मनुष्य का मांस हि-  
लना है ।

थलचर० } गु० मनुष्यादि ।

थलिया० ना० स्त्री० भोजन करनेका पीतलादि  
का पाय ।

थली० ना० स्त्री० घर, पांडर ।

थथई० ना० पु० रान, मीमार, धरकारी ।

थथराना० अ० कि० कांपना ।

थांग० ना० स्त्री० चोरों की माँदि ।

थांगी० ना० पु० चोर, धनिक ।

थांभ० ना० पु० लम्भ ।

थांभना० स० कि० टेकना, आड़ना, अटकाना,  
रोकना, सहायता करना ।

थांचला० ना० पु० वृक्ष आदि का थाला ।

थाकना० अ० कि० थकना ।

थाका० गु० थका ।

थाती० } ना० स्त्री० धरोहर, अमानत, सौंपा ।

थान० ना० सारा कपडा, अथवादि के रहने का  
स्थान, छद्रा, कक्ष, मकान, ठिकाना ।

थाना० ना० पु० रसकों का स्थान, नासों का ढेर ।

थानी० ना० पु० स्थान का स्वामी, थांगी ।

थाप० ना० स्त्री० धौल, थपड़, पशु का पांव,  
सर्वाद, बैठक ।

थापना० स० कि० थोपना, धौलियाना, ना०  
पु० व्यवहारविशेष स्थापन करना ।

थापा० ना० पु० पशुके पावका चिह्न, धपा ।  
 थापित० गु० बैठायामया, स्थापित, नियत भया,  
 पुकरं हुआ ।  
 थापी० न० स्त्री० धाने का मन्त्र, काठरु। पस्तु  
 विशेष जिसमें छत पीने हैं ।  
 थाम० ना० पु० थम्भ, थनी ।  
 थामना० स० क्रि० राटना, पकड़ना ।  
 थार० } ना० पु० बर्दा धाली ।  
 थाल० }  
 थाला० ना० पु० थारला, थाल ।  
 थाली० ना० स्त्री० भाजा करने का पात्रशेष ।  
 थावर० ना० पु० स्थावर, बृहादि, अचल ।  
 थाह० ना० स्त्री० नदी की तली, नदी में वह  
 स्थान जहाँ पैदल उतर जावे ।  
 थाहा० ना० पु० नदीका स्थान जो गहिरा न हो ।  
 थाही० ना० स्त्री० बाहपना गु० जो गहरी न हो ।  
 थिति० ना० स्त्री० स्थिति, धिरता, पालन ।  
 थिर० गु० स्थिर, अचल प्रायम् ।  
 थिरकना० अ० क्रि० चमत्कार करके नाचना ।  
 थिरकाना० स० क्रि० चमकार से नाचना ।  
 थिरकी० ना० स्त्री० चमकार, प्रभाव ।  
 थिरता० ना० स्त्री० } स्थिरता, अचलता ।  
 थिरत्व० ना० पु० }  
 थिरा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।  
 थिराना० स० क्रि० बैठाना, ठहराना, अ० क्रि०  
 बैठना, ठहरना, पानी की मिट्टी का बैठजाना ।  
 थीर० गु० सुस्थित, स्थिर, मदा ।  
 थुकथुकाना० अ० क्रि० कुचासनादि विनकी वस्तु  
 देतकर थूकना वा कुदष्टि दूर करने के लिये  
 थूकना ।  
 थुकाना० स० क्रि० थूक फिंकवाना और निन्दा  
 करना ।  
 थुथुकारना० स० क्रि० तुष्य करके किमको बाहर  
 करना ।  
 थुथुनी० ना० स्त्री० शूकरादि का मुत ।

थुथाना० स० क्रि० भौंहें टेढ़ी करना ।  
 थूक० ना० पु० मूत्रमें का पानी ।  
 थूकना० स० क्रि० मूत्रमें से पानी फेंकना ।  
 थूणी० ना० स्त्री० थूनी ।  
 थूतहा० ना० पु० }  
 थूथन० ना० पु० } गहरादि का मुत ।  
 थूथना० ना० पु० }  
 थूथनी० ना० स्त्री० }  
 थूनी० ना० स्त्री० धरन, टेकन ।  
 थूहर० ना० पु० वृद्धिशेष ।  
 थूरथूर० ना० स्त्री० बहलवद्द ।  
 थुगली० ना० स्त्री० बपड़े में जोड़, पंखद ।  
 थुवी० ना० पु० नम ।  
 थूला० ना० पु० }  
 थूलिया० ना० स्त्री० } बटआ, दुलमियान ।  
 थूली० ना० स्त्री० }  
 थोक० ना० पु० समूह, देर, एकभाग, टोला,  
 महला ।  
 थोड़० ना० पु० फले केले के गर्भा ।  
 थोड़ा० गु० अल्प, कम ।  
 थोथला० गु० मोता, मोग ।  
 थोथा० ना० पु० अज्ञानिशेष, फलरहित, गु०  
 छूटा, पोपला, बदमूरत, कुभयडा ।  
 थोप० ना० पु० पालकी के नासक अथवा  
 भूषण, छाप ।  
 थोपना० स० क्रि० टेकना, छोपना, गाजना,  
 बन्देरना ।  
 थोपियाना० अ० क्रि० बुदियाना, भिरभिराना  
 थोपी० ना० स्त्री० धप्पा ।  
 थोब० } ना० स्त्री० लठी का टेकन  
 थोम० }  
 थोहर० ना० पु० थूर ।  
 थौना० ना० पु० गौने के पीछे स्त्री की निदा ।

[८]

द० अन्व० यह अक्षर जेव शब्द के अक्षर में

आना हे तब उमरा अर्थ देनेहारा होजाना हे  
यथा सुखद अर्थान् सुख देनेहारा ।  
दई० ना० पु० दैन, भगवान्, प्रभा, स्त्री, मिठाई  
विशेष ।

दंश० ना० पु० दा की मक्की, दात ।

दंशन० ना० पु० दातो से काटन ।

दंष्ट्री० ना० पु० शहर, सर्प ।

दंस० ना० पु० कुत्ता, सिंह, डास ।

दखन० ना० पु० दक्षिण ।

दगड़० ना० पु० धका, टफा, उफा, राह ।

दगड़ा० ना० पु० पैदा ।

दगड़ाना० स० क्रि० खलाना, ठोका, उग-  
राना ।

दगदगा० गु० चमकीला ।

दगदगाना० अ० क्रि० चमकना, चहकना, तम  
तमाना ।

दगदगाहट० ना० स्त्री० चमक ।

दगधना० स० क्रि० जलाना, धेकना, सताना,  
डाना, धुपकारना ।

दगला० ना० पु० रुई भरा अगस्ता ।

दग्ध० गु० जो जलगया ।

दग्धा० गु० जला, तिथिविशेष, वारविशेष, मास  
युक्त तिथि ।

दंगल० ना० पु० चोरीविशेष, बहुतात ।

दंगा० ना० पु० बन्वेडा, रौला ।

दंगैत० गु० रौला वा बन्वेडा करनेहारा ।

दटना० अ० क्रि० अड़ना, सामना करना ।

दण्ड० ना० पु० लाठी, शासन, डाट, धकी, छ-  
बौती, डपाना ।

दण्डक० ना० पु० राजाविशेष, गु० दण्डकर्ता ।

दण्डधर० } ना० पु० यमराज, गु० दण्ड  
दण्डधारी० } बाधनेहारा ।

दण्डमान० गु० दु खदाता, दण्डदाता, ना० पु०  
यमराज ।

दण्डवत्० ना० स्त्री० दण्ड के समान पक्के  
प्रणाम करना ।

दण्डादण्डी० ना० पु० आपस में लार्डि सड़ना ।

दण्डायमान० ना० पु० दण्डाजी नई खेडा ।

दण्डित० गु० दण्ड लियागया, सताया गया,  
पीड़ित, शिका कियागया ।

दण्डी० ना० पु० तपस्वरी, गु० दु खरूपी, डाई ।

दण्ड्य० गु० दण्ड देनेके योग्य ।

दण्डवन० { ना० पु० दण्डधावन, मिसवान ।  
दण्डन० }

दण्डना० न० पु० पा० विशेष ।

दण्डली० ना० स्था० छोटे २ दात ।

दण्डनी० ना० पु० दण्ड ।

दण्ट० गु० जो दियागया ।

दण्टानेय० ना० पु० हरि अतार, मुनिविशेष ।

दण्टरीक्षेत्र० ना० पु० भृगुमुनि का स्थान पट-  
ना के पास है ।

ददियात्त० } ना० पु० दादाकापर, पुरुषे ।  
ददियाला० }

ददोषा० ना० पु० मच्छड आदि के काटने की  
पूजा ।

दद्रु० ना० पु० दादुरोग ।

दधि० ना० पु० दही, रामुद्र ।

दधिकान्दो० ना० पु० ज माघमी के दूसरे दिन  
का पर्वानन्द ।

दधिमुख० ना० पु० लड़का बहुत कम उमर  
वालय, वानरविशेष जो रामदल में था ।

दधिरिपु० ना० पु० अण्डल्यमुनि ।

दधिवल० ना० पु० सुभ्रव का पुत्रविशेष ।

दधिसुत० ना० पु० चन्द्रमा आदिक ।

दधीधि० ना० पु० मुख्यराजा, मुनिविशेष ।

दनुज० ना० पु० दैत्य, राक्षस ।

दनुजपति० } ना० पु० दैत्योंका राजा ।  
दनुजराज० }  
दनुजाधिप० }

दनुजारि० ना० पु० देवता, श्रीनारायण ।

दनुजेश० } ना० पु० दैत्योंका राजा ।  
दनुजेश्वर० }

दन्त० ना० पु० दात, दशन ।  
 दन्तकाष्ठ० ना० पु० दन्त करना, दन्त ।  
 दन्तघानी० ना० पु० धनिया ।  
 दन्तवीज० ना० पु० अनार ।  
 दन्तशठ० ना० पु० माई औषधि, जमीरी ।  
 दन्तशूल० ना० पु० दातोंकी पीड़ा ।  
 दन्तिका० ना० स्त्री० बड़ी छत्रावर ।  
 दन्ती० ना० पु० हाथी ।  
 दन्तीफल० ना० पु० विस्ता ।  
 दन्तुर० } गु० जिसके दात होठ से न टूटें वा  
 दन्तेना० } जिस जन्तु आदि के बड़े १ दातहों  
 दन्तैल० } हबड़ा, हमिला ।  
 दन्त्य० गु० जिन अक्षरों का उच्चारण दाँतसे हो  
 ता है यथा, त य द ध न ल स ।  
 दन्दाना० अ० कि० विराजना, निडर बैठना ।  
 दन्ना० ना० पु० इन्द्रिय, लिंग, गु० निडर ।  
 दन्नापेल० गु० व्यभिचारी, अतिनिश्राक ।  
 दपट० ना० स्त्री० दौड़, मूषट, डाट ।  
 दपटना० अ० कि० दौड़ना, डाटना ।  
 दपटना० स० कि० दौड़ना, डाट दिखाना ।  
 दषकना० अ० कि० क्षिपना, घाट में बँडना ।  
 दषकर० ना० स्त्री० कल ।  
 दषकाना० स० कि० धमकाना, डाटना, लु-  
 काना ।  
 दषकी० ना० स्त्री० दाव, जिपकी ।  
 दषकीला० } गु० प्रमद, द्रवकनेहारा ।  
 दषकैल० }  
 दषंग० } गु० कुशील, कुदगा ।  
 दषगा० }  
 दषना० अ० कि० नीचे होना, कुविलग, फानि  
 करना, मानना ।  
 दषा० ना० पु० दाव, घात ।  
 दषाना० स० वि० दावना, निचोड़ना, डाटना ।  
 दषाय० ना० पु० पराक्रम, आधीनता, धँक,  
 धदन ।  
 दषीला० ना० पु० औषधिविशेष, वैशा, चणू ।

दषेपांश० अन्व० होले, धीमे ।  
 दषेल० ना० पु० प्रना, आधीन ।  
 दषोचना० स० कि० दवायबालना ।  
 दषम० ना० पु० मनसे निज वशरखना अर्थात्  
 इन्द्रियों को रोकना, दौना मुगथि ।  
 दषमक० ना० स्त्री० चमक, दहक, भलक, दाह ।  
 दषमरुना० अ० कि० मरुतकना, चमकना ।  
 दषमडा० ना० पु० सम्पत्ति, दौला ।  
 दषमडो० ना० स्त्री० पैसे का आठवा भाग ।  
 दषमदमाना० स० कि० हिलाना ।  
 दषमन० ना० पु० सूमा, नागदौन, पुप विशेष,  
 अधीनता, नाशन, दमयन्ती ।  
 दषमनीय० गु० दमन के योग्य, दमन करक, ता  
 टनेहारा, रामायणे, ( कुँवरि मनोहरि विजैम  
 बधि कीरति अथि कमनीय, पावनहार-निराधि  
 जनु रच्यो न धनु दमनीय ) ।  
 दषमयन्ती० ना० स्त्री० राजा नल की भार्या ।  
 दषमाना० स० कि० लचकाना, निहराना, खुद-  
 वाना ।  
 दषमामा० ना० पु० डंभ, धौंसा ।  
 दषम्पति० } ना० पु० स्त्री पुष्य ।  
 दषम्पती० }  
 दषम्भ० ना० पु० अहङ्कार, घमण्ड, पातण्ड, धल,  
 बर्ह्य ।  
 दषम्भी० गु० अहङ्कारी घमण्डी, पातण्डी, धली ।  
 दषम्प्य० गु० शास्य, ना० पु० खैला ।  
 दषया० ना० स्त्री० कृपा, वरुणा, दान, विनय ।  
 दषयायुक्त० }  
 दषयालु० } गु० कृपावन्त, मिलनसार, दाना,  
 दषयावन्त० } मायावन्त, मेहरवान ।  
 दषयावान्० }  
 दषयाशील० }  
 दषर० ना० पु० मोल, भाव, शक्त, छेद, डर, प्रीति ।  
 दषरफना० अ० कि० चिरजाना, पटना ।  
 दषरका० ना० पु० दरार, फूटान ।  
 दषरकाना० स० कि० फाटना, चीरना ।



दरकी० गु० स्त्री० फटी ।  
 दरदर० ना० पु० थिर, सिद्ध ।  
 दरदरा० गु० अधभूया, अधपिसा ।  
 दरश० } ना० पु० दर्श, देसना ।  
 दरस० }  
 दरही० ना० स्त्री० मछली विशेष ।  
 दरांता० ना० स्त्री० हँसिया, कम्नी । । ।  
 दरार० } ना० पु० दरवा, चीर ।  
 दरारा० }  
 दरि० ना० स्त्री० मोल भाव ।  
 दरिद्र० ना० पु० } दीनता, धगालत नि-  
 दरिद्रता० स्त्री० } क्वेता ।  
 दरिद्री० गु० दीन, कगाल ।  
 दरी० ना० स्त्री० सोह, गुफा, विछीना विशेष ।  
 दरीभूत० ना० पु० पर्वत, पहाड ।  
 दरीन० ना० स्त्री० दरीका बहुवचन ।  
 दर्दुर० ना० पु० मेंढक ।  
 दर्प० ना० पु० अहङ्कार, अभिमान, मान ।  
 दर्पक० ना० पु० कामदेव ।  
 दर्पण० ना० पु० आदर्श, छडर, शीशा ।  
 दर्पणी० ना० स्त्री० दर्पणी ।  
 दर्पणीय० गु० छदर, शिखरी, सुधरा, अध्या ।  
 दर्पणोदर० ना० पु० चीरस दर्पण का छेद ।  
 दर्पी० गु० अभिमानी, मानी ।  
 दर्मे० ना० पु० बुरा, पास ।  
 दरी० ना० पु० दारा ।  
 दरीना० अ० वि० निडर, आगे बढ़ना, वेधक  
 आगे चलना ।  
 दरिका० ना० स्त्री० गोमी ।  
 दर्वी० ना० स्त्री० बर्छी ।  
 दर्वाकार० ना० पु० साप ।  
 दर्श० ना० पु० दृष्टि, परिवा, प्रतिपदा ।  
 दर्शक० गु० दितनीट, देसनेवाला ।  
 दर्शकता० ना० स्त्री० दर्शन, दितान ।  
 दर्शन० ना० पु० दर्शन, भेद ।  
 दर्शनधारी० गु० दर्शन ।

दर्शनी० ना० स्त्री० हुण्डी विशेष जिससे देखते  
 ही रुपया दिया जावे ।  
 दर्शी० गु० देखनेवाला ।  
 दल० ना० पु० पत्ता, बडी फौज, देर, मोर-  
 पल ।  
 दलक० ना० स्त्री० भलक ।  
 दलकना० अ० वि० भलकना ।  
 दलदल० ना० पु० धसाव, पाक, भेचक ।  
 दलदलाना० अ० वि० कापना, धरधारा ।  
 दलदलाहट० ना० स्त्री० धरधाराहट, कम्प ।  
 दलन० ना० पु० नाशन, दो टुक करनेका काम  
 विशेष ।  
 दलना० स० क्रि० दो टुक करना ।  
 दलवादल० ना० पु० मैथों का समूह ।  
 दलवाना० स० क्रि० दो टुक करना ।  
 दलवैया० ना० पु० दलनेहारा ।  
 दलाना० स० क्रि० दलवाना ।  
 दलिद्र० ना० पु० } दरिद्र ।  
 दलिद्रता० स्त्री० }  
 दलिद्री० गु० दरिद्री ।  
 दलित० गु० दो टुक कियाका, कम्प ।  
 दलिया० ना० पु० अथङ्कार, कम्पि ।  
 दलिहन० ना० पु० जो दल टुक करनेवाला  
 है यथा उद ददि ।  
 दली० गु० दलक अर्थात्, ना० पु० दल ।  
 दल्लेना० ना० पु० } कल्ले वडा ।  
 दल्लेनी० ना० स्त्री० }  
 दलन० ना० पु० दल की कला, कला ।  
 दवागि० }  
 दवानि० } ना० पु० दल की कला ।  
 दवालन० }  
 दवारि० }  
 दगु० गु० दग, १० ।  
 दशकण्ठ० ना० पु० कण्ठ ।  
 दशगात्र० ना० पु० दशक अर्थात् दश ।  
 दशदिग्गात्र० ना० पु० दशदिग्गात्र अर्थात्

इन्द्र, १ धनि, २ यम, ३ निर्धनि, ४ वरुण, ५  
यापु, ६ कुबेर, ७ ईशान, ८ ब्रह्मा, ९ थ-  
नन्त, १० ।

दशदिशा० } ना० स्त्री० दशधोर अर्थात् पूर्व,  
दशदिशे० } धान्येय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम,  
वायव्य, उत्तर, ईशान, अथ, ऊर्ध्व, १० ।

दशन० ना० पु० दात ।

दशम० शु० दसवा ।

दशमांश० ना० पु० दसवा भाग ।

दशमी० स्त्री० दसवीं तिथि ।

दशरथ० ना० पु० धीरामचन्द्रजी के पिता ।

दशहरा० ना० पु० ज्येष्ठ वा आश्विन शुक्लपक्ष  
की दसवीं तिथि ।

दशा० ना० स्त्री० अवस्था, व्यवस्था, गति ।

दशांश० ना० पु० दसवाभाग, दश ।

दशांगुल० ना० पु० फलान्शेष अर्थात् छतरमुता ।

दश० शु० दस, १० ।

दसन० ना० पु० दशन, दात ।

दसम० शु० दसवा, दसवा ।

दशरथ० ना० पु० दशरथ ।

दसहरा० ना० पु० दसहरा ।

दसी० ना० स्त्री० सप्त, दशां, गार्गी की पत्नी ।

दसीला० शु० छलकी दशा में रहनेहार ।

दसोखा० ना० पु० पतका भाङना ।

दसोखा० ना० पु० शरीर के दशभाग अर्थात्  
आल, कान, नाक, भ्रू, लिंग, गुदा, चादि,  
परन्तु चादिरहित केवल गवद्वार ठीक हैं ।

दसौंधी० ना० पु० भाट बरदित ।

दस्यु० ना० पु० बेर, चोर ।

दस्युसृष्टि० ना० स्त्री० चोरी ।

दह० ना० पु० गहराव ।

दहक० ना० स्त्री० दाह, चमक ।

दहकना० अ० कि० जलना, पकिताना, सत्यानास  
होना ।

दहकाना० स० कि० जलाना, निगाडना, अप-  
श्चात्तापकरानी, गर्माना ।

दहन० ना० पु० अग्नि ।

दहन०

दहना० } अ० कि० जलना, बरना ।

दहनो० }

दहलाना० अ० कि० दबना, फाटना ।

दहलाना० स० कि० दवाना, कम्पाना ।

दहसेरा० ना० पु० दससेर का तोल ।

दहा० शु० जलगया वा जलाहूआ ।

दहाङना० अ० कि० गर्जना, यथा शेरकारणम् ।

दहाना० स० कि० जलाना ।

दहिना० शु० दक्षिण, सीमा, सहायक ।

दही० ना० पु० गोरस, दधि, शु० जलगर्द ।

दहीकी० ना० स्त्री० दहीकी हाडी ।

दहेङ्ग० ना० पु० पक्षी विशेष ।

दहेल० ना० पु० पक्षी विशेष ।

दहो० ना० पु० दही, स० कि० जलाया ।

दक्ष० ना० पु० निपुण, चतुर, ब्रह्मा का पुत्र  
जिसको ब्रह्माने दक्षिणांगुष्ठमें उत्पन्न किया था,  
स्मृति विशेष ।

दक्षन० ना० पु० बधना बहुवचन भाषा में  
प्रचलित है यथा देव देवन धीर लोह लोहन  
आदि ।

दक्षसुत० ना० पु० प्रचेता ।

दक्षसुता० ना० स्त्री० दक्षकी कन्याविशेष, सती ।

दक्षिण० शु० सत्ता, उदित, सूर्य का दक्षिण  
दहिना, दक्षिण ।

दक्षिणअक्षांश० ना० पु० रेखाभूमि के दक्षिण  
केन्द्रक जो माप है ।

दक्षिणकेन्द्र० ना० पु० जिसके चारोंधोर हिम  
समुद्र हैं वा जिसको हिन्दू शास्त्र बह्वतल क-  
हते हैं ।

दक्षिणखण्ड० ना० पु० विन्ध्याखल के दक्षिण  
का देश विशेष ।

दक्षिणा० ना० स्त्री० कर्म, कृत्य के निमित्त  
ब्राह्मण को दान देना, कृत्य का वेतन ।

दक्षिणाग्नि० ना० पु० अग्नि विशेष ।  
 दक्षिणायन० ना० पु० कर्कसक्रांति से ध्रुव  
 सक्रांति तक का काल ।  
 दक्षिणीय० गु० दक्षिण देशके मनुष्यादि ।  
 दा० अन्य० पदान्त में दाताका अर्थ सूचक यथा  
 सुखदा अर्थात् सुखदाता ।  
 दार्ढ० ना० स्त्री० दूध पिलाने हारी ।  
 दाऊ० ना० पु० बडा चचा, श्रीवलदेवजी का  
 एक नाम ।  
 दांड० ना० पु० दण्ड, चम्पू ।  
 दांष्ट्रा० ना० पु० रीति, धूरा, सियाना ।  
 दांष्ट्रामंडा० ना० पु० मिथाना, छोर, धूरा ।  
 दांष्ट्री० ना० पु० नाविक, नाव चलाने हारी,  
 ना० स्त्री० दण्डी तुलाआदि की ।  
 दांत० ना० पु० दांत, दरान ।  
 दांतन० ना० पु० दांतधावा, काष्ठ, दंतून ।  
 दांतपीस्तना० अ० कि० किचकिचागा ।  
 दांताकिलकिल० ना० स्त्री० झगडा, नखेडा ।  
 दांती० ना० स्त्री० आराके दात ।  
 दांत० ना० पु० घात, अक्सुर, होड, बारी ।  
 दास्य० ना० पु० अग्र, मुनीका ।  
 दाश० ना० पु० चिह्न यह शब्द फारसीका है ।  
 दागना० स० कि० चिह्नकरना, छोडना यह  
 शब्द यामिनी भाषा का है ।  
 दाहिम० ना० पु० अन्तर ।  
 दाही० ना० स्त्री० टोहीपरके बाँस ।  
 दातन० ना० पु० दंतून ।  
 दातव्य० गु० देनेके योग्य, दातापन ।  
 दातव्यता० ना० स्त्री० दातापन, देनहारी ।  
 दाता० गु० पु० धर्मात्मा, देनेहारा, दयालु ।  
 दातार० गु० दाता ।  
 दात्र० ना० पु० दराती विशेष ।  
 दाद० ना० पु० रोग विशेष दह ।  
 दादमर्दन० ना० पु० दह-मर्दन, औषधि विशेष ।  
 दादा० ना० पु० पिताका पिता, बडा भाई ।  
 दादी० ना० स्त्री० पिताकी माता ।

दाह० ना० पु० दह-रोग विशेष दह ।  
 दाहुर० ना० पु० मेटक ।  
 दाहू० ना० पु० महापुरुष विशेष जिसने अ-  
 पना पथ चलाया जो जातिका विहना था ।  
 दाधना० स० कि० दग्धना ।  
 दान० ना० पु० पुण्यार्थ धनका त्याग, भूत, सै-  
 रात ।  
 दानपत्र० ना० पु० पुण्यार्थ धनादि का दान-  
 पत्र, मार्फानामा ।  
 दानव० ना० पु० दत्य, अहुर ।  
 दानवारि० ना० पु० देवता, श्रीविष्णुजी ।  
 दाना० ना० पु० अश्यादिके खाने का अन्न ।  
 दानी० गु० दाता, सस्ती ।  
 दाप० ना० पु० शोध, अभिमान ।  
 दापक० गु० शोधी अभिमानी ।  
 दाघना० स० कि० दवाना ।  
 दाम० ना० पु० रुपया, पैसा, ना० स्त्री० मासा,  
 रस्ती, गु० पेम का चोवीसवा भाग, मोल ।  
 दामवती० ना० स्त्री० मासा ।  
 दामासाही० ना० स्त्री० यथार्थ भाग की कर्त-  
 व्यता ।  
 दामिनी० ना० स्त्री० बिडली, वीषा ।  
 दामी० ना० स्त्री० यथार्थ विहारी ।  
 दामोदर० ना० पु० श्रीकृष्णचंद्रजी का एक  
 नाम, वर्तमान देशका एक नदी, गु० जिसके  
 पेटतक माला हो ।  
 दामिक० गु० दम्भी, पाखण्डी, अभिमानी ।  
 दाय० ना० पु० पेटक धन ।  
 दायक० ना० पु० देनेहारा ।  
 दायजा० ना० पु० ब्याहका दान, यौतुक ।  
 दाय्या० ना० स्त्री० दाना, कृपा ।  
 दार० ना० स्त्री० दारा, काष्ठ, दाह ।  
 दारचीनी० ना० स्त्री० काष्ठ विशेष ।  
 दारा० ना० स्त्री० स्त्री, पत्नी, जोरू ।  
 दारिका० ना० स्त्री० सक्की, सक्की ।

दाधिति० ना० स्त्री० निरण ।  
 दीग० शु० कपाल, अधीन, दुग्नी ।  
 दीनता० } ना० स्त्री० दारिद्र्य आधीनता,  
 दानताई० } शरीरी ।  
 दीनदयालु० शु० दानगतिपालक, गरावपुरवर,  
 दीनौर दया करनहार ।  
 दीनपाल० } शु० पादय लु, दीनों का  
 दीनप्रतिपालक० } पालन हारा ।  
 दीनयन्त्रु० }  
 दीना० स० कि० दना दानमहा ।  
 दीनानाय० शु० दानपाल दीनदयालु ।  
 दीप० ना० पु० दिया, चिराम जीप ।  
 दीपक० ना० पु० दीप । दया, राग निराप, अ  
 जनाहा ।  
 दीपदान० ना० पु० दिया जलाना ।  
 दीपनी० ना० स्त्री० कपरी ।  
 दीपनीषा० } ना० स्त्री० धनवान  
 दीप्य० }  
 दीपमाला० } ना० स्त्री० । दनाली ।  
 दीपमालिका० }  
 दीपसुत० ना० पु० कानल ।  
 दीपि० स० कि० दीप दवर ।  
 दीपिका० ना० स्त्री० दीपकका प्रकार ।  
 दीपित० शु० दीपदिया गया ।  
 दीप्त० शु० प्रखिलित, प्रकाशित ।  
 दीप्ति० ना० स्त्री० चमक, प्रकाश ।  
 दीर्घ० शु० लम्बा शुक्र त्रिमासिक प्रश्न ।  
 दीर्घक० ना० पु० शत्रुनीरा सकृदजरा ।  
 दीर्घकालक० ना० पु० अकोल ।  
 दीर्घजघ० ना० पु० ऊ० ।  
 दीर्घजिह्वा० ना० स्त्री० राजा निरोचन का  
 चया ।  
 दीर्घदण्ड० ना० पु० धरपड एरण्ड, रण्ड ।  
 दीर्घदर्शी० शु० धर्मराशी, दूरदर्शी ।  
 दीर्घपदाक० ना० पु० लक्ष्मण पुनर्नवा ।  
 दीर्घपला० ना० स्त्री० विरपाग ।

दीर्घपुष्पक० ना० पु० भदार, आरु ।  
 दीर्घपृष्ठ० ना० पु० साप ।  
 दीर्घमूल० ना० पु० जनाना गालपथी ।  
 दीर्घमूलक० ना० पु० निधारा ।  
 दीर्घसूत्री० ना० पु० जा विनमते कामकार ।  
 दीघट० ना० स्त्री० दीपक रत्ने का आधार ।  
 दीघली० ना० स्त्री० छाग दिया ।  
 दीना० ना० पु० दीपक दिया ।  
 दीसना० स० । क्र० देखना ।  
 दीसा० स० कि० भू दत्ता देरता ।  
 दीह० ना० पु० बजा, रामचन्द्रकायायथा ( दीह  
 दीह दिग्गजा क बराव मनाडुमार, धीन्हे रांक  
 दरारवाहि दिग्गालन उपहार ) ।  
 दीक्षा० ना० स्त्री० मन्त्र का ग्रहण उपदेश ।  
 दीक्षित० शु० दीक्षा किया गया, ना० प० मा  
 द्वय जाति विरोध ।  
 दु० शु० दो २ ।  
 दु० अन्व० शब्दा आदि  
 का एचक ।  
 दु० कर्षी० ना० स्त्री० किर  
 दु० ख० ना० पु० पीना क  
 दु० खडा० ना० पु० आप  
 दु० खदाई० शु० दु सदा  
 दु० खदाति० शु० दु स द  
 दु० खना० अ० मि० पीना  
 दु० खाना० स० कि० दु स  
 दु० खित०  
 दु० खिया०  
 दु० खियारा० } शु० पाकित, क  
 दु० खियारी० } कपाल ।  
 दु० खी०  
 दु० खरील०  
 दु० प्रघापि  
 दु० समय० ना  
 दु० स्पर्शा० ना  
 दु० कर० ना० पु



दुकाण० ना० पु० दोनो कान, हाट ।  
 दुकाख० ना० पु० विपातपाल, दुर्भिक्ष ।  
 दुकूल० ना० पु० रेशमी वस्त्र निराप, दोनो  
 तट ।

दुरा० ना० पु० दुष्ट ।

दुसद० }  
 दुसदा० } गु० दुसदाई, कष्टदनाला ।  
 दुसदाई० }  
 दुसदाता० }

दुखप्रय० ना० पु० तीन दुख अर्थात् दैविक,  
 इहिक, भौतिक, अथवा कष्ट, पित्त आर नात ।

दुखारी० }  
 दुखित० }  
 दुखिया० } गु० दुखिया, पीडित ।  
 दुखियारा० }  
 दुखियारी० }  
 दुखी० }

दुखेन० ना० पु० दुःखयुत, दुःखकरके ।

दुगई० ना० स्त्री० चियारा, कैची जा छपर में  
 लगाते हैं ।

दुगज० } गु० दिग्गुप्त चौहरा, दूना ।  
 दुगना० }

दुग्ध० ना० पु० दूध ।

दुग्धिका० ना० स्त्री० दूधिया, पोधा ।

दुग्धिनी० ना० स्त्री० कहरें गोपी ।

दुग्धी० ना० स्त्री० दूधिया पोधा, सहृद ।

दुचित० } गु० निस्सका मन दा थोर लगाहा ।  
 दुचिता० }

दुचितार्० ना० स्त्री० चिता, दुविधा, प्रेम ।

दुचिता० गु० दुचित ।

दुस० अण्य० दू ।

दुतकार० ना० पु० उदाहारा, भिडक ।

दुतकारना० स० कि० सासना, कुत्तेकी दागा ।

दुतकारी० ना० स्त्री० मास, तासन ।

दुताना० स० कि० दवाना, दागा ।

दुति० ना० स्त्री० चरक, भडक, घुदरना ।

दुतिवन्त० } ना० गु० भडकीला, चर्मकदार,  
 दुतिवान् } छत्र, एग चन्द्रादयमाहै, राम  
 शत्रिधारा यथा ( दुतिवन्तन को विपदा अति  
 कीही, धरणी कहु रहु नथु गदि कीही ) ।

दुवही० } ना० स्त्री० आधि पीधा विरार ।  
 दुवही० }

दुधा० ना० स्त्री० दाजगह, दासकर ।

दुधारा० } गु० दूध दनहार, दा धार का ।  
 दुधारा० }

दुधौल० गु० दूध देवहारो ।

दुन्दुभि० ना० स्त्री० तकार, निराप, देत्य  
 निराप । तसका बाल न माराथा ।

दुपट्टा० ना० पु० आदा का वस्त्र निराप ।

दुपह० ना० पु० दा पात्राला अर्थात् मनुष्य

दुपहरिया० ना० स्त्री० पुण्य निराप ।

दुयधा० ना० स्त्री० सारह, अचक ।

दुमला० गु० दुर्बल ।

दुमत्तार० } ना० स्त्री० दुर्बलता ।  
 दुमत्तापा० }

दुविधा० ना० स्त्री० सदेह, क्षपाच, राव ।

दुदिधि० ना० स्त्री० दातरह, दासकर ।

दुमुस० ना० पु० राक्षस निराप, दासतराला ।

दुमाव० ना० पु० दुविधा ।

दुभापिया० } गु० दो भासथा का जगनेहारो  
 दुभापी० }

दुर० अण्य० र० द क प्रथम म सयोगिण अण्यप  
 निस्सका अर्थे दु, कठिना, ना० स्त्री० कानका  
 भूय्य जा लङ्गे पढ़ाते हैं ।

दुरतिक्रम० गु० कठिना, मुदिक्रम ।

दुरद० ना० पु० शर्षी ।

दुरध्या० ना० स्त्री० बुधार्म, पदा राह ।

दुरना० अ० कि० दुपना, बुदना ।

दुरहृ० ना० पु० मदमाप्य ।

दुरन्त० गु० अज्ञान, कठिन, अतर्हीन ।

दुराचार० गु० निम्नका व्यवहार निन्दित है ।

दुराचारी० गु० निरसता व्यवहार विन्दितार्ह ।  
 दुरात्मा० शु० पापी, दुष्ट ।  
 दुरार्थप० शु० अडर, अमय, अशक ।  
 दुराना० स० कि० छुपाना, लुकाता ।  
 दुराराध्य० शु० कष्टसे सेवन क योग्य ।  
 दुरारोह० ना० पु० ठाड़वृक्ष ।  
 दुरालभा० } ना० स्त्री० जवाता ।  
 दुरालम्भा० }  
 दुराव० ना० पु० छुपाव, छल ।  
 दुराशा० ना० स्त्री० कुम्भितआशा, दुष्टवृष्णा ।  
 दुरित० ना० पु० पाप दोष ।  
 दुरी० ना० स्त्री० खलमें दो पदना का दूधा ।  
 दुरस्त्रा० गु० निरसकी दोना धेर एरुसा हार,  
 यह शब्द फारसी का है ।  
 दुरेफ० ना० पु० भीरा ।  
 दुर्ग० ना० पु० गढ़, कण, किल्ला, अमग ।  
 दुर्गति० ना० स्त्री० दुर्गति, परीत्यवरथा, नरक,  
 दरिद्रता ।  
 दुर्गन्धि० ना० स्त्री० } दुर्गन्धि, नाय, क  
 दुर्गोन्धि० ना० स्त्री० } वास ।  
 दुर्गन्था० ना० स्त्री० पियाज, शु० कुषातित्र ।  
 दुर्गम० शु० अघट, गम्भीर, अगम्य, कठिन ।  
 दुर्गमता० ना० स्त्री० गम्भीरतां श्रीघटता ।  
 दुर्गा० ना० स्त्री० भगवती विराय ।  
 दुर्गामी० शु० कुगामी कुमारी, बदचलन ।  
 दुर्घट० शु० जो कष्ट से हानके, कुषा, घीघट ।  
 दुर्जन० ना० पु० गडु, शु० दूध, अघकारी ।  
 दुर्जनता० } ना० स्त्री० शमुना, द्रुह,  
 दुर्जनताई० } दुष्टता ।  
 दुर्जय० शु० बलवान् शत्रु, जा पराभव न हानके ।  
 दुर्दशा० ना० स्त्री० दुर्गति, विपत्ति ।  
 दुर्नाम० ना० पु० बदनाम, अघयग ।  
 दुर्नामी० शु० बदनाम अघयरी, अघवीर्ता ।  
 दुर्नाद० ना० पु० राक्षस विशेष, कुसितवनाद ।

दुर्नीति० ना० स्त्री० कुचाव, अनीति, अन्याय ।  
 दुर्बल० पु० दुर्बल, निर्बल, असमर्थ ।  
 दुर्बलता० ना० स्त्री० निर्बलता, असामर्थ्य ।  
 दुर्भगा० गु० अभागिनी स्त्री, निरसका स्वामी  
 प्यार नहीं करता है ।  
 दुर्भाग्य० गु० प्रारम्भहीन, अभागी ।  
 दुर्भाव० ना० पु० दुरास्वभाव ।  
 दुर्भिक्ष० ना० पु० अकाल, काल, कुममर्थ ।  
 दुर्भति० ना० स्त्री० कुत्रुद्धि, मूर्खता ।  
 दुर्भेद० गु० मस, मदगलित मत्त, सिद्धी ।  
 दुर्भनी० ना० स्त्री० दुर्वात ।  
 दुर्मुख० ना० पु० नायविशेष बानरों का एक रास  
 शु० बडार भापी ।  
 दुर्मुख्य० गु० महंगा ।  
 दुर्योग० ना० पु० बहुत बानरों का समूह कुस  
 गति ।  
 दुर्योधन० ना० पु० राम, कारवाधीरा ।  
 दुर्लभ० गु० जो दुर्लभ मिले, अनास्ता ।  
 दुर्लक्षण० ना० पु० अशुभ चिह्न ।  
 दुर्लघन० ना० पु० सुरीनात, गाली ।  
 दुर्लपण० ना० पु० दुरास्व, कुचर्चे, चादी ।  
 दुर्लपता० ना० स्त्री० कुरूपता, चादी ।  
 दुर्लक्ष्य० } ना० पु० सुरीनात, गाली ।  
 दुर्लक्ष्य० }  
 दुर्लद० ना० पु० कुस्तिनवाती, सुरीनात ।  
 दुर्लसा० ना० पु० मुनिविशेष ।  
 दुर्लुब्धि० ना० स्त्री० मूर्खता, कुत्रुद्धि, नादान ।  
 दुर्लुप्ती० शु० नादान, कुत्रुद्धि, मूर्ख ।  
 दुर्लुकी० ना० स्त्री० दूकर चाल, घोड़ेकी एक  
 बरफी चाल ।  
 दुर्लुका ना० पु० } दोलडा, दूयन ।  
 दुर्लुकी० ना० स्त्री० }  
 दुर्लुक्ती० ना० स्त्री० पशुका पिचल दाँतों का मा-  
 रना ।  
 दुर्लहा० ना० पु० बर, बारा, दुलहा ।  
 दुर्लहिन० ना० स्त्री० नईबहू, मधु, बना बनरी ।

दुलाई० ना० घा० घोड़नेका वस्त्र विशेष ।  
 दुलार० ना० पु० प्यार, स्नेह ।  
 दुलारा० ना० पु० } गु० प्यारयुक्त, प्यारा,  
 दुसारी० स्त्री० } प्यारा सावित्त, सावित्री  
 दुवार० ना० पु० द्वार ।  
 दुविद्० ना० पु० धानर विशेष ।  
 दुवे० ना० पु० माहणजाति विशेष ।  
 दुशाला० ना० पु० पाटवस्त्र विशेष ।  
 दुष्कर० गु० जोकष्टसे कियानाय ।  
 दुष्कर्म० } ना० पु० कुकर्म, पाप ।  
 दुष्कृत० }  
 दुष्कर्मी० गु० पुष्पी, पापी ।  
 दुष्ट० गु० बुरा, उत्पाती, नीच, कठिन ।  
 दुष्टता० ना० स्त्री० नीचता, पाप, बुराई ।  
 दुष्टजन्तु० ना० पु० सर्पादि, मूजी जानवर ।  
 दुष्टा० ना० स्त्री० क्षिनाल, सापिन, पापिन ।  
 दुस्तर० गु० जोतरने के योग्य न होंवे, कठिन,  
 अगम्य ।  
 दुस्पर्शा० ना० स्त्री० छोटी बटाई ।  
 दुसह० } गु० जो सहा न जावे, असह्य ।  
 दुस्सह० }  
 दुहना० स० कि० दूधनिकाहना, निचोडना ।  
 दुहनी० ना० स्त्री० पात्र जिसमें दूधदुहते हैं ।  
 दुहाई० ना० स्त्री० न्यायके लिये पुनार हीय हाय,  
 शपथ, किरिया, वसम ।  
 दुहाईतिहाई० ना० स्त्री० फर्दभार दुहाईकरना ।  
 दुहाना० स० कि० दूध निकलवाना ।  
 दुहार० ना० पु० दूध दाहने वाला ।  
 दुहिता० ना० स्त्री० कन्या, पुत्री ।  
 दुहेला० गु० कठिन, भारी ।  
 दुआ० ना० पु० दोष अङ्क ।  
 दुज० ना० स्त्री० द्वितीया विधि ।  
 दुजावर० ना० पु० जिसमें दो विवाह किये ।  
 दुजा० गु० दूसरा ।  
 दूत० ना० पु० समाचार पहुँचानेहारा, सदेशिया,  
 हरचार, शेरान, पैगम्बर ।

दूतता० ना० स्त्री० चालाकी, तोड़फोड़ और  
 दूतका काम ।  
 दूती० ना० स्त्री० कुटनी ।  
 दूध० ना० पु० दूध, गोरस, दही ।  
 दूधिया० गु० दूधकासा, ना० पु० अनेक पीधों  
 का नाम मिनका रस दूध कासा होता है ।  
 दूधी० गु० दूधका, दुधेला, ना० पु० आहार,  
 माडी, दुधिया पीया ।  
 दूना० गु० द्रियुष्ण, दोहरा ।  
 दूघ० ना० स्त्री० दूर्वा, घास विशेष ।  
 दूघर० गु० कठिन दुर्बल ।  
 दूधिया० ना० स्त्री० तृण की हरियाई ।  
 दूर० ना० स्त्री० अन्तर, नीच, दूर, व्यवधान,  
 अव्य० परे ।  
 दूरगम० ना० पु० गदहा ।  
 दूरतर० गु० बहुत दूर ।  
 दूरदर्शक० ना० पु० दूरबान, यत्र, ह० दूरका  
 दखने वाला, अग्रशीर्षी ।  
 दूरदर्शी० ना० पु० निवेकी, दूरदर्श ।  
 दूरदृग० ना० पु० गिद्ध ।  
 दूरधीन० ना० स्त्री० दूरकी वस्तु देखने का यत्र  
 गु० दूरका देखन द्वारा शब्दकारसी का है ।  
 दूरमूल० ना० पु० जवासा ।  
 दूर्वा० ना० स्त्री० तृण, विशप, दूधघास ।  
 दूषक० गु० दोष लगानेहारा, दूषककर्ता, टोकन  
 वाला, विडोकेनेहारा ।  
 दूषण० ना० पु० निराचर विशेष, दाप ।  
 दूषित० गु० दोष लगायागया, दाप युत ।  
 दूष्य० गु० निदिदत, कुलित ।  
 दूसरा० गु० दूसरा, अथ ।  
 दृग० ना० तु० नयन, नत्र, आल ।  
 दृगञ्जल० ना० पु० नयनकोर, पलककी चाल ।  
 दृढ० पोदा, अचल, कडा, मजबूत ।  
 दृढता० ना० स्त्री० } पोदाई, पोस्त, पापदारी ।  
 दृढत्व० ना० पु० }

ददाता० स० एक० पादा करना ।  
 दृश्य० गु० जा दखने क यावैहे, जा देखानाव ।  
 दृष्ट० गु० जो दखना, प्रकट ।  
 दृष्टि० ना० पु० पक्षी ।  
 दृष्टान्त० ना० पु० उपमा उदाहरण, निसाध ।  
 दृष्टि० ता० स्त्री० दशन नजर, दीखि, भास ।  
 दृष्टिगोचर० गु० जा आस क सामी हा ।  
 दृष्टद्वेद० ना० पु० पापाय भद ।  
 दृष्टभ्रम० ता० पु० पभा रल ।  
 दृष्टाढ० ना० पु० गीमकला ननायाइथावर ।  
 देखना० स० ि० बखाना दृष्टिकरना निभा  
 वना ।  
 दखवैया० ता० पु० दखनहारा  
 देनदेन० ना० पु० यरहा  
 देना० स० ि० दखालना सीपना ।  
 दमारण० स० कि० पकना फरदना ।  
 देय० } गु० देने योग्य ।  
 दयमान० }  
 देर० } ता० स्त्री० निरुध्न डील ।  
 देरी० }  
 देव० ना० पु० देवता मेघ देना ।  
 देवधृषि० ना० पु० देवर्षि नारदमुनि ।  
 देवक० ना० पु० देवकी का पिता देवता गु०  
 देनेहारा ।  
 देवकाडर० ना० पु० बनघर ।  
 देवकी० ता० स्त्री० श्रीकृष्ण की माता ।  
 देवकुसुमा० ना० स्त्री० लौग ।  
 देवगरी० ना० स्त्री० रागिणी । वगव ।  
 देवगृह० ना० पु० देवलय चौहरा ।  
 देवठान० ना० स्त्री० देवोपानी कातिरुष्णी एक  
 देरी का ये जोहार हासि ।  
 देवतरु० ता० पु० कल्पवृक्ष वाकईवृक्ष ।  
 देवता० ना० पु० देव देव करिबतद ।  
 देवतारुड० ना० पु० देवदासी ।  
 देवदत्त० ना० पु० सहायिसेध, गु० जो देवता  
 का दिया हुआ है ।

देवदारु० ना० पु० वृक्ष वा काठ निराव ।  
 देवधुनि० ना० स्त्री० आगामी ।  
 देवनागरी० ता० स्त्री० हिंदी कयथाय प्रकट  
 देवनारि० ना० स्त्री० नेरता का री ।  
 देवपूजक० ना० पु० देवता की पूजा करनेहारा,  
 पीतलिक, मूर्तिपूजक ।  
 देवपूजा० ता० स्त्री० देवता का पूजन ।  
 देववधू० ना० स्त्री० देवता की पत्नी रामरानी  
 रतानी रामचन्द्रिया देवपूजवर्द्धिहरिनाथी  
 कयो तवही तनि सादि न प्राया ।  
 देवमुनि० ना० पु० गुरुदनी ।  
 देवर० ना० पु० पतिव्रता छोगमा ।  
 देवगाली० } ता० स्त्री० देव क स्त्री देवताओं  
 देवरात्री० } की राना अर्थात् इन्द्राणा, रामचन्द्रि  
 काया । दरराना तय दरराना मनापुत्र सपुत्र  
 भूलोक म साधिया ।  
 देवरिपु० ना० पु० देव निगाचर ।  
 देवर्षि० ना० पु० गुरुदेवमुनि ।  
 देव० ना० पु० देव ।  
 देवल० ता० पु० मन्दिर, ठाकुरघारा चौहरा,  
 यना मुखसी देवके खाना लाकरकेरी,  
 कागधम गेहगिभयो महेमाभई न थोष्टि ।  
 देवचर्चभा० ता० स्त्री० कसर जाकरा ।  
 देववाणी० ना० स्त्री० सत्कृत ।  
 देववृक्ष० ना० पु० कल्पवृक्ष ।  
 देवसर० ता० पु० मासरोवर ।  
 देवभेणी० ना० स्त्री० शरही इतों का  
 समूह ।  
 देवस्त्री० ता० स्त्री० देवता की पत्नी ।  
 देवस्थान० ता० पु० देवलय देवता का घर ।  
 देवस्व० ना० पु० देवता का मन ।  
 देवा० ना० पु० देवता दोहारा ।  
 देवागना० ना० स्त्री० देवी देवामा ।  
 देवारि० ना० पु० देव, निशाचर ।  
 देवाल० ना० पु० देनेहारा ।



देवालय० ना० पु० देवस्थान, देवता का परिसर ।  
 देवाला० ना० पु० दिवाला ।  
 देवालिया० गु० जिसका दिवाला निकल गया ।  
 देवाली० ना० स्त्री० दिवाली, दिवारी ।  
 देवालैई० ना० स्त्री० देनलेन ।  
 देवी० ना० स्त्री० देवता की स्त्री, भगवती, पुरहीरी  
 कौण्डि ।  
 देवेन्द्र० ना० पु० देवाधिराज अर्थात् इन्द्र ।  
 देवोत्थान० ना० स्त्री० कार्तिक शुक्लपक्ष की  
 तिथि जिसमें विष्णु नन्द से उठने हैं वा कार्तिक  
 शुक्ल एकादशी ।  
 देव्यालय० ना० पु० देवी का मन्दिर ।  
 देव्याश्रय० ना० पु० देवी की सहायता ।  
 देश० ना० पु० पृथ्वी का स्रष्टा विशेष, लोक रा-  
 गिनी विशेष, मुल्क, विलायत ।  
 देशपति० ना० पु० राजा, बादशाह ।  
 देशभाषा० ना० स्त्री० देशकी बोली ।  
 देशमात्र० गु० सर्वत्र, सब देश ।  
 देशाचार० ना० पु० देशकी रीति ।  
 देशादन० ना० पु० देशमें फिरना ।  
 देशाधि० }  
 देशाधिप० } ना० पु० राजा, बादशाह ।  
 देशाधिपति० }  
 देशाधीश० }  
 देशाध्यक्ष० } ना० पु० देशका रजक वा राजा ।  
 देशान्तर० ना० पु० दूसरा देश ।  
 देशाचर० ना० पु० परदेश, अन्यदेश ।  
 देशी० गु० जो देशका है ।  
 देश० ना० स्त्री० शरीर ।  
 देशरा० ना० पु० चौहरा, देवालय ।  
 देशली० ना० स्त्री० चौतर, ज्योती ।  
 देशी० गु० शरीर, ना० पु० जीर, प्राण ।  
 देशा० ना० पु० कन्यादान, यौतुक ।  
 दैत्य० ना० पु० अहुर, दिनिनात ।

दैत्यगुरु० }  
 दैत्यपुरोधा० }  
 दैत्यपुरोहित० } ना० पु० शुक्राचार्य ।  
 दैत्यपूज्य० }  
 दैत्याचार्य० }  
 दैत्यारि० ना० पु० देवता, धीविष्णुर्जा ।  
 दैत्याप्य० गु० प्रकाशित, रोशन ।  
 दैत्याप्यमान० गु० प्रकाशित, चमकीला ।  
 दैन्य० ना० पु० दीनता ।  
 दैय० ना० पु० देव, ईश्वर ।  
 दैया० ना० स्त्री० माता ।  
 दैद्य० ना० पु० प्रारम्भ, ब्रह्मा, देवके आधीन ।  
 दैवगति० ना० स्त्री० कर्मकीवाल, ब्रह्मकी गति ।  
 दैवतामणि० महामिदा ।  
 दैवयोग० ना० पु० कर्मप्रभाव, इतिहासकर्म ।  
 दैववादी० गु० आलसी, भाग्याधीन ।  
 दैवज्ञ० ना० पु० गणक, ज्योतिषी ।  
 दैवात् }  
 दैवी० } अर्थ अरुत्मान्, नागदान ।  
 दैविक० गु० जो देवता करके होवे ।  
 दौ० गु० दूसरी संख्या २ ।  
 दौऊ० गु० दोनों ।  
 दौफ० ना० पु० बछेड़ा, दौर्बर्षका घोड़ा ।  
 दौचर० गु० दुहरा, दूसरा ।  
 दौजीवा० ना० स्त्री० गंधिणी ।  
 दौभा० ना० पु० दिनवर ।  
 दौदना० स० कि० मुकरना ।  
 दौना० ना० पु० दीना, पत्तों को पाक पुष्प  
 विशेष ।  
 दौनाली० ना० स्त्री० बन्दूक दौनाली ।  
 दौवर० इ० दोहर, दुहरा ।  
 दौमुहा० ना० पु० दो मुलका सौं ।  
 दौय० गु० दो २ ।  
 दौल० ना० पु० डोल ।  
 दौष० ना० पु० निन्दा, खण्डण, सूक, अपराध ।

वाम भ्रौषादि, कलव ।  
 दोषक० गु० निदक, अग्रपृष्ठी, पापी ।  
 दोषना० सं० क्रि० दोषदेना वा दोषलगना ।  
 दोषित० } गु० कलत्रित, पाषा, अग्रपृष्ठी, अ-  
 दोषी० } पराधी ।  
 दोहच्छ ना० पु० दोनों हाथोंका देमारना ।  
 दोहता० ना० पु० नतनी ।  
 दोहतां० ना० स्त्री० नातिनी, नातिन ।  
 दोहद० ना० पु० स्नह, प्रीति, हित, गर्भ ।  
 दोहन० ना० पु० रसका खाचना ।  
 दोहना० } सं० क्रि० दूहना, गारना ।  
 दोहना० ना० स्त्री० दूहने का पात्र ।  
 दोहरा० गु० शिशुण, दोलङ्ग ।  
 दोहराव० ना० पु० दोहराने का काम ।  
 दोहा० ना० पु० छन्द विशेष ।  
 दोहारं० ना० स्त्री० दुहारं ।  
 दोहान० ना० पु० दो वर्ष का गौम्र बच्चा,  
 सेला ।  
 दौङ्ग० ना० स्त्री० बहुत शीघ्र चलने की चाल,  
 धावा ।  
 दौङ्गधूप० ना० स्त्री० जनन, परिधम ।  
 दौङ्गना० अ० क्रि० बहुर शीघ्रचलना, धावा ।  
 दौङ्गाक० ना० पु० दौङ्गनेहारा ।  
 दौङ्गादौङ्गी० ना० स्त्री० वेगावेगी ।  
 दौङ्गाना० सं० क्रि० शीघ्र चलाना ।  
 दौङ्गाहा० ना० पु० सदाशया, अगुग्रा ।  
 दौहित्र० ना० पु० नाती, नवामा ।  
 दौहित्री० ना० स्त्री० नातिनी, नवामा ।  
 द्युमणि० ना० पु० सूर्य ।  
 द्यत० ना० पु० अथा, व्यप ।  
 द्यौतानी० ना० स्त्री० देवकी स्त्री ।  
 द्रम्म० ना० पु० १६ पणका ।  
 द्रव० गु० बहता हुआ, उला ।  
 द्रविङ्ग० ना० पु० देश विशेष ।  
 द्रवित० गु० बहता हुआ, कृपायुत; नम्रतामय ।

द्रवी० } अ० क्रि० दया करो ।  
 द्रव्यङ्ग० }  
 द्रव्यजन्यमाद्यं गु० वस्तु और वस्तु शक्ति  
 पदार्थका सम्बन्ध ।  
 द्रष्टा० ना० पु० देखनेवाला ।  
 द्रावक गु० उलानन हारा, कृपालु ।  
 द्राशन० ना० पु० निर्मली ।  
 द्राविङ्ग० ना० पु० कन्नूर, द्रविड देशका प्राञ्च  
 य वा लिंग ।  
 द्राविङ्गी० ना० स्त्री० छोटी इलायची, द्राविड  
 देशकी भाषा वा वाली वा वस्तु ।  
 द्रावीना० पु० सहागा ।  
 द्राक्षा० ना० स्त्री० अन्न, दान ।  
 द्रुत० ना० पु० जल्द, शीघ्र ।  
 द्रुपद० ना० पु० राजा विशेष ।  
 द्रुपदा० ना० स्त्री० द्रुपदी, पाण्डवोंकी स्त्री ।  
 द्रुम० ना० पु० वृक्ष, पेड़ ।  
 द्रुमलिक० ना० पु० राक्षस विशेष ।  
 द्रुहिय० ना० पु० ब्रह्मा ।  
 द्रोण० ना० पु० कालाकाम, पारिव, पर्वतविशेष,  
 द्रोणाचार्य ।  
 द्रोणपुत्री० ना० स्त्री० गुफा, पौधा ।  
 द्रोणाचार्य्य० ना० पु० फेरव और धारङ्गोंका  
 गुह ।  
 द्रुपदी० ना० स्त्री० पाण्डवोंकी स्त्री, द्रुपदकन्या ।  
 द्रोह० ना० पु० बिर, शत्रुता, अज्ञानत ।  
 द्रोहिया० } ना० पु० शत्रु, बिर, सुदूर ।  
 द्रोही० }  
 द्रुम्ब० ना० पु० मुगल, जोड़ा, रागदोषादि, क  
 सह, इ रमान ।  
 द्वादश० गु० बारह १२ ।  
 द्वादशउपयन० ना० पु० बारह उपयन अर्थात्  
 शाततुङ्गएड, राधातुङ्गएड, गोवर्द्धन, परमन्दर  
 नरसानी, सवेत, नन्दपाट, चौरपाट, बलराम  
 स्थल, नन्दगाव, मोडुल, चन्दनरन १२ ।  
 द्वादशभालु० ना० पु० बारह सूर्यनाम ।

अर्थात् विष्णु, शक, अर्थात्, धाता, -प्रायः, स्वप्न, विषयान, सविता, मन, वन्द्य, अशु-  
मन्थि, तेनश्चानि ।

छादद्भामानुकाला० ना० स्त्री० बारह सूर्य की  
फला अर्थात् तरिनि, तापिनी, धूम, मराची,  
ज्वलिनी, शान, रुचिनिम्न, भोगदा, विश्वाचो  
प्रिरी, धारिणी, कृपा ।

छादशयन० ना० पु० बारहवा वनके अर्थात्  
मधुवन, तालवन, वृदावन, कुमुदवन, कामवन,  
कोटवन, चन्दनान, सोहवन, महावन, खदिर  
वन, बेलवा, भायडीर ।

छापर० ना० पु० तीसरायुग जो २६४००० वर्ष  
का होता है ।

छार० ना० पु० परकासित, दरवाना ।

छारपाल० } गु० व्यादीपान, झारकार  
झारपालक० } चक्र ।

छारा० अन्व्य० कारण से बसीला, मारकत्त ।

झारावती० ना० स्त्री० झारिका ।

झारिका० ना० स्त्री० नगर प्रतिद्व जो गुज  
रात में है ।

झारिकाधीश० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी ।  
झारिकानाथ० }

झारी० ना० पु० झारपाल ।

झिगुण० पु० दूत, दोहरा ।

झिज० पु० पु० पची, दान, मातण, बेहन,  
कांथा ।

झिजदोप० ना० पु० मयहत्या ।

झिजनायक० ना० पु० नायक ।  
गुरुक, चन्द्रमा, मिह ।

झिजन्मा० ना० पु० मातण ।

झिजपति० ना० पु० झिजनायक ।

झिजपती० ना० स्त्री० मरुची ।

झिजप्रिया० ना० स्त्री० सोमवती, मातण्यी ।

झिजराज० ना० पु० झिजनायक ।

झिजा० ना० स्त्री० छोरी इलावागी ।

झिजांगिका० ना० स्त्री० कुटुंबी ।

झिजाति० ना० पु० दिन, जालण ।

झितीय० पु० दूसरा ।

झितीय० ना० स्त्री० दून, दूसरीतिथि, दूसरी ।

झितीयान्त० गु० जिसके अंत में द्वितीयाका  
प्रथम होवे ।

झित्य० अन्व्य० दोहरा करना ।

झिधा० अन्व्य० दोहरा ।

झिपद० ना० पु० मनुष्य ।

झिरसन० ना० पु० साप ।

झिरागमन० ना० पु० गौना, चलौत्रा ।

झिरुक्कि० ना० स्त्री० पुनकति, केरकेरकहना ।

झिरेफ० ना० पु० शीरा ।

झिवचन० ना० पु० झित सम्यायुक्त, जोगन्द,  
नितका भाषा में प्रयोग नहीं है ।

झिविद० ना० पु० यानर विशेष ।

झिपद० गु० झारवा वा अष्ट ।

झिस्वभाष० ना० पु० दुविधा ।

झिप्रिशलक्षण० ना० पु० बनीस लक्षण अ-  
र्थात् सकृत् स्वरूप, शील, सत्य, पराक्रम, शु-  
च्यामा, अग्यास, वरजिया, समान, परमज्ञान,  
शासनज्ञान, परस्वीत्याग, पूर्णता, लोकेरा, दास  
निभाग, पुष्टिया, प्रियवाद, सत्तम, अकाम  
गुणपूर्ण, मातृभक्ति, पितृभक्ति, गुरुभक्ति, निवे-  
द्रिय, दातृत्व, धर्मात्मा, दानपुनन, अल्पादिवा-  
स्वस्थाहार, स्वच्छता, पुष्टता, धीरज ३२ ।

झीप० ना० पु० टापू पृथ्वी का सबसे जो जलसे  
थिराहुआ है, पृथ्वी के महासागरों में से एक ।

झीपवती० ना० स्त्री० नदी ।

झीपशु० ना० पु० छतार, सतार ।

झीपसम्भया० ना० स्त्री० निपड सख्त ।

झीपिका० ना० स्त्री० सतार, छतार ।

झीपी० ना० पु० मिह, शेर ।

झेप० ना० पु० बैर, झेंह, हिता, झीर् ।

झेपी० ना० पु० शत्रु, बैर, हिंसक ।

झे० पु० रो, २४

द्वैत० ना० पु० सदह, भेद, दुगुनाहट ।  
 द्वैतवादा० ना० पु० भेदवादी ।  
 द्वैध० ना० पु० सदह, दोस्तपद ।  
 द्वैधीकरण० ना० पु० द्वेदन ।  
 द्वैमानुर० ना० पु० श्रीगणेशजी ।  
 द्वैमधुक० ना० पु० सुलुहटी ।  
 द्वैप० ना० पु० द्वेप ।  
 द्वयर्थ० शु० जिस में दो प्रकारके अर्थहों ।  
 द्वयस्वर० उ० जिस में दो अक्षरहों ।

## [ ध ]

धघलाना० स० क्रि० धलना, धोनादेना ।  
 धंधक० शु० बहुचिन्तक, धंधवाला, धंधक ।  
 धधा० ना० पु० धाम, धया ।  
 धधार० शु० उदात्त, एवाती ।  
 धधारी० ना० स्त्री० उदासी, अकलापन ।  
 धंसना० ध० क्रि० धसना, गडना, बैठना ।  
 धकधक० ना० पु० धकक, भयसे चलना का-  
 पना ।  
 धका० ना० पु० टकेल, भोक, टैला ।  
 धकाधकी० ना० स्त्री० टैलाखी ।  
 धगडा० } ना० पु० गार, लड्डया ।  
 धगाड० }  
 धज० ना० पु० चाल, आसन, डोल, रूप, टाट,  
 सामान, सावनात ।  
 धजभंग० ना० पु० नपुंसकी ।  
 धजा० ना० स्त्री० पठाका, धजा ।  
 धजीला० शु० धन से चलने वाला, सजीला ।  
 धजी० ना० स्त्री० पुराने बपके का टुकड़ा ।  
 धड० ना० पु० देह, शिरसे नीचेका तन ।  
 धडक० ना० स्त्री० फडक, भय, धडकहाट ।  
 धडकना० ध० क्रि० फडकना, हिलना, धक-  
 धकना ।  
 धडका० ना० पु० भय, सदेह, दुनिधा, धडके ।  
 धडकाना० स० क्रि० डराना, धकधकाना, धं-  
 क्रि० धडकना ।  
 धडा० ना० पु० दधा, पध, तील, धोत ।

धडाका० ना० पु० धायागार, हकडकाहट गन्ध-  
 दाना ।  
 धडी० ना० स्त्री० लकीर, पावसेर, श्री तील वा  
 नितना एकतर तैलाभावे ।  
 धत० ना० पु० हाथी चलाने का गन्ध ।  
 धतूरा० ना० पु० पीधा विरोध ।  
 धतूरिया० शु० झलिया, बहुरुपिया ।  
 धधकना० ध० क्रि० ममकना, बपिंधावे ज-  
 लना ।  
 धन० ना० पु० द्रव्य, अर्थ, सम्पत्ति, लक्ष्मी,  
 शुक्र ।  
 धनक० ना० स्त्री० गाएसे बनीबन्धु जो टोपी  
 आदि में लगात है ।  
 धनकटी० ना० स्त्री० कपडा विशेष, धान काटने  
 का समय ।  
 धनज्जय० ना० पु० अग्नि, अर्धन, पापहोना,  
 पव ।  
 धनन्तर० ना० पु० धनतरि ।  
 धनद० ना० पु० कुवर, धनका दाता ।  
 धनपति० ना० पु० कुवेर, शु० धनी ।  
 धनवन्त० } शु० द्रव्यवान्, लक्ष्मीवान् ।  
 धनवान् }  
 धना० ना० स्त्री० स्त्री, नारी, ना० पु० धन-  
 विशेष ।  
 धनाकुला० ना० स्त्री० रासना ।  
 धनाख्य० शु० धनवान्, मालदार ।  
 धनाध्यक्ष० ना० पु० धान स्वामी, कुवेर ।  
 धनान्ध० शु० जो धनके कारण अंधा अर्थान्-  
 धरकारी होरहाहो ।  
 धनार्जन० ना० पु० द्रव्य वा उपार्जन ।  
 धनाशा० ना० स्त्री० अर्थ की धारा ।  
 धनासरी० } ना० स्त्री० राशिनी विरोध ।  
 धनासिरी० }  
 धनिक० ना० पु० महाधन, अष्टपादाता ।  
 धनिया० ना० पु० नील विरोध, ना० स्त्री०  
 नारि ।

अनिष्टा० ना० स्त्री० तद्विषयान्तरण ।  
 अमी० गु० लक्ष्मीवर्ण, मालदार, ना० पु० मा-  
 लिक, स्वामी ।  
 अनु० ना० पु० धनुष और नवी राशि, चारि-  
 हायका प्रमाण, भिलास ।  
 अनुपट० ना० पु० चिरीजी ।  
 अनुद्धर० ना० पु० जिस मनुष्य के मांस धनुष  
 रस्तासे, विशेष अर्हण ।  
 अनुविद्या० ना० स्त्री० युद्धविद्या और भाष्य  
 ज्ञान, तीरन्दाजी ।  
 अनुप० ना० पु० कमान, कमटा ।  
 अनुपाहृति० } ना० पु० धनुष के डाल ।  
 अनुपाकार० }  
 धनुषी० } ना० स्त्री० छोटा धनुष, धनु की  
 धनुही० } पमठी ।  
 अनेशु० ना० पु० पक्षी विशेष, कुवेर गु० धन-  
 वान् ।  
 धन्य० गु० प्रशंसाके योग्य, सुधी ।  
 धन्ययासक० ना० पु० जवासा ।  
 धन्यवाद्० ना० पु० खुति, कृतज्ञता, प्रथ, मा-  
 नना ।  
 धन्यवादी० गु० कृतज्ञ, सत, श्रमगायक ।  
 धन्या० ना० स्त्री० नदी विशेष ।  
 धन्याक० ना० पु० धनिया ।  
 धन्यन्तरि० ना० पु० वैद्यविशेष जो स्वर्ग ना-  
 सियों के वैद्य हैं ।  
 धन्याया० ना० स्त्री० जवासा ।  
 धन्यी० गु० धनुद्धर ।  
 धप० } ना० पु० चपेटा, धपड़, झलावा ।  
 धप्पा० }  
 धप्पा० ना० पु० कपड़े में जो सीस, कपड़े का  
 दास ।  
 धमक० ना० स्त्री० भयका सूचक शब्द, धों का  
 शब्द विशेष ।  
 धमकना० ध० कि० डीसना, धकना, जंगम-  
 गाना, स० कि० पटकना ।

धमका० ना० पु० बड़ा धूप, सांस, भारी वस्तु के  
 गिरने का शब्द ।  
 धमकाना० स० कि० भिड़कना, डांडना ।  
 धमकाहट० } ना० स्त्री० धुड़की, डांट ।  
 धमकी० }  
 धमधूसर० गु० मोटा, स्थूल ।  
 धमन० ना० पु० नरकुल ।  
 धमनी० ना० स्त्री० नारी, नली ।  
 धमाका० ना० पु० तोप विशेष जो हापी पर  
 रखते हैं भारी वस्तु गिरनेका शब्द ।  
 धमाचौकड़ी० ना० स्त्री० रौला, बलेडा ।  
 धमाधम० ना० पु० पांवपीठनेका शब्द, लगानार  
 पीटना ।  
 धमार० } ना० पु० तालविशेष वा गीतविशेष ।  
 धमाज० } जो होली में गाते हैं ।  
 धमिना० ना० पु० सांप विशेष ।  
 धमोका० ना० पु० खंजरी विशेष ।  
 धमिहू० ना० पु० केशपाशा, बेणी ।  
 धर० ना० स्त्री० धरती, ना० पु० धड़ ।  
 धरक० ना० स्त्री० धड़क ।  
 धरका० ना० पु० धड़का ।  
 धरणि० } ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती, जमीन ।  
 धरणी० }  
 धरणीधर० ना० पु० शेषादि, सांप ।  
 धरती० ना० स्त्री० पृथ्वी, जमीन ।  
 धरधरा० ना० पु० पहाका ।  
 धरन० ना० स्त्री० कदी ।  
 धरना० स० कि० रखना, सोपना, पकड़लेना  
 ना० पु० किसी के द्वारपर अड़ना ।  
 धरनी० ना० स्त्री० धरणी, धरन ।  
 धरनैत० ना० पु० धरना, देनेवाला ।  
 धरपना० स० कि० दवाना, धरना करना ।  
 धररह० ना० पु० धर, धरना, देनेवाला ।  
 धरपना० स० कि० धरना, रखना ।  
 धरहर० ना० स्त्री० धर, रखना ।

कृत प्रह्लाद चरिते यथा (यदि सप्तर अक्षर  
महें राम नाम श्रुतिसार, रत्नमुद्र पुर धरहरकरे  
नरहरि नाम उदार ) ।

घरा० ना० म्नी० धरती, पृथ्वी, कि० मू० रक्ता,  
पकडा ।

घरातल० ना० पु० पृथ्वीतल, रूप, जमीन ।

घराधर० ना० पु० शेषादि ।

घराना० अ० कि० ऋणी होना, स० कि० रत्न  
वाना, पकड़ना, सदाना ।

घरासुर० ना० पु० ब्रह्मण्ड ।

घरित्री० ना० स्त्री० पृथ्वी, भूमि ।

घराहर० ना० स्त्री० धानी, सौर, अमानत ।

घरौना० ना० पु० पुनर्विनाह ।

धर्तव्य० शु० ब्राह्म ।

धर्ता० ना० पु० श्रद्धा, धार्थिक ।

धर्तर० ना० पु० धरता, जिम के कल में निप  
होता है ।

धर्म० ना० पु० याव, कीर्ति, पुण्य, व्यवहार,  
वाल, गुण, काम, मजहन ।

धर्मकूप० ना० पु० कारागीरी में रक्षान विराय ।

धर्ममूल० ना० पु० वेद शास्त्र, गुण ।

धर्मराज० ना० पु० यमराज, नीतियुत राय,  
राजा मुनिधर ।

धर्मशास्त्रा० ना० स्त्री० धर्म विचारने का रक्षान ।

धर्मशील० ना० शु० भक्तिमान्, शक्तिमान,  
सधु ।

धर्मोधिकार० ना० पु० पुण्यकर्म की पदार्थ  
भण्डार का नाम ।

धर्मोधिकारी० शु० जो पुण्यकर्म का सिं-  
तान हो ।

धर्माना० शु० कर्त्तव्य, साधु, ना० पु० ईश्व-  
र में जो तीव्रता है उसका नाम ।

धर्मोपपत्त० शु० मन्त्री, विचारकर्ता ।

धर्मोपतार० ना० पु० धर्मका व्यवहार ।

धर्माज्ञा० ना० स्त्री० धर्मकी आज्ञा ।

धर्मिष्ठ० { शु० धर्ममें निजकी निष्ठा है, पुण्यवान् ।  
धर्मी०

धर्मण० ना० पु० धासन, रगडा ।

धर्मना० स० कि० कोपना, रगडा ।

धवल ना० पु० शुक्लवर्ण ।

धवलाख्य० ना० पु० विवाह ।

धवलागिरि० ना० पु० पर्वत विशेष ।

धसकना० अ० कि० गडना, धसवाना ।

धसन० ना० पु० बसान, धसने की अवस्था ।

धसना० अ० कि० धुमकना, धुमना, बिदना,  
पैठना ।

धसाना० ना० पु० दलदल, गडन, धमन ।

धसाना० स० कि० धुमेडना, धुसेडवाना, पैठा  
खना, पैठवाना, पिचाना ।

धसाय ना० पु० धसान ।

धांधल० ना० पु० नटखी, करकद, भगडा ।

धांधली० शु० भगडाल, नटखट ।

धांगर० ना० पु० जाति विशेष ।

धांधधांध० ना० स्त्री० तोपोंका शब्द धकावा ।

धांसना० स० कि० सासना, खोखना ।

धांसी० ना० स्त्री० साही, खोखी ।

धाई० ना० स्त्री० दूध पिलाने वाली ।

धाक० शु० स्त्री० ठाट, प्रयाग, कीर्ति, मय,  
हर, दौड़ ।

धागा० ना० पु० सूत, डोरा ।

धाता० ना० पु० ब्रह्मा, धर्म ।

धातु० ना० पु० तावा आदि, धोर्ण, कियाकाचक  
शब्द मसदर ।

धातुमात्तिक० ना० पु० सानामकली ।

धातुसाधित० शु० जो धातु से बनायागया

धातियत्तरु० शु० धातु से रहित ।

धान० ना० पु० अन्न विराय ।

धाना० अ० कि० दौडना, दडलकरना, स० कि०  
पूजना, धर्वन ।

धानी० ना० स्त्री० धान विशेष, धान के सन्त,  
रंग विशेष ।

धातुक० ना० पु० धनुहार, कमानदार और जातिविशेष ।  
 धानिय० ना० पु० धनिया ।  
 धान्य० ना० पु० धनिया, धान, धन, माल ।  
 धान्यक० ना० पु० धनिया ।  
 धाप० ना० स्त्री० हाथ से दो तिहाई का माप, जहांतक मध्य एक सांस में दौड़सके ।  
 धाम० ना० पु० घर, स्थान, तेज, तन, किरण, ज्योति, वैकुण्ठ, ब्रह्म ।  
 धामा० ना० पु० नेतका टोकना ।  
 धामिन्० ना० पु० सूर्य ।  
 धाय० ना० स्त्री० धाई ।  
 धायमारना० अ० कि० पुकार के रोना, दौड़के मारना ।  
 धार० ना० स्त्री० लकीर, नहाव, अस्त्र की नाद ।  
 धारक० ना० पु० ऋणी ।  
 धारण० ना० पु० धारने की अवस्था, मानलेना, स० कि० धारना, मंजूर करना ।  
 धारणा० स० कि० रखना, संभालना, धरना, ना० स्त्री० योगकर्मविशेष ।  
 धारना० स० कि० धारणा ।  
 धारस० ना० स्त्री० दाढ़स, धारज ।  
 धारा० ना० स्त्री० प्रवाह, नहाव, रीति ।  
 धारावाहिक० गु० विच्छेद बिन्दु ।  
 धारि० ना० स्त्री० डाकूकी सेना ।  
 धारित० गु० जो धारण किया गया ।  
 धारी० ना० स्त्री० लकीर, पोधा विशेष ।  
 धार्तराष्ट्र० ना० पु० कालाहंस, युधा-  
 हंसास्तुतेचंचुचरखेलोहितेःसिताः । मलिनद्विज-  
 स्यात्सोधात्तराष्ट्रःसितेतरैः १. इत्यमरः, अत्र-  
 का पुत्र एयोधन ।  
 धाव० ना० पु० पीधाविशेष, दौड़ ।  
 धावच्छुशः० ना० पु० दौड़नेवाला ।  
 धावन० ना० पु० सन्देशक, दूत, इत्यादि ।

धावना० अ० कि० दौड़ना, फिराकरना, चढ़ना, खड़ना, अर्चना ।  
 धावनी० ना० स्त्री० दूती, छोटी कपड़ी, रवेत ।  
 धावमान० गु० दौड़तामया ।  
 धावा० ना० पु० दौड़, चढ़ाई, वृत्तविशेष ।  
 धाह० ना० स्त्री० शराय, कूक ।  
 धात्री० ना० स्त्री० धरती, सरस्वती, धाई, ना० पु० धावला ।  
 धिक्० अर्थ० निन्दा का बोधक शब्द क्ति, लानत, कृद्ध न भये ।  
 धिक्कार० ना० पु० क्तिकार, निन्दा, शाप, लानत ।  
 धिक्कारना० स० कि० निन्दाकरना, क्तिकरना, लानत करना ।  
 धिक्कारी० गु० शापित, निन्दित, क्तिकारी ।  
 धिग्० अर्थ० धिक् ।  
 धिया० ना० स्त्री० बेदी, पुत्री ।  
 धिरयो० कि० धमकाया, डांटा ।  
 धिराना० स० कि० धमकाना, डांटना ।  
 धिपण० ना० पु० प्रसा, वृद्धतादि ।  
 धिपणा० ना० स्त्री० बुद्धि ।  
 धी० ना० स्त्री० बुद्धि, बेदी ।  
 धीति० ना० स्त्री० प्रदति, विश्राम, कवेदकवे यथा—मोर्हिद्वारविद्यामनि दूकदददददददद-  
 धीतिलावनेयेव्हा दनिभुगव ब्रह्मणः ।  
 धीम० ना० पु० दौड़, कोपडा ।  
 धीमर० ना० पु० इत्यादि ।  
 धीमा० इ० दौड़, कोपडा, मनन ।  
 धीमाई० ना० स्त्री० दौड़, कोपडा, इत्यादि ।  
 धीमन्० इ० इत्यादि, वदुर ।  
 धीमयो० अर्थ० इत्यादि ।  
 धीर० ना० पु० दौड़, कोपडा ।  
 धीर० ना० पु० दौड़, कोपडा, इत्यादि ।  
 धीर० ना० पु० दौड़, कोपडा, इत्यादि ।

धीरज्ञी० गु० दृढ़, सतापी, स्थिर ।  
 धारता० ना० स्त्री० धैर्य, स्थिरता, साहस ।  
 धीरा० गु० कामल, सतोषी, साहसी, विचार  
 शाल ।  
 धीरिया० ना० स्त्री० बेगी ।  
 धीरी० ना० स्त्री० नयन, पुनला ।  
 धीरु० गु० दृढ़, धीरनी, महादुर ।  
 धीवर० ना० पु० धर्मर, वनर्त ।  
 धुगार० ना० पु० धौवन, वधार ।  
 धुगारना० स० वि० वधारना, धौवन ।  
 धुधरार० ना० पु० अररा ।  
 धुधकारना० अ० क्रि० धुवा समेत आम का  
 जलना ।  
 धुधारना० अ० क्रि० अ धारना ।  
 धुधला० गु० अधा अधला, ना० पु० अधरा ।  
 धुधलाई० ना० स्त्री० अधेरा, उरलाई ।  
 धुधेला० गु० दली, टग ।  
 धुकडी० ना० स्त्री० छाग तथा पैसा रखने की  
 हाती है ।  
 धुकधुकी० ना० स्त्री० रठका भूषणविशेष, धव  
 राह सद्द, प्यान ।  
 धुत्ता० ना० पु० धूलना ।  
 धुन० ना० स्त्री० चमका, ला अभ्यास, परिक्षम,  
 रङ्ग, उमग ।  
 धुनना० स० क्रि० नूना, धुनना ।  
 धुनना० स० क्रि० नूना, पीना, मारना ।  
 धुनिया० ना० पु० विहना नूनेवाला ।  
 धुन्ना० स० क्रि० धुनना ।  
 धुमला० गु० उधा, अधा अधरा ।  
 धुमलाई० ना० स्त्री० अनियारा ।  
 धुर० ना० पु० आरम्भ, अपरि पास, नोभ ।  
 धुरपद० ना० पु० गीतविशेष ।  
 धुरसांभ० ना० स्त्री० गोपूली, सायकाळ ।  
 धुधेर० गु० धुरी धरनवाला, ना० पु० धव  
 पृष्ठ ।  
 धुरवा० ना० पु० मय, वायेयथा, धुधुधारे

धुरवा कई पासा, सशुक्ति परे नदि अथवा  
अरना ।

धुरदय० ना० पु० मेप ।  
 धुरियाना० म० वि० मरियाना, धूललगाना, धूल  
 पकना ।  
 धुरी० ना० स्त्री० काष्ठ वा लोहे की वस्तु जिसपर  
 पहिया चिक्ता है ।  
 धुलना० अ० क्रि० रस्यहोना, पाकहोना,  
 धोनाना ।  
 धुलवाना० स० क्रि० धुलाना ।  
 धुलाई० ना० स्त्री० वस्त्र धाने का काम का  
 पैसा ।  
 धुलाना० स० क्रि० मल निरालाना, व वस्त्र को  
 स्वच्छ करवाना ।  
 धुल्लडी० ना० स्त्री० हालाका दूसरा दिन ।  
 धुस्सा० ना० पु० लोर्, ज्यषस्यविशेष ।  
 धूआं० } ना० पु० धुवा, धूम ।  
 धूना० }  
 धूवारा० ना० पु० धुवा निकलने का स्थान ।  
 धुधरा० ना० पु० अधरा ।  
 धूत० गु० धूत ।  
 धूति० ना० स्त्री० टग, दली यथा-तुलसी रघु  
 वर सकुम्हरे सकं न कलियुग धूति ।  
 धूना० ना० पु० राल ।  
 धूनी० ना० स्त्री० धुवा, आम जो साधु लोभ  
 तापते हैं गु० स्थिर ।  
 धूप० ना० स्त्री० धाम, सुगन्धि, द्रव्य जो पूजा  
 में जला के बदान है, वृक्षविशेष वा उत्तका  
 काष्ठविशेष ।  
 धूपना० स० क्रि० राललगाना, धूपजलाना ।  
 धूपित० गु० धूप दियागया ।  
 धूम० ना० पु० धुवा ना० स्त्री० रौला, बत्तेका,  
 उपात, भीड़ ।  
 धूमकेतु० ना० पु० अग्नि ।  
 धूमधाम० ना० पु० धुवाका घर, हहा, रौला,  
 वनाव ।



धूमपुष्पा० ना० स्त्री० अग्नि जिह्वा विशेष ।  
 धूमयोनि० ना० पु० मेघ, बादल ।  
 धूमर० }  
 धूमरा० } गु० भद्रमला, धमैला, धवा का  
 धूमल० } रंग ।  
 धूमल० }  
 धूमशिखा० ना० पु० अग्नि ।  
 धूमशीर्षा० ना० स्त्री० अग्निजिह्वा विशेष ।  
 धूमा० गु० धूमला ।  
 धूमी० गु० उत्पाती निसरी धूम हीरही ।  
 धूम्र० ना० पु० धुआ, ऊट ।  
 धूम्रपान० ना० पु० धुवा का पाना ।  
 धूम्रपानथंज० ना० पु० हुका ।  
 धूम्रयोनि० ना० पु० मेघ, बादल ।  
 धूम्राक्ष० ना० पु० राक्षस विशेष ।  
 धूर० ना० स्त्री० धूल ।  
 धूरा० ना० पु० जो रोगी के हाथ पाव आदि में  
 रगड़ते हैं ।  
 धूरि० ना० स्त्री० धूलि ।  
 धूरी० ना० स्त्री० दुरी ।  
 धूर्ति० गु० नटखट, शठ, ठग, ना० पु० धतूरा ।  
 धूर्तता० ना० स्त्री० ठगर्, शठता ।  
 धूल० }  
 धूलि० } ना० स्त्री० रज, रेख, खरु ।  
 धूसना० स० कि० ठासना, भरना, दपाना ।  
 धूसर० गु० मिट्टी लगाये हुये ना० पु० जाति  
 विशेष ।  
 धूसरि० ना० स्त्री० धूलि ।  
 धूहा० ना० पु० धोखा, पत्नी आदि क धराने  
 के लिये खेतमें गाड़ते हैं, रूदा ।  
 धृक्० }  
 धृग्० } अव्य० धिक् ।  
 धृत० गु० जो धारण कियाजाय, रक्तागया ।  
 धृतराष्ट्र० ना० पु० दुर्योधन का पिता ।  
 धृति० ना० स्त्री० दृढ़ता कामों में धीरज ।

धृष्ट० गु० निराहूद, चतुर, परिपूर्ण, पचिद्धत, शाला ।  
 ध्रुंगामुष्टी० ना० स्त्री० धूममधुसा ।  
 धेनु० ना० स्त्री० गाय वा बद्धङ्गासमेत गाय,  
 दुधार गाय ।  
 धेनुक० ना० पु० खररुपा दीव्य विशेष ।  
 धेनमति० ना० स्त्री० गोमती नदी ।  
 धेला० ना० पु० अरला ।  
 धेली० ना० स्त्री० अपेली, आधा कपया ।  
 धैर्य० ना० पु० धीरता, धीरज ।  
 धैर्यधान्० गु० धीरजी, सतोष ।  
 धैर्यत० ना० पु० रागरा ररर विशेष ।  
 धोआ० ना० पु० फलकी भंडाली ।  
 धौई० ना० स्त्री० भिगेई हुई दाल ।  
 धौंजाला० ना० पु० धुवानिकलने का मार्ग ।  
 धोक० ना० स्त्री० देवता के आगे झुटना, आड  
 तनिया ।  
 धोकड़० गु० महाबली ।  
 धोखा० ना० पु० भ्रम, छल, धाधल ।  
 धोता० ना० पु० धूर्त, पाखण्डी ।  
 धोती० ना० स्त्री० कटि में पहिरने का वस्त्र  
 विशेष ।  
 धोना० स० कि० पसारना, फीचना ।  
 धोप० ना० स्त्री० लहंग विशेष ।  
 धोव० ना० स्त्री० पछालन, धोनेका काम ।  
 धोयिन० ना० स्त्री० धोनीकी स्त्री ।  
 धोयी० ना० पु० कपडा धोनेवाला ।  
 धोरी० ना० स्त्री० घुरघुरेल जो गर्ज में सब  
 से पहिले मचाया जाता है ।  
 धौ० ना० पु० वृक्ष विशेष ।  
 धौं० अव्य० अथवा, वा, मामौ, या ।  
 धौंक० ना० स्त्री० इच्छा, कार, आरा ।  
 धौंकना० स० कि० धौंकी से आगिझुका ।  
 धौंकी० ना० स्त्री० धौंकी सलठी जिस से  
 आगिको प्रचण्ड करते हैं, निगाठी  
 धौंका० ना० स्त्री० धौंकी ।

घोताल० गु० धनवान्, बलवान्, सुरमा, दुर्जना ।  
घोताली० ना० स्त्री० धन, बल, सुरमाण, दु-  
ष्टता ।

घौन० ना० पु० चारि पसरी का परिमाण ।

घौस० ना० पु० दीङ्, धवी ।

घोसा० ना० पु० बकाशा ।

घौसिया० ना० पु० दीङ्करनेहारों का प्रधान ।

घौर० ना० पु० वपान की जाति विशेष ।

घौरा० गु० धीला ।

धौल० ना० स्त्री० टीप, थण्ड ।

धौलधण्या० ना० पु० धण्याधण्या ।

धौला० गु० श्वेत, सफेद ।

घालाई० ना० स्त्री० उरखता, गोरई ।

धौलाना० } स० कि० धण्ड मारना, गु  
धौलियाना० } नियाना ।

ध्यात० ना० पु० विचार, सोच, चिन्ता ।

ध्यानी० गु० विचारवान्, सोचा ।

ध्याना० } स० कि० सोचना, विचारना, मा  
ध्यावना० } नना, भजना, गाना यशवा ।

ध्रुव० ना० पु० धृवी, योग राम विशेष, देव्य वि-  
शेष, उत्तर दक्षिणपक्ष स्थान में प्रायश्चित्त एक  
तरा उत्तानपादका पुत्र भक्त विशेष, गु० शिखर,  
अचल, सनातन, निश्चय ।

ध्रुवतारा० ना० पु० उत्तर दक्षिण पक्ष में प्राय-  
श्चित्त एकतारा ।

ध्रुवनन्दा० ना० स्त्री० श्रीगयानी ।

ध्रुवपद० ना० पु० ध्रुवपद गीत विशेष ।

ध्रुवमत्स्यथेय० ना० पु० ध्रुवचतुमा ।

ध्रुवा० ना० स्त्री० शालपर्णी, शील, लगाव ।

ध्रुवस्त० ना० पु० नारा ।

ध्वसौली० ना० स्त्री० काकोली ।

ध्वज० ना० स्त्री० अण्डा, पताका, ध्वजा ।

ध्वजिनी० ना० स्त्री० सेना, ध्वज ।

ध्वजा० ना० स्त्री० पताका ।

ध्वनि० ना० स्त्री० शब्द, बानेकां शब्द ।

ध्वनित० गु० सक्षेप से कथित ।

ध्वनी० ना० स्त्री० नगी, गु० शाब्दक ।

ध्वन्यात्मक० गु० शब्दविशेष, नित्यमैवर्ष वि-  
वरण हो ।

ध्वस्त० गु० अष्ट, उराव ।

ध्वान० ना० पु० शब्द ।

ध्वान्त० ना० पु० अधियारा, काव्ययथा, यथा  
प्रातः निवृत्त आदिय वारा, तथा देवि वि-  
नोप शौरप्रदारी ।

( न )

न० अव्य० अ० नहीं ।

नङ्० ना० स्त्री० नाक ।

नकचदा० गु० क्रोधा, चिड़चिड़ा ।

नकञ्चिकना० ना० स्त्री० पाधा विशेष ।

नकटा० गु० नाक कटा ।

नकडा० ना० पु० नाकमें रोग विशेष ।

नकतोड़ा० गु० हँसोड, धूर्त ।

नकसीर० ना० स्त्री० नाक की शिरा ।

नकार० अव्य० ना० पु० अस्वीकार ।

नकारना० स० कि० नकार करना, सुकरना ।

नकुल० ना० पु० गौला सापका बेरी, बगला,  
पाइका पाचवा पुत्र ।

नकुम्भा० ना० पु० नाक, अग्रि ।

नकेल० ना० स्त्री० वाट की वस्तु विशेष जो  
ऊटकी नाकमें पहिनात है ।

नक्या० ना० पु० पौंसि वा तासका इका ।

नक्या० ना० स्त्री० नाकमें बोलना, जूष में एक  
बदना गण्डे से ।

नक्यामूठ० ना० स्त्री० शूतविशेष, जुधाविशेष ।

नक्यू० गु० अययशी, बदनाम ।

नकू० ना० पु० दुम्भीर, मगर, नाका ।

नख० } ना० पु० अंगुलियों के अग्रपर का  
नखर० } अग्रिभाग, नाखून, नह ।

नखरेखा० ना० स्त्री० तसोट, बक्रेट ।

नखियाना० स० कि० तसोटना, बक्रेटना

नखी० गु० नखधारी, नखवाला, पय ।

नग० ना० पु० - अंगुठी का पाषाणविशेष, मणि,  
पर्वत, वृष, धाम ।

नगचाइ० ना० स्त्री० श्रमार् ।

नगचाना० अ० कि० पास आना ।

नगचाहट० ना० स्त्री० नगचाई ।

नगदौना० ना० पु० पौधा विशेष ।

नगन० ना० पु० हाथी, गु० नग्न ।

नगभिन्नक० ना० पु० पाषाण भेद ।

नगर० ना० पु० शहर, पुरी, ग्राम ।

नगरकोट० ना० पु० कोटकगढ़ ।

नगरनारी० ना० स्त्री० गणिका, बेश्या ।

नगरधर्ती० ना० पु० नगरवासी ।

नगरचासी० पु० पुरी वा शहरका वासी ।

नगरी० ना० स्त्री० छोटेनगर, बस्ती ।

नगा० ना० स्त्री० नारी, स्त्री ।

नग्न० } गु० दिग्भर, वस्त्रहीन ।  
नंग० }  
नंगा० }

नंगी० ना० स्त्री० नग्न स्त्री ।

नचयाना० स० कि० नचाना, नाचकराना ।

नचवेया० ना० पु० नाचने हारा ।

नचाना० स० कि० नाचकराना ।

नट० ना० पु० डीठबन्दों वा नाचनेहारोंकी जाति  
विशेष, कौतुकी, स्त्रीगी ।

नटखट० गु० धूर्त, कपटी, धली, फरफन्दिगा ।

नटखट्टी० ना० स्त्री० धूर्तता, कपट, धली फट-  
फन्द ।

नटत० कि० अस्वीकार करता है, नाचता है ।

नटना० अ० कि० नमानना, अस्वीकारकरना ।

नटनागर० ना० पु० चतुर नट, डीठबन्द,  
टीनहा ।

नटभूषण० ना० पु० हरताल, नटकाभूषण ।

नटवर० } ना० पु० डीठबन्द, टीनहा ।  
नटवा० }

नटसाल० ना० पु० टूटाकांय ।

नटिन० } ना० स्त्री० नटकी स्त्री ।  
नटिनी० }

नटी० ना० स्त्री० बेश्या, नाचनेहारी ।

नटुआ० } ना० पु० नटगा ।  
नटुवा० }

नठना० अ० कि० नशाना, बिगाड़ना, स० कि०  
नाशना, बिगाड़ना ।

नत० गु० नम्र० ना० पु० तमक, धीपधि, अन्व०  
नतक, नहीं ती ।

नतरु० अन्व० नहीं ती ।

नतांगी० ना० स्त्री० कहरासिंगी ।

नति० ना० स्त्री० प्रणाम, नमस्कार ।

नतिनी० ना० स्त्री० नातिन, दाहिनी ।

नतैत० ना० पु० नातेदार, सम्बन्धी, गोपित ।

नथ० ना० स्त्री० नाकमें वा गहनाविशेष, नथुनी ।

नथना० अ० कि० छिदना, फटना, ना० पु०  
नथुना ।

नथनी० ना० स्त्री० नाथने का अस्त्र-विशेष,  
नथुनी ।

नथी० गु० छिदी, फंसी ।

नथुआ० ना० पु० छिदुआ ।

नथुर० ना० स्त्री० छिदुरी ।

नथुना० ना० पु० नाकमें मार्ग ।

नद० ना० पु० ब्रह्मपुत्रदि जलप्रवाह विशेष ।

नदिया० ना० स्त्री० छोटी नदी, ना० पु० नद  
, विशेष ।

नदी० ना० स्त्री० जो जलकी प्रायः बड़े-बड़े में  
निकलकर देशान्तरों में होकर नदर में बहने लगे  
गंगा और सिन्धु आदि ।

नदीकान्ता० ना० स्त्री० नदीके किनारे ।

नदीला० ना० पु० नदी ।

ननद० } ना० पु० नदीके किनारे ।  
ननदिया० }

ननदी० ना० स्त्री० नदीके किनारे ।

ननिहाल० ना० पु० ननहाल वा पाना ।

नन्द० ना० पु० धातृन्पचन्द्र के कथित पिता,  
 बग, मो ६ ।  
 नन्दन० ना० पु० दव उपवन, दवन, चदन,  
 लहरा, शु० आनन्ददाना ।  
 नन्दलाल० ना० पु० श्राद्धन्पचन्द्रनी ।  
 नन्दिग्राम० ना० पु० नर्त्ताविराष जहा भरत  
 जी तपस्या करत थे ।  
 नन्दिनी० ना० स्त्री० पार्वती, पुत्री, पत्नी की  
 बहिन प्रियय, सौमि, हर ।  
 नन्दी० ना० पु० शिवजी का वाहन ।  
 नन्दीगण० ना० पु० शिवजी का गण ।  
 नन्दीघाप० ना० पु० रथ जो अग्निदवने अर्हून  
 का दियाथा ।  
 नन्दोई० ना० पु० पतिव्रता बहिन का स्वामी,  
 मनद का पति ।  
 नन्दोला० ना० पु० नाद ।  
 नन्दोसी० ना० पु० नदार्ई ।  
 नन्हा० शु० धाटा लतु ।  
 नपुलक० ना० पु० ज्ञान, हीनज्ञ मार ।  
 नपुसकलिंग० ना० पु० ताम्रराशिग ।  
 नभ० ना० पु० आकाश आश्रय आर आनण  
 मत्त ।  
 नभग० शु० पक्षी उन्नत प्रद, देवता ।  
 नभगनाथ० ना० पु० गरुड चन्द्रमा ।  
 नभगामी० शु० पक्षीघाति, नभग ।  
 नभगेश० ना० पु० तमानाथ, गरुड, चन्द्रमा  
 नभद्वर० ना० पु० आकाश में उन्नत इार,  
 यथा पक्षी, तारागण, प्रद द्रवता ।  
 नभस्य० ना० पु० आद्रपद ।  
 नभस्यन० ना० पु० पवन वायु ।  
 नभ० ना० पु० नमस्कार, याता ।  
 नमत० शु० प्रणाम करत ।  
 नमन० शु० मन्त्र, समा ।  
 नमस्कार० ना० पु० प्रणाम, समा का  
 वाक्य ।  
 नमस्कारी० ना० पु० लकार ।

नमस्य० शु० नमस्कार के योग्य ।  
 नमामि० क्रि० नमस्कार करता हू ।  
 नमित० शु० गांधे शिर दिये, शिरकुण्ठाय नम  
 स्कार करत ।  
 नमो० ना० पु० नमस्कार वा प्रणाम परता हू,  
 दाहा, नमानमी शुक्रद्वजा करोप्रणाम अनंत  
 तुन प्रसाद स्वग्भेद का चरणदान बरान १०  
 इतिस्वरोदय ।  
 नम्र० शु० विनयी, मिलनसार, आधाता, र्मी ।  
 नम्रत० ना० स्त्री० आधानता, विनय, नर्मी ।  
 नय० ना० पु० नावि, कानून ।  
 नयन० ना० पु० नेत्र, आत् ।  
 नयनधामिय० ना० पु० नयोंश अमृत, यथा,  
 श्रीशुक्रद्वरजमहलधजा, नयनधामियगदापवि  
 भजन । इतिरामायण ।  
 नया० शु० नवीन, ताजा ।  
 नर० ना० पु० मनुष्य, पुरुष, पुत ।  
 नरक० ना० पु० पापों क भाग फल का स्थान,  
 देव्य विशाष भिक्षे भामावुर मा कहत है ।  
 नरकट० ना० पु० नरकयथा वृणविशेष, निम  
 की चर्दा बननी है ।  
 नरकसी० ना० स्त्री० हलक, गला ।  
 नरकुल० ना० पु० नरपट ।  
 नरपति० ना० पु० मनुष्यों का रक्षक, राजा ।  
 नरपुर० ना० पु० मयलाक ।  
 नरवाहन० } ना० पु० कुबेर, यक्षराज ।  
 नरयाना० }  
 नरसि० ना० पु० नागा विशाष तुरही ।  
 नरसिगिया० ना० पु० नरसिगावनानहारा ।  
 नरसिह० ना० पु० विष्णुना चौथाश्रवतार ।  
 नरसो० धन्व० भीमाहुआ चौथादिन, चौथादिन  
 आनेवाला ।  
 नरहृद० ना० पु० पिपल्ली की हृदी ।  
 नरहरि० ना० पु० नरसिहजी, कवि विशेष ।  
 नरहरिदास० ना० पु० गोमाई, तुलसीदास  
 क सदस्य ।

नरान्तक० ना० पु० नरानाकाल, देव्याशेष ।

नरिया० ना० स्त्री० छोटी नाली, लपरा ।

नरौ० ना० स्त्री० चर्म विशेष लाड़े का यत्र विशेष, जिसमें नीने का सूत रखते हैं ।

नरुख० गु० पुष्पिग ।

नरेट० ना० पु० }  
नरेटा० ना० पु० } स्तसी नली, नटई  
नरेटी० ना० स्त्री० }

नरेन्द्र० } ना० पु० राजा, बहुवदेश का प्र  
नरेश० } विपालक ।

नरोत्तम० गु० शब्दामनुयना० पु० श्रीहृण्णजी ।

नरत्तक० ना० पु० नाचनेहारा ।

नरत्तकी० ना० स्त्री० नीच, नाचनेवाली ।

नरत्तन० ना० पु० नाच, मूय ।

नर्मदा० ना० स्त्री० नदी विशेष ।

नल० ना० पु० मुख्य वानर, मुख्यराजा, कुबेर का पुत्र, नङ्कुल, फोही, खोबल ।

नलकूपर० ना० पु० कुबेर के बालक ।

नलपुरटिक० ना० पु० बलिहारी ।

नला० ना० पु० उदर में स्थान विशेष ।

नलिका० ना० स्त्री० नली, नाई ।

नलिन० ना० पु० वमिल ।

नलिनी० ना० स्त्री० बहुत नलिनरा संयोग स्थान वा वमलिनी ।

नली० ना० स्त्री० नरदी, पोपी, ताल, नरहर, लाड़े का यत्र जिसमें सूत रखकर बितते हैं ।

ननुद्या० ना० पु० भारी वासका एक पाद पत्रा आदि रखने के काम आताहै ।

नन० गु० गिनती विशेष, ६ नम्रा ।

नयस्वरुड० ना० पु० पृथ्वी के नीचे भूतर्तु, भरतस्वरुड, इलायते, हिपुग्ग, अद्, कुन्द, हिरण्य, रम्य, हरि, कुस्तण्ड ।

नयजल० ना० पु० प्रथम वर्षा, नया वर्ष ।

नययौवना० ना० स्त्री० सेवनवर्ग ।

नयक्षर० ना० पु० सरि के दो अक्षर, धाल २ वान २ नाक २ पुत्र, पुत्र, पुत्र ।

नवधा० गु० नोप्रकार ।

नवधाभक्ति० ना० स्त्री० नो प्रकार का भक्ति अर्थात् समग्र, हरिकथा, गुकनेवा, हरिगुण गान, वेदपाठ, सज्जनधर्म, समभाव, सामा लाभसम, हरिरारण ।

नवधाभजन० ना० पु० नो प्रकारका भजन अर्थात् हरिगुण श्रवण, हरिगुण कर्त्तन, हरि स्मरण, हरिपदसेवा, हरिअर्चन, हरिपदवन्दन, दार्यभार, मित्रभाव, ग्रामज्ञान ६ ।

नवनाटिका० ना० स्त्री० नोशवासा अर्थात् इडा, पिंगला, सुषुम्णा, पयस्विनी, वृद्ध, गधारी, शालिनी, पूषा, अलम्बुषा ।

नवनि० ना० स्त्री० कुकुरि, प्रथम ।

नवनिधि० ना० स्त्री० कुबेर का धन ।

नवनीत० ना० पु० भवत्तन, नेत्र, मधरा ।

नवधू० ना० स्त्री० नदी, नदी, दुतद्विन ।

नवत्राळा० ना० स्त्री० नवपावना ।

नवम० गु० नया ।

नवमांश० ना० पु० नवमा ।

नवमी० ना० स्त्री० नवमिदि, नवी ।

नवरंग० ना० पु० कामदेव, नगर, नगर ।

नवरत्न० ना० पु० नवमिदि के द्विदि नगर स्थित ।

नवरत्न० ना० पु० नवम का नवमकारु अर्थात् नवम, नवम, नवम, नवम, नवम, नवम, नवम, नवम, नवम, नवम ।

नरुड० ना० पु० नवम, नगर, ना० पु० नवमिदि ।

नवहा० ना० स्त्री० नवमात्रा, नवयोजना ।

नवा० ना० पु० नया ।

नवडा० ना० पु० नया विशेष ।

नवाना० ना० पु० कुकुराना, कुकुराना, दाइरा, अर्थात् नवाना ।

नवार्ना० ना० पु० नवम, नवम ।

नवारी० ना० स्त्री० नवम विशेष या उमरावृष ।

नवासी० गु० नवमिदि की नवम ।

नवी० ना० स्त्री० रस्ती जिसस गाय क पाव दूध  
 दुहते समय बांधते हैं ।  
 नवीन० यु० नया, ताजा ।  
 नवीनता० ना० स्त्री० नवापन ।  
 नवोद्गा० ना० स्त्री० नई स्त्री, नवयावना ।  
 नयोज्जिद० ना० पु० अक्षर, अक्षुषा ।  
 नव्य० यु० नया, नवीन, उपरा ।  
 नव्ये० यु० नवदहार्ई ६० ।  
 नशर० यु० नारायण विनासी, भूड ।  
 नशाचा० कि० मिगया, नारा दया ।  
 नखत० ना० पु० नख, तारागण, तारा ।  
 नष्ट० यु० निमरा नारा हाता, अष्ट ।  
 नष्टता० ना० स्त्री० अष्टता ।  
 नष्टा० ना० स्त्री० व्यभिचारपी ।  
 नस० ना० स्त्री० नाई, रग ।  
 नसाना० स० कि० नाराकरना, निगाडना ।  
 नसी० ना० स्त्री० पालका अग्रभाग या पाला  
 जो लाई का हल में लगता है ।  
 नस्य० यु० सातनासिक दुलास जा नासिरा स  
 ध्यते है ।  
 मह० ना० पु० मह, नाभूत ।  
 महक० यु० दुबला, पतला, सुगण ।  
 महटा० ना० पु० बबीर ससा ।  
 महनी० ना० स्त्री० महनी ग्रसानी विरापे ।  
 महरथा० ना० पु० रोग विशेष ।  
 महर्नी० ना० स्त्री० नख बाने का अग्र विरापे ।  
 महलाना० स० कि० स्नान कराना नहाना ।  
 नहान० ना० पु० स्नान ।  
 नहाना० प० कि० स्नान करना ।  
 नहारहमुह० अय्य० विनासारे ।  
 नहाद० ना० पु० बमक का टुकड़ा ।  
 नहिपर० ना० पु० स्त्री की सशराल वा मिका ।  
 नहो० अय्य० निवर्त, न ।  
 नक्षत्र० ना० पु० तारा तारागण ।  
 ना० अय्य० नई ।

नाई० अय्य० प्रकार, सट्टा, समान ।  
 नाइन० ना० स्त्री० नाईकी जाहू ।  
 नाई० } ना० पु० नापित, जातिविशेष, शीरक ।  
 नाऊ० }  
 नाक० ना० पु० आकाश, स्वर्ग, स्त्री नामिका ।  
 नाकडा० ना० पु० नाक में रोगविशेष ।  
 नाकपति० ना० पु० इद्र ।  
 नाकनटी० ना० स्त्री० अक्षरा परी ।  
 नाका० ना० पु० मार्ग वा पैरे का अंत, सर्प  
 वेद, गला, नक, जलजंतु विरापे ।  
 नाकिन० ना० स्त्री० नाकरी स्त्री ।  
 नाग० स्त्री० पु० साप, पत्र, हाथी इष्टनर, सूचन  
 वायुभेद ।  
 नागडरग० ना० पु० सीसा, धातु ।  
 नागरुन्या ना० छा० कया जो पातालमें  
 रहती है उल्लाना, मयनादका बीना ।  
 नागकेसर० ना० पु० पुण विरापे ।  
 नागसर्प० ना० पु० सिन्दूर वदन ।  
 नागचाम्पेय० ना० पु० नागसर्प ।  
 नागज० ना० पु० सिन्दूर वदन ।  
 नागदन्ती० ना० स्त्री० दूध वाकणी ।  
 नागदन्ती० ना० स्त्री० नागदीन ।  
 नागदीन० ना० पु० पीधा, मरुधा ।  
 नागन० ना० स्त्री० सापिनी ।  
 नागनी० ना० स्त्री० पान नागरी स्त्री ।  
 नागपचमी० ना० स्त्री० श्रावणशुक्रपचमी का  
 पत्र विरापे ।  
 नागपल्ली० ना० स्त्री० सापिन, नागिन ।  
 नागपाश० } ना० पु० पासा वा बन्धन  
 नागपास० } विरापे ।  
 नागपुर० ना० पु० नगर विशेष, नागलोक ।  
 नागपास० ना० स्त्री० कांसि विशेष ।  
 नागपला० ना० स्त्री० मंगरुधा ।  
 नागपल्ली० ना० स्त्री० नागपेलि ।  
 नागपेलि० ना० स्त्री० पानघादि ।  
 नागभाषा० ना० स्त्री० प्राकृत भाषा जो पा-

खालके रहने हार बोलते हैं ।

नागमाता० ना० स्त्री० कङ्क मन्सिल ।  
नागर० ना० पु० गुजराती भाङ्गणकी जाति वि-  
शेष, नागरोपन्न अर्थात् चतुर, और पानी,  
औंरा, सैंठि ।

नागरंभ० ना० पु० नारगी ।  
नागरमोथा० ना० पु० सुगंधि कृष विशेष का  
मूल ।

नागरि० } ना० स्त्री० चतुर स्त्री, नागरकी  
नागरिन० } स्त्री ।

नागरिपु० ना० पु० 'याला, भार, गरुड़, सिंह ।  
नागरी० ना० स्त्री० सरकृत के अक्षर, चक्र स्त्री ।  
नागल० ना० पु० हल स्वत जौतने का ।

नागा० ना० पु० सयासी, नम्बर ।  
नागाहा० ना० स्त्री० नागदौन ।

नागारि० ना० पु० नागरिपु ।  
नागार्जुन० ना० पु० सहस्रनाडु राजाविशेष ।

नागिन० } ना० स्त्री० सापका स्त्री ।  
नागिनी० }

नागौर० ना० पु० मारवाड दशर पासरा प्रदेश ।

नाघना० } स० कि० लाघना, पारजाना ।  
नांघना० }

नाच० ना० पु० नृत्य ।

नाचना० थ कि० नाचरना, रूदना ।

नाज० ना० पु० अज, अनान ।

नाट० ना० पु० नासा ।

नाटक० ना० पु० प्रथपिशा ।

नाटा० पु० टिंगना, टैनी ।

नाटिका० ना० स्त्री० नाडी ।

नाटा० ना० स्त्री० छोटी, टिंगनी ।  
नाठि० ना० स्त्री० नासा, विनासा ।  
नाठी० पु० नाशगई ।  
नाडु० ना० स्त्री० मीना, नाला ।  
नाडिका० ना० स्त्री० एकपदी ।  
नाडी० ना० स्त्री० पेन्मेंकी तस, रोगपरीक्षा के  
लिय हाथ में की एकदण, रशासा, नस, नली ।

नाडीतिक्र० ना० पु० चिरायता ।

नाडीधम० ना० पु० सानार, स्वर्णवार ।

नाडीमण्डल० ना० पु० नाडियों का समूह ।

नाडीज्ञान० ना० पु० रोगपरीक्षा, आर रशासा  
का ज्ञान ।

नात० ना० पु० सम्बन्ध, रिश्तह, बिसादरी ।

नातर० } अव्य० नायथा, नहा ता ।  
नातह० }

नाता० ना० पु० सम्बन्ध ।

नातिन० ना० स्त्री० क्या की क्या, बग की  
बटी ।

नाती० ना० पु० बेरीजा पुन, बग का पुन,  
रामायणे यथा, उत्तमकुल पुलस्तिके नाती  
शिवरिचि पूजेनहुभाती ।

नाथ० ना० पु० रानी, प्रभु, ना० स्त्री० बैल  
की नाककीरसी, धार की बत्ती ।

नाथना० स० कि० छेदना, बैल के नारमेंरसी  
डालना ।

नाथित० पु० जो नाथागया ।

नाद्० ना० पु० शब्द, गरज, गीत, राग ।

नादना० स० कि० आरम्भ करना ।

नादिया० ना० पु० नदी, पशु विशेष जो जा-  
गियों के पास होता है ।

नाधना० स० कि० लुभे म लगाना, आरम्भ  
करना ।

नाधा० ना० पु० बालाव, वा नदी में स पानी  
गिनालने का गदा ।

नानक० ना० पु० मालों का गुन विशेष ।

नाना० ना० पु० माताम गिना, पु० अनर,  
बुद्ध, समूह ।

नानाकार० पु० बहुत रूपरे, अनेकरकारके ।

नानाकारण० ना० पु० अनेकरकार क कारण ।  
नानाप्रकार० } ग० अनेक प्रकार ।  
नानानाति० }

नानारूप० ना० पु० अनेक रूप ।

नानार्थ० ना० पु० अनेक धर्म ।  
 नानाविधि० शु० अनेक प्रकार ।  
 नाना० ना० स्त्री० माता की माता ।  
 नान्द० ना० स्त्री० नाद, मिट्टी का बड़ा बर्तन विशेष ।  
 नान्दिया० गा० पु० शानका वाहन, वृषभ ।  
 नान्दीमुख० ना० पु० श्राद्ध विशेष, जा पुत्र जन्म के पाछे हाता हे वा विनाहादि में ।  
 नान्धना० स० कि० आरम्भ करना ।  
 नान्यतर० } अथ० अन्यथा नहीं, प्रसन्न नहीं ।  
 नान्यथा० }  
 नाप० गा० स्त्री० माप, परिमाण ।  
 नापना० स० कि० नापना, परिमाण करना ।  
 नापित० ना० पु० नाप, हे नाम ।  
 नाभि० ना० स्त्री० पृथ्व मण्डल स्थान, होंद, तोंदी, ना० पु० राजाविशेष ।  
 नान्न० ना० पु० कर्ति, यश प्रिय्याति, सत्ता ।  
 नामकरण० ना० पु० सरस्वत विशेष, नाम रखना ।  
 नामानि० ना० पु० नामका बहुवचन ।  
 नामी० शु० प्रसिद्ध, कीर्तिमान् विख्यात, यशो, मशहूर ।  
 नायक० ना० पु० प्रक्षिया, प्रधान, स्वामी, सुन्दर रीति से गायन या नर्तक बजजारों का प्रधान ।  
 नायका० ना० स्त्री० नायिका ।  
 नायिन० ना० स्त्री० नाय की ओर ।  
 नायकी० ना० स्त्री० नायक की स्त्री, धर्मा, मिया बुद्धनी ।  
 नार० ना० स्त्री० नारि, नाल, झुण्ड, प्राचा ।  
 नारक० ना० पु० नरक ।  
 नारकी० शु० नारक निवासी, नरकी ।  
 नारण्य० ना० पु० }  
 नारणी० ना० स्त्री० } फल विशेष ।  
 नारद० ना० पु० ऋषि विशेष ।  
 नारा० ना० पु० नाला कमरबन्द ।

नाराच० ना० पु० बाण, तीर ।  
 नारायण० ना० पु० धामगनात ।  
 नारायणी० गा० स्त्री० लक्ष्मी, धनार, पौर, नारायण मन्मथी योति विंगेप ।  
 नारि० ना० स्त्री० अक्ला, नाड़ी, निस म बान का सूत रखकर बुने हे, बन्दूक बिना कठ, बासका पार निसम लीन पानी आदि भरके बल गाय आदिरा मिलाने हे ।  
 नारिकेर० }  
 नारिकेल० } गा० पु० फल विशेष ।  
 नारियल० }  
 नारियली० ना० पु० नारियल का डुकना ।  
 नारी० ना० स्त्री० अक्ला, स्त्री, नाड़ीमान विशेष, जिम करमुथा बदन हे ।  
 नाल० गा० पु० कमलाद की दण्ड, नाक, फोंग नल, नली ।  
 नालकी० ना० स्त्री० पालकी विशेष ।  
 नाला० ना० पु० जल निचलन का भाग ।  
 नालिसिन्दुक० ना० पु० सभाल ।  
 नाली० गा० स्त्री० सुदरी छाग नाला, निसाद में दण्डे करत हे, निसकाठना उछाने हे ।  
 नाथ० ना० स्त्री० नीका, तरनी ।  
 नाथनी० स० कि० भुक्ताना, डालकी, नवावा ।  
 नावरि० ना० पु० निवार, जलकीड़ा ।  
 नाविक० ना० पु० मार्गी, न व वा जहाज चलाने हारा मन्नाह, कपतान ।  
 नाशक० शु० नाशकराहारा, मिगनेहारा ।  
 नाशन० ना० पु० मिटावन, मग्न ।  
 नाशना० स० कि० मियाना प्यसकरना, ताशना  
 नाशपाती० ना० स्त्री० फल विशेष ।  
 नाशा० ना० स्त्री० नासिका ।  
 नाशासभेदन० ना० पु० तक्कीकना पीषा ।  
 नाशिका० गा० स्त्री० नासिका, नाक ।  
 नाश० ना० पु० सुधनी, हुलास ।  
 नाशना० अ० कि० भागना, स० कि० नारा करना ।



नासा० ना० खा० नाश, नाश ।  
 नासिका० ना० स्त्री० नाक ।  
 नास्तित्वा० अ० य० जा नहीं हे ।  
 नास्तिक० } ता० पु० निनये मत में पर  
 नास्तिकी० } लोक की बात को नहीं मारते  
 हे, जेनी ।  
 नाह० ता० पु० नाथ, स्वामी ।  
 नाहर० ना० पु० शर, व्याघ्र ।  
 नार्ही० अव्य० नहीं ।  
 नि० अव्य० यह शब्द नितशब्द रु पहिल स  
 यागी हान उसका अर्थरहितकरे, यथा, नि शक  
 अर्थान् गङ्गारहित, निषेध ।  
 ने पाप० यु० अदोष ।  
 ने शक० यु० निबर, अमय ।  
 ने शेष० यु० शेषरहित अर्थान् सम्पूर्ण ।  
 ने पट० यु० अति मूल ।  
 ने सग० यु० सग रहित अर्थान् अरला ।  
 ने शरण० ना० पु० शरणहान, अर्थान् मृत्यु  
 उपाय, विदा ।  
 ने स्य० यु० दरिद्रा, अधन ।  
 ने० अ० य० में भातर, ऊपर, रहित ।  
 नेपथ्यक० गु० सुगम वेत्तक निर्देष, सा  
 सुसी, बेधक ।  
 नेकन्द० गु० रस रहित, अर्थान् उत्कृ  
 निर्मूल ।  
 नेकन्दन० उ० निमलमूर्त्ता, उखाड़नहारा ।  
 नेकट० अ० य० पास, समीप करार ।  
 नेकटवर्त्ती० ना० पु० पासहा, समीप म ।  
 नेकटी० ना० स्त्री० छाटी तराजू ।  
 नेकम्भा० यु० निर्दुषी जो नितीकामका नहीं  
 हे, शिथिल ।  
 नेकर० ता० पु० समूह, कुण्ड, सार, सब ।  
 नेकरना० अ० कि० निकलना ।  
 नेकरस्थ० ना० पु० समूह, गिरोह ।  
 नेकलचलना० अ० कि० भागजाना चक्रे  
 चलना अतिक होजाना ।

नेकलना० अ० कि० निरसना, बहना, धान  
 जाग, भागना, उठाना, उतड़ना ।  
 नेकलपड़ना० अ० कि० बाहर, धाना ।  
 नेकसना० अ० कि० निकालना ।  
 नेकाना० स० कि० खतकी घास निकालना ।  
 नेकाम० यु० अति कामना रहित, बकाम ।  
 नेकाय० ना० पु० सब समस्त, समूह ।  
 नेकारना० स० कि० निकालना, अस्तीकरण  
 करना ।  
 नेकाल० ना० पु० उभार, विकास, जाइताइ ।  
 नेकालना० स० कि० उतारना, विनना,  
 उठना, उठाना उखाड़ना ।  
 नेकास० ना० पु० कगर, नगरके आलपास,  
 मार्ग निकलनेना, सुकीता, मूल ।  
 नेकासना० स० कि० निरालना ।  
 नेकासी० ना० स्त्री० बर, महमूल, बर ।  
 नेकासू० यु० जा निकालागया ।  
 नेकेत० ना० पु० घर ।  
 नेकुच० ना० पु० बड़हल ।  
 नेकुज० ना० पु० कुज, मड्या ।  
 नेकुटी० ना० स्त्री० छाया श्लायची ।  
 नेकुम्भिला० ना० स्त्री० राक्षसी आहरा ।  
 नेकृष्ट० यु० अम, नीच, तराज ।  
 नेकृष्य० ना० पु० तृणार, तरकाश ।  
 निखट्ट० यु० आलसी, उकाक, लुगाऊ ।  
 निखरड० यु० मध्य ।  
 निखरना० अ० कि० छिलना उतारना, उजला  
 हाना चमका उधड़ना ।  
 निखरागा० स० कि० उजलानागा, फर्वानी ।  
 निखय० ग० १० सर्व, १०००००००००००००००० ।  
 निखारना० स० कि० उजला करना, चमकें  
 भावी निकालना ।  
 निखारा० यु० स्वच्छ, उजल ।  
 निखिल० यु० सर्व, सम्पूर्ण, मिलकुल ।  
 निखाट्ट० ना० पु० खा रहित मनुष्य ।  
 निखोड़ना० स० कि० छानना, उठाना ।

निगड० ना० पु० कटिबधन, बेड़ी पैकड़ी काठ ।  
निगत० यु० नगा ।

निगन्दना० स० कि० तागना ।

निगन्दा० ना० पु० } तागने का काम ।  
निगन्दार्ई० ना० स्त्री० }

निगम० ना० पु० वद, नीचे, जहा जा न सके ।

निगमनदी० ना० स्त्री० भीगगानी ।

निगमनिघासो० ना० पु० मन्त्र वेदनिघासो ।

निगर० ना० पु० दीर्घ बघ ठाम ।

निगलना० स० क्रि० लीलना, घटना ।

निगाली० ना० स्त्री० हुका पीने की नली,  
पुकनी ।

निगुण० यु० निर्युग ।

निगूढ० अतिअगम, दुर्गम, अतिकठिन, अग्रकट,  
रुस ।

निगोड़ा० ना० पु० अकर्म चाण्डाल ।

निगर० यु० ठोस ।

निग्रह० ना० पु० त्याग, रोक, धि, विद, कुपय  
दण्ड ।

निग्रही० यु० ताकनेद्वारा, रोकने द्वारा ।

निघटत० कि० घटतेही ।

निघटना० अ० कि० घटना ।

निघटाना० स० क्रि० घटवाना ।

निघटी० कि० भू० घनी वा बहुत घग्घर ।

निघण्ट० ना० पु० शीषि वर्णन, रागपरीक्षा ।

निघरघटा० ना० पु० दुसलना, ददाई करना,  
डिटाई करना ।

निचय० ना० पु० समूह ।

निचिन्त० यु० चिन्ता रहित, अचित, अशोच ।

निचिन्तार्ई० ना० स्त्री० प्रमाद, सुभीता,  
वेगद्वे ।

निचोड़० ना० पु० काम का पूरा होना वा कुम्ह  
शोरहना ।

निचोड़ना० स० क्रि० दाना गारना, चूमलना ।

निचोड़० यु० लुगेत, गाऊप ।

निचोलनि० ना० स्त्री० चोलनी, कपडा,  
बस ।

निछापर० ना० स्त्री० उतारा, बलि ।

निज० यु० आप निश्चय, उत्कृष्ट ।

निजका० यु० अपना ।

निजगति० ना० स्त्री० अपनी दशा वा चाल ।

निजगुरु० ना० पु० अपना गुरु ।

निजतन्त्र० यु० निजइच्छा, स्वसरा ।

निजपति० ना० स्त्री० अपनी प्रतिष्ठा, ना० पु०  
अपना स्वामी ।

निजघर्षो० यु० निगाथित, स्तनन ।

निजसन्धि० ना० स्त्री० अक्षर, निजसमय ।

निजस्थान० ना० पु० अपना घर वा स्थान ।

निजानन्द० ना० पु० अपना सुख में, निज  
म मन ।

निजाश्रित० यु० स्वसरा, निजवस, अपना  
निज भ्राते ।

निम्नाना० स० क्रि० निरेखना, झाकना ।

निम्नोटना० स० क्रि० खमाटना, झटका ।

निम्नोल० यु० झोलरहित, अर्थात् सुदाल, चख-  
न द्वारा ।

निन्दुर० यु० कठोर, निर्दय, स्त्री विनयति ।

निन्दुरता० } ना० स्त्री० कठोरता, निर्दयता ।  
निन्दुरार्ई० }

निदर० यु० निर्भय, शराय ।

निदाल० } यु० स्थान, अचल ।  
निदोल० }

नित० अन्व० नित्य, प्रतिदिन ।

नितनय० यु० नितनया ।

नितप्रति० अन्व० नित्य, प्रतिदिन ।

नितम्भ० ना० पु० चूतक, कपड़े पीछे का नी  
चला भाग ।

नितम्भिनी० ना० स्त्री० चुनती, स्त्री, श्रौरव ।

नितन्त० अन्व० अत्यंत, अधिक ।

नित्य० अन्व० निवृत्ति, सदा, सत्य, प  
अमर ।

नित्यकर्म० ना० पु० स्नानपूजादि कर्त्तव्य कर्म  
शुभकर्म ।

नित्यता० ना० स्त्री० सदापन, सदैव ।

नित्यदान० ना० पु० प्रतिदिनदेना, सत्यदान,  
सात्त्विकदान ।

नित्यानन्द० ना० पु० सर्वदाकाल आनन्द ।

निधम्भ० ना० पु० स्तम्भ, पीलपाया ।

निधरा० शु० पर्चा, पर्चा ।

निधारणा० स० क्रि० उकेलना, पर्चा करना ।

निदग्धिका० ना० स्त्री० श्वेत छोटी कर्पाई ।

निदरहि० क्रि० निन्दाकर, नामाने ।

निदरना० स० क्रि० निन्दा करना ।

निदरि० थ० क्रि० निरादरकरके, अपमानकर ।

निदाघ० ना० पु० भ्राम, गर्मी ।

निदान० अथ० अ त, पीछे, पूरा, निपटना० पु०  
रोगपरीक्षा, औषधि कथन, अतनिचार, कारण ।

निदेश० ना० पु० आज्ञा, अनुशासन, सीन्हेसि  
भोरिनिदेशनिमेट्ट, देउदनायनागतरेट्ट, इतिभ  
हादचरिने सहजरामकाव्ये ।

निद्रा० ना० स्त्री० झोलाई, नींद ।

निद्रारि० ना० पु० चिन्तयता ।

निद्रालु० शु० स्वभावनरा, जो अधिक सोवे ।

निद्रित० शु० निदासा, सोनासा ।

निधङ्क० शु० निर्भय, अव्य० अचानक ।

निधन० ना० पु० मृत्यु, नाश, धनहीन ।

निधरक० शु० निधङ्क ।

निधान० ना० पु० स्थान, घर, धन, आधार,  
माहा ।

निधि० ना० स्त्री० कुवेरका एक रत्न, सम्पत्ति, ना०  
पु० समुद्र, शु० नी ६ ।

निधिजात० ना० पु० चद्रमा आदि ।

निधिसुता० ना० स्त्री० श्रीलक्ष्मी जी ।

निन्द० } ना० पु० शब्द, पर्या, ध्वनि ।  
निनाद० }

निनाया० ना० पु० सम्मल ।

निनायी० ना० पु० विशेष, रोगविशेष ।

निन्दक० शु० निदा करनहारा, नींदनेहारा ।

निन्दकाई० ना० स्त्री० निन्दता, निन्दा ।

निन्दना० स० क्रि० दांपदेना, कलकलगाना ।

निन्दनीय० निदा के योग्य ।

निन्दा० ना० स्त्री० दोष, कलर, बुरा कहना ।

निन्द्य० शु० निदा के योग्य ।

निनाया० ना० पु० रागविशय ।

निघ्नानघे० शु० एकोनशत, ६६ ।

निपट० अथ० निरानिर, अधिक, बहुत, अति,  
सत्ताहर, सर्व ।

निपटना० थ० क्रि० चुकना, पूराकरना ।

निपटाना० स० क्रि० चुकाना, पूराकरना, ठह  
राना, निवडना ।

निपटारा० ना० पु० निवेडा, फसला ।

निपटारू० ना० पु० निवेरू ।

निपात० ना० पु० मृत्यु, नाश, गिरना ।

निपाता० क्रि० नाश किया, मिटाया ।

निपान० ना० पु० जलाशय, दोहनी ।

निपुण० शु० प्रवाण, चतुर, दाना ।

निपूता० शु० जिसने सत्तान नहीं ।

निफल० शु० निरर्थ, फलरहित ।

निघटेरा० ना० पु० निरतोष, छुटानी ।

निघडना० थ० क्रि० निपटना, होचुकना ।

निघन्ध० ना० पु० बधेन, इकरार शु० जो  
ठहर गया ।

निघन्धन० ना० पु० बधन, ठहराव ।

निघन्धित० शु० जो ठहरगया, बधित ।

निघल० शु० निर्बल, लाचार सुद्धा ।

निघाह० ना० पु० समाप्त, निबडा, निर्वाह, मात  
का पूरा करना ।

निघाहू० शु० गिकाऊ ना० पु० निपटारू ।

निघडना० स० क्रि० निपटना ।

निघेडा० ना० पु० निघटेरा, निपटारा ।

निघेडि० शु० निवाह ।

निभ० ना० पु० तुष्य, बराबर ।

निमना० थ० कि० निवाहोना, पारहोना ।  
 निमाना० स० कि० निवाहोना, पारवरना ।  
 निमकी० ना० स्त्री० लोनका निम्बू ।  
 निमकौडी० ना० स्त्री० नीरझ फल ।  
 निमत० गु० ठोंस, पादा, सुदर ।  
 निमनाई० ना० स्त्री० पादरि ।  
 निमनाना० स० कि० पोदाकरना, सभालना ।  
 निमत्र० } ना० पु० योत्रा ।  
 निमत्रण० }  
 निमाना० गु० भोला, मैदान ।  
 निमि० ना० पु० रानाविशेष ।  
 निमिस्त० ना० पु० कारण, लिये, भाग, हेतु ।  
 निमिप० ना० पु० थाहदेर, पलक, चाल ।  
 निमिपमात्र० ना० पु० अत्यंत थोडाकाल ।  
 निमोलन० ना० पु० मृत्यु, भयकी, पलक ।  
 निमेप० ना० पु० पलक, विपल ।  
 निम्ल० गु० नाचारथान, नीचान, अधा ।  
 निम्लगा० ना० स्त्री० नदी ।  
 निम्य० ना० पु० नीच वृत्त ।  
 निम्यक० ना० पु० निम्बू ।  
 निम्यरक्ष० ना० पु० नीच, वा महानौच ।  
 निम्बू० } ना० पु० नीच ।  
 निम्बूक० }  
 नियत० गु० जो धेकागया, सुकर, रायम ।  
 नियन्ता० ना० पु० स्वामी, अध्यक्ष, सारथी, नियतकता ।  
 नियम० ना० पु० प्रप, वचा, अगीकार, जो कुछ धर्म की नियामके, यथान्त ।  
 नियमित० गु० निश्चित, प्रयत्निय गया ।  
 नियमन० ना० पु० नीम वृत्त, रौरु ।  
 नियर० } अन्य० समीप, पास ।  
 नियरे० }  
 नियराई० ना० स्त्री० समीपवा, निकटना ।  
 नियामक० ना० पु० नाविक, नियन्ता ।  
 नियुक्त० गु० नियोजित, स्थापित ।  
 नियुत० गु० दगावत, ..... ।

नियोग० ना० पु० प्रण, आज्ञा, तथा मुकर्र  
 वरग ।  
 नियोजन० ना० पु० स्थापन, आज्ञा ।  
 नियोजित० गु० स्थापित, रक्ता ।  
 निर० अन्य० नि ।  
 निरखना० स० कि० दस्ता, गिलोकना ।  
 निरकार० गु० निराकार ।  
 निरंकुश० गु० स्वेच्छाचारी, गिर ।  
 निरंजन० गु० निर्मल, राग रहित, अविषा  
 रहित, ना० पु० ईश्वर ।  
 निरत० गु० अति प्रीतिमय, लीन ।  
 निरक्षक० ना० पु० नचर्वाया ।  
 निरर्थ्य० गु० झूठ, निष्प्रयोजन, वञ्चापदह ।  
 निरन्त० गु० अन्तरहित, अरम्भार, ना० पु०  
 आनारा, ईश्वर ।  
 निरन्तर० अन्य० नित्यप्रति, जिसमें विषय नहीं,  
 सय, अन्तर विन ।  
 निरन्ध० गु० द्रष्टा, देखने वाला ।  
 निरपराध० } गु० अपराध रहित, निर्दोष ।  
 निरपराधी० }  
 निरम्बु० गु० जलरहित ।  
 निरय० ना० पु० नरक, दोषक ।  
 निरर्थक० गु० टीला, प्रमादी, चमत्कृति, अर्थ  
 रहित, निष्प्रयोजन ।  
 निरयग्रह० गु० स्वच्छन्द, स्वतन्त्र ।  
 निरयद्य० गु० आनन्दित, अकथ्य ।  
 निरधारण० ना० पु० अधारन, वचान, सुल  
 भावद ।  
 निरधारना० स० कि० खोला, छोड़ना ।  
 निरसु० गु० रसहीन, फीका, बदमसह ।  
 निरस्त० गु० त्यागित, जिसका अस्त न हो ।  
 निरस्त्र० गु० अस्त्रहीन ।  
 निरस्य० गु० त्यागने के योग्य, त्यागकिये ।  
 निप० गु० केवल, मारा, डेठ, रस्ता ।  
 निराकांक्षी० ना० पु० निरपृह, आकांक्षारहित ।  
 निराकार० गु० अकारहीन, यथा ईश्वर ।

निरादर० गु० आदररहित, अयज्ञायुत, वा अ  
 वज्ञा वरौ हारा ।  
 निराधार० गु० सहारा रहित, आधार हीन ।  
 निरामिय० गु० मात्सरहित भाजन ।  
 निरालम्ब्य० गु० आलम्बरहित, अयलम्बहीन ।  
 निरालस्य० गु० आलस्य हान, कामकानी, मि  
 हन्ती, उपायी ।  
 निराश० गु० भरासारहित, आशा दूग्धर्ष ।  
 निराहार० गु० भाजनहीन, विनकुञ्जराये ।  
 निरिच्छा० } गु० इच्छारहित विा इच्छा,  
 नेरिच्छित्त० } निसका कुञ्ज चाह नहीं ।  
 नेरीश० गु० स्वामीरहित, जिसका मात्सिक न  
 हो पतिहीन, ना० पु० जीव अर्थात् ईश नहीं ।  
 निरीह० गु० चेष्टारहित यथा ईश्वर ।  
 निरीक्षण० ना० पु० ताक, दृष्टि ।  
 निरुत्तर० गु० उत्तरहीन, लाजमान ।  
 निरुपधि० गु० निष्प्रयानन ।  
 निरुपम० } गु० उपमा हीन दृष्टात रहित ।  
 निरुपमा० }  
 निरुपाधि० गु० उपाधि रहित, बेलाके ।  
 निरुपाय० गु० उपायहीन, विना उपायानिये ।  
 निरूप० गु० रूपहीन, निराकार ।  
 निरूपण० ना० पु० दृष्टि, निर्णय, जमान, विस्तार  
 पूर्वक कथन ।  
 निरूपित० गु० जो विस्तारपूर्वक कहागया वा  
 निर्णय कियागया, निश्चयपुन, स्थापित ।  
 निरेयना० म० नि० विलासना, भाङ्गना ।  
 निरोग० } गु० निरोग, मला चगा, रोग  
 निरोगी० } रहित ।  
 निरोध० ना० पु० घेरना, घँमना ।  
 निर्गत० गु० निकला ।  
 निर्गता० गु० निकलकर, ना० स्त्री० निकली ।  
 निर्गम० ना० पु० जहा जाय न रहे, आम ।  
 निर्गुण० गु० गुण हीन, निरुपमा, मूर्त ।  
 निर्गुणही० ना० स्त्री० सभाजू ।  
 निर्घण्ट० ना० पु० मृषापत्र ।

निर्घात० ना० पु० वज्र, शब्द ।  
 निर्घुणा० गु० निर्दोषा कटोर ।  
 निर्घोष० ना० पु० घनि, शब्द ।  
 निर्जर० ना० पु० देवता, जा वृद्धा न हो ।  
 निर्जन० गु० मनुष्य हीन, जनरहित ।  
 निर्जननदी० ना० स्त्री० आगगाना । ।  
 निजल० गु० जलहान, सूखा, पायाव ।  
 निर्जाव० गु० जिसमें जीव नहीं है यथा मिट्टी  
 पत्थर आदि, मृतक ।  
 निर्जोस० गु० सार, सिद्धात ।  
 निर्भर० ना० पु० भरना ।  
 निर्भरिणी० ना० स्त्री० नदा ।  
 निर्णय० ना० पु० निश्चय, ठिकाना, त्वाय,  
 भगवा मिगना ।  
 निर्णीत० गु० निश्चित, निर्णय कियागया ।  
 निर्दंड० }  
 निर्दय० } गु० जिसमें दया नहीं है, कटोर  
 निर्दया० } बेरहम ।  
 निर्दयी० }  
 निर्दिष्ट० गु० जो अजी विधि दत्ता गया वा  
 निरूपित हुआ वा वर्णन हुआ ।  
 निर्दोष० } गु० दोषहीन, अकलकी, अदोष ।  
 निर्दोषी० }  
 निर्द्वन्द्व० गु० विना भयङ्गा, बेलाके ।  
 निर्धन० गु० धनहीन, दरिद्री ।  
 निर्धार० } ना० पु० निश्चय, निपय ।  
 निर्धारण० }  
 निर्धारित० गु० निश्चित, निर्णीत ।  
 निर्वेश० गु० वेशरहित, अस तान, लाजलद ।  
 निर्वन्धु० गु० बन्धु रहित, अकेला ।  
 निर्वल० गु० लाचार, युद्धा, जिसको सामर्थ्य  
 नहीं है ।  
 निर्वेश० गु० वेश रहित, असमर्थ ।  
 निर्वोज० गु० वीज रहित, पुत्रहीन ।  
 निर्वुद्धि० गु० बुद्धिहीन, मूर्ख ।

निर्मुक्त० गु० जो समझ में न आवे, मूर्ख ।  
 निर्भय० गु० अभय, निडर ।  
 निर्भर० गु० पूर्ण, पूरा ।  
 निर्भ्रम० गु० ममता रहित ।  
 निर्मल० गु० मलहीन, स्वच्छ, शुद्ध, साफ,  
 पक्षा ।  
 निर्मलता० ना० स्त्री० पवित्रता, स्वच्छता,  
 सदाई ।  
 निर्मली० ना० पु० नील विराष जिससे पाना का  
 स्वच्छ करते हैं ।  
 निर्माण० ना० पु० बनावट, रचन्य, बनाना,  
 वत्तव, सार ।  
 निर्माल्य० ना० पु० प्रसाद, निवेदित वस्तु,  
 स्वच्छता, शुद्धता ।  
 निर्मित० गु० रचित, बनाया गया, निर्माण किया  
 गया ।  
 निर्मूल० गु० हीन मूल, बिना मूल ।  
 निर्मोह० } गु० माहरहित, उदासी ।  
 निर्मोही० }  
 निर्यास० ना० पु० शिलानीत, कृत्तका रस  
 अर्थात् गोंद, क्षाय ।  
 निर्याण० ना० पु० यात्रा, प्रस्थान ।  
 निर्बल० गु० लज्जा रहित बढ़या गक्या ।  
 निर्लिप्त० गु० स्पर्शहीन, जा लिप्त नहीं है ।  
 निर्लेप० } गु० जिसका चिह्न नहीं वा लेश  
 निर्लेश० } नहीं, बिना लाग, सर्व ।  
 निर्लाम० गु० लाम रहित, दाता ।  
 निर्दन्ध० गु० दूटाहुआ ।  
 निर्द्याण० ना० पु० मील, अपवर्ग, लय, गु०  
 वैकुण्ठासी, माघ होगया ।  
 निर्वाणसुख० ना० पु० मोक्ष, मुक्ति, वैकुण्ठास ।  
 निर्वाधा० गु० बाधा रहित, अकटक ।  
 निर्वाह० गु० निवाह ।  
 निर्वाहक० गु० निवाह करनेवाला ।  
 निर्विकल्प० गु० भेद रहित, अनर्क्य, कल्पना  
 रहित ।

निर्विकार० गु० विकारहीन, निर्वाण, अरोग ।  
 निर्विघ्न० गु० विघ्नरहित, मानद निर्वाधा ।  
 निर्वृत्ति० ना० स्त्री० मुक्ति, मृत्युआनन्द, इत  
 मार्ग तरीक, पय ।  
 निर्वैर० गु० वैर भाव हीन ।  
 निर्व्याज० गु० अचल, अस्वारथ ।  
 निर्व्यापि० गु० व्यापि हीन, अरोग, अकटक ।  
 निर्वैर० ना० पु० हनेवाला ।  
 निलज० गु० निलज, ल गहीन ।  
 निलय० ना० पु० घर ।  
 निवान० गु० नीचा ।  
 निवानी० स० क्रि० नवाना ।  
 निवार० ना० स्त्री० कार, पट्टी मूक्री ।  
 निवारक० गु० बचानेवाला, रक्षणवाला ।  
 निवारण० ना० पु० निषध, राक, बचान ।  
 निवारना० स० क्रि० रोकना, बचाना, बरजना  
 निवारत० क्रि० बचावत, रोकत, बनेत ।  
 निवारि० क्रि० बचाय कर, रोकते, बरते ।  
 निवारित० गु० बचायागया, बर्जागया ।  
 निवाचना० स० क्रि० नवाना ।  
 निवास० ना० पु० बसने का स्थान, बास, घर ।  
 निवासी० ना० पु० बसनेवाला, रहनेवाला ।  
 निबिड० गु० अधिक, सघन, निहायत ।  
 नियुक्ति० अ० क्रि० भ्रष्टि, वृद्धि ।  
 निवृत्ति० ना० स्त्री० रहाव, रुकावट, विक्षाम,  
 चैन ।  
 निवेदन० ना० पु० प्रार्थना विनयी, अक्ष ।  
 निवेदनपत्र० ना० पु० अर्थात्, पत्रव्यपत्र ।  
 निवेदित० गु० अर्पित, विनय किया गया ।  
 निवेशन० ना० पु० विवाद, शादी ।  
 निशक० गु० लहर, निस्मदह, विन प्रयास ।  
 निशा० ना० स्त्री० रात्रि ।  
 निशाकर० ना० पु० चन्द्रमा ।  
 निशागम० ना० पु० रात्रिका आगम, सम्प्य  
 साम, साम ।

निशाचर० ना० पु० राक्षस, चोर, उलूकादि,  
चन्द्रमा आदि नक्षत्र ।

निशाटन० ना० पु० निशाचर ।

निशि० ना० स्त्री० निशा ।

निशिचर० ना० पु० निशाचर ।

निशिनाथ० ना० पु० चन्द्रमा, चाद्र ।

निशिमुख० ना० पु० सप्या, साम्क ।

निशिभानु० ना० पु० चन्द्रमा ।

निशीघ्र० ना० पु० आधीरात ।

निशीश० ना० पु० चन्द्रमा, चाद्र ।

निश्चय० ना० पु० निर्णय, निश्वास, यु० टोक ।

निल० यु० स्थिर, अचल ।

निश्चित० यु० निर्णय ।

निश्चिन्त० गु० चिन्तारहित, विनास्तम्बे ।

निश्चेष्ट० यु० चेष्टारहित, मूर्च्छित ।

निश्छिद्र० गु० निर्दोष छेदरहित ।

नि श्रेणी० ना० स्त्री० निसेनी, सीढी, जीना ।

निश्श्यास० ना० पु० श्वास, प्राणमायु ।

निश्शेष० यु० अशेष, समस्त, सब ।

निपाद० ना० पु० गाने में पहिला स्वर, चाण्डा  
स सपरवर्षी, केव, मस्राह ।

निपिद्ध० यु० जो कर्त्तव्यनहा वनित ।

निपिद्धस्त० ना० स्त्री० निवारण, कर्त्तव्य रहित,  
इकार ।

निपेद्० ना० पु० अद् स्त, दविधा ।

निपेध० ना० पु० इकार, निवारण, कर्त्तव्य  
रहित ।

निपेधित० यु० वनित, निवारित ।

निष्क० ना० पु० हीरा, १६ द्रुम्भका प्रमाण ।

निष्कण्टक० ना० पु० उपाधिरहित, बुधेङ्क ।

निष्कण्ट० गु० सय, सचा, अलहीन, भोला ।

निष्कर्ष० ना० पु० निश्चय ।

निष्कारण० यु० विना प्रयोजन, बे सबब ।

निष्कवल० यु० एकही, सयकर ।

निष्कमण० ना० पु० सरदार विशेष ।

निष्ठ० गु० स्थापित, तपस, उत्तम, उत्कर्ष ।

निष्ठमति० ना० स्त्री० उत्तमबुद्धि, उत्तमज्ञान ।

निष्ठा० ना० स्त्री० विश्वास, भरोसा ।

निष्ठुर० यु० निष्ठुर, निर्दय, कटार, अश्रीति ।

निष्ठुरता० ना० स्त्री० } कठोरता, निर्दयता,

निष्ठुरत्व० ना० पु० } निष्ठुरता ।

निष्पत्ति० ना० स्त्री० सिद्धि, समाप्ति ।

निष्पन्न० यु० कृत, बना, सिद्ध ।

निष्पादन० ना० पु० सम्पादन ।

निष्पाप० } यु० पापरहित, निर्दोष ।

निष्पार्थी० } यु० पापरहित, निर्दोष ।

निष्प्रपञ्च० यु० अलहीन ।

निष्प्रयोजन० यु० व्यर्थ, विनाप्रयोजन ।

निष्फल० गु० फलहीन, कृषा, बेफायदह ।

निस० ना० स्त्री० निशा ।

निसक० गु० असक्त, पोकसरहित ।

निसक० यु० निश्शक ।

निसकट० गु० सकटरहित ।

निसन्धि० यु० टोस, संधिरहित ।

निसरना० अ० कि० निवसना ।

निसांस० ग० आहभरना ।

निसांसी० गु० तग, हेरान ।

निसान० ना० पु० मूर्ख, नकारह ।

निसास० ना० पु० विदयास ।

निसि० ना० स्त्री० निशि ।

निसित० गु० पैनी० तज, मादिदार ।

निसेनी० ना० स्त्री० साढी, जीना ।

निसोन० ना० पु० शीपथि विशेष, गु० ठेस

निस्तार० ना० पु० मुक्ति, मोक्ष, उद्धार ।

निस्तारा० ना० पु० निपगार ।

निस्तारना० स० कि० निस्तार करना ।

निस्तेज० गु० प्रतापहीन, तेजरहित ।

निस्तोक० ना० पु० बुझीना, निपगार ।

निस्पद० ना० पु० निश्चेष्ट, हिसाब

निस्पृह० यु० लालसाहीन ।

निस्थ० यु० निर्धन, दरिद्री ।

निस्वना० गु० खनि, राक्ष ।  
 निस्सन्देह० गु० सदेहरहित, बेतडके ।  
 निहम् गु० नगा, अचित ।  
 निहत्या० गु० औहया, अम्य रहित, लूजा, हाथ रहित ।  
 निहार्द० ना० स्त्री० लोहेकी वस्तु विशेष निस्सर सोना आदि गड्ढे हैं ।  
 निहानी० ना० स्त्री० रज, कपडे ।  
 निहार० ना० पु० अथकार, कुशिरा, रामायणे यथा, जिमिनिहार में दिनररदुरा, दृष्टि ।  
 निहारना० स० कि० देतना, विलोकना, नकना ।  
 निहारा० स० कि० देता ।  
 निहुरना० अ० कि० लचना, झुगना, दबना ।  
 निहुराना० स० कि० लचना, झुगाना, दबाना ।  
 निहोर० } ना० पु० कृपा, उपहार, विनती,  
 निहोरा० } फुमलाइड, मुखामद ।  
 निक्षिप्त० गु० जो निक्षेप, किया जाने, त्यागित ।  
 निक्षेप० ना० पु० परित्याग, धाहर ।  
 नीद० ना० स्त्री० औषाई, निद्रा ।  
 नीदना० अ० कि० सोना, स० कि० मुकरना ।  
 नीदू० ना० पु० सोवैया ।  
 नीय० ना० पु० वृक्ष विशेष, निम्ब ।  
 नीवू० ना० पु० लामू, फल विशेष ।  
 नीका० गु० भला, अश्ला ।  
 नीका० } गु० सुन्दर, भला, अश्ला ।  
 नीकी० }  
 नील० गु० शीत, वर्धना, हीन, कुम्भित, निरुम्मा ।  
 ( तले, हेत )  
 नीचगामी० गु० जो नीचेजाता है, यथानल ।  
 नीचा० गु० ऊचे के निरुद्ध, नमेव ।  
 नीचार्द० ना० स्त्री० छे गई, नीचापन ।  
 नीचे० अम्य० तले ।  
 नीठ० गु० तुम्हाग ।  
 नीति० ना० स्त्री० उचित, व्यवहार, नीति, वादा ।

नीतिज्ञ० गु० धार्मिक, न्यायी ।  
 नीद० ना० स्त्री० नीद ।  
 नीदना० स० कि० नामानना, मुकरजाना ।  
 नीप० ना० पु० बदमवृक्ष ।  
 नीपुर० ना० पु० निफ ।  
 नीषी० ना० रग्य० शोर्डी, जो शियायावोवाननीहै ।  
 नीवू० ना० पु० निम्ब ।  
 नीम० ना० पु० नीप ।  
 नीमन० गु० निमन ।  
 नीमावत० ना० स्त्री० नीमानन्दस यासीका पथ ।  
 नीर० ना० पु० जल, पानी ।  
 नीरज० ना० पु० कमल, जो जलभातहो ।  
 नीरथ० गु० निरर्थ, निष्फल ।  
 नीरद० ना० पु० मेघ ।  
 नीरधर० ना० पु० मेघ, समुद्र ।  
 नीरस० गु० निरस रमईन, फीका ।  
 नीरोग० गु० निरोग, आरोग्य ।  
 नीरोगी० गु० बग़ा, भन्ना, रोहईन ।  
 नील० गु० शृङ्खलपे विशेष, काला, ना० पु० वस्तु विशेष जो बृहूके पत्तो से बनाये हैं मुरार वापर सो लखे, २००००००००००००० ।  
 नीलद्रु० गु० नाला, ना० पु० नालूग का हरिष विशेष, बीनगपित में विशेष प्रमाप ।  
 नीलकण्ठ० ना० पु० पत्ती विशेष, मोर, अग्नि शोर श्रीशकरजी ।  
 नीलगवय० ना० पु० नीलगाव, रोन् ।  
 नीलगाय० ना० पु० रोन् ।  
 नीलता० ना० स्त्री० } श्यामता, कालापन ।  
 नीलत्व० ना० पु० }  
 नीलपञ्चत० ना० पु० विष्णुका एकभाग, जो उड़ीग के दक्षिणहै, हरिद्वार के समीप तीर्थ विशेष ।  
 नीलपुष्पी० ना० स्त्री० विन्दुकान्ता, अलसी ।  
 नीलवशी० ना० स्त्री० नीलकी वडी ।  
 नीलम० } ना० पु० मणि विशेष ।  
 नीलमणि० }



नेत्राम्बु० ना० पु० आम् ।  
 नेत्रोपमा० ना० स्त्री० वादात्म, आर्त्तकी उपमा ।  
 नैश्वर्य० ना० पु० पश्चिम और दक्षिण का  
 कोण, राक्षस ।  
 नैकश्य० ना० पु० निचटता ।  
 नैक० पु० थोड़ा, घल्प ।  
 नैजाना० अ० कि० झुकना, निहुरना ।  
 नैना० ना० पु० नन, पगहा ।  
 नैपाल० ना० पु० ताना, देश विशेष, नीति वा  
 प्रतिपाल ।  
 नैपाली० ना० पु० मनसिद्ध, नेपालवासी ।  
 नैपुण० पु० निपुण ।  
 नैपुण्य० ना० पु० निपुणता ।  
 नैमित्तिक० पु० समयी, निमित्तका ।  
 नैमित्तिकदान० ना० पु० समयवाय देना ।  
 नैया० ना० स्त्री० नावखोटी, खेवट, कादी ।  
 नैयायिक० ना० पु० न्यायशास्त्र वा ज्ञान,  
 तार्किक ।  
 नैर्मल्य० ना० पु० निर्मलता ।  
 नैवेद्य० ना० पु० देवता के भोजन की सामग्री,  
 गुह्यप्रिय ।  
 नैष्ठिक० पु० विश्वासी, निष्ठावुत ।  
 नैहर० ना० पु० स्त्री० वा भेवा ।  
 नो० अर्थ० नहीं ।  
 नोखा० } गु० अन्टा, अनायक ।  
 नोखा० }  
 नोच० ना० पु० बकोट, घुटकी ।  
 नोचना० स० कि० बकोटना, घुटकी लेना ।  
 नोन० ना० पु० लोन ।  
 नोना० स० कि० दुहने के समय गाय के पेर  
 काथा, ना० पु० सोनाफल विशेष ।  
 नोनापानी० ना० पु० लवणार्द्र, लवणका जल ।  
 नोनिया० ना० पु० लोनिया ।  
 नोय० कि० दुहने समय गायके पात्रवाधना ।

नौखण्ड० ना० पु० पृथ्वी के नौ खण्ड ।  
 नौगरी० ना० स्त्री० नवगिरी ।  
 नौल्लुखर० ना० पु० निदावार ।  
 नौदना० अ० कि० झुकना, निहुरना, आधीन  
 होना ।  
 नौदना० स० कि० झुकाना, निहुराना ।  
 नौतना० स० कि० नेवतना ।  
 नौता० ना० पु० नेवता ।  
 नौमासा० ना० पु० गर्भ से नवें मास वा  
 उत्सव ।  
 नौमि० कि० नमस्कार करताहू ।  
 नौमी० ना० स्त्री० नवमी, गर्वा निधि ।  
 नौरतन० ना० पु० नवरत्न ।  
 नौल० ना० पु० नवल ।  
 नौसादर० ना० पु० औपधि विशेष ।  
 न्यकार० ना० पु० बुलता ।  
 न्यग्रोध० ना० पु० नगद वा वृक्ष ।  
 न्यस्त० पु० सोपानवा, सोपित ।  
 न्याय० ना० पु० धर्म, विचार, तर्कशास्त्र, विशेष  
 प्रसङ्ग ।  
 न्यायक० ना० पु० न्याय करनेहारा ।  
 न्यायशास्त्र० ना० पु० तर्कशास्त्र ।  
 न्यायी० ना० पु० न्यायक, न्यायशास्त्र वा ज्ञान-  
 करनेहारा ।  
 न्यार० ना० पु० चाश ।  
 न्यारा० पु० अलग, निराशा, अन्टा ।  
 न्यारिया० पु० सभेता, चौकस ।  
 न्यून० पु० छोटा, पाट, हीन, कम ।  
 न्यूनकोण० ना० पु० छोटा कोना ।  
 न्यूनता० ना० स्त्री० } घटती, यमी ।  
 न्यूनत्व० ना० पु० }  
 न्यूनपथ० पु० कम उमर ।  
 न्यूनार्थक० ना० पु० छोटा बड़ा ।  
 न्योतना० स० कि० नेवतना ।  
 न्योता० ना० पु० नेवता ।

पंखा० ना० पु० वेना, विजना ।  
 पंखिया० शु० बलेदिया, भग्नालू ।  
 पंखी० ना० पु० पस्ता जोग, छोट पसी,  
 परन्द ।  
 पंगत० } ना० स्त्री० पक्ति, भेषी, घरी ।  
 पंगति० }  
 पंगुला० शु० लँगड़ा ।  
 पचक० ना० स्त्री० सूत ।  
 पचकना० अ० कि० सूतना, सूत उतरना ।  
 पचखना० उ० पाचखरड वाला ।  
 पचघरा० ना० पु० घर विशेष जिसमें पाच  
 घर हों ।  
 पचतोरिया० } ना० पु० दसविशेष अर्थात्  
 पचतोलिया० } सारी ओदन थीं ।  
 पचना० अ० कि० सड़ना, गलना, भस्महाना,  
 परिक्षम करना ।  
 पचपचाना० अ० कि० गीला वा ढीला वा भीगा  
 होना, पसीना, सड़ना ।  
 पचपन० गु० पचास छोरे पाच, ५५ ।  
 पचमिल० गु० भिक्षित, मिलित ।  
 पचमेल० गु० पचमिल ।  
 पचम्पचा० ना० स्त्री० दाढ़हर्दी ।  
 पचलड़ा० ना० पु० } गु० जिसमें पाचलड़े हों ।  
 पचलड़ी० ना० स्त्री० }  
 पचलोना० ना० पु० औषधि विशेष ।  
 पचाडालना० स० कि० पचाना, सड़ाना और  
 स्तपनाना, हृत्पचरजाना ।  
 पचानवे० गु० नब्बे और पाच ६५ ।  
 पचाना० स० कि० पचाना, सड़ाना, हृत्प  
 करना ।  
 पचास० गु० पाच दहाई, ५० ।  
 पचासी० गु० अस्सी और पाच, ८५ ।  
 पचीस० गु० बीस और पाच, २५ ।  
 पचीसी० ना० स्त्री० रस विरोध ।  
 पचूका० ना० पु० पिचकारी ।  
 पच्यु० कि० पचवाड़े, इतपाजा है, पकवाड़े ।

पचोतर० } ना० पु० सैबदा पीछे पाच हाना,  
 पचोतरा० } पाच रुपये सैबदा ।  
 पचौनी० ना० स्त्री० ओम्फ, भ्रौम्फ ।  
 पघर० ना० स्त्री० फणी, ठेक ।  
 पच्छुम० } पु० पश्चिम ।  
 पच्छिम० }  
 पछुइना० } अ० कि० गिरजाना, हटजाना,  
 पछरना० } आधीन होना ।  
 पछताना० स० कि० पश्चात्ताप करना, पीछे को  
 सोचना, अपसोस करना ।  
 पछुतावा० ना० पु० पश्चात्ताप, रोच ।  
 पछुना० ना० पु० गोंटी, खोदवाड़े, चीरा, अन्न  
 विशेष ।  
 पछुनी० ना० स्त्री० शरीर के चमड़े में चीरा  
 करना ।  
 पछरा० गु० गिरपहा पीछे को हटा ।  
 पछुवा० ना० पु० पवन जो पश्चिम से आता है ।  
 पछाड़० ना० स्त्री० पटकन, पटकने वा काम ।  
 पछाड़ना० } स० कि० गिरादेना, आधीन  
 पछारना० } करना, पटपना ।  
 पछाह० ना० पु० पश्चिम ।  
 पछुयाना० स० कि० पीछा करना ।  
 पछियाव० ना० पु० पश्चिम वा पवन ।  
 पछाड़ू० ना० स्त्री० फटपन, फटवावू, फटकने  
 वा काम ।  
 पछोड़ना० } स० कि० फटकना, सूपमें डालके  
 पछोरना० } उछालना ।  
 पजोड़ा० गु० निक्कमा, पानी ।  
 पंच० गु० पाच ५ ना० पु० जाति के चौपरी,  
 फार्फोदि के विचारक, सभा, ५ मनुष्य, कमान  
 वा रोदा ।  
 पंचक० गु० स्त्री० शिक्षा, रोदह पाचकरना ।  
 पंचकोश० ना० पु० पाचीस अर्थात्, अण्मय,  
 प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, ध्यानद ।  
 पंचगव्य० ना० पु० पाच पदार्थ जो गाय से प्राप्त  
 होते हैं अर्थात् दूध, दही, घी, गोमूत्र, गोमय ।

पंचज्योतिरार० ना० पु० पाचप्रकार की ज्योतिर  
अर्थात् मीय, भद्रय, लेख, चोप्य, पेय, १।

पंचतत्त्व० ना० पु० पाचतत्त्व अर्थात् आकार,  
वायु, अग्नि, जल, मिट्टी, ५ ।

पंचतन्त्र० ना० पु० पाचतन्त्र अर्थात् वशीकरण,  
भारण, उच्चाटन, मोहन, आकर्षण ।

पंचत्व० गु० मृत्यु ।

पंचदश० गु० पद्रह, १५ ।

पंचदशानर्थ० ना० पु० पद्रह अनर्थ अर्थात्  
चोरी, हिंसा, मिथ्या, दम्भ, वाम, क्रोध, विरम  
रण, वेर, अश्रुति, भेद, भय, खेद, चिन्ता,  
सोम, सर्वस्पर्डी, १५ ।

पंचनखी० ना० स्त्री० मोह ।

पंचपल्लव० ना० पु० पाँच वृक्षों की पत्ती वा डाली ।

पंचपात्र० ना० पु० पूजाका पात्रविशेष ।

पंचपुराणलक्षण० ना० पु० पुराण क पाच ल  
क्षण अथत् सर्ग, प्रतिसर्ग, वरा, मन्वन्तर, नशात्  
चरित ।

पंचप्राण० ना० पु० पाचप्राण अर्थात् प्राण, अ  
पान, उदान, समान, व्यान, ५ ।

पंचभूत० ना० पु० पंचतत्त्व ।

पंचम० गु० पाचवा, रागका रसरतिशेष ।

पंचमांश० गु० पाचवाभाग ।

पंचमी० ना० स्त्री० पाचवी तिथि, व्याकरण में  
पाचवाकारक ।

पंचमुख० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।

पंचम्यन्त० गु० जिसके अन्तमें पंचमीका प्रयगदे ।

पंचवक्त० ना० पु० श्रीमहादेव जी ।

पंचविंश० } गु० पचीस, २५ ।

पंचविंशति० }

पंचविंशतितम० गु० पचीसवा ।

पंचविंशप्रकृति० ना० स्त्री० पचीस प्रकृति  
अर्थात् अरिष, मास, नक्ष, रोम, नासिका, बॉय,  
सूत्र, रक्त, रसा, लार, भूत, व्यास, नाँद, क्राति,

आलस्य, दीहना, चलना, पसारना, समेटना,  
कूटना, राग, द्वेष, लाज, भय, मोह, २५ ।

पंचनख० ना० पु० सिंह, व्याघ्र ।

पंचधिरोधी० गु० सवका बेरी, दुष्ट ।

पंचशर० पामंदरा ।

पंचशाखा० ना० पु० हाथ ।

पंचसूत्रप्रचायु० ना० पु० पाचसूत्रम वायु अर्थात्  
नाग, कूर्म, वृत्तल, दनदत्त, धनजय ।

पचांगुल० ना० पु० दोनों अरण्य, पाचअंगुल ।

पचांगुली० ना० स्त्री० पाच अंगुली अर्थात्  
अगुष्ट, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका ।

पचाध्यायी० ना० स्त्री० श्रीमद्भागवत के रास-  
मण्डल के पाच अध्याय का समुदाय ।

पचानन० ना० पु० श्रीमहादेवजी, सिंह ।

पंचामृत० ना० पु० दही, दूध, घी, मधु, शकर  
की मिलोनी जा द्रवता हेतु बनाते हैं ।

पचायत० ना० स्त्री० बहुत मनुष्यों की मति वा  
मनुष्या का समूह, जिसमें भगवा निपटायाना  
दे, वा जातिकी सभा वा समुदाय ।

पचाल० ना० पु० देश विशेष ।

पंचालिका० ना० स्त्री० वैश्या, पनुरिया ।

पचाली० ना० स्त्री० वैश्या, शोपदी ।

पंचावन० गु० पंचवन, ५५ ।

पचास० गु० पचास, ५० ।

पचास्य० ना० पु० श्रीमहादेव जी, सिंह, गु०  
पाच मुमवाला ।

पंचीकरण० } गु० पाचकाक्रियाहुआ, वा पाच  
पंचीकृत० } पाच नियामया ।

पछी० ना० पु० पची, चिड़िया ।

पंजर० ना० पु० पासली, पाजर, पिजरा ।

पजरगत० गु० पिजरे में ।

पंजाय० ना० पु० देशविशेष जिसमें पाच नदि-  
या हैं अर्थात् सतलज, व्यासा, रातो, चिनाबे,  
निहलम् ।

पंजानी० शु० पञ्चाव शैला मृत्युष्य वा वस्तु ।  
 पंजीरी० ना० स्त्री० ओषधि, जोग, जो जचा  
 रानी है ।  
 पट० ना० पु० कपडापद्धति, निरने वा मारने का  
 शब्द, दार का शिवाड आदि टका, शु० उल्लेख  
 पुलग पत्र ।  
 पटकन० ना० स्त्री० पढाई चोट ।  
 पटकना० स० कि० देमारना, पटफेना, अ०  
 कि० चरचराना, पटना, ना० पु० कौडा ।  
 पटका० ना० पु० वर्षनी, वमर बाधने का क  
 पत्र ।  
 पटफाजाना० अ० कि० दबका, पतितहोना,  
 गिरना ।  
 पटफाना०  
 पटकारना० } स० कि० पटका, देमारना ।  
 पटफादेना० }  
 पटचर० ना० पु० पुराना वस्त्र, यथा पटचर  
 जीर्णवस्त्रमित्यमर ।  
 पटडा० ना० पु० तिली बेटने के लिये बाडका  
 आसन, चोरी, पीड़ी, पीडा, तल्ला ।  
 पटतर० ना० पु० तुल्य, स्तर, नरावर ।  
 पटन० ना० पु० पटने का काम ।  
 पटना० स० वि० छतवा बनना, टपना, भर-  
 जाना, भरना, भरपाना, ना० पु० नगर  
 विशेष ।  
 पटनी० ना० पु० नैया ।  
 पटपट० ना० पु० भुनने का वा मारने का वा  
 पीटने का शब्दविशेष, चटवट ।  
 पटरा० ना० पु० पटका, ऊतड़ ।  
 पटरानी० ना० स्त्री० रानी, शहसादी ।  
 पटरा० ना० स्त्री० छेलापटरा, पदाया, सपरा ।  
 टल० ना० पु० अन्नक, अवरक, दका, समूह ।  
 पटवा० ना० पु० जानिविशेष, पट्टा ।  
 पटवाना० स० कि० पाटना, भरपाना ।  
 पटवार० } ना० पु० धरनी का लेला  
 पटवारी० } लगानेहारा ।

पटा० ना० पु० गदगा, पीका, पीड़ी, पडलिया ।  
 पटाक० ना० पु० धकाक, शराट ।  
 पटाका० ना० पु० छजूदर, आतरावाजी  
 विशेष, धकाका ।  
 पटाना० स० कि० भराना, चोमा गीवर से  
 लगाना, मिट्टी से लीपना ।  
 पटपट० ना० पु० चणचट ।  
 पटाघ० ना० पु० सौचान, भरान, पटरा जो  
 दार वा छतपर जालने है ।  
 पटिया० ना० स्त्री० पटरी ।  
 पटीना० ना० पु० पलीविशेष ।  
 पटीमा० ना० पु० वस्त्र छापने का बड़ा पत्र ।  
 पटीलना० स० कि० मारना, पीटना, आर्थात्  
 करना ।  
 पट्ट० शु० चतुर, निपुण, ना० पु० वस्तु, नक  
 डिक्की, शु० सुन्दर ।  
 पट्टता० ना० स्त्री० चतुराई, निपुणता, सुदरता ।  
 पट्टा० ना० पु० पात्र, सन ।  
 पटेर० ना० पु० पौधाविशेष, गौदी ।  
 पटेरा० ना० पु० वृद्धाविशेष ।  
 पटेल० ना० पु० छठियाने का काम, प्रभुता, कु-  
 रमी, जानिमें प्रधान, महाराष्ट्र की पदवी ।  
 पटेल्ला० ना० पु० नावविशेष, ना० स्त्री० सरावन ।  
 पटेली० ना० स्त्री० छाग पटेली ।  
 पटेल्ला० ना० पु० पट्टा ।  
 पटोलन० ना० पु० पट्टा ।  
 पटोर० ना० पु० रेशमीवस्त्र, पाट ।  
 पटोल० ना० पु० पलवल ।  
 पटोहिया० ना० पु० उरलू ।  
 पटौनी० ना० स्त्री० नैया, पटनी ।  
 पट्ट० ना० पु० पट, पत्र ।  
 पट्टन० ना० पु० नगर, पुर ।  
 पट्टवस्त्र० ना० पु० रेशमी कपडा ।  
 पट्टा० ना० पु० घोड़ेकी पटी, कुत्ते के गले में बा-  
 धनेवा चमडा, कानों परके रसायेहूये बाल,

लिततम अर्थात् सत आदि की सन्द ।  
 पट्टी० ता० स्त्री० पागो, बधनी, पाकपट्टा ।  
 किसी स्थान आदि का भाग, शीतकण्ठ ।  
 पट्टू० ना० पु० बनात की चादर, ऊर्ध्वस  
 विराप ।  
 पट्टु० ता० स्त्री० त्रयोमना, थोड़े दिन की  
 बकरी ।  
 पट्टा० ना० पु० नखावा, पाटा, कुरती लडा  
 हारा, रागविशेष, जिसका लवणपताही ।  
 पठ० ना० पु० पढ़त ।  
 पठकायन्० ना० स्त्री० पाठक की पत्नी ।  
 पठन० ना० स्त्री० पढ़न ।  
 पठवाना० } स० क्रि० भनवाना ।  
 पठाना० }  
 पठिया० ता० स्त्री० त्रयोमना स्त्री, नई  
 बकरी ।  
 पठौना० ना० पु० } पठाना ।  
 पठौनी० ना० स्त्री० }  
 पड़ना० अ० क्रि० गिरना, देश करना, धारनी  
 करा, लटना ।  
 पड़पड़ाना० अ० क्रि० बुढ़बडाना, मिसना ।  
 पड़ना० अ० क्रि० गिरना, लिपना ।  
 पड़ापड़० अ० क्रि० बारबार मार ।  
 पड़ापाना० स० क्रि० सहज से पाना, कोई  
 वस्तु मार्ग आदि में पाना ।  
 पड़ाव० ना० पु० टहरान, पिवान, टिकासर,  
 पिकने का स्थान, सना, भीड़ ।  
 पड़ावना० स० क्रि० पड़ाना ।  
 पड़िया० ता० स्त्री० मैस की बकिया ।  
 पड़ोस० ना० पु० समापता, निरुद्धता ।  
 पड़ोसिन्० ना० स्त्री० पड़ोसिनी स्त्री, समाप  
 वाली स्त्री ।  
 पड़ोसी० ना० पु० निकटवासी, पड़स रहने  
 हारा ।  
 पड़न० ना० स्त्री० पड़ने का मार्ग ।  
 पड़ना० स० क्रि० बाचना, पाठकरना, जपना ।

पढ़न्त० } ना स्त्री० अप्याय, सस्था, विद्या,  
 पढ़न्ति० } लोका ।  
 पढ़ा० गु० चतुर, पण्डित, बुद्धिमान् ।  
 पढ़ाना० स० क्रि० शिक्षा देना, मितलाना, न  
 तागा ।  
 पढ़िन० ना० पु० मत्स्यविशेष, मजलीविशेष ।  
 पढ़य० } यु० पढ़ा व व्याय ।  
 पढ़यमान० }  
 पण० ता० पु० प्रतिज्ञा, अवस्था, कमाई, माल  
 चार काफिली अर्थात् बीसगण्ड कीटी ।  
 पण्डा० ता० पु० पुजारी, दफ्तर का प्रधान ।  
 पण्डित० गु० विद्वान्, उखवान्, पढ़ा, बद्धि  
 मान् ।  
 पण्डिताई० ता० स्त्री० पण्डितकाम वा विद्या ।  
 पण्डितायन्० ता० पु० पण्डितका जोरु ।  
 पण्डियायन्० ना० स्त्री० पाक का पारु ।  
 पण्डुची० ना० स्त्री० जलपट्टा, पुर्णावा ।  
 पण्डुची० ता० स्त्री० कपातावृत्ति पत्रविशेष,  
 पाखतह ।  
 पण्डुरी० ना० स्त्री० पचीविशेष ।  
 पतग० ता० पु० पची, चिकिया ।  
 पतग० ना० पु० छापा उड़नवाला जंतु तुफल  
 विशेष लरकीविशेष, रगविशेष, सूर्य पची,  
 अग्नि, वृक्षविशेष ।  
 पतंगा० ना० पु० विंगारी, जंतु पतगविशेष ।  
 पतभट्ट० गु० पतोंका गिरजाना, ना स्त्री०  
 ऋतुवशाप ।  
 पतन० ना० पु० पटरन, पछाड़, गिरन ।  
 पतना० अ० क्रि० पड़ना गिरपड़ना ।  
 पतला० गु० दुबला, भौना, जो गाड़ा न हा ।  
 पतलाई० ना० स्त्री० दुर्बलता दुबलापन् ।  
 पतवार० } ना० पु० बनहर नाव के पिछाड़ा  
 पतवात० } वा वाङ्मिशेष ।  
 पतत्रि० ता० पु० पक्षा, चिड़िया ।  
 पता० ना० पु० चिह्न, निशाण ।  
 पताका० ना० स्त्री० ध्वजा, छोटी झंडी ।

पताल० ना० पु० पाताल ।  
 पति० ना० स्त्री० प्रभु, स्वामी, पति, सुख्याति ।  
 पतित० पु० ऋष्ट, दोषी, जो गिरगया ।  
 पतिदेव० } ना० स्त्री० पतिव्रता स्त्री, राम  
 पतिदेवता० } चन्द्रिकाया, तू पतिदेवताका ग्रह  
 भेदी, तेरी यम मृत्यु कहात चेदी ।  
 पतिमा० ना० स्त्री० प्रतिमा ।  
 पतिया० ना० स्त्री० पत्नी, चिट्ठी ।  
 पतियाना० स० कि० प्रतीति करण, भरीसा  
 रत्तना ।  
 पतियारा० ना० पु० भरीसा, प्रतीति, विश्राम ।  
 पतिव्रता० ना० स्त्री० साजी, कुलवती और  
 सुधर्म स्त्री ।  
 पतीरी० ना० स्त्री० चर्चद विशय ।  
 पतीळ० पु० पनला ।  
 पतीला० ना० पु० बडी बल्लेरी, तीली, तरुला ।  
 पतीली० ना० स्त्री० छोटा पतीला ।  
 पतुकी० ना० स्त्री० छोटी फाही, पत्ती का  
 पत्र ।  
 पतुटिया० ना० स्त्री० वेश्या, गणिका ।  
 पतुडिया० ना० स्त्री० पताह, नह ।  
 पतोह० } ना० स्त्री० बह, पुनरी स्त्री ।  
 पतोह० }  
 पतौरा० ना० पु० सेंटाकी पत्ती ।  
 पतौचा० ना० पु० पत्ती ।  
 पत्तन० ना० पु० नगर ।  
 पत्तर० ना० पु० पत्र, बरक ।  
 पत्तल० ना० स्त्री० पत्तिकापत्र भोजाके लिये ।  
 पत्ता० ना० पु० पान, दल, भगली, गहनाविशय ।  
 पत्ती० ना० स्त्री० पत्ती, भंग ।  
 पत्थर० ना० पु० पाषाण शिला ।  
 पत्नी० ना० स्त्री० भार्या, विवाहितपत्नी ।  
 पत्थारो० ना० पु० पतियारा ।  
 पत्र० ना० पु० पत्ता, चिट्ठी, पत्र, चादी सोनि  
 आदि का पत्र ।

पत्ररथ० ना० पु० पत्नी, चिट्ठी ।  
 पत्रा० ना० पु० निविपत्र, यत्री ।  
 पत्रांक० ना० पु० पत्रकी सख्या ।  
 पत्रिका० ना० स्त्री० चिट्ठी, पत्ती ।  
 पत्री० ना० स्त्री० चिट्ठी, पत्ती, वृष, नाथ,  
 कमल ।  
 पथ० ना० पु० मार्ग, ना, राह ।  
 पथरकला० ना० पु० मन्दूकविशेष ।  
 पथरचट्टा० ना० पु० पोषाणविशेष ।  
 पथराना० य० रि० पथर होजाना, बड़ा  
 हाना ।  
 पथरी० ना० स्त्री० किरकिर, आकर, कबरी  
 चकमकना पथर जा मनसो बदकरता  
 है, भूगणविशेष, पत्ताम्य भीतरीअग विशय ।  
 पथरीला० पु० भूमि जिसमें बहुत पथरहों ।  
 पथिक० पु० पु० बगही, सुसाकिर, राही ।  
 पथय० ना० पु० रोगाका आहार, लाभकरा, उप  
 कारी वस्तु, सुखीद ।  
 पथ्या० ना० स्त्री० हड ।  
 पद० ना० पु० चरण, पान, अधिकार, महिमा,  
 पति, स्थान, शब्द अरूप, कलिमा ।  
 पदग० } पु० पैदल, पिशादा ।  
 पदचूर० }  
 पदच्युत० पु० महिमासे जो अर्थ अधिकार से  
 बदलजाना, बदलना ।  
 पदज० ना० पु० पावकी अगुली ।  
 पदना० ना० पु० } पदकर, पद, दरपोक-  
 पदनी० ना० स्त्री० } ना ।  
 पदपट्टी० ना० स्त्री० एकमकारका वृत्त ।  
 पदपत्र० ना० पु० पुद्गरमूल, कमल के पत्ता,  
 अधिकारका पत्र ।  
 पदपीठ० ना० पु० सङ्काठ, जूता ।  
 पदम० ना० पु० पद ।  
 पदधी० ना० स्त्री० पति, वशाकागम, आरपद,  
 मार्ग, अधिकार ।

पदवृत्त० ना० पु० शब्द, जो दो शब्दोंसे मिलित है ।

पदस्थ० ना० गु० जो अपनी पदवीपर स्थिर है ।

पदनाण० ना० पु० जूता ।

पदात० ना० पु० पैरकीमारु, चरणका पात ।

पदाति० ना० पु० पैदल, पियादह, सेवक ।

पदाना० स० कि० वायु धोडाना, डराना, हेल में हराना ।

पदाभिपिक्क० ना० पु० रायस्थान में जो अभिप्रेक्षित हो ।

पदार्थ० ना० पु० वस्तु, अनूप वस्तु श्रीर शब्द या अर्थ, द्रव्य १ गुण २ कर्म ३ सामान्य ४ विशेष ५ समवाय ६ अभान ७, ये सात ।

पदिक० ना० पु० जडाऊ चौकी, हीरा ।

पदुत्तम० ना० पु० सेंधरलोहा, उत्तमपदवी ।

पदोद्गा० गु० पादू, पदकद, डरणक ।

पहराग० ना० पु० पतगवृत्त ।

पदली० ना० स्त्री० पादरवृत्त ।

पद्धति० ना० स्त्री० पदवी, मार्ग, दस्तूर, रीति ।

पद्म० ना० पु० कमल, चिह्न जो चरणदि में होता है, विष्णु का अक्षविशेष, सोनील, १०००००००००००००० ।

पद्मक० ना० पु० पदमाक मुख्य सार ।

पद्मरुक्तटी० ना० पु० कमलगडा ।

पद्मनाभि० ना० पु० श्रीकृष्णचंद्रका एक नाम ।

पद्मराग० ना० पु० लालमणि, माणिक ।

पद्मा० ना० स्त्री० लक्ष्मी, भार्गवी, नदीविशेष ।

पद्माकर० ना० पु० कमलयुक्त तालाब, समुद्र धनवान् ।

पद्माह्व० ना० पु० कमलगडा ।

पद्मायती० ना० स्त्री० पुस्तक विशा, पद्मिनी, अक्षविशेष, नदीविशेष ।

पद्मिनी० ना० स्त्री० कमलिनी, उत्तम स्त्री ।

पद्मी० ना० पु० हाथी ।

पद्य० ना० पु० श्लोक, छंद, नम्य ।

पधारना० अ० प्रि० विदाहोना, जाना, स्थिर करना ।

पन० ना० पु० पण, अवरथाचोपर यथा बाल-पन, पानी ।

पनघट० ना० पु० पानी भरनेका घाट ।

पनच्य० ना० स्त्री० रोदह, विद्या ।

पनचक्री० ना० स्त्री० वह चक्की जो पानी से चलती है ।

पनचोरा० ना० पु० पानविशेष ।

पनपना० अ० कि० मोटा होनागा, प्रफुल्लित होना ।

पनपनाहट० ना० स्त्री० सनसनाहट ।

पनभक्षा० ना० स्त्री० पानी आर मानकी मिलनी ।

पनघ० ना० पु० डोल ।

पनचार० ना० पु० पोधाविशेष, राजपूता में जातिविशेष ।

पनचारा० ना० पु० पत्तल ।

पनचारी० ना० स्त्री० जिस स्थान में पान उपजता है ।

पनस० ना० पु० कटहल ।

पनसल्ला० ना० पु० पियाऊ, जहा पथिकादि की पानी पिलाने है ।

पनसा० गु० नीम, अलोना, ना० पु० छालादा ।

पनसारा० ना० पु० श्रीपथि, विद्या आदि ।

पनसारी० ना० पु० किराना बेचनेवाला ।

पनसाल० ना० पु० पनसल्ला ।

पनसोई० ना० स्त्री० छोटी गात्रविशेष ।

पनहा० ना० पु० पना, चिह्न, छराग, चोदान वक्रण ।

पनहाना० अ० कि० दूध उतारना, प-शाना ।

पनहारा० ना० पु० पनभरा ।

पनहारिन० } ना० स्त्री० पानी भरनेवाली

पनहारी० } स्त्री ।

पनही० ना० स्त्री० जती ।

पनासः } ना० पु० मोर नावगान, बद  
पनालाः } री ।

पनाली० ना० स्त्री० क्षोद्य पनाला ।

पनिया० ना० पु० पानी, जलका रूप ।

पनियाना० स० क्र० सोचना, भिगाता, अ०  
क्रि० पानी भर चाना ।

पनियाला० ना० पु० फलविराष ।

पनीहा० ना० पु० जलजन्तु ।

पन्थ० ना० पु० मार्ग, मत्त, धर्म, अत्रेन ।

पन्था० ना० पु० पन्थ ।

पन्थान० ना० पु० मार्ग, बाण, सङ्क ।

पन्धी० ना० पु० हर्मी, माया, जीव ईश्वर,  
अभिमयु पथिर, मतावलम्बी ।

पद्मग० ना० पु० साप ।

पद्मगपति० ना० पु० शेष, संप्रदान ।

पद्मगारि० ना० पु० गरुड, मोर, नेवला ।

पद्मा० ना० पु० रत्नविशेष, पत्र ।

पद्मी० ना० स्त्री० सुवर्ण त्यादि का बहुत सूक्ष्म  
पत्र ।

पपडा० ना० पु० द्रव्य, पत्र ।

पपडिया० ना० स्त्री० क्षाण पपडा ।

पपडियाकथ० ना० पु० श्वेत कथा ।

पपडी० ना० स्त्री० देवली, विलका, परत, पाक  
विशेष ।

पपडीला० पु० परतीला, पपडादार ।

पपनी० ना० स्त्री० वरना ।

पपरा० ना० पु० पपडा ।

पपरी० ना० स्त्री० पपडी ।

पपीहा० ना० पु० चूहेमार, तुमती, पपी विशेष  
जो कभी पानी नरी आदिका नहीं पीता है ।

पपैया० ना० पु० खिलोना विशेष, वृषविशेष  
वा उत्तका फल ।

पपय० } ना० पु० दूध, पानी, अमृत, दोष अन्व०  
पपय० } ऊपर, तीभी ।

पपयद० ना० पु० मेष, गाय ।

पयोधि० ना० पु० समुद्र ।

पयोद्धि० } ना० पु० सारसमुद्र अर्थात्  
पयोनिधि० } दूध वा जलका समुद्र ।

पयस्विनी० ना० स्त्री० विदारीकन्द, दुधाराण्य  
आदि, स्वास जो बाय काम प्रकाशित है ।

पयान० } ना० पु० चाला, विदा ।  
पयाना० }

पयार० ना० पु० तृणविशेष ।

पयोधर० ना० पु० स्तन, चूर्वी, मेष, तृणविशेष,  
मदारवृक्ष, परित, समद्र, राना ।

पर० पु० दूतरा, दूर, पराया, शिरोमथि, परे, अन्व०  
ऊपर, डारा, उपरात, तपर ।

परकन्त० अ० क्रि० सधाना, अभ्यास होता ।

परफाज० ना० पु० परापाशार्थ्य, अरे का  
काम ।

परवाजी० पु० पराया काम करनवाला वा  
शाचनेवाला, परार्थी ।

परकाना० स० क्रि० सधाना, निस्तान ।

परकाय० पु० दूसरेका, आनका ।

परकीया० ना० स्त्री० परार्थ स्त्री वा परपुरुष  
रत स्त्री ।

परख० ना० स्त्री० परीक्षा, तयकरा ।

परखना० स० क्रि० परीक्षा कराना, जानना ।

परखाई० ना० स्त्री० परखनेका काम वा उत्तका  
पेक्षा ।

परखाना० स० क्रि० परीक्षाकराना, जाचवाना,  
परखा० } पु० परीक्षा, परखोहारा ।  
परखैया० }

परखा० ना० पु० परीक्षा, इम्नहान ।

परखून० ना० पु० आग दालि अदि ।

परखूदिया० ना० पु० बनिया, परखून बेचने  
हारा ।

परखी० ना० पु० परीक्षा, परखकराना, इम्नहान ।

परखिद्र० ना० पु० पराया छेद, पराया गेर ।

परजंक० ना० पु० साण, सेन ।

परजा० ना० स्त्री० प्रजा ।



परत० ना० पु० लङ्, पपडा, तह ।  
 परतंत्र० ना० पु० पराधीन जो श्रीर के प्रावृ हे ।  
 परतल० ना० पु० डेराउपडा ।  
 परतला० ना० पु० हाव, निरुत तलवार रत  
 ते हे ।  
 परता० ना० पु० परेता, चरती, बाख ।  
 परती० ना० स्त्री० पनर, पहाईई धरती वा क  
 पड़े स पवन करके अष्ट साक करना ।  
 परतीत० ना० स्त्री० प्रतीत, निश्चय ।  
 परदादा० ना० पु० दादारा बाप ।  
 परदादी० ना० स्त्री० दादे की माता ।  
 परदार० } ना० स्त्री० पराई स्त्री ।  
 परदारा० }  
 परदेश० ना० पु० आनदेश, विदेश ।  
 परदेशी० शु० अयदेशी, अनजान, विदेशी ।  
 परद्रोह० ना० पु० परायवैर, आनरा विरोध ।  
 परद्रव्य० ना० पु० परायान ।  
 परधन० ना० पु० पराया द्रव्य, परायधन ।  
 परन० ना० पु० प्रण, प्रतिज्ञा, परण ।  
 परनाना० ना० पु० नाना का बाप, प्रमातामह ।  
 परनाला० ना० पु० } मोरी, नावदाग,  
 परनाली० स्त्री० } नाला ।  
 परन्तु० अव्य० किन्तु, लेकिन ।  
 परपंच० ना० पु० प्रपच, छल, धोखा, कपट ।  
 परपंची० शु० प्रपची, छली, कपगी, सपापी ।  
 परपराना० अ० कि० चरपराना ।  
 परपराहट० ना० स्त्री० चरपराहट ।  
 परपुष्टा० ना० स्त्री० कोयल पक्षी ।  
 परपूरन० उ० परिपूर्ण, भरपूर ।  
 परपठ० ना० पु० हुपचीका उतारा ।  
 परपय० ना० पु० पर्व, उमव, अर्घ्याय, त्योहार ।  
 परवल्ल० शु० प्रवल ।  
 परम० शु० उत्कृष्ट, श्रेष्ठ, अंशुत्तम, बड़ा ।  
 परमल० ना० पु० सर्वश्रेष्ठ विशेष ।

परमविरत० शु० योगेश्वर, सिद्ध, अतिलीज ।  
 परमहंस० ना० पु० योगी विशेष ।  
 परमज्ञान० ना० पु० शुद्ध विज्ञान ।  
 परमा० ना० स्त्री० शोभा, काति ।  
 परमाणु० ना० पु० अत्यंत सूक्ष्मवस्तु ।  
 परमात्मा० ना० पु० परब्रह्म, भगवान्, ईश्वर ।  
 परमान्न० ना० पु० पायस, घार ।  
 परमायु० } ना० स्त्री० जीवनकाल, समस्त,  
 परमायुष० } आयु ।  
 परमार्थ० ना० पु० कार्य वा व्यवहार जो सब  
 से उत्तम है, वांति, पुण्यतत्त्व वस्तु ।  
 परमार्थी० शु० भक्त, वांतिमान् उत्तमकार्यी ।  
 परमीश० } ना० पु० परमामा, सर्वेश्वर  
 परमेश्वर० } रिस्य, ईश्वर ।  
 परमेष्ठी० ना० पु० ब्रह्मा ।  
 परमोधु० मूर्च्छना, बेहोशी ।  
 परम्परा० ना० स्त्री० क्रमागत, प्राचीन ।  
 परलोक० ना० पु० स्वर्ग, मर्ने के पक्ष जो  
 लाव ।  
 परघर० } ना० पु० पलकल, तरकारी विशेष ।  
 परवल० }  
 परवश० } शु० अत्ताधीन, पराधीन ।  
 परवस० }  
 परजल० ना० पु० परमेरार ।  
 परशाद० ना० पु० प्रमाद ।  
 परशु० ना० पु० परसा ।  
 परशुधर० } ना० पु० विशु नारायण का  
 परशुराम० } द्वा अरतार ।  
 परश्व० अव्य० परसौ ।  
 परस० ना० रासी, सुश्रावट ।  
 परसना० स० कि० छूना, परोसना ।  
 परसिया० ना० पु० इतिया ।  
 परसी० ना० पु० मच्छी मार, रामचन्द्रिकाया  
 यथा, वं क हिये न प्रमा सरसीसी, कर्म-फाम  
 बद्ध परसीसी, कामता कामिनि धोरि गसीसी,  
 मानमनुयन की नासीसी, कि० सुई, मिली ।

परस्वत० ना० पु० रोग विशेष ।  
 परस्वतिया० } गु० निसकी परस्वतोरोगो ।  
 परस्वती० }  
 परसो० अन्व० अगिला वा पिछला, तीसरादिन ।  
 परस्पर० अन्व० आपुस में ।  
 परहित० ना० पु० परायाकाम, परस्वार्थ ।  
 परत्र० अन्व० परलोक में ।  
 परा० अन्व० निस शब्द के प्रथम में यह मिलता  
 है उसका अर्थ कभी प्रभुता, कभी उलट्टर, कभी  
 अहंकार, कभी अधिकार आदि होता है, ना०  
 पु० श्रेयो, पक्ति, ब्रतार ।  
 पराक्रम० ना० पु० सामर्थ्य, पौरुष ।  
 पराक्रमी० गु० सामर्थी, बलवान् ।  
 पराग० ना० पु० फूलकी रज वा धूलि ।  
 परामुख० ना० पु० विमुख, मुलकिरा ।  
 पराजय० ना० पु० पराभव, भंग, हार ।  
 पराजयी० गु० पराजय करनेवाला ।  
 पराजित० गु० निसकी पराजय हुआ, जो हार  
 गया ।  
 पराजिता० ना० स्त्री० निश्चक्रान्ता, पीषा ।  
 पराडा० ना० पु० एकप्रकार की रीठी विशेष ।  
 परात० ना० पु० बर्षावाली, प्रात ।  
 परातिक्का० ना० पु० खाल पुनर्नवा ।  
 पराती० ना० स्त्री० परात, खाल ।  
 पराधीन० गु० जो निजकरा में नहीं है, अस्तव ।  
 पराना० अ० कि० मागना, पनरियाना ।  
 परानी० ना० पु० प्राणी, जीवधारी ।  
 पराप्र० ना० पु० और का अन्न अर्थात् दूसरे की  
 कमाई वा लागन का भोजन ।  
 परामव० ना० पु० पराजय, निरादर, हार ।  
 पराभूत० गु० जो पराजय होगया, जो हारगया ।  
 परामर्श० ना० पु० विचार, मन्त्र, उपदेश ।  
 परामोघना० ना० पु० दुसलाहट ।  
 परावण० ना० पु० किसी काममें मनकी लगा-  
 वट होनी, गु० गटपट, तत्पर ।

पराया० गु० और का, द्वितीय का ।  
 परारा० गु० पराया ।  
 परालब्धि० ना० स्त्री० भाग्य, देवगति, दि-  
 तीय जन्म अर्थात् पिछले जन्म कर्म का फल  
 भाग ।  
 परावती० ना० स्त्री० वागवशा रूढी ।  
 परावह० ना० पु० सुख्य पवन ।  
 पराशर० ना० पु० वेदव्यासकी के पिता मुनि  
 विशेष ।  
 परास० ना० पु० पलास वा रसी जो उसकी  
 छाल से बनती है ।  
 परासर० ना० पु० पराशर ।  
 परास्त० गु० खराब, नष्ट, तहनासा ।  
 पराह० ना० स्त्री० भागभाग, देरान्याग ।  
 पराह० ना० पु० दोपहर दिन चढ़े के उप-  
 रात ।  
 परि० अन्व० अति, पान, निस शब्द की आदि  
 में यह युक्त होता है उसका अर्थ कभी चौदिसा  
 कभी भाग, कभी त्याग, कभी अवधि, और  
 कभी अधिक आदि होना है ।  
 परिकर० ना० पु० कमरफेंट ।  
 परिहृमा० ना० स्त्री० प्रदक्षिणा ।  
 परिष्ठा० ना० स्त्री० सार ।  
 परिगणन० ना० पु० मापना, गिनना ।  
 परिग्रह० ना० पु० पकड़ती, निवटवानी ।  
 परिघ० ना० पु० बन्न, पर्वत, बाप, सूर्य, चाँद,  
 शेष, जल और स्योहा ।  
 परिचय० ना० पु० मेल मिलाप, जान परि-  
 चान ।  
 परिच्छर० ना० पु० परिधिरथ, परितेवक ।  
 परिचर्या० ना० स्त्री० सेवा, विदमत ।  
 परिचारक० ना० पु० सेवक, दसोरिया, जमादार ।  
 परिचारी० ना० स्त्री० दासी, सेवकिन ।  
 परिच्छिन्न० ना० पु० परिमित, छीन, छीष ।  
 परिच्छेद० ना० पु० विभाग, अप्पाय, पर्व ।

परिजन० ना० पु० परिवारके लोग, निम्नवासी ।  
 परिणाम० ना० पु० अतः, समाप्ति, अनस्थातर  
 की प्राप्ति ।  
 परिणाइ० गु० विशाल, मोग, स्थूल ।  
 परित० अन्व० चारों ओर सर्वत्र ।  
 परिताप० ता० पु० सताप, दुःख, शान, पीडा ।  
 परितोष० ना० पु० सताप, प्रसन्नता ।  
 परित्राण० ता० पु० रक्षा, रक्षवाली, पालना ।  
 परित्राता० गु० रक्षक, पालनेवाला ।  
 परित्यक्त० गु० वा सर्वप्रकारत्यागित ।  
 परित्याग० ना० पु० जो भलीभांति त्याग ।  
 परिदेवन० ना० पु० विलाप, शोक, रोना ।  
 परिधन० } ना० पु० कपडापरिहारेक, रामायणे,  
 परिधान० } जटा मुकुट परिधन मुनि चीरा ।  
 परिधि० ना० स्त्री० वेष्टनशीमाप, मण्डल, घरा ।  
 परिधेय० गु० परिहायामया ।  
 परिण० } ना० पु० विवाह, नाम माला, परि  
 परिणै० } ननिवेशन, परिणै, उद्गाह, जून,  
 विवाह ।  
 परिपक्व० गु० पका, पई ।  
 परिपन्थी० गु० बरी, शत्रु ।  
 परिपाक० गु० पका, ना० पु० समाप्ति और  
 अतः ।  
 परिपाटी० ना० स्त्री० अतिक्रम, उत्क्रम, रीति,  
 दस्तूर ।  
 परिपिष्टक० ना० पु० सीसा धातु ।  
 परिपूरण० } गु० समस्त, सम्पूर्ण, सर्व, सब ।  
 परिपूरण० }  
 परिपूर्ण० }  
 परिवाह० ना० पु० मुख्य पवन ।  
 परिभद्र० ता० पु० नानन्द ।  
 परिभव० ना० पु० पराभव, अनादर, बदनामी ।  
 परिभाषा० ना० स्त्री० व्याकरणादि शास्त्र का  
 संकेत ।  
 परिभ्रमण० ना० पु० फिरना, घूमना ।  
 परिभृत० ना० पु० कोकिला, अम्बा सेवक,

यथा, वनश्रिया परिभृत वंशिलापिण्डयपि  
 इत्यमर रामचन्द्रिकाया, देखो शुभगिरिवर स  
 कल शोभावर फूलवरख बहु फरनिफरे, सगसरभ  
 श्रद्ध जन केशरिकेनन मनहु धरनि सुमीव धर,  
 सगशिना निरामे गज मुखगाने परिभृतबोलै चित्त  
 हरे, शिरशुभचन्द्रधर परम दिगम्बर मानोहर  
 अहिराज धरे, इस छंद मे श्लेष हे इस लिये  
 परिभृत क दोनों अर्थ सिद्ध हैं ।

परिमाल० ना० पु० सुगन्धित, सुवास ।  
 परिमाण० ना० पु० परिच्छेद करना, बाण,  
 बन्दरा ।  
 परिमित० गु० जो नापागया, मिलाहुआ ।  
 परिवर्त्त० ना० पु० बदल, एराफेरी, भागामाग ।  
 परिवर्त्तन० ना० पु० बदला, एराफरी करना ।  
 परिवाद० ना० पु० गाली, उलहा, निंदा ।  
 परिवार० ना० पु० घराने के लोग, पान्यजन,  
 वरा ।  
 परिदृढ० ना० पु० स्वामी, नायक, मालिक ।  
 परिवृत्त० गु० चारों ओर से घिराहुआ ।  
 परिवेष० ना० पु० घरा, गालाई, पारधि ।  
 परिवेषण० ना० पु० लपटना, भाजन का  
 परोसना ।  
 परिवेषित० गु० जा लपेटागया, घरागया ।  
 परिव्राजक० ना० पु० सयासी ।  
 परिव्राजी० ना० स्त्री० म्योडा, पौधा मुएडी ।  
 परिशोध० ना० पु० ऋणको चुनायदेना ।  
 परिश्रम० ता० पु० आयास, श्रम, थकान, लूरा,  
 मिहनत ।  
 परिश्रमी० गु० कामवाजी, धुनी, मिहनती ।  
 परिष्कार० ना० पु० शोभा, आभूषण ।  
 परिष्कृत० गु० शोभित, आभूषित ।  
 परिहरना० स० कि० त्यागना, छोड़ना, लैलेना ।  
 परिहार० ना० पु० अवज्ञा, अपमान, और  
 राजपूतों में जानि विरोध ।

परिहास० ना० पु० व्यासकृत्य, हँसी टट्टा,  
खिही, वीतुक ।

परी० ना० स्त्री० तेल भाइ से निम्नानन का पात्र  
विशेष, पारसा भाषा में अमरा का कदत है ।

परीच्छिद्रत० शु० दूसर की इच्छातुमार ।

परीक्षक० ना० गु० परीक्षा करनेवाला ।

परीक्षा० ना० स्त्री० जाच, खान, इम्नहान ।

परीक्षित० शु० जाजाचा गया, पराधा किया  
गया, ना० पु० अर्जुनका पाता, राजा विशप ।

परु० ना० पु० पार, गाठ ।

परुप० शु० बठोर ना० पु० कुवचन, गाली,  
निरसवचन, असह वचन ।

परपाक्षर० ना० पु० कुवचन, असहवचन ।

परुप० } ना० पु० फालमा वृष ।  
परुपक० }

परे० अय० उधर ।

परेखा० ना० पु० पद्धितावा ।

परेतना० स० कि० अरेना ।

परेतराट्ठ० ना० पु० जमरान ।

परेता० ना० पु० अटेन, चरली ।

परेवा० ना० पु० बधूतर, प्रतिपत्तिधि ।

परेश० ना० पु० श्रीभगवान् ।

परेह० ना० पु० पलेव ।

परोपकार० ना० पु० पराया स्वारथ करना ।

परोपकारी० शु० जो पराया उपकार करे ।

परोस० ना० पु० निकट, पास, समीप, पड़ोस ।

परोसना० स० कि० भाजन थाही आदि म  
रतना ।

परोसा० ना० पु० पाक जो किसी का भेजे वा  
देवे ।

परोसी० ना० पु० निरयवासी, पड़ोसी ।

परोसीया० ना० पु० परोसनेवाला ।

परोहन० ना० पु० वाहन, रथ, बहल, घोडा  
आदि ।

परोहा० ना० पु० चरफ़े, मोठ ।

परोक्ष० ना० पु० धनवासी, वानप्रस्थ, उ० शुभ,  
अगोचर ।

पर्चा० ना० स्त्री० परीक्षा ।

पर्चाना० स० कि० भगवतवाना, वातचीन करना,  
दुलागा, जलाना ।

पर्चुनिया० ना० पु० प्रागादाल, बचनवाला ।

पर्चानी० ना० स्त्री० आयादाल बचाववाली ।

पर्छुती० ना० स्त्री० छोटी छपरिया नो मार्गरी  
भविष्य जलन है ।

पर्छा०

पर्छाई० } ना० स्त्री० प्रतिविम्ब प्रतिरूप, अकत ।  
पर्छाया० }

पर्जे० ना० स्त्री० डालवा इथकडा, रागिनाविशेष ।

पर्णे० ना० पु० पत्ता, पान, प्रतिज्ञा, प्रथ ।

पर्णकुटी० } ना० स्त्री० पत्तोंसे छाया हुआ,  
पर्णशाला० } भोजना ।

पर्दादा० ना० पु० दादाका नाप, प्रपितामह ।

पर्दादी० ना० स्त्री० दादा की माता, प्रपिता  
मही ।

पर्यट्ठ० } ना० पु० पित्तपापडा ।  
पर्यट्ठक० }

पर्यट्ठ० } ना० पु० सेज, रता, पलंग ।  
पर्यट्ठक० }

पर्यट्ठन० ना० पु० अमथ ।

पर्यटित० शु० अमित, घूमाभया ।

पर्यन्त० अव्य० तक, लग, ना० पु० अत्य न  
की सीमा ।

पर्यवसान० ना० पु० चरम, समाप्ति ।

पर्याय० ना० पु० क्रम, डौल, अरसर, दीप

परला० शु० पालमा, उत्तपारवा ।

पर्दे० ना० पु० न्योहार, उसप्, बन्दादिन, नहान,  
अध्याय, मथि, हीरा, कुसमय ।

पर्धत० ना० पु० पहाड, तरकारीविशेष, सुनि वि० ।

पर्धतनन्दिनी० ना० स्त्री० श्रीपार्वतीनी ।

पर्धतारि० ना० पु० इन्द्र ।

पर्धतिया० ना० पु० लीवी, लीवा, पर्धतवासा ।

पद्वयगं ना० पु० प्लवग, वावर ।

पवन० ना० पु० वायु, वायुवीथ का रसमी ।

पवनसखा० ना० पु० अग्नि, आग ।

पवनावर्त्ती० ना० स्त्री० पश्यप की एक स्त्रीका नाम ।

पवमान० ना० पु० पना, प्रायु, हवा ।

पवाई० ना० पु० घोड़े के पैरकी सावर, पकड़ी, चूले का एक पत्रा ।

पवाज० ना० पु० नीच रोग ।

पवार० ना० पु० रानपूत, जानिविशेष ।

पवारजा० स० वि० चलाता, पडाता, कटाता ।

पवि० ना० पु० यज्ञ ।

पविपात० ना० पु० रजपटा, बीजलीपटना ।

पवित्र० ना० पु० शुद्ध, पवि, निर्मल, अदोष ।

पवित्रता० ना० स्त्री० शुद्धता, पाकी, निर्मलता ।

पवित्रा० ना० पु० यज्ञोपवीत, उरु ।

पवित्री० ना० स्त्री० मुद्रिका कुशरी जो सफ़ ल्यादि पूजा के समय पहिने हैं वा पचपातु रचिन ।

पशु० ना० पु० ज तु, जीवधारी, चतुपदादि ।

पशुपति० ना० पु० श्रीमहादेवजी, ग्वालादि ।

पशुपाल० } ना० पु० ग्वाल, अहीर ।

पशुपालक० } ना० पु० ग्वाल, अहीर ।

पश्चात् अन्व० पीछे, आतर ।

पश्चात्ताप० ना० पु० पचताप, अफसोस ।

पश्चात्तापी० गु० पश्चातोवाला ।

पश्चिम० ना० पु० पवाह ।

पश्यति० } कि० देखता ।

पश्यन्ति० } कि० देखता ।

पश्यलोहर० ना० पु० सामने चोरी करनेवाला, एनार ।

पश्यन्त० ना० पु० पयाल, दाह, ज्यो पनिहारी

जेररी लैचत कटपयाग, तुलसी रसना रामकडु पाप विनिक अनुमान ।

पसरना० अ० कि० पेलना ।

पसली० ना० स्त्री० पातर की हर्षी ।

पसा० ना० पु० दीमट्टीमर ।

पसाई० ना० स्त्री० चारल विशेष, वृषविशेष, जिसमाल धान के सदरा होता है ।

पसाउ० } ना० पु० दया, कृपा, मेहरबानी ।

पसाऊ० } ना० पु० दया, कृपा, मेहरबानी ।

पसाना० स० कि० भानना मात्र निकलना, वादना ।

पसार० } ना० पु० पसार, विधाव ।

पसारा० } ना० पु० पसार, विधाव ।

पसारी० ना० पु० पनसारी ।

पसारना० स० वि० पेलना, विधाना ।

पसीजना० अ० वि० स्वेद छटना, सितली, छुटाना, दयालु होना ।

पसीना० ना० पु० स्वेद, सितली ।

परज० ना० स्त्री० सोना, तुर्पा ।

परजना० म० वि० सोना, तुर्पा, तागा, तुर्पा

पसीप० ना० पु० पनीप ।

पट० ना० पु० तडना, भोर, अय० पाग ।

पहचान० ना० स्त्री० ज्ञान, बिहारी ।

पहचानना० स० वि० जानना, चीहना ।

पटनना० स० वि० पहिरना, धोना ।

पहनावा० ना० पु० पटा, कपडा ।

पहर० ना० पु० समयका परिमाण जो तीनघंटे का होता है, एक दिन वा रातका चतुर्थांश ।

पहरा० ना० पु० चोरी ।

पहराना० स० वि० पहिरना, धोना ।

पहरानरी० ना० स्त्री० जो रिनाह आदि में लोगों को कपडा पहनाते हैं ।

पहरिया० } ना० पु० धनोरिया, चौकीदार,

पहरुआ० } ना० पु० धनोरिया, चौकीदार,

पहरू० } ना० पु० धनोरिया, चौकीदार,

पहरना० अ० कि० पहनना ।

पहल० ना० पु० रई का पतं, चदाय, विकीनादि की एक घोर ।

पहला० गु० प्रथम, अन्व ।

पहाड़० ना० पु० पर्वत ।

पाख० ना० पु० पख, १५ दिनका, भीति, विशेष  
निसपर बरौकी रखते हैं ।

पाखएड० ना० पु० छल, धूँतवा, वाव ।

पाखर० ना० पु० घोंद्रे, वा हाथी के आँदने की  
भूल विशेष, जो लोहमय होती है ।

पाखा० ना० पु० थोसरा, पात ।

पाग० ना० स्त्री० पगड़ी, रस, चाण्डी, मिश्रित ।

पागना० अ० कि० रसमिलित होना, सनना, मिल-  
ना, स० कि० पनाना ।

पागल० अ० उमत्त, मिडा ।

पागा० ना० पु० धोड़ों का झुण्ड ।

पागुर० ना० पु० चवाई, तुम ली ।

पागुराना० स० वि० चावना, लुगासी करना ।

पागक० } ना० अ० रसोदया, स्वच्छ, अग्नि  
पाचन० } कारक ओषधि, हागिम ।

पाङ्ग० ना० पु० टीका, गाठी खुदवाई ।

पाङ्गना० स० कि० टीका देना, गाँगी सादना ।

पाङ्गे० } अ० पीछे ।  
पाङ्गे० }

पाञ्चाल० ना० पु० देश विशेष ।

पाञ्चाली० ना० स्त्री० द्रौपदी ।

पाट० ना० पु० सारी जाति विशेष, पट्टवा,  
बावाई, टसर, रेशम, सिहास ।

पाटवृमि० ना० पु० रेशमका बीजा ।

पाटन० ना० स्त्री० छात, छत, पटना ।

पाटना० स० वि० छतवाजना, भरदेना, छात,  
विज्ञा वस्तुकी बहुतायत करना, थापना ।

पाटमहिषी० ना० स्त्री० पत्ता ।

पाटधर० ना० पु० चरली, रेशमी बपड़ा ।

पाटल० ना० पु० वर्ष विशेष, फूलमाले वृक्ष,  
साल सफ़ेद अर्थात् गुलाब ।

पाटला० ना० पु० पुत्र विशेष, ना० स्त्री०  
वृक्षा ।

पाटलिपुत्र० ना० पु० शाक्यभद्र क पात एक  
अर्थात् नगर ।

पाटा० ना० पु० पट्टा ।

पाटी० ना० स्त्री० साट में का लम्बा काट,  
पणिया, मिटाई विशेष, चवाई विशेष, तम्बी ।  
लितो की ।

पाटीर० ना० पु० चढ़ा ।

पाट० ना० पु० स या, अप्पाय, अभ्ययन, सक् ।

पाटक० अ० शिकक, ना० पु० विप्रजाति विशेष ।

पाटशाला० ना० स्त्री० पढ़ने पढ़ाने का घर,  
चट्टाश ।

पाटा० ना० पु० युवानु, मलयुद्ध करनेहारा ।

पाठी० ना० स्त्री० युवावृत्ती, ना० पु० ब्रह्मा,  
पाटा ।

पाठीन० ना० पु० सहस्र दादा मच्छ विशेष ।

पाठ्य० अ० जो पढ़ने के योग्य है ।

पाङ्ग० ना० स्त्री० गरजन, डीना ।

पाङ्गना० स० वि० गिराना, वानल निगलना ।

पाङ्गा० ना० पु० भैंसका बच्चा, टीला ।

पाढा० ना० पु० मृग विशेष ।

पाङ्गी० ना० स्त्री० नदी के पारजाना ।

पाण० ना० पु० पीप, पत्त, नये बपड़े की  
माथी ।

पाणि० ना० पु० हाथ ।

पाणिप्रहण० ना० पु० विवाद, व्यवधान  
लेप ।

पाणिनि० ना० पु० व्याकरणशास्त्रकर्ता, सुवि  
विशेष ।

पाणिनीय० अ० पाणिनि सुग्रीवा व्याकरण वा  
उसका पढ़ाने या पढ़ाएहारा ।

पाण्डव० ना० पु० पाण्डवाना के पाचपुत्र अर्थात्  
युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव ।

पाण्डु० ना० पु० राजा युधिष्ठिर का पुत्र ।

पाण्डुपुत्रा० ना० स्त्री० रेणुजा अर्थात् ।

पाण्डुर० ना० पु० वर्ष विशेष, अर्थात् उज्ज्वल,  
पट्टरी पक्षी, वृक्ष विशेष, पीला, सँटा ।

पाण्डुरा० ना० स्त्री० भयान, पक्षी विशेष ।

पाण्डे० ना० पु० प्राण्य की जाति-वा पदवी  
विशेष ।  
पात० ना० पु० पतन, पत्र, पत्ता, कानका गहना  
विशेष ।  
पातक० ना० पु० पाप, पापकर्ता ।  
पातकी० गु० पापी, दोषी ।  
पातर० ना० स्त्री० वैश्या, गु० पतला, दुर्बल ।  
पातजल० ना० पु० शास्त्र विशेष ।  
पाता० ना० पु० पत्ता, रक्षिता ।  
पाताल० ना० पु० नागलोक, नरक ।  
पातालाय० गु० पाताल बानी ।  
पाती० ना० स्त्री० पत्नी, चिट्ठी पत्नी ।  
पात्र० ना० पु० वर्तन, भाड़ा, गु० उचित, योग्य,  
उत्तम ।  
पाथ० ना० पु० जल, पानी ।  
पाथना० स० वि० गोबरसे कण्डे कयी बनाया,  
धोपना, जोड़लगाना ।  
पाथर० ना० पु० पत्थर ।  
पाथेय० ना० पु० पथम-ययस्त्रीसौ सामग्री ।  
पाथोज० ना० पु० कमल ।  
पाथोद्० ना० पु० मेघ ।  
पाथोधि० ना० पु० समुद्र ।  
पाद्० ना० पु० पद, चरण, चोथाभाग, सुदुर्बल,  
दुर्बली ।  
पादकटक० ना० पु० बिडुआ ।  
पादना० अ० कि० टरमारना, पादमारना, दुसफना,  
गुदा स शब्द मारना ।  
पादप० ना० पु० टूट, पेड़ ।  
पादांगद० ना० पु० बिडुआ, पायका शूण्य ।  
पादानोन० ना० पु० लोण विशेष ।  
पादार्य० ना० पु० जागाद, मार्ग ।  
पादार्यण० ना० पु० पैरदाग ।  
पादुका० ना० पु० लड़ाऊ, जूती ।  
पादुकृत० ना० पु० चमार, मार्ग ।  
पादोद्क० ना० पु० पायका धोरा ।  
पाय० ना० पु० पायसी व पानी ।

पाघा० ना० पु० नरिचक, लाल ।  
पान० ना० पु० ताम्बूल, ताम्बोल, पत्ता, पाण  
पाणि ।  
पानदान० ना० पु० पान रखनेका पात्र विशेष ।  
पाना० स० वि० उपार्जन करना, मिलना ।  
पानिय० ना० स्त्री० शोभा, क्रांति, सुदरता ।  
पानी० } ना० पु० जल, वीर्य, धातु, भइक,  
पानीय० } पति, इज्जत, आचरू ।  
पान्य० ना० पु० पयिक, मुसाफिर ।  
पाप० ना० पु० अधर्म, कुकर्म, अपराध, दोष ।  
पापखण्डन० ना० पु० पापनाशन ।  
पापङ्ग० ना० पु० बटुत पतले फुलरा मूगके ।  
पापङ्गा० ना० पु० पोधाविशेष ।  
पापङ्गाखार० ना० पु० केलके वृक्षके जलायके  
चार को जो पापके में लगाते हैं ।  
पापिन्नी० गु० पापकी मूर्ति, अधम शरीर ।  
पापरोग० ना० पु० कौट, माता विशेष, शीतला  
विशेष ।  
पापामा० गु० पापिष्ठ, अधर्मा, काफिर ।  
पापिन० } ना० स्त्री० दोषिनी, पाप करी  
पापिनी० } हारी ।  
पापिया० ना० पु० एरण्ड, वृक्ष विशेष, जिसके  
फलको बगाली खाने हैं ।  
पापिष्ठ० गु० पापामा, अधर्म की मूर्ति, हिंसक ।  
पापी० गु० अपराधी, दुसहमार ।  
पाप्मर० गु० नाच, अधम, तुच्छ ।  
पाप्मी० ना० स्त्री० नीचकी स्त्री, रेशम, यक्ष  
विशेष ।  
पायक० ना० पु० पदल, सेतक, पैदल योद्धा ।  
पायङ्ग० ना० पु० लीना ।  
पायन्त० ना० पु० } खाना यह और मिथर  
पायन्ती० स्त्री० } परकरत है ।  
पायल० ना० स्त्री० पायकाशूण्य, अर्थात् पायनेव  
आदि गु० सुचाल ।  
पायस० ना० पु० खीर ।

- पाय० ना० पु० साट आदि का पैर, पारसी शब्द है ।
- पाट० ना० पु० नद्यादि का परला तीर ।
- पाटख० ना० पु० परीषद, जाचनेहारा, परत ।
- पाटखी० गु० परीषद, परतनेहारा ।
- पाटग० ना० पु० पारजाना ।
- पाटण० ना० पु० उपनाम के पीछे भोजन, मैदा ।
- पाटथ० ना० पु० अर्थात्, काव्ये यथा, पाटथ के स्वारथ क्रियो का स्वारथ भगवान् ।
- पाटथी० ना० स्त्री० पालथी ।
- पाटद० ना० पु० पाटा ।
- पाटदारिक० ना० पु० परस्त्रीगामी, व्यभिचारी ।
- पाटन० ना० पु० पाटथ ।
- पाटना० ना० पु० उपनाम का खोलना, स० क्रि० निवेदना, गिराना, पालना ।
- पाटल० ना० पु० पोषाविशेष ।
- पाटलौकिक० पु० जा परलोक का है ।
- पाटल्ल० ना० पु० परल्ल, परमामा ।
- पाटस० ना० पु० लोहवा आकारक पथर विशेष, जिसमें बुद्धलोग लोहा एक प्रकार का करते हैं ।
- पाटसपीपल० ना० पु० वृक्षविशेष ।
- पाटसाल० ना० पु० अगला वा पिदला वर्ष, यह शब्द फारसी का है ।
- पाटसी० ना० स्त्री० पारसिक देशकी भाषा, ना० पु० वा उम देश के निवासी, जाते विशेष ।
- पाटसीक० ना० पु० पारसी, थोका ।
- पाटा० ना० पु० पाटद, धातु विशेष ।
- पाटायल० ना० पु० पुराण आदिका सत्त्व पूर्वक पाठ, पूर्णता ।
- पाटावत० ना० पु० बतूर, अवात ।
- पाटावार० ना० पु० नदी के दाहिने तट, समुद्र ।
- पाटि० ना० स्त्री० पाट, जगन रूपिणी ।
- पारिजात० ना० पु० कल्याण, कमल, हर-विहार ।
- पारिजाती० ना० स्त्री० तेजपल ।
- पारितोषिक० गु० भिस से समुद्र हो, इनाम
- पारिभ्रमक० } ना० पु० वृद्ध औषधि ।
- पारिभय० }
- पारिभाषिक० गु० शास्त्र में संगमता के लिये सजा मानली है ।
- पारिपद० ना० पु० सहचर, देसवैया ।
- पारिप्रदा० ना० पु० श्रीमहादेवकी ।
- पारिहार्य० ना० पु० वृद्ध ।
- पारी० ना० स्त्री० शुद्धी भेली, बारी पन्ती ।
- पार्थिव० ना० पु० श्रीशिवजी, उद्भिद खोर् राना, मृत्तिका से निर्मित ।
- पार्वण० ना० पु० पर्व में आद विशेष ।
- पार्वती० ना० स्त्री० श्रीभवानी, हिमालय जाना ।
- पार्श्व० ना० पु० बाया वा दाहिना पानर, अन्य० पाण, सर्पिण ।
- पार्श्ववर्ती० ना० पु० निवृत्त ।
- पाल० ना० पु० नाव दौड़ने के लिये टांसे बर्तुड़, बस्तु, छाग तम्बू, घास वा पानका पत्तं जिसमें अवादि पचाते हैं, सिरकी की बनी बस्तु विशेष ।
- पालक० ना० पु० साग विशेष, पाठनेहारा ।
- पालकजूही० ना० स्त्री० ओषधि, वृक्ष विशेष
- पालकता० ना० स्त्री० पालना, पालने का काम ।
- पालनी० ना० स्त्री० शिकिका, डोली विशेष ।
- पालक्य० ना० पु० पालनका साग ।
- पालन० ना० पु० पोषण, पच, रक्षा, परवारिण ।
- पालना० ना० पु० दिखाना, स० क्रि० पालन करण ।
- पालर० ना० पु० वृद्धी चोपी वा शास्ता ।



पाला०ना० पु० शीत, जाड़ा, कोहर, हिम ।  
 पालागन० ना० पु० पावछूना, प्रणाम ।  
 पालाश० ना० पु० टाह का वृक्ष, गु० हरित ।  
 पालि० ना० स्त्री० मागधी, प्राकृत भाषा जिस  
 को स्याम आदि देशके पवित्रत सीखते हैं ।  
 पालिक० ना० पु० पालक, छाट ।  
 पालिकोण० ना० पु० परिधि वा कोण ।  
 पालित० गु० पाला गया, रक्षित ।  
 पालिन्द्री० ना० पु० गामा, गुमा, पोरा ।  
 पाली० ना० स्त्री० बगाल देशम तोलने आदि  
 का यंत्र, जिस स्थान म पली लड़ते हैं ।  
 पाल्य० ना० पु० पालने के योग्य ।  
 पावक० ना० पु० अग्नि, वसुध ।  
 पावडा० ना० पु० पावडा ।  
 पावन० ना० पु० पाक, पवित्र, जल ।  
 पावना० स० कि० पाना ।  
 पावरी० ना० स्त्री० रड़ाउ ।  
 पावस० ना० स्त्री० वर्षातु, बरसात ।  
 पाश० ना० पु० पासा, पास ।  
 पाशा० ना० पु० पासा ।  
 पाशुभ्र० ना० पु० सारी, लेन ।  
 पापल० ना० पु० पापाणभेद ।  
 पापण्ड० ना० पु० वेदविरुद्ध, अतिदुःखा,  
 कपट वा कपटी ।  
 पापण्डता० ना० स्त्री० अपविदा, कपट ।  
 पापण्डी० गु० कपटी, वेदविरुद्धी, दुःखी ।  
 पापाण० ना० पु० पत्थर ।  
 पास० अव्य० सधीप, निरु, ना० पु० पारा ।  
 पासपति० ना० पु० वरुण देव ।  
 पासी० ना० स्त्री० फासी, ना० पु० वरुणदेव,  
 नीचजाति विशेष, फासी डालने द्वारा ।  
 पाहन० ना० पु० पत्थर ।  
 पाहनरुमि० ना० पु० एक कीड़ा होता है, जो  
 पत्थर में अपना घर बनाता है ।  
 पाहू० ना० पु० चौकीदार, पहूँचा ।

पाहि० अव्य० दयाप्रादना, प्रादि, रक्षारो ।  
 पाही० ना० स्त्री० आनगर में खेती वा आनगर  
 की आसामी, अव्य० पास ।  
 पाहुन० ना० पु०  
 पाहुना० ना० पु० } अनिधि, महिमान ।  
 पाहुनी० स्त्री० }  
 पिंड० गु० प्रिय, ना० पु० रसार्थ, श्रौतम ।  
 पिक० ना० पु० कारिल, कौयल ।  
 पिकप्रिय० ना० पु० आम्रवृक्ष, आम ।  
 पिकप्रयनी० } गु० निसखी वा सूर पिकके  
 पिकथेनी० } समा हो ।  
 पिकवल्लभ० ना० पु० आमवृक्ष ।  
 पिघलना० अ० क्रि० पिघला, गलना ।  
 पिघलाना० स० क्रि० पिघलाना, गलाना ।  
 पिगल० ना० पु० छद शास्त्रना नाम, नाग वि-  
 शेष, योला, काच, गु० वर्ष विशेष ।  
 पिगला० ना० स्त्री० श्वात विशेष जो दही पुट  
 में गसिरा के प्रशारित होती है ।  
 पिगरा० ना० पु० पालना, द्विडोला ।  
 पिचरुना० अ० कि० दवा, निड्डना, सिम-  
 टा ।  
 पिचकारना० स० क्रि० दवा, समेटना,  
 वोरना ।  
 पिचकारी० ना० स्त्री० पचूरा, पदमकला, जिस  
 में रगादि भरके छोड़ते हैं ।  
 पिचपिचा० गु० मिलपिला, टीला ।  
 पिचिका० } ना० पु० पिचारी ।  
 पिचुका० }  
 पियुमन्द० ना० पु० नीबूना वृक्ष ।  
 पिङ्गलन० ना० पु० किसलना, रिसलना ।  
 पिङ्गलना० अ० क्रि० हटना, किसलना ।  
 पिङ्गला० गु० पिङ्गाई वा पीङ्गा ।  
 पिङ्गलाना० स० कि० पीङ्गे करना वा पीङ्ग  
 करना ।  
 पिङ्गाडा० ना० पु० } पीङ्गा, पीङ्गास्थान ।  
 पिङ्गाडी० स्त्री० }

विद्याही० ना० स्त्री० पंडि के पिर वाने की  
रत्ना परवान, पंडि ।

विद्वान० ना० स्त्री० पंडिचा ।

विद्वाने० पु० जो हुये, पंडिचाने भये ।

विद्वुत० अन्व० पंडि, उपरात ना० पु० परवा  
विद्वाना ।

विद्वेत० ना० पु० परवा विद्वाना ।

विद्वौरा० ना० पु० चहर, दुपग ।

विद्वीरी० ना० स्त्री० क्षाग विद्वीरा ।

विंजर० } ना० पु० पही आदि रत्नेका पर  
विंजरा० } जो काठ या लाहादि का बनना है ।

विंजल० ना० पु० तीतर, पही ।

विंजूपा० ना० पु० बानका मेल ।

विट० ना० पु० नहकुव ।

विटना० अ० क्रि० मारसाना ।

विटारा० ना० पु० कपडा आदि रराने का  
दन्ना जो तृपादि का होता है ।

विटारिया० } ना० स्त्री० क्षोग विगारा ।  
विटारी० }

विड० ना० पु० तन, देह, गोलवस्तु, आद का  
गोलाकार अन्न, जो चानलादि के मृत्क हेतु  
देते हैं, सेन, सेन, गाव ।

विडफला० ना० स्त्री० बडई तोमरी ।

विडाली० ना० स्त्री० पंली ।

विडा० ना० पु० पिएडा, टुकडा, मेनफल ।

विडारा० ना० पु० लुग्रा, चाखाफ ।

विडाराव० ना० पु० मेनफल ।

विडालुका० ना० पु० पिएडालू ।

विडालू० ना० पु० फलविशेष, ओषधि जड ।

विडी० ना० स्त्री० महादेवजी क लिंगका ऊपरी  
भाग, पिएडली, बालू से बनाई हुई, क्षोगि वेदी ।

विडीमुस्त० ना० पु० नागरमोषा ।

विडुक० ना० पु० धूप ।

पिएडोल० ना० पु० माटी विशेष, पोतना ।

पिएयाक० ना० पु० पंला, खली ।

पितर० ना० पु० पूर्वज, पितृ ।

पितरार्ह० ना० स्त्री० पितृ के तीणि पांडा के  
सम्बन्धी, पीडलका मुर्ता ।

पितरी० ना० पु० माता, पिता ।

पितरीला० ना० पु० पितृ पूजने का पात्र ।

पितराना० अ० क्रि० पितरार्ह से विगटना ।

पिता० ना० पु० जनक, बाप ।

पितामह० ना० पु० ब्रह्मा, पिता का पिता,  
दादा, आजा ।

पितामही० ना० स्त्री० पितारी माता, दादी ।

पितिया० ना० पु० चाचा, बापका भाई ।

पितु० ना० पु० पिता, बाप ।

पितृ० ना० पु० पिता, देवता, पुरुषा ।

पितृघातक० ना० पु० जो पुत्र पिता का बंदी  
होने ।

पितृपति० ना० पु० धर्मराज ।

पितृपक्ष० ना० पु० आदिनन मातका कृष्णपक्ष,  
बनागत ।

पितृव्य० ना० पु० नदावचा, पिता का  
भाई ।

पितृमृण० ना० पु० पिताका श्मशु ।

पित्त० ना० पु० शरीरकी धातु विशेष, सकरा ।

पित्तलोह ना० पु० पीतल ।

पित्ता० ना० पु० शरीर का भीतरी क्षीय भित्त में  
पित्त रहता है, क्रोध, बलेजा, जहरा ।

पित्तिनी० ना० स्त्री० शालपर्णी ।

पित्तपापडा० ना० पु० औषधि, पीथाविशेष ।

पिधान० ना० पु० आभूषादन, टनना, पोसाक ।

पिन० ना० पु० शरंगि, राप्द ।

पिनकी० ना० स्त्री० पीनकवाला ।

पिनपिनाना० अ० क्रि० टकोरना, टनटनाना ।

पिनहाभा० अ० क्रि० परिहाना ।

पिनाक० ना० पु० श्रीमहादेवजी का धनुष,  
बाजा विशेष ।

पिनाकी० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।

पिन्ना० ना० पु० पीना खली ।

पिन्नी० ना० स्त्री० चावल आदि का लहू ।

पिपासा० ना० स्त्री० प्यास, तृषा ।  
 पिपासित० यु० प्यासा, तपित ।  
 पिपील० ना० स्त्री० चींटी, रामायणे यथा,  
 निमि पिपील चह सागर बाहा ।  
 पिपीलक० ना० पु० चींटा ।  
 पिपीलिका० } ना० स्त्री० चींटी ।  
 पिपीलिका० }  
 पिप्पल० ना० पु० पीपल वृक्ष ।  
 पिप्पली० ना० स्त्री० पीपली ।  
 पीय० ना० पु० मिय, प्रीतम, रमाभी, पनि ।  
 पियाना० स० वि० पिलाना ।  
 विदार० ना० पु० प्यार, लाड, डुलार ।  
 वियारा० यु० प्यारा, लाडला, डुलारा ।  
 पियाल० ना० पु० चिरीजी, धान वा बोदी की  
 घास ।  
 पियासी० ना० स्त्री० मछली विशेष, तपि-  
 त स्त्री ।  
 पिरकी० ना० स्त्री० पुड़िया ।  
 पिराना० अ० कि० दुखना, दर्द होना ।  
 विरोना० स० कि० यचना, सामना, छेदना ।  
 पिलई० ना० स्त्री० तापतिष्ठी ।  
 पिलचना० अ० वि० विपटना, लिपटना ।  
 पिलना० स० वि० धावाकरना, घुसडना, अ०  
 वि० पिना ।  
 पिलपिला० यु० विपविपा, टीला, नम्र ।  
 पिलपिलाना० स० कि० टीलाकरना, नम्र कर-  
 वाना ।  
 पिलपिलाहट० ना० स्त्री० कोमलता, टीलापन ।  
 पिलार्ह० ना० स्त्री० पीने के बदले देना वा  
 पीने का काम ।  
 पिलाना० स० कि० पानकरना, घुमेडवाना ।  
 पिलुथा० ना० पु० पिल्लू, कीट ।  
 पिल्ला० ना० पु० कुत्ते वा बच्चा ।  
 पिल्ली० ना० स्त्री० कुत्ते की बच्ची ।  
 पिल्लू० ना० पु० कीट विशेष ।  
 पिनाच० ना० पु० प्रेतविंग, भूत ।

पिशाचग्रस्त० यु० मृत को पिशाच लगा है ।  
 पिशाची० ना० स्त्री० प्रतिनी, पिशाचकी पत्नी ।  
 पिशितोदन० ना० स्त्री० केशर ।  
 पिशुन० यु० दुष्ट, कठोर, घुपल ।  
 पिशुनता० ना० स्त्री० दम्पता, कठोरता, घु-  
 पली ।  
 पिसाई० ना० स्त्री० पीसने का काम या पीसा ।  
 पिसान० ना० पु० आग, चून ।  
 पिसाना० स० कि० पिसवाना, बुखवाना ।  
 पिसू० ना० पु० निश्च, छोटा जन्तु विशेष ।  
 पी० यु० पिय, ना० पु० स्वामी, प्रीतम ।  
 पीक० ना० स्त्री० पान के रसयुक्त थूक ।  
 पीच० ना० स्त्री० माड़ ।  
 पीचू० ना० पु० फल विशेष ।  
 पीछू० ना० स्त्री० माड़ ।  
 पीछा० ना० पु० पिछला भाग, पिछाही पटना ।  
 पीछे० अन्त्य० पश्चान्, पिदान ।  
 पीटना० स० कि० वृटना, मारना ।  
 पीठ० ना० पु० पृष्ठ, देहका पिछला भाग, आ-  
 सा विशेष ।  
 पीठसार० ना० पु० अचोल ।  
 पीठा० ना० पु० भोजन विशेष ।  
 पीठी० ना० स्त्री० धोई और पीठीई रस की  
 दाल, पीठ ।  
 पीठीता० ना० पु० पचम पृष्ठ ।  
 पीड़० ना० स्त्री० दुःख, वेदन, दया ।  
 पीड़क० यु० पीड़कारक ।  
 पीड़ना० अ० कि० पीड़ित होना, स० कि०  
 दख देना ।  
 पीड़ा० ना० स्त्री० दुःख, वेदन, दर्द ।  
 पीड़ाकर० यु० पीडाकारक ।  
 पीड़ित० यु० दुःखित, केशित, रोजीदह ।  
 पीड़ा० ना० पु० पदम, मविषा ।  
 पीड़ाबन्ध० ना० पु० पुस्तके की आदि का सं-  
 भावर विंग, दोहाचद् ।  
 पीड़ी० ना० स्त्री० दैत्यपीड़ा, वेराकी बरन्गी ।

पीत० गु० पीला, जा० स्त्री० प्रीति, कुसुम, ना० पु०  
 मलय चन्दन, पियावासा ।  
 पीतक० ना० पु० सुवर्ण, सोना ।  
 पीतद्रुमा० ना० स्त्री० दाम्बुली ।  
 पीतपुष्पा० ना० स्त्री० ककरोड़ी, सिरादा ।  
 पीतपुष्पिका० ना० स्त्री० सहदेवी ।  
 पीतफेनु० ना० पु० शिवा ।  
 पीतम० गु० श्रियतम, भिन, प्यारा ।  
 पीतरङ्ग० ना० पु० पदमाक ।  
 पीतरस० ना० पु० हल्दी ।  
 पीतल० ना० पु० भातु विशेष ।  
 पीतला० गु० पीतलका ।  
 पीतसार० ना० पु० मलयचन्दन ।  
 पीता० ना० स्त्री० हल्दी, जूही ।  
 पीताम्बर० ना० पु० रेशमी, पीलावस्त्र, श्रीरामचन्द्र  
 श्री, श्रीकृष्णचन्द्रजी ।  
 पीन० यु० मोटा, स्थूल, पुष्ट, भारी ।  
 पीनक० ना० स्त्री० अफीम की चीज ।  
 पीनना० स० कि० रुई के अवयवों को पृथक्  
 पृथक् करना ।  
 पीनपयोधर० ना० पु० भारीस्तन, कठोर  
 कुच ।  
 पीनस० ना० पु० नाकमारोग विशेष, ना० स्त्री०  
 पालकी विशेष, नार, विशेष ।  
 पीना० स० कि० छुड़कना, पानकरना, ना० पु०  
 सली ।  
 पीपल० ना० पु० वृक्ष विशेष ।  
 पीपला० ना० पु० सद्गरी नोक, वा श्वाणिक  
 गुण ।  
 पीपलामूल० ना० पु० पियली का मूल ।  
 पीपलि० ना० स्त्री० पिपली, पीपरी ।  
 पीपा० ना० पु० मयादि रत्न के लिये बाछा  
 वस्त्र विशेष ।  
 पीष० ना० स्त्री० मान, राद ।  
 पीषियाना० स० कि० पकना ।  
 पीषियाहट० ना० स्त्री० पकाव, पकन ।

पीयूष० ना० पु० पेउस, अमृत ।  
 पीर० ना० स्त्री० पीडा, दर्द, दुःख ।  
 पीरा० गु० पीडा ।  
 पीराई० ना० पु० ढोल बनानेहारा ।  
 पीलपणिका० ना० स्त्री० सरहरी ।  
 पीलाम० ना० पु० रेशमी वस्त्र विशेष ।  
 पीली० ना० स्त्री० मोहर, सुवर्ण, सुद्रा ।  
 पीलीभीत० ना० पु० बांसपेरी के उत्तर नगर  
 विशेष ।  
 पीलु० } ना० पु० वृक्ष विशेष ।  
 पीलु० }  
 पीवरु० यु० मोटा, भारी, स्थूल ।  
 पीसना० स० कि० आटाकरना, किचकिचाना,  
 ना० पु० पीसने का अज ।  
 पीहर० ना० पु० स्त्री की सहराल, मैका ।  
 पीं० ना० पु० नर, मनुष्य, पुरुष ।  
 पींलिंग० ना० पु० पुरुषका चिह्न ।  
 पींशली० ना० स्त्री० पतुरिया, बैश्या ।  
 पींस० ना० पु० मनुष्य, पुरुष, नर ।  
 पींसघन० ना० पु० सस्तार विशेष ।  
 पींस्य० ना० पु० पुन्यूल ।  
 पीकार० ना० स्त्री० गोदाहि, हाक ।  
 पीकायना० स० कि० गहराना, टेरना, हांकना  
 रनी, बुलाना ।  
 पीकराज० ना० पु० मणि विशेष ।  
 पींग० ना० पु० समूह, कुण, पूरा ।  
 पींगव० ना० पु० श्रेष्ठ, बड़ा, उत्तम ।  
 पींगफल० ना० पु० पूरा, सपारी ।  
 पीचकारा० } ना० पु० भीति लीपने के लिये  
 पीचारा० } गीली मिट्टी ।  
 पीच्छ० ना० स्त्री० पूंछ, हुम ।  
 पीच्छक० ना० पु० भेड़ी ।  
 पीच्छल० यु० पूंछनाला जिसके पूंछहो ।  
 पीच्छलतारा० ना० पु० केतु, इमदारसितारा ।  
 पीच्छवेया० ना० पु० सोननेहारा ।  
 पीजधाना० स० कि० पूनाकरना ।

पुजाना० स० क्रि० भरना, भराना, पूराकरना,  
 पूना कराना ।  
 पुजापा० ता० पु० पूजा की सामग्री ।  
 पुजारो० } पु० पूजा करने द्वारा ।  
 पुजाम० }  
 पुज० ना० पु० समूह, दर, गज ।  
 पुत्र० ता० पु० पत्नी, दोना, मिलाप, बुलाव ।  
 पुत्री० } ना० स्त्री० गन्ती स्त्राइ ।  
 पुत्रली० }  
 पुटी० ना० पु० पत्ता का दोना, अजली ।  
 पुट्टा० ना० पु० पशु आदि का चूतड़ ।  
 पुष्पा० ना० पु० भारी वा बड़ी पुरिया ।  
 पुष्टिया० ता० स्त्री० पत्तों की वा कागज की दानी  
 जिस में कुछ आपशि इत्यादि बाधत है ।  
 पुष्टी० ता० स्त्री० साल जिसस डाल मद्धत है ।  
 पुण्डरीक० ता० पु० कमल विशेष, आगारा,  
 बाण, सिंह ।  
 पुण्डरीकाक्ष० ता० पु० श्रोत्रचक्र, तारायण ।  
 पुण्ड्रक० ना० पु० ऊल गन्ना ।  
 पुण्ड्रक० ना० पु० सौ विशेष सज्ञा विशेष ।  
 पुण्य० ना० पु० सृष्टकर्म, कीर्त, पवित्रदा ।  
 पुण्यग्राम० ता० पु० पूनानगर, पुण्यके समूह ।  
 पुण्यग्रामीय० गु० पू के सम्बन्धी ।  
 पुण्यजन० ता० पु० निराचर, राक्षस, रात्रिचरारा  
 त्रिचर त्रिरीनिकामज, यातुता पुण्यजनो  
 श्रनोयानुरावती, यमर ।  
 पुण्यभूमि० ता० स्त्री० आष्य सत्त दश ।  
 पुण्ययोपिता० ना० स्त्री० वश्या पतुरिया ।  
 पुण्यवान् ना० पु० सृष्टी धर्मावा ।  
 पुण्यार्ह० ता० स्त्री० सृष्टकर्म, जा पूरे किया  
 है, गु० पुण्यामा, दाता ।  
 पुण्यामा० गु० दाना, सृष्टी, धर्मावा ।  
 पुतला० ना० पु० कृप वा काष्ठ वा भालु वा मृ  
 त्तिका की बनी हुई मूर्ति ।

पुतली० ता० स्त्री० आलका तारा, काष्ठादि नि-  
 मित मूर्ति, प्रतिमा ।  
 पुताई० ता० स्त्री० पीतने वा काम वा पलाय  
 पुत्तलिका० ना० स्त्री० पुतली ।  
 पुत्र० ना० पु० पुत्र, लड़का, बेटा ।  
 पुत्रक० ता० पु० दाना, उगवित, पाषा ।  
 पुत्रजोषी० ना० स्त्री० जीवापति, पतिनिया ।  
 पुत्रिका० ना० स्त्री० क या, बगी, पुतली ।  
 पुत्री० ता० स्त्री० क या, बगी, आलका तारा ।  
 पुन० अर्थ० फेर, फिरि बहुरि ।  
 पुन पुन० अर्थ० फेर फेर, पुनि पुनि ।  
 पुनराप० ना० पु० दूसरीवार ।  
 पुनरात्म० ता० पु० दूसरीवार आत्मभरना ।  
 पुनश्चि० ता० स्त्री० पुन क या, दुबारा, फिर  
 से कहना ।  
 पुनस्तथान० ता० पु० फिरसे उठना ।  
 पुनर्जन्म० ता० पु० दूसरी जन्म, द्वितीयजन्म ।  
 पुनर्नवा० ना० पु० मौवा विशेष ।  
 पुनर्नव० ता० पु० गल, नापून, नई ।  
 पुनर्वसु० ता० पु० सातवा नक्षत्र ।  
 पुनि० अर्थ० फिर, पुनि ।  
 पुनिपुनि० अर्थ० पुन पुन ।  
 पुनीत० गु० आमल, पात्र पाक ।  
 पुमान् ता० पु० गर, पुरुष, मनुज ।  
 पुर० ता० पु० नगर वा ग्राम य विशेष ।  
 पुरइन० ता० स्त्री० कमल बलि ।  
 पुर सर० ता० पु० अग्रगामा पशुना ।  
 पुरट्ट० ना० पु० सुतथ, स्वयं, साना ।  
 पुरनिया० गु० प्राचान, बृद्धा, मगध देश म  
 तगर ।  
 पुरन्दर० ता० पु० इन्द्र ।  
 पुरवासी० गु० तगर का वसा हारा ।  
 पुरविल० } ना० पु० पिछला वा अगला  
 पुरविला० } जन्म ।  
 पुरवार० } ता० स्त्री० पूना पना ।  
 पुरवैया० }

पुरश्चरण० ना० पु० जपपौत्रादिके पूर्णताकाग्रण ।  
 पुरस्कृष्टार० ना० पु० सत्कार, आदर, सम्मान ।  
 पुरा० ना० पु० ब्रह्मगान, पदिले ।  
 पुराट्टत० ना० पु० पिछले ज मका कर्म ।  
 पुराण० ना० पु० इतिहास विद्या जो व्याप्त  
 रक्षित है ।  
 पुराणपुरुष० ना० पु० श्री भगवान् ।  
 पुरातन० } ना० पु० प्राचीन, पिछला, पुराण ।  
 पुरातम० }  
 पुराना० स० कि० भरेदना, तिचवाना, कदवाना,  
 गु० काशीन, प्राचीन, जीर्ण ।  
 पुरारि० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।  
 पुरी० ना० स्त्री० नगर, गाव वा अयोप्यादि सात  
 नगर विशेष ।  
 पुरीय० ना० पु० मूल, विद्, मूत्र ।  
 पुरुषा० ना० पु० बृहदा, पुरु ।  
 पुरुषे० ना० पु० अनेके पुरुष ।  
 पुरुष० ना० पु० मनुष्य, नर ।  
 पुरुषत्व० ना० पु० मनुष्यता, मनुष्य ।  
 पुरुषा० ना० पु० प्राचीन वा पिछले साम ।  
 पुरुषाघम० गु० जो मनुष्यों में विदितहाने ।  
 पुरुषान० ना० पु० पैदिमा, शास्त्र, पुस्तकें, पुरुष  
 वा बहुवचन ।  
 पुरुषार्थ० ना० पु० पुरुषार्थ ।  
 पुरुषोत्तम० ना० पु० मनुष्यों में जो श्रेष्ठ वा  
 प्रधान श्रीविष्णु, नारायण ।  
 पुरुहूत० ना० पु० इन्द्र ।  
 पुरैन० ना० स्त्री० कमलबलि ।  
 पुरोडास० ना० पु० यज्ञका इत्य, रोगी, यज्ञ  
 का शेष भाग ।  
 पुरोध्या० } ना० पु० कुलशुक्र, वंश पूर्य या  
 पुरोहित० } अथ ।  
 पुरोहितानी० ना० स्त्री० पुरोहित श्री स्त्री ।  
 पुर्या० ना० पु० पुरातन, बृहदा ।  
 पुर्य० ना० स्त्री० छल, ब्रह्मना ।  
 पुर्या० ना० स्त्री० पूर्वज पवन ।

पुर्यारि० ना० स्त्री० पूर्वकी पवन ।  
 पुर्याना० स० कि० भरवाना, पूरा करना ।  
 पुष्या० ना० स्त्री० पुरारि ।  
 पुर्सा० ना० पु० चारहायकी माप ।  
 पुष्य० ना० पु० संतु, बाध यह शब्द फारसी,  
 का है ।  
 पुलक० } ना० स्त्री० रोमाच, आनन्द  
 पुलकायति० } वा शोक में मग्न होना ।  
 पुलकावली० }  
 पुलकित० गु० हवित, रोमांचित ।  
 पुलपुला० गु० पिलपिला ।  
 पुलपुलाना० अ० कि० डरना, पिलपिलाना ।  
 पुलपुलाहट० ना० स्त्री० डर, भय, नरमी ।  
 पुलस्ति० ना० पु० मुनिविशेष, रावणके पितामह ।  
 पुलहाना० स० कि० मनाना, राक्षिकरना ।  
 पुलाक० ना० पु० } मासोदन भोजन विशेष  
 पुलाय० } यह शब्द फारसी का है ।  
 पुलिक० ना० पु० मुख्य साध ।  
 पुलिन० ना० पु० बालका टांग, नदी में कि  
 नारा ।  
 पुलिन्द० ना० पु० ग्लान्ध भेद ।  
 पुलिन्दा० ना० पु० बस्ता, फारसी शब्द है ।  
 पुलोमजा० ना० स्त्री० इन्द्राणा, देवराणी, पुलो  
 मनाराचीन्द्राणी इत्यमर ।  
 पुल्लिङ्ग० ना० पु० पुल्लिङ्ग, नर, सुझर ।  
 पुवाल० ना० पु० पिछाल ।  
 पुष्कर० ना० पु० आभारा, जल, कमल, तालाव,  
 हाथी की सड़, तीर्थ विशेष ।  
 पुष्करजटा० } ना० पु० पुष्करमूल ।  
 पुष्कराह्व० }  
 पुष्कराह्वय० ना० पु० सारस ।  
 पुष्करिणा० ना० स्त्री० जलाशय, तलेया ।  
 पुष्कल० ना० पु० भरतनी का पुत्र, पूर्ण, अष्ट ।  
 पुष्ट० गु० पाला, स्थूल, पोना, कड़ा ।

पुष्टि० } शु० पुष्टि कर्त्ता श्रीगणेश वा भानु  
पुष्टक० } नादि ।

पुष्टता० ना० स्त्री० मोहार्द्र, स्थूलता, पायदारी ।

पुष्टि० ना० स्त्री० शुद्धता, पुत्रनीचा, चन्द्रपला  
निराशवा नाम ।

पुष्टिरु० शु० पुष्टक ।

पुष्प० ना० पु० फूल, प्रसून ।

पुष्पक० ना० पु० कुन्वरका निमार ।

पुष्पगन्धा० ना० स्त्री० जूही ।

पुष्पचाप० ना० पु० वामदेव, मदन ।

पुष्पजम्बुक० ना० पु० केनरी ।

पुष्पधनु० ना० पु० कामदेव, मनोज ।

पुष्पनीलक० ना० पु० सभालू ।

पुष्पपात्र० ना० पु० फूलवा आधार ।

पुष्पफला० ना० स्त्री० कुम्हड़ा ।

पुष्पमृत्यु० ना० पु० नककुल ।

पुष्परस० ना० पु० फूल जिस म मधु व अमृत  
निकलता है, फूलभरस ।

पुष्पवती० ना० स्त्री० रजरत्ना, कपड़ा स ।

पुष्पसंवरी० ना० स्त्री० इतिहारी ।

पुष्पाचलि० ना० स्त्री० फूलों से भरी हुई  
अचली ।

पुष्पित० शु० फूल, आ वृद्ध ।

पुष्पी० ना० स्त्री० ऊगा ।

पुष्पेश० ना० पु० माधवा ।

पुष्प्य० ना० पु० आठवा तन्त्र ।

पुस्तक० ना० पु० म य, पाथा, कितान ।

पुहमि० } ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।  
पुहमी० }

पुत्रा० ना० पु० मीठापरी ।

पुं० ना० पु० पादने का शब्द ।

पुंगी० ना० स्त्री० बासली विशेष ।

पुण्ड्र० ना० स्त्री० पुच्छ, डुम ।

पुण्ड्रना० स० क्रि० पछना पछना ।

पुण्डर० शु० पुण्डवान् पुण्डराका ।

पूजी० ना० स्त्री० मूल, धन, सम्पत्ति ।

पूग० ना० पु० समूह, सुपारी वा सुपारिका वृक्ष ।

पूगीफल० सुपारी ।

पूछ० ना० पु० खोज ।

पूछना० स० क्रि० खोजना, प्रश्नकरना ।

पूछी० ना० स्त्री० मन्थीकी पृष्ठ ।

पूजक० शु० पूजा करनेहार ।

पूजन० ना० पु० पूजा वा व्यापार ।

पूजना० स० क्रि० अर्चना, भजना, ध्याना, अ०  
क्रि० भराता, पूरा होता ।

पूजनीय० } शु० पूजा के योग्य, माय ।

पूजमान् } शु० पूजा के योग्य, माय ।

पूजा० ना० स्त्री० अर्चा, आदर, सत्कार ।

पूजित० शु० जो पूजा गया ।

पूज्य० } शु० पूजा के योग्य, माय ।

पूज्यमान् } शु० पूजा के योग्य, माय ।

पूठ० ना० पु० पुष्टा ।

पूठा० ना० पु० पुस्तक वा गन्ता ।

पूड़ा० ना० पु० बेसनका पकना विशेष ।

पूडी० ना० स्त्री० पकान निराश ।

पूरी० ना० स्त्री० रस् जा वातने के लिये व  
गति है ।

पूत० ना० पु० पुत्र, पवित्र ।

पूतना० ना० स्त्री० हृद्, निराशरा निराश ।

पूतला० ना० पु० पुरला ।

पूतरी० } ना० स्त्री० पुतला ।

पूतली० }

पूति० ना० स्त्री० जमावद, पवित्र, छोटा,  
अवयव ।

पूतिचर्चिका० ना० स्त्री० बयरी, पीथा ।

पूतिकला० ना० स्त्री० वाकुची ।

पूमियो० ना० स्त्री० पूर्णमानी ।

पूनी० ना० स्त्री० मोनी, पूषा ।

पूनौ० ना० स्त्री० पूर्णमासी ।

पूप० ना० पु० पुआ ।

पूप्य० ना० पु० राद, माज ।

पूर० शु० सब, कुछ भरा, प्रसाद, धारा ।  
 पूरक० शु० पूरा करनेवाला, पूरा होने वाला,  
 पु० निर्नीता, स्वाम विशेष को निरुद्ध किया स  
 लिखते हैं ।  
 पूरण० शु० भरा, पूरा, सब, सारा ।  
 पूरणा० } ना० स्त्री० चंद्रमा की कला  
 पूरणाभृता० } विशेष ।  
 पूरना० स० कि० भरना, पूरा करना,  
 फैलाना ।  
 पूर्य० ना० पु० पूर्व ।  
 पूरा० शु० पूरण, सब, समस्त ।  
 पूराई० ना० स्त्री० भरना, पूरणता ।  
 पूरिया० ना० स्त्री० रागिनी विशेष ।  
 पूरी० ना० स्त्री० पवनान विशेष ।  
 पूर्य० शु० पूरण, समस्त, सारा, भरा ।  
 पूर्यज्या० ना० स्त्री० पूरातोदा, स्त्री रैता ।  
 पूर्णता० ना० स्त्री० पूरणता, पूराई ।  
 पूरणपात्र० ना० पु० पान विशेष, निम म २५६  
 सृष्टिका चावल भरके स्वरूप करे, शु० पान  
 भरपूर, पूरापात्र ।  
 पूर्णभूत० ना० पु० समस्त बीतगया ।  
 पूर्णमासी० ना० स्त्री० शुभपक्ष की समाप्ति की  
 तिथि, पूनी ।  
 पूर्णाहुति० ना० स्त्री० होम पूरा होने पर जो  
 आहुति दते हैं उसका नाम ।  
 पूर्णमा० ना० स्त्री० पूर्णमासी ।  
 पूर्व० शु० पहला, पिछला, अगला, ना० पु०  
 जिस दिशा में सूर्योदय होता है ।  
 पूर्वक० शु० विस्तार युक्त, भराहुआ, साध ।  
 पूर्वकृत० ना० पु० पहले का काम ।  
 पूर्वकृतकर्मा० ना० पु० पूर्व जन्मके किये कर्म ।  
 पूर्वज० ना० पु० अग्रज, बड़ामार्ग ।  
 पूर्वयाम० ना० पु० पहला पहर ।  
 पूर्वदेश० ना० पु० मध्य देश के पूर्व का देश ।  
 वा निम्न स्थान से पूर्व का देश ।

पूर्वपक्ष० ना० पु० पहला पक्ष चरचा करने में  
 जो स्थापन वा निषेध किया जाता है ।  
 पूर्वघत्० अन्व० उत्तरी अक्षर, बैसाही ।  
 पूर्वजायु० ना० पु० पूर्वका पवन, पुरवा ।  
 पूर्वा० ना० पु० पुरवा, छोटा गाव ।  
 पूर्वाफालगुणी० ना० स्त्री० ग्यारहवा नक्षत्र ।  
 पूर्वाभाद्रपद० ना० पु० छप्पत्तवा नक्षत्र ।  
 पूर्वाभिमुख० ना० पु० पूर्व दिशाके सामने ।  
 पूर्वाद्ध० शु० पहिला, आधा ।  
 पूर्वापाद० ना० स्त्री० बीमवा नक्षत्र ।  
 पूर्वाह्न० ना० पु० दिनका पहला भाग ।  
 पूर्वी० शु० पूर्व देशीय ना० स्त्री० रागिनीविशेष ।  
 पूर्वोक्त० शु० प्रथम कहा है, प्रथम कहाहुआ ।  
 पूर्वा० ना० पु० } तृण वा अन्न की छोटी २  
 पूर्वा० ना० स्त्री० } गठी ।  
 पूरण० ना० पु० सूर्य ।  
 पूपा० ना० स्त्री० सूनन, चंद्रकला विशेष, स्वास  
 विशेष, जो दक्षिण कान में प्रकाशित है ।  
 पूस० ना० पु० पाप मास, दशा मास ।  
 पूच्छा० ना० पु० निष्णाना, प्रश्न ।  
 पृतना० ना० स्त्री० सैन्य, फौज, दल ।  
 पृथक् अन्व० भिन्न, अलग ।  
 पृथकरण० ना० पु० अलग २ करना ।  
 पृथक्छन्द० ना० पु० अलगरा ।  
 पृथक्छन्द० ना० पु० भिन्नता, छुदाई ।  
 पृथक्पूर्वा० ना० स्त्री० छुदाई ।  
 पृथग् अन्व० पृथक् ।  
 पृथग्पृथग् अन्व० अलग १ छुदा २ ।  
 पृथ्वी० ना० स्त्री० पृथिवी ।  
 पृथ्वीनाथ० ना० पु० राजा, बादशाह ।  
 पृथिवी० ना० स्त्री० धरती, जमीन ।  
 पृथु० शु० बड़ा, भारी, ना० पु० राजा विशेष ।  
 पृथुरोमा० ना० स्त्री० मज्जला ।  
 पृथुल० शु० बड़ा, भारी, मोटा, स्थूल ।  
 पृथुशिरा० ना० पु० स्थीनाश्रु ।



पृथुदर० ना० पु० भेदा, भेडा ।  
 पृथ्याक० ना० पु० पुनर्नवा ।  
 पृथ्वी० ना० स्त्री० धरती ।  
 पृथ्वीका० ना० स्त्री० कलौनी ।

पृथ्वीनाथ० }  
 पृथ्वीपति० } ना० पु० राजा, बादशाह ।  
 पृथ्वीपाल० }

पृष्ट० पु० पूजागया ।  
 पृष्ट० ना० पु० पीठ, पिछलाभाग, पत्रका एक  
 थोर ।

पृष्ठा० ना० पु० पित्तपापडा, पूझनेवाला ।  
 पृष्ठास्थि० ना० स्त्री० पीठकी हड्डी ।  
 पृष्ठि० ना० पु० पीठ, पृष्ट ।

पृष्ठिस्थोरी० ना० पु० घोड़ा ।  
 पृई० ना० स्त्री० पियारी ।  
 पृंग० ना० पु० भूलेका हिलाना, पत्नी विशेष ।

पृंगना० अ० कि० भूलेको नदार कर भूलना ।  
 पृंठ० ना० स्त्री० हाट, मण्डी, बाजार ।  
 पृंङ्ग० ना० स्त्री० डग, चलावा, टीला, वृक्ष ।

पृंदा० ना० पु० } तला, निचानका खण्ड ।  
 पृंदी० ना० स्त्री० }

पृंक्षक० पु० यथोचित दूत भेजनेवाला ।  
 पृंखना० ना० पु० स्वांग, खिलौना, स्त्रियों का  
 छल, स० कि० देसना ।

पृंखनिया० ना० पु० स्वामी ।  
 पृंखित० पु० भेजागया ।  
 पृंच० ना० पु० मरोरी, घुमाव, फेर ।

पृंचक० } ना० पु० उलूक ।  
 पृंचा० }

पृंष्ट० ना० पु० उदर, गर्भ ।  
 पृंष्टक० ना० पु० पिटावा ।  
 पृंष्टार्थी० }  
 पृंष्टार्थ० } पु० पेटपाल, खाऊ, भक्षक ।

पृंष्टिया० ना० स्त्री० प्रतिदिनका खाना, सीधा ।  
 पृंष्टी० ना० स्त्री० कमरबन्द, पेटका बन्धन, भिं  
 टारी, सन्दूक, छाती ।

पृंष्टू० पु० पेटार्थी ।  
 पृंष्टीखा० ना० पु० पेटचकने का रोग ।  
 पृंष्टा० ना० पु० लौकी वा कद्दू, वा कुम्हवा  
 विशेष ।

पृंङ्ग० ना० पु० वृक्ष, घूटा ।  
 पृंङ्गा० ना० पु० मिठारि विशेष, लोई ।  
 पृंङ्गी० ना० स्त्री० पेटका सुपारी, नील आदि  
 का वृक्ष जो एकवार जो फटगया, और पेटका  
 स्तम्भ ।

पृंङ्गु० ना० पु० नाभिके नीचे का अंग ।  
 पृंम० ना० पु० प्रेम ।  
 पृंमी० ना० पु० प्रेमी ।

पृंये० ना० पु० पानी, दूध, शरबत, पु० जो  
 पीने के योग्य हो ।  
 पृंयेना० स० कि० प्रेरणा, कोल्हू में कुचल के  
 रस वा तेल निकालना ।

पृंरु० ना० पु० कुक्कुट विशेष ।  
 पृंरुङ्ग० } ना० पु० आड़, कौड़ी, कोच ।  
 पृंरुङ्गा० }

पृंरुलन० ना० पु० पालन, भूलना ।  
 पृंरुलना० स० कि० टेलना, रेलना, टांसना,  
 दबाना, भरना, पुसेइना, अ० कि० पिलजाना,  
 घुसइजाना ।

पृंरुला० ना० पु० आड़, दोष, उपद्रव, टेकना ।  
 पृंरुलू० ना० पु० दकैल, पुसेइ ।

पृंरुङ्गी० ना० स्त्री० पीतरंग विशेष ।  
 पृंरुङ्गी० ना० स्त्री० पीपूष जो दूध फटे को  
 पकाते हैं ।

पृंरुण० ना० पु० दलेती, किसी वस्तु को दो  
 पत्थरों से घिसना ।  
 पृंरुणीय० पु० पीसने के योग्य ।

पृंरु० ना० पु० पय, दूध, जल, ना० स्त्री०  
 दोष, अग्य० ऊपर, तीर्था, परन्तु ।  
 पृंरुना० स० कि० पछोइना, फटकना, बदलना ।  
 पृंरुचा० ना० पु० बदला, पलटा ।

पृंरुजनी० ना० स्त्री० पांवका गहना विशेष ।

पैङ्ग० } ना० पु० मार्ग, बाट वा बाट देखना ।  
 पैङ्गा० }  
 पैतालीस० श० चालीस और पाच, ४५ ।  
 पैतीस० श० तीस और पाच, ३५ ।  
 पैसठ० श० साठ और पाच, ६५ ।  
 पैकड़ा० ना० पु० } बेड़ी, पैर का गढ़ना  
 पैकड़ी० ना० स्त्री } निराप ।  
 पैगू० ना० पु० मन्ना देशका प्रदेश ।  
 पैज० ना० स्त्री० प्रतिज्ञा, प्रण, परामर्श ।  
 पैठ० ना० पु० हुण्डी की पतिया, पहुँच, प्रवेश ।  
 पैठना० अ० कि० पुसना, भस्मा ।  
 पैठालना० स० कि० प्रवेश करना, पुसना ।  
 पैङ्ग० ना० पु० पात्रों का विद् ।  
 पैङ्गा० ना० पु० ऊँची सडाऊँ ।  
 पैङ्गी० ना० स्त्री० सीढ़ी ।  
 पैतला० श० उपला, किल्ला ।  
 पैतृक० श० नपीदा, पूरे जनों से जो धन वा  
 व्यवहार प्राप्त हो ।  
 पैदल० अ० परों से ना० पु० पियदे ।  
 पैन० ना० पु० नाली, पोखरा ।  
 पैना० ना० पु० पशु टाकने का अक्ष श० तीन,  
 तीरथ, तेन ।  
 पैनाना० स० कि० तीरथ करना, कादिदेना ।  
 पैनाला० ना० पु० परनाला, घुदरी ।  
 पैया० ना० पु० पहिया, चक्र ।  
 पैर० ना० पु० पाद, सलियाप, श० जो पैरने  
 के योग्य है ।  
 पैरना० अ० वि० हेलना, निरना, पवरना ।  
 पैरार्ह० ना० स्त्री० पैरने का काम ।  
 पैराक० ना० पु० पैरोहारा ।  
 पैराकी० ना० स्त्री० पैरोहारी ।  
 पैराना० स० वि० तैरना, हिलाना ।  
 पैराथ० श० जो पैरने के योग्य है ।  
 पैरी० ना० स्त्री० पावक गढ़ना विशेष ।  
 पैखा० ना० पु० अथ मापने का पाद, डलना ।  
 पैश्वर्य० ना० पु० दृष्टता, विशुद्धता, शुचता ।

पैसा० ना० पु० तावे का मुद्रा ।  
 पैसार० ना० पु० पेट, पहुँच, प्रवेश ।  
 पैसारना० स० कि० पैशाना, पहुँचाना, प्रवेश  
 कराना, घुसेडना ।  
 पोआ० ना० पु० पोआ, दूधपनिहारा बच्चा, साप  
 का बच्चा थोड़े दिनों का ।  
 पोआना० स० कि० धमागा ।  
 पोईस० अ० अरे, बचो, पोइश शुद्धे, पारसी  
 शब्द है ।  
 पौफना० अ० कि० पेट चलना ।  
 पौका० ना० पु० बीजा विशेष ।  
 पौना० ना० पु० उल्लू, मूर्ख, ढीला निरोप, पौर,  
 श० छूटा ।  
 पौगी० ना० स्त्री० गली, छूली, खोलली, मूर्खी।  
 पौछन० ना० पु० भाङना, गदङ ।  
 पौछना० स० कि० भाङना, रण्ड करना ।  
 पोखना० स० वि० पालना ।  
 पोखर० } ना० पु० जल, तड़ाग, तालाव ।  
 पोखरा० }  
 पोच० श० नीच, लग, यह शब्द पारसीवादी ।  
 पोट० ना० स्त्री० मोप, पाठ, गठरी ।  
 पोटला० ना० पु० बड़ी गठरी ।  
 पोटली० ना० स्त्री० गठरी, साँड़ विशेष ।  
 पोटा० ना० पु० गेदा, पलक, पसी का भाँक,  
 थोँक, रंग श० पोटेहारा ।  
 पोदा० श० बड़ा, बलवान, ठोस, दृढ़ ।  
 पोदार्ह० ना० स्त्री० बड़ापन, ठोसार्ह, दृढ़ता ।  
 पोत० ना० स्त्री० काचवी सस्य शरिया, नाव,  
 रथभात, प्रवृत्ति, बधा, कपड़ा ।  
 पोयकी० ना० स्त्री० पोय, बेलि ।  
 पोतडा० ना० पु० छटे लकड़ों का निर्धाना,  
 गदरी ।  
 पोतड़ी० ना० स्त्री० रेतरी, हल ।  
 पोतना० स० वि० सीपना, परपोतना, ना० पु०  
 विशर, मृत्तिका विशेष ।

पोता० ना० पु० पुनरा पुन, पोत्र ।  
 पोती० ना० स्त्री० पुत्रकी कन्या, पौत्री ।  
 पोथा० ना० पु० बड़ा ग्रथ ।  
 पोथी० ना० स्त्री० छोग ग्रथ ।  
 पोदना० ना० पु० पत्नी विशेष ।  
 पोदनी० ना० स्त्री० पोदना की स्त्री ।  
 पोना० स० क्रि० पकाना, पिराना, ना० पु०  
 भरना ।

पोनी० ना० स्त्री० पूर्णा ।  
 पोपनी० ना० पु० बाना विशेष ।  
 पोपला० शु० दातों से रहित ।  
 पोमचा० ना० पु० जय नगरी, वस्त्र विशेष ।  
 पोय० ना० स्त्री० साग विशेष, बेलि विशेष ।  
 पोया० ना० पु० साग विशेष ।  
 पोरो० ना० पु० दो गाठियों का मध्यभाग ।  
 पोरी० ना० स्त्री० बासकीगाठ, टोंटा ।  
 पोला० शु० छूटा, कोमल, खोलसा, खाली ।  
 पोली० ना० स्त्री० छूटी, खोलली, अनजड़ी ।  
 पोपक० ना० पु० पालनेहारा ।  
 पोपण० ना० पु० पालन, पालना ।  
 पोपना० स० क्रि० पालना ।  
 पोपित० शु० पालागया, पालाहुआ ।  
 पोप्य० शु० पालने क योग्य ।  
 पोप्यपुत्र० ना० पु० ले पालक ।  
 पोप्यवर्ग० ना० पु० कुटुम्ब ।  
 पोपना० स० क्रि० पालना ।  
 पोसे० क्रि० पाले ।  
 पोह० ना० स्त्री० पार, तड़का, भोर ।  
 पोहना० स० क्रि० पिराना, पेड़ा बनाना ।  
 पोत्री० ना० पु० छहर, गहर ।  
 पौ० ना० पु० जल पिलाने की शाला, पासेमेका  
 एका ।  
 पौड़ा० ना० पु० मोटा इन्डु विशेष गन्ना ।  
 पौरि० ना० स्त्री० ब्यादी ।  
 पौरिया० ना० पु० डयादीवान, डारपाल ।  
 पौड़ना० स० क्रि० लेटना, सोना ।

पौड़ा० शु० पोदा, लैगाहुआ ।  
 पौड़ाई० ना० स्त्री० पोदाई, लैयास ।  
 पौरक० ना० पु० ऊल, गन्ना, पीड़ा ।  
 पौत्तलिक० ना० पु० मूर्तिपूजक ।  
 पौत्र० ना० पु० पुनरा पुन, पोता ।  
 पौत्री० ना० स्त्री० पुत्रका कन्या, पोती ।  
 पौधा० ना० पु० बृष्ट जा तरुण हैं, विरवा एक  
 वर्षका ।  
 पौन० शु० तीन चौथाई, नू ना० पु० पान ।  
 पौनचक्र ना० पु० बैदरा, प्रथमग्रथि ।  
 पौना० ना० पु० भरना, पौनका पहाड़ा ।  
 पौने० शु० चतुर्थांश रहित ।  
 पौर० ना० स्त्री० फाटक, द्वार ।  
 पौराणिक० ना० पु० श्रीनिदव्यास, पतञ्जी, पु-  
 राण का कता ।  
 पौरि० ना० स्त्री० पौर ।  
 पौरप० ना० पु० मनुष्यत्व, बल ।  
 पौरोहित्य० ना० स्त्री० पुरोहितताई ।  
 पौलस्त्य० ना० पु० रावण, कुबेर ।  
 पौलिया० ना० स्त्री० पीग्या, छोग खड़ाक ।  
 पौली० ना० स्त्री० पाणि, खड़ाक ।  
 पौलोमी० ना० स्त्री० इन्द्राणी, देवराणी ।  
 पौवा० ना० पु० सेर का चाथा भाग ।  
 पौष० ना० पु० नवमास, पून ।  
 पौष्कराह्वय० ना० पु० पुष्करमूल ।  
 पौष्टिक० शु० पुष्टिकरक ।  
 पौसर० ना० पु० निम्न ।  
 पौह० ना० पु० नव निम्नने का स्थान ।  
 पौहदा० ना० पु० पीडा ।  
 पौहा० ना० पु० नार बलादि पशु ।  
 प्यार० ना० पु० प्रेम, दुःख ।  
 प्यारा० शु० मित्र, दुलारा, लादिवा ।  
 प्यारी० ना० स्त्री० मित्रा, दुलारी, लादिवा ।  
 प्याधना० स० क्रि० पिलाना ।  
 प्यास० ना० स्त्री० तृषा ।

व्यासा० } पु० कृष्णान्त, तृपित ।  
 व्यासी० }  
 व्यौसार० } ना० पु० पठिका घर स्त्री० तद्यु  
 व्यौहर० } राल ।  
 प्र० अयं निस शब्दा आदि म यह मिलितहा  
 उसका अर्थ रभा ओं रभा अधिग्रह ।  
 प्रक० } गु० प्रक, पमित ।  
 प्रकटित० }  
 प्रकम्पन० ना० पु० आधी भक्कव ।  
 प्रकर० ना० पु० समूह, गराह ।  
 प्रकरण० ना० पु० एक विषयका प्रस्ताव, पाठम  
 विशान स्थान अध्याय, समूह ।  
 प्रकाम० ना० पु० सिद्धि विशेष ।  
 प्रकार० ना० पु० रीति तरह विशेषण, भेद,  
 सादर्य, लाल ।  
 प्रकारान्तर० गु० दूसरे प्रकार दूसरा प्रकार ।  
 प्रकाश० ना० पु० योति उजाला राशी गु०  
 प्रक ।  
 प्रकाशक० ना० पु० प्रकाशकर्ता ।  
 प्रकाशवान्० गु० प्रकाशयुत, प्रकाशिन रो  
 शन ।  
 प्रकाशित० गु० प्रकाश कियागया, रोशन ।  
 प्रकाश्य० गु० प्रकाशके योग्य ।  
 प्रकीर्ण० ना० पु० चोरी अध्याय गु० प्रकट  
 व्याप्त ।  
 प्रकीर्त्तन० ना० पु० कथा, भाषण ।  
 प्रकीर्त्तित० गु० कथित, भाषित ।  
 प्रकृत० ना० स्त्री० स्वभाव, गुण गु० जो क्याया  
 गया ।  
 प्रकृतार्थ० ना० पु० प्रकृतका प्री अर्थ ।  
 प्रकृति० ना० स्त्री० स्वभाव मूल, भाषा,  
 सत्त्व ।  
 प्रकृष्ट० गु० उत्तम, अथ, सुर्य अशुद्धा ।  
 प्रक्रम० ना० पु० चला, गमा, अवनारा ।  
 प्रक्रिया० ना० स्त्री० व्याकरण का प्रथम अक्षर,  
 साधनिका ।

प्रखर० ना० पु० मातर गु० तीरथ ।  
 प्रख्यात० गु० प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध, प्रसंग, आ  
 गदित ।  
 प्रगण० गु० एक, सापान् प्रयत्न, प्रकाश,  
 प्रसिद्ध ।  
 प्रगटना० अ० कि० प्रकटहोना ।  
 प्रगल्भ० गु० शाय म विनया अथवा योग्य,  
 प्रतिष्ठान्, सामर्थ्य ।  
 प्रगाढ० ना० पु० पडा, तपस्या, गु० बहुत  
 गाढा, कठोर ।  
 प्रग्रह० ना० पु० किरवाली ।  
 प्रघट्ट० गु० प्रगट ।  
 प्रघटी० ना० स्त्री० सुवर्ण वारीय के लिये साजा ।  
 प्रघण्ड० गु० बलान् तन्त्र, अनसहा, भयङ्कर,  
 काशी ।  
 प्रप्रहित० गु० जा चलनाह, जारी ।  
 प्रचार० ना० पु० विस्तार, पलाय, ज्वला, प्र-  
 काश जला होना, प्रकटता ।  
 प्रचारक० गु० प्रचार करनेहारा ।  
 प्रचारना० स० कि० चलाता, नाद देता उम  
 हाना ।  
 प्रचारित० गु० निरवारि चिन्मिधोर प्रकाशित ।  
 प्रचुर० गु० बहुत ।  
 प्रचता० ना० पु० वरथ देवता ।  
 प्रचोदित० गु० प्रेरित, जो आशा कियागया ।  
 प्रच्युत० ना० पु० चोर, लिफ्फा, गु० युद्ध,  
 आद्य दित ।  
 प्रजरण० ना० पु० चला, जलन ।  
 प्रारना० अ० कि० जलना, करना ।  
 प्रारित० गु० ज्वलित जलना भया ।  
 प्रजा० ना० स्त्री० सत्त्वान, सवक, राज्य के वाली  
 रीत ।  
 प्रजाता० ना० स्त्री० जननी, जन्मा ।  
 प्रजापति० ना० पु० राजा, प्रजा, देव, कुम्हार ।  
 प्रजारक० गु० जलाहारा ।  
 प्रजारण० ना० पु० जलावन, दहकाव ।

प्रजारना० स० क्रि० जलाना, दहकाना ।  
 प्रजाशन० शु० प्रजाभक्ष्य ।  
 प्रजेश० ना० पु० राजा, मन्त्रा, कुम्हार ।  
 प्रज्वलता० ना० स्त्री० ज्योति, उज्ज्वलता  
 और जलाव ।  
 प्रज्वलित० शु० ज्योतिष्मान्, उज्ज्वल, जला ।  
 प्रण० ना० पु० प्रतिज्ञा, दास ।  
 प्रणङ्कं क्रि० प्रणाम करो ।  
 प्रणत० शु० अतिदीन, अतिनय, शरणागत ।  
 प्रणति० ना० स्त्री० नमस्कार, प्रणाम ।  
 प्रणय० ना० स्त्री० प्रीति, प्रेम, मुक्ति, भरोसा,  
 अचनापन ।  
 प्रणव० ना० पु० अक्षर, भन्तरान, आद्याक्षर ।  
 प्रणवा० क्रि० प्रणाम करो ।  
 प्रणाम० पु० नमस्कार, सलाम ।  
 प्रणाथली० ना० स्त्री० नाली ।  
 प्रणिधान० ना० पु० मनोयोग, उद्योग ।  
 प्रणिपात० ना० पु० दण्डवत्, प्रणाम ।  
 प्रणी० गु० प्रण करनेहारा, मनचला ।  
 प्रतन० गु० पुराना, प्रन ।  
 प्रताप० ना० पु० ऐश्वर्य, तेज, सुरमापन ।  
 प्रतापवान् } शु० तेजवान्, तेजस्वी, तेज  
 प्रतापी } धारी ।  
 प्रतारक० ना० पु० ठग, चबरा, बचक ।  
 प्रतारण० } ना० गु० बंचा, ठग ।  
 प्रतारणा० }  
 प्रतारित० शु० ठगाया, बचन ।  
 प्रति० ना० स्त्री० नमल, अव्य० यह शब्द जिस  
 शब्द के मादि में होता है, उसका अभी कभी  
 केर कभी सते कभी एक एक ।  
 प्रतिउपकार० ना० पु० प्रत्युपकार, प्रीकार ।  
 प्रतिकार० ना० पु० बदला, पलटा ।  
 प्रतिकूल० शु० निरुद्ध, उच्छेद, प्रतिवन्द ।  
 प्रतिप्रह० ना० पु० दास, जो मन्त्रके दासके  
 वा ऐसा दास लेना, मन्त्रदे ।  
 प्रतिघत्त० ना० पु० गान्ध, वा ।

प्रतिच्छाया० ना० स्त्री० प्रतिबिम्बो-सदृश,  
 प्रति ।  
 प्रतिच्छाद० ना० स्त्री० प्रतिबिम्ब, छाया ।  
 प्रतिदान० ना० पु० धरोहर, करदेना ।  
 प्रतिदिन० अथ० दिन दिन ।  
 प्रतिधा० अथ० धार, वार, हरवार, हरदिवस ।  
 प्रतिनिधि० ना० स्त्री० सदरा, तदवतु रूप प्रतिभू,  
 पेशकार ।  
 प्रतिपत्० ना० स्त्री० परेवा, पक्षकी प्रथमतिथि ।  
 प्रतिपत्ति० ना० स्त्री० यश, ज्ञान ।  
 प्रतिपद्० ना० स्त्री० प्रतिपद्, परेवा ।  
 प्रतिनिहा० ना० स्त्री० गन्धपसारन ।  
 प्रतिपन्न० शु० जानागया, निधित ।  
 प्रतिपक्ष० ना० पु० { शत्रु, वेरी ।  
 प्रतिपक्षी० स्त्री० }  
 प्रतिपादन० ना० पु० गा, मुक्तायना ।  
 प्रतिपादित० शु० जिसका प्रतिपादन होगया ।  
 प्रतिपाद्य० शु० बोध, वर्णन के योग्य ।  
 प्रतिपात० ना० पु० पालन, पोषण ।  
 प्रतिपातक० ना० पु० पाली करनेवाला ।  
 प्रतिपालन० ना० पु० प्रतिपाल, पोषण ।  
 प्रतिपातना० स० क्रि० पाली करना, पोषण ।  
 प्रतिप्रसव० ना० पु० जो बान और बान से  
 सिद्ध हो ।  
 प्रतिफल० ना० पु० सम्पूर्ण फल, इनजाम ।  
 प्रतिघ्न्य० ना० पु० क्षम का विनाशक ।  
 प्रतिघ्न्यक० ना० पु० बाधक, रोकनेवाला,  
 अघातनाय ।  
 प्रतिभट्ट० ना० पु० सगल योग, मुख्यकार ।  
 प्रतिभा० ना० स्त्री० बुद्धि, ज्योति, समझ ।  
 प्रतिभाग० ना० पु० अश, अशपर, हरदिसह ।  
 प्रतिभू० ना० पु० मन्त्री, जामिन, दरमियानी ।  
 प्रतिमा० ना० स्त्री० मूर्ति, तस्वीर, पुतला ।  
 प्रतिमास० ना० पु० महीने, ३ मान,  
 हरमाह ।  
 प्रतिमूर० ना० पु० परछाई, छाया, प्रतिबिम्ब ।

प्रतिमूर्त्ति० ना० स्त्री० एक प्रतिमा के तुल्य  
द्वितीय ।

प्रतियोग० ना० पु० शत्रुता, विरोध, वैर ।

प्रतियोगी० पु० शत्रु, वैरी, विरोधी ।

प्रतिरूप० ना० पु० सदृश, चित्र, मूर्ति ।

प्रतिरोध० ना० पु० घटकावर, रोक ।

प्रतिरोधक० ना० पु० चीर, रोकनेवाला ।

प्रतिलोम० पु० बाया, आधा, उलटा, दृष्ट,  
नीच ।

प्रतिवचन० ना० पु० उत्तरपीछे वचन, वचनपर ।

प्रतिवर्ष० ना० पु० वर्ष वर्ष, हरसाल ।

प्रतिवाक्य० ना० पु० प्रति वचन, पु० जो  
उत्तर देने के योग्य है ।

प्रतिवाद० ना० पु० विवाद, भगडा, विरोध ।

प्रतिवादी० ना० पु० विवादी, विरोधी,  
प्रतर्फी ।

प्रतिवास० ना० पु० पड़ोस ।

प्रतिवासी० ना० पु० पड़ोसी ।

प्रतिविम्ब० ना० पु० जो दर्पणादि दस्तने में  
रूप देत पड़ता है, अन्त, प्रतिरूप ।

प्रतिशब्द० ना० पु० शब्दपीछे, शब्दके साथही  
शब्द ।

प्रतिशब्दक० ना० पु० भाई शब्द, जो शब्द  
के साथही शब्दादि से शब्द छुनार देता है ।

प्रतिषिद्ध० ना० पु० विषिद्ध, वर्जित ।

प्रतिषेध० ना० पु० निषेध, ना० स्त्री० मनाई ।

प्रतिष्ठा० ना० स्त्री० मूर्ति स्थापन, स्तूपानि,  
कीर्ति, अन्न, बहार ।

प्रतिष्ठित० पु० स्थापित, कीर्तिमान्, यशा,  
स्तूपानिपुत्र, स्तूपनदार ।

प्रतिहत० पु० जो विरासभया, रोकानया, भ्रष्ट,  
नष्ट ।

प्रतिहार० ना० पु० दौड़ातान, खेनदार ।

प्रतिहिसक० पु० धानक का घनी, कीभावर ।

प्रतिज्ञा० ना० स्त्री० वचन, प्रण, अति, अश्रय  
का वा स्वीकार ।

प्रतीक० ना० पु० ध्वजव, अङ्क ।

प्रतीकार० ना० पु० पलटा, बदला ।

प्रतीची० ना० स्त्री० पश्चिम दिशा, पद्मा ।

प्रतीत० पु० प्रतिष्ठित, प्रकट ।

प्रतीति० ना० स्त्री० विश्वास, अन्धा, भरोसा,  
सम्झ ।

प्रतीक्षा० ना० स्त्री० और या मार्ग देना,  
प्रत्याशा ।

प्रतीली० ना० स्त्री० मार्ग, बाट, राह ।

प्रतोप० ना० पु० सतोप, भीरज, सवर ।

प्रत्न० पु० पुराण ।

प्रत्यर्क० ना० पु० उगा ।

प्रत्यय० ना० पु० विज्ञास, सम्झ, चिह्न,  
निशान ।

प्रत्यचाय० ना० पु० वियोग ।

प्रत्यह० अय० प्रतिदिन, हररोस ।

प्रत्यक्ष० पु० प्रसिद्ध, साक्षात्, दृष्टि गौचर,  
देतो के योग्य, अव्य० चागे ।

प्रत्याशा० ना० स्त्री० आसरा, भरोसा, उम्मेद ।

प्रत्याहार० ना० पु० खल्य भोजन ।

प्रत्युत्तर० ना० पु० उद्धारका उत्तर, जवाब ।

प्रत्युत्थान० ना० पु० उठकरके जो समान ।

प्रत्युपकार० ना० पु० उपकार के पछटे उपकार,  
पलटादेना, इनाम ।

प्रत्येक० पु० एका एक, एक, एक, हरएक ।

प्रथम० पु० पहला, आदि, अन्त, मुख्य ।

प्रथमा० ना० स्त्री० पहली ।

प्रथमान्त० पु० या नाम वा सर्व नाम प्रथम  
विभक्ति में हो ।

प्रथा० ना० स्त्री० स्तूपानि, यश, कीर्ति ।

प्रथित० पु० यशान्त, प्रसिद्ध, कीर्तिमान् ।

प्रद० पु० दाताका चिह्न शब्दात् में, दाता ।

प्रदक्षिण्य० { ना० स्त्री० पूर्यकी दाहिनेकर उस  
प्रदक्षिणा } के चारोंओर फिरकर निशासन  
पर आना, फिरना ।

प्रदीप० ना० पु० दीपक, दिया ।

प्रदेश० ना० पु० भूमिखण्ड, देश, स्थान, पर  
 दरा, छाटी वितरित । ।  
 प्रदोष० ना० पु० सूर्यास्त स द्वोरण्ड, शिवव्रत  
 विराप, दाप ।  
 प्रदोषा० ना० स्त्री० रात, रात्रि ।  
 प्रद्युम्न० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजीनापुत्र, काम  
 देव ।  
 प्रद्योतन० ना० पु० सूर्य ।  
 प्रधान० ना० पु० मुरयमत्री, श्रेष्ठ, गु० पहला ।  
 प्रधानता० ना० स्त्री० मुरयता, श्रेष्ठता, वज्रा  
 रत ।  
 प्रधाननगर० ना० पु० प्रसिद्ध नगर, बडा  
 नगर ।  
 प्रनाम० ना० पु० प्रणाम ।  
 प्रनाशी० गु० नारानेवाला, भियनेवाला ।  
 प्रपच० ना० पु० छल, निरोध, ढेर, धोखा, चूक  
 ससार, बातों का विस्तार ।  
 प्रपचित० गु० जो विस्तारयुक्त वर्षाहुआ, जा  
 छला गया ।  
 प्रपंची० ना० पु० प्रपचकर्ता पाती, छली ।  
 प्रपितामह० ना० पु० पितामह का पिता,  
 परदादा ।  
 प्रपितामही० ना० स्त्री० पितामह की माता  
 परदादी ।  
 प्रपुत्रा० ना० पु० पवार पोधा ।  
 प्रपौत्र० ना० पु० पौनका पुत्र, परपाता ।  
 प्रपौत्री० ना० स्त्री० पौनकी पुत्री, परपाती ।  
 प्रफुला० ना० पु० फूल बलि ।  
 प्रफुल्ल० गु० विकसित, फूला, खरा ।  
 प्रफुल्लित० गु० विकसित, फूलभया, आनन्द,  
 मन, खुरा ।  
 प्रपञ्च० ना० पु० प्रम स वाक्य की ननाव  
 रचना विराप, कथा, कृतात, दावस्त ।  
 प्रपञ्चाधीन० गु० प्रपञ्च क आधीन ।  
 प्रपल० गु० बलवान्, पहलप न् ।  
 प्रपलता० ना० स्त्री० बलाकारी, बरवस ।

प्रबोध० ना० पु० ज्ञान उपदेश, सुर्त, उजगता,  
 तसही, सवर ।  
 प्रबोधक० गु० प्रबाध करने हारा ।  
 प्रबद्ध० ना० पु० नीव बृच ।  
 प्रबजन० ना० पु० पवन, गु० विनारान ।  
 प्रभव० ना० पु० उदति, उपत्त, उदतिगरी ।  
 प्रभा० ना० स्त्री० शाभा, काति, दीप्ति,  
 चमक ।  
 प्रभाकर० ना० पु० सूर्य, च द्रमा ।  
 प्रभाव० ना० पु० माहात्म्य, सामर्थ्य, फल ।  
 प्रभात० ना० पु० प्रात काल, भार, तडका ।  
 प्रभाती० ना० स्त्री० रागिनी विशेष ।  
 प्रभायती० ना० स्त्री० पातालगगा ।  
 प्रभास० ना० पु० तीर्थ विशेष ।  
 प्रभिन्न० ना० पु० हाथी, ( प्रभिन्ने गनितामत्त  
 इत्यमर ) ।  
 प्रभु० ना० पु० नाथ, स्वामी, राजा, ईश्वर  
 प्रतिपालक, गुरु ।  
 प्रभुता० ना० स्त्री० } रायादि अधिकार, ध  
 प्रभुताई० ना० स्त्री० } नाबन्ता, स्वामित्व,  
 प्रभुत्व० ना० पु० } ईश्वरता ।  
 प्रभुतालय० ना० पु० नीतिगृह, कचहरी,  
 अदालत ।  
 प्रभृति० अर्थ० इयादि ।  
 प्रमदा० ना० स्त्री० सुलक्षणा स्त्री ।  
 प्रमदी० ना० स्त्री० कलिहारी ।  
 प्रमथा० } ना० स्त्री० हड शिवा ।  
 प्रमथ्या० }  
 प्रमथान० } ना० पु० श्रीमहादेवजी, यंधा  
 प्रमथाधि० } ( मृथुजय कृतिनासा विना  
 प्रमथाधिप० } की प्रमथाधिप इत्यमर ) ।  
 प्रमा० ना० स्त्री० यथार्थ का ज्ञान, अनुभव ।  
 प्रमाणा० ना० पु० निश्चय, का कारण साही,  
 अथि प्रयत्न, निश्चय, सत्ता, प्राप्ति ।  
 प्रमाणिक० गु० योग्य, निश्चयकारक, प्राप्ति  
 रूप प्रमाण क योग्य ।

प्रमातामह० ना० पु० मातामह का पिता,  
परनामा ।

प्रमातामही० ना० स्त्री० मातामहकी माता,  
परनामी ।

प्रमाद० ना० पु० मूढ, चूक, भ्रष्ट, अना  
बानी ।

प्रमादी० पु० अचत, अशोच, भुलङ्ग ।

प्रमीलिका० } ना० स्त्री० भीह, झुङ्गी ।  
प्रमीला० }

प्रमुखा० ना० पु० निशाचर विशेष, प्रधान ।

प्रमुदित० पु० हर्षित, आनन्दित ।

प्रमेह० ना० पु० वीर्यका रोग, क्षीपरोग ।

प्रमोद० ना० पु० हर्ष, आनन्द ।

प्रमोदित० पु० हर्षित, आनन्दित, खुश ।

प्रयन्त० अच्य० पर्यन्त ।

प्रयाग० ना० पु० तीर्थराम, इलाहाबाद ।

प्रयाण० ना० पु० धावा, गमन ।

प्रयान्ति० कि० पाता है ।

प्रयुक्त० पु० मिलाइआ, भराइया ।

प्रयोग० ना० पु० अनुष्ठान, दृष्टान्त, फल, उपाय,  
तद्विधि, प्रयोजन ।

प्रयोगी० पु० उपायी, चलानेवाला ।

प्रयोजक० ना० पु० प्ररक, उठाने हारा ।

प्रयोजन० ना० पु० कारण, तात्पर्य, गरज,  
मतलब ।

प्रयोजनी० पु० अचरन, मतलबी, मारजी ।

प्रयोज्य० गु० दुरु, ना० पु० सेरक, चेला ।

प्रलम्ब० ना० पु० प्रलम्बादर, लम्बा ।

प्रलम्बप्र० ना० पु० बलदा जी ।

प्रलय० ना० पु० फलपात, संहार, लूका ।

प्रलयकाल० ना० पु० नाशका समय ।

प्रलाप० ना० पु० अज्ञानता समय का भाव, नि-  
रर्थतावय ।

प्रलेप० ना० पु० शीपि आदिका लिपन ।

प्रलज्जना० ना० स्त्री० प्रताप, टगी, बोगी ।

प्रथर० ना० पु० इतान, परा, गौद, पु० बंध,  
बाद, थैठ, बहादुर ।

प्रथर्त्तक० ना० पु० प्रेरक, उठारोहारा ।

प्रथर्पण० ना० पु० पर्यवसिरोप ।

प्रवाल० ना० पु० मृगा ।

प्रवाल० ना० पु० विदेश, देशावर, परदेश ।

प्रवासा० ना० स्त्री० मधुगर्कटा ।

प्रवासी० गु० विदेशी, परदेशी ।

प्रवाह० ना० पु० नगीकी धारा, बहान, हल्य  
पवन ।

प्रविष्ट० पु० जा प्रवेश हुआ, घुमा, पैरा ।

प्रवीण० गु० निपुण, सूचतुर, स्थाना ।

प्रवीणता० ना० स्त्री० निपुणता, चतुराई, स्थान  
पन ।

प्रवृत्तकर्त्ता० पु० विश्वार्त्ता, मन्त्र, ननर ।

प्रवृत्ति० ना० स्त्री० धान, समाचार, धारा,  
हडा, किसी काम में लगना वा लगाना  
यत्न ।

प्रवेक० गु० प्रधान, सरदार ।

प्रवेणी० ना० स्त्री० वर्षी, केशपारा ।

प्रवेश० ना० पु० पैठ पहुच, प्रसाव ।

प्रशक्त० गु० लीन, लगाइया, भक्ति ।

प्रशर्त्तक० गु० स्तुतिकर्त्ता, बहाई करनहारा ।

प्रशस्तनीय० पु० प्रशाना क योग्य ।

प्रशस्ता० ना० स्त्री० स्तुति, बहाइ ।

प्रशमन० ना० पु० बध ।

प्रशस्त० गु० आनन्द, आभ्य, भला ।

प्रशस्ति० ना० स्त्री० स्तुति, बहाई, योग्य,  
धर्त्ता ।

प्रश्न० ना० पु० जिज्ञासा, सवाल पूछना ।

प्रश्नोत्तर० ना० पु० प्रश्न का उत्तर, सवाल  
जवाब ।

प्रथद० ना० पु० मृग, हरिण ।

प्रष्टा० ना० पु० पूछनेहारा ।

प्रसक्त० अच्य० सदा, गु० सजाना, प्रस



प्रसंग० ना० पु० प्रस्ताव, मेल, समग, सत्याग,  
सम्बन्ध, चर्चा, साथ, रय, वस्त्र ।  
प्रसन्न० गु० हर्षित, आनन्दित, दयालु, खुश ।  
प्रसन्नता० ता० स्त्री० प्रसाद, हर्ष, आनन्द,  
दृष्टा ।  
प्रसन्नित० गु० हर्षित, आनन्दित, दयालु, राजा ।  
प्रसमित० गु० रहित, हान, मिट्टा, दिन ।  
प्रसव० ना० पु० गर्भसे बालक वा निराला,  
जनाया, पदापरा, उपत्ति ।  
प्रसवत० क्रि० उपजते, जन्मते ।  
प्रसव्य० गु० बाया प्रतिपुत्र उपजने के योग्य ।  
प्रसाद० ना० पु० देवताओंकी वा सुकवी जूटन,  
दृष्टा, दात, भोजन ।  
प्रसादी० ता० स्त्री० जो कुछ दत्तताओं को  
चढ़ायामया, भोग, खाना ।  
प्रसारण० ना० पु० फैलान, पसरान, ग धपसा  
रण, धोरा ।  
प्रसादक० ना० पु० भागी वधुआ का राग ।  
प्रसारित० गु० निस्तारित, जा फलायागया ।  
प्रसिद्ध० गु० प्रकाशित, विख्यात, मशहूर ।  
प्रसिद्धता० ना० स्त्री० प्रकृता, सुख्याति, जहूर ।  
प्रसाद० क्रि० दयालुहो, दृष्टाफरो ।  
प्रसूत० ना० पु० जात, जन्मा, प्रसूति ।  
प्रसूति० ना० स्त्री० रा० विशेष, पानीबहने का  
रोग विशेष ।  
प्रसूतिज्ञा० { गु० स्त्री० जाना जन्मा, माता ।  
प्रसूता० }  
प्रसून० ना० पु० पुष्प, फूल फल ।  
प्रसूती० ता० स्त्री० प्रसूती ।  
प्रस्तर० ना० पु० पथर, पाषाण ।  
प्रस्तरमय० गु० पाषाणमय, पथरीला ।  
प्रस्ताव० ना० पु० अवसर, चर्चा ।  
प्रस्ताविक० गु० समयपर, सामयिक ।  
प्रस्तुत० गु० कथित, सिद्ध, स्तुति किया गया ।  
प्रस्थ० ना० पु० परिमात्र विशेष ।  
प्रस्थर० ना० पु० पथर ।

प्रस्थान० ना० पु० गमन, निदा, धाना करने  
होका गमन, पायतुरान, नकल भवान ।  
प्रस्थापित० गु० प्रेरित, भजा गया ।  
प्रस्थित० ना० स्त्री० कीर्ति, नेकनामी ।  
प्रस्फुटित० गु० विकसित ।  
प्रहर० ना० पु० पहर, याम, दिन वा रातक  
धाया भाग ।  
प्रहरण० ता० पु० अग्र, मारण ।  
प्रहस्त० ना० पु० राक्षस विशप ।  
प्रहार० ना० पु० चूट, ठोकर, मार ।  
प्रहारित० गु० मारागया वा माराहुआ ।  
प्रहारी० गु० मारोहारा ।  
प्रहन० ना० पु० विनय, प्रणाम ।  
प्रहेलिका० ता० स्त्री० पहली, दृष्टिदूट ।  
प्रहेष्ट० गु० सन्तुष्ट ।  
प्रहाद० ना० पु० भक्त विशेष ।  
प्रहादिनी० ता० स्त्री० इसपादी वृष्टी ।  
प्रहालन० ना० पु० धालाई ।  
प्रहालित० गु० जा धोयागया ।  
प्रहा० ना० स्त्री० सरस्वती, निर्मलजुष्टि ।  
प्रहातमा० गु० आमज्ञाना, आमभ्यनी ।  
प्राक्० अन्त्य० आम, पहल, पूर्व ।  
प्राकार० ता० पु० गढ़ ।  
प्राकृतकवि० ता० पु० मूरदासदि ।  
प्राकृतभाषा० ता० स्त्री० रक्षुतभाषा विरय ।  
प्राकृत० गु० पुराना ।  
प्रागल्भ्य० ना० पु० प्रभुत्व, दिग्ग, पमड ।  
प्राची० ना० स्त्री० पूर्व दिशा ।  
प्राचीन० गु० पुरान, कदला ।  
प्राचीना० ना० पु० पत्नी अन्ता ।  
प्राधिकारक० ना० पु० राजाकी आज्ञासे विचार  
करने के लिये स्तुति पुनर्, यापक ।  
प्राण० ना० पु० इतमव पु, जीव, शिवयप ।  
प्राणदा० ना० स्त्री० जीवदाता ।  
प्राणप्रतिष्ठा० ना० पु० मन्त्र से देवता से जन्म  
करा करना ।

फणपति० ना० पु० शपनी सपान राजा ।  
 फणा० ना० पु० फण ।  
 फणि० ना० पु० सांप वा उत्तरी मणि ।  
 फणिक० ना० पु० सांप ।  
 फणिज्जक० ना० पु० मरुथा, समन्वितपाषा ।  
 फणी० ना० पु० ऋषि; सांप ।  
 फणीन्द्र० } ना० पु० सपाना राजा, शपनी ।  
 फणीश० }  
 फदकन० अ० कि० दालयादिक उदना ।  
 फदफदाना० अ० कि० मलखानु, धीरे र  
 दाने प्रदना ।  
 फन० ना० पु० फण ।  
 फनगा० ना० पु० टिडा, प्रांतफोडा ।  
 फनफनाना० अ० कि० फण खोलना पुस-  
 कारना ।  
 फन्दा० ना० पु० कांशी, पंच, उलभात ।  
 फफला० ना० पु० फूलद्वया ।  
 फफूदी० ना० स्त्री० गीसापन के कारण से जो  
 सकेदी अक्षर आदि में लग जाती है, सफ्त ।  
 फफोला० ना० पु० फुलम, छाला ।  
 फच० ना० स्त्री० शोभा ।  
 फचकना० अ० कि० पनपना, डाल निकलना ।  
 फचता० ना० पु० योग्य, ठीक, जगत ।  
 फचती० ना० स्त्री० शोभा, किसीकी वच पहिने  
 देतकर कहना यह किस जानिमें है ।  
 फचन० ना० स्त्री० शोभा, धन ।  
 फचता० अ० कि० सोहना, धानना, समना ।  
 फचोला० अ० अभिन, समीला, शोभायमान ।  
 फर० ना० पु० फल, वीरकीगांसी, पला ।  
 फरकना० अ० कि० फड़कना ।  
 फरचा० ना० पु० मेघोंका फटना, किमला ।  
 फरचाना० अ० कि० व्यायकरना, आना देना ।  
 फरछा० पु० निर्मल, स्वच्छ, सरा ।  
 फरहाना० अ० कि० स्वच्छ वा निर्मल, कराना,  
 सराना ।

फरफन्द० ना० पु० झल, वपट, धोसा ।  
 फरफदिद्या० अ० उली, धूत, डग, कपथ ।  
 फरस० ना० पु० फरमा ।  
 फरसा० ना० पु० आवसा, बुल्हाका, तवर,  
 अथ विरोप ।  
 फरहरा० ना० पु० } पंगो, पठावा, गुं  
 फरहरी० ना० स्त्री० } अथमृता ।  
 फरहा० ना० पु० सोखला, फफला, निर्मनी ।  
 फरिया० ना० स्त्री० रिमों के ओढ़ने का परंत्र  
 विशेष, लड़कियों के पहने का वस्त्र विशेष ।  
 फरी० ना० स्त्री० दाल, शली फल समेत ।  
 फरीटा० ना० पु० वांस्तम टुकड़ा, ध्वजके हिलने  
 वा धोके की श्वातका जो शब्द होता है ।  
 फराना० अ० कि० हिलना वा उदना ।  
 फल० ना० पु० वृशादिका संस्य, पला मीनी,  
 कर्माका भोग, सन्तान, वाणके आगे का लोहा  
 तत्रादि ।  
 फलकना० अ० कि० फड़कना ।  
 फलचारि० ना० पु० अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष ।  
 फलजनक० ना० पु० जो फलजन्माये ।  
 फलताड़० ना० पु० ताड़का फल ।  
 फलुद० ना० पु० वृक्ष गुं फलक दाता ।  
 फलदाता० } गुं फल देनेहारा ।  
 फलदानि० }  
 फलना० अ० कि० फललाना भाग्यभावहोना ।  
 फलमूल० ना० पु० फूल की दपटी ।  
 फलराज० ना० पु० स्ववृक्ष, दशांशुल ।  
 फलवर्तुल० ना० पु० तरबून, हिंदवाना ।  
 फलचान्० अ० जो फल युक्त हो ।  
 फला० ना० पु० संयुक्ताक्षर, समरतर, गुं  
 फलित ।  
 फलांग० ना० स्त्री० कदन, संपन, देग, जूत ।  
 फलाशिन० ना० पु० तिरनी ।  
 फलाशु० ना० स्त्री० फलान ।  
 फलित० गुं फलाइया, फलों समेत ।

फलितार्थ० ना० पु० तात्पर्यार्थ, टीक अर्थ ।  
 फलिना० ना० पु० नियम ।  
 फलिया० ना० स्त्री० धर्मा, तुकमा ।  
 फली० ना० स्त्री० धर्मा, तुकमा, ना० पु० वृक्ष,  
 गु० स्त्री० फलित ।  
 फलीशु० ना० पु० पारमर्षीपुत्र ।  
 फलोदय० ना० पु० फलापत्ति, प्राप्त्यम, स्वर्ग  
 आद ।  
 फलोपम० ना० पु० सफ़द बेगन, श्वेत भाग्य ।  
 फसकट्ट० ना० स्त्री० वडर विशेष ।  
 फसकना० अ० रि० पन्ना, पून्ना ।  
 फसकाना० स० रि० पाङ्ग ताङ्ग, पाङ्गा ।  
 फसकाऊ० ना० पु० पाङ्ग तोड़ पाङ्ग ।  
 फसना० अ० रि० बभग उलझना, जालमें  
 गङ्गा, बन्ना में पङ्गा, रङ्गा, पद म  
 आग, बू में आग ।  
 फसफसा० गु० पिल्लिला अलग ।  
 फसफसाना० अ० रि० निषिरोता, डरना ।  
 फसवाना० स० रि० उलझना, अङ्गाना,  
 बङ्गाना, बदा रङ्गाना ।  
 फसाना० स० रि० बभाना, उलझाना, रङ्गाना,  
 अङ्गाना जाल में डानना, और बदीभाङ्गा में  
 रसनाग ।  
 फहरना० अ० रि० परीना ।  
 फहराना० अ० रि० परीना, उलझना, कूदना ।  
 फाक० ना० स्त्री० फलमा टुकड़ा ।  
 फाकना० स० रि० फस माङ्गा ।  
 फांकी० ना० स्त्री० फल, फकिवा, पूरपल ।  
 फाटना० स० रि० बाटना, विभाग करना ।  
 फाट० ना० पु० चाङ्ग, हिराद, निर्भग ।  
 फाद० ना० पु० पद, पदा ।  
 फादना० स० रि० लपटा, दूदजाग ।  
 फादा० ना० पु० फाद, पदा ।  
 फादी० ना० स्त्री० गनों का एक नाम ।

फांकट्ट० ना० पु० देद, घुह ।  
 फांस० ना० स्त्री० सूक्ष्म पाग ।  
 फासना० स० रि० वाधना, रोचना, वृद्धरगा,  
 जाल में ताग ।  
 फासा० ना० पु० डोका उक्ता ।  
 फासी० ना० स्त्री० पदी, पसरी, पद, कष्ट  
 कथा ।  
 फाग० ना० पु० गुलाल वा उग्रता डालना, वा  
 उड़ाना, होला का समय ।  
 फागुन० ना० पु० पागुन ।  
 फाटक० ना० पु० वडा डार, अङ्गार ।  
 फाटना० अ० रि० पन्ना ।  
 फाटवाना० स० रि० भभारता, भभोरता ।  
 फाटना० स० रि० चीरना पाना, तोड़ना,  
 मसकाना ।  
 फाडा० गु० चारहुथा ।  
 फाल० ना० स्त्री० हलके आगका लाहा, चौकडी  
 सुपारी का टुक, डग चौ ।  
 फालसा० ना० पु० पत्र वा वृक्ष विशेष ।  
 फालगुन० } ना० पु० पाउ मास, अड्डे ।  
 फागुन० }  
 फालगुनिका० ना० स्त्री० पयुः हाल ।  
 फाव० ना० पु० धलुआ रूख ।  
 फावडा० ना० प० मापी खोदो का अल, फती,  
 वडा आर चाडी उदा ।  
 फायडी० ना० स्त्री० चरगा डुरागा ।  
 फायना० अ० रि० साहना, आभादग ।  
 फाचित० गु० शाभिग ।  
 फावी० गु० शाभतमर्द, शाभा दा ।  
 फाहा० ना० पु० मरहम से भीगाक्या कपड़ेका  
 दाटा टुकड़ा तीसी ।  
 फिकारना० स० रि० शिर ताग करना ।  
 फिट० ना० पु० फिटका ।  
 फिटकार० ना० स्त्री० विचार खाना ।  
 फिटकारी० ना० स्त्री० पन्ना ।

फिटकारना० स० कि० फिटकारना, फिटाना,  
शापना ।

फिटाना० स० कि० फिटाना, फिटाना ।

फिर० अ० पुनि, पुन, फेर ।

फिरकघाहनी० ना० स्त्री० सेनगाड़ी ।

फिरकी० ना० स्त्री० बंगी, भौंरा, चकई, फिराई  
की वस्तु जिसको उड़के फिराते हैं ।

फिरजाना० अ० कि० पलटना, फिराग ।

फिरव० ना० पु० वस्तु जो अप्रसन्नता से  
लौगदी ।

फिरता० गु० रमता, फेरों का पैसा ।

फिरतारहना० अ० कि० रमना, फेर कराना,  
भटकना रहना ।

फिराना० स० कि० धमाना, भटकाना, रमाना ।

फिरावा० ना० पु० धमान, फेर ।

फिरा० अ० कि० धमाना, लौटना, भटकना,  
रमाना ।

फिरा० ना० स्त्री० फिरकी ।

फिरि० ना० स्त्री० पिपडली ।

फिसफिसा० गु० डपोक, फसकता ।

फिसफिसाना० अ० कि० भयभीत होना  
बताना ।

फिसलन० ना० स्त्री० सिसलन, विदलना ।

फिसलना० अ० कि० सिसलना, विदलना,  
रपटपड़ना ।

फिसलाना० स० कि० सिसलाना, विदलाना,  
चूकना ।

फिसलाइट० ना० स्त्री० सिसलाइट, चिकना  
रूट ।

फौचना० कि० ना० सैवालना, धोना ।

फौका० गु० स्वारहित, सीटा, सावला, बदरग,  
बेमझे ।

फुकार० ना० स्त्री० सापड़ी फाफनाइट ।

फुकारना० अ० कि० फनफनाना ।

फुहार० ना० स्त्री० भासी, फूरी ।

फुकना० अ० कि० जलना, ना० पु० पीना ।

फुकनी० ना० स्त्री० धौकनी, निगाली, घाग  
पूकने की जो वास्तु वा पीतलादि की होती है ।

फुट० गु० अयुग्म ।

फुटकर० गु० अलग, भिन्न भिन्न, अयुग्म ।

फुटकी० ना० स्त्री० छीट, छिटकी, गु० अयुग्म ।

फुड़िया० ना० स्त्री० फुडी घोटा फोडा ।

फुदकना० अ० कि० बुदकना, भासा थोड़ा  
उड़लना ।

फुदकी० ना० स्त्री० पछी विशेष ।

फुनगी० ना० स्त्री० बली, बोंपल, वृचची चोरी

फुनंगु ना० स्त्री० शिरार, चागी ।

फुनसी० ना० स्त्री० मुहाना, फुड़िया, पिरकी ।

फुनिया० }  
फुधी० } ना० स्त्री० लोलो ।  
फुधो० }

फुपकार० ना० स्त्री० पुनार ।

फुफा० ना० पु० पूका ।

फुफो० ना० स्त्री० पूक, पूथा ।

फुफेरा० ना० पु० } गु० जो पूफसे उत्पन्न

फुफेरी० ना० स्त्री० } मया या जो पूफका  
सम्बन्धी होवे ।

फुर० गु० सच, ठीक, सत्य ।

फुरति० ना० स्त्री० पुर्त ।

फुरफुराना० अ० कि० कापना, दिलना ।

फुरफुरी० न० स्त्री० कम्पाइट, थरथराइट ।

फुत्त० } ना० स्त्री० वेगना, शीमना, चालाकी  
फुत्ती० } चटपटी, गल्दी ।

फुत्तीला० गु० वेगी, चालाक, चटपटिया ।

फुलका० गु० फूलाहुया, हलना, ना० पु०  
फूला, पतली घोटा रोगी ।

फुलहारना० अ० कि० फूलना, फष, उठाना ।

फुलकारी० ना० स्त्री० कपडा जिसमें फूलहो ।

फुलकिया० }  
फुलका० } ना० स्त्री० रोगी विशेष ।

फुलभङ्गी० ना० स्त्री० धानशावरी विशेष ।

कुलवारि० ना० स्त्री० कुलवाड़ी, रामायणे यथा,  
एष सखी सियसग विहारी, गई रई देखन  
कुलवारि ।

कुलवाड़ी० ना० स्त्री० फूलोंकी बाड़ी या बाग ।  
कुलाना० स० कि० सुजाना, मोगकरना ।

कुलासरा० ना० पु० लक्ष्मिपत्नी, कुसलाहट ।

कुलेल० ना० पु० खेलेली का तेल ।

कुलौरी० ना० स्त्री० पकौड़ी ।

कुल्लन० गु० पूजा, खिला ।

कुल्लह० गु० बचेला, पूलसे थोके दिाके फल ।

कुल्ली० ना० स्त्री० आलसी कुली ।

कुसकुसाना० अ० कि० धीरे धीरे बात कहना,  
भीसी पड़ना ।

कुहार० ना० स्त्री० पानाके कण छाये २ पड़ना ।

कुहारा० ना० पु० पच्चाह छापी २ बूँदें  
छटना ।

कुआ० ना० स्त्री० पूरू, बापकी बह ।

कुंक० ना० पु० पूरन का काम या चाल ।

कुंकना० स० कि० मुल से वायु छोड़ना, उल-  
गना, मुल से बजाना, उड़ाना, जलाना ।

कुकारना० अ० कि० फनफनाना ।

कुही० ना० स्त्री० भीसी, पूहा ।

कुंकना० स० कि० पूरना ।

कुट० ना० स्त्री० कच्छीविशेष, अयुग्म, विगाड,  
भितता, खाट ।

कुटन० ना० स्त्री० अनवनाक, विरो ।

कुटना० अ० कि० टूटना, पटना, भिन्न भिन्न  
होना, प्रकट होना दुर्मिथि निबलना ।

कुटा० गु० टूटा ।

कुटी० ना० स्त्री० विरो, विगाड, गु० टूटा ।

कुफा० ना० पु० पूरना पति ।

कुफा० } ना० स्त्री० बापकी बहिन ।  
कुफू० }

कुल० ना० पु० उप, वसी, गिहानी, सज, जले  
इय मृतकेरी हई ।

कुलना० अ० कि० खिलना, विगसना, आन  
दितहोना, सुजना, अभिमानी होना ।

कुला० गु० सूजा, ना० पु० धानोंके लाना ।

कुलाव० ना० पु० सुजन ।

कुली० ना० स्त्री० कुल्ली जो आल में हाती है ।

कुस० ना० पु० पुरानी घास, तुष, पूलमास ।

कुसड़ा० ना० पु० गूदड़ ।

कुसी० ना० स्त्री० भूसी ।

कुहड़० ना० स्त्री० पूहर ।

कुहड़ा० गु० कुवचा कहोहार ।

कुहर० ना० स्त्री० अनसीली, घामड, कुचाल,

चलोहारी, ना० स्त्री० भिष्टल ।

कुहा० ना० पु० स्तनने सट्टा रुई गोड़ा ।

कुहार० ना० स्त्री० पूहर, कुहरा ।

कुही० ना० स्त्री० भीसी ।

कुंक० ना० स्त्री० फेंकने का काम या चाल ।

कुंकना० स० कि० डालना, फेंकना ।

कुंकाव० गु० फेंकने के योग्य ।

कुंठ० ना० स्त्री० डव, कपि ध, पटना ।

कुंठन० स० कि० मिलाना, सागा, लतपत  
करना ।

कुंठा० ना० पु० छाटा पगडा, पटना ।

कुंठी० ना० स्त्री० आदी ।

कुंठ० ना० स्त्री० फेंक ।

कुंठना० स० कि० फेंकना ।

कुंठा० ना० पु० फटा ।

कुंछु० ना० पु० केना ।

कुंणोवारि० ना० पु० समुद्र कुंछु ।

कुंन० } ना० पु० भाग, केणु ।  
कुंना० }

कुंनाना० अ० कि० केना उठना ।

कुंनी० ना० स्त्री० पटवान विशेष ।

कुंनुस० ना० पु० पीपूष ।

कुंफडा० ना० पु० अय विराय तिसके द्वारा  
त्रास लन है ।

फेफड़ी० ना० स्त्री० चलोकी प्राणक्ति ।  
 फेर० ध्वज० पुन ।  
 फेर० ना० पु० बाक, टेढ़ाई, पुमान, घेरा,  
 कुयडली, घोल, पुमान ।  
 फेरना० स० क्रि० पुमाना ।  
 फेरा० ना० पु० पुमान, फेलाव ।  
 फेरोफेरी० ना० स्त्री० इधर उधर जाना, आ-  
 वागमन ।  
 फेरी० ना० स्त्री० प्रदक्षिणा ।  
 फेरीवाला ना० पु० फेरनेवाला, वितायी  
 आदि ।  
 फेर० ना० पु० शृगाल, गीदड़, धोला, अतर,  
 फेर ।  
 फेंटा० ना० पु० फेंडा ।  
 फेंलना० ध० क्रि० विद्वाना, पसरना, विधरना,  
 प्रकट होना ।  
 फेंलाना० स० क्रि० विद्वाना, चौडाया, पसारना,  
 विधरना, प्रकट करना ।  
 फेंलाव ना० पु० विद्वान, पहरान, प्रकटता,  
 प्रचार, भरपूर ।  
 फौज० गु० स्रोतस, पाला, ना० स्त्री० बाणवी  
 एक शेर विधरने पंच में लगान है ।  
 फौकी० ना० स्त्री० नली, छूली ।  
 फोहार० ना० स्त्री० पुहार ।  
 फोक० ना० पु० तरछ, लोठी, गु० स्रोतसला  
 वस्त्र वा फगवा, बाण वा एर आर ।  
 फोकट० ना० पु० वगल ।  
 फोकड़० ना० पु० मूद, तरछ, शूदा ।  
 फोड़ना० स० क्रि० ताड़ना, फाड़ना ।  
 फोड़ा० ना० पु० रफोटक, बालनाड, पिरवी ।  
 फोला० ना० पु० फणोलो, छोला ।

[ घ ]

घंमोटी० ना० स्त्री० बाक होने की औपधि  
 विशेष ।  
 घंटावाना० स० क्रि० भागकरवाना, हिस्मह  
 रवाना ।

घंटावैया० ना० पु० भागकर्ता, वाटनेहाता ।  
 घटना० स० क्रि० वाग्ना, वा घटवाना ।  
 घंटेत० ना० पु० बटवैया ।  
 घंठोहा० ना० पु० बरखडर, बोहरा ।  
 घंश० ना० पु० वास ।  
 घशकार० ना० पु० वाग यां वागीनाला ।  
 घंशखीरी० ना० पु० बशरोचन ।  
 घंशरोचन० पु० बशलोचन ।  
 घंशावली० ना० स्त्री० बशावली ।  
 घशी० ना० स्त्री० बशी ।  
 यक० ना० पु० बक, ना० स्त्री० भक, गप् ।  
 घडुची० ना० स्त्री० पोधा विशेष जिसके पीम से  
 सुन्ती जाती है ।  
 यकभक० ना० स्त्री० बकनाद ।  
 यकना० ध० क्रि० बडवडाना, भडलगाता ।  
 यकयक० ना० स्त्री० बडवड, गप शप ।  
 यकवकाना० स० क्रि० बकवक करना ।  
 यकरा० ना० पु० अज, धार्य ।  
 यकरी० ना० स्त्री० अजा, छेरी धाग ।  
 यकला० ना० पु० खिलना, धाल ।  
 यकवाद० ना० स्त्री० यकवक ।  
 यकवादी० ना० पु० यकवकिया ।  
 यकवस० ना० पु० बकवाद ।  
 यकवाहा० ना० पु० } बडवडिया ।  
 यकवाही० ना० स्त्री० }  
 यकसा० गु० समेट बंधना ।  
 यकसुरा० ना० पु० चपडास, चपरास ।  
 यकलैला० गु० बकसा ।  
 यकायन० ना० स्त्री० वृत्त विशेष ।  
 यकारा० ना० पु० अगुना, पथिक, सुगोदी ।  
 यकार्य० ना० स्त्री० टकीलरीर ।  
 यकिया० ना० स्त्री० छुटी, नाह ।  
 यकुला० ना० पु० बगला ।  
 यकेती० ना० स्त्री० बहुत दिनकी व्यानी गप  
 यथना भैस ।  
 यकेतु० ना० पु० पलारा यथान् दानवी जड ।

को कृत्पर बनाते हैं जिसको रस्ती आदि बन-  
ती है ।

यकोटना० स० कि० रस्तीघना, नौकना ।

यक्रम० ना० पु० रंगने का काट ।

यकाल० ना० पु० बरखा ।

यका० ना० पु० } गु० भरी, गपी, बरखादी ।

यकी० ना० की० } गु० भरी, गपी, बरखादी ।

यखरो० ना० की० कोपड़ी, पर, मुकान ।

यखान० ना० पु० वर्णन, खुनि ।

यखानना० स० कि० बर्णनकरना, खुनिकरना,  
साराहना ।

यखार० ना० पु० } राता, भगडार, घनान

यखारी० ना० स्त्री० } रस्ते की बाँड़ी या

बाँड़ी ।

यखेदा० ना० पु० मगडा, राइदि, रीता ।

यखेदिया० गु० भगडालू, लदावा ।

यखेरना० स० कि० विधगना, रिपटना ।

यखोर० ना० की० टोरु, रोक, अशानुन ।

यखोरना० स० कि० डोरना, पूरना ।

यखौरा० ना० पु० कथा, मोदा ।

यग० ना० पु० बर, बगला, बाग ।

यगद्धट० ना० पु० सरपट ।

यगपांति० } ना० स्त्री० बगलों की पांति ।

यगपांती० }

यगह० ना० पु० चारेल विशेष ।

यगडा० ना० पु० छल, दुःख ।

यगदिया० गु० छली, टग ।

यगदना० स० कि० किरना, विगाडना, फूलना,  
फैलना ।

यगदाना० स० कि० किरना, विगाडना, मुलाना,  
फैलाना ।

यगमेल० ना० पु० अति निकट, नाम में बाग का  
मिलजाना ।

यगर० ना० पु० पर आगिन, सदन ।

यगरना० स० कि० छिटकाना, फैलाना, विध-  
राना ।

यगला० ना० पु० बर, बगला, परी विशेष ।

यगलामगत० गु० कपडा, धूँत, छली ।

यगहंस० ना० पु० हंस विशेष ।

यगिया० ना० स्त्री० } फुलवाही, छाया उपवन,  
यगीचा० ना० पु० } धोयनाग, कारती शम्भू ।

यगुला० ना० पु० बर, परी विशेष ।

यगूला० ना० पु० बाण्डर, नौकरा ।

यघनदा० ना० पु० संगथि विशेष, जफ विशेष ।

यघना० ना० पु० नाथ के मत या दान जो  
नालफ को पहिनाते हैं ।

यघरूर० ना० पु० बाण्डर, बगला, पवनप्रथि ।

यघार० ना० पु० छोक ।

यघारना० स० कि० छोकना ।

यघ्री० ना० स्त्री० छाल, बुझवली ।

यघेल० ना० पु० राजपूत, जाति विशेष ।

यघेलखण्ड० ना० पु० देश विशेष, रीता का  
प्रदेश ।

यघेला० ना० पु० बंसेल, बापम नमा, बामरु ।

यंक० ना० पु० नांग ।

यंकार्द० ना० स्त्री० कंट, देदार ।

यंग० ना० पु० धानु विशेष, उल्लूखन, बंगाला  
देश ।

यंगरी० ना० स्त्री० गहन विशेष ।

यंगला० ना० पु० धार या समीर का पर  
विशेष, पान विशेष, बंगाले के अण्डर या भाषा ।

यंगसेन० ना० पु० अगस्त्य वृष ।

यंगा० ना० पु० सांती जफम पार, गु० उल्लू,  
नातमक, रामावधे यथा, तीरथ राज प्रयाग नदी  
पुनि गंगा, राममनुज कभरे शठबंगा ।

यंगाल० } ना० पु० देश विशेष जो गयादी

यंगाला० } से पूर्व में है ।

यंगालिन० ना० स्त्री० बंगाली की स्त्री ।

यंगाली० गु० बंगाले का बोली ।

वत्तीसी० ना० स्त्री०, सव दांत, वृ० निसम  
 वतीस वस्तुषा समुदाय हो ।  
 घत्सा० ना० पु० धानल विशेष ।  
 घधुआ० ना० पु० } शाक विशेष भारी ।  
 घधुर० ना० स्त्री० }  
 घद्द० ना० स्त्री० राम विशेष, नाया ।  
 घदना० स० क्रि० दासलगाना, मानना अंगीकार  
 करना ।  
 घदर० ना० पु० सब मेरा एक सहस्र मद्राकी धती  
 अर्थात् तीसरा यह शब्द अरबी मन्शुद्ध बदर-है-  
 परंतु अयोध्या काण्ड में, यों, लिखा है, यथा,  
 विश्व बदर पतु तुम्हरे हाथा ।  
 घदल० ना० पु० मेघ, प्रतीकार, अन्य० सन्धि ।  
 घदलना० स० क्रि० पचाना, पीडना ।  
 घदपा० ना० पु० सत्ता ताकत, पलंग  
 पीया ।  
 घदलार्द० ना० स्त्री० तीक्ष्णार्द, पलंगार्द,  
 पीया ।  
 घदलाना० स० क्रि० फरबालना ताडना  
 पीया ।  
 घदबा० ना० स्त्री० घरा छाया मघ ।  
 घदा० पु० जा प्रातर में लिखित है ।  
 घदायदी० अन्य० हिसका समत लकार स  
 ऋणके से ।  
 घदि० } ना० स्त्री० कृष्णपत्र, हनु, लिप्य ।  
 घदी० }  
 घदल० ना० पु० मघ ।  
 घद्द० पु० जो बाधागया ।  
 घदी० ना० स्त्री० मूल में पड़नेकी वस्तु विशेष,  
 तुलसा चमक था ।  
 घद्रीजन० ना० पु० बड़ी गण का वृत्त ।  
 घध० ना० पु० हया, हिंस, हुन ।  
 घधन० ना० पु० हुन, हुनन ।  
 घधना० स० क्रि० मारबालना, हय, वदना  
 ना० पु० पा पी पीने का पानविशेष ।

वधमश० ना० पु० बंधका वध ।  
 वधस्थान० पु० नित स्थान में वध कियागया ।  
 वधाई० ना० स्त्री० } जयकार मानना, अर्पण,  
 वधाना० ना० पु० } मद्रक्षाचार जा छनी अदि  
 की लक्षके के पर पूषी सेना है ।  
 वधिक० पु० पु० लेटकी हयारा, फगियारा  
 बहेलिया, कसा ।  
 वधिया० ना० स्त्री० पशुओं म जो अण्डहीन  
 हुआ ।  
 वधिर० पु० बहिर ।  
 वधू० } ना० स्त्री० बह, पुत्रकी स्त्री ।  
 वधूटी० }  
 वध्य० पु० जो वध करनके योग्य है ।  
 वन० ना० पु० वन, पार्श्व ।  
 वनज० ना० पु० बंजिन, धोपार, फमल ।  
 वनजारा० ना० पु० अफका "योपारी" जा बलों  
 पर घा लाकर सेनाता है ।  
 वनजारी० ना० स्त्री० वनजारा की स्त्री, तम्बू  
 विशेष अक्षतीमा जो अन्न ।  
 वनठन० पु० श्रमरयुत, सवारी, सगधज से ।  
 वनत० ना० पु० गावसे बनी हुई वस्तु विशय जो  
 गामार लिये टापी आद म लगात है ।  
 वनराई० ना० स्त्री० पाधाविशय ।  
 वनना० अ० क्रि० रूपरुडना तैयार राना,  
 वसा ।  
 वनपडना० अ० क्रि० वना उगारना ।  
 वनप्रिय० ना० स्त्री० कायल ।  
 वनमज्जरी० ना० स्त्री० सर्माली ।  
 वामाल० } ना० स्त्री० माता जो बहुपुत्रों से  
 वनमाला० } श्री थीर लक्ष्मी पाव तक  
 होती है ।  
 वनमालिका० ना० स्त्री० बराहाण्ड, वन  
 माला ।  
 वनमाली० ना० पु० श्रीकृष्णचक्रका एकनाम ।  
 वनरा० ना० पु० हुलस ।  
 वनरी० ना० स्त्री० हुलस ।



बफारा० ना० पु० बाफ, भाऊ ।  
 बघुआ० ना० पु० बघा, बालक ।  
 बबूल० ना० पु० वृष विशेष, कीटक ।  
 बभ्रु० ना० स्त्री० सोता, पुर्सा ।  
 बभ्रुकना० अ० कि० उभरना, धूनना, फूलना ।  
 बभ्रुई० ना० पु० देश वा नगर विशेष ।  
 बभ्रुवा० ना० पु० वृष विशेष, सोता, यंत्र  
 विशेष ।  
 बया० ना० पु० पचीविशेष, निरस्ती ।  
 बयार० ना० पु० वायु, पवन, हवा ।  
 बयाला० ना० पु० रोशनदान, धुपुका, गुं  
 निस वस्तु में नई रहती है ।  
 बयालीस० गुं चालीस और दो, ४२ ।  
 बयासी० गुं अस्सी और दो, ८२ ।  
 बर० ना० पु० आसीर्वाद, पदार्थ, डलहा, धान  
 की चौड़ाई, कार्क वृष वरदान, ना० स्त्री०  
 बिरनी, गुं भेड, छदर, अभिराम ।  
 बरई० ना० पु० तनोली ।  
 बरखना० अ० कि० बरसना ।  
 बरगत० } ना० पु० वृ, वृष विशेष ।  
 बरगद० }  
 बरजना० स० कि० निषेध करण, हटकना,  
 नारना, रोकना ।  
 बरत० ना० पु० मृत बत्त, चमोटी, चमड़े की  
 रस्सी जिस से पुलका पानी खींचते हैं, गुं  
 जलत, धपकत ।  
 बरतना० स० कि० शाचना, विचारण ।  
 बरतनी० ना० स्त्री० अक्षरी, वर्षमाला ।  
 बरदैत० ना० पु० भाग, दसोपी, नानावाले ।  
 बरघ० ना० पु० बैल, वृषभ ।  
 बरघना० स० कि० गौ और बैलकानसगहोना ।  
 बरघाना० स० कि० गौध बैल से प्रसंग क  
 राना ।  
 बरन० ना० पु० वर्षन, अथवा ठी भी, किना,  
 बकि ।  
 बरनन० ना० पु० वर्षन ।

बरना० ना० पु० वृष विशेष, स० कि० विवाह  
 करना अ० कि० जलना, धपकना, नदी  
 विशेष ।  
 बरनी० ना० स्त्री० पपनी ।  
 बरयस० ना० पु० बल बलानार, प्रबलता ।  
 बरब० ना० पु० पची विशेष ।  
 बरबट० ना० पु० रोग विशेष, सर्प विशेष,  
 बरबस, बरियार ।  
 बरया० ना० पु० छन्द विशेष, काग मखलीमारने  
 का ना० स्त्री० रागिनीविशेष जिससे हरिण और  
 सर्प मोहता है ।  
 बरस० ना० पु० वर्ष, मोदक वस्तु विशेष जो  
 अक्षय से बनती है ।  
 बरसगाठ० ना० स्त्री० जमदिन, जमदिन में  
 सर्वदा गाठ बांधने का व्यवहार ।  
 बरसना० अ० कि० पानी पड़ना ।  
 बरसवान० गुं वर्षा सवती, वार्षिक ।  
 बरसौड़ी० ना० स्त्री० वर्ष का माहा वा फर,  
 वार्षिक ।  
 बरहा० ना० पु० खेत जिसमें गौचराते हैं, रस्ता  
 चमोटी, खेतमें पानी लहाने का मार्ग, पुत्रजम  
 के बारहवें दिन का व्यवहार ।  
 बरा० ना० पु० बहा, भोजन में व्यञ्ज विशेष,  
 स्त्री० वाङ्मयी, गुं अक्षी स्त्री ।  
 बराक० ना० पु० बराक, दबता ।  
 बरात० ना० स्त्री० दूल्हा और उसके साथी ।  
 बराती० ना० पु० विवाह क शीतकारी ।  
 बरागा० अ० कि० परे रहना, अलग होना,  
 आचार करना तनना, धोकरना ।  
 बराघ० ना० पु० समय, अलगण ।  
 बरियार० ना० स्त्री० बड़ाई, उमग, बरजस ।  
 बरियाय० ना० पु० बरट, जबरदस्ती ।  
 बरियार० गुं बजवान, प्रबल, तेजस्वी ।  
 बरियारा० ना० पु० पीथा विशेष, बरेरा ।  
 बरी० ना० स्त्री० कली, नदी शीतपि की  
 गला बरी, विवाही ।

घरीस० } शु० वर्ष, काये यथा, दृग्भावस्या  
 घरीसा० } पाव बरीसा, जब राधिका प्रथम  
 दिन दीसा ।  
 घह० घण्य० चारो, अगर्धि ।  
 घरेठन० ना० छी० धोविन् ।  
 घरेठा० ना० पु० धोनी ।  
 घरेरा० ना० पु० विरवा विशेष, विरनी ।  
 घरै० ना० छी० तम्बोली ।  
 घरैन० ना० छी० तम्बोलिन् ।  
 घरोठा० } ना० पु० उबोदी ।  
 घरोठा० }  
 घर्ली० ना० पु० } भाला विशेष ।  
 घर्ली० ना० छी० }  
 घर्लत० ना० पु० भालित, भाला मारोवाला ।  
 घर्त० ना० पु० काम, अग्यास, बरत ।  
 घर्तन० ना० पु० नासन, भाड़े, पात्र ।  
 घर्तना० स० वि० काममें लाना ।  
 घर्मा० ना० पु० वेधक, बदर्ई का अर्थ विशेष ।  
 घर्माना० स० कि० वेधना, छेदना ।  
 घर्द्दा० ना० पु० देशविशेष जो भरतखण्ड क  
 पूर्व है ।  
 घर्द० ना० पु० कुसुम का बीज, डहदारकाटा  
 विशेष ।  
 घर्द० ना० पु० भाषा का छन्दविशेष ।  
 घर्स० ना० पु० घाँ ।  
 घर्सात० ना० स्त्री० वर्षा, आवृत् ।  
 घर्साती० ना० पु० घोड़े के पेर में रोगविशेष  
 शु० जो वर्सातमें उपजता वा सब भरसताहै ।  
 घर्साना० स० कि० पनी गिरावा, ना० पु०  
 मजमें नगर विशेष ।  
 घर्सी० ना० छी० बरसवेंदिन का आद्य ।  
 घर्ह० ना० पु० मारपल ।  
 घर्ही० ना० पु० मोर, मयूर ।  
 घल० ना० पु० सामर्थ्य, शीवलदेवजी, बली,  
 ऐंठन, दल, नीर्य, धीरज, देव्य विशेष ।

घलकना० अ० कि० लोलना, निर्जलवाहारे  
 करना ।  
 घलताड़० ना० पु० वृक्ष विशेष ।  
 घलतोड़० ना० पु० दुनिया जो बाल के टूटने  
 से होती है ।  
 घलद० ना० पु० बेल जो बोझा देती है ।  
 घलदाऊ० ना० पु० शीवलदेवजी ।  
 घलदिया० } ना० पु० बेल का लादने हारा  
 घलदी० } या बेल का चलाने वा धराने  
 हारा ।  
 घलदेय० ना० पु० श्रीकृष्णचंद्र के ज्येष्ठ  
 भ्राता ।  
 घलना० अ० कि० जलना ।  
 घलियकरा० ना० पु० बलिवा बरवा, युद्ध में  
 जो बिना लड़े मारा जाये ।  
 घलघलाना० अ० कि० उनलना, कामाजुर  
 होना ।  
 घलघीर० ना० पु० शीवलदेवजी वा श्रीकृष्ण  
 घलमद्र० ना० पु० शीवलदेवजी ।  
 घलम० ना० पु० पीतम, स्वामी, पति ।  
 घलमा० ना० पु० पीतम, स्वामी, पति, प्रियतम  
 राग विशेष जो होली में गाते हैं ।  
 घलराम० ना० पु० शीवलदेवजी ।  
 घलरन्त० शु० पराकमी, सामर्थ्य, योद्धा ।  
 घलवर्द्धक० शु० बलका बढ़ाने हारा ।  
 घलवान्० शु० बलवत् ।  
 घलही० ना० छी० आगी, भार ।  
 घलाईलेना० स० कि० श्रीर वी दुर्गति के  
 धाप चाहना ।  
 घलात्कार० ना० पु० बरस, अनिष्टा से काम  
 कराना, जबरदस्ती ।  
 घलाराति० ना० पु० इन्द्र, देवराज ।  
 घलि० ना० पु० भोजन, भाग, धरा, पृथ्वी,  
 गंधक, सड़क, राना विशेष, ना० छी०  
 याधार, लहरी ।  
 घलित० शु० भरा, परा, बल समुक्त ।

बलिदान० ना० पु० दवता के हतु पशु अर्पण ।

बलिपुष्ट० } ना० पु० वीर्य, वाग ।  
बलिमुक्त० }

बलिरसा० ना० स्त्री० गंधक ।

बलिष्ठ० अ० बलवान् पहलवान ।

बलिहारी० ना० स्त्री० न्योद्धावर, दुर्बारे ।

बली० अ० बलवान्, पहलवान, वीर ।

बलीमुख० ना० पु० वानर, वपि, बदर ।

बलीवर्द्ध० ना० पु० वनद ।

बलुआ० अ० बालुमय ।

बलूला० ना० पु० बुरुला ।

बल्लेहा० ना० पु० मयडर, बीकरा, बनीबलडा ।

बल्लेही० ना० स्त्री० लम्बी धरनि, जा दो छप्पों के बीच में रखते हैं ।

बलिह० कि० बकवादकर, निम बहारे कर ।

बलुगुजा० ना० स्त्री० बकुची ।

बलपा० ना० स्त्री० अक्षय ।

बल्लक० ना० पु० मोठ घन ।

बल्लकी० ना० स्त्री० बीण, तमूरा ।

बल्लम० ना० पु० भाला, सेल ।

बल्लरी० ना० स्त्री० बेल, छरच ।

बल्लरीकोष्ठ० ना० पु० हरतिषाद ।

बल्ला० ना० पु० लडा दया, एम्मा नास जिस से जाव बल्लाते हैं गोबर की बनी वस्तु जो हाथी में डालने हैं ।

बलडर० ना० पु० बलगाहा, बल्ला, बीकरा, प वा की मीथ ।

बयासीर० ना० स्त्री० युदा में रागावशेष ।

बवेसिया० ना० पु० गाढ़, गदिया ।

बस० ना० पु० बस ।

बसन० ना० पु० कपडा ।

बसन० अ० कि० रहस्य, भराहना, ना० पु० कपडाविशेष जिसमें पान लपेटते हैं ।

बसनी० ना० स्त्री० सरिया, थैली ।

बसाना० अ० कि० आवाद पराना, अ० कि० गंध दना ।

बसूला० ना० पु० बदर का अरथ विराप ।

बसूली० ना० स्त्री० टिट दान के लिये अरथ विराप छोटा बसूला ।

बसेधा० अ० सगा, उवसा ।

बसेरा० ना० पु० बकल, सायकल, बसगा ।

बसोवास० ना० पु० बसगति ।

बहा० ना० स्त्री० वस्तु, चीज ।

बहती० ना० स्त्री० आम, गाव, गगर, बदावा ।

बहना० ना० पु० बटन ।

बहकना० अ० कि० निराशा होना, भङ्गा, भूलना ।

बहकाना० अ० कि० निराशा करना, भटकाना, मुलाना, बहकाना ।

बहगी० ना० स्त्री० जिसमें बहार नाम लखते हैं ।

बहजाना० अ० कि० बहना, विगडना, उमडना ।

बहत्तर० अ० सत्तर और दां, ७२ ।

बहना० अ० कि० चलना, भसना, उमडना, मर्याद से बाहर जाना, भूलना ।

बहनेऊ० ना० पु० बहिनकरनामी, बहनेई ।

बहनीली० ना० स्त्री० ल पालक, बहन ।

बहनाई० ना० पु० बहनका पति ।

बहनेटा० ना० पु० बालकका बालक ।

बहर० ना० स्त्री० अनेक मीना ।

बहरा० अ० बधिर, जिसकी आंखें नहीं देता है ।

बहरिया० अ० अनाज, माहरपा ।

बहरी० ना० स्त्री० पणविशेष जो बबूतर ओ पकड़ लता है ।

बहल० ना० स्त्री० चलन की गाड़ी ।

बहलागा० अ० कि० माप्रसन्न रहना वा करना ।

बहलाना० अ० कि० खिलाना, धिरोपा मर प्रसन्न करना ।

बहलिया० ना० पु० आलेखकी बन्धिका; धनुर्धर;  
 नीचजाति विशेष।  
 बहली० ना० स्त्री० छोटी बहल।  
 बहाना० स० कि० चलाना, भसाना; उपकाना  
 भुलाना; मर्यादा वाद्य चलाना।  
 बहाय० ना० पु० अहिला, माद ल्पदाय।  
 बहिः० अव्य० बाहर।  
 बहिःकोण० ना० पु० बाहरका कोना।  
 बहिजाना० अ० कि० पतित होना, बहना, विग-  
 ज्ञाना, झराव होना।  
 बहिन० ना० स्त्री० भगिनी, अनुजा।  
 बहिरन्तर० अव्य० बाहर, भीतर।  
 बहिरा० अ० बहिर, बहर।  
 बहिराना० स० कि० बहलाना, अ० कि० नि-  
 कलना।  
 बहिर्देश० ना० पु० बाह्यस्थान, बाहरकादेश।  
 बहिर्मुख० ना० पु० धर्मकरने में अचेत, अभयत।  
 बही० ना० स्त्री० महाननों के हिसाब की पोथी,  
 झरसाह, साना।  
 बहीर० ना० स्त्री० सेना के संग जो भाँड़आदि  
 सामग्री।  
 बहु० अ० बहुत, ढेर, अनेक।  
 बहुकाल० ना० पु० अनेक दिन, बहुत दिनों।  
 बहुकालीन० अ० बहुत दिनों का।  
 बहुत० अ० अधिक, ढेर, बड़ा।  
 बहुतात० ना० स्त्री० अधिकता; सरसाई।  
 बहुतायत० अ० विस्तार, सियादती।  
 बहुतेरा० अ० अनेक, अधिक।  
 बहुत्व० ना० पु० बहुतायत।  
 बहुदर्शी० ना० पु० जिसने बहुत देखा है।  
 बहुधा० अव्य० अनेक प्रकारसे, बहुत प्रकार;  
 कईवार, अक्सर।  
 बहुजनन० ना० पु० इन्द्र।  
 बहुनेत्र० ना० पु० इन्द्र।  
 बहुभैरव० ना० पु० इन्द्र।  
 बहुपद० ना० पु० बरगददृश।

बहुपत्रा० ना० पु० भौता, भ्रमर।  
 बहुपुट० ना० पु० भोजपत्र।  
 बहुपुत्रिका० ना० स्त्री० बड़ी शतावरी;  
 बहुपुत्री० बहुतपत्री।  
 बहुयाहु० ना० पु० बाणासर, नागाहेन, रावण,  
 बहुभुज० अ० जिसके बहुत भुजाहों।  
 बहुभुजक्षेत्र० ना० पु० बहुतभेदों का क्षेत्र।  
 बहुमञ्जरी० ना० स्त्री० तुलसी।  
 बहुमूल्य० अ० गु० महंगा वा जिसका बहुत  
 बहुमूल्य० मूल है, कीमती।  
 बहुर० अव्य० फेर, पुनि।  
 बहुरंगी० अ० अनेक रंग का अस्थिर।  
 बहुरना० अ० कि० फिरना, फिराना।  
 बहुराना० स० कि० फेरलाना, फिराना।  
 बहुरि० अव्य० पुनः फेर।  
 बहुरिया० ना० स्त्री० बंधु, बह।  
 बहुरूपा० ना० पु० शरट।  
 बहुरूपिया० ना० पु० भाँड़खानी।  
 बहुरूपी० ना० पु० भाँड़ती।  
 बहुरूप्य० ना० पु० भाँड़ती।  
 बहुल० अ० बहुतायत, अधिकता, इफरति।  
 बहुलता० अ० बहुतायत, अधिकता, इफरति।  
 बहुलच्छद० ना० पु० सहिजनवृक्ष।  
 बहुला० ना० स्त्री० छोटी कटाई।  
 बहुवचन० ना० पु० अधिकत्व, संख्या का ती-  
 धक, प्रत्यय, बहुतवात।  
 बहुविध० अ० अनेक प्रकार, विधे।  
 बहुविधि० अ० अनेक प्रकार, विधे।  
 बहुवाहि० ना० पु० समासविशेष।  
 बहुशः० अव्य० बारम्बार, बार बार।  
 बहु० ना० स्त्री० बंधु, डलहन।  
 बहुदा० ना० पु० कलविशेष।  
 बहुद० ना० पु० लुवा, फिरता, अ० उराइया।  
 बहुलिखा० ना० पु० बधिक, सिद्धीपार।  
 बहुोरना० स० कि० फिराना, लीयाना।  
 बहुोरि० अव्य० फिर, बहुरि।

बांक० ना० पु० भाऊविशेष, कटारविशेष, केर,  
 टेदाई, घुमाव, दोष ।  
 बांरूपन० ना० पु० टेदाया, लघोऽपन, सुव-  
 पन ।  
 बांका० ना० पु० खेला, अकडेते, मोसकादने का  
 अक्ष विशेष, य० टेदा ।  
 बांवी० ना० स्त्री० सांघ का विल ।  
 बांगा० ना० स्त्री० विनीला समेत कुरै, पल्ले  
 सरसो ।  
 बांघना० स० कि० पदना ।  
 बांजर० ना० पु० बंजर, विना जोती बाई  
 परती ।  
 बांभ० ना० स्त्री० नुप्या ।  
 बांभ० ना० पु० भांग, अंरा, बटसरा ।  
 बांभना० स० कि० भागकरना, पीसना ।  
 बांढा० य० पूव विना पशु, मनुष्य जिसके कोई  
 नहीं रहा, सर्प पूज्यरहित ।  
 बांड़ी० ना० स्त्री० लठ, लकड़ ।  
 बांदा० ना० पु० आकाशलता जो वृक्षपर होती है ।  
 बांदी० ना० स्त्री० लोड़ी, दासी ।  
 बांघ० ना० पु० मेघ, नन्ध, पुल ।  
 बांघना० स० कि० जकड़ना, गांठना, लगाना,  
 बन्दकरना, बनाना, सटगाना, लपेटना, उटा-  
 ना, तवाना ।  
 बांघनू० ना० पु० रंगनेकीरीतिविशेष, कलंक,  
 उपाय, रेशमी कपड़ाविशेष, तोनाविशेष ।  
 बांस० ना० पु० वृक्षविशेष, तालावधादिनापने के  
 लिये मायकविशेष ।  
 बांसफोड़ा० ना० पु० जातिविशेष जो बांस की  
 वस्तु बनाता है ।  
 बांसली० ना० स्त्री० घुरली, घंरी ।  
 बांसा० ना० पु० नासिका की हड्डी ।  
 बांसी० ना० स्त्री० घुरली, घोरसी, बांस से बनी  
 हुई कर्तू, बांस का फल ।  
 बांसुरी० ना० स्त्री० घुरली ।  
 बांह० ना० स्त्री० बाहु ।

बांहिया० य० पत्नी, धोरी तरफदार ।  
 बाई० ना० स्त्री० महाराष्ट्रों में, शिवियों का नाम,  
 कंचनी बात अन्व० जीर्ण ।  
 बाईस० गु० बीस, चौर दो, २२ ।  
 बाईसी० ना० स्त्री० राजा की क्रीड बाईस  
 हजार पलटन प्रधानता ।  
 बाकला० ना० पु० तरकारी विशेष ।  
 बाकस० ना० पु० भाड़ी, जिसके बोगलों से  
 नास्त बनाते हैं ।  
 बाखर० } ना० पु० अंगनाई, कई एकपर  
 बाखल० } जो एक हाते के भीतर हैं ।  
 बाग० ना० स्त्री० लगाम ।  
 बागडोर० ना० स्त्री० सामी बाग, लगामको  
 रस्ती ।  
 बागा० ना० पु० जोडा, खिलत, पहिरने का  
 वस्त्र विशेष ।  
 बागी० ना० पु० अश्वचर, पुङ्खदा ।  
 बाघ० ना० पु० व्याघ्र, शेर ।  
 बाघन० } ना० स्त्री० व्याधी, शेरनी ।  
 बाघनी० }  
 बाघम्यर० ना० पु० नाचकी खाल ।  
 बाघा० ना० पु० बाघ ।  
 बाघू० ना० स्त्री० घुनान, बांट, दीससह, लगान  
 हाँठके दोनोंधोरके कोने, गु० निकम्मा ।  
 बाछना० स० कि० घुनना, बांटना ।  
 बाजगाज० ना० पु० अनेक बाजों का इकट्ठा  
 शब्द ।  
 बाजन० ना० पु० कई एक बाजा ।  
 बाजना० अ० कि० बजना, प्रकट होना, भि-  
 डना ।  
 बाज्ज्या० ना० पु० बाज, दोल आदि, गु० भिड  
 बाजा० ना० पु० बाज, दोल आदि, गु० भिड  
 गया ।  
 बाजी० ना० पु० घोड़ा ।  
 बाजू० ना० पु० बाँहमें पहिरने का गहना विशेष  
 बाह्य० अन्व० बाहर ।

याहालय० ना० पु० मन्दिर के बाहर ।  
 याट० ना० स्त्री० मार्ग, राह, पथ ।  
 याट० ना० पु० याट जो पत्थर आदि के होत हैं ।  
 याङ्ग० ना० स्त्री० धार, पार, सिपाहियों की पक्ति ।

याङ्गव० ना० पु० ब्राह्मण ।

याङ्गवाग्नि० } ना० पु० जल में की अग्नि ।  
 याङ्गवानल० }

याद्दा० ना० पु० हाता, धेर, मन्दिर, भूर, पान ।

याद्विया० ना० पु० बाड बनाने हारा ।

याङ्गी० ना० पु० उपवा विशेष, उपवा समेत जो घर ।

याङ्ग० ना० स्त्री० धार, बद्धी, अधिकार, सरसर्द, जलार्थी, अहिला, बहिया ।

याङ्गना० } अ० मि० बद्धना, उमएडना ।  
 याङ्गनी० }

याण० ना० पु० शर, बाध, खाटकी रस्ती ।

यानप्रस्थ० ना० पु० तृतीयाश्रमी अर्थात् जो स्त्री प्रसंग रहित हो पर तु स्त्री के साथरहे ।

याणा० ना० पु० मृज ।

याणासुर० ना० पु० द्वैयविशेष, राजावलि का पुत्र ।

याणिज्य० ना० पु० व्योपार, तिजारत, साङ्गरी ।

याणी० ना० स्त्री० सरस्वती, यावान्न ।

यात० ना० स्त्री० वार्ता, वाणी, वचन, वारण, वारज, समाचार, पवन ।

यातकीयातमें० अन्व० अभी, तुरत ।

याती० ना० स्त्री० बत्ती, दीपक की बत्ती, छपर की बत्ती ।

यातूनिया० } गु० बच्चदिया, चर्चेत, बडा  
 यातूनी० } बतवहा, बकवादी ।

यादल० ना० पु० मेघ ।

यादला० ना० पु० सौनेरूपे कृतारविशेष, लज्जा ।

यादली० ना० स्त्री० लज्जा ।

यादुर० ना० पु० चमगीदड़ ।

बाध० ना० पु० निवारण, रोक, खाट बुनने की रस्ती ।

बाधक० ना० पु० जो बाधकरे, प्रतिबधक, डुखदान ।

बाधा० ना० स्त्री० दुख, पीडा, अडकाव, रुकाव, मिथ्या, आकृत ।

बाध्य० गु० बाधने के योग्य ।

बाण० ना० स्त्री० रजभार, प्रकृति, चाल, यथा, तुलसी यहमन तजत नहीं धुरबिनिया की नान, ना० पु० बाण, खाटबुनने की रस्ती ।

बाणगी० ना० स्त्री० नमूना, सरस्ता, दृष्टात ।

बाण्ये० गु० नन्ने और दो, १२ ।

बाणा० ना० पु० स्वभाव, व्यवहार, अन्न विशेष, कपडे की स्योत, भर्ती, भेष, निशानी, प्रविज्ञा, फैलाना ।

बाणि० ना० स्त्री० स्वभाव, प्रकृति, चाल ।

बानिक० ना० पु० बान, चलाव, सजाव ।

बानी० ना० स्त्री० बाणी ।

बानीपोली० ना० स्त्री० दिनवाई ।

बानुआ० ना० पु० जलपची विशेष ।

बानुसा० ना० पु० } बख विशेष ।  
 बानूसी० ना० स्त्री० }

बानैत० गु० बानावाले, बानधारी, और धनुर्धर ।

बान्धय० ना० पु० भाई, नैत, सम्बन्धी ।

बाप० ना० पु० पिता, जनक ।

बापडा० ना० पु० बापरो ।

बापरो० } गु० तुम्ह, नीच, दीन, बगाल,  
 बापुरी० } असमर्थ ।

बाफ० ना० स्त्री० माऊ, बफारा ।

बावर० ना० पु० मिट्टारविशेष ।

बावा० ना० पु० नानक, दादा, बूडा, बापक स्यासी ।

बाबू० ना० पु० बापक, राजा, स्वामी ।

बाबु० ना० स्त्री० बामा, औरत ।

बाह्यन० ना० पु० बाह्य ।

याहानी० ग० धी० श्रीपथि पीथा विशेष,  
'वनिया, माझेपा, अजाहारी, कांगरीय, त्रिप  
कला ।

यायन० गो० पु० व्याहारी, मिर्गः आदि जो  
मिथो के धर भेजते हैं ।

यायव० गु० दूरा अलग, ग० पु० वायुवीय ।

यायव्य० ग० पु० वायुवीय ।

याया० उ० नामा, दक्षिण के विपरीत धर्म ।

याथो० त्रि० जलाया, पगारा ।

यार० ग० पु० दार, दिन, बालक, बल, ग०  
धी० रोम, धर्म, नागा, री ।

यार्य० } ग० पु० हाभा, पित्राय, राजा ।  
यारन० } रंगार, बचना, योद्धार ।

यारना० ध० वि० विद्याना, विलगभू, सं० वि०  
'विश्वराम, जला ।

यारनारि० ग० धी० वेश्या, पतुरिया ।

यारभ्यार० अथ० नावार, प्रतिक्षण, 'वीर' ।

यारह० पु० दश, १२ ।

यारहस्यदी० } ग० धी० द्वादश मास जो  
यारपरी० } वनगोमं भित्तर बालों को  
पढ़ते हैं ।

यारसिंगा० ग० पु० दसार, मृगविशेष ।

याराह० ना० पु० गुर ।

याराहीवेर० ना० पु० वेराला ।

यारी० ना० धी० बाड़ी, अरोसा, विम्प्याही  
क्या, श्रीसरी, नावन, ना० पु० जाति विशेष,  
दाय, बाला, ग० धी० वाली ।

यारुत० ना० धी० बालू, जिसमें बालू लुलादि हैं ।

यारे० ग० पु० बसे, लडक ।

यास्त० ना० पु० सिरोह, बालू, बाला, मूल,  
गुण, बाला, दूर, चार, रामायण का प्रथम  
बाण्ड ।

यास्तक० ना० पु० लडका, ननवाला श्रीपथि ।

यास्तकता० } ग० धी० लडकाई ।

यास्तकपन० } ग० धी० लडकाई ।

यास्तका० ग० पु० योगी वा सुयासारी बाला ।

यास्तकृद० ना० धी० श्रीपथि वा सुगमिभियथ ।

य ततोद० ना० पु० बलनाइ ।

यास्तकृद० ग० पु० कला, खर ।

यास्तकृश० ग० धी० वावकता ।

यास्तना० ग० धि० जलाया, सुस्तगा ।

यास्तपत्र० ग० पु० जसामा ।

यास्तपथे० ग० पु० तडकबाले ।

यास्तमात्र० ग० पु० तडकाई, मालकडा ।

यास्तभोग० ग० पु० प्रात मत्त जो श्रीकृष्ण  
च देजाक विभित्त भोग लगते हैं ।

यास्तम० ग० पु० त्रियतम, पति, वपकाविशेष ।

यास्तमूल० ग० पु० मूला ।

यास्ताराह० ग० धी० जो बालकपन से  
विवाह है ।

याला० ना० धी० सालह वर्षतक की कन्या, पु  
वती, पाथा विशेष, जेदी, ग० पु० कांम  
पहरो वा भूषण, बालन ।

यालापन० ग० पु० लडकपन, याताया ।

यालिकय० ग० पु० माई आपथि ।

याली० ग० धी० राडकी, गेह आदिकी ली,  
वाताम पहरो का भूषण विशेष ।

यालुक० ग० पु० एलुम, सुस्तधर ।

य तुफा० ना० धी० बालू, रेत ।

य तुफामय० गु० रेतोला, रेतला, किरिचिरा ।

यालू० ना० री० रेत, रेतु ।

यालूचर० ग० पु० गाना विशेष ।

यास्तमीक० ग० पु० मी विशेष, रामायणका ।

य ल्य० } ना० धी० लडकाई, बाल,  
वालयावस्था } कता ।

यादिक्क० ना० पु० घोडा ।

यादिकक० ना० पु० हांग दरा विशेष ।

याय० ना० पु० वायु ।

यायग० ग० पु० बोवाई, बीभारा ।

यायगोल० ना० पु० वायुखली ।

यायभक्त० पु० गप्पी, बंधी ।

यावद्दी० ना० पु० बड़ा कूप ।  
 यावदतास० ना० स्त्री० देवप्रसूति, दुर्गति, आपदा ।  
 यावतं० गु० पंचरात्र और दो, पूरे होना ना० पु०  
 श्रीविष्णुनारायण का पंचवै अर्चनार्थ ।  
 यावर० गु० कावेला, अगाधी, पकवादी, अयमी ।  
 यावरि० ना० स्त्री० मृगमन्थनी, बोरि, गु०  
 सिद्धि ।  
 यावला० गु० विविध, सिद्धि ।  
 यावली० ना० स्त्री० बड़ा कूप, धोवा, बिल,  
 सिद्धि ।  
 यावसहना० अ० कि० पादना, युद्ध, पवन  
 का निकलना ।  
 याचशूल० ना० पु० वायुशूल, पेटमें रोगविशेष ।  
 यास० ना० पु० वृत्तने का स्थान, टाँव, ना० स्त्री०  
 गन्धि, महक ।  
 यासन० ना० पु० बरतन, पान ।  
 यासना० रा० कि० सौधाना, महकना, ना० स्त्री०  
 अभिलाषा, इच्छा, सुगन्धि ।  
 यासन्ती० ना० स्त्री० औषधिविशेष ।  
 यासा० ना० पु० वृद्धी श्रुति, रहनेका स्थान ।  
 यासित० गु० सुगन्धित कपड़े पहनेहुये ।  
 यासी० गु० भोगनादि जो कलनापका है, मह-  
 कीला, नासयुत ।  
 याह० ना० पु० घोड़ा ।  
 याह० ना० पु० बहनेहारा ।  
 याहन० ना० पु० वाहन, सवारी ।  
 याहना० स० कि० अर्धचलाना या फेरना, भेष  
 का निर्मित वा प्रसंगित होना ।  
 याहर० अय० बहिः, परदेरा ।  
 याहिनी० ना० स्त्री० अना ।  
 याहु० ना० स्त्री० अना, पाँद ।  
 याहुदा० ना० स्त्री० नदीविशेष जो हिमालय से  
 निकलती है ।  
 याहुदेना० अ० कि० हाथ पकड़ना ।

याहुमुख० ना० पु० हाथ ।  
 याहुयुद्ध० ना० पु० मत्स्ययुद्ध, कुरती ।  
 याहुलय० ना० पु० स्वामिकार्तिक ।  
 याहुलय० ना० पु० ।  
 याहुलयता० ना० स्त्री० बहुतायत ।  
 विभारी० ना० स्त्री० पयाल, रायंकालको मोनन ।  
 विजत० ना० पु० अयंजन ।  
 विक० ना० पु० हुण्डार, भेड़िया ।  
 विकट० गु० कठिन, अभयानकी, मयंकर, देहा, पि-  
 प्रबल ।  
 विकना० अ० कि० सपना, विकजाना ।  
 विकरार० गु० भयानकी, भौहाना, मयंकरनी  
 विकराल० देहा, डरीना, कठिन ।  
 विकल० गु० व्याकुल, निश्चिर, प्रायुष्य ।  
 विकलता० स्त्री० व्याकुलता, भवकांड, नैच-  
 विकलत्व० पु० नी, निश्चिरता ।  
 विकलित० गु० व्याकुल, पावक, निवेना ।  
 विकल्प० ना० पु० विचार, मन्सा, तर्कनी  
 विकसन० ना० पु० प्रकाश, र्हा, पूलन ।  
 विकसना० अ० कि० खिलना, फूलना, इर्षित  
 होना ।  
 विकसित० गु० प्रफुल्लित, र्पित, फूलना ।  
 विकसोभगडा० ना० पु० मंजीठ ।  
 विकारु० गु० विक्रोहारा ।  
 विकाना० अ० कि० विकजाना, स० कि० वेन-  
 वाना ।  
 विक्राव० ना० स्त्री० विक्री ।  
 विकास० ना० पु० प्रकाश, फलान, दिल्लीवा, र्हा,  
 अानन्द ।  
 विक्री० ना० स्त्री० सपना, घटना, भौ, बचनी,  
 चर्चित, कठिन ।  
 विखरना० अ० कि० विभ्राना, फटना, कर्षित  
 होना ।  
 विगडना० अ० कि० नाच वा मूढ़ होना, भ्रष्टगुण ।  
 विगही० ना० स्त्री० हाट, लडाई ।



विगसन० ना० पु० विकसन, विलना ।  
 विगसना० घ० त्रि० विफसना, विलना,  
 पूलना ।  
 विगहा० ना० पु० वीषा ।  
 विगाह० ना० पु० भगता, तोह, लहाई  
 ऋगहा ।  
 विगाहना० स० कि० नसाना, टाय दना, मित्रो  
 में लहाई कराना ।  
 विगोना० स० कि० भुलाना, छुपाना, अष्टकरना ।  
 विघन० ना० पु० विघ्न ।  
 विच० अन्य० वीच ।  
 विचकना० घ० कि० निरासहोना, भागजाना,  
 धर्मीकार करके बदलजाना ।  
 विचकाना० स० कि० निरासकरना न मानना,  
 वचन ताडना ।  
 विचल० यु० चलायमान, मचल ।  
 विचलना० घ० त्रि० छिटना, घूमना, चलना,  
 विचलना ।  
 विचली० यु० भाली, पूमी, धनकानी ।  
 विचयर्ह० ना० पु० विचवानी, सामिन ।  
 विचार० ना० पु० विचार, सोच, वृक्ष, ध्यान ।  
 विचारक० ना० पु० विचारी, सोचा, वृक्ष  
 हाता, यायक ।  
 विचारना० स० कि० साधना, ध्यानकरना,  
 याचना, समझना ।  
 विचारित० यु० सोचाहुया, विचाराहुया, वृक्ष,  
 समझा ।  
 विचारी० गु० विचारी, विचारक ।  
 विचासी० ना० स्त्री० पाचारवाल ।  
 विचौलिया० ना० पु० मन्थरथ, विसरैत ।  
 विचु० ना० पु० वृश्चिक, जन्तुविशेष ।  
 विछना० घ० कि० फैलना, पसरना ।  
 विछरना० घ० कि० भिगहोना, उदाहोना ।  
 विछराहट० ना० स्त्री० भिषगा ।  
 विछना० घ० कि० सिसलना, छिसलना,  
 विछलना० विभ्र भिषहोना, विलगना ।

विद्ययाना० स० कि० फैलाना, पसराना ।  
 विद्याना० स० द्वि० फैलाना, पसराना ।  
 विद्युआ० ना० पु० श्यारविराष, पैरोंकाभूषण ।  
 विद्युङना० घ० कि० विद्वलना ।  
 विद्युरन० ना० पु० वियाग, उदायगी ।  
 विद्युरना० घ० कि० वियागहोना, उदाहोना ।  
 विद्योना० स० कि० भिन्नकरना, विलगना ।  
 विद्योह० } ना० पु० वियोग, उदायगी, विरह ।  
 विद्योहा० }  
 विद्यौना० ना० पु० निस्तार, सज ।  
 विजना० ना० पु० पला, बना ।  
 विजली० ना० स्त्री० विसुर्, चचला, वज्र ।  
 विज्ञान० यु० अज्ञान, मूर्ख, जा कुछ नहीं  
 जानता ।  
 विज्ञायठ० ना० पु० बाहका गहनाविशेष ।  
 विजार० गा० पु० साइ बैल ।  
 विजाला० यु० वान सयुक ।  
 विजया० ना० स्त्री० भग, वृ ।  
 विभकना० घ० कि० चौकना, डरना, भा  
 जाग बदलनाग ।  
 विभका० यु० चौका, चौकल, भागा, डरामया ।  
 विभकाना० स० कि० चौकना, डरवाना, भ  
 गाघ, न मानना, बदलना ।  
 विट० ना० पु० वीर, विष्टा ।  
 विटचर० गा० पु० शहर, परेला ।  
 विटना० घ० कि० विधुराग, छिपकना, वि  
 जाना ।  
 विटप० ना० पु० वृक्ष का नया बैल, पक्षर,  
 पसरव, शुद्धा ।  
 विगना० स० कि० छिपकाना, विषराना,  
 गिताना ।  
 विठाना० स० द्वि० बैठाना ।  
 विडकम० ना० पु० बटेरादि पर्वी, रामचन्द्रि  
 पायां यया, विडकनधन घरे मदि के वान  
 जावे ।  
 विडरना० घ० कि० भागनाग डरानाग ।

विडार० ना० पु० वनरिलास, भगौड़ा ।  
 विडारना० स० कि० भगाना, विचलाना,  
 उठाया ।  
 विडारी० यु० भगाई ।  
 विडौजा० ना० पु० इन्द्र ।  
 विडई० ना० स्त्री० कमाई, फायदा-उठाया, निः  
 सनीटी ।  
 विस्त० ना० पु० धन, द्रव्य, वस्तु, सामर्थ्य ।  
 वितना० प्र० कि० व्यतीत होना, यु० छोटा  
 ना० पु० वितरित, बालिशत ।  
 विततानी० यु० धरानी, बिल्लानी ।  
 वितरना० स० कि० देना, दान करना ।  
 विताना० स० कि० गँसाना, काटना, व्यतीत  
 करना ।  
 वितीत० ना० पु० व्यतीत ।  
 विस्त० ना० पु० विस, धन, द्रव्य ।  
 विस्तार० ना० पु० विस्तारित, बालिशत ।  
 विस्तिया० ना० पु० बीना, बाय, दुमका ।  
 विथरना० प्र० कि० छिटटना, बिलरना ।  
 विथराना० स० कि० छिटाजा, छिटाना,  
 छिफकाना, बिलराना ।  
 विधा० ना० स्त्री० पीडा, आपदा ।  
 विधुरना० प्र० कि० विधरना, पसरना ।  
 विथुरा० ना० पु० दुःख, पीडा यु० छिष्टाहुआ ।  
 विदरना० प्र० कि० परना, चिरना ।  
 विदा० ना० स्त्री० रत्नसन करना ।  
 विदारन० ना० पु० फाड़ना, तोड़ना ।  
 विदारना० स० कि० फाड़ना, चीरना ।  
 विध० ना० स्त्री० विधि ।  
 विधना० ना० पु० विधाता, ब्रह्मा ।  
 विधाघट० ना० स्त्री० साज, वेद ।  
 विन० अव्य० विना ।  
 विनती० ना० स्त्री० विनय, प्रार्थना, वहाँ  
 करना ।  
 विनना० प्र० कि० विननाया ।  
 विनघाई० ना० स्त्री० विनाई ।

विनसना० प्र० कि० नराना, विगडना ।  
 विना० अव्य० रहित, विन ।  
 विनाई० ना० स्त्री० विनने का काम या पैसा ।  
 विनाना० स० कि० विनवाना, उठाना ।  
 विनाघट० ना० स्त्री० विनने का काम ।  
 विनु० अव्य० रहित, छोड़ि ।  
 विनौना० स० कि० विनती करना-प्रवृत्ता,  
 पूजना, भजना, छाटना ।  
 विनौला० ना० पु० रईका बीज ।  
 विनौली० ना० स्त्री० छेदायोला जो चाकरा  
 मार्ग से बरगमाई ।  
 विन्दू } ना० स्त्री० विदु ।  
 विन्दी }  
 विन्धना० स० कि० उठाना, उकियाना, प्र० कि०  
 छिदना, पसरना ।  
 विघ्ना० स० कि० बुला, जाली विनासना,  
 घुाना ।  
 विपत० }  
 विपता० } ना० स्त्री० विपति, आकस्मिक ।  
 विपनि० }  
 विफनी० प्र० कि० चिहना, दुःखित होना ।  
 मगरा, हठीला या दंडहोना ।  
 विया० ना० पु० बीन ।  
 वियारी० } ना० स्त्री० सायनाल का भोजन,  
 वियालू० } पश्चत् का भोजन ।  
 वियाह० ना० पु० विवाह ।  
 विरकट० ना० पु० बेंगी विशेष, यु० निघका  
 मा उद्यत है ।  
 विरचन० ना० पु० नेरवा आग ।  
 विरद० ना० पु० यरा, स्तुति, बोलनाम धीर,  
 हथियार ।  
 विरदाशलि० ना० स्त्री० सुपरा, स्तुति ।  
 विरमना० प्र० कि० रहना, निरुन्धरना ।  
 विरमाना० स० कि० उठाना, प्रवृत्तना करने  
 नरामे परना ।  
 विरवा० ना० पु० वृष लोग वृष, पीसा ।

विरह० ना० पु० वियोग ।  
 विरहा० ना० पु० वियोग धोवियों का शीति विशेष ।  
 विरहित गु० वियोगित ।  
 विरहिनी० गु० विरहिनी, वियोगिनी ।  
 विरहिया० ना० स्त्री० विरहिनी ।  
 विरही० गु० जो पुरुष अपनी सखनी से भिजदे ।  
 विराजना० अ० कि० प्रकाशित या प्रखलित हाना, स्वार्थीन होके सुख भोग करना, शोभित होना, बैठना ।  
 विराट्० ना० पु० जगद्रूप, ईश्वर, जगद्, राजा - विराज, देशविशेष, राजाविशेष ।  
 विराना० गु० पराया, स० कि० विद्वान्, सताग ।  
 विराम० गु० व्याकुल, स्थिर, मादा ।  
 विरिया० ना० स्त्री० समय, जूत ।  
 विनी० ना० स्त्री० वर ।  
 विल० ना० स्त्री० सर्पादि ज कुर्वा या आ। छद्र वा भडा वा भार ।  
 विकलना० अ० कि० सितकना, कृटना, किसी वस्तुपर जी लगना ।  
 विलस० ना० पु० डुल, अग्रसधता ।  
 विलसना० स० कि० दसगा, निरेतगा, विला कना, अ० कि० सितसगा, अग्रसध हो ।।  
 विलसाय० } अ० कि० अग्रसूचहाय दस  
 विलसि० } मान ।  
 विलग० गु० अलग भिन्न, ना० स्त्री० भिन्नता, पृष्ट, इषा, इराई ।  
 विलगना० अ० कि० अलग २ हाना, पृणा, कृणा, जपना, इतना ।  
 विलगाना० स० कि० भिन्न २ करगा, कौङ्ग, विद्याकना ।  
 विलगार० ना० पु० भिन्नता, विभुराह, अग्रहता ।  
 विलगाही० अ० कि० अलग हानार ।

विलगना० स० कि० चढावकरना, चढना ।  
 विलनी० ना० स्त्री० अमनहारी ।  
 विलपना० अ० वि० रोना, विलापकरना ।  
 विलपाना० स० कि० रोखाना, विलापकरना ।  
 विलघन्द० ना० पु० निपगारा, निस्ताप ।  
 विलथिलाना० अ० कि० व्याकुलहोना, पीधा से डू लितहोना, हायहायकरना, तड़पना ।  
 विलम्ब० ना० पु० दरा, ढील, ढाल मदेत, शिथिलता ।  
 विलम्बना० अ० कि० ढीलकरना, अथकना ।  
 विलम्भ० ना० पु० विलम्ब ।  
 विलम्भना० अ० कि० विलम्बना ।  
 विल्लाना० अ० कि० विलविलाना ।  
 विलसना० } अ० कि० भागा, वृषहोना,  
 } आपन्दित हागु ।  
 विलस्त० ना० पु० वित्त, विलस्त ।  
 विलहरा० ना० पु० पात्र रत्न का पात्र ।  
 विलहरी० ना० स्त्री० पला, छाया विलहरा ।  
 विलाई० ना० स्त्री० विली, कद्दूककड़ी आदि रगने की लाई की वस्तु ।  
 विलाईकद० ना० पु० जूयापि वराप ।  
 विलाना० अ० कि० अलापना पिटाप, भङ्गना, स० कि० अनेप करगा उन्हा, वागा, साना ।  
 विलाप० ना० पु० अलाप, हाहाकार ।  
 विलापना० अ० कि० रागना, कृणा, हाहाकार, वराप ।  
 विलार० ना० पु० मानार, पशुविशेष, विलीग ।  
 विलार० ना० पु० विलार ।  
 विलाकृत् ना० पु० रागिनी विशेष ।  
 विलास० ना० पु० विलास आद ।  
 विलासि० गु० विलासी ।  
 विलस० ना० पु० अलग, इष, विलि, माफ, सुराभाग ।  
 विशासी० गु० सुखभागी, आन डी, सर्प ।  
 विवोचना० स० कि० दखना, विरेलगा

विलोना० } सं कि० मथना मुहना ।  
 विलोचना० }  
 विलौटा० ना० पु० विलार ।  
 विलोटिया० ना० स्त्री० विली ।  
 विल्ला० ना० पु० विलार, विलाप ।  
 विल्ली० ना० स्त्री० विल्लाई, विल्ली ।  
 विल्लीखोटन० ना० पु० विलारनन्द, औषधि  
 विशेष ।  
 विस० ना० पु० विष ।  
 विसखपरा० ना० पु० औषधि पोषाविशेष,  
 जतुपराश जो गोटक सटश होती है ।  
 विसखोपरा० ना० पु० जतुविशेष जू गोह  
 व सटश होता है ।  
 विसन० ना० पु० दोष, पाप, बुराई, काम,  
 कामना ।  
 विसनपन० ना० पु० छटापन, लुचपन ।  
 विसनी० ना० पु० तुना, लम्पट, यु० सुषुप्त,  
 धल, विधोर ।  
 विसनिसाना० अ० कि० बजबजाना, सही  
 हुई वस्तु से शब्द निकलना ।  
 विसमार० ना० पु० औषधि, पोषाविशेष ।  
 विसर० ना० पु० चूक, भूल ।  
 विसरा० यु० भूलाहुआ, चूकाहुआ ।  
 विसराना० स० कि० भुलागा, नहवाना ।  
 विसर्ना० अ० कि० भूलाना भङ्गना ।  
 विसात० ना० स्त्री० मूल, पूनी ।  
 विसाघ० } ना० घा० हुनाए, दुर्गैष ।  
 विसायध० }  
 विसासी० ना० पु० निश्वासपाती ।  
 विसाना० स० कि० मोललना, चतना, प्राण  
 वा, वेश, वापू ।  
 विसाना० स० कि० भुलागा ।  
 विसाह० ना० स्त्री० वस्तु जो मोलली, प्रदीप  
 विसाहना० स० कि० मोल लना ।  
 विसुरना० अ० कि० विसकनना, हुना ।  
 विसैला० यु० निषध, जरीला ।

विस्तर० } ना० पु० विस्तार, बढ़ाव के  
 विस्तार० } बढ़ना, व्यापार, चौड़ाव, आसार,  
 गिस्तुइया० } ना० स्त्री० छिपकला ।  
 विस्तुरे० }  
 विहन० ना० पु० नीग ।  
 विहवल० यु० व्याकुल, भयभीत, विह्वल ।  
 विहरना० अ० कि० रीभना, हुलसना, स० कि०  
 भाग करना, रिक्ताना, पटना ।  
 विहरी० ना० स्त्री० चढ़ा, दामशाह ।  
 विहसना० अ० कि० हँसना ।  
 विहाग० ना० पु० रागविशेष जो भाई रातरहे  
 पर गाया जाता है ।  
 विहान० ना० पु० प्रातः काल, तड़का, भीतगया,  
 विहाना० अ० कि० बाल बाना, विताप,  
 तनना, छोड़ना ।  
 विहाने० अर्थ० सभरे ।  
 विहार० ना० पु० ब्रीडा, लीला, आनन्द  
 देशविशेष ।  
 विहारस्थल० } काड़ा का घर, लीलाभय  
 विहारस्थली० } न, आनन्दगृह ।  
 विहारी० यु० तिलाडा, क्रीडाकर, ना० पु०  
 ) श्रावणचन्द्र जी का एक नाम ।  
 विहारीलाल० ना० पु० श्रीवृष्णचन्द्रजी शतसंदि-  
 कता कविविशेष ।  
 विहन० } अर्थ० रहित, विन, विदूत ।  
 विहना० }  
 वा० अर्थ० भी ।  
 वींढा० ना० पु० लपेटाहुआ, कागस, गड्डा ।  
 वींधना० स० कि० वेरना, छेदना ।  
 वींधा० ना० पु० २० विसा, निगहा ।  
 वींच० अर्थ० मध्य में, अंतर ।  
 वींछी० ना० पु० निच्छ ।  
 वीज० ना० पु० वीर्य, अमर, जड़, मूली, धा-  
 रण, रत्न, बिया

धीजक० ना० पु० बला, बिट्टी, सत्ता, विजय  
सार, झिहरिन ।

धीजना० ना० पु० पत्ता, बत्ता ।

धीजार० गु० विनेला ।

धीजी० ना० स्त्री० जनुविशेष, गुडल ।

धीम्नना० म० कि० टैला, रलना खादगा ।

धीट० ना० स्त्री० पन्टा, थई ।

धीटना० अ० कि० छलकना, टलना विधराग ।

धीटा० ना० स्त्री० पावया का बिटा ।

धीटा० ना० पु० विडवा, एडवा ।

धीटा० ना० पु० लगायादृशा पान ।

धीतना० अ० कि० न्यतीत हाग, पूराहागना  
गुजरना, होवकना ।

धीना० गु० गुजरगया, व्यतीतहोगया, ना० पु०  
नितरित ।

धीन० ना० स्त्री० धीणा, विद्या निराप ।

धीनना० स० कि० बुनना उठाना ।

धीमा० ना० पु० वस्तु को टाटे समेत पहचान के  
लिपे जो पत्ता दियाजाता है टीका हुडा, भाडा  
यह शब्द फारसी है ।

धीर० ना० पु० भाई वार वानका भूषण ।

धीरता० ना० स्त्री० धीरता मईमी, सरता ।

धीरवह्वृष्टी० } ना० स्त्री० लालरगका कंका  
धीरवह्वृष्टी० } विशेष ।

धीरा० ना० पु० मीडा, भाई ।

धीरी० ना० स्त्री० बीडा ।

धीर्य० ना० पु० धार्य, पराक्रम ।

धील० ना० पु० निवृत्तल ।

धीस० गु० दा दहा, २० ।

धीसा० ना० पु० नास नसका कुत्ता ।

धीसी० ना० स्त्री० अनमापनेस परिमाण विशेष,  
गु० बीसफी ।

धीन्दा० ना० पु० विद ।

धीन्दिया० ना० स्त्री० मिठाई वा भाजनविशेष ।

धीन्देला० ना० पु० बुदलसपडका राजपूत

धुकटा० } ना० पु० गल, मरीमर ।  
धुकटा० }

धुकनी० ना० स्त्री० रूप, वृष ।

धुकलाना० अ० कि० धापीयय नकाग,

धुका० ना० पु० धुकाग ।

धुकी० ना० स्त्री० गाती, मृगभर ।

धुजना० ना० पु० गिहानीके कारण स जा परत  
रिगया पहाता है ।

धुजहरा० ना० पु० पार्श्व गम करनेकापार ।

धुम्नना० अ० कि० टगा होना ।

धुम्नना० स० कि० टगाकराग, समभाना सुम्नाना

धुडानी० स० कि० डवाना ।

धुद्धा० गु० बूडा प्राधान मनुष्य ।

धुद्धमस० गु० जो बूटा तरणकी बालचले ।

धुदया० गु० वरग ।

धुदाया० ना० पु० वृद्धावरथा ।

धुडिया० गु० बूदी स्त्री ।

धुडा० ना० पु० काका भूषणविशेष ।

धुत० ना० पु० डगा वा पचीभी खलने में जि  
एपर पाग फेंकत है धूमा ।

धुताना० स० कि० बुर्झाना ।

धुत्ता० ना० पु० ठगाई, छल ।

धुदबुद० ना० पु० बुलजुला ।

धुदबुदाना० अ० कि० बहवकाग ।

धुद ना० पु० पण्डित, चौधामह, चौधावार,  
नवम अवतार ।

धुद्धि० ना० स्त्री० ज्ञान, समझ, बूझ, सोच,  
अरल ।

धुद्धिमान्० गु० ज्ञानान्, समझदार, चतुर,  
पण्डित ।

धुद्धिदा० ना० स्त्री० मदिता, शक्ति ।

धुद्धी० गु० चतुर, समझदार, बुद्धिमान् ।

धुध ना० पु० चौधामह, चतुरपुत्र, चौधादिन  
नवम अवतार जो गया में भया, पण्डित,  
देवता ।

बुधवार० ना० पु० चोधानार ।  
 बुधि० ना० स्त्री० बुद्धि ।  
 बुन्द० ना० पु० विदु शय्य, कतरह ।  
 बुन्ना० स० क्रि० भिना ।  
 बुभुक्षित० शु० भूता ।  
 बुरभसिया० गु० बुदभस ।  
 बुरा० गु० दुष्ट, लया सराव, अकर ।  
 बुराई० ना० स्त्री० दुष्टता, छोट ।  
 बुर्ज० ना० पु० रस्ता, लासा ।  
 बुर्जरा० गा० स्त्री० खियों की गाली ।  
 बुर्जारी० ना० स्त्री० बुर्जेरी ।  
 बुलबुला० ना० पु० बुल्ला ।  
 बुलाक० ना० पु० नाक में का भूषणविशेष ।  
 बुलाना० स० कि० पुकारना, हाक देना, तलब  
 करना ।  
 बुलाहट० ना० स्त्री० अवाहन ।  
 बुहनी० गा० स्त्री० अगमानी, पहिलीविकीना  
 नाम, बयानह ।  
 बुहरी० ना० स्त्री० भुनेहुये जी ।  
 बुहारन० ना० स्त्री० भाङ्गन ।  
 बुहारना० अ० क्रि० भाङ्गना ।  
 बुहारी० गा० स्त्री० भाङ्ग ।  
 बुहारू० ना० पु० भगी ।  
 बूआ० ना० स्त्री० बहिन, पूका माता ।  
 बूई० ना० स्त्री० लकड़ों के डराने का शब्द ।  
 बून्द० ना० स्त्री० विदु, टपका, शु० भला,  
 ऊचा, लडाऊ ।  
 बून्दा० ना० पु० बडाबूद ।  
 बून्दी० ना० स्त्री० टपका घाँसी बूद, मिठाई  
 विशेष ।  
 बूकना० स० क्रि० पीसना, बुकनी करना ।  
 बूका० ना० पु० पूर्ण, छोटापौती, बुकनी ।  
 बूचा० गा० पु० जिसके बान नहीं, बनका ।  
 बूची० शु० स्त्री० बनफटी ।  
 बूझ० ना० स्त्री० समझ, बद्धि ।

बूझना० अ० क्रि० समझना, जानना ।  
 बूट० ना० पु० हराचना, तरकारी ।  
 बूटा० ना० पु० पोषा, वृष, फूल बपके का ।  
 बूटी० ना० स्त्री० वनस्पति, श्रीपथि, छोटा बूट,  
 निरवा, भग भिजया ।  
 बूड़ना० अ० क्रि० डूबना ।  
 बूढमरना० अ० क्रि० डूबमरना ।  
 बूढिया० ना० पु० डूबनेहारा ।  
 बूत० } गा० पु० बल, सामर्थ्य, पीरप,  
 बूता० } ताकत ।  
 बूवू० ना० स्त्री० बहन, बीबी ।  
 बूर० गा० स्त्री० भूमी, खिलका ।  
 बूरा० गा० स्त्री० खाक, लकड़ी की बुफनी,  
 चूर्ण, यह शब्द फारसी का है ।  
 बे० अर्थ० अर ।  
 बेंट० ना० पु० हथपडा, दस्ता ।  
 बेंडा० पु० शु० टेदा, बाका ।  
 बेंधना० स० क्रि० गूथना, जुनना ।  
 बेग० ना० पु० बेग, जार ।  
 बेगवान्० शु० बेगवान्, जोरवाला ।  
 बेगार० ना० पु० बरवस काम कराना ।  
 बेगारी० ना० स्त्री० मोटिया, बगारकर्ता ।  
 बेगी० शु० बेगी ।  
 बेंग० ना० पु० भेदक, भक ।  
 बेंचना० स० क्रि० बिकाना, मोल लेकरदेना ।  
 बेचू० शु० बचनेवाला ।  
 बेजू० ना० पु० जंतुविशेष ।  
 बेम्भा० ना० पु० निशाना, जिसपर तीर वा  
 गाली का अभ्यास करते हैं ।  
 बेटा० ना० पु० पुत्र, लडका ।  
 बेटी० ना० स्त्री० पुत्री कन्या ।  
 बठन० ना० पु० बैठन, लपेटन ।  
 बड० ना० पु० बासा, बियावर, अम्बका ।  
 बेडिया० ना० पु० जातिविशेष ।  
 बेड़ी० ना० स्त्री० पैरकी, जिसकेरीसे लेख  
 संचित है ।

घेड़ना० स० क्रि० वाडनांधना, छेकना/ हका  
रना, लामजडाना, छीनखेना, कमाना,  
धराना ।

घेत० ना० पु० वन, छड़ी, धाकारा ।

वेद० ना० पु० वेद ।

वेदगिरा० ना० पु० वेदवाण ।

वेध० ना० पु० धद, सरास ।

वेधक० गु० धदोवाला ।

वेधटक० गु० पिपडक ।

वेघना० स० क्रि० धदना ।

वेधमुख्या० ना० स्त्री० कस्तूरी ।

वेघा० ना० पु० जड़ा, सराभूल ।

वेधी० ना० पु० वेधक ।

वेन० ना० स्त्री० बाधरी, वशी ।

वेना० ना० पु० पसा, सस खस ।

वेनी० ना० स्त्री० अडा, चागे, भक्वाडकाएक  
काठविशेष ।

वेर० ना० पु० वृष वा० उसरा फलविशेष, ना०  
स्त्री० वार, बिलम्ब, मैला ।

वेरवेर० अ य० धारंवार ।

वेरभयानक० ना० पु० प्रलयकी रात, मृतक  
की रात ।

वेरी० ना० स्त्री० बरका वृक्ष ।

वेरे० ना० पु० नाव जहाज ।

वेल० ना० पु० दिक्कल, पुणविशेष बेलि ।

वेलन० ना० पु० रागी बलने की वस्तु ।

वेलना० स० क्रि० फलाना० ना० पु० बेलन ।

वेलनी० ना० पु० टर्ही ।

वेलवृटा० ना० पु० भेड़ी, लनाविशेष ।

वेलाना० ना० पु० पुन विशेप, कगाडा, वेला ।

वेलि० ना० स्त्री० बेलि, लता जो पेशा आपस  
सका न हासके ।

वेसन० ना० पु० घनेरा घोग ।

वेसनी० ना० स्त्री० वेसनसे बनी हुई ।

वेसनौटी० ना० स्त्री० वेसनकी रोगी ।

वेसर० ना० स्त्री० नथनी ।

वेसरा० ना० पु० पत्नीविशेष ।

वेसवा० ना० स्त्री० वश्या ।

वेह० ना० पु० छिद्र, सात ।

वेहड़० ना० स्त्री० पृष्ठी जहाजकी नीचीही ।

वेगन० ना० पु० भाग, तरकारीविशेष ।

वेगनी० } गु० रग जा वेगन के समान हो,

वेजनी० } विगल ।

बेंदी० ना० स्त्री० पिकुली ।

बैठक० ना० स्त्री० } बैठनगारभान, चोपाइ, बट

बैठका० ना० पु० } नेकी चाल वा रीति ।

बैठना० अ० क्रि० आसन मारना ।

बैठवा० गु० चपटा, चीप ।

बैठा० ना० पु० चप्पू, डाइ ।

बैठाना० } स० क्रि० स्थापन कराना ।

बैठालना० } स० क्रि० स्थापन कराना ।

बैतरा० ना० स्त्री० साठिविशेष ।

बैतरणी० ना० स्त्री० गरकमार्ग की नदी ।

बैदिक० ना० पु० वेदिक, वेदका जानेवाला ।

बैन० ना० पु० वच्चा, वापी, बनसी ।

बैनतेय० ना० पु० इनताक पुत्र गरुड, धरुण ।

बैना० ना० पु० माथेपरका भूषणविशेष, पक  
वाग जो चिराइ आदि में मान्ते हैं, व्याहारी,  
पना ।

बैपारि० ना० पु० व्यापार, निजारत ।

बैपारी० ना० पु० सीदागर, तामिर, नोपारी ।

बैर० ना० पु० बर, दुशामन ।

बैरर० ना० स्त्री० कर्मी, ध्वजा, पताका ।

बैरामी० ना० पु० बैरागी, जिसकी बैराग्यह ।

बैल० ना० पु० श्रम, बरध ।

बैस० ना० पु० आमुर्दा, वय, वैश्य, राजपूतों में  
जातिविशेष ।

बैसन्दिर० ना० पु० आग ।

बैसाहु० गु०, आसकती, मवर्त्सामार, घर में  
बटनहाता ।

बैसाई० ना० स्त्री० बान का नाम, बान का  
समय ।

घोआना० स० कि० बीमडलाना, वसाना ।  
 घोआरा० ना० पु० बोनो का समय ।  
 घोँट० ना० पु० डाट, डटा, डाली ।  
 घोक्र० } ना० पु० बकरा, बक ।  
 घोक्रडा० }  
 घोकरा० }  
 घोकरी० ना० स्त्री० बकरी ।  
 घोच० ना० पु० मगर, कुम्भीर ।  
 घोचा० ना० पु० पालकी विशेष, रूचा ।  
 घोभ० ना० पु० भार, लादी ।  
 घोभना० स० कि० लादना ।  
 घोभल० } गु० लदा, भरा ।  
 घोभेल० }  
 घोटी० ना० स्त्री० मासरा छोटा डकड़ा ।  
 घोतू० ना० पु० बकरा ।  
 घोदली० ना० स्त्री० भाली, गेगली ।  
 घोदा० गु० निर्बल, आसक्त, भोला, गेगला ।  
 घोदा० गु० बुद्धिमान ।  
 घोध० ना० पु० ज्ञान, मति, मनौती, धारन ।  
 घोधरु० ना० पु० जिससे ज्ञानही बाधकर्ता ।  
 घोधना० स० कि० फुसलाना, समझना ।  
 घोना० स० कि० बीजडलना ।  
 घोनी० ना० स्त्री० बान का समय ।  
 घोर० ना० पु० पानच क उपरु ।  
 घोरा० ना० पु० गान, गन्या, लाथा, टाट का थला ।  
 घोरी० ना० पु० रामधनुष चावल विशेष ।  
 घोल० ना० पु० शब्द गीतका शब्द, बान ।  
 घोल्चाल० ना० स्त्री० वात शीत ।  
 घोलता० ना० पु० प्राण, नीर, बालो की शक्ति ।  
 घोलना० अ० कि० यातकरना, बहना, बचना ।  
 घोलवाला० ना० पु० आरोग्यविशेष ।  
 घोली० ना० स्त्री० वर्ष, भाषा बान ।  
 घोह० ना० पु० बेलि, लता ।  
 घोहना० } अ० कि० लिपना, पूषना,  
 घोहियाना० } गहर, रथा ।

घोड़ी० ना० स्त्री० बलि लता ।  
 घोड़ार० ना० स्त्री० वायुसहित बुद्धि वृद्धि वा जा  
 वायु क भक्कड से बूरे धरम चली आती है ।  
 घोड़० ना० पु० बुधका मतानुसारी ।  
 घोना० गु० छेया, वावरा, नाय ।  
 घोनी० ना० स्त्री० टिगनी, बाने का समय वा काम ।  
 घोरहा० गु० बाराहा ।  
 घोरा० गु० ग्या, मूत्र ।  
 घोराणा० अ० कि० बानला होना ।  
 घोरापन० ना० पु० सिङ्गपन ।  
 घोराहा० गु० भावला, सिङ्गी ।  
 घोला० गु० पोपला, घुर्ला ।  
 घोहा० गु० पथरीला ।  
 घोहाई० ना० स्त्री० जिस स्त्री को गर्मीना रोमैहै ।  
 घ्याना० ना० पु० परवादि का प्रसव ।  
 घ्याना० अ० कि० जन्माना, उभाना ।  
 घ्याह० ना० पु० निराह ।  
 घ्याहता० गु० विचारिता ।  
 घ्याहनयोग० गु० जो घ्याहने के योग्य है ।  
 घ्याहना० स० कि० निराह करना ।  
 घ्याहा० गु० निराहित, जिसका निराहहामया ।  
 घ्यांगा० ना० पु० } चमड़ा छीलने का अर्थ ।  
 घ्यागी० स्त्री० }  
 घ्यात० ना० पु० गदन, डील, रीति, ढव ।  
 घ्यातना० स० कि० षड का छलियाया या  
 बगाना ।  
 घ्यौरा० ना० पु० भद, वृत्तात्, बरतान, बतर ।  
 घ्योपार० ना० पु० व्यापार, विजारत सोदागरी ।  
 घ्योपारी० गु० व्यापार त्तानिर, सोदागरी,  
 दराना ।  
 घ्यु० ना० पु० परमेस्वर, जगत् का कारण ब्रह्मा,  
 वत्, दवता जीव, इत् ।  
 घ्युस्य० ना० पु० ब्रह्मानी का अर्थ विशेष ।  
 घ्युस्यु० ना० पु० शरत्त, गृत ।



ब्रह्मगिरा० ना० स्त्री० आकाशवाणी, ब्रह्मवाणी ।  
ब्रह्मघोष० ना० पु० जहाँ वेद पढ़ाया वा पढ़ा  
जाता है, वेदपाठशाला ।

ब्रह्मचर्य्य० ना० पु० ब्रह्मचारी का व्यवहार ।  
ब्रह्मचारी० ना० पु० प्रथमाश्रमी, ईश्वरपू  
जक ।

ब्रह्मदारु० ना० पु० शहदूत ।  
ब्रह्मदैत्य० ना० पु० ब्रह्मराक्षस ।  
ब्रह्मन० ना० पु० ब्राह्मण ।

ब्रह्मपादप० ना० पु० दालका वृक्ष ।  
ब्रह्मपुत्र० ना० पु० नदविशेष, ब्रह्मसा पुत्र ।  
ब्रह्मघान० ना० पु० ब्रह्मार्ज ।

ब्रह्मभवन० ना० पु० ब्रह्मका स्थान ।  
ब्रह्मभुवन० ना० पु० ब्रह्मका लारु ।  
ब्रह्मभोज० ना० पु० ब्राह्मणों को भोजनदेना ।

ब्रह्ममेखला० ना० स्त्री० मूल ।  
ब्रह्मरन्ध्र० ना० पु० मस्तकका मध्यस्थान ।  
ब्रह्मराशि० ना० स्त्री० ब्रह्मकी राशि जा सहस्र ।  
चतुर्वर्गी इत्यादि ।

ब्रह्मराक्षस० ना० पु० प्रेत विशेष, लूक ।  
ब्रह्मवाद् ना० पु० वेदान्त कथन ।  
ब्रह्मवादी० ना० पु० वेदान्ती ।

ब्रह्मविचार० ना० पु० वेदान्तविद्या, अध्यात्म  
ज्ञान ।  
ब्रह्मलोक० ना० पु० लोकविशेष जहा ब्रह्मजी  
का निवासस्थान है ।

ब्रह्मध्वज० ना० पु० वेद ।  
ब्रह्मसूत्र० ना० पु० यज्ञोपवीत, जनऊ ।  
ब्रह्महत्या० ना० स्त्री० ब्राह्मणकी हत्या ।

ब्रह्मज्ञान० ना० पु० ईश्वरब्रह्मज्ञान, परमज्ञान,  
अध्यात्मज्ञान, अध्यात्मज्ञान ।

ब्रह्मा० ना० पु० देवविशेष जा पूर्व में है वा उस  
देश के राजा की जातिविशेष विमान, सृष्टि  
कर्ता ।

ब्रह्माचारी० ना० पु० ईश्वरपूजक, ब्रह्मवि  
चारी ।

ब्रह्माण्ड० ना० पु० जगत्, सत्तार, शिरवीराह ।  
ब्रह्मानन्द० ना० पु० निज स्वरूपानन्द, आ-  
त्मानन्द ।

ब्रह्मार्थी० ना० स्त्री० सरस्वती ।

ब्रह्मण० ना० पु० प्रथम वर्ष ।

ब्रह्मणी० ना० स्त्री० ब्राह्मण की स्त्री ।

ब्रह्मण्य० ना० पु० ब्राह्मण का धर्म, ब्राह्मणों की  
समा, सातवा ग्रह ।

ब्रह्मि० ना० स्त्री० सहिताविशेष, सरस्वती, नासा  
श्रीषधि ।

ब्रह्मय० ना० पु० धन्वन्मा, आश्चर्य्य, ब्राह्मणों  
की समा ।

ब्रह्मयमुहूर्त्त० ना० पु० सूर्योदय से पहले चार  
घड़ी पौह, पहा ।

[ भ ]

भ० ना० पु० नक्षत्र, राशि ।

भैवर० ना० पु० भौरा, चक्र ।

भवर० } ना० पु० शक्ति, सत्ता, प्रभार ।  
भवरा० }

भभेरी० } ना० स्त्री० तीवरी, पदगानिरोध ।  
भवारी० }

भवोरना० स० कि० काटना, काटताना ।

भक्तसुी० ना० स्त्री० पृथ्वी में शुद्ध, धधरी ।

भक्त्या० य० निर्दिष्टि, मूर्त्त, अहमक ।

भक्त्याना० य० निर्दिष्टि हाना, उल्लू हो  
जाता ।

भक्तोसना० स० वि० खालेगा, दुकसना ।

भक्त० ना० पु० अर्चक, सधक, उपासक, भात,  
य० धर्म, चाहक ।

भक्तत्सल० ना० पु० भक्तप्रिय, भीमवत् ।

भक्ता० ना० पु० भक्त ।

भक्ताई० ना० स्त्री० भगताई, सवकाई, भक्ति,  
धर्म ।

भक्ति० ना० स्त्री० मन, धर्म, श्रद्धा, प्रीति, सेवा

भग० ना० स्त्री० यात्री, सुर, सुभाग, एश्वरी  
दिशुण, ना० पु० धर्म, भागवते यथा, धाना

विधाना वरुणोपर्यमा सविता भग ।  
 भगण० ना० पु० ध्यस्त्रीगणविशेष, जिसमें  
 आदिका अक्षर दीर्घ होता है यथा, राघव ।  
 भगत० ना० पु० भक्त ।  
 भगतन० ना० स्त्री० भगतनी स्त्री वा वेश्या ।  
 भगताई० ना० स्त्री० भगतपा ।  
 भगतिया० ना० पु० भैया, वधिक, राधा,  
 जाति ।  
 भगन्दर० } ना० पु० युद्ध में रोग विशेष ।  
 भगन्धर० }  
 भगनी० ना० स्त्री० बहन, भगिनी ।  
 भगर० ना० पु० भगत ।  
 भगल० ना० पु० छल, कपट, परेव, इद्रजाल ।  
 भगवत० ना० स्था० भागवत ।  
 भगवती० ना० स्त्री० माया, आदिराति, ईश्वरी ।  
 भगवन्त० ना० पु० भगवान् ।  
 भगवा० ना० पु० गहना धरन ।  
 भगवान्० ना० पु० ऐश्वर्यादि गुणसयुक्त, तेजस्वी,  
 प्रतापवान्, ईश्वर ।  
 भगाना० सं० क्रि० हँकावा, चलाना, दूररना ।  
 भगीरथ० ना० पु० राजा विशेष जो श्रीगगनी  
 का स्वर्ग स लाया ।  
 भगेल० ना० स्त्री० पराजय, ना० पु० भ्रष्टा ।  
 भगोडा० ना० पु० भागने द्वारा ।  
 भगुल० ना० पु० दूत, हरकारह, भण्ड ।  
 भगू० ना० पु० भगोडा ।  
 भग्न० पु० पराजित, नाशित, टूटा फूटा ।  
 भङ्कार० ना० पु० शब्द करना, आदिका शब्द ।  
 भग० ना० पु० खण्डन, तोड़, खहर, पराजय ।  
 भाग पु० भग्न ।  
 भगडा० ना० पु० खड़ी विशेष, भगरान् ।  
 भगडी० पु० भाग पीनेद्वारा ।  
 भगन० ना० स्त्री० भनी की स्था ।  
 भगना० ना० स्त्री० मछली विशेष ।  
 भगा० ना० स्त्री० भाग, पत्नी विशेष ।  
 भगार० ना० पु० भगरा, भगदा ।

भगी० ना० पु० भगिनी, मिहतर, घड़वा, गु०  
 गाराव, भेटनेवाला ।  
 भगेरन० ना० स्त्री० भग की बेचनेद्वारा ।  
 भगेरा० ना० पु० भग बेचनेद्वारा ।  
 भगेला० ना० पु० भग के लक्षार्थों का अर्थ  
 विशेष ।  
 भचक० गु० धाववा, विस्मित, अचम्भित ।  
 भचकना० अ० क्रि० अचम्भित वा विस्मित  
 होना ।  
 भचक्र० ना० पु० दीरह, चालभर, निजगति  
 पर्यंत ।  
 भजन० ना० पु० अर्चा, पूजा, सेवन और  
 गोविधि ईश्वर का यशमाना ।  
 भजना० सं० क्रि० अर्चा या पूजा का सेवा,  
 जप करना अ० क्रि० भागना ।  
 भजनी० गु० भजन करनेद्वारा ।  
 भजनीक० ना० पु० अर्पक, मान करनेद्वारा  
 भजाभि० सं० क्रि० भजताह, ध्यावताह ।  
 भजजाना० अ० क्रि० भागजाना ।  
 भज्जि० अ० क्रि० भागकर ।  
 भज्य० अ० क्रि० भागके वाटके ।  
 भञ्जन० ना० पु० खण्डन, मारन तोड़न ।  
 भञ्जाना० सं० क्रि० तोड़ना, भुनाना, बर्द  
 लाना ।  
 भट० ना० पु० याथा, शरवीर, धिकार,  
 तनूर ।  
 भटई० ना० स्त्री० भट की स्तुति, भट का  
 काम ।  
 भटकना० अ० क्रि० भूलजाना, भ्रमना चू  
 कना, टपना ।  
 भटका० पु० भूलाहुया भूला, चूका, भ्रमित ।  
 भटभेरा० ना० पु० मिलाप, मिलान, मूलावत ।  
 भटवान० सं० क्रि० बहकावा भुलाना, भङ्ग  
 काना ।  
 भटकीला० अ० जिसमें भटका पायाजाये ।

भटाई० ना० स्त्री० बहादुरी, लड़ाई, मर्द ।  
 भट्ट० ना० स्त्री० सखी, निधासिंह प्रभारा, दलिके  
 भट्टको में लट्ट हैरही शिनायप आदि पीत पट्ट से  
 घगपै बालदाही है ।  
 भट्ट० ना० पु० विद्यावान्, परिदत्त, दक्षिणी ब्राह्म  
 णों का आस्पद, भट्ट ।  
 भट्टाचार्य्य० ना० पु० पृथिवी में जो सब से  
 बड़ा ज्ञानवान् बगाले के ब्राह्मणों का उपनाम वा  
 आस्पद ।  
 भट्टी० ना० स्त्री० बूढ़ा विशेष ।  
 भट्टियारपन० ना० पु० भट्टियार का काम ।  
 भट्टियारा० ना० पु० सराय का भाड़ा उगाहने  
 हारा, जाति विशेष ।  
 भट्टियारन्० ना० स्त्री० भट्टियारे की स्त्री ।  
 भट्टियाल० गु० जो नदा की धारापर से बहे ।  
 भट्ट० ना० पु० बही नाम विशेष ।  
 भट्टक० ना० स्त्री० चटक, भलक, घबराहट,  
 झुझक, चौक ।  
 भट्टकना० अ० कि० झिझकना, चौकना, आच  
 उठना, जल उठना ।  
 भट्टकाना० स० कि० डराना, भयकाय आच  
 करना, लूका लगाना, चौकाना ।  
 भट्टकी० ना० स्त्री० चण्डी चमक, आच, चौक ।  
 भट्टकीला० गु० चण्डीला, चमकाला, चौकिल ।  
 भट्टकेल० गु० जगला, अनपदिधान, चौकना ।  
 भट्टभट्टिया० गु० निष्कप, सधा ।  
 भट्टभूजन० ना० स्त्री० भुजन ।  
 भट्टभूजा० ना० पु० भुनी, भुजवा ।  
 भट्टरिया० ना० पु० टग, मद्र, जाती ।  
 भट्टसारी० ना० पु० भाड़ ।  
 भट्टिहा० गु० चोर, चाने हारा, विनोना, नि  
 । लडन ।  
 भट्टिहारी० ना० स्त्री० भट्टिहापन, रामापणे यथा,  
 सो दशरथीरा स्वान भी नार्, रीत उत चिनै चला  
 भट्टेहारी ।  
 भट्टवा० ना० पु० कुटा, वेरयाका भागा वितादि ।

भट्टवाई० ना० स्त्री० कुटनापन ।  
 भट्टैत० } ना० पु० भाड़ादेनेहारी प्रना ।  
 भट्टैती० }  
 भणन० ना० पु० कथन ।  
 भणित० गु० कथित, कहाहुआ, कथिता ।  
 भणितका० ना० स्त्री० भाग, बँगन ।  
 भण्ड० ना० पु० भाड, प्रदत्त ।  
 भण्डा० ना० पु० मन्त्र भागी, अर्द्ध ।  
 भण्डार० ना० पु० ढोडा, खात बखार ।  
 भण्डारा० ना० पु० शोरी, वा सन्यासी, वा  
 उदारियों का योनार वा निमाना, भोजन ।  
 भण्डारी० ना० पु० भण्डारे का रक्षक, रोह  
 दिया, रसोया ।  
 भण्डेरिया० ना० पु० भण्डरिया ।  
 भण्डेला० ना० पु० भाड ।  
 भण्डोना० ना० पु० निन्दा, फुफड ।  
 भतरा० ना० पु० भतार, पति ।  
 भतरौड० ना० पु० मथुरा वृदावन के मथ्य  
 स्थान विशेष ।  
 भतार० ना० पु० भतार, पति, स्त्री, कर्त ।  
 भतीजा० ना० पु० भती का बेटा ।  
 भतीजी० ना० स्त्री० भाई की कथा ।  
 भत्ता० ना० पु० भात ।  
 भद्द० ना० स्त्री० धप्पा, धडाका, कुदरा ।  
 भद्दभद्द० ना० पु० टुकके फल गिरने का वा;  
 मनुष्य क चलनेका शब्द ।  
 भद्दभद्दाना० स० कि० मारने से जो शब्द नि  
 बलता है, बारवार मारना ।  
 भद्दभद्दाहट० ना० स्त्री० भद्दभद्द ।  
 भद्दाक० ना० पु० धडाका, फटाक ।  
 भद्दाका० ना० पु० धडाका शब्द ।  
 भद्देस० } गु० जो धप्पा नही कुडाल, भोडा,  
 भद्देसल० } अनाही रामायणे यथा, भक्षित भ-  
 दमस्तु भलिउरणी ।  
 भद्दा० गु० निर्धुद्धि, उल्लू, भोडा ।  
 भद्द० ना० पु० भागमागी, मूँध सदिन शिरका

मुण्डन, कल्याण, वदती, नवखण्डों में से एक का नाम गु० मला, धेष्ठ, भाग्यवान् ।

भद्रक० ना० स्त्री० प्रास, लाभ, स्वभाव, सुन्दरता, भलाई ।

भद्रकाली० ना० स्त्री० दुर्गादेवी ।

भद्रकाष्ठ० ना० पु० देवदारु ।

भद्रचन्दन० ना० पु० जवासा ।

भद्रजयव० ना० पु० इन्द्रजी ।

भद्रपर्णिका० ना० स्त्री० कम्भारी, गन्धपसार ।

भद्रपर्णी० ना० स्त्री० गन्धपसार ।

भद्रमस्त० ना० पु० नागरमीथा ।

भद्रवती० ना० स्त्री० कायफल ।

भद्रवृक्ष० ना० पु० गोखरू ।

भद्रश्रिय० ना० पु० चन्दन ।

भद्रहोना० अ० कि० मूँछसहित शिरमुँहाना ।

भद्रा० ना० स्त्री० अशाकुन समय, पक्षी दूसरी सानवीं बारहवीं तिथि, कम्भारी, गन्धपसारन, कुण्डी, कल्याणकारिणी, ना० पु० पक्षी विशेष ।

भद्राक्ष० ना० पु० कृत्रिमरुद्राक्ष ।

भद्रिका० ना० स्त्री० दशाविशेष, कल्याणी ।

भद्री० ना० पु० इक्षौत्, सामुद्रिकी, कायफल ।

भद्रोदनी० ना० स्त्री० खिरहटी ।

भयकना० अ० कि० क्रोषित होके दौड़ना, घाग लगना, लोटे आदि से पानी गिरने का शब्द ।

भयका० ना० पु० बड़े मुसका पात्रविशेष ।

भवकाना० अ० कि० सुलगाना, जलाना, उकसाना, सिनाना, एडमारना ।

भवकी० ना० स्त्री० धमकी ।

भवम्ह० ना० पु० दर, सटका, भभभ ।

भक० ना० स्त्री० अचानक जो आंच आदि की कुवास आजावे ।

भभकना० अ० कि० सनसलाना, बुलबुलाउठना, रसबलाना ।

भभर० ना० पु० दर, सटका ।

भभराना० अ० कि० सटका होना, सूजना ।

भभरि० कि० डरकर, घबड़ाकर ।

भभूका० ना० पु० व्योति, आंच; एकाएक घाग जलउठना, गु० साल, सुन्दर, भङ्गकौला ।

भभूत० ना० स्त्री० भ्रम, विभूति ।

भभय० ना० पु० डर, शङ्का, शौक ।

भभयकार० } गु० भयानक, डरीनी मूर्ति ।

भभयकर० } गु० भयानक, भयंकर ।

भभयचक० गु० भयंकरके जो व्याकुल हो ।

भभयद० } गु० भयानक, भयंकर ।

भभयदायक० } गु० भयानक, भयंकर ।

भभयभीत० गु० शोक्ति, डराक, डराहुया ।

भभयमान० गु० डरपोक, शोक्ति ।

भभया० ना० पु० भाई, कि० हुआ ।

भभयातुर० गु० भयचक, भयप्रस्त ।

भभयानक० गु० भयंकर, जिसको देखकर डर लगे, डरीना, रस विशेष ।

भभयापा० ना० पु० अचनाहत, भाईपन ।

भभयावना० } गु० भयंकर, भयानक ।

भभयावहा० } गु० भयंकर, भयानक ।

भभर० गु० पूर्ण, पूरा, सब ।

भभरका० ना० पु० जब बरीपर पानी दिया उस का नम ।

भभरकाना० अ० कि० बरीपर पानी डालना ।

भभरण० ना० पु० पोषण, पालन, धारण ।

भभरणी० ना० स्त्री० दूसरा नक्षत्र, सांपभयक, जीव विशेष ।

भभरत० ना० पु० अनेक धातु का मेल, राजा, विशेष, जिसके नाम से हिन्दुस्तान भरतखण्ड प्रसिद्ध है, रामचन्द्रजी के भाई ।

भभरतखण्ड० ना० पु० हिन्दुस्तान ।

भभरतपुर० ना० पु० शरतेन देशका एक नगर विशेष ।

भभरदाज० ना० पु० मुनि विशेष, संतनपक्षी ।

भभरदाजसुत० ना० पु० प्रोधाचार्य ।

भभरने० अ० तक, तसक ।

भरना० स० कि० पूर्ण करना, क्षोपना, सेतना,  
धातु चंगा होना, निकालना, फटे वस्त्रों पर  
ढालना, ढालना ।

भरती० ना० स्त्री० बाना, भरथी ।

भरिपाना० घ० कि० दामपाना, पलपाना ।

भरिपूर्ण० घ० सहाय ।

भरभराना० घ० कि० झूना, एकएक उठना ।

भरभरी० ना० स्त्री० पून, फुलाव ।

भरभाङ्ग० ना० पु० ऊटनीला, छोटा पौधा  
विशेष ।

भरम० ना० पु० मय, भ्रम, साध ।

भरमगमाना० घ० कि० असातहोना, अपयशी  
होना ।

भरमाना० स० कि० पुसलाना, व्याकुलकरना,  
किराना, घुमाना ।

भरवाना० स० कि० पूर्णकराना ।

भरा० घ० पूरा ।

भराना० स० कि० भरवानी, घोड़ापैदीलगाना ।

भराघट० ना० स्त्री० वस्तु जिससे दूसरी वस्तु  
भराते हैं ।

भरित० घ० पालाहुधा, भराहुधा ।

भरिता० घ० भरिहुई ।

भरी० ना० स्त्री० तोला, वारह मासों का परिमाण ।

भरु० ना० पु० बोक ।

भरैत० ना० पु० मईत ।

भरोटा० ना० पु० तुषादि का बोझ ।

भरोसा० ना० पु० धारा, आसारा, भरोना ।

भरुंगे } ना० पु० श्रीमहादेवनी, रामचन्द्रिकाया  
भरुंगे } यथा, अदेवदेव जेयभीतरुमा ले ति  
ये, अमेयतेन भरुंगे भर्गुवेरा देखिये ।

भरुज० ना० पु० भूतने का काम ।

भरुत्त० ना० पु० निनपति, भर्ता, स्वामी, विवाहि  
तपति ।

भरुत्ती० ना० पु० पनि, स्वामी, मासिक, प्रतिपा  
सक, तरकारी जो भासादि भूतके बताते हैं ।

भरुत्तीर० ना० पु० भर्ता, राक्षी ।

भरुत्तिया० ना० पु० ठेरा, कठेरा ।

भरुत्ती० ना० स्त्री० समाधि, भरायट, बड़ा ।

भरुत्तना० ना० स्त्री० तिरस्कार ।

भरुत्त० ना० पु० सुख, यथा, तपनीयशात्रुभगा-  
नयभरुत्तुत्त, इयमर ।

भरुत्त० ना० पु० नदी का भँवर, भीरा ।

भरुत्त० गु० भला, ना० पु० शोर ।

भरुत्तका० ना० पु० सोने की टिकली जो नथ में  
लगती है ।

भरुत्तमनुसाई० }  
भरुत्तमनसात० } ना० स्त्री० सद्गुण, अर्थात् ।  
भरुत्तमनसी० }

भरुत्त० गु० अर्थात्, शीलवन्त, चंगा, धर्मी, अद्भुत,  
सहला ।

भरुत्तई० ना० स्त्री० अर्थात्पन, सेम, कुसाल, ए  
यरा, सुकृद ।

भरुत्तचगा० घ० अर्थात् ।

भरुत्तक० ना० पु० भाङ्ग, रीख ।

भरुत्तल० ना० पु० भलक, भाङ्ग ।

भरुत्तक० ना० पु० लम्बे, पेंने, तेत ।

भरुत्तल० }  
भरुत्तली० } ना० पु० भाङ्ग, रीख ।  
भरुत्तलक० }

भरुत्तल० }  
भरुत्तलक० } ना० पु० रीख, भाङ्ग, तरकारी ।

भरुत्तकप्रिय० ना० पु० स्योना वृक्ष ।

भरुत्त० ना० पु० संगार, शिवनी, कल्याण, भय,  
ज महोना ।

भवहरी० ना० पु० भाषका दरी ।

भवन० ना० पु० घर, मकान ।

भव्या० ना० स्त्री० पार्वती ।

भव्यानी० ना० स्त्री० पार्वती ।

भाषापधरु० ना० पु० भोच, भाषपुष्पिक ।

भवाणेश० ना० पु० सत्तारसागर ।

भवापण० ना० पु० शिवहेतु देना ।  
 भविक० ना० स्त्री० कुशल, चेम, कल्याण ।  
 भवितव्य० शु० होनहार, जो होवेगा ।  
 भवितव्यता० ना० स्त्री० प्रारब्ध, होनहार ।  
 भवर० ना० पु० पापी की गाडि, भारा ।  
 भवावर्त्त० ना० पु० सत्कार का भँवर, जगत्  
 भर ।  
 भविष्य० } शु० होनहार, जो कुछ होवेगा,  
 भविष्यत्० } आनहारा समय ।  
 भविष्यत्पत्रा० } ना० पु० भविष्यत् कहने  
 भविष्यत्पत्रा० } द्वारा, आगमज्ञानी ।  
 भवैया० ना० पु० कथक, राधा नर्तक ।  
 भव्य० शु० भाग्यवान्, योग्य, कल्याण, होनी,  
 ना० पु० कमरत वृक्ष ।  
 भप० } ना० पु० भोजन, भक्षण, खाण ।  
 भपण० }  
 भस० ना० पु० रात, छाक ।  
 भसकना० अ० क्रि० गिरना, पड़ना, फाटना ।  
 भसना० अ० क्रि० तैरना, बहना ।  
 भसभसा० शु० पिलपिला ।  
 भसम० ना० पु० भस्म, रात ।  
 भसाना० सु० क्रि० बहाना, चलाना ।  
 भस्म० ना० स्त्री० विभूति, रात ।  
 भस्मी० ना० पु० शिवजी, गु० झाड़ी ।  
 भस्मीभूत० शु० जलगया, भस्महागया ।  
 भहराना० अ० क्रि० कापना, लड़काना, ढग  
 मगाना ।  
 भक्ष० ना० पु० भोजन, चर्बण ।  
 भक्षक० शु० खानेहार ।  
 भक्षण० ना० पु० भोजन, चर्बण ।  
 भक्षी० शु० भक्षक ।  
 भद्रप० शु० जो खाने के योग्यहे, खाण ।  
 भा० ना० स्त्री० शोभा, शक्ति ।  
 भांग० ना० स्त्री० घृही, विजय, भृग ।  
 भांज० ना० स्त्री० छँट, बल, रस्ती बनानेका काम ।

भांजना० स० क्रि० फिराना, घुमाना, छँटना,  
 हिलाना, चमकाना ।  
 भांजा० ना० पु० बहारा पुत्र ।  
 भांजी० ना० स्त्री० बहन की कन्या, हरन,  
 तुक्सान ।  
 भांट० ना० पु० श्लेषि, पीधा विशेष ।  
 भांटा० ना० पु० बैंगन, तरकारी विशेष ।  
 भांड़० ना० पु० हण्डा, बहुरूपिया, स्वागी ।  
 भांड़ना० स० क्रि० गालीदेना, बिगाड़ना ।  
 भांड़ू० ना० पु० मातीका बड़ा बर्तन, सामग्री,  
 जो रुपया किसी की पृथ्वी में गड़ाहुआ मिले,  
 पकथा, दफानह ।  
 भांडीर० ना० पु० अन्नर का वृक्ष, स्थानविशेष ।  
 भांड़ैती० ना० स्त्री० बहुरूप्य, स्वाग ।  
 भांति० ना० स्त्री० रीति, ढोल, ढव, जाति,  
 शोभा, प्रकार ।  
 भांवर० } ना० स्त्री० फेर, घुमाना ।  
 भांवरि० }  
 भांवरी० }  
 भाई० ना० पु० भ्राता, बिरादर ।  
 भाईचारा० ना० पु० मयापा, आपस ।  
 भाईचन्द० ना० पु० जानि के लोग ।  
 भाऊ० ना० पु० परवश, पिछलग्ना ।  
 भाखना० स० क्रि० बोलना, कहना ।  
 भाग० ना० पु० धरा, प्रारब्ध, कर्म, हिस्सा ।  
 भागजाना० अ० क्रि० टलना, पीछादेना ।  
 भागहू० ना० स्त्री० बराय, देराल्याग, धरषा ।  
 भागना० अ० क्रि० भागजाना, टलना ।  
 भागमान्० शु० भाग्यवान् ।  
 भागमानी० ना० स्त्री० एभाग, धनाढ्यता ।  
 भागलपुर० ना० पु० नगरविशेष ।  
 भागप्रत० ना० पु० पुराणविशेष, भगवद्दर्श ।  
 भागवती० ना० पु० श्रीमद्भागवत्, भागवतपाठक,  
 ना० स्त्री० सहिष्णु विशेष, सुभागिन ।

भागवन्त० } गु० भाग्यवान् ।  
 भागवान्० }  
 भागामाग० गा० पु० भागव, विन् टहरे चला  
 जाना ।  
 भागनेय० ना० पु० भाजा, बहन वा पुत्र ।  
 भागी० गा० पु० साभी, अशी, वीत, शु०  
 भाग्यवान् ।  
 भागीरथ० ना० पु० भगीरथ ।  
 भागीरथी० ना० स्त्री० शीतगानी ।  
 भाग्य० गा० पु० प्रारब्ध, कर्म, तर्कदार, शु०  
 जो भाग करने के योग्य है ।  
 भाग्यवन्त० } शु० प्रारब्धी, लक्ष्मीवान्, विस्मय  
 भाग्यवान्० } वर, प्रतापी, धनवान् ।  
 भाग्यहीन० गु० मदभाग्य, दरिद्री, कम्बल ।  
 भाजक० शु० मित्तपर बाद्यमान, भोगकारी ।  
 भाजन० ना० पु० भासने, वर्णन ।  
 भाजना० अ० कि० भागना, स० कि० भूना,  
 तलना ।  
 भाजी० ना० स्त्री० तरकारी, शाक, बधुआ,  
 बैना ।  
 भाज्य० शु० जो भाग किया जावे, विभाग किया  
 जावे ।  
 भाट० ना० पु० बरदेत, वनिविशेष, जाति  
 विशेष ।  
 भाटन० ना० स्त्री० भाटकी स्त्री ।  
 भाठा० ना० पु० धरा समुद्र वा ज्वार, भट्ट ।  
 भाटियाल० गा० पु० भटियाल ।  
 भाठी० ना० स्त्री० भट्टी, धौकी, भटियाल ।  
 भाङ्ग० ना० पु० अन्न मूलने के लिये अतिशुद्ध  
 स्थान ।  
 भाङ्गा० ना० पु० निगया ।  
 भाएड० ना० पु० वागन, बैना ।  
 भाएडार० ना० पु० भएडार ।  
 भाएडारी० गा० पु० भएडार वा घण्टिया ।  
 भाएडारि० ना० पु० वनमें वनविशेष ।

भात० ना० पु० आदा, रावेहुये चावल ।  
 भाता० ना० पु० भत्ता ।  
 भाथा० ना० पु० तूय, तरफरा ।  
 भाथे० ना० पु० बहुभाषा ।  
 भादवा० }  
 भादौ० } ना० पु० छठामहीना, वर्षों का  
 भाद्र० } मास ।  
 भाद्रपद० }  
 भाद्रमास० }  
 भान० ना० पु० रमरथ, सूर्य, भात ।  
 भानजा० ना० पु० बहाका पुत्र ।  
 भानजी० ना० स्त्री० बहाकी पुत्री ।  
 भानना० स० कि० हनना, मारना, फाटना,  
 ताडना, भाजना ।  
 भानमती० ना० स्त्री० गटनी ।  
 भाना० अ० जि० माला लगाना, सजना ।  
 भानु० ना० पु० सूर्य ।  
 भानुज० ना० पु० शनेद्वार, रागवर्ष्य और  
 यमराज ना० स्त्री० शीयपुत्राभी, कान्हे यथा,  
 गाजुनसरि प्रयाग बरि श्याम्, कृष्णरथल विहार  
 तट जाय् ।  
 भानुमति० गु० सु दर, ना० स्त्री० राजा विम-  
 मर्शिय वा राजा दुर्योधनकी राक्षसी नाम ।  
 भानुरिपु० ना० पु० राहु, केतु ।  
 भानुयोगेश्वरी० ना० स्त्री० कश्यपकी पत्नी  
 विशेष ।  
 भाफ० ना० स्त्री० वाप्य, बाक ।  
 भाफना० स० कि० समझना, अटकलना ।  
 भाभी० ना० स्त्री० भौजाई, भाईकी स्त्री ।  
 भाभ० गा० पु० शीमहादेवकी, यथा, दोहा, गं-  
 गाफर हर शङ्कर शशिधर शङ्कर याम । शर्वे  
 शम्भु शिव भीम भद्र भयै भाभ रिपुबाम ।  
 भाभरि० ना० स्त्री० भावरी ।  
 भाभा० गा० स्त्री० पार्वती, सामान्य स्त्री ।  
 भाभिनि० } ना० स्त्री० पिय वा बर्बरा स्त्री,  
 भाभिनी० } लक्ष्मी ।

माय० ना० पु० भाव, स्वभाव, भाई ।  
 मायप० ना० पु० भाईबंदी, भाईयाँ का परस्पर स्नेह ।  
 मायमान् }  
 मायघन्त० } गु० सुशोभित, श्रद्धा, याग्य ।  
 मायवान् }  
 भार० ना० पु० बाभ, आटी, बरही, गितगा एक मनुष्य लेचकता है ।  
 भारक० ना० पु० गन्ना, उल, यथा भारके छुम हारस इति शिष्य ।  
 भारगी० ना० स्त्री० श्रौषधि विशेष ।  
 भारत० ना० पु० व्यासरचित इतिहास वा पुराण विशेष, कोरव पाठ्य का समर ।  
 भारतघर्ष० ना० पु० जम्बूद्वीपके ननखडों म से एकरा नाम, हि इस्ता ।  
 भारतघर्षीय० गु० जो भारतनर्पका सम्बन्धी ।  
 भारती० ना० स्त्री० वाग्देवता, सरस्वती ।  
 भारद्वाज० गु० भारद्वाज, परतु सतसई श्रव्य में भावा श्रथे हुआ ओर रद फारसीशब्द का अर्थ तोडाग लियाई श्रथीव तोडागया, तादाश्रय ।  
 भारद्वाजी० ना० स्त्री० भारद्वाज, तमा ।  
 भारद्वाह० ना० पु० गधा, रर ।  
 भारद्वाहक० गु० जा भार का ले चउँहा, यथा मागिया, हग्मा ।  
 भार० ना० पु० बाग, भाजा, निराया ।  
 भारी० गु० गहन, बडा, मग्गा, भाटा, शभीर ।  
 भाद्र० ना० पु० भाद्रपद, न० पु० भाद्रपद ।  
 भाद्रपद० ना० पु० शुरु, जगदरि ।  
 भाद्रपदी० ना० स्त्री० दूव, पात ।  
 भाद्रपदेश० ना० पु० परशुरम ।  
 भाद्रपदी० ना० स्त्री० पत्नी, जाक ।  
 भाद्र० ना० पु० तीर आदिमी गोक, लला, रीप ।  
 भाद्रा० ना० पु० वर्षा निरा ।  
 भाद्र० } ना० पु० रीड ।  
 भाद्र० }

भाद्रनाथ० } ना० पु० जामरत, भालुवाला, ।  
 भालुपति० } रीड पालनेवाला ।  
 भाघ० ना० पु० प्रकृति, रचना, सम्पत्ति, मोक्ष, चैतका, शाय, मूक चोचता, भेद, द्रव्य, उदरा, स्वाग भावली, मनभीलहर, जन्तु ।  
 भावक० गु० शोची, मिन, सज्जन ।  
 भावज० ना० स्त्री० भाई की स्त्री ।  
 भावता० गु० प्रिय, चाहता ।  
 भावती० ना० स्त्री० चाहती, प्रिया ।  
 भावन० ना० पु० सुहावन, दिखनोट ।  
 भावना० ना० स्त्री० कामना, वासना, इच्छा, चिन्ता, सुहावना, राजा ।  
 भाववाचक० ना० पु० वह शब्द जिससे उतका वा शब्द का धर्म वा भाव जागजावे ।  
 भावह० ना० स्त्री० छोटे भाई की जोरु ।  
 भावन्तर० ना० पु० प्रसारतर, दूसरेप्रकार ।  
 भावित० गु० चिन्तित, शक्ति ।  
 भावी० ना० स्त्री० भविष्य, होहार, वद ।  
 भाषुफ० ना० पु० भाष, कल्याण ।  
 भाष्य० वाजिन, जो भाव के याग्य र, सुद ।  
 भाषण० ना० पु० कथा ।  
 भाषा० ना० स्त्री० बेली, वाणी, रररती, जो रररत नहीं है ।  
 भाषित० गु० कथित, कदाहृथा ।  
 भाष्य० ना० पु० व्याख्यानदि सूत्र का प्रथम विवरण ।  
 भास० ना० पु० प्रकाश, चमत्कार, दीप्ति ।  
 भासना० ना० पु० प्रकट होना, सूक्त ।  
 भाषित० गु० प्रकाशित, समझाया ।  
 भासुर० ना० पु० पतिका चक्राभर ।  
 भास्वर० ना० पु० सूर्य ।  
 भास्वा० ना० पु० सूर्य, पु० प्रकाशित ।  
 भास्वर० ना० पु० सूर्य ।  
 भास्वरी० ना० पु० पाचक, मिडक, प्रकार, मंगला, मया ।



भिगाना० }  
 भिगोना० } स० कि० गीला वा छोदाकरना ।  
 भिजाना० }  
 भिटनी० ना० स्त्री० घुच के ऊपर नौक पुनगी ।  
 भिट्टना० थ० कि० मिलना, सटना, लटना ।  
 भिड़ाना० स० कि० मिलाना, सयाना, लडाना ।  
 भिण्डपाल० ना० पु० गोकना, धनवासी, जिस  
 में देला रखकर इमाय के चलाने हैं ।  
 भिण्डी० ना० स्त्री० तरकारी विशेष ।  
 भिची० ना० स्त्री० भीत, दीवार ।  
 भिनकना० } स० कि० मक्खी उड़नेसे  
 भिनभिनाना० } जो शब्द निकले ।  
 भिनसार० ना० पु० तडका ।  
 भिन्न० थ० पृथक् अलग, बसर ।  
 भिन्नता० ना० स्त्री० अलगहाट ।  
 भिन्नाना० थ० कि० शिरधूमनाना, चकराना ।  
 भिन्सार० ना० पु० भोंर, प्रात, तडका, सेना ।  
 भिरना० थ० कि० भिड़ना ।  
 भिरत० ना० स्त्री० चरट, लड़ाई ।  
 भिलार्यां० ना० पु० वृष वा उसका फलविशेष,  
 जो देहमें लगने से बाला पकघाता है ।  
 भिलौजी० ना० स्त्री० भिलावाका बीज ।  
 भिषक० } ना० पु० वैद्य, हकीम, तबीब ।  
 भिषज० }  
 भिक्षा० ना० स्त्री० भीत, धैराव ।  
 भिक्षाटन० ना० पु० भीतमागना वा भीत माग-  
 ने के लिये फिरना ।  
 भिष्णु० ना० पु० देण्डी, संन्यासी, स्योड़ी पीथा ।  
 भिष्णुक० ना० पु० भित्तारी ।  
 भी० थव्य० च० हूँ और ।  
 भी०ख० ना० स्त्री० भिडा, भेगदई ।  
 भीगना० } थ० कि० गीला वा छोदाकरना,  
 भीजना० } दुःखी होना ।  
 भीज० ना० पु० गीला, भीगा भया ।

भीठ० ना० स्त्री० ऊची धरती वा निस स्थान म-  
 पान उत्पन्न होते हैं ।  
 भीड़० ना० स्त्री० मण्डली, ठठ, बहुतात, क्लेश ।  
 भीड़ा० ना० पु० सकीर्ष ।  
 भीत० थ० डरा, मययुक्त, ना० स्त्री० दीवार ।  
 भीतर० थव्य० अन्तर, बीचमें ।  
 भीतरिया० ना० पु० भीतर रहनेवाला वा जो  
 मन्व्य देवालयका प्रधानता से कामकरताई अर्थात्  
 भण्डारी, रतोदया, पुनारी ।  
 भीतरी० ना० पु० भीतरिया, पु० भीतर वा ।  
 भीति० ना० स्त्री० भय, शंका, दीवार ।  
 भीम० ना० पु० भय, अमलदेत वृक्ष, सुषिष्ठर  
 वा भाई, गु० भयानक, भयंकर ।  
 भीमसेन० ना० पु० पाहुका दूतरा पुत्र ।  
 भीमसेनी० ना० पु० कूरविशेष ।  
 भीर० ना० स्त्री० भीड़ ।  
 भीह० } गु० कायर, डरपोक ।  
 भीहक० }  
 भील० ना० पु० जानिविशेष ।  
 भीलन० } ना० स्त्री० भीलकी जोरु ।  
 भीलिन० }  
 भीलुक० गु० भीहक ।  
 भीरपण० ना० पु० भय, गु० भयानक, भयंकर ।  
 भीष्म० ना० पु० शिरनी, कौरवों का दादा ।  
 भीष्माष्टमी० ना० स्त्री० मातृशुक्लाष्टमी ।  
 भुहार० } ना० पु० राजा ।  
 भुधाउ० }  
 भुक्क० गु० भोता, भोगी खानेहारा ।  
 भुक्क० गु० जो भोजन किया गया है ।  
 भुक्ति० ना० स्त्री० भोगस्तु, भोगनादि ।  
 भुगतना० थ० कि० सुस्त वा दुस्तवा भोगना,  
 पुण्य वा पाप का उठाना, व्यतीतहोना ।  
 भुगतमान्० गु० जो भुगतने के योग्य है ।  
 भुगताना० स० कि० भोगकरना, निपटाना ।  
 भुगना० गु० सीधा, भोला ।  
 भुच० थनगद, मृत, जो सीला नहीं गया ।

भुचम्पा० ना० पु० वृक्ष विशेष ।  
 भुज० ना० स्त्री० बाहु, दण्ड, मेंड, भोजपत्र ।  
 भुजग० ना० पु० साय ।  
 भुजंग० } ना० पु० कालासर्प विशेष, यु०  
 भुजंगम० } काला ।  
 भुजंगपर्णिनी० ना० स्त्री० नागदौत ।  
 भुजंगिनि० ना० स्त्री० सर्पिणी ।  
 भुजा० ना० स्त्री० भुज, बाहु ।  
 भुजाभूषण० ना० पु० वाञ्छद ।  
 भुजाली० ना० स्त्री० तलवार विशेष, वाञ्छद ।  
 भुजिया० ना० स्त्री० भाजी ।  
 भुद्वा० ना० पु० बाली चारकी, बडी चकार ।  
 भुण्डली० ना० पु० बीजा विशेष ।  
 भुतना० ना० पु० छोटा भूत, भोक्त ।  
 भुतनी० ना० स्त्री० भुतने की स्त्री ।  
 भुतवा० ना० पु० भुतना ।  
 भुताहा० गु० जो भूतके समान है ।  
 भुतियाना० अ० कि० भुताहा होना ।  
 भुनि० अ० म० मानो, गोया, सी ।  
 भुघा० अ० कि० बहलना, भुजना, पचना ।  
 भुरभुरा० गु० सूती बुनी ।  
 भुरभुराना० स० कि० रोग आदि रोगों की  
 वस्तु पर लिखना, बुरकाया ।  
 भुलसना० अ० कि० भुलसना, जलनाना ।  
 भुलाना० स० कि० भूलकराया, पुनलाया ।  
 बहकाया ।  
 भुलाया० ना० पु० धोखा, ठगना ।  
 भुव० ना० पु० राग, आकार, अम्बर, धरती ।  
 भुवंग० } ना० पु० भुजग, साय ।  
 भुवंगम० }  
 भुवन० ना० पु० जगत्, सत्तार, लोक, मन्दिर,  
 आकार, पानी, भोग, २४ लोक ।  
 भुवाल० } ना० पु० रानाधिराज, मादराह,  
 भुवालु० } राना, भूमिपाल ।  
 भुस० ना० पु० चोहर ।  
 भुशुण्ड० ना० पु० माया, शिर, टों ।

भुशुण्डी० ना० स्त्री० तोप, बंदूक रामायण  
 विशेष ।  
 भुसुडा० ना० पु० भुशुण्ड, कमल की जड़ ।  
 भुसेरा० ना० पु० }  
 भुसेला० ना० पु० } स्थान विशेष जिस में  
 भुसौरा० ना० पु० } भूसा रखे हैं ।  
 भुसौरी० ना० स्त्री० }  
 भू० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।  
 भूईडोल० ना० पु० भूस्म, हालाडोला ।  
 भूई० } ना० स्त्री० भूमि ।  
 भूई० }  
 भूजा० ना० पु० भद्रमूना ।  
 भूसना० अ० कि० ही ही परना ।  
 भूकरव० ना० पु० भौचाल, हालाडोला ।  
 भूख० ना० स्त्री० चुपा ।  
 भूखा० गु० चुपित ।  
 भूगोल० ना० पु० धरामण्डल ।  
 भूचर० ना० पु० पृथ्वीपर चलनेवाले जन्तु ।  
 भूजन० ना० पु० पृथ्वीपर के मनुष्य, भोगना ।  
 भूङ्ग० ना० स्त्री० रेतली धरती ।  
 भूत० ना० पु० अतीतराल, पृथिव्यादि पंचतत्त्व  
 अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, तम, और  
 अविशेष, जीव ।  
 भूतघ्नी० ना० स्त्री० तुलसी  
 भूतनया० ना० स्त्री० श्रीमतीनारी ।  
 भूतनाथ० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।  
 भूतनाशन० ना० पु० हींग ।  
 भूतनी० ना० स्त्री० भेनना ।  
 भूतदुला० ना० स्त्री० निकम ।  
 भूतपति० ना० पु० भूतपाप, शिवजी, भैरव ।  
 भूतभङ्गी० ना० पु० समुद्रलोक ।  
 भूतज० ना० पु० पृथ्वी, धरतल ।  
 भूतयास० ना० पु० बहेडा ।  
 भूतवृक्ष० ना० पु० स्योना ।  
 भूनि० ना० स्त्री० विपत्ति, सम्पदा, रान, मुक्ति ।

भूतिक० ना० पु० कपूर ।

भूतेश० ना० पु० भूतनाथ ।

भूदेव० ना० पु० ब्राह्मण ।

भूधर ना० पु० पर्वत, राजा, हाथी, मेष, साप,  
शेष, गौ, सूर्य, वृक्ष ।

भूधार्त्री० ना० पु० भूधवल ।

भूतना० स० क्रि० पकाना, बहलाना, तलना ।

भूनिम्ब० ना० पु० चिरायता ।

भूय० } ना० पु० राजा, महीपति ।

भूयति० }

भूपपद० ना० पु० राय, बादशाहत ।

भूपाल० ना० पु० भूपति, राजा, महीपति ।

भूमल० ना० पु० गरम राल ।

भूमृत्० ना० पु० पर्वत, पहाड़ ।

भूमण्डली० ना० स्त्री० विल्व, धरामण्डल ।

भूमध्यस्थ० ना० पु० जो सशुद्ध वृक्ष चोड़,  
धमिराके मध्यवर्ती है ।

भूमि० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी, जमीन ।

भूमिका० ना० स्त्री० दीनाचह, सातार्थ ।

भूमिज० ना० पु० मगल, भौमासुर, उद्विज,  
ला ।

भूमिनाग० ना० पु० साधारण साप ।

भूमिपति० } ना० पु० राजा, महीपति ।

भूमिपाल० }

भूमिया० ना० पु० भूमिका देवता ।

भूमीश० ना० पु० भूपाल, राजा ।

भूय० अर्घ्य० पु०, वेर ।

भूयोभूयः० अर्घ्य० पु० पुन, फिर फिर ।

भूर० } ना० स्त्री० दक्षिणा, बादा, दास,  
भूरसी० } भील ।

भूरा० शु० हिरा, कपिल, विगल ।

भूरि० शु० बहुत गरिब ।

भूर्ज० ना० पु० भोजपत्र ।

भूर्ज १रु० ना० पु० भोजपत्र वा उसका वृक्ष ।

भूर्जपत्र० ना० पु० भोजपत्र ।

भूल० ना० स्त्री० निस्मरण, चूक, धोखा ।

भूलना० घ० क्रि० विसरना, चूकना, भटकना,  
खोजाना, लोपहोना ।

भूलाधिसरा० } गु० जो भटक गया ।

भूलाभटका० }

भूलोक० ना० पु० मनुष्यलोक ।

भूपण० ना० पु० आमरण, गदा, शंभा ।

भूपित० गु० अलकून, भूषणपुत्र, शोभित ।

भूसा० ना० पु० गेड़ धोर जो आदिका सूता

तृण ।

भूसिता० ना० स्त्री० अशूल ।

भूसी० ना० स्त्री० झिलका, धात आदिका चाकर,  
वृत् ।

भूसुता० ना० स्त्री० शीतीवाजी

भूसुर० ना० पु० ब्राह्मण ।

भूस्वामी० ना० पु० भूपति ।

भूट्टी० ना० स्त्री० भौद, भू, इडका ।

भूगु० ना० पु० मुनिविशेष, वासना ।

भूगुनन्दन०

भूगुनाथ०

भूगुनायक०

भूगुपति०

} ना० पु० परशुराम ।

भूगुबन्धु० ना० पु० कुन्दुण्य ।

भूगुम० ना० स्त्री० भारगी श्रीपति ।

भृंग० ना० पु० अमर, भौरा, कीटविशेष ।

भृंगराज० ना० पु० आजीविशेष, पत्नीविशेष,  
भंगरा, वृद्ध ।

भृंगाह० ना० पु० भंगरा वृद्ध ।

भृंगारि० ना० पु० भृंगुर ।

भृंगी० ना० स्त्री० दुग्धारी, बीट, कीड़ासिद्ध  
जो भृंगुरको लाकर निजरूप करताहै, शिशुगण  
विशेष ।

भृत्य० ना० पु० दास, सेवक, गुलाम ।

भृत्यगण० ना० पु० सेवकों का समूह ।

भृत्वा० ना० स्त्री० दासी, लौड़ी ।

भेउ० ना० पु० प्रकार, स्वभाव, भेद, मर्म ।

भेगा० शु० स्वर्गपाप्मी, देव ।

भेंट० ना० स्त्री० भट ।  
 भेंटना० स० कि० भटना ।  
 भेक० ना० पु० मेदक, मेधा ।  
 भेज० ना० स्त्री० लगान, धरताका पठावा ।  
 भेजना० स० कि० पठावा, पठवा ।  
 भेजा० ना० पु० गदा मस्तकना भीतरी मास ।  
 भेट० ना० स्त्री० शीत, मुलाकात, सौगात,  
 अर्पण उपायन, उपहार, उपर ।  
 भेटना० स० कि० मिलना, उपायन करना ।  
 भेटा० ना० स्त्री० } बोट, डठा, भेटा, मि  
 भेटू० ना० पु० } लेया ।  
 भेड़० ना० स्त्री० मद, मेपकी जाति विशेष ।  
 भेडा० ना० पु० भेदा ।  
 भेड़िया० ना० पु० विक, हुण्डार ।  
 भेड़ियाघसान० ना० पु० गचपच करके  
 मण्डनी ।  
 भेड़ी० ना० स्त्री० भेदा, मप ।  
 भेद० ना० पु० भिन्नाभान, वाचविशेष, अंत  
 बात, मर्म, छद्म, अन्तर, फर्क, विस्म ।  
 भेदक० पु० भेदकरानेहारा, पापायभद ।  
 भेदकिया० ना० पु० भेदलगायेहारा, खोजी ।  
 भेदन० ना० पु० भेद करने का काम ।  
 भेदिका० } ना० पु० भेदकरनेहारा, राजा,  
 भेदिया० } जामूस, घातिया, मर्म जानी  
 भेदी० } हारा ।  
 भेदू० ना० पु० भेदकरनेहारा ।  
 भेद्य० पु० भेदके योग्य ।  
 भेना० ना० स्त्री० वहन ।  
 भेर० } ना० स्त्री० बाजा विशेष, कर्ण्य ।  
 भेरि० }  
 भेरी० }  
 भेला० ना० पु० भिलावा ।  
 भेली० ना० स्त्री० गुफका डहा ।  
 भेय० ना० पु० भाव, प्रकृति, स्वभाव, मर्म,  
 भेद ।

भेप० ना० पु० रूप, चाल, सुरत ।  
 भेपज० ना० पु० ओषधि, दवा ।  
 भेपरज० ना० पु० भगरा ।  
 भैस० ना० स्त्री० माहरी ।  
 भैसा० ना० पु० महिष, जामूरा ।  
 भैसिया० ना० स्त्री० छाती भेस ।  
 भैसियादाद० ना० पु० दादु रोग विशेष ।  
 भैचक० पु० भयचक ।  
 भैमी० ना० स्त्री० माघ शुक्ल एकादशी, दमयन्ती,  
 तलरी स्त्री ।  
 भैया० ना० पु० भाई ।  
 भैरव० ना० पु० र गविशय, शिवजी का उनका  
 सहचर, पृष्ठा, कराल ।  
 भैरवी० ना० स्त्री० रागिनी विशेष, भैरवकी स्त्री,  
 दुर्गा ।  
 भैहू० } ना० स्त्री० छाट भाई की स्त्री ।  
 भैहा० }  
 भौकना० स० कि० टोकना, हलना ।  
 भौंडा० पु० कूडील, कुरुप ।  
 भौंदू० पु० शीघा, माना ।  
 भौप० ना० पु० तरसिहा ।  
 भौई० ना० पु० वहार, कि० भिगाई ।  
 भौकस० ना० पु० आम्हा, मन्ना ।  
 भौहा० पु० भान में जा गिपुष, अन्ध  
 खानेहारा ।  
 भोग० ना० पु० सुख वा दुःख उठाना वा हर्ष,  
 हल, खाना, नैवद्य, निहार, खिलास ।  
 भोगना० य० कि० सुख दुःख उठाना वा पा ।,  
 हल, खिलास करना ।  
 भोगवती० ना० स्त्री० शेषका विनाशरथा ।  
 भोगा० ना० पु० हल, टाई, धारा ।  
 भोगी० पु० भोग करनेवाला, आदी ना० पु०  
 साय ।  
 भोग्य० पु० जो भाग कर के योग्य है ।  
 भोज० ना० पु० खीर, राजा विशेष, दूरा विशेष  
 जो पटा और भागतपुर का प्रदेश है ।  
 भोजन० ना० पु० आहार, खाना ।

भोजनचार० ना० पु० चारप्रकार का आहार  
अर्थात् भोज्य, भक्ष्य, लेद्य, चोप्य ।

भोजपत्र० ना० पु० वृक्षविशेष की छाल ।

भोजपुर० ना० पु० नगर विशेष ।

भोज्य० ना० पु० जो खाने के योग्य है,  
सीधा ।

भोट० ना० पु० भोट देशके वध, देश विशेष, जो  
तिब्बत का एक देश है ।

भोटन्त० ना० पु० देश विशेष जो नेपाल के  
पूर्व है ।

भोटिया० ना० पु० भोट देश के लोग ।

भोटूर० } ना० पु० अन्न, अन्नक ।

भोता० गु० जो अन्न तेज नहीं है, मन्द ।

भोपा० ना० गु० टोनहा, उलू, वाना विशेष ।

भोपाल० ना० पु० देश वा नगरविशेष ।

भोर० ना० पु० प्रातः काल, पीड़ ।

भोरा० ना० पु० धोला, गु० भोला, सीधा,  
दयालु ।

भोरे० गु० धोले, भूले, रामायणे यथा, का क्वनि  
लाभ जीव धनु तोरे । देता राम नये के भोरे ।

भोला० गु० छलहीन, सीधा, ना० पु० शिखरी ।

भोलानाथ० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।

भोली० गु० स्त्री० सीधी ।

भौ० ना० स्त्री० झुंडी, धू, भूमि ।

भौकना० अ० क्रि० हौ हौ करना, मूर्खता से  
बोलना, कुत्तप शब्द ।

भौचाल० ना० पु० भूमिजन्म, हालाचाल ।

भौर० ना० पु० भेवर ।

भौरा० ना० पु० अन्न, अलि, पदपद ।

भौरियाणा० स० क्रि० फिराना, धुमाना ।

भौरिी० ना० स्त्री० घोंडे के दोष विशेष, भौरिी  
रनी, छ दी रोटी, करी ।

भौंसना० अ० क्रि० भौंकना ।

भौ० ना० पु० भय, डर ।

भौचक० गु० भयचक ।

भौजार्द० } ना० स्त्री० बड़े भारी की रनी ।

भौजी० }

भौनस्त० ना० पु० बड़ा मूंग जिसमें हाथी  
बाधत है ।

भौतिक० गु० जो भूत करके हान, शरीररोग ।

भौतिकदेह० ना० स्त्री० पञ्चतत्त्वकृतशरीर ।

भौम० ना० पु० मंगल, उद्भिन्न, लोन, भौमा-  
सुर ।

भौमघार० ना० पु० मंगलनार ।

भौमासुर० ना० पु० दैत्यविशेष जिसको नरका-  
सुर भी कहते हैं ।

भ्रंस० ना० पु० ध्वस्त ।

भ्रम० ना० पु० भूल, चूक, सन्देह, शयय ।

भ्रमण० ना० पु० पर्यटन, भ्रम, फिरना ।

भ्रमणा० ना० स्त्री० भ्रम, भूल, सन्देह, फिरना ।

भ्रमभौर० ना० पु० भूलका समूह वा नोकर ।

भ्रमर० ना० पु० भौरा, अलि ।

भ्रमरी० ना० स्त्री० अर्पणकी स्त्री, भौरिी ।

भ्रमरका० ना० स्त्री० नावरी, जलकुं ।

भ्रष्ट० गु० पतित, स्वधर्महीन, छुटलेला ।

भ्रष्टा० ना० स्त्री० व्यभिचारिणी, कुलग ।

भ्रष्टाचार० ना० पु० अधर्म, स्वधर्महीन, सर्व-  
भली ।

भ्राजमान० गु० शोभित, उरोभित, जेवा ।

भ्राता० ना० पु० भाई ।

भ्रातृज० ना० पु० भतीजा, भाईका लड़का ।

भ्रान्त० गु० जो धुमायागया ।

भ्रान्ति० ना० स्त्री० भूल, चूक, भ्रम, मनि-  
भ्रम ।

भ्रामक० गु० भ्रमदाता, ठग, धोला देनेवाला ।

भ्रुव० } ना० स्त्री० भौह, पंक्ति, घुड़कना ।

भ्रु० }

भ्रूणहत्या० ना० स्त्री० गर्भघातन वा विनाशान ।

भ्रूमङ्ग० ना० पु० भ्रूविशेष, घुङ्गी ।

[ म ]

मङ्गुआ० ना० पु० अथ विशेष ।

मकड़ा० ना० पु० कीट विशेष जो जाला बनाता है ।

मकड़ना० अ० कि० टेढ़ाचलना, जीबुराना ।

मकड़ी० ना० स्त्री० छोटा मकड़ा, सूतक ।

मकर० ना० पु० दशवीं राशि, मगर, मृग, मय्य ।

मकरध्वज० ना० पु० कामदेव, श्रीवलदेवजी, श्रीहनुमान्जी का पुत्र ।

मकरन्द० ना० पु० पुष्पका रस, कोकिला ।

मकरन्दी० ना० पु० कमल ।

मकराकृत० गु० मखली के जैल ।

मकराक्ष० ना० पु० तराछर का पुत्र ।

मकरी० ना० स्त्री० मखली, मकर की स्त्री, मकड़ी ।

मकुष्ट० } ना० पु० मोठ अथ ।

मकुष्टक० } ना० पु० मोठ अथ ।

मकोड़ा० ना० पु० बड़ा चूरा ।

मकोय० ना० पु० फल वा पीषा वा भाड़ी विशेष ।

मकपन० ना० पु० नवनीत, मालन, मैदुःप्रस वह ।

मकसी० ना० स्त्री० माडी, बन्दूक का मासा ।

मख० ना० पु० यज्ञ ।

मखन० ना० पु० माला ।

मखना० ना० पु० हाथीविशेष जिसके दात न हों, मृग जिस के त्याग न हों ।

मखनिया० ना० पु० माला बनानेहारा ।

मखाना० ना० पु० पीषाविशेष ।

मखी० ना० स्त्री० मक्ली ।

मग० ना० पु० मार्ग, पथ, पट, मगध देश ।

मगध० ना० पु० देशविशेष, जिस में गयातीर्थ है वा पटनादि नगर है ।

मगधभाषा० ना० स्त्री० प्राकृत भाषाविशेष जो ब्रह्मा और रयाम में प्रचलित है जिसको वहाँ पालिक कहते हैं ।

मगण० ना० पु० गणविशेष जिस में तीन अक्षर दीर्घ हाते हैं ।

मगन० पु० मग्न ।

मगनता० ना० स्त्री० मग्नता, प्रसन्नता ।

मगर० } मकर, माह, कुर्भार ।

मगरमच्छ० } मकर, माह, कुर्भार ।

मगरा० गु० दौट, घमण्डी, हठीला, मचला ।

मगराई० ना० स्त्री० } डिटाई, घमण्ण, मच-मगरापन० पु० } लाइट ।

मगरेला० ना० पु० कालेरग का छोटा वीन विशेष ।

मगसिर० ना० पु० मगसिर, जगहन महीना ।

मगही० गु० मगध देश की वस्तु ।

मगहैया० ना० पु० मगध देश के यात्री ।

मगुरी० ना० स्त्री० मखलीविशेष ।

मग्न० गु० इना, प्रसन्न, हर्षित, मुदित, गलित ।

मग्नता० ना० स्त्री० प्रसन्नता, हर्ष, सुद ।

मघवा० ना० पु० इद्र ।

मघवाह्य० ना० पु० वज्र ।

मघा० ना० स्त्री० दरावा नखत्र ।

मघोनी० ना० स्त्री० शूद्राणी ।

मंका० ना० पु० जागी माला, सुभिरन, गुरी ।

मंगत० } ना० पु० भित्तारी ।

मंगता० } ना० पु० भित्तारी ।

मंगन० ना० पु० भिन्न, भित्तारी, वनि ।

मंगनी० ना० स्त्री० सगाई, उधार ।

मंगरा० गु० बलवान्, दौट, मगरा ।

मंगल० ना० पु० कुशल, आनन्द, तीसरा ग्रह, तातार देश के लोगों की तीनजाति में से एक और तीसरा नार, रागविशेष जो रिवाहादि आनन्द में गायाजाता है ।

मंगलकोटी० ना० स्त्री० चट्टाई विशेष ।

मंगलघट० ना० पु० पिवाहादि का कहरा ।

मंगलद्रव्य० ग० पु० मूलआदि ।	मचल हा० य० हनीला ।
मंगलघार० ग० पु० तीसरा वार ।	मजान० ग० पु० मव ।
मंगलसमाचार० ना० पु० शुभसमाचार, अच्छा खबर ।	मचामच० पु० लडावद ।
मंगला० ग० स्त्री० पारसी इराणिया, मंगला ।	मचिया० ग० स्त्री० पीरी, चापा, पल्लिया ।
मंगलाघार० ग० पु० कथना, विवाह का रत्न ।	मचोदना० म० कि० निचाना, हुंके तोड़ना ।
मंगलाचरण० ग० पु० शुभ कर्मों में गणेशादि देवताओं की विनय वा पूजा या नमस्कारसंकर ।	मच्छु० ग० पु० मरग, मूदला ।
मंगेलामुखी० ग० स्त्री० वज्रना, गवैया वरया ।	मच्छु० ग० पु० मरग छोटा का उड़नेवाला ।
मंगली० पु० मंगलफल, जयवृत्त ।	मच्छी० ग० स्त्री० मच्छी, मक्का ।
मंगल्या० ना० स्त्री० सनीया, मंगलना ।	मच्छु० ग० पु० मरग, मच्छी ।
मंगधाना० स० कि० सुना भजना ।	मच्छु० ग० पु० मरग, गु० मूल ।
मंगशिर० ग० पु० मांशाण, अंगड़ा ।	मच्छी० ना० स्त्री० जलशायनी जलपुर मरग ।
मंगाना० स० कि० बलाभाता, उन्मत्तता व लवहरना ।	मच्छु० ना० पु० धामर, बहार, मच्छीमार ।
मंगूला० ना० पु० छटाकन्वा ।	मच्छी० ना० स्त्री० मच्छी ।
मंगतर० ग० स्त्री० सर्ग ।	मच्छुवा० ना० पु० मच्छुवा धामर ।
मचक० ना० स्त्री० गाट की धावा मरमराहा देना ।	मजोठ० ना० पु० योगविशिष्ट निमित्त खान्दरम भजना है ।
मचक० ना० अ० कि० गाट में पाइहाणा चरचरा ना, मरमराना ।	मजोत० पु० रसा जा रसु काम में ताज जने धोर फिर बचानावे ।
मचकाना० स० कि० चरचराना, मरकना पल कमरना ।	मजीरा० ग० पु० मजार काना विशा भाम्भ ।
मचना० अ० कि० लाना, उठना, हाथ रखा ।	मजूर० ना० पु० बमरा, ठीक शब्द मजूर है, यह शब्द शरती कहें ।
मचमचाना० अ० कि० चरचराना, मरमराना ।	मजू० ना० स्त्री० हाट के भुंजर का दूना चर्द ।
मचलना० अ० कि० हटकरना, मचलाहाना ।	मकाना० पु० मकाना, पीचवाना, मचवृत्ती ।
मचलपन० ना० पु० हट, मगरापन, टिगई ।	मकार० ग० पु० पीच, माम्भ ।
मचला० पु० हटीला, मगरा, दीड ।	मकेली० ना० स्त्री० मकाली ।
मचलार्ह० ग० स्त्री० मचलापन, मचलाहट ।	ममोला० पु० जो ग छाया व बजा अथवा न चखा थार व बुरा, अथवा मरग ।
मचलान० अ० कि० हट करना, मतलाना, मराना करना ।	ममोली० ना० स्त्री० छायागाइ वा बहल ।
मचलाहट० ना० स्त्री० हट, टिगई ।	ममू० ना० पु० गरान, जानू सिंहासन विशेष, रान, वदी, मचान, तष्ट, अस्तपारा ।
	ममू० ना० पु० दान धार का रूप विशेष, मानन, खान, दान ।
	ममूना० अ० कि० उजला हाना, साफ़ना,

मंजरी० ग० स्त्री० फूलोंका गुच्छा वाली समूह ।  
 मंजख० ना० पु० अजीरकृष्ण ।  
 मंजा० ग० पु० नये वर्षपानी का फेन अर्थात् प्रथम आषाढ़ में वर्षनेकापानी मखली की विष होता है, रामायणे यथा, मजा मनहु भीन वह व्यापा

मंजार० ग० पु० विहार, विलास ।  
 मंजारी० ना० स्त्री० विधी ।  
 मंजित० गु० मजन क्रियाया वा क्रिय, हुये, धोयाग्या ।

मंजिष्ठ० ना० पु० मजीठ ।  
 मजीर० ग० पु० विह्वला, पीनकीभूषण ।  
 मजीरा० ना० पु० मजीरा ।  
 मज्जु० गु० सु दर, मनोहर, चाहता ।  
 मज्जुघोष० ग० पु० पद्मतर, परेवा ।  
 मंजुघोषा० ना० पु० पद्मवती, कोयल, कोकिला ।  
 मंजुल० गु० सु दर, मनोहर, चाहता अर्थात् ।  
 मंजुला० ना० स्त्री० मन्जिठ ।  
 मजूपा० ग० स्त्री० टीकरा ।

मटक० } ना० स्त्री० चोचला, भावती, चू  
 मटकना० } डिलानपन, चमन ।  
 मटकना० ग० पु० पुग्वा, बधना, मृत्तिकाका छांटापान ।

मटकना० अ० त्रि० पराक वा भावला मरणा, चमना ।

मटका० ना० पु० मटोर मृत्तिकाकावडावती ।  
 मटकाना० स० त्रि० आस डमाना, चमना, दूसरेको निराता ।

मटकी० ना० स्त्री० छटा मटका, इमनी, सुधी, छगुनी, रूपकी, सेन ।

मटकोठा० ना० पु० मिट्टीका घर ।

मटर० ग० पु० अन्न निरोप, क्रिडा ।

मटरा० ग० पु० मटरनिरोप, रेशमीरस निरोप ।

मटरी० ना० स्त्री० मटर निरोप ।

मटरीला० गु० निरामे मटर मिलाहो ।

मटियाना० स० त्रि० मिट्टीसे मानता, अ० त्रि० सन, सींचना, आर छुपाना, हानेदेना, शिथिल होमाना ।

मटियार० ना० पु० एकरकारकी धरती विशेष जो रेतली नहीं है ।

मटियारा० गु० जो निरामे कामना न हो, जाताऊ रेतों के योग्य ।

मटियाघ० ना० पु० आनाकानी, आसछुपाव ।

मट्टी० ग० स्त्री० मिट्टी, मृत्तिका ।

मट्टा० ना० पु० छाछ, मटा ।

मठ० ना० पु० रिवाजलय, गोसायन का घर, मण्डप ।

मठड़ी० ना० स्त्री० एकवा विशेष ।

मठपति० } ना० पु० गोसायन, अथिथि वा जो  
 मठपती० } मठस्थ शिवापितवस्तु लेताहान

मठा० ना० पु० मट्टा, गु० डोंबा, धीमा, धीरा ।

मठोर० ग० पु० मट्टा ।

मडियाना० स० त्रि० चपकाना, मोड़ीलेगागा, जमाता ।

मडोड० ना० स्त्री० एठ, बल, पेशी ।

मडोडना० स० त्रि० एठना बलदेना, पेशी बालना ।

मडोडना० ग० पु० पैर में की पाई, पचिरा ।

मडोटी० ग० स्त्री० धरत, एटा, जोड़ा ।

मडन० ग० पु० मडो वा वस्तु वा काम ।

मडना० स० त्रि० लेना, लगाना, निपटना ।

मडा० गु० जो मदानया, ग० पु० निराहरी मण्डप, वर्षी मर्दी ।

मडिया० ना० स्त्री० छापी मर्दी ।

मडो० ग० स्त्री० घुटी, भाषकी मण्डप ।

मडि० ग० स्त्री० श्वप के लिय पापाय निरोप हीरा मोना आदि चमन्दार, शिरामणि धरत निद है कि तरु निरोप सप के पाव हती है जो रात्रिको प्रकाशित रहती है ।



मणिकर्णिका० ना० स्त्री० कारीजी में स्थान  
 विशेष जहा देवीजी के फान थी मणि गिरीषी ।  
 मणिका० ना० स्त्री० छोटी मणि, गुरिया ।  
 मणिपूर० ना० पु० चक्र विशेष, देश विशेष, जो  
 बंगाल देश के पूर्व में है ।  
 मणियां० ना० पु० मालाकी गुरिया वा दाना ।  
 मणियार० ना० पु० सर्प विशेष जिसके मणि  
 होती है, जाति विशय जो चूरी बनाता है ।  
 मण्ड० ना० पु० ज्ञान, माद, पोच वा साता  
 जिसमें शौरा मराजाता है ।  
 मण्डन० ना० पु० भूषण विशेष, मिलान ।  
 मण्डप० ना० पु० तृणादि से रचित देवतावापर,  
 मढ़ा, मढ़वा ।  
 मण्डल० ना० पु० स्थान, देश, गोला, छडन,  
 चावारा, तल ।  
 मण्डला० ना० स्त्री० धौकुवार ।  
 मण्डलाकार० गु० गोलाकार ।  
 मण्डलाग्र० ना० पु० तह, तलवार ।  
 मण्डलाना० च० कि० किरना, उड़ना, यथा  
 पक्षी उड़ते हैं ।  
 मण्डलिया० ना० पु० कपोत विशेष ।  
 मण्डली० ना० स्त्री० समूह, सभा, बैठक, घर ।  
 मण्डलीक० ना० पु० राना, महत्त, चाधरी ।  
 मण्डलेश्वर० ना० पु० राजा, मडलपति ।  
 मण्डवा० ना० पु० कुन ना० स्त्री० मडवी ।  
 मण्डवी० ना० स्त्री० अश्व विशेष ।  
 मण्डा० ना० पु० पेदा विशेष ।  
 मण्डित० गु० जहित, रोभित, भूषित, मढ़  
 इषा ।  
 मण्डियाना० च० कि० कल्पदना वा लगाना ।  
 मण्डी० ना० स्त्री० हाट, गोला, गन ।  
 मण्डूक० ना० पु० मेढक, मेरु ।  
 मण्डना० स० कि० मढ़ना ।  
 मत० ना० पु० धर्म दीन, स्लाह, सम्मत रीति  
 हक, दंड, अभिप्राय, बुद्धि, धर्म्य० नि  
 वेधार्थ अर्थान् नहीं, जनि ।

मतंग० ना० पु० हाथी, मुनि विशेष ।  
 मतना० ना० पु० ऊस विशेष ।  
 मतमेद० ना० पु० मतातर, अभिप्राय वा  
 भेद ।  
 मतरागा० स० कि० मनाना ।  
 मतखाना० च० कि० जी धिनाना, उबकाना ।  
 मतखाला० गु० मत्त, मदमाना ।  
 मतहीन० गु० मतरहित, बुद्धि रहित ।  
 मता० ना० पु० उपदेश, सलाह, परामर्श ।  
 मतानुसार० ना० पु० अभिप्राय के अनुकूल,  
 मजहब के मुनाफिक, सलाह के मुनाफिक ।  
 मतान्तर० ना० पु० द्वितीयमत, मतके विपरीत,  
 दूसरा धर्म ।  
 मतन्तराचार० ना० पु० द्वितीय धर्म का  
 व्यवहार ।  
 मतावलम्बी० ना० पु० मताथयी, पक्षी ।  
 मताथयी० ना० पु० मत के धामित, मतके  
 धामीन, पक्षी ।  
 मति० ना० स्त्री० बुद्धि, रुग्मति, रीति, राय ।  
 मतिमान् } गु० बुद्धिमान् ।  
 मतीर्ष }  
 मतीर० ना० पु० तरपून, हिन्दुवाना, ससरा  
 तिकाया यथा, गरुधर पाद मतीर ही मारु है  
 पयोधि ।  
 मतो० ना० पु० मत, सम्मत ।  
 मत्त० गु० मधुमाता, मत्त, मन्थालाहाथी ।  
 मत्तवत् गु० मधुमाना, मधुमाने के समान ।  
 मत्सर० ना० पु० डाह, जलन, ईर्ष्या, गु० जलनी ।  
 मत्स्य० ना० पु० मडली, देश विशेष ।  
 मत्स्यजी० } ना० स्त्री० बहिरा, जिससे  
 मत्स्ययधन० } मडला मारते है ।  
 मत्स्यपित्ता० ना० स्त्री० कुटकी ।  
 मत्स्याही० ना० स्त्री० मायी, श्वेतदूत ।  
 मधन० ना० पु० विलासन, पयोजन, इराय ।

मथना० स० वि० महना, बिलोचना, मथोना,  
 ना० पु० मथनी, पाप विशेष ।  
 मथनिर्या० ना० स्त्री० मथानी ।  
 मथनी० ना० स्त्री० बिलोनी, महानी, रई ।  
 मथा० ना० पु० माथा, गु० मथाइथा ।  
 मथानी० ना० स्त्री० दूधहाडी, मटकी, चाटी ।  
 मथित० शु० छाद्र, मझ जो मथागया ।  
 मथुरा० ना० पु० नगर विशेष, जहा श्रीकृष्ण  
 चद्र जमे थे ।

मथुरिया० ना० पु० मथुराके मालख ।  
 मथुरनी० ना० स्त्री० मथुरिया की जोर ।  
 मथौट० ना० पु० चद्रा, बिहरी, वाद ।  
 मथौरा० ना० पु० सूर्यमुखी, छाता, धनुरी ।  
 मद्द० ना० पु० गर्व, अहकार, परतूरी, मादक  
 वस्तु, मदिरा आदि ।  
 मद्दकल० ना० पु० हापी ।  
 मद्दकारिणी० ना० स्त्री० सुरासानी अन्नवाहन ।  
 मद्दन० ना० पु० श्रीपथि, पौधाविशेष, मैफल,  
 कामदव, प्रमुन्ननी, दीना ।  
 मद्दनां कृश० ना० पु० लिंग ।  
 मद्दनाह्ना० ना० स्त्री० खिरहटी ।  
 मद्दनारि० ना० पु० श्रीमहादजननी ।  
 मद्दमाता० ना० पु० } शु० मतवाला, मत-  
 मद्दमाती० ना० स्त्री० } वाली ।  
 मद्दमाल० ना० पु० बिछुया, पादागद ।  
 मद्दयन्त्रिका० ना० स्त्री० मालती ।  
 मद्दयन्त्रि० शु० अभिमानी, मदिरा में गलित ।  
 मद्दार० ना० पु० घाफ, अर्क ।  
 मद्दारिया० ना० पु० मद्दारका फूल ।  
 मद्दारी० ना० पु० सपरा, नटपर, सापराणा ।  
 मद्दिक० शु० अहकारी, मद्दाथ ।  
 मद्दिरा० ना० स्त्री० शयन, दारू, ना० पु०  
 छद ।  
 मद्दोत्कट० ना० पु० कपोत, कपूर ।  
 मद्दोत्कंठ० ना० पु० हाथा ।  
 मद्दुनुर० ना० पु० मोरग, मन्त्र विशेष, मुद्गा ।

मद्य० ना० स्त्री० सुरा, मदिरा, शराव ।  
 मद्यमन्धा० ना० स्त्री० मौलसिरी ।  
 मद्यप० ना० पु० अधिक मदिरा पीनेवाला ।  
 मद्या० ना० स्त्री० बररी ।  
 मद्युमाता० शु० मतवाला ।  
 मद्युवोपित० ना० पु० फणेल, मिरच ।  
 मद्यु० ना० पु० मदिरा, पुप का रस, शहद,  
 पानी, चैत्रमास, बसंतखतु, वृष, दूध, अमृत,  
 दैत्य विशेष ।

मद्युक० ना० पु० मद्युया वृष ।  
 मद्युकर० ना० पु० अमर, भौरा ।  
 मद्युकरी० ना० स्त्री० अमरी, भौरा, रोटीविशेष ।  
 मद्युकर्कटिका० ना० स्त्री० मद्युकर्की ।  
 मद्युकोप० ना० पु० मद्युमाती का छता ।  
 मद्युकोप० ना० पु० मद्युया वृष ।  
 मद्युग० ना० पु० मद्युया भेद ।  
 मद्युत्तण० ना० पु० ऊत, गवा ।  
 मद्युदृत्तिका० ना० स्त्री० कोयल ।  
 मद्युद्रम० ना० पु० मद्युवृष, चैत्रके वृष ।  
 मद्युप० ना० पु० भौरा, अमर ।  
 मद्युपर्क० ना० पु० पूनाकी सामग्री, मद्यु और  
 दर्हा आदि मिलाकर राना ।  
 मद्युपर्णी० ना० स्त्री० दूधिया, पोरा ।  
 मद्युपर्श० ना० पु० पटा रसीला पत्र ।  
 मद्युपुर० ना० पु० } मद्युरात्री ।  
 मद्युपुरी० ना० स्त्री० }  
 मद्युकला० ना० पु० अरू, दास ।  
 मद्युमट० ना० पु० मोम ।  
 मद्युमयी० ना० स्त्री० राहदही मक्खनी, मनाती  
 मद्युमात० ना० पु० रागिनी विशेष ।  
 मद्युमास० ना० पु० चैत्रमास ।  
 मद्युयष्टी० ना० स्त्री० मलहटी ।  
 मद्युयोनि० ना० पु० अरू, दास ।  
 मद्युर० शु० मोटा, चाहा, छदर, अण्णा ।  
 मद्युरम० ना० पु० मोम ।  
 मद्युस्ता० ना० स्त्री० गुरहटी, अरू, दास ।

मधुरा० ना० स्त्री० कामोली ।  
 मधुरी० गु० स्त्री० मीठी, रसीली ।  
 मधुराक्ष० ना० पु० मीठा भोजन तथा रसाक्षर ।  
 मधुलिङ्ग० } ना० पु० भौरा, भ्रमर ।  
 मधुलिह० }  
 मधुधन० ना० पु० मधुता नगर ।  
 मधुबत० ना० पु० मधुकर, भौरा, भ्रमर ।  
 मधुशिप्र० ना० पु० अगस्त्य वृक्ष ।  
 मधुधवा० ना० स्त्री० गुड़हर, सजीवन वृक्ष ।  
 मधुप्रीली० ना० पु० मधुधा वृक्ष ।  
 मधुप्रीव० ना० पु० गुड़हर ।  
 मधुसूदन० ना० पु० शीतलवृक्ष ।  
 मधूक० ना० पु० मधुधा वृक्ष ।  
 मधुकरि० ना० स्त्री० पचाये घनरी भिषा जो  
 अतिथि को देते हैं, भौरा, रोटी ।  
 मधूनका० ना० स्त्री० मुलहठी ।  
 मधूप० ना० पु० गुड़हर ।  
 मधोदन्ती० ना० स्त्री० कुम्भी तालान की ।  
 मध्य० अन्त्य अन्तराल, नीच, विषय ।  
 मध्यदिक्स० ना० पु० उपहर ।  
 मध्यदेश० ना० पु० दुग्ध वातर, नीच का देश  
 अर्थात् हिमालय और विन्ध्य और प्रयाग और  
 कुश्न के मध्यका देश, अथवा आदि ।  
 मध्यभाग० ना० पु० मध्यस्था ।  
 मध्यम० गु० न भजा न सुरा, सनासम, धीरे,  
 न्यूनाधिक रहित, रागका स्वर विशेष ।  
 मध्यमपुरुष० ना० पु० मध्यमापीनर, रामने-  
 वाला, मुखानिच, हाथिर ।  
 मध्यमा० ना० स्त्री० अनामिका और तर्जनी के  
 बीचकी धतूरी ।  
 मध्यलोक० ना० पु० मधुप्यलोक ।  
 मध्यवर्ती० } ना० पु० विचित्रिया, विचित्रे,  
 मध्यस्थ० } समानवर्ती ।  
 मध्यस्थल० } ना० पु० शक्ति, कर्मर, नीचका  
 मध्यस्थान० } स्थान ।  
 मध्यार्द्र० ना० पु० टीकरोपहर, दिनका बीच ।

मध्या० ना० स्त्री० मदिता, शराब ।  
 मन० ना० पु० चित्त, हृदय, आत्मा, दे० सेरका ।  
 मनकामना० ना० स्त्री० मनोयोग ।  
 मनघटा० ना० पु० कुमाकी जगत् ।  
 मनचला० गु० चरचरा, अगमना, सूमा ।  
 मनजात० ना० पु० कामदेव ।  
 मनत० ना० स्त्री० मनोता, स्वीकार ।  
 मनन० ना० पु० चिन्तन, मनव्वा ।  
 मनभावन० } गु० प्राण, भला, चाहता ।  
 मनभावना० }  
 मनमङ्ग० ना० पु० कामदेव ।  
 मनमारना० रा० कि० अथवा इच्छाको रोचना ।  
 मनमोहन० ना० पु० सन्मन, प्यारा, शीतलवृक्षः  
 चन्द्रका एक नाम जो मनको मोहलेवे ।  
 मनस्विनी० ना० स्त्री० पतिव्रता स्त्री ।  
 मनसा० ना० स्त्री० इच्छा, अर्थ विचार, इरादह ।  
 मनसिज्ज० ना० पु० कामदेव ।  
 मनस्वी० ना० स्त्री० सत्त्वकी-देनेकी इच्छाकी ।  
 मनसेधू० ना० पु० मनुष्य ।  
 मनस्ताप० ना० पु० मनुषी पीडा ।  
 मनहु० अन्त्य माना, जगो ।  
 मनहारी० गु० मा का हरण करनेवाला ।  
 मगानी० स० कि० मृगीजर करवाना, याकर  
 रोग, बहलंग, मनको धाभना, कृपालकरना ।  
 मनावन० स० कि० मनावा ।  
 मनि० ना० स्त्री० मणि ।  
 मनिका० ना० स्त्री० मणिका, दाना, गुरिया ।  
 मनिहार० ना० पु० चूरीवाल, जाति विशेष ।  
 मनिहारी० ना० स्त्री० चूरी नेचनेवाली ।  
 मनीषा० ना० स्त्री० बुद्धि ।  
 मनीषिणी० ना० पु० बुद्धिमान्, चतुर ।  
 मनु० ना० पु० रसायनभुव आदि १४ जो प्रकृत-  
 कथ में होते हैं, रसायनमनु विरचित स्मृति,  
 मन्ना, मन्ना का पुन, प्रथम मनुष्य ।  
 मनुधा० ना० पु० मन, निखार, ना० स्त्री० नई  
 विशेष ।

मनुज० ना० पु० मनुष्य, आदमी ।  
 मनुजाद० ना० पु० अक्षर, दैत्य, राक्षस ।  
 मनुष्य० ना० पु० मानव, मर्त्य, आदमी ।  
 मनुष्यता० स्त्री० } मनुसाई, पुन्यार्थ, भल  
 मनुष्यत्व० पु० } मनसात ।  
 मनुसाई० ना० स्त्री० पुन्यार्थ, मनुष्यता, भल  
 भासी ।  
 मनुहार० ना० स्त्री० माहनी, सुदरी ।  
 मनो० अर्थ० माना, जाग ।  
 मनोगुप्त० ना० स्त्री० मासित ।  
 मनोज० ना० पु० कामदेव ।  
 मनोभव० ना० पु० कामदेव ।  
 मनोयोग० ना० पु० माका योग ।  
 मनोरथ० ना० पु० इच्छा, काममग, वासना,  
 मतलब ।  
 मनोरम० ना० पु० ग० मनोर, सुदर, सुन्दर ।  
 मनोहर० गु० मनका हरोहरा, मनोर ।  
 मनोब्र० य० सुदर, स्वरूप, चाहता, मनभासित,  
 भासी जाननेहरा ।  
 मनीषी० ना० स्त्री० जासिनी ना० पु० निचपई,  
 और मण्यर ।  
 मन्त्र० ना० पु० टोडना, शक्तिरथी, लक्ष्मी,  
 एकात या गुप्त उपदेश, रश्मति, सलह ।  
 मन्त्रणा० स्त्री० परमेश, विचार, आदेश ।  
 मन्त्रराज० ना० पु० तारकादि मन्त्र ।  
 मन्त्री० ना० पु० नित के साथ परामर्शी भी जान,  
 राजीर, रश्मि, सलाही, गु० मन्त्रनागे  
 हारा ।  
 मन्यन० ना० पु० मथन ।  
 मन्यरा० ना० स्त्री० फेरकी की दासी शिगा ।  
 मन्यित० गु० दख, मछ, मथित ।  
 मन्यी० ना० पु० चरमा, कामदेव, नन्दा, स्व  
 भांत अर्थात् राहु, शनैश्चर ।  
 मन्द० गु० अन्ध, धास, शिथिल, वर, दुष्ट,  
 नीच, अभागी, धर, मलान, ना० पु० पाय,  
 शनैश्चर, अज्ञान ।

मन्दतर० गु० अतिमद, अतिनीच ।  
 मन्दर० ना० पु० पर्वत विरोध ।  
 मन्दरा० ना० पु० गच्छीना, गु० गा,  
 शिगा ।  
 मन्दराचल० ना० पु० मन्दर ।  
 मन्दराज० ना० पु० समुद्र के तट पर उग्र  
 विशा ।  
 मन्दा० गु० धीरा, कोमल, नेत्र, सस्ता, हलका ।  
 मन्दाकिनी० ना० स्त्री० भीमगात्री, रागीय ।  
 मन्दार० ना० पु० कमल, मदार, कल्पवृक्ष ।  
 मन्दिर० ना० पु० घर, दवालय ।  
 मन्दिरा० ना० पु० मनीरा ।  
 मन्दोदरी० ना० स्त्री० रावण की स्त्री, पाँचवीं  
 कथा ।  
 मन्मथ० ना० पु० कामदेव ।  
 मन्वन्तर० ना० पु० एक मनुका का य, अर्थात्  
 इन्द्रचरि युगका परिमाण वा दो मनुओं के मध्य  
 का काल ।  
 मपान० ना० पु० गा, परिमाण ।  
 मपाना० स० वि० माप करवाग, नपाना ।  
 मफेनक० ना० पु० अफयून, अफाम ।  
 मम० स्त्री० मेरा, मैं, ना० स्त्री० ममता,  
 शर्मा ।  
 ममता० स्त्री० } ममरुद, दम्भ, मनमौज, माया,  
 ममत्व० पु० } माह, दास, प्यार ।  
 ममास्त्री० ना० स्त्री० मनुमक्ती ।  
 मामियासास० ना० स्त्री० पति वा पत्नी की  
 ममानी ।  
 मामियाससुर० ना० पु० पति वा पत्नी का  
 माय ।  
 ममेरा० गु० मामूका यथा, मामूका पुत्र ।  
 ममेराभाई० ना० पु० मामूका पुत्र ।  
 ममीश० ना० पु० मेरांशर, मेरासाथी ।  
 मय० ना० पु० कार्य, प्रधान, रूप, देव शिरो,  
 शिरो गु० बहुत ।  
 मयकल० ना० पु० पर्वत विराट ।

मयंक० ना० पु० चन्द्रमा ।  
 मयन० ना० पु० कामदेव ।  
 मयना० ना० स्त्री० पार्वती की माता, मैना ।  
 मयसुता० ना० स्त्री० मदोदरी ।  
 मया० ना० स्त्री० माया, दया ।  
 मयूर० ना० पु० मोर, पक्षी विशेष हस्त ।  
 मयूरक० ना० पु० उग्रा ।  
 मयूरभ्रमिक० ना० पु० नीलाशुभा, नृतिया ।  
 मयूरचोख० ना० पु० रघोना ।  
 मयूख० ना० पु० किरण ।  
 मरक० ना० पु० सर्वव्यापक रोग महामारी ।  
 मरकत० ना० पु० नीलम, नीलमणि, प्रवाल ।  
 मरकन्हा० } गु० मारनेहारा ।  
 मरकहा० }  
 मरगजी० ना० पु० सुरभ्राया इत्या मरगशब्द  
 कारसीका अर्थात् मौत और जो जीव अर्थात्  
 मृत्वा जीव यह शब्द सतसरे में हे ।  
 मरघट० ना० पु० मृतका के जलाने वा स्थान ।  
 मरजाना० अ० कि० मरना ।  
 मरजिया० ना० पु० समुद्र से मौता निकालने  
 हारेका नाम ।  
 मरण० ना० पु० प्राणवियोग, मृत्यु ।  
 मरदनिया० ना० पु० मर्दनी ।  
 मरना० अ० कि० प्राण निकलना ।  
 मरपच० अ० पु० सरा, गन्दा, जर्ण ।  
 मरपचना० अ० कि० इ ल वा शोकवा भोग  
 करना, अत्यन्त उद्यम करना, बहुत परिश्रम  
 अर्थात् मिहनत करना ।  
 मरभूखा० गु० उपासा, क्षमा, साऊ, नङ्गपेया ।  
 मरमर० ना० पु० पापाय विशेष, विह्वार ।  
 मरमराना० स० कि० शरचराना, यथा नई  
 जूती बालती हे ।  
 मरधैया० ना० गु० मरनेहारा वा मारनेहारा,  
 मृतकी ।  
 मरदहा० ना० पु० धन्द विशेष, जाति विशेष ।  
 मरा० गु० मरगया, मृतक ।

मराल० ना० पु० हस्त, वतक ।  
 मराली० ना० स्त्री० मराल की स्त्री, बाबल ।  
 मरिच० ना० स्त्री० मिरच, कालीमिरच ।  
 मरोचि० ना० स्त्री० किरण, लहरा, ना० पु०  
 छवि विशेष ।  
 मरोचिका० ना० स्त्री० मृगवृष्या, शराव ।  
 मरु० ना० पु० रेता, बालू ।  
 मरुधा० ना० पु० पाधा विशेष, निसमें सुगन्धि  
 होती हे ।  
 मरुक० ना० पु० मरुधा ।  
 मरुप्रिय० ना० पु० ऊ० ।  
 मरुश्या० ना० स्त्री० इन्द्रवायुणी, जवासा ।  
 मरुभूमि० ना० स्त्री० मारवाडकीधरती, रेवली ।  
 मरुल० ना० पु० मरुधा ।  
 मरुत्० ना० पु० वायु, पवन ।  
 मरोड्० ना० स्त्री० मरोड ।  
 मरोडना० स० कि० मडोडना ।  
 मरोडफली० ना० स्त्री० पाधाविशेष की फली ।  
 मरोडा० ना० पु० मडोडा ।  
 मरोडी० ना० स्त्री० मडोडी, ऐंडन, सरही ।  
 मरोर० ना० स्त्री० मरोड ।  
 मरोरना० स० कि० मरोडना ।  
 मरोह० ना० स्त्री० बौह, प्यार, माया, भलम  
 नसाह ।  
 मरोही० गु० छोही, मायावत, दयार्शील ।  
 मरुट० ना० पु० वातर, कपि ।  
 मरुटो० ना० स्त्री० कौबनीन, जाल, मरुडी,  
 वातरी, गणित मर्गनी जो विंगल में हे ।  
 मरुत्य० ना० पु० मरुत्य ।  
 मरुत्लोक० }  
 मरुत्लोक० } ना० पु० मरुत्तलोक ।  
 मरुद० ना० पु० पवार पोधा, गु० मलने-  
 हारा ।  
 मरुदन० ना० पु० शरीर का मलना, रगड़ना,  
 धिसार, नाशन ।  
 मरुदना० स० कि० मलना, नाशना, मिश्रना ।

मर्दनछूर्न० ना० पु० मैनफल ।  
 मर्दनी० शु० मलनेहारा ।  
 मर्दित० शु० जो मलागया, मारागया ।  
 मर्म० ना० पु० भेद, समाचार, ज्ञान, कोर,  
 कठार हृदयादि अंग ।  
 मर्मर० ना० पु० एफ पत्थर का नामहे यह शब्द  
 फारसी का है ।  
 मर्मस्थान० ना० पु० शरीरक जिस स्थान का  
 घाव सघातिक हे, भेदका स्थान ।  
 मर्मज्ञ० ना० पु० जो मर्म को जाने, ज्ञानी ।  
 मर्मी० शु० भेद, भेदज्ञाता, मर्मज्ञ ।  
 मर्याद० } ना० स्त्री० महत्, पति, सामान,  
 मर्यादा० } सीमा, हृद, यादा, प्रमाण ।  
 मल० ना० पु० मल० विषा, स्त्री की रज, पाप ।  
 मलक० ना० पु० पापी, आगला, जी विनाश ।  
 मलकना० अर्थ० जि० बहारने समान चलना, नी  
 धिगात्र वा उबकात्र ।  
 मलग० ना० पु० पक्षाविशेष ।  
 मलगो० ना० पु० सोा बननेहारा ।  
 मलात० ना० पु० रुपया वा पैसा जो विसगया  
 हो, सिलपा ।  
 मलथ० ना० स्त्री० कटुवरि ।  
 मलन० ना० पु० नाप, लोफ, मलो का काम ।  
 मलना० स० क्रि० मर्दना, भिस्ता, मीजना ।  
 मलया० ना० पु० वृद्ध, मैल, वर्तन विशेष ।  
 मलमल० ना० पु० कपडा विशेष ।  
 मलमास० ना० पु० लौद, अधिमास ।  
 मलमेठ० ना० पु० उजाड़, रुल्यानारा, होशुका  
 जैसे रसाद ।  
 मलय० ना० पु० पर्वतविशेष, जो दक्षिणमें है ।  
 मलयज० ना० पु० चन्दन ।  
 मलयगिरि० ना० पु० पर्वतविशेष, जहा चन्दन  
 अधिस्तासे उपजता है ।  
 मलया० ना० स्त्री० पदमाक, ना० पु०  
 मसय ।  
 मलपागिरि० ना० पु० चन्दन का रंग ।

मलयुत० शु० मैला ।  
 मलवाई० ना० स्त्री० मलवानेका पैसा वा काम ।  
 मलविका० ना० स्त्री० कालानिशीत ।  
 मलवेया० ना० पु० मलोहारा ।  
 मलवाई० ना० स्त्री० सादी, बासाई, मलने वा  
 काम वा पैसा ।  
 मत्तान० ना० पु० दु रत, उदास, दु खी ।  
 मलाना० स० वि० मर्दन कराया, धिमाना, मि-  
 जाना ।  
 मलार० ना० पु० रागविशेष ।  
 मलिच्छु० शु० म्ले छ ।  
 मलिन० शु० मलीन, मैला, उदास, ना० स्त्री०  
 कालीविरच ।  
 मलिनता० ना० स्त्री० माहित्य, अपवित्रता,  
 मैलापन ।  
 मलिनमुख० शु० उदास, कठोर, लिहाड़ा, दुष्ट ।  
 मलिनी० ना० स्त्री० पुष्पवती, रजस्वला ।  
 मलिन्द० ना० पु० अमर, भौता ।  
 मलिया० ना० स्त्री० काष्ठ वा तारियल वा मिट्टी  
 का पात्र, जिसमें तेल रखते हैं, हँकिया ।  
 मली० शु० मैला ।  
 मलीन० शु० मैला, अपवित्र, भूधला, उदास,  
 दु खित, म्याकुल ।  
 मलीनता० ना० स्त्री० मलिनता ।  
 मलेपञ्ज० शु० घोडा जिसकी आगुदशावर्ष से  
 अधिक दुई ।  
 मलेच्छु० शु० म्लच्छ ।  
 मल्ल० ना० पु० आलू, जो बाहुयुद्ध में निपुण,  
 योद्धा, पहलवार ।  
 मल्लयुद्ध० ना० पु० बाहुयुद्ध, कुदती ।  
 मल्लार० ना० पु० मलार ।  
 मल्लिक० ना० पु० पर्वत विराट ।  
 मल्लिका० ना० स्त्री० मालती, चम्पला, पुष्प  
 विराट ।  
 मल्लूर० ना० पु० नेलु, विल्ली ।  
 मलास० ना० पु० शरणा पाठा, आसरा ।

मशक० ना० पु० मसक, चमड़ाकृपी जलपान ।  
मशहरी० ना० स्त्री० मच्छका के निवारणार्थ जो  
आवरण पत्रग के ऊपर रहता है ।

मश्टणा० ना० स्त्री० अलक्षी ।  
मपी० ना० स्त्री० स्याही, रोशनाई ।  
मष्ट० पु० दुप, मोन, ना० छा० मौनी ।  
मष्टता० ना० स्त्री० दुपकी, मोता ।  
मसक० ना० पु० मच्छक, बिलार, मसा ।  
मसकना० अ० कि० पटना, चिरना, पसना,  
बोलना ।

मसकाना० स० नि० फाड़ना, चीरना, तोड़ना,  
घुलाना ।

मसकी० ना० स्त्री० दवाई, फगी, बाली ।  
मसमसाना० अ० कि० शिष्ट के डरसे मनरों  
बात छुपाना, छानाछानना ।  
मसठना० अ० कि० कुचतना, मानना और  
पीमना ।

मसहरी० ना० स्त्री० मशहरी ।  
मसा० ना० पु० मच्छक, इला, शरीर में काला  
ऊचा चिह्न विशेष ।

मसान० ना० पु० शमशा, मरवट ।  
मसानिया० ना० पु० जो मृत्त की वस्तु लेना ।  
मसि० ना० स्त्री० स्याही, रोशनाई ।  
मसिपात्र० ना० पु० दवापत्र, दान ।

मसिन्दुक० ना० पु० शनसा, काजलरा दीका  
जो शिया बालक के मथि में लगायी है ।

मंली० ना० स्त्री० ममि, रात, बाली ।

मलीन० } ना० पु० दूषित ।  
मलीना० }

मसूदा० ना० पु० दातों के ऊपर का मांस ।  
मसूर० ना० पु० अन्न विशेष ।  
मसुरविद्वेषा० ना० स्त्री० वासानितीत ।  
मसुरिया० ना० स्त्री० माना विशेष, शीतला  
विशेष ।

मसै० ना० पु० छोटी २ मूँछे जो नई जरायी में  
निलती है ।

मसोसना० स० कि० मडोइना, निचोइना ।  
मसोसा० पु० मडोइना, निचोइना, ना० पु० दुख,  
व्यथा, पश्चतावा ।

मस्तक० ना० पु० गाथा, शिर, खोपड़ी ।  
मस्तूल० ना० पु० शम्भ जो नार के बीचमें पाल  
बंदों के लिये गाइते हैं ।

मस्या० ना० स्त्री० कुटरी, कुटकी ।  
मस्याघार० ना० पु० दवापत्र, मसी रखने का  
पत्र ।

मस्ता० ना० पु० मसा ।  
मह० अ० मध्य, में, बीच ।

महंगा० पु० बडेमोलना, बाल, दुर्भिक्ष ।  
महंगी० ना० स्त्री० बाल, दुर्भिक्ष, बहूत ।  
महन० ना० स्त्री० सुगंधि, सुवाग ।

महचना० अ० कि० सुनास निकलना या उठना  
महकाना० स० कि० वासना, सोधाना ।  
महकीला० पु० सुगन्धित, सोधा ।  
महत्० पु० बड़ा, तेजस्वी, श्रेष्ठ, ना० स्त्री०  
बड़ाई, मर्यादा, मान ।

महगा० ना० पु० महती ।  
महति० ना० स्त्री० बड़ी बड़ाई, पु० बड़ी ।  
महतिया० ना० पु० महती ।

महतो० } ना० पु० जो महत्त्व गाव में प्रधान  
महतो० } होता है, सुबदम, महतिया ।

महत्फला० ना० स्त्री० बड़ीबुद्धि ।  
महत्त्र० ना० पु० श्रेष्ठता, बड़ाई, बड़ापन ।

महद्भाग्य० ना० पु० बड़ाभाग्य ।  
महद्दा० स० कि० महना ।

महन्त० ना० पु० सन्तों में ज्ञा प्रधान ।  
महन्ताई० ना० स्त्री० महन्तवा काम ।  
महदर० ना० पु० प्रधान भा० उलटकी जोर, नद  
का उपनाम ।

महारा० ना० पु० बहादुर, शौर्य ।

महार्द्रा० ना० स्त्री० कृद्दि, भोगों का राम  
 विशेष ।  
 महर्षि० ना० स्त्री० स्त्री०, पवित्रविशेष, महर्षीस्त्री ।  
 महर्षीक० ना० पु० स्वर्ग विशेष ।  
 महर्षि० ना० पु० महाशक्ति, महाशक्ति ।  
 महा० गु० वडा, कुलीन, निपट, अति ।  
 महाउन्नत० ना० पु० कदमवृक्ष, गु० महाजन्तु,  
 महोन्नत ।  
 महाकन्द० ना० पु० लहसुन ।  
 महाकर्त्ता० गु० बडाकर्त्ता, निरीचकर्त्ता ।  
 महाकाज० ना० पु० श्रीशिवजीका नाम, मूर्ति  
 विशेष, जो उल्लेख में है ।  
 महाकुम्भी० ना० पु० कायफल ।  
 महाखाल० ना० पु० समुद्रका जल जो चौड़े मुख  
 से स्थल में लगे है ।  
 महाघो० ना० पु० कंकडासिंह ।  
 महाजन० ना० पु० उत्तमलोग, साहूकार, सेठ ।  
 महाजनी० ना० स्त्री० महाजन का काम ।  
 महाजम्बू० ना० पु० जाजुन, फलेद ।  
 महाजाल० ना० पु० चतर ।  
 महातम० ना० पु० महात्म्य, बडाथेवकार ।  
 महातरु० ना० पु० सेहूँ ।  
 महातल० ना० पु० पातालविशेष ।  
 महातीर्थ० ना० पु० श्रेष्ठतीर्थ ।  
 महातुम्बी० ना० स्त्री० बड़ी तोपसी ।  
 महारमा० गु० महाराय, अतिशक्ति ।  
 महाम्य० ना० पु० महान्य, वरा, बडाई ।  
 महत्यागी० गु० संसार को भूट जाननेहार ।  
 महादेव० ना० पु० देवदेव, श्रीशिवजी ।  
 महादुम० ना० पु० महुआ, ताड़वृक्ष ।  
 महान्० गु० बहुतबडा ।  
 महानन्द० ना० स्त्री० जो श्रीमंगानामें पिछाई ।  
 महानवमी० ना० स्त्री० आश्विनशुक्लनवमी ।  
 महांगा० ना० स्त्री० इन्द्रपत्नी ।

महानिद्रा० ना० स्त्री० बड़ी नींद, मृत्यु ।  
 महापद्मक० ना० पु० तपे विशेष ।  
 महापातक० ना० पु० महाहत्यादि, बडापाप ।  
 महापातकी० गु० बडापापी, हत्यारा, जो ब्रह्म-  
 हत्या वा मोहत्या करे ।  
 महापुरुष० ना० पु० सातु मनुष्यसिद्धपरमात्मा,  
 श्रीनागपुत्र, बड़ी देनावर ।  
 महाप्रतापी० गु० बडा तेजस्वी, ऐश्वर्यवान् ।  
 महाप्रलय० ना० पु० जगत् का नाश जो प्रति-  
 कल्पान्त में होता है वा जिसमें ब्रह्मा सृष्टिधर्म  
 नशत है ।  
 महाफल० ना० पु० नारियल ।  
 महाफला० ना० स्त्री० लौका, छहडा ।  
 महाविश्व० ना० पु० आकाश ।  
 महाभारत० ना० पु० कौरव और पाण्डव का  
 युद्ध वा उसके वृत्तान्त का एकपुराण ।  
 महाभोगी० गु० बडा भोगी, निरिच्छाभोगी ।  
 महामणि० ना० पु० जेहरसुहरा ।  
 महामाया० ना० स्त्री० भगवती, जगत्जननी ।  
 महामुण्डो० ना० स्त्री० पौधाविशेष ।  
 महामेदा० ना० स्त्री० मेदा, श्रोत्रपि ।  
 महामोद० ना० पु० अत्यन्तप्रधानता, बड़ीभूल ।  
 महारजत० ना० पु० स्वर्ण, कांचन ।  
 महारस० ना० पु० ऊत, गन्ना ।  
 महाराज० ना० पु० राजाविराज, श्रेष्ठराज,  
 साधारण बड़ों का सम्बोधन ।  
 महारानी० ना० स्त्री० महाराजाई रानी ।  
 महाराष्ट्र० ना० पु० देशविशेष, जातिविशेष ।  
 महावट० ना० पु० गेह जो मान गांत में ध्वस्त  
 है, सहोद्री द्वार आदिमें धगते है ।  
 महावत० ना० पु० हाथीपैत, शीतमान ।  
 महावर० ना० पु० रंग हलार सी, लारी ।  
 महावला० ना० स्त्री० सहदेवी बूढ़ी ।  
 महावात० ना० पु० अग्नी, गन्ध ।  
 महाविषा० ना० स्त्री० गौह ।



महावृक्ष० ना० पु० मूसली ।  
 महादाय० ना० पु० महात्मा, दाता ।  
 महाशिरा० ना० स्त्री० मखली ।  
 महाश्यामा० ना० स्त्री० विधारा ।  
 महाश्वेता० ना० स्त्री० विदारीकन्द ।  
 महाष्टमी० ना० स्त्री० आश्विनशुक्लाष्टमी ।  
 महासागर० ना० पु० समुद्र ।  
 महासिद्धि० ना० स्त्री० मोक्ष, मुक्ति ।  
 महास्वप्ना० ना० स्त्री० जामुन, फलेद ।  
 महि० ना० स्त्री० पृथ्वी ।  
 महिदेव० ना० पु० ब्रह्मण्य ।  
 महिपाल० ना० पु० राजा, बादशाह ।  
 महिमा० ना० स्त्री० महत्त्व, बर्कार, श्रेष्ठता ।  
 नेत्रनामी, सिद्धिविशेष ।  
 महिरुह० ना० पु० वृक्ष, बड़ीघादि ।  
 महिला० ना० स्त्री० नारि, स्त्री, चौरत ।  
 महिप० ना० पु० भैसा, रीत्यविशेष ।  
 महिपञ्चज० ना० पु० यमराज ।  
 महिपासुर० ना० पु० दैत्यविशेष ।  
 महिपाल० ना० पु० शुक्ल, मृगल ।  
 महिर्षी० ना० स्त्री० भैशी, पय्यागी, राजरानी ।  
 महिपेश० ना० पु० यमराज ।  
 मही० ना० स्त्री० पृथ्वी, ना० पु० दही, मट्टा ।  
 महीधर० ना० पु० पर्वत, शेषादि, रागा, गी,  
 दिग्गज, ऋष्यप ।  
 महीना० ना० पु० मास, मासिक, दरमाहा ।  
 महीन्द्र० } ना० पु० राजा, पूर्वापति ।  
 महीप० }  
 महीपति० ना० पु० राजा, पूर्वापति ।  
 महीपते० कि० प्रासहोवादि, जाता है ।  
 महीरुह० ना० पु० महिरुह ।  
 महीश० ना० पु० राजा, बादशाह ।  
 महीश्वर० } ना० पु० ब्रह्मण्य ।  
 महीसुर० }  
 महुआ० ना० पु० वृक्ष विशेष ।  
 महेन्द्र० ना० पु० राजेन्द्र, प्रधान राजा ।

महेर० ना० पु० } भोजनविशेष ।  
 महेरी० ना० स्त्री० }  
 महेला० ना० पु० धकेके लिये पक्याहुआ  
 धर्वा ।  
 महेश० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।  
 महेश्वरी० ना० स्त्री० पार्वती, पीतल धातु ।  
 महेश्वर्य० ना० पु० बड़ा ऐश्वर्य्य ।  
 महोप० } ना० पु० पर्वविशेष ।  
 महोपा० }  
 महोत्तिका० ना० स्त्री० बड़ी क्यार ।  
 महोत्सव० ना० पु० बड़ा उत्सव, उत्सवान्त ।  
 महोदर० ना० पु० शिशाचर विराय, बड़ापेठ ।  
 महोला० ना० पु० जो तरुणावस्था में हुई में  
 मधुरे निश्चलते हैं ।  
 महोत्त० ना० पु० बड़ा बेल, मूल ।  
 महौजस्ती० ना० स्त्री० तन, बल ।  
 महौमयान्धरा० ना० स्त्री० मेदा औषधि ।  
 महौपध० ना० पु० जो अंगुलि शीघ्र रोगहर्,  
 लहसुन, घनीत ।  
 महौपधि० ना० स्त्री० सोंठि, मृदापिथ ।  
 महो० ना० पु० मही, धाल, मट्टा ।  
 महिका० ना० स्त्री० मँकली, माखी, माखी ।  
 मा० ना० स्त्री० लक्ष्मी, माना, सूर्य, सुभक्ती,  
 हर्षी ।  
 माई० ना० स्त्री० माता ।  
 माई० ना० स्त्री० ममानी, योग्यी विशेष ।  
 मां० अ० १० में भीतर, अंतर ।  
 मांग० ना० स्त्री० शिरके बालाक भीचकी लकीर  
 ओ फया बचनदत्त हुई ।  
 मांगचिकनी० ना० पु० पर्वविशेष ।  
 मांगनेना० स० कि० किसी के लिये उधारलेगा ।  
 मांगना० स० कि० चाहा, लखनकरना ।  
 मांगलेना० स० कि० उधारलेगा, सेतेलेना ।  
 मांगी० ना० स्त्री० उधर, सेत, बचनदत्त ।  
 माल० ना० पु० रात, पीव ।  
 मांजन० स० कि० भेसा, उभयत करण ।

मांभ० ना० पु० रागिनी विशेष, अन्व० मन्त्र, वीच ।  
 मांभक्त० ना० स्त्री० ठाठ ।  
 माभा० ग० पु० पतगर्भ डोर में शिशा और भातका लगाया, जड़वट ।  
 माभ्नी० ना० पु० नाविक, कर्षणार, निचमाती, मन्ववर्ती ।  
 मांड० ना० पु० पीच, कामी ।  
 माणना० स० कि० मलना, मीना, साना, करना, कल्पचदाना ।  
 माङ्गा० ना० पु० फलीविशेष, रोगविशेष ।  
 माङ्गी० ना० स्त्री० कल्पविशेष जो चाव गे को पीसके वा पकके बाने है ।  
 मांङ्गा० ना० पु० मदा ।  
 मांद० ना० पु० दुका, भार, गोनर ।  
 मांस० ना० पु० मांस, गारत, कलिया ।  
 मासमन्त्री० }  
 मांसाद० } ना० पु० शु० मास खानद्वारा ।  
 मांसाहारी० }  
 माह० } अन्व० मन्त्र, अंतर, भातर ।  
 माहि० }  
 माकन्द० ग० पु० आभरा वृष वा वल ।  
 माकण्डा० पु० मूर्ति, निर्दुक्ति, उल्लू ।  
 माकन० ग० पु० मवसन, गैर, दही, मसूर ।  
 माखी० ना० स्त्री० मखला, शहद ।  
 मागध० ना० पु० मा, पकलित, वशायेन कर ।  
 हारा पुस्तिका प्रशस्त ।  
 मागधा० ना० स्त्री० गारहीद, सौक ।  
 मागधे० ग० स्त्री० पीपली सौक ।  
 माघ० ग० पु० ग्यारहवा महीना, काश्याशेष ।  
 माघी० ना० स्त्री० जो माघ में उपनृत है ।  
 माघा० ग० पु० मच, पलग ।  
 माघिवा० ग० स्त्री० भाई दत्ता ।  
 माघी० ग० स्त्री० हेंगा रगजा ।  
 माघुर० ग० पु० मन्त्र, मत्त मराक ।  
 माघी० ग० स्त्री० मक्ली ।

माजाई० ना० पु० क्या वा बेटी जो एगुमासे उपने हो ।  
 माजू० ग० पु० माचकल ।  
 माभू० ना० पु० माभ ।  
 माभधार० ना० पु० वीचारा ।  
 माट० ना० पु० बड़ा मन्वा ।  
 माट्टी० ना० स्त्री० शक्ति, मिट्टी ।  
 माटा० ना० पु० मगरा, नटखर, मट्टा ।  
 माठ० ना० पु० ठटोल ।  
 माइना० स० कि० माइना ।  
 माइनि० ग० स्त्री० माइ ।  
 माइया० शु० पतला, दुर्बल ।  
 माइय० ग० पु० मण्डप, मक्का ।  
 माणचक० ना० पु० यज्ञोपवीत के योग्य जो मालरहो वा गिरिकी अवस्था साइदे वर्षे से बगह ।  
 माणिक० } ना० पु० देश विशेष, स्वप्नाग्र  
 माणिक्य० } सेन, हीरा, खाल, रक्त विशेष ।  
 मात० ना० स्त्री० माता, माता, मतवालयन ।  
 मातग० ग० पु० हाथी ।  
 मातना० अ० नि० माताला होना ।  
 मातलि० ग० पु० दण्डका रथान् ।  
 माता० ग० स्त्री० जाती, शीतला, पीपुवारि, शु० मत्त, मत्त ।  
 मानामह० ग० पु० गागा, माता का भाव ।  
 मातामही० ग० स्त्री० नानी, माताजी मत्त ।  
 मातुल० ग० पु० माम् माता का भाई ।  
 मातुलानी० ग० स्त्री० ममाना, भय ।  
 मातुली० ना० स्त्री० ममा, पी ।  
 मातुलुग० ग० पु० निनीरा ।  
 मातु० ग० स्त्री० माता, महवारी ।  
 मात्र० शु० अन्व, किञ्चित्, अन्व० सर्व, रूप ।  
 मात्रा० ग० स्त्री० अन्व क उपरकी देता, रत्त, परिभाष ।  
 मासख्य० ना० पु० दाह, धार, जलर, इमद ।  
 माथ० ग० पु० मत्तक, सलाह, गन्दी ।

माघीलेना० स० कि० एकदा बनेना ।  
 माधुर० ना० पु० मधुराका यामी, मालव्य और  
 वापर्यपी जाति विशेष ।  
 मादक० गु० मत्त करनेवाली वस्तु, नशा बढ़ाने  
 वाली चाञ्च ।  
 मादकता० न० धी० गरा अथवा हितित  
 विचारदान मरती, बहारी ।  
 माद्री० ना० स्त्री० सहदन और तूडलकी माता ।  
 माघव० ना० पु० वैशाखमास, मधुपवृक्ष, श्रीहृ  
 ष्यचन्द्रनी का एक नाम ।  
 माघवी० ना० छा० वाराहीचन्द्र, साङ्ग अर  
 लताविशेष ।  
 माधुरी० ना० स्त्री० मंटी सुन्दर ।  
 माधुर्य्य० ना० पु० सुन्दरता, मित्रास ।  
 माघ्या० ना० स्त्री० मधुघाकी माया ।  
 मान० ना० पु० नामपति, मय्यांग, घमक, अहङ्कार  
 परिमाण, अभिमान नाञ्च ।  
 मानकञ्चू० । पु० बन्दविशेष जा नगल में  
 हाता ह ।  
 मानता० ना० स्त्री० प्रथ, प्रविज्ञा, पूजा, दा  
 बहाई ।  
 मानदा० ना० स्त्री० मानवी दाता, चन्द्रमाकी  
 एक कलाका नाम ।  
 मानव० ना० पु० मनुष्य, आदमी ।  
 मानस० ना० पु० मन, मनसा, मनुष्य, मान  
 सारा ।  
 मानसमूल० ना० पु० सरयूनाद ।  
 मानसिक० ना० मनकी आशा, मनोवृत्ति, मनस ।  
 मानहु० अ० मानो ।  
 मानाम न० ना० पु० मां और अयमान ।  
 मानिक० ना० पु० माणिक्य ।  
 म निकजोड़० ना० पु० पचीविशेष ।  
 मानिनी० ना० स्त्री० अभिमानवती स्त्री ।  
 माना० गु० मय्याङ्क, अभिमाणी ।

मानुष्य० } ना० पु० मनुष्य, आदमी ।  
 मानुष्य० }  
 मानो० अ० जानो ।  
 मा-वत्ता० ना० पु० राजाविराज ।  
 माघ्रा० स० कि० पतिरखना, पूना प्रहणकरना,  
 अगीकार करना, ननालास ।  
 मान्य० ना० गु० जा पूजने वा मानने के योग्य,  
 पूज्य ।  
 मान्यता० ना० स्त्री० पूजा, कुदई ।  
 मा १० ना० पु० गाय, पैमास ।  
 मापक० पु० गायनवाला, अमीन ।  
 मापना० स० कि० नापना, पैमास करना ।  
 मायाप० ना० पु० माया पिता ।  
 मामा० ना० पु० मातुल, मामू ।  
 मामी० न० स्त्री० ममानो माई, मामाकी जीव ।  
 मामी रीना० स० कि० पड़करना, अरीमरना ।  
 मामू० ना० पु० माया सपे ।  
 माया० ना० स्त्री० कृपा, माह, देया, करुणा, प्रेम,  
 दल, धास्त, सम्पत्ति धन भूल, योगमाया,  
 आत्माके विषय इन्द्रमालविद्या ।  
 मायावृत्त० ना० पु० सरयू इन्द्रमाली गु० जो  
 माया से बनाया गया ।  
 मायापति० ना० पु० जा मायाके स्वामी हार  
 विराज परमाना ।  
 मायावी० गु० खली कपरी, रासत विशय ।  
 मायिक० ना० पु० माजीर, इन्द्रमालिक,  
 टनहा ।  
 मार० ना० पु० कापन, विष, विष, अमृत,  
 ना० स्त्री० प्रहार धया, लड़ई ।  
 मारक० ना० पु० मारनहार ।  
 मारग० ना० पु० माग ।  
 मारहालना० स० कि० बधकरना ।  
 मारण० ना० पु० बध, इत ।  
 मारना० स० कि० पीटना, कुदना, ताड़ना,  
 करना बधकरना, विगादना, टठाना, चरि

याना, बाफना, रेफिना, धामना, मर्दनकरना ।  
 मारवा० ना० पु० रागविशेष । ० ।  
 मारवाह० ना० पु० देश विशेष । ,  
 मारवाही० ग० पु० मारवाहदेशका वासी वा  
 उस देशकी वस्तु ।  
 मारा० गु० वधहृत्त्रा, जो हृत्त्रया, ना० पु०  
 वारा, विद्यार ।  
 माराजाना० थ० कि० कपाना, हूनजाना, या  
 धाहोना, वधहाना ।  
 मारो० ना० स्त्री० मरक, महामारी, ववा ।  
 मारीच० ना० पु० ककूल, दैत्यविशेष ।  
 मारीचपत्रक० ग० पु० शालग्राम ।  
 मारुत० ना० पु० वायु, पवन ।  
 मारुतसुत० } ना० पु० श्रीहनुमान्त्री, भीमसेन ।  
 माहति० }  
 मारु० ग० पु० वैगनविशेष, रागविशेष, डका,  
 मारुनेहारा, मरुदेश ।  
 मारु० थ० य० स, कारण, निमित्त ।  
 मार्कण्डेी० ना० स्त्री० मखली ।  
 मार्कण्डेय० ना० पु० कालीन, मुनि विशेष ।  
 मार्कव० ग० पु० भृंगराज, भगवत्, पौरु ।  
 मार्ग० ग० पु० सडक, वाट, राह, अगहन,  
 अयुन ।  
 मार्गण० ना० पु० वाणु, तीर ।  
 मार्गशीर्ष० ना० पु० अगहन ।  
 मार्गित० थ० मार्गदेवता, बाहेरेण ।  
 मार्जन० ना० पु० कर्षा करने का काम, बगई,  
 माजना ।  
 मार्जार० ग० पु० बिलार, बिलोण ।  
 मार्तण्ड० ग० पु० सूर्य ।  
 मार्तण्डमण्डन० ग० पु० सूर्यमण्डल, सीतका  
 मार्गविशेष ।  
 माल० ग० पु० मल, माला, समूह ।  
 मालकंगनी० } ना० स्त्री० घोषि, पौधा  
 मालकाकुनी० } विशेष ।

मालकौश० } ना० पु० रागविशेष ।  
 मालकौस० }  
 मालती० ना० स्त्री० दो तीन जाति के पुष्प,  
 पोधाविशेष ।  
 मालनीजात० ग० पु० सुहागा ।  
 मालतीपत्रिका० ना० स्त्री० जाति ।  
 मालदीप० ना० पु० सिंहलद्वीप व समीप द्वीप  
 विशेष ।  
 मालपुत्र्या० } ना० पु० पकनाविशेष ।  
 मालपूप० }  
 मालव० } ना० पु० देश विशेष, सजल ।  
 मालना० }  
 मात्ता० ना० स्त्री० पुष्पादिका हार, योषी, धक्ति,  
 कठी, तसवाह, रुद्राणादिकी ।  
 मालाकार० ना० पु० माली ।  
 मालिन्० ना० स्त्री० मालीनी स्त्री ।  
 मालिनी० ना० स्त्री० छदविशेष ।  
 मालिन्य० ना० पु० मलिता ।  
 माली० ना० पु० वागर्सीचेहारा वा लगाने  
 हारा, जाति विशेष मालाधारा ।  
 मालूर० ना० पु० बिल्व, बेल ।  
 माल्य० ना० पु० फूलकी माला ।  
 माल्यवान्० ग० पु० राक्षस विशेष ।  
 मायस० ना० स्त्री० अयोव्रत, कृष्णपत्नी १५ ।  
 माया० ना० पु० आहार, अडेनी पिलार, खोवा,  
 गाढ़ा दूध ।  
 माय० ना० पु० उरद, अन्नविशेष, ईषा, ईस ।  
 मायमान० ग० पु० एकउरदभर ।  
 माया० ना० पु० तोलेकापरहर्षमाण, ईस्ती ।  
 मास० ना० पु० महीना, सम ती, मार्ग ।  
 मासा० ना० पु० माया ।  
 मासान्त० ना० पु० महीने का अन्त वा अन्ति  
 की तिथि ।  
 मासिक० पु० महीनेका, माहवारी, दैर्मही नाई  
 पु० याद जो प्रतिमास क्रियामाता है ।

मासिकविभाग० ना० पु० नौकरी का पैसा  
बदना ।

मासिकविभागी० शु० बत्तरी, नौकरीका खर्चा  
नादनेहारा ।

मासी० ना० स्त्री० मासी, माताजी बहन ।

माह० ना० पु० माघ, अथ० मघ, बीच, से ।

माहात्म० } ना० पु० सुगरा, सुकीर्ति, बड़ाई,  
माहात्म्य० } बहूपन, महानम ।

माही० अथ०, बीच, म, ना० स्त्री० माधी ।

माहुर० ना० पु० विप, हलाहल ।

माहू० ना० पु० दीर्घशेष, वासलाई ।

मासिक० ना० स्त्री० सोतामकली ।

मिचकारना० स० कि० खचालना, अनवासना,  
धोना ।

मिचना० अ० कि० मूदना, लगना, बद्धोना ।

मिचोलना० स० कि० खालमूदना ।

मिटना० अ० कि० बिगाड़ना, मलमिन्दोना ।

मिटाना० स० कि० बिगाड़ना, भेटना, मल  
मट करना ।

मिटिया० ना० स्त्री० मिट्टी की दूधी विशेष ।

मिटियाना० स० कि० मिट्टी से मलना ।

मिटियामेट० शु० भिद्यया, निश्चयहोग्या ।

मिटेलना० स० कि० मिटाना ।

मिटेला० शु० भिद्ययागया, भिद्ययाहुषा ।

मिट्टी० ना० स्त्री० मागी, मृत्तिका, धूल, भूमि ।

मिट्टरी० ना० स्त्री० परछा विशेष ।

मिट्ठरी० ना० स्त्री० मिधान, मिधान, उद,  
शकर ।

मिठास० शु० मधुरता, मिष्टता ।

मिताद्वारा० ना० स्त्री० प्रायमविशेष ना० पु०  
बद्ध विशेष ।

मिति० ना० स्त्री० अउ, मर्याद, वादह, प्रमाद ।

मिती० ना० स्त्री० तिथि, तारीख, न्याय, सूद ।

मित्र० ना० पु० हिद, बउ, दोस्त, सूर्य, अग्नि ।

मित्ररं० } ना० स्त्री० बउना, हितकार, भूति  
मित्रता० } दोस्ती, यारी ।

मित्रद्रोही० ना० पु० जो मित्रके साथ बैरकरे ।  
मित्रपोपी० शु० मित्रका पालनेहारा, दोस्त-  
पर्वत ।

मियः० अथ० परस्पर ।

मिथिला० ना० पु० जनपुर, निरहुत ।

मिथिलावति० } ना० पु० राजा जात्र, या  
मिथिलेश० } मिथिलाका राजा ।

मियुन० ना० पु० पुनरा स्त्री, युग्म, दो, और  
राशि तीसरी ।

मिथ्या० अथ० अथवा ना० पु० झूठ, वृथा ।

मिथ्यावृष्टि० ना० स्त्री० नास्तिकता, कुपूर,  
- झूठी गीत ।

मिथ्यावृत्ति० ना० स्त्री० भ्रम, भूल ।

मिथ्यावाद्० ना० पु० झूठ, वृथा वाक्ता ।

मिथ्यावादी० शु० झूठा, वृथावादी ।

मिनती० ना० स्त्री० विनता ।

मिमियाना० अ० वि० बिस्ली या बररीकाशब्द  
करना ।

मिमियाहट० ना० पु० बिल्ली या बररीकाशब्द ।

मिरा० ना० स्त्री० मदिरा, शराब ।

मिर्गी० ना० स्त्री० राजरोषु विशेष ।

मिर्गीहा० शु० जिससे मिर्गीका रोगहोता ।

मिर्च० स्त्री० स्त्री० मरिच ।

मिर्चा० ना० पु० खालमिर्च ।

मिर्दग० ना० पु० मृदग ।

मिर्दगिया० } ना० पु० मृदगकाशब्द ।

मिर्दगी० } ना० पु० मृदगकाशब्द ।

मिर्दहा० ना० पु० करीब जो गांव में रहता है ।

मिखन० ना० पु० मेल, मुलाकात ।

मिखनसार० शु० मिलानी, मेली ।

मिखना० अ० कि० मिथित होना, भेटना, ए-  
कठा होना, बैठना, शवा, पाना ।

मिखयाना० स० कि० मिथित करवाना, भेट  
करवाना ।

मिखान० ना० पु० मिलाप, भेट ।

मिखना० स० कि० मिथित करवाना, जोड़ना,

लगाना, सादर करना, मिलाप करना ।  
 मिलाप० ना० पु० मल, बनाव, भेंट, एषता ।  
 मिलाप्य० शु० मिलनसार ।  
 मिलाच० ग० पु० मिलापी मेल ।  
 मिलित० शु० मिला हुआ, ममथित ।  
 मिलोनी० ना० स्त्री० मिलाव, मेल ।  
 मिशि० ना० पु० सोया का साग ।  
 मिश्र० शु० मिला हुआ, मिलित, नासखों, म जाति  
 विशेष, वैद्य ।  
 मिश्रानी० ना० स्त्री० मिश्र की स्त्री नदर ।  
 मिश्रित० शु० मिलित, मिला हुआ ।  
 मिश्री० ना० स्त्री० मिठाई प्रसिद्ध, मिल्ही ।  
 मिश्रेय० ना० पु० साया का साग ।  
 मिय० ना० पु० बनारस, पेलना, धावल, पोला,  
 हीला बहाना ।  
 मिष्ट० ना० पु० मीठा मसुर ।  
 मिष्टा० ग० स्त्री० मिठाई, शुद्ध ।  
 मिष्टान० } ना० पु० मिठाई मिला अन्न ।  
 मिष्टान्न० }  
 मिस० ग० पु० मिय ।  
 मिसना० अ० कि० पिसना ।  
 मिसर० ना० पु० मिश्र, दस विशेष जो पुना  
 के दक्षिण में है ।  
 मिसी० ना० स्त्री० मिससी ।  
 मिस्र० ना० पु० मिय ।  
 मिस्री० ग० स्त्री० दातों का मनु विशेष ।  
 मिहदी० ना० स्त्री० मेंदी ।  
 मिहना० ना० पु० बोली ठाली ।  
 मिहरा० ना० पु० पुरुष जो स्त्रीका नेत्रधरा है ।  
 मिहराक० } ना० स्त्री० स्त्री, औरत, नारि ।  
 मिहरिया० }  
 मिहरी० }  
 मिहाना० अ० कि० सीलना, पीला होना ।  
 मिहानी० ना० स्त्री० मथानी, मथीया, धादी ।  
 मिहिर० ना० पु० धर ।

मीजना० स० कि० मानना, मलना, मसलना ।  
 मीच० ना० स्त्री० मृदु, मौत ।  
 माचना० } स० कि० मूदना, बन्द करना ।  
 मीछना० }  
 मीजना० स० कि० मलना, रगकना, मसलना ।  
 मीजू० ना० स्त्री० मसूर ।  
 मीठा० शु० मसुर, पीपल, सुस्त, नागर्द, ग० पु०  
 विष विशेष, फल विशेष ।  
 मीठिया० } ना० स्त्री० चूसा, चूमी, मची ।  
 मीठी० }  
 मीड़ना० स० कि० मीनना ।  
 मीडे० शु० मलेगये, मलेहूप ।  
 मीणा० ग० पु० जाति विशेष ।  
 मीत० ना० पु० मिय, सज्जन, मीठा, दोस्त ।  
 मीतन० ना० स्त्री० सगामीस्त्री, सर्सी, सइड़ी ।  
 मीता० ना० पु० सनाम, हमनाम ।  
 मीन० ना० स्त्री० मखली, बारहवीं राशि, ग०  
 पु० श्रीविष्णुजीका प्रथमावतार ।  
 मीनकेतु० ग० पु० कामदेव, प्रपुम्बनी ।  
 मीरहा० ग० पु० बनसी, नदिरा, बरवा ।  
 मीना० ना० पु० हिन्दुजाति विशेष जो चीर  
 होते हैं ।  
 मीमांसक० ना० पु० ब्रह्मवादी, ईश्वरवत्ता ।  
 मीमासा० ना० स्त्री० हिन्दू का मत विशेष,  
 शास्त्र विशय ।  
 मीमियाना० अ० कि० मिथियाना ।  
 मीसना० स० कि० पीसना, मलना, घेंटना,  
 घोरना, धरना ।  
 मुकतई० ना० स्त्री० छुटी, उदाई ।  
 मुकरना० स० कि० नकार करना, न मानना ।  
 मुकरी० ना० स्त्री० मजभाषा में धन्दविशय ।  
 मुकुट० ग० पु० मङ्क, तान, धन ।  
 मुकुन्द० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का एक नाम,  
 शुक्तिदाता ।  
 मुकुर० ना० पु० दरप, चादन ।  
 मुकुल० ना० पु० कली जो धुलनाती है ।

मुकुलितं गुं शीतो खिलीहरे कली, फूला,  
 मोरयुत, श्याम आदि वीर समेत ।  
 मुकुन्दकं गा० पु० रिक्ता मवा {  
 मुकेलं गा० शी० नरेल ।  
 मुक्तां ना० पु० } पूमा, गुम्मा ।  
 मुक्तीं ना० शी० }  
 मुक्तं गुं निती मुक्तिपरि, अनिगत ।  
 मुक्तस्मा० ना० स्त्री० रागा ।  
 मुक्तां ना० पु० मोतीं, गुं वदत ।  
 मुक्तामणि० गा० पु० मोती ।  
 मुक्तास्का० ना० पु० सीपी ।  
 मुक्ताहतां ना० पु० मोती, शब्दनिर्जन के यथा,  
 यथाहल निये चोष लुभाव, मीनपूरे की  
 हरियशगाव ।  
 मुक्तिं ना० स्त्री० मातृ, पात्र से उच्चार, निस्कार,  
 शाय एवमात्, निजात ।  
 मुक्तिदातां ना० पु० मुक्तिदन्धारा, उच्चारक ।  
 मुखं । } ना० पु० मूत्रां पुंहे ।  
 मुख्यां }  
 मुखद्वयं गा० पु० पिपासुं पलाह, पात्र ।  
 मुखमण्डनं गा० पु० विलम्बत ।  
 मुखरं गुं वरवाणी, दुष्ट ।  
 मुख्यागरं } ना० पु० स्मृत, ज्ञानी याद ।  
 मुख्यात्रं }  
 मुखानं गा० पु० छत्राद्वा बहुवचन ।  
 मुखियां } गा० पु० मधां गुं पहिला, मुक्ता,  
 मुख्यं } छात्र अथवा, शर ।  
 मुग्धरं गा० पु० भोग्य, काष्ठकी मोगरी  
 विशेष मिश्रणे किराते हे ।  
 मुग्धं यं अज्ञानी, मूर्ख भङ्गां भङ्ग ।  
 मुग्धां ना० स्त्री० दुकारी या अतिविमान,  
 पुं भूली, मूर्ख ।  
 मुकुन्दं ना० पु० राजा विराय जो अयोध्या  
 में हुआ हे ।  
 मुजरां ना० पु० प्रणम दण्डननु, भा ।  
 मुदापां गा० पु० मोग्य, मोतीपन ।

मुष्टीं ना० स्त्री० हाथ, बुकटा ।  
 मुठमेरं गुं धनि निकट, बहुतपास ।  
 मुठियां गा० पु० हाथभर, दरजा, प्रन्निह ।  
 मुठोलियां ना० पु० मठोलिया, ठट्टा ।  
 मुठोलीं गा० शी० ठट्टा, मणोली ।  
 गुहनां थ० कि० ठकाहोपा, बलताना ।  
 गुहं गा० पुं प्रधान ।  
 मुठियां ना० थ० कि० मुहना ।  
 मुण्डं गा० पु० शर, मरक एद ।  
 मुण्डधारीं ना० पु० श्रीमहाश्वजी, अथोरी ।  
 मुण्डनं गा० पु० नालकके पहिने वारनवणि,  
 गुणने का नाम ।  
 मुण्डनां थ० कि० बालवनाना, ठगनाथ ।  
 मुण्डलां गुं मूढागया, मुकियां ।  
 मुण्डनानां स० कि० नालवनाना ठगाया ।  
 मुण्डां ना० पु० पतन का शिर, एद, गुं धी  
 मूढागया च दत्ता ।  
 मुण्डानां स० कि० मुड्याया ।  
 मुण्डासां गा० पु० बुध कपडा जो मूड में  
 बांधते हैं, अम्माया ।  
 मुण्डितं य० मुल्ला, मुवागया ।  
 मुण्डितं भिन्नं ना० स्त्री० मूडी, मुनी ।  
 मुण्डियं ना० पु० शिर, एकप्रकार के सधू ।  
 मुण्डें गा० शी० मूडी गा० पु० मुडियां,  
 सधू ।  
 मुण्डें गा० पु० रयासी, साहाई ।  
 मुण्डेरं } ना० स्त्री० छतपर की धीपीभिन,  
 मुण्डरीं } भीत या शिरा ।  
 मुतनां पुं बहु मृते शरी, समुत्तकी ।  
 मुतालं ना० स्त्री० मृते की हवागया ।  
 मुतामां गुं निरुत्त मृते की हवा है ।  
 मुदं ना० पु० आद, प्रसधता, सुरी ।  
 मुदां गा० शी० भाद, मयूर ।  
 मुदितं य० हीनि अलदिते निहाल ।  
 मुदिरं ना० पु० मध, शीदले ।

मुदिरनाथ० ना० पु० इद्र ।  
 मुद्र० ना० पु० मृग अन्न ।  
 मुद्गर० ना० पु० मुद्गर, मोंगर ।  
 मुद्रा० ना० स्त्री० छाप, उवर्ण वा चादी का रूपया  
 वा मोहर, छद्मा, यत्र, अण्टी ।  
 मुद्रांकित० गु० जो छापागया ।  
 मुद्रिका० ना० स्त्री० मुदरी, अण्टी ।  
 मुद्रित० गु० अन्विका, छँदा जो छापा गया,  
 सिका जारी किया गया ।  
 मुनमुन० ना० पु० विही के पुकारों की शब्दा  
 यात्र विशेष ।  
 मुनमुनाना० अ० कि० विही के पुकारों,  
 थोडा बड़े सूखजाना ।  
 मुनि० ना० पु० ऋषि, तपेश्वरी, विद्वान् ।  
 मुनिद्रुम० ना० पु० अगस्त्य वृक्ष ।  
 मुनिपट० ना० पु० बकला, भोजनपत्रादिके बरन ।  
 मुनिपति० ना० पु० मुख्य मुनि ।  
 मुनिपद्म० ना० पु० शातपदवी, मुनिका पेर ।  
 मुनिया० ना स्त्री० लालपक्षी की स्त्री ।  
 मुनिवह्म० ना० पु० चिरांजी ।  
 मुनीन्द्र० } ना० पु० गनियों का प्रधान,  
 मुनीश० } ऋषारा ।  
 मुन्था० ना० स्त्री० ज्योतिष में प्रसिद्ध ।  
 मुन्दना० अ० कि० बद्धोपा, मिथना ।  
 मुन्दरी० ना० स्त्री० अण्टी, बदरी ।  
 मुमास्त्री० ना० स्त्री० मधुमास्त्री ।  
 मुमुक्षु० गु० प्रकृति लोकोवाला ।  
 मुमुषु० ना० पु० जो मत्स्य मरा पर है ।  
 मुर० ना० पु० दसविशेष ।  
 मुरई० ना० स्त्री० मूली ।  
 मुरफना० अ० कि० छेडा, बलपकना ।  
 मुरफाना० र० कि० एठना, बलदेना ।  
 मुरफी० ना० स्त्री० का का भूषणविशेष ।  
 मुरचम० ना० पु० यानविशेष ।

मुरभाना० अ० कि० एतजाना, सुहलाना ।  
 मुरडाकरना० स० कि० जपकरना, बाधना ।  
 मुरमुरा० ना० पु० त्वर्यविशेष ।  
 मुरला० गु० पोपला, प्रदात, ना० पु० मोर ।  
 मुरली० ना० स्त्री० बनसी, बशी, मासरी ।  
 मुरलीधर० ना० पु० बशीधर, श्रीकृष्णजी ।  
 मुरवा० ना० पु० पात्र की कलाई, मोर ।  
 मुरदा० ना० पु० लकड़, सेंद, मयूर, विनामिता  
 पिताका मालक ।  
 मुरही० ना० स्त्री० ऐंठन, गरोड़ ।  
 मुराई० } ना० पु० काली, तरकारी बचने  
 मुराऊ० } माला वा बौहारा, वायरी ।  
 मुरार० ना० स्त्री० कमल कीजड़ ।  
 मुरारि० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी ।  
 मुरेला० ना० पु० मोरका पच्चा ।  
 मुरी० ना० पु० पेड़ोला, पेचिरा, छद्मदर ।  
 मुसकना० अ० कि० मुसकाना ।  
 मुलतान० ना० पु० देश या नगरविशेष ।  
 मुलतानी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, य० जो  
 मुलतानव सी है ।  
 मुलतानीमिष्टी० ना० स्त्री० पीली मिष्टी  
 प्रसिद्ध ।  
 मुलहट्टी० ना० स्त्री० जटीमधु ।  
 मुलाई० ना० स्त्री० अन्न ।  
 मुलाना० स० कि० मोलठहराना, उकाया ।  
 मुत्क० ना० पु० अरुकेकोरा ।  
 मुणामुष्टि० ना० पु० पतमपूमा ।  
 मुष्टि० ना० स्त्री० मुष्टी, पसा, मुफा ।  
 मुष्टिक० ना० पु० धूसा, मूका ।  
 मुसकाना० अ० कि० झणके हस्ता ।  
 मुसहराई० ना० स्त्री० हसा ।  
 मुसहराना० अ० कि० धूसाका ।  
 मुसल० ना० पु० मुसल ।  
 मुसलमान० ना० पु० इस्लामका मतावलम्बी ।  
 मुसताना० स० कि० पीरी करवाना ।



मुस्तवारिधरं } ना० पु० नागरमोषां ।  
मुस्तां }

मुहरा० ना० पु० हरावल, अगाकी, दरवाचह ।

मुहरी० ना० स्त्री० कोस, घोटापनाला ।

मुहाना० ना० पु० नदी का वह स्थान जहाँ  
समुद्र से मिलती है ।

मुहासा० ना० पु० फुनसी, छहरसा, मरोसा ।

मुही० सर्व० मोदि, मुभ्रमे ।

मुहुर्मापा० ना० स्त्री० इ खित वाक्य, पुन-  
रुपन ।

मुहुर्मुहुः० अय्य० पुन. पुन वारवार ।

मुहूर्त्त० ना० पु० दोषही ।

मुष्मा० श० मरा ।

मुंग० ना० पु० अघविरोध ।

मुंगची० } ना० स्त्री० मूगकी बनी ।

मुंगरी० }

मुंगा० ना० पु० शवाल, विदुम ।

मुंगिया० ना० पु० मूगके रगके तुल्य रग ।

मुंछ० ना० स्त्री० मूख होंठके ऊपर के बाल ।

मुंज० ना० स्त्री० तृणविशेष जिसकी रस्सी  
बनाते हैं ।

मूङ्ग० ना० पु० छपट, शिर ।

मूङ्गना० स० कि० बाल बनाना, घोटना, शिथ  
करना, पुसलाके सूटना ।

मूङ्गला० श० सुखली, जिसका शिर मूङ्गागया ।

मूङ्गी० ना० स्त्री० शिर, शिरसुख ।

मूङ्गा० ना० पु० मोड़ा ।

मूङ्गना० स० कि० बन्दकरना, दाकना, भीचना ।

मूङ्गरी० ना० स्त्री० छदरी, धँडरी ।

मूङ्ग० ना० पु० मूख, बदन ।

मूङ्गा० ना० पु० मूखका रोगविशेष ।

मूङ्ग० गु० मूगा, जो बात चीत न करसके ।

मूङ्गा० ना० पु० मूगा, मोला, भरीला, हाथ ।

मूङ्गी० ना० स्त्री० मूगा, मुँगी ।

मूङ्ग० ना० स्त्री० मूख ।

मूङ्गाकड़ा० ना० पु० बरी मूष ।

मूङ्गारा० } गु० बड़ी मूखवाला ।  
मूङ्गल० }

मूठ० ना० पु० बेंट, दस्ता, कन्ता, हाथ, हाथ  
भर ।

मूठा० ना० पु० बेंट, घड़ी ।

मूठी० ना० स्त्री० घड़ा ।

मूङ्ग० गु० मूर्ख, नादान, अहमक ।

मूङ्गता० ना० स्त्री० मूर्खता, उल्लापन, अहमकी ।

मूङ्ग० ना० पु० मूख, लपटाका, पेशाव, काखरह ।

मूङ्गना० अ० कि० लपटाका करना, पेशाव  
करना ।

मूङ्ग० ना० पु० मूख ।

मूङ्गफला० ना० पु० खीर ।

मूङ्गा० अ० कि० मरना, देह तनना, शरीर  
छोड़ना ।

मूङ्ग० श० लघु, घोटा, थोका ।

मूङ्ग० ना० पु० मूख ।

मूङ्ग० श० मूर्ख ।

मूङ्ग० ना० स्त्री० मूर्ति ।

मूङ्गि० ना० स्त्री० जर्दी, बूटी, पीथा ।

मूङ्गिजीवन० ना० स्त्री० औषधि, पीथा  
विशेष ।

मूङ्गी० ना० स्त्री० मूली ।

मूङ्ग० श० मूख, अज्ञानी, मोदला ।

मूङ्गता० } ना० स्त्री० अज्ञानता, दुर्भेदि,  
मूङ्गताई० } नादाना, उल्लापन ।

मूङ्गना० ना० स्त्री० रागभेद, मूङ्गना ।

मूङ्गा० ना० स्त्री० अचेत होना, ठेवर, मोद,  
परा ।

मूङ्गावस्त० श० जो मूर्खन होगया ।

मूङ्गित० अ० जो मूङ्गनामें पडाई, मोहित ।

मूङ्गि० ना० स्त्री० प्रतिमा, आवार, पुतली,  
तत्पर ।

मूङ्गिपूजक० गु० देवपूजक, धार्मिक लोग ।

मूङ्गिमन्त० गु० आकारवात, शरीरधारी ।

मूर्द्धज० ना० पु० केरा, मोल ।  
मूर्द्धन्य० जिस अक्षरका उच्चारण मूर्द्ध से हो  
यथा ऋ ऋ ट ठ ड ढ ण र प ।

मूर्द्धा० ना० पु० मस्तक, तालुसे ऊपर ।  
मूर्द्धनि० ना० पु० तालु से कुछेक ऊपर ।  
मूर्धा० ना० स्त्री० मुरही ।  
मूल० ना० पु० जड़, वंश, कुल, पूजा, असल,  
बिना टीका की पुस्तक, उर्ध्वसिंवां नक्षत्र,  
वारण ।

मूलक० ना० पु० मूली ।  
मूलद्वार० ना० पु० गुदा ।  
मूलवीर० ना० पु० पुङ्कमूल ।  
मूलस्थिति० ना० स्त्री० पहिली स्थिति ।  
मूलिया० गु० जिसका मूल नक्षत्र में जन्म  
हुया ।  
मूली० ना० स्त्री० तरकारी विशेष, मूल विशेष ।  
मूल्य० ना० पु० मोल ।  
मूसल० ना० पु० सुसल ।  
मूसली० ना० पु० शीवलदेवनी ।

मूप०  
मूपक० } ना० पु० मूरा, चूहा ।  
मूपिक० }  
मूपकवाहन० ना० पु० शीगणेशनी ।  
मूसना० स० कि० उराना, अण्डलेना ।  
मूसरा० ना० पु० चूहा ।  
मूसरी० ना० स्त्री० उरिया ।  
मूसल० ना० पु० जिससे अघादिक कूटने हैं ।  
मूसलधर० ना० पु० शीवलदेवनी ।  
मूसलधार० ना० पु० झड़ी, अति वृष्टि ।  
मूसली० ना० पु० शीवलदेवनी, ना० स्त्री०  
घोषणि ।

मृग० ना० पु० हरिण, ननके जीवजन्तु ।  
मृगछाला० ना० पु० मृगवा चमरा ।  
मृगजख० ना० पु० मृगवृष्णा का पानी ।  
मृगजखण० ना० स्त्री० ज्येष्ठादि श्रीमन्वात में

पुर्ण की किरणों में जो जल की कान्ति देल  
पकती है ।

मृगदंशक० ना० पु० कुत्ता ।  
मृगद्विप० } ना० पु० सिंह, व्याघ्र ।  
मृगध्वंस० }  
मृगनाभि० ना० स्त्री० कस्तूरी, मृगकीनाभि ।  
मृगनाभिरस्ता० ना० स्त्री० कस्तूरी, मृग ।  
मृगनयनी० } ना० स्त्री० गु० जिस स्त्री की  
मृगनैनी० } आँसे मृगकी आँसों के सदृश  
हैं ।

मृगपति० ना० पु० सिंह, शेर, व्याघ्र ।  
मृगवन्धनी० ना० स्त्री० वाशरि, जाल, फंदा ।  
मृगमद० ना० पु० कस्तूरी, मृग ।  
मृगया० ना० स्त्री० आसेट, अहेर, शिकार ।  
मृगराज० ना० पु० सिंह, व्याघ्र ।  
मृगशिर० } ना० पु० पांचवां नक्षत्र ।  
मृगशिरा० }  
मृगांक० ना० पु० चन्द्रमा ।  
मृगाण्डज० ना० पु० कस्तूरी, मृग ।  
मृगाधीश० } ना० पु० सिंह, शेर ।  
मृगाशन० }

मृगाश्री० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी ।  
मृगी० ना० स्त्री० रोगविशेष, हरिणी ।  
मृगेन्द्र० ना० पु० सिंह, मृगपति ।  
मृङ्ग० ना० पु० शीगहादेवनी ।  
मृङ्गनी० ना० स्त्री० शीगुर्वती ।  
मृणाल० ना० पु० हंस, कमलनाल ।  
मृणालका० ना० स्त्री० कमल की जड़ ।  
मृणाली० ना० स्त्री० हंसिनी ।  
मृत्० ना० स्त्री० मिट्टी ।  
मृत्० य० मृत्ता, मृत्पा, मृदा ।  
मृत्क० ना० पु० रान, लोभ, मृदा ।  
मृत्कपट० ना० पु० कस्तूर, मृदके लिये वस्त्र ।  
मृत्तिका० ना० स्त्री० मिट्टी ।  
मृत्पु० ना० स्त्री० मोने, बाल, मरप ।  
मृत्पु० ना० पु० मृत्क ।

मृत्युगण० ना० पु० यमदूत, मलकुलमौलि ।  
 मृत्युञ्जय० ना० पु० श्रीमहादेवजी, और मन्त्र-  
 विशेष ।

मृत्ता० } ना० स्त्री० मिट्टी, माटी ।  
 मृत्स्ना० }  
 मृदंग० ना० पु० बाजाविशेष ।

मृदंगिया० } ना० पु० मृदंग बजानेवाला ।  
 मृदंगी० }  
 मृदु० ना० पु० शुभ, सुन्द, कोमल, मीठा ।

मृदुकन्दक० ना० पु० पियावांता ।  
 मृदुका० ना० स्त्री० चर, दास ।

मृदुच्युद० ना० पु० करीदा ।  
 मृदुपत्रक० ना० पु० ऊस, गधा ।

मृदुफल० ना० पु० फालसा ।  
 मृदुल० गु० कोमल, ड ।

मृद्रीका० ना० स्त्री० चर, दास ।  
 मृपा० अन्व० भिष्या, वृथा, मूठ ।

मै० सर्व, सुम्नो, मेरा ।  
 मै० अन्य, अधिरुष का बोधक ।

मैगनी० ना० स्त्री० रोड़ी, अंजदिकी निछा ।  
 मैङ्ग० ना० स्त्री० खेतकी सीमा ।

मैङ्गक० ना० पु० भेक, महक ।  
 मैङ्गी० ना० स्त्री० भेकी, मंडकी ।

मैङ्गा० ना० पु० कुवेका सुल ।  
 मैङ्गियाया० अ० कि० पिरना ।

मैङ्गा० ना० पु० भेङ्गा ।  
 मैङ्ग० ना० पु० वृष्टि ।

मैङ्गदी० ना० स्त्री० मिहेंदी, पीथाविशेष ।  
 मैख० ना० पु० गणपुर और बंगाले के बीच एक  
 प्रकार के पर्वतीयलोग, वील ।

मैखला० ना० स्त्री० शियोकी कर्पनी, प्राण्य  
 का यज्ञोपवीत जो मून्डाला से बनता है; तीनों  
 का बनावीत ।  
 मैखली० ना० स्त्री० दाद, पदी ।  
 मैघ० ना० पु० घन, बादल, धूम, रागविशेष ।  
 मैघडम्बर० ना० पु० रावणका धनुर्विशेष ।

मैघाध्या० ना० पु० आझरा ।  
 मैघनाद० ना० पु० मैघही शब्द, मैघावरा, रावणका धनुर्विशेष ।

मैघनाथ० } ना० पु० इन्द्र, मैघपति ।  
 मैघराज० }  
 मैघागम० ना० पु० वर्षाकाल, बरसात ।

मैघामा० ना० पु० जामुन, फलेद ।  
 मैचक० गु० काला, श्याम ।  
 मैटना० स० कि० धोडालना, नाराज, मुलभेद,  
 विशेषकरना ।

मैटा० पु० मिथ्यागया ।  
 मैडा० ना० पु० भेङ्गा ।

मैधिका० ना० स्त्री० मैघी ।  
 मैधी० ना० स्त्री० सागविशेष ।

मैद० ना० पु० मैघ, बहीमोटाई ।  
 मैदनाद० ना० पु० मीर ।

मैदा० ना० स्त्री० पीथाविशेष ।  
 मैदिनी० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी, मालती ।

मैदिनीपुर० ना० पु० नगरविशेष ।  
 मैघ० ना० पु० यज्ञ, बलिदान ।

मैघा० ना० स्त्री० अनुभव, बूझ, बुद्धि, निरूप्यता ।  
 मैघाख्या० ना० स्त्री० नगरमाथा ।

मैघार्चनी० ना० स्त्री० कश्यप की पत्नीविशेष ।  
 मैघावी० गु० मैघार, बुद्धिमान, निरूप्य ।

मैघ्या० ना० स्त्री० शंखाहोली ।  
 मेन० ना० पु० मोम ।

मेनका० ना० स्त्री० मुख्यअपराध, हिमोत्सव  
 की स्त्री ।  
 मेमना० ना० पु० बकरी का बच्चा ।

मेरीकरी० ना० स्त्री० स्वर्गाक, योगानी जो  
 विश्वामितर्य गंगाप्रसिद्ध है यह शब्द रामच  
 न्द्रकामे विश्वामिन का वाक्य है, द्वितीयरा  
 प्रसिद्ध है ।  
 मेरु० ना० पु० पर्वतविशेष, एमेर ।  
 मेरु० ना० पु० संयोग, भेद, निस्तान, संकय

मेलना० स० कि० टासना, प्रसेकना, छालना ।  
 मेला० ना० पु० तीर्थदि पर किती देवता की  
 पूनाहेतु लहंतनना का इकठ्ठा होना या किती  
 प्रकार बहुत मनुष्यों का इकठ्ठा होना ।  
 मेली० ना० पु० सोही, पु० मिलायी ।  
 मेव० } ना० पु० मघात, पवत, केनि-  
 मेवडा० } वासी ।  
 मेवाती० }  
 मेप० ना० पु० मेदा, मथमराशि, पवातुंछ ।  
 मेपघड़ी० ना० स्त्री० मेदासिंही ।  
 मेपला० ना० स्त्री० मेतला ।  
 मेपशुद्धी० ना० स्त्री० मेदासिंही ।  
 मेह० ना० पु० मेघ, मूत्र य धर्म में रोग विशेष ।  
 मेहतर० ना० पु० भंगी, प्रचान, चौधरी ।  
 मेहतरानी० ना० स्त्री० भंगिन ।  
 मेहनदा० ना० पु० टटोली करनेहरा ।  
 मेहना० ना० पु० टटोली ।  
 में० सर्व० सर्वनामवाचक उत्तम पुरुष का एक  
 वचन ।  
 मेरुलसुता० ना० स्त्री० नर्मदानदी ।  
 मेका० ना० पु० स्त्री के मा नाप का घर या  
 धराना ।  
 मेधी० ना० स्त्री० भिन्ना, मनुता ।  
 मेधिल० ना० पु० विद्वत के नाने हाँ, प्राण्य  
 की जाति विशेष ।  
 मेधिली० ना० स्त्री० भीसावानी, मिथिला की  
 भाषा विशेष ।  
 मेथुन० ना० पु० प्रसंग, प्रति, पुनोलादनाय  
 रूपानि की क्रिया ।  
 मेनकल० ना० पु० सोपनि, फल विशेष ।  
 मेना० ना० स्त्री० पसी विशेष, पापिताकी माता ।  
 मेनाफ० ना० पु० पतन विशेष ।  
 मेमा० ना० स्त्री० सोतेलीमाता ।  
 मीया० ना० स्त्री० माया, परतारी ।  
 मेल० ना० पु० मल, मूची, भाग, गति ।

मैला० } ना० पु० मलीन, अपवित्र ।  
 मैला कुचैला० }  
 मैहिका० ना० पु० मोहर, भित्त ।  
 मैहिकी० ना० स्त्री० महिपी, मैती ।  
 मो० सर्व० में ।  
 मोड़ा० ना० पु० कंधा, ब्रूवद, मोदा ।  
 मोकना० स० कि० लगन, छोड़ना, छोड़ना ।  
 मोखा० ना० पु० रोशदान, म्याला ।  
 मोगरा० ना० पु० छदगर, वकी मोगरी, पुष्प-  
 विशेष ।  
 मोगरी० ना० स्त्री० कूटने की काष्ठरहित रसु  
 विशेष ।  
 मोघ० पु० वृथा निरर्थ, निष्फल ।  
 मोच० ना० पु० लचक, कचक, भटका ।  
 मोचफ० ना० पु० मोचरस, य० छुफानेहरा ।  
 मोचन० ना० पु० चोरी, छोड़ना, त्याग ।  
 मोचना० स० कि० त्यागना, छोड़ना, भाड़ना,  
 बुझाना, मियना, गा० पु० नाल उतराने के  
 लिये विमय ।  
 मोचरस० ना० पु० समल वृषका गौद ।  
 मोचरावो० ना० पु० मोचरस ।  
 मोचा० ना० पु० सेपरष्ट, वेला या उतरागोभा ।  
 मोची० ना० पु० चर्मकार ।  
 मोट० ना० स्त्री० गटरी, मोट ।  
 मोटक० ना० पु० छन्द विशेष ।  
 मोटकी० ना० स्त्री० कुदारी, मोटी स्त्री ।  
 मोटरा० ना० पु० गटरी ।  
 मोटा० ना० स्त्री० गूडा, गट्टा, य० शूदः  
 गादा, पहा, भरा ।  
 मोटार० ना० स्त्री० } पुटवा, गादा, गुमना ।  
 मोटापा० ना० पु० }  
 मोटिया० ना० पु० मोटा उडनेहरा ।  
 मोठ० ना० स्त्री० गूडा, पट्ट, कौक, बरा,  
 पुलद, धम विशेष ।  
 मोड़० ना० पु० बाँक, कर, बर, घुटने ।

मौली० ना० स्त्री० नार ।  
 मौल्य० ना० पु० मोल, कीमत ।  
 मौसा० ना० पु० माताकी बहन का पति ।  
 मौसी० ना० स्त्री० माताकी बहन ।  
 मौसैरा० शु० जो मोसी कहै, यथा, मौसैरा भार ।  
 म्लान० गु० मैला, मद ।  
 म्लेच्छ० ना० पु० जो लोग वेद और शास्त्र से  
 निपरीत चलते हैं ।  
 म्लेच्छदेश० ना० पु० देश जिस म म्लेच्छ  
 बसत है ।

[ य ]

यक० शु० एक, १ ।  
 यकत्रांक० अय० निश्चय करके ।  
 यजमान० ना० पु० जो दक्षिणादि देके धर्म या  
 कर्म करवावे ।  
 यजु० ना० पु० द्वितीय वेद, यजुर्वेद ।  
 यतन० ना० पु० यत्न ।  
 यति० ना० पु० यती, सयासी, भिलारी वा  
 जामतना भिलारी ।  
 यत् अय्य० जा, जब ।  
 यत्किञ्चित् अय्य० जो कुछ ।  
 यत्न० ना० पु० जतन, उपाय, उद्योग, तत्परि ।  
 यत्नमान० } शु० यत्न करोहारा ।  
 यत्नी० }  
 यत्र अय्य० जहाँ, जिस जगह ।  
 यत्रतत्र अय्य० जहाँ तहाँ ।  
 यथा अय्य० जैसा, जिस प्रकार ।  
 यथाकथञ्चित् अय्य० जिसकिसी प्रकारसे ।  
 यथाशक्त० ना० पु० जैसा समय ।  
 यथाक्रम० ना० पु० क्रमसे, परिपाटी से, जैसी  
 रीति, सिलसिलेवार ।  
 यथापि अय्य० यद्यपि, जोभी, अर्थात् ।  
 यथायोग० ना० पु० जैसा उचित वा चाहिये,  
 अय्य० जैसा चाहिये वैसा ।  
 यथार्थ अय्य० ठीक, सब, सारा ।

यथावत् अय्य० सम्पूर्ण ।  
 यथास्थित अय्य० ज्योंक्यों, शु० स्थिर ।  
 यथाशक्ति० ना० स्त्री० जैसा सामर्थ्य ।  
 यथाशास्त्र अय्य० शास्त्र के अनुसार, शास्त्र  
 सम्मत, ना० पु० जैसा शास्त्र ।  
 यथासम्भव० गु० जैसा होहार ।  
 यथेच्छा० ना० स्त्री० जैसी इच्छा ।  
 यथोक्त० गु० जैसा कहागया ।  
 यथोचित० शु० यथायोग्य, जैसा, उचितहोकर ।  
 यद्यपि अय्य० जबसे ।  
 यद्यपि अय्य० जोभी, अर्थात् ।  
 यदा अय्य० जब, जहाँ ।  
 यदि अय्य० जो, कदाचित् ।  
 यदु० ना० पु० सोमराजी, पांचवा राजा ।  
 यदुजात० ना० पु० यदुवरी ।  
 यदुनाथ० }  
 यदुपति० } ना पु० श्रीकृष्णचन्द्र ।  
 यदुवर० }  
 यदुराय० }  
 यदुवंश० ना० पु० राजा यदुकी सत्तान ।  
 यदुवर्शा० ना० पु० यदु से जो उत्पन्न भया  
 श्रीकृष्णचन्द्रादि ।  
 यद्यपि अय्य० जोभी, यद्यपि, अर्थात् ।  
 यद्वातद्वा अय्य० एसा वैसा, भलाबुरा ।  
 यत्र ना० पु० कल, समान, वाद्य, दाटना,  
 तराव, ताला ।  
 यत्रणा० ना० स्त्री० पीडा, केरा ।  
 यत्रित० शु० यत्र क्रियागया, तालासगायाइया,  
 यत्रयुक्त ।  
 यंत्री० ना पु० यत्रदेहोहारा, तारखीचिन का यत्र,  
 बजानेद्वारा कलतान ।  
 यम० ना० पु० यमराज, यमदूत, साधन वा  
 नियम विशेष, शु० दो ।  
 यमक० ना० पु० ध्वन्यमें अक्षर सगार वा प्रथम  
 का शब्द, तुक, जे किया, जो दो बालक एक  
 सापरी उपभरों ।

यमयातना० ता० स्त्री० मरणात्मयका दूत ।  
 यमदग्नि० ना० पु० मुनि विशप, परशुराम के  
 रिता ।  
 यमदूत० ता० पु० यमराजक दूत वा यम  
 विशप ।  
 यमद्वितीया० ना० स्त्री० कार्तिकशुक्र दूत २ ।  
 यमनी० ना० यु० जो यम देशकहे ।  
 यमराज० } ता० पु० यम, धर्मराज, क्रांतक ।  
 यमराड् }  
 यमल० गु० दा, जाड़ा शुभ ।  
 यमी० गु० यम करनहार, यमुनाना ।  
 यमुना० ना० स्त्री० श्रीयमुनानी ।  
 यमुनाभेदी० ता० पु० श्रीवलदेवजी ।  
 यमुनाप्राता० ना० पु० यमराज ।  
 ययाति० ता० पु० चंद्ररशा राजा विशप ।  
 ययु० ना० पु० यडा, यथा ययुस्वाश्रम शीघी  
 जनस्तुजवाधिर, ययमर ।  
 यव० ता० पु० जा अन्न विशेष ।  
 यवन० ता० पु० यश विशेष वा यवन दश वा  
 विवासा, श्लेष्म ।  
 यवनपुर० ता० पु० यवना का देश वा नगर  
 विशेष ।  
 यवनिका० ता० स्त्री० कनात, आर ।  
 यवस्क० ना० पु० जवाहार ।  
 यवोत्तार० ता० पु० शारा, जवाहार ।  
 यवाप्रज० ता० पु० जवाहार लोन ।  
 यवास० ता० पु० पुष्प विशेष जवासा ।  
 यवासक० } ना० पु० जवासा ।  
 यवासा }  
 यश० ता० पु० वीरि, रथानि, पति, सुकृत ) -  
 यशपनि० } गु० कार्तिमान्, प्रतिष्ठित, सुकृती ।  
 यशोमन्त० }  
 यशस्विनी० ता० स्त्री० जीवती वृद्धी ।  
 यशस्वी० } गु० दशवत्, पृथ्वी, प्रतिष्ठित ।  
 यशी० }  
 यशोदा० ता० स्त्री० जसोदा, नंदरानी ।

यष्टि० } ता० स्त्री० लानी ।  
 यष्टिमा० }  
 यष्टा० ता० स्त्री० मुलहटी ।  
 यसक० ना० पु० जवासा ।  
 यस्मिन्० सर्व० निसम ।  
 यस्य० सर्व० निसरा ।  
 यह० सर्व० विश्वयवाचक, सर्वनाम ।  
 यहा० अर्थ० इस स्थानमें अर्थ ।  
 यहाँ० अर्थ० यही स्थान में ।  
 यक्ष० ता० पु० देवताकी जाति विशप ।  
 यक्षकर्दम० ना० पु० यक्षोंका अग्रमर्दन अर्थात्  
 कर्त्तव्य, कर्त्तव्य, अंगर, कचालकी मिलोना का  
 उवत्त ।  
 यक्षधूप० ना० स्त्री० राल ।  
 यक्षपति० } ना० पु० कुवर ।  
 यक्षराज० }  
 यक्षिणी० ता० स्त्री० यक्षकी स्त्री ।  
 यक्षेश० ना० पु० कुवेर ।  
 यक्ष० ता० पु० याग, मग, वलिदान, ब्रह्म-  
 भाना ३ ।  
 यशदत्त० ता० पु० सहा विशप ।  
 यशपुरुष० ता० पु० श्रीनारायण ३ ।  
 यशरूपाता० ना० स्त्री० सामवर्द्धी ।  
 यशसूत्र० ता० पु० जनऊ ।  
 यशस्थल० ता० पु० यक्षरा पर ।  
 यशेश्वर० ता० पु० आशिवनी वा श्रीविष्णु ।  
 यशोपरीत० ता० पु० उपपत्त, जनेऊ ।  
 या० सर्व, यह ।  
 याम० ता० पु० गड ।  
 याचक० ता० पु० जाचक, भिक्षुक ।  
 याचना० स० वि० चाहना, मागना, विन-  
 वरना, भिक्षा मागना ।  
 याचित० गु० मागाहृथा ।  
 याजक० ना० पु० पुरोहित जो माहाय दक्षिण  
 लेकर यशादि धर्म करावे ।  
 याजन० ता० पु० याजकका काम

याज्य० ना० पु० यज्ञादिकर्मकी देविणा ।

यातना० ना० स्त्री० अत्यन्त पीडा, नरकका कष्ट ।

यातायात० ना० पु० आवागमन ।

यात्रा० ना० स्त्री० तीर्थ, प्रस्थान, कूच, पर्व ।

यात्रिक० ना० पु० मल्लाह, राही, पन्थी ।

यात्रो० ना० पु० तीर्थकर्ता, राही, पन्थी ।

याथार्थिक० ना० पु० जो ठीक कर्म करे ।

याथार्थ्य० ना० पु० यथावत्ता, सचाई ।

यादव० ना० पु० यदुकी सन्तान, कृष्ण ।

यादवपति० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी ।

यान० ना० पु० वाहन, सवारी ।

यामिनी० ना० स्त्री० रात, जो यवनकी है ।

यामिनीभाषा० ना० स्त्री० यवन लोगोंकी भाषा ।

यावक० ना० पु० सात ।

यावज्जीवः { अथ० जवतक जीवन है ।

यावज्जीवनः } या जीवन कालभर ।

यावत् अथ० जवतक ।

यासा० ना० स्त्री० दुःख, प्राप्ति ।

याज्ञवल्क्य० ना० पु० मुनि विशेष ।

याशिक० ना० पु० यश करने द्वारा ।

युक्त० श० उचित, योग, लगा, मिलाइयुक्त ।

युक्तायुक्त० श० योग्यायोग्य ।

युक्ति० ना० स्त्री० प्रवीणता, हथौड़ी, तर्क, गुण, उपाय, तरकीब ।

युग० ना० पु० सत्य, प्रेता, क्षय, कलि, हनवा-

रों में से एक, युग, जोड़ा, श० दो, २ ।

युगपति० अथ० एकमे में ।

युगल० श० युग, दो, २ ।

युगान्त० ना० पु० युगका अन्त, प्रलय ।

युगलकिशोर० ना० पु० दो युव तरुणताप्राप्त, राम कृष्ण वा रामलखण ।

युग्म० गु० दो, २, जोड़ा ।

युक्त० श० युक्त, मिलाइया, यथा, धर्मयुत ।

युत्य० ना० पु० समूह ।

युथनाथ० ना० पु० सेनानी, सेनापति, हाथी ।

युथप० { ना० पु० युथनाथ, सिपहसा-

युथपति० } लार, हाथी ।

युथी० ना० स्त्री० सेना, फौज ।

युद्ध० ना० पु० संग्राम, समर, लड़ाई ।

युद्धभूमि० ना० स्त्री० संग्रामस्थल, लड़ाई की भूमि ।

युधि० ना० पु० संग्राम, समर, युद्ध ।

युधिष्ठिर० ना० पु० पांडका ज्येष्ठपुत्र ।

युवती० ना० स्त्री० यौवनावस्था की अर्थात् सोने-

लह वर्ष से तीस वर्षतककी ।

युवराज० ना० पु० राजाका प्रधान पुत्र जो राजा के पक्षे राजा होवेगा ।

युधा० गु० यौवनयुक्त तरुण मनुष्य सोलह वर्ष से सत्तर वर्षतक ।

युवावस्था० ना० स्त्री० तरुणता ।

युं० अथ० इसप्रकार ।

यूही० अथ० इसीप्रकार ।

यूका० ना० स्त्री० जंघा ।

यूथ० ना० पु० श्रुयड, युथ, समूह, गिरीह ।

यूथनाथ० ना० पु० सेनानी, सेनापति, हाथी ।

यूथप० { हाथी ।

यूथिका० ना० स्त्री० सोनहठी ।

यूप० ना० पु० यज्ञका स्वम्भ ।

यूप० ना० पु० जूय, परेह, शौरवा ।

योग० ना० पु० भेल, लयन, मिलन, भलासमर्थ, तपस्या विशेष, जोड़, सत्ताईसयोग जो ज्योतिष में प्रचलित हैं ।

योगमय्य० गु० योगमार्ग से योगराता ।

योगमाया० ना० स्त्री० यह शक्ति निमग्न स्वप्न इच्छान्तु कार्य करता है ।

योगशक्ति० ना० स्त्री० योगमाया ।

योगसारक० ना० पु० नास्तिक ।

योगिनी० ना० स्त्री० प्रेतनी विशेष जो दुर्गाकी महचरी है ।

योगी० ना० पु० जो योग साधन कर, तपस्वी,  
गु० मिलाइया ।

योगेश्वर० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी, श्रीमहा-  
देवजी, तपस्वी ।

योग्य० गु० उपयुक्त, सम्भव, उचित ।

योग्यता० ना० स्त्री० उचितार्थ, सम्भवता ।

योजन० ना० पु० चारिकोस परिमाण ।

योजनगन्धा० ना० स्त्री० वेद-शास्त्री माता ।

योजना० ना० स्त्री० मेल, मिलाप, जोड़ ।

योटा० ना० पु० जोड़ा ।

योद्धा० ना० पु० बहादुर, मुद्रकरनेहार,  
सावन्त ।

योधन० ना० पु० युद्ध, समर, लड़ाई ।

योधापन० ना० पु० बीरता, सावन्ती ।

योनि० ना० स्त्री० उत्पत्तिका अगविशेष, कोल  
निसमें बधा रहता है ।

योनिज० ना० पु० मनुष्यादि ।

योयन० ना० पु० तरुणता, जवानी ।

योया० }  
योपित० } ना० स्त्री० पनी, स्त्री, नारि, दुर्लभिन ।  
योपिता० }

यौ० अर्थ० इत्सम्कार ।

यौगिक० गु० यागमे वा, योगकारक, सयागा,  
जो दो आदि शब्दों से बना ।

यौतुक० ना० पु० दापना, दोज ।

यौवन० ना० पु० नार्यावस्था से उपरो वय ।

[ २ ]

रई० ना० स्त्री० कपनी बिलोनी, कनी, बूरा ।

रईटा० ना० पु० कृपसे पानी निकालने का यंत्र  
विशेष ।

रईटा० ना० पु० चरखा सूतकातो का ।

रईटी० ना० स्त्री० पानी भरनेका यंत्र विशेष ।

रंस० ना० स्त्री० रश्मि, विरप ।

रकत० ना० पु० रक्त ।

रक्त० गु० लाल, धरुण, ना० पु० रुधिर, मूत्र  
सिंदूर ।

रक्तक० ना० पु० पानी, घाबला, दुपहरिया-  
पुप विशेष ।

रक्तकन्दक० ना० पु० रतानू ।

रक्तकाष्ठ० ना० पु० पतंगवृक्ष ।

रक्तकोट्ट० ना० पु० कुष्ठ विशेष ।

रक्तचन्दन० ना० पु० लालचन्दन ।

रक्तदग्गु० ना० पु० क्रोडिला ।

रक्तपदानन० ना० पु० शुद्ध हैस ।

रक्तयष्टी० ना० पु० मंजई ।

रक्तपा० ना० स्त्री० जौन ।

रक्तपात० ना० पु० रुधिर का निकालना ।

रक्तपादिका० ना० स्त्री० लज्जा, पीथा  
विशेष ।

रक्तपादी० ना० स्त्री० हस्तपदी, पीथाविशेष ।

रक्तपापाण० ना० पु० नेरू ।

रक्तपित्त० ना० पु० रोग विशेष ।

रक्तपुष्प० ना० पु० अना, बचनार, पिया-  
बासा ।

रक्तपुष्पिका० ना० स्त्री० सेमल वृक्ष ।

रक्तकण्ड० ना० पु० आलू, बरगद, लालकल ।

रक्तफला० ना० स्त्री० कदलीलता, आकारा,  
बेल, अमरबल ।

रक्तमूर्ध० ना० पु० शुक, मखली, लालमुस ।

रक्तमूर्द्धा० ना० पु० सारस पक्षी ।

रक्तरज० ना० पु० सिंदूर जो शिवा माथे में  
लगानाहि ।

रक्तनिर्जिका० ना० स्त्री० अग्निही, जिहा.  
विशेष ।

रक्तयोज० ना० पु० अना, रोठा, दैत्यविशेष ।

रक्तमार० ना० पु० लालचन्दन, खैर, कत्या ।

रक्तसिन्धिका० ना० पु० लालवमल ।

रक्ता० ना० स्त्री० रासना, मनीठ ।

रक्तक्री० ना० पु० मनीठ ।

रक्तालू० ना० पु० रतानू तरकारी ।

रक्तम० ना० स्त्री० छापी ।

रक्तैरगड० ना० पु० लाल अरगड ।



रक्षोदर० ना० पु० मद्यली, ।  
 रखछोड़ना० स० कि० धरना, सौंपना, रखना ।  
 रखदेना० स० कि० रखना धरना ।  
 रखना० स० कि० धरना, त्यागना, बचाना, दाव  
 रखना ।  
 रखलेना० स० कि० धरलेगा ।  
 रखवाई० ना० स्त्री० धरोहरका व्याज वा भाड़ा,  
 रखनाला, रखा ।  
 रखवाना० स० कि० धरवाना, सौंपना ।  
 रखवाल० } ना० पु० रखक, रखनहार, हा-  
 रखवाला० } किन्ना, तथा गङ्गारिया जो भेड़ों का  
 रखताहै ।  
 रखवाली० ना० स्त्री० रखा, चरावा का काम,  
 बचाव का काम दिखावत ।  
 रखा० पु० जो बचाया गयाथा, पास रखाहुई ।  
 रखाना० स० कि० रखवाना, रखाकरना, बचाना ।  
 रखिया० ना० स्त्री० रखा, बचाव, रखवाई ।  
 रखैया० ना० पु० रखक, धरनहार ।  
 रग० ना० स्त्री० शिरा, गङ्गी ।  
 रगड० ना० स्त्री० गङ्गा, धिसान ।  
 रगडना० स० कि० धिसाना, घाटा, मलना ।  
 रगडा० ना० पु० भगडा, अनाधिशप, धिसान ।  
 रगेद० ना० स्त्री० सदना ।  
 रगेदना० स० कि० सदना, पीछ दा ग ।  
 रघु० ना० पु० अयो याका भाचारो सूर्यवंशी राजा  
 विशेष ।  
 रघुनन्दन० ना० पु० श्रीरामवन्दन ।  
 रघुनाथ० }  
 रघुनाथक० } ना० पु० रघुवंशियों में राजा  
 रघुपति० } विशेष, दशरथ, आरामचन्द  
 रघुवर० } जी ।  
 रघुराज० }  
 रघुचश० ना० पु० राजा रघु व वंश, काव्य,  
 विशेष ।  
 रघुचशी० - ना० पु० राजा रघुकी सन्ता, राज  
 पुत्रों में जातिविशेष ।

रक० ना० पु० दरिद्री, बगाल, शरीर ।  
 रग० ना० पु० वण, डील, रीति, क्रीडा, न्योहार,  
 खेल, रगनेकी वस्तु ।  
 रंगत० }  
 रंगति० } ना० स्त्री० वण ।  
 रगना० स० कि० रग चढ़ाना ।  
 रंगपुर० ना० पु० दशविशप बगाले के उत्तर ।  
 रंगभंग० ना० पु० क्रीडा का विनाश ।  
 रगभवन० ना० पु० क्रीडा का स्थान, विहार  
 स्थल, आरामभवन ।  
 रंगभूमि० ना० स्त्री० क्रीडाका स्थान, चूचपर,  
 यज्ञस्थल, तमारो का घर ।  
 रंगमहल० ना० पु० रगभवन ।  
 रंगमारना० स० कि० चौंसर के खेलमें जीतना  
 वा किसी के रगडलना ।  
 रगरस० ना० पु० हर्ष, आनन्द, विहार ।  
 रगरातना० अ० कि० किसीको हारहना, किसी  
 से अधिकजी लगाना ।  
 रंगरूप० ना० पु० वर्ण, आकार ।  
 रंगवैया० ना० पु० रंगोहारा ।  
 रंगई० ना० स्त्री० रंगने वा भाड़ा ।  
 रगाना० स० कि० रगदिलवाना ।  
 रगाघट० ना० स्त्री० रग का काम ।  
 रगी० } पु० खिलावा, चमकीला,  
 रगीला० } सुजल, रगदार ।  
 रचना० अ० कि० व्यापार, मासगना, किसी  
 काम म लगाना, तालमेल गाथा, पठना, बंदना  
 स० कि० बाना, बर्ण, सिरजना, भा० खां  
 उपाधि, बानसी, सुटि, नागा ।  
 रचाना० स० कि० बाना, बराना, सिरजना,  
 बलाना, आर द कर्नो, लगाना, मिहरी से हाथ  
 पैर रगना ।  
 रचित० पु० रचाहुआ, विराचित ।  
 रचितग्रन्थ० ना० पु० बनाहुई पुस्तक, रगा ।  
 रच्छक० ना० पु० रच्छ ।  
 रच्छा० ना० स्त्री० रखा ।

रज० ना० पु० रजोगुण, लाल, ना० स्त्री० धूलि,  
अग्नि, रस्सी, पराग, निहानी, कपड़े, ना० पु०  
मनुष्यका दूसरा गुण ।

रजक० ना० पु० धोती ।

रजत० ना० पु० चादी, रूपा ।

राजधानी० ना० स्त्री० राजधानी, रामायणे ।

यथा, राजाराम श्वशुर राजधानी ।

रजमक० ना० पु० बगाला शोषधि ।

रजनी० ना० स्त्री० रात, हल्दी ।

रजनीगन्धा० ना० स्त्री० सुगन्धरा, पुष्पविशेष ।

रजवाड़ा० ना० पु० राज्य, देश जो राजा के  
वशमें है ।

रजस्वला० ना० स्त्री० श्रुतमती, कपड़ों से ।

रजार्द्र० ना० स्त्री० शीतकालमें आदने का वस,  
रानल, आशा ।

रजाय० ना० पु० आशा, अनुरासन ।

रजायश० ना० पु० आशा वा राजाका आशा ।

रजोगुण० ना० पु० मनुष्य का द्वितीय गुण जिस  
में क्रोधआदि बसता है ।

रजोरती० ना० स्त्री० पुण्यवती, जो स्त्री कपका  
से हनि ।

रज्जु० ना० स्त्री० सूत रस्सी ।

रज्जु० } गु० अल्प, धाड़ा बहुत धा ।

रज्जुक० ना० पु० जा प्रीतको उपनाय रग देने  
हारा, चित्रकार, तापआदि जलने की वस्तु ।

रज्जन० ना० पु० रगाव, चित्रकारी, प्रसन्नता,  
जन्मानना, सुसदना, सुसद ।

रज्जित० गु० रगाभया, चित्रत, प्रसन्नित, उपजा,  
सुखी ।

रट० ना० स्त्री० इशारा, वक्र ।

रटना० स० कि० दाहराना, विहराना, बकना  
लगाना कहना ।

रख० ना० पु० समर, युद्ध, सङ्घर्ष ।

रणभूमि० ना० स्त्री० समरभूमि, युद्धभूमि ।

रणवीभस्त० ना० पु० युद्धमें कुशल, समर  
प्रतीक, विशय अर्थात् ।

रणवास० ना० पु० राक्षियों के रहनेका स्थान ।

रणड० ना० पु० अरख, रेंडे ।

रणडा० ना० स्त्री० राह, विधवा ।

रणडापा० ना० पु० विधवापन ।

रण्डिया० ना० स्त्री० विधवा स्त्री ।

रणडी० ना० स्त्री० नारी, स्त्री, पत्नुरिया ।

रण्डुआ० } ना० पु० निरखी, जिस मनुष्यकी

रण्डुआ० } स्त्री मर गई है ।

रत० ना० पु० मेधुन, रात, नीतिमय, लैन,  
लवलीन ।

रतकेल० ना० पु० मेधुन ।

रतजगा० ना० पु० उत्सव में रातका जागना ।

रतन० ना० पु० रत जगहिरात ।

रतनार० ना० स्त्री० सालवर्ष ।

रतनिया० ना० पु० चावलविशेष ।

रतवाही० ना० स्त्री० धाना, रातका, सुरेन्द्रिके  
रात पुरुष पास आती है ।

रताना० स० कि० कामातुर हाना ।

रतालू० ना० पु० अलूनिशय ।

रति० ना० स्त्री० प्यार, मैथुन, कामदकी स्त्री ।

रतिनाथ० } ना० पु० कामदक ।

रतिनाह० }

रतिशति० }

रती० ना० स्त्री० आठ जो का तोल, रती, भाग,  
धाड़ा ।

रतीचत० } गु० मायकाव ।

रतीचन्त० }

रतीधा० } ना० पु० अथलार, ना० स्त्री०  
रतीधा० } जिसके कारण से रातको दिताई  
नहीं देवा है ।

रती० ना० स्त्री० आठ यत्र वा आठ चावल का  
तोल, भाग्य, भाग ।

रत्न० ना० पु० मणि सुताआदि, पुतली ।

रत्नगर्भा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।  
 रत्नजोत० ना० स्त्री० पौधा विशेष, आलकी  
 श्रीपथ, श्रीपथिविशेष ।  
 रत्नमाला० ना० स्त्री० मालानो रत्नोंसे बनी है ।  
 रत्नसिंहासन० ना० पु० वह सिंहासन जो रत्नों  
 से जड़ित है ।  
 रत्नाकर० ना० पु० समुद्र, रत्नों की माला ।  
 रथ० ना० पु० चारपाहियों की गाड़ीविशेष ।  
 रथवान० ना० पु० सारथी, गाड़ीवाण ।  
 रथवानी० ना० स्त्री० रथवाण का नाम ।  
 रथचोड़ा० } ना० पु० घोड़ा ।  
 रथसिंज० }  
 रथांग० ना० पु० चक्रवा पथी, चक्र, पहिया ।  
 रथाग्र० ना० पु० रथके आगे ।  
 रथी० ना० पु० रथका सवार, तीफटी निसार  
 मृतक को श्मशान को लेनाने है ।  
 रथ्या० ना० स्त्री० मार्ग, सड़क, बीथी, गली ।  
 रद० ना० पु० दात ।  
 रदछद० ना० पु० शोष्ठ, झोंट ।  
 रदन० ना० पु० दांत ।  
 रदनछद० } ना० पु० शोष्ठ, होठ ।  
 रदपट० }  
 रदा० ना० पु० भीति का परत ।  
 रदी० ना० स्त्री० जो कागज किसी कामका नहीं  
 आधी शब्द ।  
 रन० ना० पु० रथ ।  
 रनगढ़० ना० पु० छावनी, सगर ।  
 रनधन० ना० पु० महाराज ।  
 रनवाम्ब० ना० पु० रणवाम, जिसमें राजा की  
 मियां रहती हैं, घत पुर ।  
 रंतिदेव० ना० पु० राजाविशेष ।  
 रंद्द० ना० पु० रथ ।  
 रंध० ना० पु० रथ, दिद्र ।  
 रंधना० अ० कि० पहना, पुना, उबलना ।  
 रंध्र० ना० पु० दिद्र, खेप ।  
 रंध्री० ना० पु० नक्षत्र ।

रपट० ना० स्त्री० रैड, तिसलाइट, रगेद ।  
 रपटना० अ० कि० किसलना, तिसलना ।  
 रपटाना० स० कि० रगेदना, किसलाना, दौ-  
 डाना ।  
 रचङ्गना० स्त्री० परिश्रम, धकड़, व्यर्थ,  
 होइ धूप ।  
 रचङ्गना० अ० कि० धकना, व्यर्थ दौड़ धूप में  
 पकना ।  
 रचङ्गा० अ० धका, धकित ।  
 रचङ्गाना० स० कि० धकाना, व्यर्थ दौड़धूप  
 करना ।  
 रचङ्गी० ना० स्त्री० गाढ़ादूध ।  
 रमचेरा० ना० पु० गुलाम, किंकर, लोड ।  
 रमण० ना० पु० भोग, पिलास, मीठा, मैथुन,  
 व्यापक, निराना, घटन ।  
 रमणक० ना० पु० द्रौपदिविशेष ।  
 रमणी० ना० स्त्री० उत्तमास्त्री ।  
 रमणीक० अ० सुंदर, मनभाजित ।  
 रमणीय० अ० मनोहर, अच्छा, सुन्दर ।  
 रमना० स० कि० भोग करना, मैथुन करना,  
 निरना, निचरना ।  
 रमा० ना० स्त्री० लक्ष्मी वैष्णवी ।  
 रमाना० स० कि० पुंगुलाना, बढना, कि-  
 राना, भोगराना ।  
 रमानाथ० } ना० पु० श्रीविष्णु, नारायण ।  
 रमापति० }  
 रमेश० }  
 रम्भा० ना० स्त्री० गाय, बेश्या, केला और  
 मृग्य अस्ता ।  
 रम्भाना० अ० कि० नीला नीला ।  
 रम्य० ना० पु० पृथ्वी के नगराणों में से एक  
 का नाम अ० सुंदर, अच्छा ।  
 रम्यक० ना० पु० महावीर ।  
 रम्या० ना० स्त्री० चन्द्रचतुष ।  
 रये० } कि० रमे, निने, भरे, रामचन्द्रिणानां  
 रयो० } ( नरसिंहकेशुनरदोऽभिदिही भूदये ) ।

रत्ना० स० कि० रटना ।  
 रलना० स० कि० मिलना, रिसा, मिसना ।  
 रलाना० स० कि० मीसना, मीचना, रिसाग ।  
 रण० ग० पु० शब्द, पत्नी ।  
 रचताई० ना० स्त्री० रचनपत्नी, वीरता युद्ध ।  
 रचन० ना० पु० पति, प्रियतम, प्यारा, यार ।  
 रचनी० ना० स्त्री० पत्नी, प्यारी, प्रियतमा ।  
 रचना० ना० पु० रचवास्तव सेवक जो कियों के लिये सौदा लाना है, रवाना ।  
 रवा० ना० पु० चादी वा सनेसा रेत, पा चूर, ब लू, धूलि आदिना अणु ।  
 रवि० ना० पु० सूर्य ।  
 रविक० ना० पु० नौव वृद्ध ।  
 रविज्ञा० ना० स्त्री० यमुगनी ।  
 रविजात० ग० पु० शोश्चर, यमराज, कर्ण, सुमान ।  
 रविनामक० ग० पु० ताव ।  
 रविमण्डि० ना० स्त्री० सूर्यमण्डि ।  
 रविवार० ना० पु० आदिवार, पहिला दिन, विश्रामका दिन, इतवार ।  
 रविसन्धि० ना० पु० रविद्वन्द्व ।  
 रसिक० गु० रसिक ।  
 रसिम० ग० स्त्री० रसिम, शिंशु ।  
 रस० ना० पु० जीभमें भित्तका मह्यहोवे, यथा, घी, दूध, अमृत, विष, पानी आदि श्रेणारदि नर रस वा कट्ट्यादि पदरस और विषय, रसाद, रस प्रम, धीरा, पारा, वा धातु मरहोये की रास, यथा, रसरस, ताम्ररस ।  
 रसकरूर० ना० पु० रस अणुविशेष ।  
 रसद० ना० पु० रसदान अर्थात् ऊस, गन्ध, नायिका, वाग्य ।  
 रसघातु० ना० पु० पारा ।  
 रसना० ना० स्त्री० जंभ, जबाब् ।  
 रसनाग० ना० पु० रासना ।  
 रसप्रभु० ना० पु० पारा ।

रसमसाना० अ० कि० पसेने वा सुगन्धि वस्तु से मीगजाना ।  
 रसमसीला० गु० जोरसमस यागया, भीगा ।  
 रसमार० ना० पु० विष, इलाहल ।  
 रसमेद० ना० पु० कचनार ।  
 रसर० ग० पु० टोरा, मोगी रसमी, बरारा ।  
 रसरज० ना० पु० शृगाररस, पुस्तकविशेष ।  
 रसरि० ना० स्त्री० डोरी, रसमी ।  
 रसयत० ना० पु० रसोत ।  
 रसघती० ग० स्त्री० रसीली ।  
 रसघौर० ना० पु० अमर, भोरा ।  
 रसज्ञ० गु० रसज्ञ ज्ञाना, यथा, रसिया, कनि, पश्चिम, सातु, रसभातु वा बागोदारा ।  
 रसज्ञा० ना० स्त्री० जीभ, जिह्वा ।  
 रसा० ना० स्त्री० पृथिवी, रासना ।  
 रसाम्र० } ग० पु० रसोत ।  
 रसाजन० }  
 रसातल० ना० पु० पातालविशेष ।  
 रसाना० स० कि० जोड़ना, मिलाना ।  
 रसायन० ना० पु० विषविशेष, भिसमें ताम्रा दि धातुको छुनपादि करते हैं बीमिया, विषयदित विक्रिसाविशेष ।  
 रसापनी० गु० रसायनज्ञाना, स्त्री० स्त्री० वी कुवार ।  
 रसाल० ग० पु० रसाल ऊन, गन्धा गु० मीठा, ना० आय ।  
 रसीला० गु० जो रससे पूर्ण, व्यसनी, कामी ।  
 रसीली० गु० स्त्री० यौवनवती, ना० पु० अग्र ।  
 रसिक० गु० रस, रसिया ।  
 रसिकारि० ना० स्त्री० रसायन, धूर्तगर्द, कामानुरता ।  
 रसिया० ना० पु० कामी, मर्गा, लुचा ।  
 रसियान० अ० कि० गीला वा रसीला होना, पसीमना, रिसाग ।  
 रसे० अ० धीरे, हाँसे ।  
 रसेन्द्रयमि० ना० पु० पारा ।

रसोद्भवा० ना० पु० भोजन पकनेहारा ।  
 रसोर्ध्व० ना० स्त्री० पाक, भोजन, पाकस्थान ।  
 रसोद्भव० } ना० पु० रसोत् ।  
 रसोद्भूत० }  
 रसोनक० ना० पु० वृक्ष विशेष ।  
 रसोत् ना० पु० औषधि विशेष ।  
 रस्सा० ना० पु० जेबडा, बरारा, बड़ीररसी ।  
 रस्ती० ना० स्त्री० जेबडी धोरा रस्सा ।  
 रहकल० } ना० पु० छोटी तोप, छोटीगाड़ी,  
 रहकला० } छक्का ।  
 रहचटे० अ० मनीरप चाह में ।  
 रहचोला० ना० पु० लहोपत्ती, मीठी बार्त ।  
 रहजाना० अ० कि० धीरजु करना, सतीष  
 वरना, धम्भना, वा जौदना ।  
 रहट० ना० स्त्री० गरारी ।  
 रहटा० ना० पु० चरसा ।  
 रहटी० ना० स्त्री० चरखी, गरारी ।  
 रहते० अ० होते, सामने, आगे ।  
 रहन० ना० स्त्री० रीति, चलन, चाल ।  
 रहना० अ० कि० पिवना, ठहरना, बसना,  
 बचजाना ।  
 रहला० ना० पु० चरा अन्न ।  
 रहवैया० ना० पु० बसनहारा ।  
 रहस० ना० पु० ठठोलपन, नाच विशेष, ना० स्त्री०  
 खोला, क्रीडा, गु० एकांत, निर्जन ।  
 रहसना० अ० कि० प्रसन्नहारा हलसना, एकांत  
 होना, छुपाता ।  
 रहसि० ना० पु० एकांत ।  
 रहस्य० ना० पु० रहस, गुप्त एकांत ।  
 रहस्यस० ना० स्त्री० } पिकार, ठहरा, कगा, }  
 रहाघ० ना० पु० } रहा का स्थान ।  
 रहित० अ० वर्जित, हीन, विना ।  
 रहक० ना० पु० रक्षाभनेहारा ।  
 रहण० ना० पु० } बचाव अर्थ, उदार,  
 रहना० ना० स्त्री० } रास्ती, मालन, रातवासी ।  
 रक्षाध्वन० ना० पु० श्रावणशुभपूर्णिमा ।

रक्षावीर्य० ना० पु० रीठा ।  
 राई० ना० स्त्री० सरसा विशेष, गु० थोडा ।  
 रांगा० ना० पु० धातु विशेष ।  
 रांभून० }  
 रांभूना० } ना० पु० सजन, मियतम ।  
 रांभूना० }  
 राङ्ग० ना० स्त्री० विषवा बेरह ।  
 रादपडोस० ना० पु० अडोस पडोस, समावता ।  
 राधना० स० कि० पकाना, रीधना, चराना ।  
 रांपा० ना० स्त्री० खुल्पी० बमारा अरन विशेष ।  
 रांभना० अ० कि० विनियाना, डकारना, गीका  
 बेलना ।  
 राकस० ना० पु० रावस ।  
 राका० ना० स्त्री० पूर्णमासी, पूनी ।  
 राकेश० ना० पु० चन्द्रमा ।  
 राख० ना० स्त्री० भस्म, धूलि, स्नाक ।  
 राखना० स० कि० रखना ।  
 राखी० ना० स्त्री० यत्र जो श्रावणकी पूर्णिमाको  
 हिंदूलोग बाहु में बाधते हैं ।  
 राग० ना० पु० गायकों में प्रसिद्ध, जैसे मलार  
 विहागादि, कोर, प्यार, मोद, विषयभोग ।  
 रागना० अ० कि० अलापना ।  
 रागमाला० ना० स्त्री० रागकी पुस्तक ।  
 रागसागर० ना० पु० गीत जिस में कई एक  
 राग निकलते हैं ।  
 रागिनी० ना० रागकी स्त्री ।  
 रागी० ना० स्त्री० गायक, मिया, गु० कागी,  
 मोही, लालचर्ष ।  
 राघव० ना० पु० सपुत्र का मरुत विशव,  
 भीरामचन्द्रजी ।  
 राघवेन्द्र० ना० पु० भीरामचन्द्रजी ।  
 रावना० अ० कि० प्यारमें अकृता या खीन,  
 हाना ।

राचा० गु० प्यारमें अक्यया ।  
 राह्य० ता० पु० वारीगों का अरथ ।  
 राज० ना० पु० रा०, परवनेहार वारीगों  
 धरई ।  
 राजशंश० ना० पु० वर, महमूल, राजा का  
 भाग ।  
 राजकर० ना० पु० राजशरा ।  
 राजकक्रेडी० ना० स्त्री० कुम्हवा, कुम्ह ।  
 राजकीय० गु० राजा का, राजाक ।  
 राजकुमार० ना० पु० राजा का पुत्र ।  
 राजगृह० ना० पु० राजाकाघर, नगर विशय ।  
 राजजम्बू० ना० स्त्री० जामन, फलेद ।  
 राजत्व० ना० पु० राजाका वग ।  
 राजद्वार० ना० पु० राजभवा का फर्क ।  
 राजधर० ना० पु० राजा का मंत्री ।  
 राजधानी० ना० स्त्री० जिस नगर में राजा  
 बसतै, यथा धरथ में लखनऊ ।  
 राजन्० ना० पु० राजा ।  
 राजनय० ना० पु० राजनीति ।  
 राजना० अ० वि० चमरना, शोभिन हाना ।  
 राजनिभ० ना० पु० गोह ।  
 राजनीति० ना० स्त्री० राज्यवरने की चाल,  
 दरार, कानून ।  
 राजपति० ना० पु० राजा, हिन्दूलोगों की  
 पदवी ।  
 राजपद० ना० पु० रा०, प्रभुता, बादशाही ।  
 राजपुताना० } ना० पु० देश विशेष जिसमें  
 राजपुत्यान० } जयपुर जोधपुर आदि हैं ।  
 राजपुत्र० ना० पु० राजाकापुत्र, जाति विशेष ।  
 राजपुत्रिका० ना० स्त्री० राजाकी कन्या और  
 सफलता और पीस ।  
 राजपुत्री० ना० स्त्री० राजाकी कन्या, बहई  
 तुम्नी ।  
 राजपूत० ना० पु० राजाकापुत्र, जाति विशेष ।  
 राजमवन० ना० पु० राजाका मंदिर ।

राजमोग० ना० पु० रा० यकमोग, मध्याह्न में  
 तैयता के लिये नैवद्य ।  
 राजमन्दिर० ना० पु० राजमन्त्र ।  
 राजमार्ग० ना० पु० राजपथ, सड़क, पैदा ।  
 राजयोग० ना० पु० अमकुम्हली में उच्च महों  
 का होना यथा बृहस्पति मूर्तिमें इत्यादि ।  
 राजयोग्य० गु० जो राजा के योग्य है ।  
 राजराज० ना० पु० यक्षपति, कुबेर, रामा  
 धिराज ।  
 राजराणी० } ना० स्त्री० राजाकी स्त्री ।  
 राजरानी० }  
 राजरोग० ना० पु० बड़ रोग जिससे बचनेकी  
 आशा न हो, यथा चयरोग, मृगी ।  
 राजला० ना० स्त्री० भीठीतुम्नी, लीकी ।  
 राजसोक० ना० पु० राजभवा ।  
 राजवंश० ना० पु० राजाकी सत्ता ।  
 राजवशी० ना० पु० राजाकी सत्तान, राजपूतों  
 म जाति विशेष ।  
 राजवता० ना० स्त्री० मंधपकारा ।  
 राजवल्ली० ना० स्त्री० राखला ।  
 राजवृद्ध० ना० पु० किरवाली ।  
 राजशाही० ना० स्त्री० सभा, कचहरी ।  
 राजशासन० ना० पु० राजा की आशा और  
 राज का दण्ड ।  
 राजश्री० ना० स्त्री० राजाकी सम्पत्ति ।  
 राजस० ना० पु० जो काम राजागुण करके हँवै,  
 रजोगुण ।  
 राजसिंहासन० ना० पु० राजा का सिंहासन ।  
 राजसू० } ना० पु०, यज्ञ विशेष जिसकी  
 राजसूय० } कनक राजाधिराज करसके हैं ।  
 राजस्य० ना० पु० राजाकाधरा, कर, महसूल ।  
 राजहंस० ना० पु० हंस विशय, बतरु ।  
 राजा० ना० पु० स्वपति, देशपति, बादशाह ।  
 राजाघ्न० ना० पु० हिरनी विशेष ।  
 राजाहा० ना० स्त्री० हिरनी ।

राजाधिराज० ना० पु० राजाओंमें जी वहा  
राना ।

राजिका० ना० स्त्री० पाति, धवली, समूह ।

राजिल० ना० पु० साप यथा रानिल हिंदिमो  
इयमर ।

राजी० ना० स्त्री० पक्ति, पाति ।

राजीव० ना० पु० कमल, मखली, पानी, च  
द्रमा, भीती ।

राजीवगण० ना० पु० कमलोंका समूह ।

राजेश्वर० ना० पु० महीपति, वादशाह ।

राज्य० } ना० पु० अधिकार देशी, राज  
राज्यपद० } वान, प्रभुताई, वादशाह ।

राटो० ना० स्त्री० चौरकी वाली वृदेलाखण्ड मा ।

राठैर० ना० पु० शरसेन देश ।

राठौर० ना० पु० राजपूतोंकी जाति विशय ।

राठ्ठा० ना० पु० क्षत्रियोंमें जाति विशेष ।

राठ्ठ० ना० पु० गोइदरा का एकराठ जो गणाक  
पश्चिमहै, कडा ।

राठी० ना० पु० राठ दश का ग्राहण, कड़ी  
तरकारी ।

राणा० ना० पु० राजपूत का जाति विशेष ।

राणी० ना० स्त्री० रानी ।

रात० ना० स्त्री० रात्रि निशा ।

रातना० स० कि० रगदेना, द्र० कि० रचना ।

राता० गु० रक्त, सात जो रंगगया, जो राजा ।

रात्रि० ना० स्त्री० रजनी, रनि, निशा ।

रात्रिचर० ना० पु० निशाचर, मृत प्रेत, चार,  
उलूकादि ।

राइयन्ध० गु० जो रात्रिमें नहा देखता है यथा  
उलूक ।

राद० } ना० पु० पीव, मजा ।  
राध० }

राधा० ना० स्त्री० कृष्णभानुता, भीनि, जाति  
विशय ।

राधानगरी० ना० स्त्री० रेशमीनख भा, राधा,  
नगरमें बनता है ।

राधिका० ना० स्त्री० वृषभसुता, कृष्णविद्या ।

राना० ना० पु० राय ।

रानी० ना० स्त्री० राजा की स्त्री, राणी ।

राय० ना० स्त्री० जूही निराय, वस्तु निराय  
जिससे शकर बनती है ।

रावड़ी० ना० स्त्री० रबी भाना विशेष ।

राम० ना० पु० परशुराम, श्रीरामचन्द्र जी,  
श्रीवलरामजी, गु० ३ ।

रामफहानी० ना० स्त्री० रामायण, लम्बा  
वृत्तात् ।

रामकली० ना० स्त्री० रागिनी विशय ।

रामचन्द्र० ना० पु० श्रीराम, दशरथपुत्र ।

रामजनी० ना० स्त्री० नोची, वैश्या, वश्या,  
। विशेष ।

रामठ० ना० पु० हाथ ।

रामतुरई० ना० स्त्री० लौकी, तरकारी विशय ।

रामदुहाई० ना० स्त्री० राम की राय ।

रामदूत० ना० पु० श्रीहनुमान्जी आदिक ।

रामरुठ० ना० पु० कमरल ।

रामराम० ना० पु० प्रथम या सलाम विशय ।

रामसर० ना० पु० पाषा विशय, तरक  
विशय ।

रामसेनक० ना० पु० चिरायता ।

रामानन्दी० ना० पु० बरागा, रामानन्द के  
सयक ।

रामायण० ना० पु० रामधाम, राममार्ग, राम  
कानी, मय विशय ।

रामायत० ना० पु० बेरागी, जाति विशय का  
मत ।

राय० ना० पु० राजा, राया ।

रायता० ना० पु० दूह का रामतुरई का दही  
में डाल क जा बनात है ।

रायचांस० ना० पु० बड़ी विशय ।

रायवेलि० ना० स्त्री० पुष्पविशय ।

रायरायान्० ना० पु० राजाधिरान् ।  
 रायलता० ना० स्त्री० पुण्य, वृष विशेष ।  
 रादि० ना० स्त्री० विरोध, छद्मार्थ, भगडा ।  
 राल० ना० स्त्री० धूना ।  
 राध० ना० पु० राजकुमार, राजा, राय ।  
 रावचाप० ना० पु० विलास, आनन्द ।  
 रावटी० ना० स्त्री० तम्बू विशेष ।  
 रावण० ना० पु० लक्ष्मण, रावणपति विरोध ।  
 रावणारि० ना० पु० श्रीरामचन्द्रजी ।  
 रावणी० शु० जो रावण से सम्बन्ध रखता है,  
 ना० पु० मेघनाद ।  
 रावत० ना० पु० शर्मा, वीर, सर्दार ।  
 राघरा० } सर्वे तुम्हारा, आपका ।  
 राघरो० }  
 राघी० ना० स्त्री० नदी विशेष या पनाप में है ।  
 राशि० ना० स्त्री० दर, समूह, मेयादि १२ ।  
 राश्यन्त० रा० पु० एकराशि से दूसरी राशि  
 तकका समय ।  
 राएकी० ना० स्त्री० बही कटार ।  
 राष्ट्र० ना० पु० नसाहुआ देश ।  
 रास० ना० पु० गोपियों के साथ श्रीकृष्णचन्द्रजी  
 की घोडा पर्वविशेष, राशि ना स्त्री० नाप  
 सन्दरा लेपाला ।  
 रासचक्र० ना० पु० लग्नमण्डल ।  
 रासधारी० ना० पु० रासकरनेहारे ।  
 रासम० ना० पु० गधा, सर ।  
 रासमी० ना० स्त्री० गदही, सरभी स्त्री ।  
 रासी० शु० घोडा इत्यादि जो न भला हो न  
 बुरा मध्यम, ऐसा बैना ।  
 रासना० } ना० स्त्री० जो वृषपर जमनाई यथा  
 रासना० } बाद ।  
 राहना० स० कि० चबो में दात बनाना ।  
 राहु० ना० पु० आठवां ग्रह, दैत्य विरोध जो  
 चन्द्रमा और सूर्यको प्राप्त है ।  
 राक्षस० ना० पु० अशुभ विरोध कर्ण ।  
 राक्षसी० ना० स्त्री० राक्षसकी स्त्री ।

राक्षसीपेला० ना० स्त्री० संध्या उपरतीन्  
 सुहृत् ।  
 रिक्त० शु० खाली, शून्य ।  
 रिचा० ना० स्त्री० श्रचा, वेदमन्त्रका नाम ।  
 रिम्नैया० ना० पु० रीम्ने हारे ।  
 रिम्नाना० स० कि० प्रसन्न करना, खुराकरना,  
 सताना, दु सदेना ।  
 रिताना० स० कि० रीता कराना, छूटा कराना  
 दुर्गंध दूर कराना ।  
 रिनु० ना० स्त्री० शत्रु ।  
 रिनुराजु० ना० पु० शत्रुराज, वधत ।  
 रिन्तम० ना० पु० मनु विशेष ।  
 रिद्धि० ना० स्त्री० सम्पत्ति, नदती, वृद्धि, श्रद्धि ।  
 रिपु० ना० पु० बैरी, शत्रु, मुर्दे ।  
 रिपुता० ना० स्त्री० शत्रुता, बेर, अदावत ।  
 रिपुंजय० गु० शत्रुनिवृत्ति, प्रतिशर्मा ।  
 रिपुपाक० ना० पु० इद्र ।  
 रिपुहा० ना० पु० शत्रुघ्न, शु० शत्रुनिवृत्ति ।  
 रिपि० ना० पु० श्रपि ।  
 रिपिमित्र० ना० पु० श्रपिमित्र ।  
 रिष्ट० ना० पु० सद्र, गुष्ट जो निकृष्ट है ।  
 रिष्टपुष्ट० गु० मोक्ष, स्थूल ।  
 रिस० ना० स्त्री० कोप, क्रोध, रिकिसियाहट ।  
 रिसना० थ० कि० धीमे टपकना ।  
 रिसहा० शु० कोपी ।  
 रिसाते० गु० कायपुन, काय करते ।  
 रिसाना० } थ० कि० अग्रसन्न वा कोपित  
 रिसियाना० } होना, चिदना, दु तिन होना ।  
 रिन्न० ना० पु० श्रन्न, रीन्न ।  
 रिन्नराज० } ना० पु० श्रणराज, जाम्बव  
 रिन्नश० } तादि ।  
 री० अन्त्य० रे ।  
 रींगना० थ० कि० कंठपाल, रेंगना ।  
 रींघना० स० कि० पकाना ।  
 रीछु० ना० पु० श्रच्छ, भालु ।  
 रीभ० ना० स्त्री० चाह, इच्छा, हस्त, वृत्ति ।



रीझना० अ० कि० प्रसन्न वा तृप्तहोना ।  
 रीठा० ना० पु० फल विशेष ।  
 रीठी० ना० स्त्री० छोटा रीठा ।  
 रीढ़० ना० स्त्री० पीठकी हड्डी ।  
 रीता० गु० खाली, शून्य ।  
 रीति० ना० स्त्री० चाल, चलन, प्रकार, क्रान्तन,  
 दरजापद्धति ।

रीर० ना० रीढ़, रीर ।

रिरियाना० अ० कि० बालककी रीति से रोना,  
 बुझकुडाना, स० कि० गिड़गिड़ाना, खुशामद  
 करना ।

रीस० ना० स्त्री० क्रोध ।

रुक० ना० पु० रोक, उभियाहट ।

रुकना० अ० कि० अटकना, बन्दहोना, ठहरना ।

रुकवैया० ना० पु० अटकजा ।

रुकाना० स० कि० अटकाना, ठहराना, छेकवाना ।

रुकार० ना० पु० } अटकाना, छेकाना ।

रुकावट० स्त्री० }

रुक्म० ना० पु० सुवर्ण, चादी, रुक्मिणीका भाई ।  
 रुक्मिणी० ना० स्त्री० श्रीकृष्णच द्रुमीकी पट  
 रानी विशेष ।

रुक्मकेशु० ना० पु० रुक्मिणीजीका भाई ।

रुख० ना० पु० सकेत इशारत, आना, सुह ।

रुखार्ह० ना० स्त्री० बुझकी, तिलार्ह ।

रुखान० ना० पु० बर्दा का अल्प विशेष ।

रुखाना० अ० कि० रुकापन होना, सुस्ताना,  
 सुलगा ।

रुखानी० ना० स्त्री० छाया रुस्तान, गु० सुखीहुई ।

रुग्ण० गु० टेदा, रोगी ।

रुच० ना० स्त्री० रुचि ।

रुचना० अ० कि० भावना, अन्धालगना ।

रुचि० ना० स्त्री० मनोभिलाष, भोजनमें प्रवृत्ति,  
 चाहत, शौक, गोरोचना ।

रुचिक० ना० पु० खार्हरीलान, सोचरलान ।

रुज० ना० पु० रोग विकार ।

रुह० ना० पु० क्रोध, गुस्ता ।

रुणि० ना० पु० शब्द ।

रुणित० गु० गुनारित, शब्द करता भया ।

रुण्ड० ना० पु० शिर रहित शरीर ।

रुदन० ना० पु० रोदन, रोना ।

रुदित० गु० रोताहुआ ।

रुद्ध० गु० छेका, रुका, बँधा ।

रुद्र० ना० पु० श्रीमहादेवकी ।

रुद्राणी० ना० स्त्री० पार्वती ।

रुद्रावतार० ना० पु० भीहनुमान्की ।

रुद्री० ना० स्त्री० ११ बेलपत्र, ११ शीश्यांग

रुधिर० ना० पु० रक्त, लोह, खून ।

रुधिरा० ना० स्त्री० केसर, जाफरान ।

रुपना० अ० कि० उटना, अङ्गा ।

रुपा० ना० पु० रूपैया ।

रुपहरा } गु० रूपैया, जो रूपसे बना है ।

रुपहला }

रुपी० गु० रुपईहुई, अङ्गी ।

रुपैया० ना० पु० चादीनामुद्रा, १६ अनेका ।

रुसक० ना० स्त्री० खुरासानी अननादन ।

रोलाना० स० कि० रोकना, डुलदेना ।

रुष्ट० गु० रुद्ध, मोहित ।

रुस्तन० अ० कि० रितना ।

रुह० ना० पु० उपस, जमित ।

रुहा० ना० स्त्री० कुम्भी तालानकी ।

रुही० ना० स्त्री० दूर घात ।

रुक्ष० गु० रुखा, रुद्ध, सरसरा ।

रुक्षिगन्धक० ना० पु० सोचरलान ।

रुखा० ना० पु० रुईका धोपारी ।

रुखं० ना० स्त्री० जो बघात से निकलती है ।

रुघट० ना० पु० मेल, मल, बाल, रोम ।

रुघना० स० कि० गेरलेगा, अ० कि० व्याकुलता

रुख० ना० पु० वृष, पेड़, वृक्ष ।  
 रुखड़० ना० पु० योगी विशाप ।  
 रुखडा० ना० पु० छोटा वृष ।  
 रुखन० ना० पु० पल्लवा, खान ।  
 रुखा० शु० सूखा, निरा, रूच, स्नेहरहित ।  
 रुखार्द्र० ना० स्त्री० खरखराहट, खराई ।  
 रुखानी० ना० स्त्री० टाकी, धनी ।  
 रुखा० ना० स्त्री० खान, शु० सूखी ।  
 रुख० गु० सूखे, विनास, उदास ।  
 रुचना० अ० कि० रुचना ।  
 रुच्य० गु० मनभावित, चाहता ।  
 रुद्ध० गु० रुच ।  
 रुज० ना० पु० कीट विशाप ।  
 रुम्हा० गु० जंतु वा पत्नी जिसको रुज स  
 ताता है ।  
 रुठना० अ० कि० विगड़ना, भगड़ना, रिसाना,  
 मानकरना ।  
 रुठनी० ना० स्त्री० लज्ज, गु० मानवती,  
 भगड़ालू ।  
 रुठा० शु० रिसाना विगड़ाना ।  
 रुठारुठी० ना० स्त्री० परस्पर विगाड़ ।  
 रुढ़० ना० पु० बड़ा, घरका, बठोर ।  
 रुढ़ि० न० पु० वह सजा जा मिश्रित न हो ।  
 रूप० ना० पु० आकार, मुख, चित्र टर, चाल,  
 उदरता, तुल्य, शान्ता ।  
 रूपक० ना० पु० सन्धा, तुल्य समान ।  
 रूपजस्त० ना० पु० रागा ।  
 रूपमञ्जरी० ना० स्त्री० मण्डरा, सदा सुहासि  
 मूल विशाप ।  
 रूपरस० शु० स्वरूपवश्य  
 रूपरस० ना० पु० रूपा जो जलायागया, रूप  
 धार रस ।  
 रूपराशि० } ना० स्त्री० सुदर स्त्री, अथवा  
 रूपवती० } सुदरी ।  
 रूपयान्० शु० सुदर स्वरूप, सुवर्ण ।  
 रूपहला० शु० जा रूप स बना है ।

रूपा० ना० पु० चांदी, रजत, ना० स्त्री० वैश्या,  
 रूपवती ।  
 रूपान्तर० ना० पु० दूसरारूप ।  
 रूपी० गु० आकारवात् ।  
 रूमी० ना० पु० रूमदेशाय मनुष्यादि ।  
 रूमीमस्तगी० ना० स्त्री० औषधि निरोप ।  
 रूरा० शु० चम्पदा, सुन्दर ।  
 रूसना० अ० कि० रासना, रूटना ।  
 रूसी० ना० स्त्री० शिरका मैल, ना० पु० रूस  
 देशीय ।  
 रूक्षक० ना० पु० नाश औषधि विशेष ।  
 रू० अ० अ० अरे, हो ।  
 रूँक० ना० स्त्री० गद्दे वा शब्द ।  
 रूँकना० अ० कि० रूँकना ।  
 रूँगना० अ० कि० चलना, कींचना ।  
 रूँट० ना० पु० रहट रेंटा ।  
 रूँटा० ना० पु० पोटा, सिक्का, नया ।  
 रूँड़० ना० पु०  
 रूँडा० ना० स्त्री० } पुरण्ड वा उसका बीज ।  
 रूँदा० ना० स्त्री० छापीनरुई ।  
 रूँदी० ना० स्त्री० छोटा रूररुख ।  
 रेख० ना० स्त्री० लक्ष्मिचिह्न, प्रारम्भ, ललाट ।  
 रेखना० ना० पु० लक्ष्मिचिह्न बनाया ।  
 रेखा० ना० स्त्री० रस, लक्ष्मि ।  
 रेखागणित० ना० पु० गणित विशाप ।  
 रेखागति० ना० स्त्री० कर्मगति, प्रारम्भकी  
 चाल ।  
 रेचक० ना० पु० वह औषधि जिस म दस्त  
 आते हैं, याग में वह क्रिया जिससे पना वा  
 उतारत है ।  
 रेचनी० ना० स्त्री० कर्मगती जा दस्त उपावे ।  
 रेचा० ना० स्त्री० कपाळा ।  
 रेह० ना० स्त्री० चिह्न, निशान ।  
 रेणु० ना० स्त्री० धूलि झाक ।  
 रेणुवा० ना० स्त्री० परशुराम की माता गंगा  
 जीका रेंता, धूलि, बालू ।

रेणुपित्तहा० ना० पु० पित्तपापघ्न ।  
 रेत० ना० पु० वीर्य, बीज, नालू, धीला ।  
 रेत० ना० पु० वीर्य, कामदेव ।  
 रेतना० सं० कि० सोहनकरना, धीलना, थो  
 टा ।

रेतल० } यु० जहा बहुत रेतहोवे ।  
 रेतला० }

रेता० ना० पु० बालू, रेत, यु० धीलाभया ।  
 रेताई० ना० स्त्री० रेतने का काम या दाम ।  
 रेनियाना० सं० कि० रेतान, चिकान करना ।  
 रेती० ना० स्त्री० जहा अधिक रेतहो, रेतने का  
 हथियार ।

रेतीला० गु० बालूया, बिरकिया ।  
 रेतुआ० ना० पु० रेतारार ।  
 रेफ० ना० पु० यकार के आगे का वर्ण ।  
 रेर० ना० पु० शोर, दहा ।  
 रेलना० सं० कि० डेलना, डकेलना, पेलना ।  
 रेलपेल० ना० स्त्री० बहुतात, सरसाई, भीड़ ।  
 रेल्ल० ना० पु० अहिला, नाक, पशुओं की  
 पाति, टकल, पेलना, भण्ड, ठला ।  
 रेवकी० ना० स्त्री० तिलखिलित मिठाई मिश्रण ।  
 रेवत० ना० पु० राना विशेष, रेवती का नाम ।  
 रेवती० ना० स्त्री० सत्ताईसवा नक्षत्र, अश्लेष  
 देवता की पत्नी ।

रेवतोरमण० ना० पु० श्रीवलदेवजी ।  
 रेवन्चीनी० } ना० स्त्री० श्लेषवि विशेष ।  
 रेवन्दीनी० }  
 रेवा० ना० पु० गर्भदानद, ना० स्त्री० गदी  
 विशेष ।  
 रेह० ना० स्त्री० रेह ।  
 रेहडू० ना० पु० लडिया ।  
 रेही० ना० स्त्री० रेह ।  
 रेहण० ना० स्त्री० ऊपर मूषिकी मिट्टी ।  
 रेकना० सं० कि० रेकना ।

रेन० } ना० स्त्री० रात, निरा ।  
 रेनि० }

रेनिचर० ना० पु० निराचर ।  
 रेनिवर्ण० यु० भाला, श्याम ।  
 रेवत० ना० पु० मनु० विशेष ।  
 रोआई० ना० स्त्री० गिलाप, हाहाकार ।  
 रोआना० सं० कि० रोलाना, सुताना, कुदना,  
 अ० कि० कुदना, लिसियागा ।  
 रोआं० ना० पु० रोम ।

रौंगरी० ना० स्त्री० अगड़ा, छल, उगनिया ।  
 रौंटा० सं० कि० मुकरा ।  
 रोपना० सं० कि० लगाना, जमाना, गाड़ना ।  
 रोक० ना० स्त्री० टोक, अटक, निभ, रुक ।  
 रोकडु० ना० स्त्री० जो रुपया अपने पास  
 जमा है ।  
 रोकड़िया० ना० पु० रोकड़ रखनेहार ।  
 राकन० ना० स्त्री० ओट, आड़, डेहा ।  
 राकना० सं० कि० धरना, धामना, डेरना,  
 अथवा, मानवाना ।

रोफू० ना० पु० रोकड़हार ।  
 रोम० ना० पु० व्याधि, दुस्त, विकार, बीमारी ।  
 रोमरिपु० ना० पु० वैद्य, धचरि, औषधि ।  
 रोमहा० } यु० वैद्य, औषधि ।  
 रोमहारी० }

रोमाह्वय० ना० पु० वृद्ध औषधि ।  
 रोमिया० } यु० व्याधि, दुस्त, बीमार, मरीज ।  
 रोमी० }  
 रोच० ना० पु० सुखी ।  
 रोचक० ना० पु० पाचक, जा रुचि उगना ।  
 रोचन० ना० पु० तिलक, गोराचन, मनमान ।  
 रोचनरु० ना० पु० कपाला ।  
 रोचना० ना० पु० मारीचना, तिलक, अ० कि०  
 रुचना, मानना ।  
 रोचिय० ना० पु० मनु विशेष ।

रोज० } ना० पु० गिलाप, रोना ।  
 रोजकी० }

रोट० } ना० पु० मोटी रोटी, श्रीहनुमान्जी  
 रोटा० } का मोटी रोटीका नैवेद्य ।  
 रोटी० ना० स्त्री० भोजन विशेष ।  
 रोड़ा० ना० पु० बड़ा कंकर ।  
 रोड़ी० ना० स्त्री० छाया कंकर ।  
 रोदन० ना० पु० रोवाई, आँसू निकलना ।  
 रोदसी० ना० स्त्री० भूमि, आकारा ।  
 रोध० ना० पु० तीर, तट, रोक, धिरोव ।  
 रोधी० शु० रोकनेहारा, धेरेनेहारा, तटपाला ।  
 रोना० अ० क्रि० आंसूडोलना, विलापना, उदा-  
 सहना, ना० पु० विलप, रोदन, शोक ।  
 रोपक० ना० शु० जो रोपणकरे ।  
 रोपण० ना० पु० वृक्षादि वा लगाना ।  
 रोपना० स० क्रि० रोपना, रोकना, अटकना ।  
 रोम० ना० पु० शरीर के बाल, ऊन ।  
 रोमकर्म० ना० पु० योगसा, खरगोश ।  
 रोमकूप० ना० पु० रोमकी जड़ ।  
 रोमपट० } ना० पु० रोमीपत्र यथा कम्पल,  
 रोमवस्त्र० } डराला इत्यादि ।  
 रोमस० ना० पु० डीउस, तमालपत्र, सुधर ।  
 रोमसफली० ना० स्त्री० डीउस ।  
 रोमहर्षण० } ना० पु० रोम खड़ होना,  
 रोमान्च० } गदगद ।  
 रोरी० ना० स्त्री० जिसका शिरमें धारा लगाते  
 हैं, रोली ।  
 रोलना० स० क्रि० रुन्दा रटना, चिकनाना, घुमा ।  
 रोली० ना० स्त्री० रोरी, चावल धीर इल्दी और  
 फटकी की मिलीनी जिसका लाल निलक  
 माधेपरलगाते हैं ।  
 रोवना० अ० क्रि० रोना, शु० रोनेहारा ।  
 रोश० } ना० पु० कोष, दुःख, गुस्साह ।  
 रोष० }  
 रोषण० ना० पु० फालसा, पारा, कोष ।  
 रोष० ना० पु० रोष ।  
 रोसना० अ० क्रि० रुटना ।  
 रोहट० ना० स्त्री० रोदन ।

रोहण० ना० पु० राजा विशेष, रोहिणी का  
 पिता ।  
 रोहिणी० ना० स्त्री० श्रीवलदेवजी की माता,  
 चाँपा नचन, बुधकी माता, हर, कुटकी ।  
 रोहित० ना० पु० मत्स्य विशेष ।  
 रोहिताश्व० ना० पु० राजा हरिश्चन्द्रका पुत्र ।  
 रोहित्य० ना० पु० मेथी ।  
 रोहिये० स० क्रि० धारण करिये ।  
 रोही० ना० पु० नरगद ।  
 रोहू० ना० पु० मत्स्य विशेष ।  
 रोहैलपरण्ड० ना० पु० नांसनरेली के अंत  
 पासका देश ।  
 रौंदना० } स० क्रि० पाँचसे खूंदना वा पाँच  
 रौंधना० } से मजिना वा मसखना वा मसना ।  
 रौताई० ना० स्त्री० लड़ाई, समार, युद्ध ।  
 रौद्र० ना० पु० आँक, कोष, धूप, शु० जयानक,  
 षडिन, ना० पु० शृंगारदि नक्षत्र में से एक  
 का नाम ।  
 रौप्य० ना० पु० चाँदी, रजत ।  
 रौर० ना० पु० रौला, जस ।  
 रौरव्य० ना० पु० गरकका सखड विशेष ।  
 रौद्रा० सर्वे गुहारा ।  
 रौता० ना० पु० धूम धाम, नखदा, इलक ।  
 रौव्य० ना० पु० मनु विशेष ।  
 रौहिणीय० } ना० पु० श्रीवलदेवजी, बुध ।  
 रौहणेय० }  
 [ ल ]  
 लकड़० ना० पु० काष्ठ, काट, लट ।  
 लकड़हारा० ना० पु० लकड़ी बेचनेहारा ।  
 लकड़ा० ना० पु० गिरर, लकड़ीका बहाटकका ।  
 लकड़ी० ना० स्त्री० लाठी, काष्ठ, इन्धन, शु०  
 कदा, षडिन ।  
 लकीर० ना० स्त्री० रेता, धारी, टेंडी ।  
 लकुट० ना० पु० छपी, लाठी ।  
 लकुच० ना० पु० बरहस ।

सख० ना० पु० मायाका पसार, यु० जो देता  
 आवे मौजूदात, लाख ।  
 सखन० ना० पु० सवण, सधमण ।  
 सखनऊ० ना० पु० अवधदेश की राजधानी ।  
 सखना० स० कि० देखना, समझना ।  
 सखपति० } यु० धनी, भाग्यवान्, जिसके पास  
 सखपती० } लाखों रुपया हो ।  
 सखलुट० यु० उहाऊ ।  
 सखा० ना० पु० लाखों ।  
 सखाऊ० यु० जनाऊ, दिखाऊ ।  
 सखिया० ना० पु० दत्तनहारा ।  
 सखेरा० ना० पु० लहेरा, लाख चदानेहारा ।  
 सखौटा० गु० जिसमें लाख लगाई गई ।  
 सख० अव्य० त्रक, पर्यंत, समीप, ना० स्त्री०  
 छड़ी ।  
 सगचलना० घ० कि० साथ साथ चलना,  
 जल्द चलना ।  
 सगङ्ग० ना० पु० पची विरोध ।  
 सगन० ना० स्त्री० सान ।  
 सगना० अ० कि० होना, साहना, पचना,  
 स्पर्शहोना, भिङ्गना, मिलना, जलना, यु०  
 सगुआ ना० पु० सगाव ।  
 सगभग० अव्य० घास पास, निकट ।  
 सगातार० यु० एकपर एक तानडताड़ ।  
 सगाना० स० त्रि० उतराना, वासकरना, मि  
 ङाना, मिलाना, बन्दकरना, लेसना, चभना,  
 चिपगाना, बहासनी करना ।  
 सगाय० ना० पु० गद्दाव, मेल, सम्बन्ध ।  
 सगावट्० ना० स्त्री० मिलान, गठाय ।  
 सगुङ्ग० ना० पु० छाटी ।  
 सगुआ० } ना० पु० गार, धगङ्ग ।  
 सगुआ० । }  
 सगा० ना० पु० स्नेह, माया, बडा वांत ।  
 सगा० ना० स्त्री० लोगावस, छाटी ।  
 सगत० ना० स्त्री० निमिष, पल, रात्रिका उदय

वाल, प्रेम, मित्रता, विवाह का दिन, सहर्त ।  
 सग्नेष्ट० ना० पु० लग्नका ठीक ।  
 सग्नेष्टित० यु० लग्न विचारित ।  
 सग्नेत्सघ० ना० पु० विवाहका आनन्द ।  
 सधिमा० ना० स्त्री० सिद्धिविरोध ।  
 सधिष्ट० यु० पास, पासवाला, लगाट्टा ।  
 सधुता० ना० स्त्री० छोटई, हलकापन और  
 शीघ्रता, जल्दी, रामचन्द्रिकाया यथा ( कोटि  
 भाति पौनते मनते महालधुता लसे, बैठके  
 धन अम श्रीहनुमत अतक -यो हैसे ) ।  
 सङ्क० ना० पु० कटि, लका, यु० डेर, बहुत ।  
 सङ्कना० ना० पु० लग्ना, चौगडा, रागा ।  
 सङ्कनायक० } ना० पु० लकाया राजा, राम  
 सङ्कप० } चन्द्रिकाया यथा ( सङ्कनायक  
 की निर्माण देवदूषणकी दई ) ।  
 सङ्का० ना० स्त्री० उपद्रोप विरोध ।  
 सङ्काधि० } ना० पु० रावण, लकाकारना ।  
 सङ्कागति० }  
 सङ्कनी० ना० स्त्री० निशाचरी विरोध ।  
 सङ्केश० } ना० पु० रावण, लका का  
 सङ्केशर० } राजा ।  
 सङ्ग० } यु० पण, अपादन ।  
 सङ्गङ्गा० }  
 सङ्गङ्गा० अ० त्रि० लगवना ।  
 सङ्गर० ना० पु० नौकादि के ठहराने के लिये  
 बडाभारी लोह, सगङ्गा, टीठ ।  
 सङ्गरी० ना० स्त्री० घाली ।  
 सङ्गूचा० ना० पु० साने की वस्तुविरोध ।  
 सङ्गूर० ना० पु० वानरविरोध, हनुमान्की ।  
 सङ्गोट० } ना० पु० काद वधने का घोरा  
 सङ्गोट० } नख, कोपान ।  
 सङ्गोटिया० ना० पु० जो लङ्कारिका याद है ।  
 सङ्गोटी० ना० स्त्री० सङ्गोट ।  
 सङ्घन० ना० पु० उपास, कनाका, उधलने, न  
 मानना, नौबत ।  
 सङ्घना० घ० त्रि० उत्पत्तना, फादना, बितना ।

लघनी० ना० स्त्री० उपासी, यु० उपामा, मृता ।  
 लचक० ना० स्त्री० चिमडाहट ।  
 लचरना० अ० कि० टेडा होना ।  
 लचका० ना० पु० धपा, भौक, नार विरोध ।  
 लचकाना० स० कि० टेडाकरना, धपा देना,  
 कुर्माग ।  
 लचना० अ० कि० टेडाहोना ।  
 लचरचाना० अ० रि० लजलनहोना, चिमडा  
 होना ।  
 लचर० ना० पु० अयाग ।  
 लचाना० स० कि० टेडा करता ।  
 लच्छा० ना० पु० फेदी ।  
 लच्छा० ना० पु० लक्षण ।  
 लजलजा० अ० वसलता, चिपाचपा ।  
 लजलजाना० अ० कि० विलपिता होना ।  
 लजवाना० स० कि० सकोच कराना, शरमाग ।  
 लजाना० अ० कि० सकोचना समितहोना ।  
 लजारु० } ना० स्त्री० लजाना, पीया  
 लजालू } विशेष, यु० सराची, लनीला ।  
 लजिया० अ० रि० लजाना ।  
 लजीला० अ० लजाना सरोची ।  
 लज्जा० ना० स्त्री० लज, सवाच हया ।  
 लज्जावा० अ० सरोचित लजयुक्त ।  
 लज्ज० अ० कि० लजाना ।  
 लज्जिका० ना० स्त्री० लजालू, वश्या ।  
 लज्जित० अ० लजाना, लजयुक्त ।  
 लज्ज० ना० स्त्री० लजाना जो उलकगया हे ।  
 लजक० ना० स्त्री० हिलग, भावलाभा प्रसार विशेष ।  
 लजकन० ना० पु० गहा विरोध जो नर्भ में  
 पकता हे, फल विशेष, पत्नी विशेष, परीषी ।  
 लजकना० अ० कि० हिलगना ।  
 लजका० ना० पु० टोना, भाककुक, टोटा,  
 बुद्धला ।

लजकाना० स० कि० हिलगाना, टागना ।  
 लजकाच० ना० पु० टागना ।  
 लजपटा० अ० चचल, खिलाना, पगाई जो  
 अनरीति से नारी हे ।  
 लजपटाना० अ० कि० लजकाना, टाकरस्ताग ।  
 लजपटी० ना० स्त्री० टोमरई, लडनडी ।  
 लजा० अ० दुबल, दुगला, पतला, सधा, लुचा ।  
 लजाई० ना० स्त्री० परेती अर्था, यु० दुबलापना  
 लजापटा० अ० ऐसा पैसा ।  
 लजुरिया० } ना० स्त्री० धार बेश निन में  
 लजुरा० } लज पडनाती हे ।  
 लजुरा० ना० पु० पत्नी विशय ।  
 लजूर० ना० पु० भौरा, पगी, मोहित ।  
 लजूरहोना० अ० रि० फिसापर मोहित होना ।  
 लजूर० ना० पु० सोंदा, लाठी ।  
 लजालटी० ना० स्त्री० परपरला की लजुरी ।  
 लजालिना० स० कि० लजालगी करना, लाठी  
 से पीटना ।  
 लजुर० ना० पु० गु० टाला, टटा ।  
 लजूर० ना० स्त्री० पच, पक्ति, लकी, यथा परत ।  
 लजकपन० ना० पु० शैख, बालकता,  
 शिक्काई ।  
 लजकयुद्धि० ना० स्त्री० चिचिखान, लजके  
 वीसी बुद्धि ।  
 लजका० ना० पु० बालक, पुत्र, मचा ।  
 लजकाई० ना० स्त्री० } लजकपन, बालकता,  
 लजकापन० ना० पु० } शिशुता ।  
 लजखडाना० अ० कि० टगमगाना, लज  
 नडाना ।  
 लजनी० स० कि० भगइना, मुदकरना ।  
 लजवटाना० अ० कि० लजखडाना ।  
 लजारी० ना० स्त्री० मुद, समर, भगवा ।  
 लजका० } गु० भगवा, मुदशाता, धीर ।  
 लजका० }

खडाना० स० कि० लङ्घन वा मुद्र करवाना,  
और लाङ्घ करना ।

खडियाना० स० कि० पिराना, गूना ।

खडी० ना० स्त्री० मोतियों की सलके ।

खडैता० शु० दुखार, बहुतप्यारा, दाढ ।

खड्ड० ना० पु० मोदक जा मोदकआदिके बन्ते हैं,  
मिठाई विराय ।

खड्डा० ना० पु० } खकडा, लदद ।  
खड्डिया० स्त्री० }

खड्डो० ना० स्त्री० छागलकडा, लडिया ।

खरठ० ग० पु० मूर्ख ।

खण्ड० ना० पु० लिंग, लौङ्गा ।

खण्डूरा० शु० लुण्डा बाझ, बहुहीन, अनाप ।

खत० ना० स्त्री० बुरीचाल, आदत ।

खतना० स० कि० घाडी का घाडेके साथ प्रसंग  
होना ।

खतरी० ना० स्त्री० पुरानी जूता, दाढहनविशेष ।

खता० ग० स्त्री० नल, भिषग, दाखना पाधा ।

खनाडना० स० कि० दूधभूषण कराना, हल ।  
करना, तुच्छ करना ।

खताना० स० कि० घाडी स घाडेका प्रसंग  
कराना ।

खतिका० न० स्त्री० खता ।

खतिया० शु० जिसका चालडूरी है, बुद्धिमी ।

खतियाना० स० कि० खत से मारना ।

खती० शु० खतिया ।

खतुआ० ग० पु० पटाकपडा ।

खत्ता० ग० पु० पुतासपडा, चीथडा, पात्र,  
खत, रामचन्द्रकाया (इन्मत खता हरी दह  
भूल्या, हुत्या कणनाराहिल इत्र पूल्या) ।

खत्ती० ना० स्त्री० लट्टकी खोरी, तरन में आ  
खत, घोडे की खत ।

खथडना० स० कि० काचड आदि भोगना ।

खथेडना० स० कि० काचड से भिगादेना ।

खदना० स० कि० माफिल वा भराहाना ।

खदनिया० ग० पु० सादेनहारा, खदनहारा,  
सदाय ।

खदान० ना० पु० बोक, भराय, खदान ।

खदाना० स० कि० बोकना, भरना, लादाना ।

खदाय० ना० पु० खदान, बोक ।

खदुआ० ग० पु० जो लादानाता है ।

खप० ग० पु० छल, मुट्टी, हथेली, पसर ।

खपक० ग० स्त्री० चटक, भभक कलक, भभक ।

खपकना० स० कि० लहकना भभकना चमे  
बन, भपटना भपकराय ।

खपका० ना० पु० भपट पुनी, बुरीचाल ।

खपनाना० स० कि० गिती वस्तु के रने की  
हाथ बढाया ।

खपकी० ग० स्त्री० तपची, रटाका, मख्व  
विराय ।

खपची० ग० स्त्री० मखली विराय ।

खपकप० शु० पुतीला, चचल ।

खपट० ना० स्त्री० सुगंध महक दहक,  
भिडा ।

खपटना० स० कि० खपटा एटला, सिमटना,  
लडा ।

खपग० ग० पु० जूती। रसाय घास रसाय,  
सम्यथ ।

खपगाना० स० कि० भिडाना, खपगान खपगान,  
खगाना बलदान ।

खपगी० ना० स्त्री० लुपुग ।

खपलप० ग० भपकप ।

खपाट० } शु० मिथ्यावादी, महाभूषण ।  
खपाटिया० }

खपागी० ग० स्त्री० मिथ्या, मुठ, मुठ ।

खपाटु० शु० खपाटिया ।

खपेट० ना० स्त्री० पर्त लड, खपटा ।

खपेग० ना० स्त्री० बड ।

लपेटना० स० क्रि० बाँधना, बैठन लगाना,  
लीपना ।

लपेटवा० शु० लपेटगया ।

लप्या० ना० पु० कपड़ा जोवादले से बिना है ।

लघइसवइ० ना० पु० बकभक, झूठ सच ।

लघवा० ना० पु० झूठा, बक्री ।

लघनी० ना० स्त्री० मिट्टी का पान जिसमें ताड़ी  
बुझाते हैं ।

लघलय० ना० पु० पथरी, दसल, उल्लू ।

लघलवा० गु० विपथिपा, लनलना ।

लघार० ना० पु० बकनादी, झूठा, गप्पी ।

लघी० ना० स्त्री० खाद का जलाव जब चीनी  
बनाने को पकाते हैं ।

लघेदा० ना० पु० सोंटा, लठ विशेष ।

लघेरा० ना० पु० फल का वृक्ष विशेष, लभेरा ।

लघ्थ० शु० प्राप्त, उपार्जित ।

लघिघ० शु० प्राप्ति ।

लभेरा० ना० पु० वृक्ष का उसका फल विशेष ।

लभ्य० शु० मिलनद्वारा, मिलने के योग्य ।

लभलुङ्गा० शु० ऊचा, लम्बा ।

लभपट० गु० झुंडा, घसप, खेरण, हुटखेल,  
परखीगामी, व्यवहारी ।

लभ्य० ना० पु० अमृद, क्षीरिता, ऊचाव ।

लभ्यकण० ना० पु० शशा, चौगडा, तरगोश ।

लभ्या० शु० ऊचा, दीर्घ, बड़ा ।

लभ्याई० स्त्री० } ऊचाई, दीर्घवन ।  
लभ्यान० ना० पु० }

लभय ना० स० क्रि० लम्बाकरना, बढ़ाना ।

लभित० शु० जो लटकायागया ।

लभियाकरना० घ० क्रि० कसोल करना,  
कुरकना ।

लभ्या० ना० स्त्री० गु० ऊचा, बड़ी ।

लभ्यासंभरना० घ० क्रि० रोना, विसाव  
करना ।

लभ्य० शु० लम्बा ।

लभ्येदर० ना० पु० शींगणेश जी ।

लम्भा० ना० पु० चौगडा, शशा ।

लय० ना० पु० प्रलय, नारा, डेर, साध, स्वर,  
विनारा, अत्यतस्नेह, ना० स्त्री० चित्रवन ।-

लछा० ना० पु० फेंगी, शशी ।

ललक० ना० स्त्री० लहर, तरंग, नम्रता ।

ललकना० घ० क्रि० चढ़ना, धावाकरना, न-  
म्रता करना ।

ललकाना० स० क्रि० भगडा उटाना, लहान्य,  
नम्रकरना ।

ललकार० ना० स्त्री० हाक, पुकार ।

ललकारमा० स० क्रि० पुकारना, हाकना और  
लड़ाई मागना, प्रचारना ।

ललगण्डा० ना० पु० वानर, कपि ।

ललचाना० घ० क्रि० तरसना, जीलगारहना,  
स० क्रि० तरसाना ।

ललना० ना० स्त्री० खिलाना नारि ।

लला० ना० पु० छोकरा, लौंडा ।

ललाट० } ना पु० माथा, कपाल, प्रारम्भ,  
ललार० } पेशापी ।

ललित० ना० स्त्री० रागिनी विशेष, ग०  
सुंदर, अम्दा, लीकता मया ।

ललिता० ना० स्त्री० स्त्री, अणुलेल, देवी प्रसिद्ध  
श्रीराधिका की सखी विशेष ।

ललिया० ना० स्त्री० लली ।

ललियाना० स० क्रि० फुसलाना, बढ़ाना, घ०  
क्रि० गिहगिडाना, तमतमाना ।

लली० ना० स्त्री० छोकरी, लौंडी, लहकी, शु०  
दीला, नपुंसक मनुष्य ।

ललोपचो० ना० पु० चावलौसी, सुरामद ।

लघ० ना० पु० अश, लण, शीलीदानी का छोटा  
पुत्र विशेष ।

लघर्ग० ना० पु० लौंग, वृक्ष विशेष ।

लघण० ना० पु० लोण, नमक ।

लघणसिन्धु० ना० पु० सारी समुद्र ।

लघजाम्बु० ना० पु० समुद्र, लारीपानी ।

लघ्यासुर० ना० पु० लघनासुर, दैत्यकानामहै ।



पचपोद् न० पु० समुद्र तारीनलया ।  
 सधमात्र० गु० अन्व० थोकीदेर, चणभर ।  
 लया० ना० पु० बगेर परी ।  
 लवाई० ना० स्त्री० थोके दिनकी म्यानीगाय ।  
 लश्टम्पश्टम् गु० उलटापलन ।  
 लशुन० ना० पु० लहसुन ।  
 लपज० ना० पु० श्रीलक्ष्मणनी ।  
 लपणपुर० ना० पु० लखनऊ नगर विशेष ।  
 लस० ना० स्त्री० विपचिपाहट ।  
 लसक० ना० थ० कि० लजलजा होनाना, गीला  
 होना ।  
 लसना० थ० कि० सोहना, सजना, फवना,  
 चमकना ।  
 लसलसा० शु० पिचिचिचा, लसवाला ।  
 लसलसाना० थ० कि० लसलसाहोवा ।  
 लसित० गु० ललित, साधवा ।  
 लसियागा० थ० कि० पिचिचिचाहोना, लस  
 लसा होना ।  
 लसी० ना० स्त्री० लस ।  
 लसीला० गु० निसमें लसहोव ।  
 लसोडा० ना० पु० बल विशेष निस में लस  
 होती है ।  
 लसुकी० ना० स्त्री० लसी, दूध धार पाई ।  
 लहंगा० ना० पु० धेपरा, करिया ।  
 लहक० ना० स्त्री० चमक, भङ्गक ।  
 लहकना० थ० कि० हिलना, चमरना, भन  
 वना, गिटकी लगना ।  
 लहकाना० ना० कि० गिटकी से गागा, चम-  
 वाना, दहकाना, दरकाना ।  
 लहकारना० थ० कि० शुभकारना, पगुरहाप  
 करना ।  
 लहकापट० ना० स्त्री० चमकापट दहकाप ।  
 लहकीला० गु० चमकीला, भङ्गका ।  
 लहकीर० } ना० स्त्री० लीर जो दूसरी  
 लहकीर० } इन्कर ता है, दहो बनास जा  
 निसह में लिखते है ।

लहना० स० कि० पाना, खाना, थ० कि०  
 पलना, काम धारा, ना० पु० उधार, धर्ती,  
 प्रारब्ध ।  
 लहघर० ना० पु० तोता विशेष ।  
 लहघेरा० ना० पु० पीथा विशेष ।  
 लहर० ना० स्त्री० तरंग, हिलोर, सापके विपकी  
 जो तरंग धाती है ।  
 लहरघहर० ना० स्त्री० सुभाग, सग्यति ।  
 लहराना० थ० कि० लसलसाना, हिलकोरना ।  
 लहरालगाना० स० कि० टालना, उडाा पार  
 करना ।  
 लहरिया० शु० जो लहरवी रीतिपर होंगे ।  
 लहरी० शु० तरगी, तरल, चोधा ।  
 लहलहा० शु० विवसित, प्रशुद्धित, हरा ।  
 लहलहाना० थ० कि० लिलना, पूलना,  
 हराहाना ।  
 लहलोड० शु० जो उधार लेकर फिर न देवे ।  
 लहसुन० ना० पु० कन्द विशेष ।  
 लहसुनिया० ना० पु० रत्न विशेष ।  
 लहाड्डेह० ना० स्त्री० शंभना, जल्दी ।  
 लहास० } ना० स्त्री० गाव बाधनेकी ररती ।  
 लहासा० }  
 लहियत० कि० पाना है वा पाने है ।  
 लहुर० ना० पु० शंभना, जल्दी ।  
 लहू० ना० पु० साई, शंभ, गून ।  
 लहूआ० ना० पु० पीथा विशेष ।  
 लहीर० ना० पु० लाहीर ।  
 लहीरी० गु० गा लाहीर काई ।  
 लहू० ना० पु० ली हकार, १०००००, सात,  
 यह सात निसकी चूड़ी बनती है ।  
 लहाण० ना० पु० बिक, डल, लक्ष्मणी ।  
 लहात० कि० निलोकर, देवत ।  
 लहिन० गु० प्रशंसित, जा देस पकता है ।  
 लहमण० ना० पु० रामचन्द्रकी लगे भार ।  
 लहमण० ना० स्त्री० राम पदी, श्रीकृष्ण  
 च दर्श पगगनी निगेत, धोती कर्मा ।

खदमी० ना० स्त्री० सम्पत्ति वा धन, -कमला,  
रमा ।

खदमीफल० ना० पु० श्रीफल, निरुध, बेल ।

खक्ष्य० यु० जो देखानावे, ना० स्त्री० खदमी,  
निशाना ।

खार्ह० ना० स्त्री० धान व खाया, कि० जराई ।

खाँघना० स० कि० फादना, वूदना ।

खाटति० ना० स्त्री० दद्रु आकार, रूप ।

खाख० ना० पु० खप, खाह, खाहा जिसकी चूकी  
बनती है ।

खाखना० स० कि० खाल लगाना ।

खाखो० ना० स्त्री० खालग जो खाल स निहा  
लते हैं ।

खाग० ना० पु० खैर, शपुवा, देव, स्नेह, छोह,  
भाव, मोल, नगचार्ह, खौर, बसूर, भेद ।

खागत० ना० स्त्री० दाम, मोल ।

खागना० थ० कि० लगना ।

खागी० ना० स्त्री० चाद, स्नेह, छोह ।

खागू० गु० चाहनेद्वारा, पिघलना ।

खाघव० ना० पु० आरोग्य, हेमडुराह, हलहई,  
सूक्ष्मता, उन्मीसमय, जहरी, शीघ्र ।

खांगल० ना० पु० हल ।

खांगली० ना० पु० निसान, नारियल, श्रीनल  
देव भी ।

खांगूल० ना० पु० लोम, पुच्छ, पूत्र ।

खांगूली० ना० पु० कौचकीज, व नर ।

खाज० ना० स्त्री० सग्गा, सकीच, हया ।

खाजना० थ० कि० खान करना ।

खाजवन्त० गु० लम्बला, सरोची, बुखवत ।

खाजा० ना० स्त्री० खाला ।

खाम्ना० ना० पु० लस ।

खाण्डन० ना० पु० दोष, पाप, बिड, कलक ।

खाण्ड० { ना० स्त्री० लम्बु, लम्बा ।

खाण्डी० ना० स्त्री० खन्डी, खण्डी ।

खाण्डी० ना० पु० प्यार, दुलार ।

खाण्डी० यु० प्यार, दुलार ।

खाण्डी० ना० स्त्री० प्यारी, दुलारी ।

खाण्डी० ना० पु० लहद ।

खाण्डी० ना० स्त्री० पावकी मार, टान, पार ।

खातिन्० ना० स्त्री० भाषा विशेष ।

खाद० ना० स्त्री० बोझ ।

खादना० स० कि० बोझना ।

खादिया० ना० पु० बोझनेद्वारा ।

खादी० ना० स्त्री० छोटीखाद, धोबी के कपड़ेकी  
गट्टी ।

खादू० गु० जो खादो के योग्य वा खादागथा ।

खाना० स० कि० ले खाना, जनाना, उपजाना,  
खाना ।

खापाक० ना० पु० शृगाल, गीदह ।

खाफना० थ० कि० वूदना, उचकना ।

खाभ० ना० पु० प्राप्ति, उपार्जन, फल, नफा ।

खाप्य० ना० पु० शक्ति ।

खार० ना० स्त्री० बूक, प्रलम्बा पानी, राल ।

खारी० ना० स्त्री० खार ।

खाल० गु० दुबारा, निय, रक्तवर्ण, ना० पु०  
वालक, रक्त विशेष, परी विशेष ।

खालच० ना० पु० लोभ, कृपा, श्रेय ।

खालचूरी० गु० लोभी, आपकातना ।

खालडी० ना० स्त्री० माँक चुकी ।

खालन० ना० पु० बालक, ना० स्त्री० खालना ।

खालनुमकण्डू० ना० पु० मर्ल-जो अपने तई  
शानवार जानता है ।

खालमधु० ना० पु० सहिजना कृष ।

खालसा० ना० स्त्री० श्वा, चार, तीक्ष्ण,  
चाह ।

खाला० ना० पु० वैश्यादिनों की पदवी, वापस्य  
विशेष जो भाक पढ़ता है ।

खालादिक० ना० पु० मारभाषीन ।

खालित्य० ना० पु० मण्डेहरका, मोमलता,  
कमर ।

खाण० ना० पु० रस्ती, लक्ष्म ।

लावण्यं ना० पु० } सुन्दरता, खेलाय, }  
लावण्यतां ना० स्त्री० } वडाः ।

लावलाव० ना० पु० लावच, अधीत ।  
लाघा० ना० पु० सील, मूला ।

लासा० ना० पु० चप, चैतन्य इव, चन्द्र,  
लसदार, तिन्वत देशका न्यून विद्ये ।

लाह० ना० पु० कपडा विना, कान, कनहराज,  
लस, बाली ।

लाहा० ना० पु० साम ।  
लाहीना० ना० स्त्री० पीवा विद्या, न्यून कदा  
विशेष ।

लाहु० } ना० पु० लाम, घटाड ।  
लाहू० }

लाहौर० ना० पु० पञ्जस्यके राज्ये ।  
लाक्षा० ना० स्त्री० लक्ष, मूला ।

लिखतं } ना० पु० लिख, लिख, लिख ।  
लिखतंग० }

लिखना० स० क्रि० लिख, लिखतं इत्या ।  
लिखनी० ना० स्त्री० लिख, लिख ।

लिखनोदास० ना० पु० लिख, लिखतं ।  
लिखा० ना० पु० लिख, लिखतं ।

लिखाई० ना० स्त्री० लिखे का इत्य बहुपमा ।  
लिखाना० स० लि० लिखतं इत्या ।

लिखाय० ना० पु० } लिखे का नाम ।  
लिखायट० ना० स्त्री० }

लिपितं इ० ना० लिपयता ।  
लिपित० इ० ना० लिपयता ।

लिपा० ना० पु० लिपय, लिपयते करो की  
रहित, एतन् रचित, केने लिपि अर्थात् स्त्री,  
पुत्र, कर्मणः ।

लिपी० ना० स्त्री० लिपय, लिपयते करो  
लिपु० ना० पु० लिपयता ।

लिपिङ्गी० ना० स्त्री० लिप, लिपि, लिपिनी ।  
लिप्य० ना० पु० लिपया अर्थात् भोजन ।

लिप्यानां इ० लि० लिपयता, लिपयता ।

लिट्टी० ना० स्त्री० लिपिया अर्थात् लिपि, लिपिनी,  
स्त्री ।

लिट्टिना० अ० क्रि० लिपयता ।  
लिट्टिङ्गा० स० क्रि० लिपयता ।

लिट्टिना० अ० क्रि० लिपयता, लिपयता, स-  
ट्या ।

लिट्टिना० स० क्रि० लिपयता, लिपयता, लिप-  
यता ।

लिट्टिनी० ना० स्त्री० लिपय दिनां श्री यमप्रीतिः ।

लिपयाना० } स० क्रि० लिपय, लिपयते पो-  
लिपयानां } तयानां ।

लिपि० ना० स्त्री० लिपय, लिपयते लिप, लिपयते  
लिपिकर० ना० पु० लिपय, लिपयते ।

लिपि० अ० लिपय, लिपयते लिप, लिपयते  
लिप्ये अर्थ निमित्त, कारण, सन्ते ।

लिपयाना० स० क्रि० लिपय, लिपयते ।  
लिपयाना० स० क्रि० लिपय, लिपयते ।

लिपयाना० स० क्रि० लिपय, लिपयते ।  
लिपयाना० स० क्रि० लिपय, लिपयते ।

लिपिङ्गा० ना० पु० लिपय ।  
लिपिङ्गा० ना० पु० लिपय ।

लिपिङ्गा० ना० पु० लिपय ।  
लिपिङ्गा० ना० पु० लिपय ।

लिपिङ्गा० ना० पु० लिपय ।  
लिपिङ्गा० ना० पु० लिपय ।

लिपिङ्गा० ना० पु० लिपय ।  
लिपिङ्गा० ना० पु० लिपय ।

लिपिङ्गा० ना० पु० लिपय ।  
लिपिङ्गा० ना० पु० लिपय ।

लिपिङ्गा० ना० पु० लिपय ।  
लिपिङ्गा० ना० पु० लिपय ।

लिपिङ्गा० ना० पु० लिपय ।  
लिपिङ्गा० ना० पु० लिपय ।

लीला० ना० स्त्री० स्वीडा, विहार, खेल, चरित्र,  
गु० नीचवर्ण ।

लीलावत् ० } गु० ख्यालहीमें लीलाके प्रकार ।  
लीलावत् ० }

लीलावती० ना० स्त्री० गणित की पुस्तक  
विशेष ।

लुक० ना० पु० गिरनद्वारा, तारा, लूक ।

लुकना० अ० रि० छिपाया ।

लुका० गु० गुप्त ।

लुकाजन० ना० पु० अजनविशेष निमक  
लगाने से मनुष्य अदृश्यहा जाता है ।

लुकान० गु० गुप्तहृत्वा, छुपा, ना०, स्त्री०  
छिपाया ।

लुकाणा० अ० कि० छिपाना, स० कि० छिपाना,  
गुप्त करवाना ।

लुकायना० स० रि० छिपावना, गुप्तकरवाना ।

लुगार० ना० स्त्री० शीत, स्त्री ।

लुगा० ना० स्त्री० मधुककड़ी ।

लुगी० ना० स्त्री० धोती विशय ।

लुच० गु० निरा नन ।

लुचई० ना० स्त्री० पूरीविशेष ।

लुचप० ना० पु० नष्टता, अधमार्ग, शुद्ध  
पन ।

लुचर० ना० स्त्री० लुचपन, कुकर्म ।

लुधा० ना० पु० कुकर्म, लुचपन करनेहारा ।

लुजलुजा० गु० लजलजा ।

लुज ० } गु० अपाहिज, लूला, हाथोंसे हीन ।  
लुजा ० }

लुजना० अ० रि० लूहोत्राना, लूजाना ।

लुजवैया० ना० पु० लूजा ।

लुजामा० स० कि० गथाना, उद्वाना, लूट  
करवाना ।

लुटिया० ना० स्त्री० छायालोटा ।

लुटरा० } ना० पु० लूट करनेहारा, उर्हाऊ ।  
लुटरू ० }

लुटस० ना० पु० लूट, निगाक, सयानारा ।

लुटका० ना० पु० बानरा भूषणविशेष ।

लुटराना० } अ० रि० 'दममान, 'गिबल  
लुटकना० } जाग ।

लुटना० अ० कि० लुटकना ।

लुटाना० स० रि० गिरादना, उगराना ।

लुटिया० ना० स्त्री० छाया लोटा ।

लुटियाना० स० रि० पपके को खडा करके  
दूसरे बार सीगा ।

लुटडा० गु० बाबा, पुष्पहीन ।

लुटरा० ना० पु० नदनदिया, उधर की इधर  
शौर इधर की उधर बरन हारा ।

लुपरी० ना० स्त्री० भोजनविशेष ।

लुपलुप० ना० पु० चमक चमक ।

लुस० गु० गुप्त, लूट, नारा ।

लुग्ध० गु० लालची, लोभी ।

लुग्धक० ना० पु० चरिक, लुग्धा, लुग्धट ।

लुभ ना० स० रि० ललचाना, जासगाना ।

लुम्पक० ना० पु० राजाविशेष, नाराक ।

लुम्पित० गु० मिगयागया, नशित ।

लुहएडा० ना० पु० लोहेका पात्रविशेष ।

लुहरा० ना० पु० छोग ।

लुहांगी० ना० स्त्री० लुपि निममें सोहालगा  
हाना है ।

लुहार० ना० पु० लाहकर, जातिविशेष ।

लुहारिन० ना० स्त्री० लुहार को जोरू ।

लू० ना० स्त्री० ज्येष्ठ नैसात की गरम वायु ।

लूआट० गु० लूट ।

लूक० ना० पु० अणिकी लुकेटी, पणिततारा ।

लूकट० गु० अधनला ।

लूकटी० ना० स्त्री० कुरेलनी, छोगलूक ।

लूकनो० अ० रि० लू से जलना ।

लूकघारि० ना० स्त्री० चगवाही, कहीं र दी  
वालीको जलाकर परके शहर डालने है ।

लूका० ना० पु० जलनी हुई चिनगारी ।

लूख० ना० स्त्री० धाँच, लूका ।

लूट० ना० स्त्री० वस्तु का बरनस धीनना ।

लूटना० स० क्रि० बरवस धीनलना, उडाना, गवाना ।

लूटालूट० ना० स्त्री० लूट का काम ।

लून० ना० पु० लण, लज, तमक ।

लूनिया० ना० पु० सात बनोहारा, जाति विशेष पीधामिरोप, शु० लेना ।

लूनी० ना० स्त्री० मक्खन, लोहा ।

लूता० ना० स्त्री० मक्खी, व्याधिविरोप ।

लूम० ना० स्त्री० पुच्छ, पूद, डम ।

लूला० शु० टपडा ।

लूह० ना० स्त्री० लू ।

लूहर० ना० पु० लुह्या, लू, पनितार ।

ले० अन्व० रो, तक, तलक ।

लेई० ना० स्त्री० अहार, जा रूपडा आदि में लाने हैं ।

लेईी० ना० स्त्री० मोगी, नपरी आदि की विद्या ।

लेईा० ना० पु० गेहूँ ।

लेख० ना० पु० लिखना, लिखित, तहरीर ।

लेखक० ना० पु० लिखक, लिखनेहारा ।

लेखन० ना० पु० लिपि, लिखाई ।

लेखनी० ना० स्त्री० प्रीलम, लिखनी ।

लेखपत्र० ना० पु० इद्र, दवरान ।

लेखा० ना० पु० दक्ता, गिती, हिताव, बीनक ।

लेख्य० ना० पु० पत्र, विट्टी, लिखागया, लिखने के योग्य ।

लेख्यपत्र० न० पु० भोनपत्र ।

लेजाना० स० क्रि० टगा, लेभाना, जानना ।

लेट० ना० स्त्री० चूनादि वस्तु भीतपर लगाने के लिये ।

लेटना० अ० क्रि० पोदना रोना, पडना ।

लेनदेन० ना० पु० व्यवहार, व्यापार ।

लेना० स० क्रि० ग्रहण करना, पकड़ना, उना ।

लेप० ना० पु० लप, उरदन, शरार में छानने की आधिविरोप ।

लेपना० स० क्रि० सगरडना, मैथुन करना, अपने बलक स दूसरे का कँसाना ।

लेपना० स० क्रि० पानना, उपडना ।

लेपालक० ना० पु० धर्मका पुत्र, पोष्यपुत्र ।

लेपालना० स० क्रि० मग करक लेना, प्राप्त पुत्र करना ।

लेमरना० अ० क्रि० बलक लगाना, दापदना ।

लेपमान० शु० जो लोवाला है ।

लेरु० } ना० पु० नदरा ।

लेरुआ० } ना० पु० नदरा ।

लेवा० ना० पु० भडी का बच्चा ।

लेलिह० ना० पु० साय, सर्प ।

लेलीतिह० ना० पु० गधव ।

लेलूट० शु० लया लू, लहलू ।

लेलेना० स० क्रि० महणकरा, धीन लेना ।

लेव० ना० पु० मीतरी पपड़ी जो गिरने योग्य है, एक नारवा फराव ।

लेवा० ना० पु० छोटा पातरा, लनेहारा, धन, सीरी, रोगी पकाने के बर्तनों पर जो मिट्टी लगाने हैं ।

लेवादेई० ना० स्त्री० लनेदेन, बहामनी ।

लेवार० ना० पु० मालीमिटी जा दीवार में लगाने हैं ।

लेवारा० ना० पु० लवा में लोटना ।

लेवास० ना० पु० ल ।

लेवैया० ना० पु० लनेहारा ।

लेश० शु० लोण, थोडा, ना० स्त्री० छापरे ।

खस० ना० पु० मूसा मिला मिट्टा की भीतमें लगाने, सीप पात ।

लेसना० स० क्रि० लीनना, पानना, सुलगाना, बालना, मगडा उठाना ।

लेसलेस० } ना० पु० लीप लीप ।

लसोआ० } ना० पु० लीप लीप ।

लेह० ना० स्त्री० शाघना, उतावला, श्याव ।

लेहन० ना० पु० चाटना ।

लेहना० ना० पु० चारा ।

लेह्य० ग० पु० अमृत, गु० जो चान्ने के योग्य ।  
 लैस० गु० सिद्ध, मोलसिया, ना० पु० तुवा,  
 सिरकाशिरा ।  
 लोई० ना० स्त्री० शीरत, कम्मल, गूधा, सुखकी  
 क्रांति, श्रेष्ठा पेड़ा ।  
 लों० अन्ध० तन, तलक ।  
 लोंदा० ना० पु० देसा, पिंडा ।  
 लोह० ना० पु० लोग, मनुष्य भुवा, दीप,  
 व्याकरण, यम, यरा, नाम, काल, सत्ता  
 कादि ।  
 लोकना० स० सि० परङ्गना, गोचना ।  
 लोकनाथ० ग० पु० लोक का स्वामी यथा  
 इन्द्रादिक १० ।  
 लोकपाल० } ना० पु० राजा, दिक्पाल, लोक  
 लोकपाल० } कापालभेदारा ।  
 लोकसंख्या० ग० रना० मनुष्यों की गिती ।  
 लोकालोक० ना० पु० पर्वतविशेष जो जगत्  
 की सीमा है ।  
 लोकेश० ना० पु० ब्रह्मा, लोकनाथ ।  
 लोखर० ना० पु० हथियार, लोहे का पुराना  
 पात्र ।  
 लोखरी० ना० स्त्री० लामड़ी ।  
 लोखा० ना० पु० प्रात काल, ऊषाकाल ।  
 लोम० ना० पु० मनुष्य, जन ।  
 लोमाई० ना० स्त्री० नारी, स्त्री, शीरत ।  
 लोचन० ना० पु० नेत्र, आल ।  
 लोचनता० ना० स्त्री० दृष्टि, नजर ।  
 लोचना० ना० स्त्री० सुन्दर स्त्री ।  
 लोटन्० ग० पु० पटकन्, भडलिया, भ्वाङ्ग  
 विशेष ।  
 लोटना० अ० कि० पटकना, तल ऊपर होना,  
 तलफना, छत्पटना ।  
 लोटपोट० ना० गु० जो लोपता, चैनरहित, जो  
 तलछगया ।  
 लोटा० ना० पु० जलपान शिरा ।  
 लोटा० ना० पु० सिलपरका बँदा ।

लोढ़िया० ग० स्त्री० छोटा सोदा ।  
 लोथ० ना० स्त्री० मृशारार, मृत्क, शन ।  
 लोथरा० ना० पु० } मासना टुकड़ा ।  
 लोथरी० ना० स्त्री० }  
 पोथा० ना० पु० नोरा, गोन ।  
 लोथी० ग० स्त्री० लोहमदीलाठी, लोहपी ।  
 लोदी० ना० पु० जातिविशेष ।  
 लोध० ग० पु० जातिविशेष, वृक्षविशेष,  
 धोपविशेष ।  
 लोधा० ना० पु० जातिविशेष, विरान ।  
 लोधिया० ग० पु० जातिविशेष ।  
 लोन० ग० पु० लजप, लम्क ।  
 लोना० गु० खारा, सुन्दर, नमकीन, ग० पु०  
 कलविशेष, पौधाविशेष, लवण जो भीति आदि  
 से गिरता है ।  
 लोनाई० ना० स्त्री० सुन्दरता, लावण्यता, रामायणे  
 यथा ( जातसराहत सीयलोनाई ) ।  
 लोनार० ना० पु० खारामूमि, खेलाही, स्थान  
 जिसमें लवणबनाने हैं, जातिविशेष ।  
 लोप० गु० अन्ध, चम्पत, अगोचर, गुप, नारा ।  
 लोपडी० ना० स्त्री० गूली बस्तु का गौदा, लप  
 विशेष पगडा ।  
 लोपी० गु० अटश्यकता, अगोचर करनेहारा,  
 गुप्त हुआ ।  
 लोचा० ना० स्त्री० लामड़ी ।  
 लोदान० ना० पु० सुगन्धि द्रव्यविशेष ।  
 लोधिया० ना० पु० अक्षविशेष जिसकी फली  
 की तरकारी बनाने हैं ।  
 लोम० ग० पु० लालक, कृपणत, परीक्षा,  
 मोह ।  
 लोमना० अ० कि० मोहित होना, लालक  
 करना ।  
 लोमनीया० ना० स्त्री० महापुण्ड्री ।  
 लोमी० गु० लालची, मोही, धूम, कृपण,  
 अदाता ।

लोम० ना० स्त्री० रोम, कृत ।  
 लोमड़ी० ना० पु० जगली जंतुविशेष ।  
 लोमश० ना० पु० मुनिविशेष, चिरजीवी ।  
 लोमसी० ना० स्त्री० ककड़ी, वच श्लेषि ।  
 लोपन० ना० पु० लोचन, नेत्र, आल ।  
 लोर० ना० पु० लोलक, आम् ।  
 लोल० ना० पु० आम् आत्मरूपानी, यु० अथिर,  
 चलायमान ।

लोलक० ना० पु० कानका भूषणविशेष ।  
 लोलिनी० ना० स्त्री० गटनी, चलायमानस्त्री ।  
 लोलुप० यु० अत्यन्त लोभी, अभिचारी ।  
 लोष्ट० ना० पु० डेला, लाहा ।  
 लोह० ना० पु० लोहा ।  
 लोहकर्षण० ना० पु० चुम्बक ।  
 लोहकार० ना० पु० लाहार, जातिविशेष, जो  
 लोहका का काम बनाताहै ।

लोहचून० } ना० पु० लाहकाचूरण ।  
 लोहचूर० }  
 लोहएडा० ना० पु० लोहकापात्र, कडाह ।  
 लोहएडी० ना० स्त्री० लोहे की कडाही ।  
 लोहपुरे० यु० वीरनायक, हथियार बांधे वा  
 जनीर पहन ।

लोहसार० ना० पु० लोहे की खानि, भूमा ।  
 लोहा० ना० पु० धातुविशेष ।  
 लोहान० यु० लोहभरा ।  
 लोहानी० ना० पु० पठानों की जातिविशेष ।  
 लोहार० ना० पु० लोहर ।  
 लोहारिन० ना० स्त्री० लोहारपी जारु ।  
 लोहित० यु० लालवर्ण, रक्त ।  
 लोहितगंग० ना० पु० मंगल तारा ।  
 लोहितरक्त० ना० पु० कपालाश्रावण ।  
 लोहिया० यु० जा साहे से बनाई, जा लोहा  
 बचत है ।  
 लोही० ना० स्त्री० कम्बल, ताला, पाह, धरुण,  
 रेशमी बस्तुविशेष ।  
 लोह० ना० पु० कथिर, रत्त ।

लौ० अव्य० लौ, तर्क ।  
 लौंग० ना० पु० लवंग ।  
 लौगी० ना० स्त्री० पालतू दुतियारा नाम ।  
 लौड़ा० ना० पु० चेला, छोकड़ा, लिंग ।  
 लौडिया० } ना० स्त्री० छोकरी, चेली,  
 लौडी० } लडकी ।  
 लौद० ना० पु० अधिकमास, मलमास ।  
 लौकना० अ० कि० चमकना ।

लौका० ना० पु० कुम्हड़ा, बिजली, चमक,  
 बीस ।  
 लौकिक० यु० लोकायवहार, जो लोकमेंहो ।  
 लौकी० ना० स्त्री० पर्वती लोकी, रामतुर्द ।  
 लौटना० अ० कि० फिरना, पलटना, घूमना ।  
 लौटाना० स० कि० फिराना, पलटाना, घुमाना ।  
 लोहा० ना० पु० लिंग, मदनाकृश ।  
 लौह० ना० पु० लोहा ।  
 ल्यारी० ना० पु० भेड़िया, दुष्टार ।

[ घ ]

घश० ना० पु० स तान, घराना, कुल ।  
 घशकार० ना० पु० वासकाइ, डोम, भगी ।  
 घशज० }  
 घशरचन० } ना० पु० वस्तुविशेष जा वात  
 घशलोचन० } में से निकलती है ।  
 घशक्षीरी० }  
 घशाली० ना० स्त्री० पीढ़ी, पशकी परिवर्णी,  
 राजरह ।  
 घंशी० ना० स्त्री० मुरली, बाणुस ।  
 घंशीधर० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रा एकनाम ।  
 घंशीवट० ना० पु० निरस्थानमें श्रीकृष्णचन्द्र  
 वसा बनास करत थ ।  
 घरु० ना० पु० बगुला, अगस्त ।  
 घकहंस० ना० पु० पशुविशेष ।  
 घकासुर० ना० पु० बगुलाकी देवविशेष  
 घकी० ना० स्त्री० बगुली बगुला की स्त्री ।

घकुल० ना० पु० मौलसिरी वृष ।  
 घकृष्य० गु० कदने के योग्य ।  
 घक्का० ना० पु० कदनेहारा ।  
 घक्त० ना० पु० घल, घद ।  
 घक्त० गु० टेदा ।  
 घकसुत० ना० पु० ऊट ।  
 घकगति० ना० स्त्री० नाकी चाल, टदीचाल,  
 वाके वा टेदेकी चाल ।  
 घकभीष० ना० पु० ऊट ।  
 घकता० ना० स्त्री० नाकापन, टेदाई, निर्दया,  
 नभादि कर्म ।  
 घकरागी० ना० पु० ताम्र शुक ।  
 घक्री० गु० टेदा चलनेहारा ।  
 घक्री० ना० स्त्री० टेदी नाव, कटुनाव ।  
 घक० ना० पु० नागा, टेदा ।  
 घकता० ना० स्त्री० नाकापन, टदाई ।  
 घकी० ना० स्त्री० हुरी ।  
 घकसेन० ना० पु० अगस्तिकृष ।  
 घच० ना० पु० औषधिविशेष ।  
 घचन० ना० पु० कवच, घनिवाकन, कपन, म  
 याद, कपति ।  
 घचतु० ना० पु० नवका ।  
 घचउ० गु० वनल ।  
 घच० ना० पु० विनली, इद्रका अन्नविशेष,  
 गु० अतिक्षुण्ण ।  
 घचकन्द० ना० पु० निर्माकन्द ।  
 घचतुगण्ड० ना० पु० सेंद्रकवृष ।  
 घचद्वैक० ना० पु० सेंद्रकवृष ।  
 घचचर० } ना० पु० इन्द्र, देवराज ।  
 घचशक्ति० }  
 घजाग० ना० पु० कठिन वन ।  
 घजागी० ना० पु० इ निर्वाह बल, अतिकठिन  
 वनविणय, इतुनाम्नी ।  
 घजइस्त० } ना० पु० इन्द्र, गेंद्रक ।  
 घज्जी० }

घञ्जक० ना० पु० शृगाल, प्रनाक, गु० उग,  
 झली, कपटी ।  
 घञ्जकता० ना० स्त्री० झलकर्म, उगई, घोरी ।  
 घञ्जन० ना० पु० उगविद्या, झल, घोरा ।  
 घञ्जना० ना० स्त्री० प्रताप, ठाई ।  
 घञ्जित० गु० प्रतापित, झलित, उगागया ।  
 घञ्जी० गु० प्रतापक, उग ।  
 घञ्जुल० ना० पु० अरोक्कवृष ।  
 घट० ना० पु० बरगद, पण्डित, भाद्रपथ ।  
 घटिका० ना० स्त्री० नरा, नटी ।  
 घटु० ना० पु० नासरु, ब्रह्मचारी ।  
 घटुक० ना० पु० लाकरा, तदप, भंरविशेष ।  
 घटुवाग्नि० } ना० पु० समुद्रकी अग्नि ।  
 घटुवानल० }  
 घटिस० ना० स्त्री० नसी, मन्त्र पकड़ने का  
 कागविशेष ।  
 घणिक० ना० पु० बनिया, व्यापारी ।  
 घणिक० ना० पु० व्यापार, तिनारत ।  
 घण० अ० य० निस शब्दके परे इसका प्रयोग होने  
 उक्तार्थ सारा समझाना है यथा देववर्  
 अथात् देव सत्ता ।  
 घणस० ना० पु० शिशु नक्षत्र, वर्ष जाती, हृदय ।  
 घणसकृत्वा० ना० स्त्री० नक्षिया ।  
 घणसर० ना० पु० दाहा, झला, वर्ष, ताल ।  
 घणसराय० गु० वर्षा, नरसीही ।  
 घणसरायगमन० ना० पु० सूर्य के चारोपचार  
 प्रहारा गमन ।  
 घणसल० गु० मिय, धाही, दयावत, दयायुत ।  
 घणसलता० ना० स्त्री० प्यार, दया, मोह ।  
 घणसाद० ना० पु० गुरुच ।  
 घणसासूर० ना० पु० नवकारूपी दीपविशेष ।  
 घण्टा० ना० पु० घल, रूप ।  
 घण्टना० ना० स्त्री० घुली, रूपी ।  
 घण्टनि० क्रि० कहते हैं ।  
 घण्टरी० ना० पु० भारतवर्ष उत्तर में तीर्थ ।  
 घण्टरा १५० ना० पु० तीर्थविशेष ।



यद्रीघन० ना० पु० वनविशेष, बदरीके समीप  
 वा जहा बदरीनाथ है ।  
 यद्री० ना० स्त्री० नरीचृष ।  
 यध० ना० पु० हत्या, माराम री ।  
 यधन० ना० पु० मारण, हतन ।  
 यधधंश० ना० पु० वराही इत्या ।  
 यधिक० ना० पु० लेखी, हत्यारा शिकारी ।  
 यन० ना० पु० धरण्य, जंगल, पानी, मेघनाल ।  
 यनचर० ना० पु० जो वामें चरे, यथा वार  
 मखली आदि ।  
 यनज० ना० पु० कमल ।  
 यनप्रिय० ना० स्त्री० कोयल ।  
 यनमञ्जरी० ना० स्त्री० सैंभालू ।  
 यनमानुष० ना० पु० जगली मन्त्र्य, वारनाति  
 विशेष ।  
 यनमाला० ना० स्त्री० वामाला ।  
 यनमालिका० ना० स्त्री० वाराहीकन्द, वामाला ।  
 यनमाली० ना० पु० धीहृषचद्रका एव नाम,  
 वनमाली ।  
 यनयात्रा० ना० स्त्री० वन के चोरासवा  
 की यात्रा ।  
 यनघारी० ना० पु० श्रीहृषणी, वामाली ।  
 यन्त्रास० ना० पु० वा में वास ।  
 यनयास्त्री० य० वनना वसनेहारा ।  
 यनविलासिनी० ना० स्त्री० शराइली ।  
 यनस्पति० ना० स्त्री० वृक्ष, जिस वृक्ष म फूल  
 निना फल हा ।  
 यनायुज० ना० पु० धोडा ।  
 यनिता० ना० स्त्री० ध्यारी, स्त्री, प्रिया ।  
 यनी० ना० स्त्री० छोटा जंगल ।  
 यनैका० य० वाका ।  
 यन्त० अन्व० जिस शब्द के परे यह आवे उसका  
 अर्थ कर्ता वा सूचक होता है, यथा दयान्त  
 अर्थत् दया कारक ।  
 यन्दन० ना० पु० स्तुति, उमस्वार, प्र  
 यन्दना० ना० स्त्री० याम ।

यन्दनीय० य० स्तुति के योग्य, उमस्वार के  
 योग्य ।  
 यन्दा० ना० पु० पीषाविशेष, आकारालता ।  
 यन्दी० ना० पु० भाट, दिसीधी ।  
 यन्दीजन० }  
 यन्ध० य० पूज्य, सेवायोग्य, स्तुति के योग्य ।  
 यन्धुजीय० }  
 यन्धूक० } ना० पु० दुपहरिया का पुत्र  
 वा वृक्ष ।  
 यन्धूप० }  
 यन्य० य० जो वनना या वा में हो वनवागी,  
 बोला, मूर्ख ।  
 यन्या० य० स्त्री० वनकी वा जलकी बहुतायत ।  
 यन्दि० ना० पु० अग्नि, आग ।  
 यन्दिमुखी० ना० स्त्री० बलिहारी ।  
 यन्दिरुचि० ना० स्त्री० मालवगुनी ।  
 यन्दिशिखा० ना० स्त्री० बलिहारी ।  
 यपन० ना० पु० सुपडा, बोना दीर्घ ।  
 यपु० } ना० पु० शरार, देह ।  
 यपु० }  
 यपुरा० गु० तु छ, तीच ।  
 यपुप० ना० पु० शरीर, देह, तनु ।  
 यप्ता० ना० पु० पिता बीजबानेहारा ।  
 यप्नु० ना० पु० येला ।  
 यम० ना० पु० महादेवना का स्तुति कोरक  
 शब्द ।  
 यमन० ना० पु० } यदि, उद्यत ।  
 यमि० ना० स्त्री० }  
 यय० ना० पु० विहग, रामय, निश्चय, आयु ।  
 यय० ना० पु० यय, जो आयु बीती हो ।  
 ययसा० ना० स्त्री० सली, दूती ।  
 ययस्था० ना० स्त्री० गुरुच ।  
 ययस्थ० ना० पु० निष्की आयु समान है,  
 हमजोली ।  
 यर० ना० पु० आरिष, पदार्थ, दूहा, वाक्य  
 वृक्ष, य० सदर, अभिराम, शेष ।  
 यरकण्ठिका० ना० स्त्री० सेतावर, छतावर ।

घरटा० ना० स्त्री० हस्तिनी ।  
 घरतिक्क० ना० पु० पित्तपापका ।  
 घरदा० ना० स्त्री० असगंध, बरदाता ।  
 घरदान० ना० पु० वाधिमदान, विवाह का दान ।  
 घरदाम्बरी० ना० स्त्री० बड़ी सतावर ।  
 घरदायन० ना० स्त्री० बरदान देनेहारी ।  
 घरपीतक० ना० पु० धवरक, धमक ।  
 घरलोक० ना० पु० स्वर्गविशेष ।  
 घरव्यङ्ग० ना० पु० तेजस्वी, बलवान्, चबर दस्त ।  
 घरवर्षिणी० ना० स्त्री० हल्दी ।  
 घरवर्षी० ना० स्त्री० सुदर, स्त्री, रूपवती ।  
 घरस्त्री० ना० स्त्री० वैश्या, पुरचली, पतुरिया ।  
 घरह० ना० पु० पत्ता ।  
 घराना० स्त्री० नङ्गची चौबसि, ना० पु० व्यजन ।  
 घरक० ना० पु० देवता ।  
 घरकट० ना० पु० कौडी, हिंदी केषिलिखित ।  
 घरकट० } ना० स्त्री० कौडी ।  
 घरकटिक० }  
 घरकटिका० }  
 घरहा० ना० पु० शहर, आविष्कृतनारायण का तृतीय अवतार ।  
 घरहाकर्णो० ना० स्त्री० असगंध ।  
 घरहाहाथ्य० ना० पु० नागरमोषा ।  
 घरिष्ठ० ना० पु० अतिश्रेष्ठ ।  
 घरु० अन्व्य० चाहो, अगर्धि ।  
 घरुण० ना० पु० वृषविशेष, जलका द्रवता दुग्ध, जल का रानी घूर्ण, जल ।  
 घरुणा० ना० स्त्री० वरुणकी स्त्री ।  
 घरुणावती० ना० स्त्री० वरुणलोक ।  
 घरुथ० ना० पु० समूह, विवाह, यूप ।  
 घरुथी० ना० स्त्री० रत्ना, फौज ।  
 घरु० अन्व्य० इतपार, इतर, समूह ।  
 घरुची० ना० स्त्री० धरोख ।

घरुथी० ना० स्त्री० बरदहुराना, मॉमी बर कन्या का होना । ।  
 घरुहक० ना० पु० असगंध ।  
 घरुग० ना० पु० एकनामि का समूह, प्रकीर्णारण्य अक्षर, किसी अक्षर को उच्चारण में घात करनेसे जो गुणन पल ।  
 घरुक्षेत्र० ना० पु० जिस क्षेत्रकी चारों मुखा समान और चारों कोण समकोण हों ।  
 घरुजन० ना० पु० त्याग, निषेध ।  
 घरुजना० स० क्रि० त्यागना, रोकना, रहित करना ।  
 घरुजनीय० गु० जो त्याग के योग्य है, अयोग्य, दुपात्र ।  
 घरुजित० गु० रहित, निषेधित, जो वर्जनीय ।  
 घरुर्ण० ना० पु० रक्त पीत अक्षर्यादि, अक्षर, द्विजादिक धारि, स्तुति ।  
 घरुर्णन० ना० पु० बलान, कथन, लिखार्ह, स्तुति, रग, देन ।  
 घरुर्णना० ना० स्त्री० स्तुति अ० क्रि० कथना ।  
 घरुणमाला० ना० स्त्री० क्रमसे सब अक्षर, कक्षरा, अक्षरों का समूह ।  
 घरुणघटी० ना० स्त्री० हल्दी ।  
 घरुर्णराक्षर० } ना० पु० जो दावणोंसे उत्पन्न  
 घरुर्णसकर० } हुआ, दो ।  
 घरुर्णरमक० ना० पु० जिस शब्द अक्षर अलग अलग सुनपड़े ।  
 घरुर्णो० ना० स्त्री० अक्षर ।  
 घरुर्णित० गु० जिसका वर्णन होचुका है, कथित ।  
 घरुर्तन० ना० पु० जीविका, वासन ।  
 घरुर्तमान० ना० पु० गु० इसीसमय का काल ।  
 घरुर्तलोह० ना० पु० पीतल ।  
 घरुर्ता० ना० पु० पन्नेपर लिखने क लिये काठका बलम  
 घरुर्तार० ना० पु० बटरपत्ती ।  
 घरुर्तिक० ना० पु० बटरपत्ती ।  
 घरुर्तिका० ना० स्त्री० बत्ती, बटरपत्ती ।

घर्ती० शु० वर्तनकरनेहारा ।  
 घर्तुल० शु० गोल, मोलाकार, मन्द, धन ।  
 घर्जन० ना० पु० वृद्धि, बढ़ती ।  
 घर्जमानक० ना० पु० दोनों अरपड ।  
 घर्जा० गा० पु० बेल, वृषभ ।  
 घर्जित० शु० बद्राहुया, कैलाहुया, अधिक ।  
 घर्म० ना० स्त्री० मन्तर, वच ।  
 घर्मा० ना० पु० क्षत्रियों के नाम का उपपद,  
 काठ में छेद करने का इशियार ।  
 घर्व० गु० श्रेष्ठ, उत्तम, अद्वा ।  
 घर्वा० ना० पु० नदीका इसपार ।  
 घर्वर० शु० अधर्म, बकनाही, बावला ।  
 घर्व० ना० पु० वृष्टि, पृथिवी का स्वरुविराष, सासल,  
 बारहमासका समय ।  
 घर्वण० ना० पु० भरसा, बरसात ।  
 घर्षा० ना० स्त्री०  
 घर्षास्तु० स्त्री०  
 घर्षत्त० स्त्री०  
 घर्षकाल० पु० } वृष्टि, बरसात, चौमास ।  
 घर्षकाली० ना० पु० श्यामजीरा, शु० जो  
 वर्षाकालमें हो ।  
 घर्षभू० गा० पु० भेक, मड़क ।  
 घर्षाशन० } ना० पु० बरसकी जीविका ।  
 घर्षासन० }  
 घर्षिचूड० ना० पु० हुनेरा ।  
 घर्षिण० ना० पु० तगर, मयूर, मोर ।  
 घर्षिमुख० ना० पु० देवता ।  
 घर्षी० ना० स्त्री० मयूर, मोर ।  
 घलय० } ना० स्त्री० गोल, चूडी ।  
 घलया० }  
 घलयाकार० ना० पु० गोलाकार ।  
 घला० ध्व्य० वर, ना० स्त्री० सैय, धरता,  
 चचला, लक्ष्मी, श्रीपथि ।  
 घलाक० ना० पु० बगुला, रामायण यथा  
 ( कामी काक बलाक भिचरें ) ।  
 घलाका० ना० स्त्री० बगुलों की पाति ।

घलाट० ना० पु० मूया ।  
 घलाघा० ना० स्त्री० सिरहटी ।  
 घलाहक० ना० पु० मष ।  
 घलि० ना० पु० भेट, बलिदान ।  
 घलित० शु० भरा पूरा सयुक्त ।  
 घलिपुष्ट० } ना० पु० बोधा, काग ।  
 घलिभुक्त० }  
 घलिरसा० ना० स्त्री० गन्धक ।  
 घलिष्ट० शु० बलवान्, पहलवान् ।  
 घलून० गा० पु० आकारा में उड़ने की वस्तु,  
 गुन्वारह ।  
 घलकल० ना० पु० वृक्षी छाल, भोजनपादि  
 बपला ।  
 घल्लकी० ना० स्त्री० बंधा, तम्बूरा ।  
 घल्लभ० शु० प्रिया, सुहलगा, स्वामी, दिलबैया ।  
 घल्लभा० गा० स्त्री० प्रिय, प्रियतमा ।  
 घश० ना० पु० आधीन, पराक्रम, इच्छा, चाह,  
 शत्रु ।  
 घशवर्ती० शु० आधान, काबू में ।  
 घशिर० ना० पु० समुद्रजोन, लालज्वा ।  
 घशिष्ट० ना० पु० मुनिविशेष दूत, वकील ।  
 घशीकरण० ना० पु० आधीन करने की रीति,  
 पुस्तकविराष, सिद्धिविशेष ।  
 घशीभूत० शु० जो वशमें होगया, तावेदार,  
 हिला ।  
 घशरोहा० ना० स्त्री० स्त्री ।  
 घश्य० गु० जो वशमें होगया, तावेदार, हिला  
 पाला ।  
 घसति० ना० स्त्री० बस्ती, बसने का स्थान, ग्राम ।  
 घसतिस्थान० ना० पु० वामस्थान ।  
 घसन० ना० पु० बल, कपडा ।  
 घसन्त० ना० पु० रागविशेष, ना० स्त्री० मन्  
 श्रु जो बिन बरसात म होती है ।  
 घसन्तजा० ना० स्त्री० वामटी ।  
 घसन्तइन० ना० पु० सेंदूर ।

वायुजात० } ना० पु० श्रीहनुमान् भीमसेन ।  
 वायुपूत० }  
 वाय्व्यग्नि० ना० पु० पत्रा श्रीर अग्नि ।  
 वार० ना० पु० टोंकर, पान, इतपाद, दिन ।  
 वार, ना० स्त्री० अथकल, विलम्ब, समग्र,  
 धीरवता ।  
 वारण० ना० पु० वर्जन, निषिद्धता, शिको,  
 योद्धावर, हाथी ।  
 वारद० ना० पु० वर्षास ।  
 वारन० स० क्रि० अर्पण, भेट, बोल, हाथी ।  
 वारना० स० क्रि० घेर लेगा, अर्पण-करना,  
 भेद चढ़ागा ।  
 वारचधू० } ना० स्त्री० वेद्या, पत्रुरिया,  
 वारस्त्री० } पुरचली ।  
 वारा० ना० पु० सस्ताई, बचाव, निष्कार, गु०  
 सस्ता, लाभ ।  
 वारावार० अथ० शहर से उधर तक ।  
 वाराणसी० ना० स्त्री० वारी, बनारस ।  
 वारि० ना० पु० जल, पानी ।  
 वारिचर० ना० पु० मछली आदि ।  
 वारिचरकेतु० ना० पु० कामदेव, शिवल-  
 देवनी ।  
 वारिज० ना० पु० कमल, समुद्र लेख, गु०  
 जो जल से उपज हो ।  
 वारिद० ना० पु० मेघ ।  
 वारिदनाद० ना० पु० मेघनाद, रामानन्द यथा  
 ( वारिदनाद जेठ एत ताम्, भ्रमर्हः प्रथम  
 रत्न जी जाय् ) ।  
 वारिधर० ना० पु० मेघ ।  
 वारिधि० ना० पु० समुद्र ।  
 वारिधली० ना० स्त्री० खेला, तंकारी ।  
 वारिविहग० ना० पु० जलके पर्वी ।  
 वारिशुक्र० ना० पु० वीर ।  
 वारिसमव० ना० पु० लाग ।  
 वारिश० ना० पु० समुद्र ।

वारुणी० ना० स्त्री० मदिरा विशेष, यश्चिन्म  
 रिशा, मगानास पर्य विशेष, दून पाम विशेष,  
 हाथीकी चाल, पधीलना नक्षत्र ।  
 वारे० अथ० रागे, छोड़े ।  
 वार्ता० ना० स्त्री० वृत्तान्त, बात, बार्ताचीत ।  
 वार्ताकी० ना० स्त्री० बहो कर्तरी ।  
 वार्तिक० ना० पु० मूलमन्त्र का पूरकमन्त्र, जो  
 छन्दोके रहित, मन्त्र, नातो म ।  
 वार्तिका० ना० स्त्री० भाग, बंगी ।  
 वार्तक्य० ना० पु० बयापा, वृत्तावस्था ।  
 वार्थि० गु० सपत्नी, वर्षका, जो बरसातमें उप  
 णी है, जो बरसात के योग्य है ।  
 वाल्य० ना० पु० बालकपन, बालकता ।  
 वावदूक० ना० पु० बड़ावता, वावभक्त, गर्णी ।  
 वाप्य० ना० पु० बाफ, भाक ।  
 वापिका० ना० स्त्री० कालाङ्गीरा ।  
 वास० ना० पु० घर, बसो का स्थान, वास ।  
 वासना० ना० स्त्री० अभिलाषा, इच्छा, अ०  
 क्रि० महवना ।  
 वासन्ती० ना० स्त्री० लग्न विशेष, वैशाख म  
 कामदेवका पर्व विशेष ।  
 वासर० ना० पु० दिन, दिनस ।  
 वासव० ना० पु० इन्द्र, देवराज ।  
 वासांसि० ना० पु० वसन, कपड़े ।  
 वासा० ना० पु० बाला ।  
 वासित० गु० सुगन्ध समुत्त, बस्त्रयुत ।  
 वासी० ना० पु० बसनेहारा, रहनेहारा ।  
 वासुकि० ना० पु० मन्मथसर्प, प्रथम साप ।  
 वासुदेव० ना० पु० श्रीहृष्यचन्द्रना ।  
 वास्नेच० अथ० यथार्थ, ठालार्थ, असल ।  
 वास्तव्य० गु० बस्ने के योग्य ।  
 वास्तिका० ना० स्त्री० मेथीका शाक का मेथी ।  
 वास्तुक० ना० पु० बपुष्या का साग ।  
 वास्तुकाकार० ना० पु० फाराक का साग ।  
 वास्तुक० ना० पु० बपुष्या का शाक ।

वास्तो पतिः } ना० पु० इन्द्र, अमर वापि  
वास्तोष्पतिः } यथा ( वास्तोष्पतिश्चरपतिर्व  
सारातिशरचूपतिः ) ।

वाह० ना० पु० वाहा, वाजी ।

वाहन० ना० पु० वाहन, वाहक ।

वाहन० ना० पु० वाहन, निरुपचदके, जाया  
जाव, सवारी ।

वाह्वेरी० ना० पु० भैरव ।

वाहि० सर्व० उत्सव ।

वाहिनी० ना० स्त्री० वाहिनी, सवारी ।

वाहू० } ना० पु० धनुः ।

वाह्यमुख० ना० पु० हाथ ।

वाह्य० शु० वाह्य का ।

वाहालय० ना० पु० मन्दिर के बाहर, वाहा  
बाहर का ।

वि० अन्य० यह शब्द उपसर्ग है उसका अर्थ  
कभी नियम कभी भिन्नता कभी विरोध कभी  
विरोध कभी हीन इत्यादि होता है ।

विकट० शु० विकट ।

विकराण० शु० विकराल, भयकर ।

विकल० शु० व्याकुल, अरुण ।

विकलित० शु० विकल, व्याकुल ।

विकल्प० ना० पु० चर, सदेह, विचार ।

विकशित० } शु० प्रकृतित, पूलाइया ।

विकसित० } शु० प्रकृतित, पूलाइया ।

विकार० ना० पु० बदल रंग, स्वभाव की  
बदल ।

विकाल० ना० पु० गार्हपति, सायंकाल ।

विकारण० ना० पु० प्रकाश ।

विकीरण० ना० पु० मदार वृद्ध, आक ।

विकीर्ण० शु० फलाया गया ।

विकृत० शु० विरामी, मलिन, ना० पु० दूषण ।

विकृति० ना० स्त्री० विकृत या स्वभाव आदि  
का बदल ।

विक्रम० ना० पु० पराक्रम, शक्ति, वीर्य ।

विक्रमादित्य० ना० पु० राजाः शिव नित्य  
सयत् चलाया है ।

विक्रय० ना० पु० विक्री ।

विक्रीत० शु० जा विक्रय ।

विक्रैता० ना० पु० बचवेया, वेचनहार ।

विक्र्यात० शु० प्रकट, प्रसिद्ध, प्रकाशित ।

विगत० शु० रहित, निरा, विद्वत् ।

विगति० ना० स्त्री० विगाह, उरार, विरल ।

विगन्ध० ना० स्त्री० कुचात, बदध ।

विगुण० ना० पु० अशुभ, अयशुभ ।

विग्रह० ना० पु० शरीर, फेलाय, वैर, युद्ध ।

विघटन० ना० पु० तोड़न, सम्पूर्ण नष्ट ।

विघटित० शु० पूराविनाश, सम्पूर्ण ।

विघ्न० ना० पु० अटकाव, रुकावट, शूल, बूक,  
धोला, शुभकर्म का नाश ।

विचारज० } ना० पु० श्रीगणेशना ।

विघ्नविदारण० } ना० पु० श्रीगणेशना ।

विघ्नहरण० } ना० पु० श्रीगणेशना ।

विचरण० ना० पु० पर्यटन, लेन, विहारण,  
वितान ।

विचारित० शु० विहारित ।

विचल० शु० चलायमान, चंचल, विचर ।

विचलित० शु० चलायमान, चंचल, अस्थिर ।

विवक्षण० शु० चतुर, निपुण, प्रवीण, स्थान ।

विचार० ना० पु० ध्यान, शोका, बूक, अर्थ  
का ज्ञान ।

विचारक० ना० पु० विचार करनेवाला ।

विचारित० शु० जा विचारयोग, निर्णित ।

विचारी० ना० पु० विचारक ।

विचार्य० शु० जो विचार के योग्य है ।

विचित्र० शु० रमण, नागरिक, वै,  
नोडर ।

विच्युत० ना० पु० वियोग, विचारण ।

विजय० ना० पु० जय, जात, बतौर, मुनीक,  
पापद विरोध का हिरण्यवश्यप हुआ था ।

विजयदशमी० ना० स्त्री० आश्विन शुक्ल १०,  
वार सुदी १० ।

विजयनर० ना० पु० अर्जुन ।

विजया० ना० स्त्री० भय, वृथी ।

विजयी० पु० भयवन्त, जीवनेश्वर ।

विजाती० } पु० भिन्न जातिका, अन्यानि ।  
विजातीय० }

विजान० ना० पु० ज्ञान, अज्ञान, प्रबुद्ध,  
मूढ ।

विद्० ना० पु० वी ।

विद्भर० ना० पु० शर, धर ।

विटप० ना० पु० वृष, पल्लव, पेद, रामायण  
वधा (पुष्पवृषाणी चो उरगाती, मोह विटप  
नहि सकत उगारी ।)

विडम्ब० ना० पु० दुःख, मरा, हतना ।

विडम्बना० ना० स्त्री० दुःखदायक, निज भव  
कारि वा निन्द्युत वचन ।

विडम्बित० पु० दुःखित, पणित, निर्दिष्ट ।

विडाल० ना० पु० मार्जार, बिलार ।

वितण्डा० ना० स्त्री० सायबार्ह ।

वितन० ना० पु० कामदत्त ।

वितरण० ना० पु० दान, त्यागना, पार वा  
उतरना ।

वितल० ना० पु० पाताल विशेष ।

वितस्ता० ना० स्त्री० आस्तानी विशेष जो  
पत्रात में है ।

वितस्तित० ना० पु० बारहथगुल, भलिस्त ।

वितान० ना० पु० निस्तार, चदरा, तम्बू,  
मच्छप ।

विनुश्र० ना० पु० धनिया ।

विनुष्णा० ना० स्त्री० निराशा, वैश्या, लुप्ता  
अवधि ।

वित्त० ना० पु० धन, शैलज, धन्य, इज्जता ।

विचक० } पु० चक्रित, वचाइया ।  
विचकित० }

विद० पु० ज्ञाननेहा ।

विदग्ध० ना० पु० लम्पट, दुःखतुर, विचक्षण ।  
विदग्धा० ना० स्त्री० लम्पट स्त्री, खतुर स्त्री ।

विदारण० ना० पु० पाठन ।

विदारना० स० क्रि० पाठना, चौरना ।

विदारिका० ना० स्त्री० विदारीकन्द ।

विदारिगन्धा० ना० स्त्री० शालपत्र ।

विदिक० ना० स्त्री० आग्नेयादिदोष, विदिश ।

विदित० पु० प्रकृत, जो जानगया, प्रसिद्ध ।

विदिशा० } ना० स्त्री० विदिश ।  
विदिश० }

विदीर्ण० पु० फाड़ा, चीरा, पटाटूग ।

विदुर० ना० पु० दासीसूत, हरिमल्ल विशेष ।

विदुप० पु० पण्डित, गुथा ।

विदुषक० ना० पु० भाइ, विदक ।

विदेश० ना० पु० आदर्श, परदेश, विस्वावत ।

विदेशी० ना० पु० परदेशी, विस्वायनी ।

विदेह० ना० पु० राजा जनक, कामदत्त ।

विदेहजा० ना० स्त्री० सीतामा ।

विद्वैता० ना० पु० देवता ।

विद्यमान० पु० वर्तमान, अस्त, मौजूद ।

विद्या० ना० स्त्री० शास्त्रका ज्ञान, यथाथे ज्ञान,  
रत्न, हुनर, शष्ण, शिवादि १४ ।

विद्याधर० ना० पु० देवता विशेष, पु० पण्डित,  
गुणी, कारिगर ।

विद्यावान्० पु० ज्ञानवान् पण्डित, आलिम ।

विद्यार्थी० ना० पु० ज्ञान, शिष्य, पु० पढ़ने  
हाता ।

विद्यालय० ना० पु० पाठशाला, विद्या का  
घर ।

विदुत्त० ना० स्त्री० निम्नी, कादा ।

विदुष्का० ना० स्त्री० कलिहारी ।

विदुषता० ना० स्त्री० निम्नी, कादा ।

विद्रुम० ना० पु० मृगा ।

विद्विनाद० ना० पु० सायबार्ह, लुप्ता विद्याकी  
चर्चा पाठने म ।

विद्वान्० पु० विद्यावान्, पण्डित, पत्रा ।

विद्वेष० ना० पु० वेद, विरोध, अदावत ।  
 विद्वेषिनी० ना० स्त्री० विरोधिनी, निदक, ओर  
 दुःखदाता ।  
 विद्वेषी० ना० पु० वरी शत्रु ।  
 विघ्न० ना० स्त्री० प्रकार, रीति ।  
 विघ्नवा० ना० स्त्री० रांड, वेवह ।  
 विघ्नम० ना० पु० निघ्नवर्णाश्रमसे विपरीत धर्म ।  
 विघ्नता० ना० पु० ब्रजा ।  
 विघ्नान० ना० पु० शास्त्रोक्त व्यवहार, विधि,  
 आचार ।  
 विधायक० ना० पु० जो विधानश्रेष्ठ, सौंपन  
 हारा ।  
 विधायी० ना० स्त्री० सरस्वती ।  
 विधि० ना० स्त्री० प्रारब्ध, ना० पु० मन्त्रा,  
 दवता, कर्म, भाग्य, विधा, वाच प्रकार,  
 शास्त्रोक्त व्यवहार ।  
 विधिअण्ड० ना० पु० अण्डाण्ड ।  
 विधिरु० ना० पु० सवर्ण, शयः गुलाम ।  
 विधिगति० ना० स्त्री० कर्म की चाल, मन्त्रा की  
 दशा वा लिखति वा चाल वा कर्त्तव्य ।  
 विधिपिता० ना० पु० कमल ।  
 विधिवत्० अव्य० यथा योग्य, विहित ।  
 विधु० ना० पु० चक्रमा ।  
 विधुन्दु० ना० पु० राहु, आठवा मह ।  
 विधुदनी० ना० स्त्री० चन्द्रवदना, अतिशुद्ध,  
 जिसका मूल चक्रमा के समान है ।  
 विधुर० ना० पु० नियोग, व्याकुलता ।  
 विधेय० पु० सभाऊ, शिष्ट, होनहार, समाचार,  
 विशेषशब्द ।  
 विधेयार्थप्रज्ञक० ना० विधाय की अर्थ ज्ञानी  
 हारा ।  
 विधेयस० ना० पु० विगारा, घृणा, निन्दता ।  
 विन० सर्व० उा ।  
 विनत० पु० नम्र, आधीन, मुका, टना ।  
 विनत० ना० स्त्री० नन्दनीची मात्रा, कश्यप  
 की स्त्री ।

विनती० ना० स्त्री० प्रार्थना, विवेदान, पुराणामद ।  
 विनय० ना० पु० शिष्टाचार, लान, भक्तता,  
 आदर, स्वभाव, पुराणामद ।  
 विनयी० पु० विनयशील, शिष्टाचारी, नम्र,  
 नीतिज्ञ ।  
 विनष्ट० पु० जिसका विनाश होगया ।  
 विना० अव्य० त्याग के, छोड़, रहित ।  
 विनायक० ना० पु० श्रीगणेशजी ।  
 विनाश० ना० पु० विनाश, मारा ।  
 विनिमय० ना० पु० अदलबदल, एरोर ।  
 विनीत० पु० विनयी, नम्र, ना० पु० मांसा ।  
 विनीता० ना० स्त्री० उत्तमा ।  
 विन० अव्य० विना ।  
 विनोद० ना० पु० चोंप, आनंद, प्रीति, खेले ।  
 विन्दक० पु० लाभसुत ।  
 विन्दु० ना० पु० बूद, अक्षर, सना, शय,  
 मणि, वीर, रेत ।  
 विन्ध्य० ना० पु० विन्ध्याचल ।  
 विन्ध्यगिरि० ना० पु० विन्ध्याचल ।  
 विन्ध्यवालिनी० ना० स्त्री० विन्ध्याचल की  
 देवी विशेष जो भिर्जापुरके समान है ।  
 विन्ध्याचल० ना० पु० पर्वत विशेष जो भर  
 तखण्ड के मध्यमें है ।  
 विन्ध्यास० ना० पु० समूह समूह, और समूह  
 वा रथा ।  
 विपत्० } ना० स्त्री० आपदा, अपाय,  
 विपत्ति० } दुर्गति, आकल ।  
 विपत्ति० }  
 विपथ० ना० पु० दूतपथ, कुमारी ।  
 विपद्० ना० पु० विपत्ति ।  
 विपद्ग्रस्त० पु० अमानी, दुर्गती ।  
 विपरीत० ना० पु० टलय, विरारी, ना० स्त्री०  
 विरोध, दुर्ग, अपमान ।  
 विपर्यय० ना० पु० विन्ध्या, विपरीतता ।  
 विपल० ना० पु० पलका मानवा भयानक  
 विपन्न० ना० पु० शत्रु, वरी ।

विपक्षता० ना० स्त्री० शत्रुता, वैर, अदावत ।  
 विपक्षी० ना० पु० शत्रु, छद्म ।  
 विपाक० ना० पु० प्रारब्ध का हेतु, भोजन का पकाना ।

विपाट० } ना० स्त्री० व्याप्तानदी पनाव  
 विपाशा० } की ।

विपिन० ना० पु० वन, जंगल ।

विपुल० पु० बहुव, बहुतात, विस्तार ।

विपुलता० ना० स्त्री० बहुतापन, विस्तारित ।

विपुला० ना० स्त्री० धरती, एमेरना पार्श्व माग ।

विपुपा० ना० स्त्री० आदरे ।

विप्र० ना० पु० आमण ।

विप्रचरण० ना० पु० ब्राह्मण का पाव, विरोध भ्रूलता का चिह्न जो श्रीविष्णुनारायण के हृदय में चिह्नित है ।

विप्रलाप० ना० पु० अनर्थवाक्य, मृतकयुग्मपन, विनाप समय वाता ।

विफल० पु० निफल, व्यर्थ ।

विभक्त० गु० जो भागक्रियागया, पृथक्, अलग ।

विभक्ति० ना० स्त्री० धरा, भाग, बौद्ध, मुखादि और निह् आदि धोर कारक बोधक ।

विभक्त्यन्त० ना० पु० जिस शब्द का सर्वनाम के अन्त में विभक्ति प्रत्यय है ।

विभङ्गक० पु० भजन करने हारा, गायन ।

विभङ्गन० ना० पु० मारण, भजन, नाराज ।

विभव० ना० पु० द्रव्य, राय, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, प्रताप, शक्ति ।

विभाकर० ना० पु० सूर्य ।

विभाकरी० ना० स्त्री० रात, रात्रि ।

विभाग० ना० पु० धरा, विभक्ति ।

विभावसु० ना० पु० सूर्य, अग्नि ।

विभिस० ना० पु० सौम ।

विभीतक० ना० पु० बहेका ।

विभीषण० ना० पु० रावणका निमान भाई, गुण भसाक ।

विभु० ना० पु० स्वामी, श्रीविष्णुना, श्रीशङ्कर, प्रभा, पु० सर्वव्यापी, सर्वत्र ।

विभूति० ना० स्त्री० यज्ञी भस्म, ऐश्वर्य, भस्म, अष्टसिद्धि, प्रभुता ।

विभूषण० ना० पु० आभरण, अक्षरार, रोमा ।

विभूषित० पु० रोमिष्ठ, आभूषित, अलङ्कृत ।

विभेद० ना० पु० अन्तर, फूट, विशेषभेद ।

विभ्रम० ना० पु० आवली, चूक, मूल, मोहा, सन्देह ।

विमात० ना० स्त्री० विशेष शुद्धि, ना० पु० मातृश्रेष्ठ जो जनक राजाका दिवोधी था ।

विमल० पु० उजला, निर्मल, स्वच्छ, साफ ।

विमलनयन० ना० पु० शादृष्टि, दिव्यरग, निर्मल शाल ।

विमला० ना० स्त्री० धीपावती जी ।

विमाता० ना० स्त्री० सौतेली माता, दूसरीमाता ।

विमातृ० ना० स्त्री० विमाता, साधारण खोग, इसका उच्चारण विमापिनके स्थान में करते हैं ।

विमातृज० ना० पु० सौतेली माताकापुत्र, सौतेला भाई ।

विमान० ना० पु० स्वर्ग का सिंहासन, देवों का यान ।

विमुख० पु० विरोधी, प्रतिशूल, निरसका हृदय निरगया है, यह शब्द सम्पुल का विरोधी है ।

विमोचन० } ना० पु० त्याग, तमन ।  
 विमोक्षण० }

विभ्य० ना० पु० परछाई, प्रतिविम्ब, तरकारीविशेष, चन्द्र और सूर्य का मडल ।

विभ्या० ना० पु० पृथ्वीविशेष जो अतिवृद्ध होता है और पत्र पर अनिलाल वर्ष होनाता ।

विम्बोर० ना० पु० कट्टी लता, अमर, बेल ।

विम्बुक० ना० पु० लाल, भूरा ।

वियोग० पु० दूरा ।

वियोग० ना० पु० निषेध, निहाराहट, व्यापार, अदाई ।



वियोगित० गु० जो विछुड़ गया, भिन्नभया ।  
 विद्योगिनी० ना० स्त्री० भिन्न, विछुरी, बुद्धी ।  
 वियोगी० ग० विरही, बुद्धा, विछुरा, भिन्न ।  
 विरक्त० गु० वैराग्य, शील, कामनिवृ, उदासी ।  
 विनंचन० ना० पु० वेनाचन, रंचन, पेदा करना ।  
 विरचना० ग० कि० बनाना, रंचना, संपन्नाना ।  
 विरंचित० गु० बना, रचा ।  
 विरजा० ना० स्त्री० पीथाविशेष, तृष्णाविशेष, दूर ।  
 विरञ्जि० ना० पु० ब्रह्मा ।  
 विरञ्ज० गु० निर्मल, सुरा ।  
 विरत० गु० निवृत्ति, संग्रहीन ।  
 विरति० ना० स्त्री० निवृत्त, वैराग्य ।  
 विरथ० गु० रथहीन, पेदाति ।  
 विरद० ना० पु० विरद, गु० निदन्त ।  
 विरल० गु० सूक्ष्म, डीला, प्रकट, प्रसिद्ध ।  
 विरललुदा० ना० स्त्री० पालक का शाक ।  
 विरला० गु० कोई, अनूठा, अनूप, सूक्ष्म, डीला ।  
 विरस० गु० रसहीन ।  
 विरह० ना० पु० वियोग ।  
 विरहित० गु० वियोगित ।  
 विरहिनी० गु० स्त्री० वियोगिनी ।  
 विरही० गु० वियोगी ।  
 विराग० ना० पु० मन की इच्छा का त्याग, बुद्धि, विषय भोग का परित्याग, मूख दुःख हीन ।  
 विरागी० गु० उदासी, मनकी इच्छा मारने वाला ।  
 विराजना० अ० कि० विराजना ।  
 विराजमान० } गु० शोभापान ।  
 विराजित० }  
 विराट० ना० पु० विराट राजा का नाम है ।  
 विराम० ना० पु० दे, विश्राम, हलका बिट, गु० आशिर, व्याकुल, बीमार ।  
 विराहिव० ना० स्त्री० विराहिकन्द ।

विरज्ज० गु० आरोप्य, तन्दुरगत ।  
 विरुद्ध० गु० विरोधी, विपरीत, जो रोकामया, वैर, अदारत ।  
 विरुद्धता० ना० स्त्री० विरोध, विद्व, विन, शत्रुता ।  
 विरूप० गु० कुरूप, भौंडा ।  
 विरूपाक्ष० ना० पु० श्री महादेवजी, रविसे विरोध ।  
 विरेक० ना० पु० पेदाता, दस्त ।  
 विरेचन० ना० पु० पेदाता होना, दस्तगारी होना ।  
 विरोचन० ना० पु० सूर्य, अग्नि, देव, राजा बलिका पिता, राजाविशेष ।  
 विरोध० ना० पु० वैर, अग्रह, अदारत ।  
 विरोधी० गु० विरोधकारक, अग्रह, वैर ।  
 विरोधोक्ति० ना० स्त्री० अन्वयान्त, विरोध कथन ।  
 विल० ना० पु० विल ।  
 विलग० गु० निव, वृद्ध ।  
 विलज्ज० गु० निलम्ब, नेहया ।  
 विलम्ब० ना० पु० देर अंतर, दासमंडाल ।  
 विलम्बना० अ० कि० रहना, टहरना, देर करना ।  
 विलय० ना० पु० प्रलय, जगत् का नाश ।  
 विलक्षण० गु० अमय प्रचारका, अदभुत ।  
 विलाप० ना० पु० सन्ताप, शोक का पथन, रोना ।  
 विलायत० ना० स्त्री० परदेश, अन्यदेश ।  
 विलाश० ना० विलास ।  
 विलासी० गु० भोगी, क्रीडाकारक, ना० पु० सर्प ।  
 विलास० ना० पु० हर्ष, आनन्द, एत, भोग, विलासन, भोग, कांय ।  
 विलिका० ना० स्त्री० विलिना शीपथि ।  
 विलुप्त० गु० जो नारा का प्राप्तभया, भिन्नभया ।  
 विलेप० ना० पु० लेप, चन्दन गुणकना ।

विलेश्य० ना० पु० शशा, चीमडा, खमोरा ।  
 विलोकन० ना० स्त्री० दृष्टि, तार ।  
 विनोकना० स० कि० देलना, ताकना, नि-  
 रतना ।  
 विलोचन० ना० पु० नेत्र, नयन, आत ।  
 विलोचना० स० कि० मथा, मदा ।  
 विलोम० ना० पु० उलटा, शिपरीत ।  
 विलोप० स० कि० विलोचना ।  
 विल्व० ना० पु० बेल वृक्ष वा उसका फल ।  
 विवकिल० ना० पु० बिदा, बेल ।  
 विवर० ना० पु० द्विद, छेद, बिल, घर, भुंहरा ।  
 विवरण० ना० पु० व्याख्या, बखान, विस्तार,  
 टीका, वर्षादीन ।  
 विवर्ण० ना० पु० नीचगतिप्रामाण्य, वृत्तवृत्ति ।  
 विवर्द्धक० गु० वृद्धिकारक, बढ़ावाहक ।  
 विवर्द्धन० ना० पु० बढ़ावा, वृद्धि ।  
 विवर्द्धित० गु० वृद्धिसे प्राप्तमया, बढ़ायागया ।  
 विवश० वशाहीन, वशाभूत, परस्य, पराधीन,  
 मृत्युसमय जो धारवा वा अधिपर हो ।  
 विवस्त्र० गु० बबहाईन, नगा ।  
 विवस्वान्० ना० पु० एर्था ।  
 विवक्षा० ना० स्त्री० वाक्षा, बहनका इच्छा ।  
 विवक्षित० गु० वाक्षित, इष्ट ।  
 विवाद्० ना० पु० बलह, भगडा ।  
 निवादी० गु० जा विवादकर ।  
 विवाह० ना० पु० न्याह, गढ़नधन ।  
 विवाहित० गु० जा विवाहागया ।  
 विवाहिता० ना० स्त्री० जो विवाहीनई ।  
 विवि० गु० दो, २ ।  
 विविक्र० ना० पु० एका ठ रहित ।  
 विविध० गु० नानाप्रकार, अनेक, बहुस्त्री ।  
 विबुध० ना० पु० देवता, पृथिव्य ।  
 विबुधवन० ना० पु० स्वर्ग, नन्दनवन ।  
 विबुधवैद्य० ना० पु० अश्विनीकुमार ।  
 विबुधारि० ना० पु० राक्षस, दैत्य ।  
 विवेक० ना० पु० व्योम, विज्ञान, ज्ञान ।

विवेकी० गु० विचारी, मानी ।  
 विवेचक० ना० पु० अत्यन्त श्रेष्ठ स्वयंकी,  
 विचारी ।  
 विवेचन० ना० पु० विचार ।  
 विवेचना० ना० स्त्री० संयासत्य का विचार,  
 परसना, जानना ।  
 विशद० गु० उजल, स्पष्ट, साफ, टीका ।  
 विशदण्ड० ना० पु० अत्रिनप्रदपदी, दण्ड की  
 निन्दा, कमलनाल ।  
 विशदवाणी० ना० स्त्री० उजलसार्ता, स्प-  
 ष्टभाषा, साफवात ।  
 विशाल्या० ना० स्त्री० बलिहारी ।  
 विशाल्य० ना० पु० पुनर्नवा पीथा ।  
 विशाखा० ना० स्त्री० स्त्री, मोलहवा नवन ।  
 विशार० ना० पु० मद्दली ।  
 विशारद० ना० पु० मोलसिरीदृष्ट, गु० चतुर,  
 प्राज्ञ, ज्ञाना ।  
 विशाल० गु० बडा, चौडा, सुंदर, दु सरहित ।  
 विशाला० ना० स्त्री० इ दवाग्यी ।  
 विशिख० ना० पु० माण, वीर ।  
 विशिखासन० ना० पु० घटप, कमान ।  
 विशिष्ट० गु० समुत ।  
 विशुद्ध० गु० पवित्र, पाक, साफ, चक्रविशेष,  
 जो अणुगणनामें बंशित ह ।  
 विशुद्धिज्ञा० ना० स्त्री० छदि, हुलकी, हवाह ।  
 विशेष० ना० पु० जाति, दब, भेद, गुण, ज्ञान  
 कर, गु० बहुत, अधिक, एक ।  
 विशेषण० गु० जा एकसे दूसरे से पृथक्करे,  
 गुणभावक, तागाफ, सिफत ।  
 विशेषता० ना० स्त्री० अविनाई, समुत्तियन ।  
 विशेष्य० ना० पु० गुण, विशेषकी ताकि की  
 जाये, गु० जो विशेष के योग्य है, गुणित  
 पदवा ।  
 विशेष्य० गु० शोकरहित, केराईन, श्रद्ध ।  
 विश्रान्त० गु० जिससे निवाम किया, ना० पु०  
 मथुरापुराणमें स्थानविशुद्ध ।

विश्राम० ना० पु० सुप्त, चैन, कल ।  
 विश्राविगंधा० ना० स्त्री० आह्वेरे ।  
 विश्लेष० ना० पु० वियोग ।  
 विश्व० ना० पु० जगत्, देवतोंकी जाति जिसमें  
 दशवसु इत्यादि हैं, सौंड, सब ।  
 विश्वकर्मा० ना० पु० देवतों का धर्म ।  
 विश्वगन्धिका० ना० स्त्री० आह्वेरे ।  
 विश्वदेवा० ना० पु० गणेश ।  
 विश्वनाथ० ना० पु० काशी में प्रधाशिव ।  
 विश्वमेघज० ना० पु० सौंड ।  
 विश्वम्भर० ना० पु० परमामा, ईश्वर ।  
 विश्वम्भरा० मा० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।  
 विश्वरूप० ना० पु० सर्वरूप, ईश्वर, विराट  
 त्त ।  
 विश्वरूपक० ना० पु० काला अणु ।  
 विश्वविमोहन० ना० पु० कामदेव ।  
 विश्वसर्ग० ना० पु० ब्रह्मा, कर्त्ता, विधाता ।  
 विश्वामित्र० ना० पु० कुनिरिशेष, धनुष  
 कर्त्ता ।  
 विश्वास० ना० पु० प्रतीत, भरोसा, प्रयय ।  
 विश्वासघात० ना० पु० विश्वास का हनन ।  
 विश्वासघाती० ना० पु० विश्वास का घात  
 कर्त्ता, जो मिश्रनामें छलकरे ।  
 विश्वासी० गु० प्रतीत वा भरोसा रखनेहारा ।  
 विश्वेश्वर० ना० पु० विश्वनाथ, भगवान् ।  
 विश्वौषधि० ना० स्त्री० सौंड ।  
 विष० ना० पु० गरल, हलाहल ।  
 विषण० ना० पु० ब्रह्मा, सूर्य ।  
 विषद्० गु० विशद, श्रेय, गौरा, ठेठ ।  
 विषघरं० ना० पु० सार, सर्व, श्रीमहादेव ।  
 विष्वंसी० ना० पु० नाममाया ।  
 विषपुष्पक० ना० पु० मेनकस ।  
 विषम० गु० अयुग्म गिनती यथा ३ । ५ । ७  
 जो बराबर न हो, असम, कटिग, भयानक, ना  
 पु० अरिरीशेप ।

विषमत्रिभुज० ना० पु० जिसकी भुजा तुल्य  
 न हों ।  
 विषमान० ना० पु० औषधि वा निषिरीशेप ।  
 विषमुष्टक० ना० पु० महार्जव ।  
 विषय० ना० पु० इन्द्रिया निज वस्तुओंको ग्रहण  
 करती हैं यथा स्वाद, रग, रूप, रस, भोगादि,  
 काम, नात, अर्थ, अन्य० लिये, मय्ये ।  
 विषयक० गु० ससारी जगत् के ।  
 विषयी० गु० जो विषयों में आसक्त ।  
 विषवैद्य० ना० पु० जागलिक, गाकड़ि जो सर्पादि  
 काटने वा निष उतारता है ।  
 विषहा० गु० जो निषसे भरा है ।  
 विषाण० ना० पु० पशुके सग ।  
 विषाद्० ना० पु० धकारि, उदासी, दुस्त ।  
 विषादी० गु० उदासी, थका, दुखी ।  
 विषानिका० ना० स्त्री० मेदासिही ।  
 विषुव० ना० पु० जब दिन रात समान  
 विषुवत् होता है उसीका नाम ।  
 विषुवत्काल० ना० पु० जिस समय सूर्य विषु-  
 वत् रेखापर रहते हैं ।  
 विषुवद्रेखा० ना० स्त्री० रेखा, भूमि के ऊपर  
 शून्य में समान सूत डालने से जो रेखा क-  
 लित है ।  
 विषे० अन्व० में, बीच, मय्य ।  
 विष्कर० ना० पु० घुर्गा ।  
 विष्ठा० ना० स्त्री० वीर, मल, रुह ।  
 विष्ठाहमि० ना० पु० विष्ठा का धीजा ।  
 विष्टि० ना० स्त्री० भद्रा, बुयोग ।  
 विष्टर० ना० पु० आसनविशेष ।  
 विष्टरश्वा० ना० पु० विष्ट, नारायण ।  
 विष्णु० ना० पु० साङ्, मनुष्य, सूर्य, अग्नि,  
 वसु, श्रीनारायण ।  
 विष्णुकान्ता० ना० स्त्री० पौधाविशेष, की-  
 आगोही ।  
 विष्णुपद्म० ना० पु० आकारा, अन्धविशेष,  
 गीतविशेष ।

विलेश्य० ग० पु० सारा, चीगडा, धरगारा ।	विधेकी० गु० विचारी, मानी ।
विलोकन० ना० स्त्री० रति, ताक ।	विधेचक० ग० पु० चस्य श्रौं सच वा
विलोकना० स० कि० देवता, ताक्या, नि	विचारी ।
रताग ।	विधेचन० ना० पु० विचार ।
विलोचन० ग० पु० नेत्र, गयन, आल ।	विधेचना० ना० स्त्री० मयाएल का विचार,
विचोडना० स० कि० मथान, मडना ।	पलेना, जागा ।
विलोम० ना० पु० उलग, विपरीत ।	विशद० गु० उतूल, सख, साध, टीक ।
विलोम० ग० स० कि० मिलाडना ।	विशदएड० ना० पु० अतिमदपदी, दपड, की
विल्व० ना० पु० बल वृष वा उसका फल ।	निदा, कमलनाल ।
विप्रकिल० ना० पु० विल्व, बेल ।	विशदवाणी० ना० स्त्री० अज्ञानता, रू
विवर० ना० पु० विद्र, धट, विल, धर, भूहरा ।	धभाषा सायनात ।
विचरण० ग० पु० व्याख्या बसान, विस्तार,	विशस्था० ना० स्त्री० कलिहारी ।
दान वर्षदान ।	विशास्त्र० ग० पु० पुननवा पीमा ।
विवर्ण० ग० पु० नीचताविनामद्वय, वृजावि	विशास्त्रा० ना० स्त्री० स्त्री, सालहना नखन ।
विवर्द्धक० गु० वृद्धिवाक, बढानहार ।	विशार० ना० पु० मलली ।
विवर्द्धन० ना० पु० वृद्धी, वृद्धि ।	विशारद० ग० पु० मालसिरीवृष, गु० चतुर,
विवर्द्धित० गु० वृद्धि प्राप्तभया, बढ़ायगया ।	प्राज्ञ, ज्ञाना ।
विवश० वराहीन, वरीभूत, पश्य, पराधीन,	विशाल० गु० नम, चौडा, सुदर, दु सरहित ।
मृदुसमय जा घांरा वा अस्थिर हा ।	विशाला० ग० स्त्री० द्रव्यास्था ।
विवस्त्र० गु० वस्त्रहान, भगा ।	विशिख० ना० पु० बाण, तार ।
विवस्वान्० ग० पु० सूर्य ।	विशिखासन० ग० पु० धनुष, कमान ।
विवक्षा० ना० स्त्री० बाधा, रहनका इच्छा ।	विशिष्ट० गु० सपुत ।
विचक्षित० गु० वाक्षित २२ ।	विशुद्ध० गु० पवित्र, पाक, गांठ, चक्रविशेष
विचाद० ना० पु० कलह, भगडा ।	जा अणमयागमें बधित है ।
निवादी० गु० जा निवाकर ।	विशुचिन्ता० ना० स्त्री० छदि, हुलका, ईतह ।
विचाह० ग० पु० व्याह, गदबधन ।	विशेष० ना० पु० जाति, अ, भद गुण प्राम
विवाहित० गु० जा पाराहागया ।	वर, गु० बहुत, अधिक, एक ।
विवाहिता० ना० स्त्री० जा निवाहीन ।	विशेषण० गु० जा एको दूमे से पृथक्करे,
विनि० गु दो, २ ।	गुणवाचक तारासिक्त ।
विविक्त० ना० पु० एका ठ रहित ।	विशेषता० ग० स्त्री० अतिता, समुत्थित ।
विविध० गु० गायत्रा श्रौं बहुस्त्री ।	विशेष्य० ग० पु० गुण, निमकी दातीक की
विमुघ्न० ना० पु० देवता, पृथित ।	जोरे, गु० जो विशेष के योग्य है, मुत्तिया
विमुघ्नना० ग० पु० रत्न, नदनवन ।	पला ।
विमुघ्नैद्य० ना० पु० अश्विनीकुमार ।	विशोक० गु० साकरहित, केशहीन, अदृष्ट ।
विमुघ्नारि० ना० पु० राक्षस, दैत्य ।	विश्रान्त० गु० निस्तो विधाम किया, ग० पु०
विनेक० ना० पु० व्यास, विचार, ज्ञान ।	मथुरापुरामें स्थानविराट ।

विश्राम० ता० पु० सुप्त, चैन, क्ल।  
 विश्राविगंधा० ता० स्त्री० आहूनेर ।  
 विश्लेष० ना० पु० वियोग ।  
 विश्व० ना० पु० जगत्, देवतोंकी जाति जिसमें  
 दरानस इत्यादि हैं, सौंड, सप्त ।  
 विश्वकर्मा० ता० पु० देवतों का धरई ।  
 विश्वगन्धिका० ता० स्त्री० आहूनेर ।  
 विश्वदेवा० ता० पु० गंगेय्या ।  
 विश्वनाथ० ना० पु० कारी मं प्रभाशिव ।  
 विश्वभेषज० ना० पु० साठ ।  
 विश्वम्बर० ता० पु० परमामा, ईश्वर ।  
 विश्वम्बरा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।  
 विश्वरूप० ना० पु० सर्वरूप, ईश्वर, विराट  
 ता ।  
 विश्वरूपक० ता० पु० बाला अगत् ।  
 विश्वविमोहन० ता० पु० कामदेव ।  
 विश्वसर्ग० ना० पु० ब्रह्मा, कर्ता, विगाता ।  
 विश्वामित्र० ता० पु० अनुचिराय, धनुर्वेद  
 कर्ता ।  
 विश्वास० ना० पु० प्रतीत, भरोसा, प्रयय ।  
 विश्वासघात० ना० पु० विश्वास का इनन ।  
 विश्वासघातो० ना० पु० विश्वास का घत  
 कर्ता, जो मित्रनामें छलकरे ।  
 विश्वासी० गु० प्रतीत वा भरोसा रखनेहारा ।  
 विश्वेश्वर० ता० पु० विश्वनाथ, भगवान् ।  
 विश्वौषधि० ता० स्त्री० सौंड ।  
 विश्व० ता० पु० मल्ल, इलाइल ।  
 विश्वण० ता० पु० ब्रह्मा, सूर्य ।  
 विश्वद० गु० विराट, ईश्वर, गरुड, डेट ।  
 विश्वधर० ता० पु० साय, सर्प, धर्मदादेव ।  
 विश्वस्यसी० ता० पु० नागरमाषा ।  
 विश्वपुष्पक० ना० पु० मेनकस ।  
 विश्वम० गु० अष्टम गिनती यथा ३ । ५ । ७  
 जा बराबर १ हो, अमम, कपिन, भयानक, ना०  
 पु० चरविशेष ।

विषमत्रिभुज० ना० पु० जिसकी भुजा तुल्य  
 न हों ।  
 विषमान० ना० पु० औषधि वा निषविशप ।  
 विषमुष्टक० ना० पु० महार्जव ।  
 विषय० ना० पु० इन्द्रिया निन वस्तुओंको ग्रहण  
 करती हैं यथा स्वाद, रग रूप, रस, भोगादि,  
 काम, वात, अर्थ, अन्य० लिये, मध्ये ।  
 विषयक० गु० ससारी जगत् के ।  
 विषयी० गु० जो विषयों में आसक्त ।  
 विषवैद्य० ना० पु० जागलिक, गार्कड़ि जो सर्पादि  
 कायेना विष उतारता है ।  
 विषहा० गु० जो निषसे मरा है ।  
 विषाण० ना० पु० पशुके साग ।  
 विषाद० ना० पु० धकाई, उदासी, दुःख ।  
 विषादी० गु० उदासी, धका, दुःखी ।  
 विषानिका० ता० स्त्री० मेदासिही ।  
 विषुव० } ना० पु० जन दिन रात समा  
 विषुवत् } हावा है उसीका नाम ।  
 विषुवत्काल० ना० पु० जिस समय सूर्य विषु  
 वत् रतापर रहते हैं ।  
 विषुवद्रेखा० ना० स्त्री० रेखा, भूमि क ऊपर  
 सूर्य मं समान त्त डालने से जा रेखा क  
 लित है ।  
 विषे० अन्त्य० म, नाच, मप्य ।  
 विष्कर० ता० पु० सुर्गा ।  
 विष्ठा० ता० स्त्री० बीर, मल, दुह ।  
 विष्ठाटमि० ता० पु० विष्ठा का वाज ।  
 विष्टि० ता० स्त्री० भद्रा, कुयोग ।  
 विष्टर० ता० पु० आसनविशेष ।  
 विष्टरधवा० ता० पु० विष्णु, नारायण ।  
 विष्णु० ना० पु० सातु, मनुष्य, सूर्य, अग्नि,  
 मनु, धीनारायण ।  
 विष्णुकाता० ता० स्त्री० पौधाविशेष, बी  
 भागाई ।  
 विष्णुपद० ना० पु० आकारा, अक्षविशेष,  
 गीतविशेष ।

विष्णुपद्मी० ना० रत्नी० श्रीगंगानी ।  
 विष्णुपद्य० ना० पु० विष्णु का भना ।  
 विष्णुवल्लभा० ना० स्त्री० लक्ष्मी, पुत्रता ।  
 विस्र० सर्व० उक्त ।  
 विसर्ग० ना० पु० दो विन्दुमान, वर्णविशेष ।  
 विसर्जन० ना० पु० विदा, त्याग, दाा, पूरा ।  
 विसारण० ना० पु० विस्मरण ।  
 विसृति० वि० विता, दृति ।  
 विस्त० } ना० पु० फलान परमार, धारा  
 विस्त० } वज, चौहान, आमार ।  
 विस्तीर्ण० पु० वना, फेनादुधा, फैला ।  
 विस्तृत० गु० फलाया, पतारा, विस्तारयुत ।  
 विस्फोटक० ना० पु० फोडा, बेचक, भाता ।  
 विस्मय० ना० पु० आश्चर्य, अचम्भा, शोक,  
 सदेह, शन ।  
 विस्मरण० ना० पु० भूल, भूक, भुलान ।  
 विस्मित० गु० आश्चर्यित, अचम्भित, चकित,  
 चितित ।  
 विस्मृत० ना० ना० भूल भुलाह ।  
 विस्वाद्गु० गु० स्वादही, नीरस ।  
 विहग० ना० पु० पक्षी, विहा, विधिया ।  
 विहगेश० ना० पु० गरुड ।  
 विहग० ना० पु० पक्ष, चिन्धिया ।  
 विहङ्गपति० ना० पु० गरुड ।  
 विहगम० ना० पु० पक्षी, विहग ।  
 विहगराज० ना० पु० गरुड, वैनेय ।  
 विहारडन० ना० पु० वाहन, वेदन, भेदन ।  
 विहरण० ना० पु० गमन ।  
 विहरना० अ० क्रि० फटना, चक्कना ।  
 विहसना० अ० क्रि० हसना, सितना ।  
 विहाय० अ० य० त्याग, छोड, सियाय ।  
 विहायस० ना० पु० आकार ।  
 विहायसी० ना० पु० पक्षी, विधिया ।  
 विहार० ना० पु० वाहा/मानद, पूरा ।  
 विहारस्थली० ना० रथी० काशानर ।

विहारी० गु० श्रीज्ञानरत्न, नचड, चपल ।  
 विहित० गु० उचित ।  
 विहीन० गु० त्यगित, रहित, अतिवीर्य,  
 गितर ।  
 विह्वल० गु० व्याकुल, धक्का ।  
 विक्षिप्त० गु० डमत्त, उपा ।  
 विक्षेप० ना० पु० व्याकुलता, त्याग, चूक,  
 विधा ।  
 विघ्न० पु० चतुर, विपुष विघ्न ।  
 विघ्नता० ना० स्त्री० विपुषता, चातुर्य, जान  
 कारी ।  
 विज्ञप्ति० ना० स्त्री० विज्ञप्ति, विनय ।  
 विज्ञान० ना० पु० विशेषज्ञान, अनेकविधि,  
 आश्चर्य रस ।  
 विज्ञाननिधान० ना० पु० महाशक्ती, ब्रह्मज्ञानी  
 अथ्यामज्ञाना, ब्रह्मज्ञानी ।  
 विज्ञानी० गु० परमज्ञानी, अतिचतुर, महा  
 परिणत ।  
 विज्ञापन० ना० पु० जनाचना, चिताना ।  
 वीचि० } ना० स्त्री० लहरी, मोन ।  
 वीचिका० }  
 वीज० ना० पु० मूल, वारण, निया, पानी ।  
 वीणा० ना० स्त्री० तम्बूर, नादाविशेष ।  
 वीतराग० ना० पु० विरागयुक्त, वैरागी ।  
 वीथिका० } ना० स्त्री० गली, मार्ग नाट, राह ।  
 वीथी० }  
 वीथ्य० गु० दा, २ ।  
 वीर० ना० पु० शय, सम्रा, बहादुर, भाई ।  
 वीरता० ना० स्त्री० } धैर्यापन, बहादुरी ।  
 वीरत्व० ना० पु० }  
 वीरपुण्या० ना० स्त्री० सहदवी मीथा ।  
 वीरमर्त्य० ना० पु० शिवगणविशेष ।  
 वीरभाव० ना० पु० सामर्थ्य, वीरता, बहा-  
 दुरी ।  
 वीरभूमि० ना० स्त्री० भुवस्थान, ना० पु०  
 बगलदरा मं एक किलघ ।

धीररस० ना० पु० काव्यरसनिर्माण, वीरता ।  
 धीरवृक्ष० ना० पु० भिलासा वृक्ष ।  
 धीरसेन० ना० पु० आहू ।  
 धीरा० ना० पु० कला ( कदली मयनी भोवा  
 रम्भावीरापरश्वदा, इति निघण्टे ) काकोली,  
 पान ।  
 धीर्य्य० ना० पु० मीन, सामर्थ्य, बल ।  
 धीर्य्यकर० ना० पु० उड़द अत्र ।  
 धुर्ही० अन्व० उत्ती समय वा उत्ती स्थापना,  
 शभी ।  
 धुरला० } ना० स्त्री० मीना तुम्बी, लोरी, राम  
 धुरती० } तुर्ही ( तुम्भिणि महाकुम्भी राजला  
 धुरला वृषी इति निघण्टे ) ।  
 धृक० ना० पु० भेड़िया, हुण्डार, पपीहा पपी,  
 देव्यनिशेष ।  
 धृत्त० ना० पु० गोल, गोलारार, देवनिशाप ।  
 धृत्तपरण्ड० ना० पु० जा दा नियात्रों आर  
 मन्थरथ चापसे धिराही, वृत्तका इवडा ।  
 धृत्तफल० ना० पु० तालऊगा ।  
 धृत्तांश० ना० पु० गेलना अश ।  
 धृत्तान्त० ना० पु० समाचार, वार्ता, कथा,  
 कहानी ।  
 धृत्तार्क० ना० पु० गालाक, गाला आधा ।  
 धृत्ति० ना० स्त्री० आचरण, स्वर्ण, धपा,  
 जीविका, व्यवहार, एतना अर्थ, टीका ।  
 धृथा० अन्व० व्यर्थ, भ्रष्ट, निष्कृत, अगतल ।  
 धृद्ध० गु० वृद्ध ।  
 धृद्धक० गु० वृद्धकारक, बढ़ाकार ।  
 धृद्धतम० गु० बहुपुत्र ।  
 धृद्धता० ना० स्त्री० बुद्धता, बुद्धपन ।  
 धृद्धप्रपितामह० ना० पु० प्रपितामह वा  
 पिता ।  
 धृद्धप्रपितामही० ना० स्त्री० प्रपितामह की  
 माता ।  
 धृद्धधवा० ना० पु० इन्द्र ।  
 धृद्धा० ना० स्त्री० बुद्धता, बुद्धता ।

धृद्धापन० ना० पु० बुद्धता बुद्धता ।  
 धृद्धावस्था० ना० स्त्री० बुद्धता, बुद्धता ।  
 धृद्धि० ना० स्त्री० बढ़ती, बढ़, अधिकाता ।  
 धृन्तफला० ना० स्त्री० अस्तो ।  
 धृन्ता० } ना० पु० भाग, वेग ।  
 धृन्ताकी० }  
 धृन्द० ना० पु० समूह, पूय, ऊण्ड, देर ।  
 धृन्दा० ना० स्त्री० तुलसी, देवीविरोध जा  
 धृदाना में है ।  
 धृन्दारक० ना० पु० देवता, सुर ।  
 धृन्दावन० ना० पु० तीर्थ वा नगरनिशाप ।  
 धृन्दिचक० ना० पु० विच्छ, आन्वी राशि ।  
 धृन्दिचकाला० ना० स्त्री० भेदासिद्धि ।  
 धृप० ना० पु० बल, दूसरी राशि, वर्ष का पुत्र,  
 इन्द्र कामदेव, धर्म, धाताभोधा ।  
 धृपकेतु० ना० पु० श्रीमहादेवनी, वर्षका पुत्र ।  
 धृपदश० } ना० पु० निलानपशु, निलार,  
 धृपदशक० } महाभारते भीष्मपराधि यथा,  
 ( यथापेवराहस्य वृषदशस्यचोभयो, मण्डलदुद्ध  
 तारात्रा रात्रियभरास्य ) ।  
 धृपम० ना० पु० बल, धर्म, दत्यनिशाप ।  
 धृपमध्वज० ना० पु० श्रीमहादेवनी ।  
 धृपमानु० ना० पु० श्रीमहादेवनी पिता ।  
 धृपमाही० ना० स्त्री० इन्द्रवाणी ।  
 धृपा० ना० स्त्री० अलगध ।  
 धृपादित० ना० पु० उपरासार मूर्त्य ।  
 धृष्टि० ना० स्त्री० मह, वप, बरुणा ।  
 धृष्टीरांची० ना० स्त्री० मारि आपुनि ।  
 धृष्ट्यगन्धा० ना० स्त्री० मिडल ।  
 धृह० ना० पु० चलना, बढ़ना ।  
 धृहती० ना० स्त्री० बढ़ा करी ।  
 धृहत्० गु० बढ़ा, चीता ।  
 धृहत्परण्ड० ना० पु० बढ़ा, उड़कना, धृष्ट  
 चयन ।

घृहच्छा० ना० स्त्री० सहदेवी ऋषिा ।  
 घृहद्राज० ना० पु० कसेरु ।  
 घृहभ्रानु० ना० पु० सूर्य, अग्नि ।  
 घृहस्पति० ना० पु० पाचवा मह, देवपुरोहित ।  
 घृहस्पतिवार० ना० पु० पाचवावार, विहङ्ग ।  
 घृक्ष० ना० पु० पक, तरवर ।  
 घृक्षकन्दा० ना० स्त्री० विदारीकद, मूसली ।  
 घृक्षमूल० ना० पु० वृक्षो जड़ ।  
 घृक्षमूलस्थली० ना० स्त्री० थाला, थांवला ।  
 घृक्षचल्ली० ना० स्त्री० विदारीकद ।  
 घृक्षसारक० ना० पु० गुमा, पीधविशेष ।  
 वेग० ना० पु० उतावली, पुर्त, अय्य० शीम ।  
 वेगगामी० } य० उतावला, शीमगामी, जल्द ।  
 वेगवती० }  
 वेगवान् ना० पु० पवन, चातापशु, गु० वेग  
 गामी ।  
 वेनि० } अय्य० शीम, जल्द ।  
 वेगी० }  
 वेणी० ना० स्त्री० त्रिवेणी अर्थात् प्रयाग म गंगा  
 यमुना सरस्वती का संगम, स्त्रियों की चाटी ।  
 वेणु० ना० पु० वंशी, घुरली, नास राजावराज ।  
 वेणुधर० ना० पु० श्रीकृष्णच द, नानीगर ।  
 वेणुवा० ना० पु० वरारोचन, नानीगर, ठग,  
 चालाक ।  
 वेतस० ना० पु० उन्नत, मिहनताना ।  
 वेतम० ना० पु० अम्लवत ।  
 वेताल० ना० पु० पिशाचविशेष, जिन ।  
 वेत्ता० ना० पु० ज्ञाता, ज्ञानी, जाननेहारा ।  
 वेप्र० ना० पु० वेत ।  
 वेप्रवती० ना० स्त्री० नदीविशेष ।  
 वेप्रवन्ती० ना० स्त्री० नदीविशेष ।  
 वेद० ना० पु० हिन्दू लोगों में आकाराव्यपुस्तक जो  
 चार हैं अर्थात् ऋग, यजु, साम, अथर्वण ।  
 वेदगिरा० ना० स्त्री० वेदवाणी ना० प० मुनि-  
 विराय ।

वेदप्रथी० ना० पु० विवेद अर्थात् ऋग, यजु,  
 साम ।  
 वेदन० } ना० स्त्री० पीड़ा, दुःख, दर्द ।  
 वेदना० }  
 वेदविद्० पु० वेदवादी, वेदवक्ता और वेद  
 पाठक ।  
 वेदव्यास० ना० पु० मुनिविशेष जिन्होंने वेदका  
 समर किया ।  
 वेदाङ्ग० ना० पु० वदका अंग अर्थात् शिषा १  
 बल्प २ व्याकरण ३ छन्द ४ व्याख्यान ५  
 निरुक्त ६ ।  
 वेदान्त० ना० पु० ईश्वर के विषयमें जो वार्ता  
 वद में निर्णीत है उसका अर्थो उपनिषदमें समझ  
 कियागया ।  
 वेदान्तविद्या० ना० स्त्री० जो वेदात् में है,  
 आत्मज्ञान, मङ्गलविचार ।  
 वेदान्ती० पु० वेदात् मतका ज्ञाता, आत्मवादी ।  
 वेदिका० } ना० स्त्री० अग्निहोत्र, चौक, वेदी ।  
 वेदी० }  
 वेध० ना० पु० विद्र ।  
 वेधक० ना० पु० विद्रवेया, वेधकार ।  
 वेधना० स० कि० छेदना ।  
 वेधमुख्य० ना० स्त्री० कर्तुरी ।  
 वेधी० ना० पु० वर्मा, वेधक ।  
 वेधभयानक० ना० पु० प्रलयपरात, मृतकरात ।  
 वेला० ना० स्त्री० समय, सायत, काल ।  
 वेशर० ना० स्त्री० बेसर ।  
 वेदम० ना० पु० धर, मङ्गल ।  
 वेश्या० ना० स्त्री० गणिका, पतुरिया, विनास ।  
 वेष्टकेसी० ना० पु० मोचरस ।  
 वेष्टन० ना० पु० बठन, लपटन ।  
 वेष्टित० पु० जा चारों आरसे ढका पूरा ।  
 वेष्टम० ना० पु० वरम ।  
 वै० अ० निश्चय ।  
 वैकल्य० पु० अकुल, निकल ।



वैकुण्ठ० ना० पु० विष्णुधाम, धिर, नारायण  
( विष्णुनारायण कृष्णो वैकुण्ठोविष्टरभवा ;  
हयमर ) ।

वैकुण्ठनाथ० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण ।

वैगन्ध० ना० पु० गन्धक ।

वैचित्रता० ना० स्त्री० चित्रविचित्र, रंगारंग ।

वैजनाथ० ना० पु० वैद्यनाथ ।

वैजयन्तिका० ना० स्त्री० अरणी ।

वैजयन्ती० ना० स्त्री० पताका, भण्डा ।

वैदूर्य्य० ना० पु० नीलमणि, नीलम ।

वैतरणी० ना० स्त्री० यमपुरी की नदी ।

वैताल० ना० पु० वितल, वेताल, पिराच, भाट,  
वदी ।

वैदिक० ना० पु० वेदपाठी, जो वेदात्त कर्म  
करता है ।

वैदेही० ना० स्त्री० पीपरी, श्रीसीताजी ।

वैद्य० ना० पु० चिकित्सक, तर्क, हकीम ।

वैद्यक० ना० पु० वैद्यविद्या की पुस्तक, वैद्य  
विद्या ।

वैद्यनाथ० ना० पु० धन्वतरि, भारतखण्ड में  
श्रीमहदेवजी ।

वैभव० ना० पु० राय, विभवता, ऐश्वर्य्य ।

वैर० ना० पु० शत्रुता, अदावत ।

वैरागी० ना० पु० जो वैराग्य धारण करे ।

वैराग्य० ना० पु० विषय त्याग, उदासपन ।

वैराट्ट० ना० पु० जगन् रूप सर्वरूप ।

वैरिन्० ना० स्त्री० शत्रु स्त्री, बेरी की स्त्री ।

वैरी० ना० पु० शत्रु, दुश्मन ।

वैलक्षण्य० ना० पु० विलक्षणता, भासांतर ।

वैलापत्रक० ना० पु० सुरय सर्प ।

वैद्यरूप० ना० पु० धर्मराज, मन्नाशप ।

वैद्यालय० ना० पु० वैशाख, दूमरा महीना ।

वैशाखी० ना० स्त्री० हृत्पत्राश, शूर्वी विष्टप ।

वैशाख्य० ना० पु० मत्स्य, मत्स्य ।

वैशेष्य० ना० पु० शास्त्रविशेष ।

वैश्य० ना० पु० तृतीय वर्ण, राजपूत, ज्ञाति  
विशेष, वैश ।

वैश्यका० ना० स्त्री० बुद्धी, बुद्धी ।

वैश्यनी० ना० स्त्री० वश्यकी स्त्री ।

वैश्रवण० ना० पु० कुबर, यक्षराज ।

वैषम्य० ना० पु० असमता, विषमता, एकात ।

वैपानस० ना० पु० वैरागी, उदासी ।

वैष्णव० ना० पु० विष्णुका उपासक, गुंजो  
विष्णुवाहि ।

वैष्णवी० ना० स्त्री० लक्ष्मी जो विष्णुकी है ।

वैसा० गु० उसके समान, उसीप्रकार ।

वैसे० अर्थ सेंट, विनामाल, गुप्त ।

वैज्ञानिक० ना० पु० विज्ञान, ज्ञाता, परमज्ञानी ।

वोदित० ना० पु० जहाज, बडीनाव ।

व्यक्त० गु० ज्ञात, मालूम, खुला, स्पष्ट, ज्ञानी,  
पढा, एक ।

व्यक्ति० ना० स्त्री० एकता, पृथगामा, ईर्ष्या,  
प्रकटता, विभक्ति ।

व्यग्र० गु० भूला, भटका, व्याकुल, घावरा ।

व्यमित० गु० चिंतापुत, विकलित ।

व्यग्न० ना० पु० लाहा, कुपिला ।

व्यगता० ना० स्त्री० कुपलता ।

व्यजन० ना० पु० पत्ता, बना ।

व्यजक० गु० प्रशक ।

व्यजन० ना० पु० दरराहत समस्त वण, शाक  
आदि तरकारा, चटनी ।

व्यतिक्रम० ना० पु० उल्लापन, अथवा,  
विद्वता ।

व्यतिरिक्त० गु० अलग, भिन्न, अर्थ ।

व्यतिरेक० ना० पु० भिन्नता, भेद ।

व्यतीत० गु० जा बीतगया, गुजरगया ।

व्यतापात० ना० पु० योगविशेष ।

व्यत्यय० ना० पु० उत्सव, अवकाश, विद्वता ।

व्यथा० ना० स्त्री० पीडा, बाधा, दुःख, दर्द ।  
 व्यथित० गु० दुःखित, पाकित ।  
 व्यभिचार० ना० पु० परकीर्णमन, कुकर्म ।  
 व्यभिचारिणी० ना० स्त्री० दुष्टास्त्री, कुलया,  
 सैरिणी, दिनला ।  
 व्यभिचारी० ना० पु० दिनला, सैरण, बदकार,  
 जो व्यभिचार करे ।  
 व्यय० ना० पु० लागत, लय, नारा, लर्च ।  
 व्ययक० गु० लर्च करनेहारा, नाराक ।  
 व्ययर्थ० गु० वृथा, निवन्मा ।  
 व्यलीक० ना० पु० कप, छल, भुड ।  
 व्ययच्छेद० ना० पु० अलग करना ।  
 व्यवधान० ना० पु० आच्छादन, अंतर, बीच,  
 बीचबिचाव ।  
 व्यवधायक० ना० पु० जा व्यवधान करे ।  
 व्यवसाय० ना० पु० उद्योग, परिश्रम, धन,  
 उपाय, तदनीर, छल ।  
 व्यवसायी० गु० जो व्यवसाय करे ।  
 व्यवस्था० ना० स्त्री० धर्मशास्त्री आज्ञा वा  
 वाक्य, अलग करना, दसा, रीति ।  
 व्यवस्थापक० गु० व्यवस्था का देनेहारा ।  
 व्यवस्थित० गु० जा भिन्न क्रियागया, जो व्यवस्था,  
 क्रियागया, अचल ।  
 व्यवहार० ना० पु० उद्यम, धर्मा, काम, टण्डा,  
 व्यापार, अन्धास, अगडा, चाल, रीति, धीते,  
 देनला ।  
 व्यवहारार्थ० गु० जा व्यवहार के योग्य है ।  
 व्यवहित० गु० समुक्त, टकाटुया, छुरा ।  
 व्यसन० ना० पु० जुरादि कुकर्म ।  
 व्यसनी० गु० जुरी आदि कुकर्म ।  
 व्यस्त० गु० व्याकुल, फैला ।  
 व्यकरण० ना० पु० सन्दूक समुन्नत उपवास  
 शास्त्र, जिस से पदनेप होवे ।  
 व्यकरणिणी० ना० पु० व्यकरणरता ।  
 व्याकुल० गु० मानस, अतिशय चिन्त, हैराण ।  
 व्याकुलता० ना० स्त्री० घबराहट, हैराणी ।

व्याख्या० ना० पु० } अर्थका व्याख्यान  
 व्याख्यान० ना० स्त्री० } कथा, दर्शन,  
 बतान ।  
 व्याघात० ना० पु० अटकान, योगविशेष ।  
 व्यघ्न० ना० पु० बाध, शेर ।  
 व्याघ्रपाद० ना० पु० काकई, बाघका पाव ।  
 व्याघ्रपुच्छ० ना० पु० दोनों धरण्ड ।  
 व्याघ्री० ना० स्त्री० छाग कर्ग, कविनी ।  
 व्याज० ना० पु० छल, ठगई, मिथ, ध्यान, वेद,  
 धाडा, बहाना ।  
 व्याजक० गु० छली, ब्याज, श्रेण ।  
 व्याजी० ना० पु० ध्यान लेनेहारा, छली ।  
 व्याजू० ना० पु० ध्यानके लिये जो श्रेण ।  
 व्याध० } ना० पु० आलस्य, हिंसक, शि-  
 व्याधा० } कारी जा धनक पशु भारतवे ।  
 व्याधि० ना० स्त्री० राग, पाडा जा तार आदि  
 से हाने ।  
 व्याधिघात० ना० पु० किरवाली ।  
 व्याधित० } गु० रोमी, पाकित, दुःखित ।  
 व्याधी० }  
 व्यान० ना० पु० उमरत शरार म व्यापक वायु,  
 प्राणविशेष ।  
 व्याप० ना० पु० रचाव ।  
 व्यापक० गु० फैलाइया, विभु ।  
 व्यापकता० ना० स्त्री० फैलान, विभुता  
 वैभव ।  
 व्यापना० अ० क्रि० सर्वत्र फैलना ।  
 व्यापाद० ना० पु० गारितरता, कुकर ।  
 व्यापार० ना० पु० काम धर्मा, चाली, धर्म  
 लक्षण, चिर ।  
 व्यापारार्थ० गु० जिसका अर्थ व्यापार है ।  
 व्यापी० गु० विभु, सर्वत्र फैलनेहारा ।  
 व्याप्त० गु० जो पैठगया, सर्वगत ।  
 व्याप्ति० ना० स्त्री० सर्वत्रगति, प्राप्ति लाभ ।  
 व्यामोह० ना० पु० पीडा, दुःख ।

व्यायामं ना० पु० परिधम, थकाई, मल-  
कर्म ।  
व्याल० ना० पु० सांप, सर्प, चीतापशु, हाथी,  
दिन, मूरमनुष्य ।  
व्यालदंष्ट्रकं ना० पु० मोल्लुरु ।  
व्यालपत्री० ना० स्त्री० ककड़ी ।  
व्याला० ना० पु० भरोला, घुहेरा, ना० स्त्री०  
सांघिन ।  
व्यालारि० ना० पु० भकई, भोट, न्योला,  
सिंह ।  
व्याली० ना० पु० श्रीमहादेवनी, गु० सपेरा ।  
व्यावहारिकं ना० पु० मंत्री, परामर्शी ।  
व्यास० ना० पु० कुतर, विस्तार, कैलाव,  
श्रीनिदव्यास ।  
व्यासाब्दं० ना० पु० आधाविस्तार ।  
व्यासेश्वरं० ना० पु० काशीके पार रामनगरे  
में व्यासस्थापित महादेव ।  
व्युत्क्रम० ना० पु० उलटाक्रम ।  
व्युत्पत्ति० ना० स्त्री० शास्त्रीय ज्ञान, विद्या,  
शब्दको भिन्न करने का ज्ञान, उत्पत्ति, दृढ़ता,  
निवाकी ।  
व्युत्पन्नं० ना० पु० व्युत्पत्तिमान्, विद्यावान् ।  
व्यूहं० ना० पु० युद्धहेतु सेनाकी रचनाविशेष,  
सेनाका कोटविशेष, समूह, शृण्ड ।  
व्योमं० ना० पु० आकारा, आसमान ।  
व्योमकेश० ना० पु० धीमहादेवनी ।  
व्योमचरं० ना० पु० पत्नी, देवता, मिह,  
नक्षत्र ।  
व्योमासुरं० ना० पु० दैत्यविशेष ।  
व्यौरजो० सं० कि० सुलमाना ।  
मजं० ना० पु० देशविशेष ।  
मज्जन्ति० कि० प्राप्त होताई, पाता है ।  
मज्जवासी० ना० पु० मज के लोग ।  
मजेन्द्रं० } ना० पु० श्रीकृष्णकेन्द्र  
मजेशं० }

मत्रं० ना० पु० पुण्यकर्मविशेष यथा तपस्यां  
उपवास ।  
मत्रेती० यु० जो मत्रकरे ।  
म्रात्यं० ना० पु० यह नामण जिसका यज्ञोपवीत  
नहीं भया ।  
म्रीडां० ना० स्त्री० लाग, लज्जा, हया ।  
म्रीहिं० ना० पु० अनेक प्रकार का धान्य ।  
[ श ]  
शकं० ना० पु० संवत् चलाभेहारा, राजा, यथा  
शालिवाहन, नातिविशेष, देशविशेष, संवत्,  
शाक ।  
शककर्त्तां० } ना० पु० शाका चलाभेहारा,  
शककारकं० } यथा कलिद्युग में सुधिधिर,  
निकमादित्य, शालिवाहन, विनयाभिनन्दन,  
नागादेव, नलि ।  
शकटं० ना० पु० छकड़ा ।  
शकुनं० ना० पु० शुभाशुभ का सूचक चिह्न,  
पत्नी, सगुन, चिड़िया ।  
शकुनीं० ना० पु० जो मनुष्य शकुनकी जानता  
हो, पत्नी, चिड़िया, वीरवोहा मन्त्री ।  
शकुन्तं० } ना० पु० पत्नी, चिड़िया  
शकुन्तिं० }  
शकुलं० ना० पु० कुटकी, मत्स्यविशेष ।  
शकृ० गु० सामर्थी, बलवान् ।  
शक्राह्वं० ना० पु० इन्द्रजी ।  
शक्तिं० ना० स्त्री० सामर्थ्य, बल, बरछी, सांग,  
देवताका पराक्रम जो अपनी स्त्रीरूपी दृहसाया  
गया, माया, देवी, भगवती ।  
शक्तिमान्० यु० बलवान्, सम्पत्ती ।  
शक्यं० यु० होनेके योग्य, करने के योग्य ।  
शक्यतां० ना० स्त्री० होने और करनेकी योग्यता  
वा सम्भव ।  
शक्रं० ना० पु० इन्द्र ।  
शक्रधनुं० } ना० पु० इन्द्रका धनुष, जो  
शक्रधनुषं० } वर्षामें निकलता है ना इन्द्रका  
धनुष ।

शक० ना० पु० भय, डर, मुख्यतः ।  
 शकर० ना० पु० श्रीमहादेवनी, कल्याण, मु०  
 सङ्घ, तग, वनिन, दुर्गा जिसमें दूसरा  
 मिल गया ।  
 शङ्करदेव० ना० पु० श्रीशिव, शङ्कराचार्य ।  
 शङ्करा० ना० रागिनीविशेष ।  
 शङ्कराचार्य० ना० पु० शङ्कराचार्य का मता  
 बलम्बी ।  
 शङ्कराचार्य्य० ना० पु० योगेश्वरविशेष जिन्हों  
 ने जैनमतका खण्डन किया ।  
 शङ्कराभरण० ना० पु० रागिनीविशेष ।  
 शङ्करी० ना० स्त्री० पर्वती ।  
 शङ्गा० ना० स्त्री० भय, डर, सक्का, जानरू,  
 जायकार, ह्मास ।  
 शङ्कित० शु० भयभीत, डराभया ।  
 शङ्कु० ना० पु० दूध, मत्स्यविशेष, बर्दा, बिल  
 विशेष ।  
 शङ्ख० ना० पु० जलजन्तुविशेष, वा उसका घर,  
 बरा घोषा ।  
 शङ्खचूड० ना० पु० रागाविशेष ।  
 शङ्खनाडी० } ना० स्त्री० शङ्खशैली ।  
 शङ्खपुष्पी० }  
 शङ्खलिखित० ना० पु० स्मृतिविशेष ।  
 शङ्खासुर० ना० पु० दैत्यविशेष ।  
 शङ्खाहोली० ना० स्त्री० वीधाविशेष ।  
 शङ्खिनी० ना० स्त्री० विशेष लक्ष्मणपुत्र की  
 स्वाहाविशेष वा मुद्रा से निकलती है ।  
 शङ्खोद्धार० ना० पु० शरिकाजी और काराजी  
 में तीर्थविशेष ।  
 शङ्खान० ना० पु० बाज, शिफरा ।  
 शङ्गी० ना० पु० कचूर, कचूरमद ।  
 शङ्ग० पु० मूत्र, टग, छलिया मूत्र ।  
 शङ्गता० ना० स्त्री० धूर्तता टग, धूर्तता ।  
 शङ्ग० ना० पु० सन ।  
 शङ्गसूत्र० ना० पु० छतली, सनका जाल ।  
 शङ्गड० ना० पु० साँड़ ।

शङ्गी० ना० स्त्री० साँड़िनी ।  
 शत० ना० पु० सौ, शत, १०० ।  
 शतखण्ड० ना० पु० सौखण्ड ।  
 शतधत्री० ना० स्त्री० तोप, बड़ीमुमुषुकी ।  
 शतदुःख० } ना० स्त्री० सतलज गदा जो पञ्च  
 शतदुःख० } में है ।  
 शतधन्या० ना० पु० यदवविशेष ।  
 शतपत्र० ना० पु० सकेद कपल ।  
 शतपदा० ना० स्त्री० सतावर, धनावर ।  
 शतपञ्च० गु० सात पाच १२ वा १०० ।  
 शतपरिव्रका० ना० स्त्री० दुर्गा, दूबपास ।  
 शतपाद० ना० स्त्री० सतावर, धनावर ।  
 शतपुष्पा० ना० स्त्री० सींक ।  
 शतभिषा० ना० स्त्री० पचीसवा नक्षत्र ।  
 शतभेदक० ना० पु० अम्लवेत ।  
 शतमत० ना० पु० सयधर्म, सचामत ।  
 शतमन्त्रु० ना० पु० इन्द्र ।  
 शतमूली० ना० स्त्री० सताविशेष ।  
 शतश अय्य० सैकड़ों ।  
 शता० ना० स्त्री० सौंक ।  
 शतानरि० ना० स्त्री० शतावर, धतावर ।  
 शत्रु० ना० पु० बैरी, शत्रु, दुश्मन ।  
 शत्रुम० ना० पु० छमियासूत, रामचन्द्र के  
 भाई ।  
 शत्रुता० ना० स्त्री० बर, दुश्मनताई ।  
 शनक० ना० पु० विनपसार, मुनिविशेष ।  
 शनि० ना० पु० सातवां मह, शनिश्चर ।  
 शनिवार० ना० पु० सातवांवार, शनिचर ।  
 शनि शनि० अय्य० हल्ले २, सहज २, धीरे २  
 शनिश्चर० ना० पु० सातवां मह ।  
 शपथ० ना० पु० किरिया साँड़, सीगद ।  
 शपद० ना० पु० चलि, छापाच, शराय वा  
 समा आदि ।  
 शपदप्रही० ना० पु० कान, अन्ध ।  
 शम० ना० पु० नाम शिदियों का निमद  
 अर्थात् त्याग ।

शमन० ना० पु० शक्ति, खलिदान, सम्राज,  
कपाल, श्लोषि

शमी० ना० स्त्री० वृक्षविशेष, कली, कीमी

शम्याक० ना० पु० किरवाली ।

शम्बुक० } ना० पु० कौडी, घोषा, सौपी,  
शम्बुक० } शाल ।

शम्भु० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।

शयन० ना० पु० सोना, नौद, हटनी,  
निखोना ।

शय्या० ना० स्त्री० निसपर शयन करत है ।

शर० ना० पु० बाण, तीर, सरकण्डा, जीति,  
तालाव, गणित में ५ ।

सरजन्मा० ना० पु० स्वामिकार्तिक ।

शरट० ना० पु० गिरगिट, कृकखास ।

शरण० ना० पु० घर, जो रक्षाकरे, आश्रय,  
पिनाह ।

शरणागत० श० आश्रित, जो शरणचढ़े, जो  
पनाह-मणि ।

शरदय० ना० पु० शरद, शरदके गोम्य ।

शरत्० स्त्री० } ऋतुविशेष, जिसमें कार,  
शरत्काल० पु० } कातिक है सामान्य शो-  
तकाल ।

शरत्पुष्प० ना० पु० दुपहरीफूल या उसका वृक्ष ।

शरद० स्त्री० } शरत्काल ।

शरद्वृक्ष० स्त्री० } शरत्काल ।

शरत्काल० पु० } शरत्काल ।

शरद्वर्ष० स्त्री० } शरत्काल ।

शरपुंखा० ना० पु० शरफाँका पीपलविशेष ।  
शराटा० ना० पु० शब्द, निर्नाद, ध्वनिनाशक  
शरास्यास० ना० पु० निशाना, वा चिह्न, निसे  
नाषादि। सन्नेपते है अर्थात् भाषांमारना  
सीकते है ।

शराय० ना० पु० सकोरा

शरावती० ना० स्त्री० नदीविशेष ।

शरावलि० ना० स्त्री० भाषां की पंक्ति, तारी  
का समूह ।

शरासन० ना० पु० धनुष, कमान

शरासुर० ना० पु० नाषासुर ।

शरीर० ना० पु० देह, तन ।

शरीरी० श० देही, प्राणी ।

शरणा० ना० पु० माणसे, तीरोसे, नाषकरके ।

शर्करा० ना० स्त्री० खाँड

शर्मा० ना० पु० ब्राह्मणके नामका उपपद ।

शर्वरी० ना० स्त्री० रात ।

शलभ० ना० पु० टिड्डी ।

शलाका० ना० स्त्री० शलाह, जंदवलेपडी,  
रुखर ।

शलादिनी० ना० स्त्री० कुडकी ।

शलीत० ना० पु० पैला, बौर ।

शल्य० ना० पु० रानाविशेष, ऊँगा, नाष, वृषु  
क्रियाका एक अंग ।

शल्यक० ना० पु० मैनफूल ।

शष० ना० पु० खारीलोन, खोप, मुतक ।

शशर० ना० पु० भील ।

शशरी० ना० स्त्री० भीलनविशेष, भीलनी,  
भीकुरारि ।

शशप० ना० स्त्री० दूबयादि नवीन वास (शशप  
न लनृथं वास, शयमरः) ।

शश० } ना० पु० शशा, चीमका ।

शशक० } ना० पु० शशा, चीमका ।

शशा० } ना० पु० शशा, चीमका ।

शशाक० } ना० पु० शशा, चीमका ।

शशिवर्ण० श० श्वेत, सन्धरूप, सफेद ।

शशिरस० ना० पु० अमृत, पीपल

शश्व० ना० पु० हथियार जो विनाकंठे, मारते है,  
यथा लहादि ।

शश्वमय० ना० पु० लोहा

शश्वी० हथियारवेन्द, अश्वपत्नी ।

शाक० ना० पु० साग, भांजी, पुष्पी, सात  
दोषमें से एकका नाम ।

शाकटुम्बुस्त्री० ना० स्त्री० माई श्लोषि ।

शाकवीजं ना० पु० बंधुवर्षः ।  
 शाकम्मरी० ना० पु० दुग्धवर्षः, गंगरिषिर्षः ।  
 शाकल० } ना० पु० निष्ठं जो चावल की लीपि,  
 शाकल्य० } आदि की मिलीली जो हमारे हैं ।  
 शाकवर्णिक० ना० पु० सुतोऊ, विवेकिणी ।  
 शाकधेष्ट० ना० पु० सजीवनी ।  
 शाका० ना० पु० शाक ।  
 शाकिनी० ना० स्त्री० देवीविशेष जो दुर्गा की  
 सहचरि है ।  
 शाक्य० ना० पु० शकिया उपासक, देवीपूजक ।  
 शाकती० ना० पु० शाक, भगवतीसहितप्रियाका  
 शाख० ना० स्त्री० काली, घुंघरी ।  
 शाखी० ना० स्त्री० काली, घुंघरी, शकती नहु  
 विचार ।  
 शाखाशृंग० ना० पु० नोनैर, केदरी ।  
 शाखाविलासी० ना० पु० शीतल, केदरी ।  
 शाखाशन० ना० पु० शरीर ।  
 शाखी० ना० स्त्री० वृष, शाखी ।  
 शांकरिः ना० स्त्री०, पार्वती, शंखरी ।  
 शाटिका० } ना० पक्षी, तपारी, क्षियों के पहरे  
 शाटी० } का बलविशेष ।  
 शाठ्य० ना० पु० शठता, ठगई ।  
 शाण० ना० पु० लकड़ान, जिसपर हाथपार, चाकू  
 आदि तेज करते हैं ।  
 शांडिल्य० ना० पु० विल, बेल, छविविशेष ।  
 शातकुम्भ० ना० पु० सुवर्ण सोना ।  
 शातवर्ष० ना० पु० धर्मशास्त्र का प्रवर्तकमुनिः ।  
 शानपाकी० ना० पु० शिरहदी ।  
 शान्त० गु० शिखर, ध्वनि, वंदा, मृत ।  
 शान्ति० ना० स्त्री० शिखरता, कुल, वंदाई, सुख,  
 विविध आदि में प्रसिद्ध कर्म ।  
 शाप० ना० पु० सराप, पिबति, बदरुजो ।  
 शान्दिक० गु० शन्दशास्त्र, धर्मशास्त्र ।

शारद० ना० स्त्री० सरस्वती, शोरदा, सदा ।  
 शारदा० ना० स्त्री० सरस्वती, शोचिनी ।  
 शारदी० गु० शीतल, शरद्वर्ष उपर्यं ही ।  
 शार्दूल० ना० पु० श्वेतलिह, बोई कीई मनुष्य  
 कहते हैं कि एक पंखी होवई जो शमीका पत्र  
 में दाब लेनाता है ।  
 शाल० ना० पु० शालवृक्ष, चिरोनी, कया,  
 मन्त्रविशेष, धेनु, श्यालि, शोभा, ऊषेवर्ष  
 विशेष, धन ।  
 शालक० गु० शाल, वेदनेहार, ना० पु०  
 शाला ।  
 शालपत्नी० ना० स्त्री० शोषविशेष ।  
 शाला० ना० स्त्री० श्याल, शरद्वर्ष ।  
 शालि० गु० शरद्वर्ष हेमन्तऋतु के ध्यान ।  
 शालिनी० ना० स्त्री० धनविशेष, वेदनेहार,  
 शालिवाहन० ना० पु० राजाविशेष, शाका  
 प्रचारक ।  
 शाली० ना० पु० शालि, पत्नी की बहिन, पु  
 देवी, वार, वंश, युक्त, स्वामी ।  
 शालीना० } ना० स्त्री० शोषका शरद्वर्ष  
 शालिश्रुता० }  
 शालूर० ना० पु० मेरुक (मेके मंडकविशेष  
 शालूरकवर्षदा, शरद्वर्ष) ।  
 शाल्मल० ना० पु० शीतविशेष जो सुजा के  
 सात दीपमें से है ।  
 शाल्मलि० } ना० पु० सुमरुवृक्ष ।  
 शाल्मली० }  
 शासन० ना० पु० शोष, शेरारत्नमो ।  
 शासना० ना० स्त्री० शंख, शक्ति, ताजना ।  
 शासनीय० गु० आराके योग्य, तांकीय ।  
 शास्ति० ना० स्त्री० शोष, शक्ति ।  
 शाख० ना० पु० शोला, हिन्दुलोगों के मन्त्रमें  
 शाखीय० पु० शक्तिविशेष, शयों विद्विषा  
 की पुतकें ।

शास्त्रविहित० गु० शास्त्रकी विधिसे, जो शास्त्र  
 वा है ।  
 शास्त्रज्ञ० ना० पु० शास्त्रज्ञ, शास्त्रज्ञानवृद्धि ।  
 शास्त्रार्थ० ना० पु० सुवाद, सुचर्चा, बहुसु ।  
 शास्त्री० गु० शास्त्र, धर्मज्ञ ।  
 शास्त्रीय० गु० शास्त्रसम्बन्धी, जो शास्त्रका है ।  
 शास्य० गु० शासन के योग्य ।  
 शिखापा० ना० स्त्री० बृहत्त्रियेषु, शिशुमन्वृत् ।  
 शिखादिजु० ना० पु० बृहत्पति ।  
 शिखादिनी० ना० स्त्री० जही ।  
 शिखरडी० ना० पु० मयूर, मोर, रानी हुपद ।  
 शिखरं० ना० पु० पर्वतकी धारका कोश, श्रेष्ठ, लौकिक ।  
 शिखरी० ना० पु० पर्वतकी जगती ।  
 शिखा० ना० स्त्री० शीर्ष, टमपू फन ।  
 शिखान्चूड० ना० पु० करारा, जुड़ाव ।  
 शिखि० ना० पु० मयूर, मोर, अग्नि ।  
 शिखिवाला० ना० स्त्री० मयूर, मार ।  
 शिखिवाहन० ना० पु० स्वामिकान्तक ।  
 शिखी० ना० पु० मयूर, मार, अग्नि, गुणनला ।  
 शिषु० ना० पु० सहिजा वृत् ।  
 शिथिल० गु० ढीला, धर्म, सुख, अर्थ, मद ।  
 शिथिलता० ना० स्त्री० ढालापन, धुन, धुक्न, सुस्ती, मादगी ।  
 शिथ्य० } ना० स्त्री० सेम वृद्धारी ।  
 शिथ्यका० }  
 शिर० ना० पु० सिर, मस्तिष्क, भुंके ।  
 शिरा० ना० स्त्री० योर्षी, सुप्त, नाना प्रसिद्ध द्वारा कथित सात शरीर म विरल है ।  
 शिरीष० ना० पु० बृहत् वृक्ष, सिरसीवृक्ष ।  
 शिरोघ्नी० ना० स्त्री० गलागर्दी ।  
 शिरोमणि० ना० पु० अविजित, मथिल, मथप निराप, गु० सदा, श्रेष्ठ, उत्तम ।

शिल० } ना० स्त्री० चगन, पथर, निरुत्पन्न  
 शिला० }  
 शिलामोती० ना० स्त्री० मनशिल ।  
 शिलाजीत० ना० पु० शिलोजीत ।  
 शिलाजित० ना० पु० शिलोजीत ।  
 शिलाहो० ना० पु० शिलोजीत ।  
 शिलायन्त्र० ना० पु० पथरका कीपा ।  
 शिल्प० ना० पु० चित्रादिकर्मा, कृतीगुणी, धूर्त, का काम ।  
 शिल्पकार० } ना० पु० धूर्त, रान, मेमार ।  
 शिल्पी० }  
 शिल्पीकर० }  
 शिव० ना० पु० शुभ, कल्याण, ललित, शैववा, मूआवला, गादक, श्रीमहादेवजी ।  
 शिवगिरि० ना० पु० कैलासपर्वत ।  
 शिवरात्रि० ना० स्त्री० शिवकी चतुर्दशी का शिवजन्म दिवाली व्रत ।  
 शिववाहन० ना० पु० नन्दीगण ।  
 शिवशैल० ना० पु० कैलास पर्वत ।  
 शिवसुत० ना० पु० श्री गणेशजी, स्वामिकान्तक ।  
 शिवसुतवाहन० ना० पु० मयूर, मयूर ।  
 शिवा० ना० स्त्री० श्रीपार्वतीजी, हृदयगुणलरी सा, सयाक, शाक ।  
 शिवालया० } ना० पु० शिवताम्र, मन्दिर  
 शिवाला० } वा मठ ।  
 शिवि० ना० पु० शिवविशेष जो शिवोपनिषत् ।  
 शिविका० ना० स्त्री० पालकी ।  
 शिवेश० ना० पु० सदा शिवजी, श्याल ।  
 शिविर० ना० पु० जागी, पीला, हिमन्त, शिव विशेष जो माघ क्रांति में होता है ।  
 शिशु० ना० पु० बालक, बच्चा ।  
 शिशुता० ना० स्त्री० बाल्य, लड़कपन ।  
 शिशुत्व० ना० पु० बाल्य, लड़कपन ।  
 शिशुपाल० ना० पु० राजा निरयुक्तनिशुको

पाएव के यह में श्रीहनुमन्दीनी के वष  
किया था ।

शिशुमार० ना० पु० मगरमच्छ ।

शिशु० ना० पु० शिला, उपदेरा, शीत, मन्त्र ।

शिशु० ग० आधीन, आझाकारी, जो आझाईलई,  
उत्तम, शेष ।

शिशुता० ना० श्री० आधीनता, उत्तमता ।

शिशुचार० ना० पु० आदर, सकार, समान,  
मिलकारी, नशर देना ।

शिशुचारी० गु० समानी, जो शिशुचार करे ।

शिशु० ना० पु० चेल, मवावलमनी, सौलने  
हारा ।

शिशुक० ना० पु० शुक, अत्यापक, उपदेराक ।

शिशु० ना० श्री० शील, उपदेरा, मन्त्र ।

शिक्षित० श० जो शिक्षाया वा पद्यागया, जो  
उपदेरा कियाया ।

शीकर० ना० पु० शंकी, पुहार ।

शीघ्र० अन्व० तुरत, हुत, उठावल, जल्द ।

शीघ्रगं० ना० पु० लखर, गथा ।

शीघ्रगामी० श० शीघ्र, चलनेहारा ।

शीघ्रता० ना० श्री० नेगताई, उठावल,  
शिवावी ।

शीत० ना० पु० हिम, जांघा, ठर, पाला, पीलू  
का रूप ।

शीतकटिघन्ध० ना० पु० पूर्वी के २३ई  
अरा उत्तर और २३ई अरा दक्षिण का भू  
मिलकर ।

शीतकर० ना० पु० चन्द्रमा ।

शीतकाल० ना० पु० जाड़े के दिन, हेमन्त ।

शीतग्वर० ना० पु० तपल नंद, विषमन्त्र के वि-  
परीत अर्थात् जाहा ।

शीतगौर० ना० पु० शंभू ।

शीतरज० ना० पु० कूर ।

शीतल० गु० ट्या ।

शीतलता० ना० श्री० टर, टया ।

शीतांशु० ना० पु० चन्द्रमा, कपूर ।

शीतांग० ना० पु० चंद्रोदर शैवांगिर ।

शीतांतिका० ना० श्री० तेजवल शैवपि ।

शीतांतं० गु० जो टर गया, जो जाड़े से कवि-

शीतोष्ण० गु० संतु गरम ।

शीर्षं० श० पतला, शीर्ष ।

शीर्षं० ना० पु० मस्तक, सिर, शीरी, ऊपर ।

शीर्षकोण० ना० पु० ऊपर का कोना ।

शीर्षिणी० ना० श्री० केशापाश, नालाकी बंधी ।

शील० ना० पु० स्वभाव, सभाव, सुख्युव ।

शीलघान्० ना० श० सुगील, मिलसार, नम्र ।

शीशं० ना० पु० सिर, मूह ।

शीशमं० ना० पु० वृषविशेष ।

शुकं० ना० पु० तोता, स्या ।

शुकलुदं० ना० पु० धुनेरा ।

शुकदेव ना० पु० शुक्राचार्य, भागवते  
वहा ।

शुकप्रियं० ना० पु० अनार ।

शुकवर्षं० ना० पु० धुनेरा ।

शुक्रार्थ्यं० ना० पु० सुनिशेष, व्यासपुत्र ।

शुक्रं० ना० पु० अश्लेष ।

शुक्रचण्डिका० ना० श्री० कमिनी वृद्ध ।

शुक्रं० ना० रवी० शीरी ।

शुक्रिजं० ना० पु० मोती ।

शुक्रं० ना० पु० लग्नमह, वीर्य, अग्नि, व्यंष्टमात,  
क्यावार, दैत्योका मुक ।

शुक्रदं० ना० पु० देवदार ।

शुक्रमाता० ना० रवी० माहा ।

शुक्रवार० ना० पु० शुकवार ।

शुक्रं० गु० श्वेतवर्ण, मारुषों में लग्नमह, विशेष,  
ना० पु० हृदय, सिद्धे जाता ।

शुक्रं० ना० पु० उनेलापाम ।



बहित० गु० शास्त्रकी विधिसे, जो शास्त्र

१० ना० पु० जो शास्त्रकी जानुवादि।

१० ना० पु० सुवाद, जूच, बहस।

१० गु० शास्त्रक, धर्मक।

१० गु० शास्त्रसम्बन्धी, जो शास्त्रका है।

१० गु० शास्त्र के योग्य।

१० ना० स्त्री० वृक्षविशेष, शीशमवृक्ष।

१० ना० पु० बृहस्पति।

१० ना० स्त्री० जुहा।

१० ना० पु० मयूर, मोर, राजा हुपद

१० ना० पु० पर्वतकी चारधाँ चोथे, शिव

१० ना० पु० पर्वत, पडेगा।

१० ना० स्त्री० चोथी, टमर फल।

१० ना० पु० केरापारा, जटाजूट।

१० ना० पु० मयूर, मोर, शनि।

१० ना० पु० मयूर, मोर, शनि, गु०

१० ना० पु० सहिजन वृक्ष।

१० गु० टीला, धक, सुहा, अटक

१० ना० स्त्री० टीलापत्र, धक, पुमानु

१० ना० पु० सिर, मस्तक, मूँडे।

१० ना० स्त्री० योर्नी, नास, गन्धाई, प्रमिमुके

१० ना० पु० वृक्षविशेष, सिरसीवृक्ष

१० ना० स्त्री० गलागर्दन

१० ना० पु० अविनशित, मधि का रूप

१० ना० पु० सदा, चर, उचम।

१० ना० पु० शिवजी का शिवालय

१० ना० पु० शिवजी का शिवालय

१० ना० पु० शिवजी का शिवालय

शिव० } ना० स्त्री० चदान, पत्थर की प्राण

शिलागोली० ना० स्त्री० मनशिल।

शिलाजीत० ना० पु० शिलाजीत, शिवजी

शिलाजित० ना० पु० शिलाजित, शिवजी

शिलाह० ना० पु० शिलाजीत, शिवजी

शिलापत्र० ना० पु० पत्थरका छीपा

शिल्प० ना० पु० शिल्पकार, कारीगरी

शिल्पकार० ना० पु० शिल्पकार, कारीगरी

शिल्पी० ना० पु० शिल्पकार, कारीगरी

शिव० ना० पु० शिवजी, कल्याण, ललित, शिवली

शिवगिरि० ना० पु० शिवजी का पर्वत

शिवरात्रि० ना० पु० शिवजी का व्रत

शिववाहन० ना० पु० नन्दीवध

शिवशैल० ना० पु० शिवजी का पर्वत

शिवसुत० ना० पु० श्री गणेशजी, स्वामिक

शिवसुतवाहन० ना० पु० मयूर, मयूर

शिवा० ना० स्त्री० शीवावतीजी, हड, श्यालकी

शिवालय० ना० पु० शिवजी का मन्दिर

शिविका० ना० पु० शिवजी का शिवालय

शिवेश० ना० पु० सदाशिवजी, श्याल

शिशिर० ना० पु० शिवजी का शिवालय

शिशु० ना० पु० शिवजी का शिवालय

शिशुता० ना० स्त्री० शिवजी का शिवालय

शिशुत्व० ना० पु० शिवजी का शिवालय

शिशुपाल० ना० पु० शिवजी का शिवालय

शृंग ना० पु० शिखर, पहाड़ की  
 शृंगनाम्नी० ना० स्त्री० ककरासिगी, शृंग  
 शृंगवेर० ना० पु० शोड, श्वरक  
 शृंगाट० ना० पु० मिषाडा  
 शृंगार० ना० सु० शिषम हस्त, शृंगार  
 शिगाड, शंवार, सनधन  
 शृंगारित० शु० शंवारिइई, शृंगारपुत्र  
 शृंगिका० ना० स्त्री० मेकासिगी  
 शृंगी० ना० पु० शिखर, शृंगी, शृंगी-  
 सिगी, भैसा, पर्वतशुनिविशेष  
 शृणु० कि० सुनो  
 शेखर० ना० पु० शिखर बांधने की फूलों की  
 माला, मस्तकमण्डप, शिखर  
 शेफालिका० ना० स्त्री० हरशिपाड  
 शेल० ना० पु० चमक विशेष  
 शेली० ना० स्त्री० शाय, शायों की लटप  
 शेलु० ना० पु० भेषी  
 शेलमुख० ना० पु० शिखर, बेल  
 शेष० ना० पु० शेषोक्ताना, परपीपर  
 शेष० ना० पु० श्वरिष्ट, समाधि, नाकी, नाग-  
 रानविशेष, शिखर सहस्र शिखर हैं, शिखर  
 विष्णुनारायण सोने हैं, शेषा  
 शेपावस्था० ना० स्त्री० शेषावस्था, शेषी  
 उमर  
 शेखरिक० ना० पु० शिखा  
 शैत्य० शु० शैली  
 शैथिल्य० ना० पु० शिथिलता  
 शैल० ना० पु० पर्वत, पहाड़  
 शैलराज० ना० पु० हिमाचल, पर्वत का  
 राजा  
 शैली० ना० स्त्री० शैली, बालिक, शु० पर्वती  
 शैव० ना० पु० शिवका उपासक  
 शैवाल० ना० पु० जलजीवी पौधाविशेष  
 शैवाल  
 शैवी० ना० पु० शैव

शैशव० ना० पु० शिशुता, शालकता, शैशु-  
 वरि  
 शोक० ना० पु० दुःख, शोक, सुता, वि-  
 ताप  
 शोकार्णव० ना० पु० दुःखका सागर, महा-  
 दुःख  
 शोकात्त० गु० शोकमस्त, शोकसे व्याकुल  
 शोच० ना० पु० शिवा, शकती, शंकर  
 शोचन० ना० पु० शिवा, मनमूढ, शि-  
 वाने  
 शोचना० घ० कि० शिवा, शंकर  
 शोचनीय० शु० जो शोचने के योग्य है  
 शोण० ना० पु० शुभविशेष, लालपुष्प, शूल,  
 मगधदेशका नद  
 शोणमद्र० ना० पु० मगधदेश में नदिसिद्ध  
 शोणित० ना० पु० शिवा, शोच, शंकर  
 शोध० ना० पु० शोध, शूल  
 शोध० ना० पु० शोधना, शोधना, पता, शोध,  
 शोधना  
 शोधन० ना० पु० शोधना, शोधना, शोधना  
 शोधन  
 शोधो० गु० जो शोधना, शोधना, शोधना  
 शोधना  
 शोध्य० गु० जो शोधने के योग्य  
 शोभन० गु० शोभना, शोभना, शोभना  
 शोभा० ना० स्त्री० शोभना, शोभा, शोभा,  
 शोभा  
 शोभायमान० गु० शोभायमान, शोभायमान,  
 शोभित  
 शोला० ना० पु० शोला, शोला, शोला  
 शोषक० गु० शोषक, शोषक, शोषक  
 शोषण० ना० पु० शोषण, शोषण, शोषण  
 शीच० ना० पु० शीत, शीत, शीत  
 शीचकर्म० ना० पु० शीतकर्म, शीतकर्म

शौनक० ना० पु० मुनिविशेष । ११० ८१११  
 शौरि० ना० पु० भगवत् शनैश्चर । १११११  
 शौरिप्रिये० ना० पु० विजयेश्वर । १११११  
 शौर्य० ना० पु० सुमीपक, बहादुरी । १११११  
 शमशान० ना० पु० मरुत, मृतक जलोत्थितो  
 स्थानविशेष । १११११  
 श्याम० ना० पु० कोकिला, काम्बोज से पश्चिम  
 देशविशेष, श्रीकृष्णच डण्डी, कालावर्ण । १११११  
 श्यामकर्ण० ना० पु० बड़े धोड़ा गिस्ता एक  
 का श्याम और केश पीत और सर्वेश्वरी  
 चन्द्रवर्ण होवे । १११११  
 श्यामल० पु० बालावर्णविशेष, पु० पीपरी । १११११  
 श्यामली० ना० पु० धीरे धोली, गीली । १११११  
 श्यामसुन्दर० ना० पु० श्रीकृष्णजी । १११११  
 श्यामा० ना० पु० श्यामरंग का पीपरी, बड़  
 पीपली, श्यामली, सुन्दरी, चरनेली, गिय गु०  
 रात, प्रीति, बालिकदेवी । १११११  
 श्यामाक० ना० पु० सामाधिका । १११११  
 श्यालक० } ना० पु० साला, पत्नी का । १११११  
 श्याला० }  
 श्येन० ना० पु० पक्षीविशेष, वाक । १११११  
 श्रद्धा० ना० पु० श्रद्धासयुक्त । १११११  
 श्रद्धालु० पु० श्रद्धासयुक्त । १११११  
 श्रम० ना० पु० थका, दीक्षुप, उद्यमकष्ट । १११११  
 श्रमसुन्द० ना० पु० श्रम करो में जो पसीना । १११११  
 श्रमित० पु० थका, मादा । १११११  
 श्रमी० पु० श्रमकरनेवाला, उद्यमी । १११११  
 श्रव० ना० पु० कान, बहने, चलन । १११११  
 श्रवण० ना० पु० कान, सुनान और बहने  
 गण । १११११  
 श्रवणशीर्षका० ना० पु० शीर्षा, सुपरी । १११११  
 श्रवणा० ना० पु० बहनेवाली नदी । १११११  
 श्रवणीय० पु० जो सुनने के योग्य है । १११११  
 श्रवत० कि० सुपत, बहती । १११११

श्रवती० ना० पु० नदी । १११११  
 श्रानुक० ना० पु० अहने । १११११  
 श्राद्ध० ना० पु० पितरों को शास्त्र रीति सन्धि  
 दा देना, यज्ञ । १११११  
 श्राद्धदेव० ना० पु० धर्मरान, यमराज । १११११  
 श्राद्धपक्ष० ना० पु० कागते, आश्विन कृष्ण । १११११  
 श्रान्त० पु० सुखित, जो थक गया, श्रमित । १११११  
 श्रान्ति० ना० पु० श्रम, परिश्रम । १११११  
 श्राप० ना० पु० शाप, आशीर्वाद से विपरीत,  
 बदशा । १११११  
 श्रापित० पु० शापित, आप दिया गया । १११११  
 श्रावक० ना० पु० जातिविशेष जो नास्तिकों  
 अर्थात् जेनियों के बिले है, नास्तिक । १११११  
 श्रावण० ना० पु० साय, चौथा महीना । १११११  
 श्री० ना० पु० सम्पत्ति, शोभा, सुन्दरता,  
 सुखी, शब्द के पहले बड़ाई का बोधक । १११११  
 श्रीकण्ठ० ना० पु० सदाशिव । १११११  
 श्रीकान्त० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण । १११११  
 श्रीकण्ठ० ना० पु० चदन । १११११  
 श्रीगह० ना० पु० शैतकमल, शोभाके धर,  
 लक्ष्मी का घर, प्रजाता । १११११  
 श्रीदामा० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी का एक  
 सला । १११११  
 श्रीशक्ति० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण । १११११  
 श्रीपणी० ना० पु० शोभा । १११११  
 श्रीपुष्प० ना० पु० लीग, लवण । १११११  
 श्रीफल० ना० पु० नारियल, बेल, आमला । १११११  
 श्रीमते० पु० भाग्यवान्, शोभा सयुक्त, धनी,  
 दय, दौलतवर । १११११  
 श्रीधर० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण । १११११  
 श्रीधराचार्य० ना० पु० श्रीधरविशेष जिहा  
 ने श्रीमद्भागवत का तिरा किया । १११११  
 श्रीनगर० ना० पु० नदीनाथ के नाम में पर्वत  
 पर नगरविशेष, कश्मीर में नगरविशेष । १११११  
 श्रीमन्त० पु० भाग्यवान्, धनी, शोभासयुक्त,  
 धनाढ्य, दौलतवर । १११११

श्रीयुक्त० } शु० यशवन्तः, सुख्यती, धुनी,  
 श्रीयुक्त० } भाग्यवान्, नामी ।  
 श्रीरंग० ना० पु० श्रीनारायण, विष्णुमी ।  
 श्रीरंगपट्टन० ना० पु० महारङ्गधाम्, मैसूर  
 देरा की राजधानी ।  
 श्रीराग० ना० पु० रागविशेष, श्रीसप्त रागनाम  
 श्रीषणा } ना० श्री० शोषी, मुञ्जोषी ।  
 श्रीवणी० }  
 श्रीवत्स० ना० पु० श्रीविष्णुनारायण, लक्ष्मी का  
 हृदय में वास ।  
 श्रीवट्ट० ना० पु० शिलहट्ट, नगराधिकारी  
 दास के मुरी है ।  
 श्रीहिंडोल० ना० पु० रागविशेष ।  
 श्रुत० शु० जो पुना गया ।  
 श्रुते० ना० पु० वेद, कर्म, ज्ञान, समाचार  
 ना० स्त्री० सुनाहट ।  
 श्रुतिमणि० ना० पु० कुरइल, कर्मरूत ।  
 श्रुतियुक्ति० ना० स्त्री० वेद, श्री, विधि,  
 शास्त्रोक्त ।  
 श्रुतीदम० ना० पु० भीलवृक्ष ।  
 श्रेणी० ना० श्री० पंक्ति, लकीर, कतार, समूह,  
 प्रविका ।  
 श्रेय० ना० पु० कल्याण, कीर्ति ।  
 श्रेयसी० ना० स्त्री० हक, गुणपीपर, गुसना ।  
 श्रेष्ठ० गु० उत्तम, अच्छा, सर्वसे मूला, प्रधान ।  
 श्रेष्ठता० ना० स्त्री० उत्तमता, प्रधानता, भे-  
 लान ।  
 श्रेण्य० ना० पु० कृषि, रत्न, लोह, धनु ।  
 श्रेणितिलका० ना० स्त्री० कश्यप की पत्नी ।  
 श्रेणि० ना० स्त्री० कदि, कतर ।  
 श्रेणिस० ना० पु० कषिर, रत्न, लोह ।  
 श्रोत० ना० पु० कान, कर्ण, नदी की धारा, कुर-  
 ना, सोता ।  
 श्रोतव्य० गु० जो सुनने के योग्य ।  
 श्रोतस्वरी० ना० स्त्री० नदी ।  
 श्रोता० ना० स्त्री० नदी, गु० सुननेवाला ।

श्रोत्र० ना० पु० कान, रोमरश्म, सुननेवाला ।  
 श्लाघनीय० गु० उद्धार के योग्य, मर्यादिक ।  
 श्लाघा० ना० स्त्री० खुति, मर्यादा, निम्नी ।  
 श्लाघ्य० ना० पु० श्लाघनीय ।  
 श्लीपद० ना० पु० श्याम, पीलापाया ।  
 श्लेष० ना० पु० निसपद के दो अर्थ वा  
 अधिक हैं ।  
 श्लेषा० ना० स्त्री० नवानुसव, अश्लेषा ।  
 श्लेष्या० ना० श्री० कृक, नाइटफकना, एकमा ।  
 श्लोक० ना० पु० पद्य, छन्द ।  
 श्वशुर० ना० पु० पत्नी वा पति का पिता,  
 ससुर ।  
 श्वश्रु० ना० स्त्री० सास, पत्नी वा पति की  
 माता ।  
 श्वसन० ना० पु० पवन, वायु, यथा ( प्रवेवा  
 वरुणःपारी यादसांप्रतिरुपतिः श्वसनः स्वरीतो  
 वायुमांतरिश्वासदावतिः इत्यमरः ) ।  
 श्वसनक० ना० पु० श्वापेया ।  
 श्वान० ना० पु० कुत्ता ।  
 श्वास० ना० पु० प्राणवैद्यु, सीम ।  
 श्वेत० गु० शुक्ल, धौला, सफेद ।  
 श्वेतता० ना० स्त्री० शुद्धता, उज्वलता,  
 सफेदी ।  
 श्वेतदेही० ना० स्त्री० दूध, घास ।  
 श्वेतपुष्पा० ना० स्त्री० इन्द्रवाकणी, कुनै-  
 वृक्ष ।  
 श्वेतफला० आहरे ।  
 श्वेतमूली० ना० स्त्री० पुननेय ।  
 श्वेतराजी० ना० स्त्री० चर्वका तरकारी ।  
 श्वेतसर्प० ना० पु० सफेद सर्प ।  
 श्वेता० ना० श्री० दूध घास ।  
 श्वेतिका० ना० स्त्री० सौंफ ।

[ ५ ]

श्व० ना० गु० धनु ।  
 श्वकोष० ना० पु० इन्द्रका वज्र, धनु, कुतिका ।  
 श्वक्क० ना० पु० लंबक प्रयाग, आषाढ, रवा-

पिधानं, मण्डप, अनाहत, विशुद्ध, प्रसा-  
 पटपद० ना० पु० भोरा, मधुमाखी, छद्र-  
 विशेष ।  
 पटपदी० ना० स्त्री० भ्रमरी ।  
 पटशाल० ना० पु० छः शाल अर्थात् श्याम,  
 वैशेषिक, मीमांसा, पातञ्जल, सांख्य, वेदान्त ।  
 पटप्रस्थि० ना० स्त्री० पीपरामूल ।  
 पटप्रच्युत० ना० पु० छः शत्रु अर्थात् वसन्त,  
 शीत, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर ।  
 पटउर्मी० ना० स्त्री० छः उर्मी अर्थात् शीत,  
 ऊष्ण, दुःख, सुख, मान, अपमान ।  
 पटलोक० ना० पु० छः लोक अर्थात् भू,  
 अन्तरिक्ष, स्वर्ग, पितृ, सूर्य, मन्त्रलोक ।  
 पटगुण० ना० पु० छः गुण अर्थात् निर्भेद, नि-  
 मोक्त्य, निर्मोद, निर्लोभ, निष्क्रीय, नि-  
 श्काम ।  
 पट्टरस० ना० पु० छः रस अर्थात् कृष्ण,  
 लवण, मीठा, चर्परा, कसेला, सारा ।  
 पट्टप्रस्था० ना० स्त्री० कचूर भेद ।  
 पट्टराम० ना० पु० छः राम अर्थात् मेघ,  
 भैरव, मलार, दीपक, श्रीहिंजोल, मालकोरा  
 और ऋगञ्जा बलेञ्जा ।  
 पट्टवदन० ना० पु० स्वामिकौस्तिक ।  
 पट्टविफार० ना० पु० छः विफार अर्थात् उ-  
 लति, शरीरवृद्धि, भालकटा, मीदता, वृद्धता,  
 मृत्यु ।  
 पट्टम० ना० पु० शरीर के छः अंग अर्थात्  
 हाथ, पां, कटि, शिर, वेदके छः अंग अर्थात्  
 ज्योतिष, व्याकरण, न्याय, गान्धर्व ।  
 पट्टगुण० ना० स्त्री० नच क्षीपवि ।  
 पट्टनेत्रिका० ना० स्त्री० करपुष्पी पत्नी ।  
 पट्टविशति० गु० दुःख, २६ ।  
 पट्टविशतितम० गु० क्षीपवि ।  
 पट्टविधि० ना० स्त्री० छः प्रकार ।  
 पट्टगवेद० ना० पु० वेदके छः अंग अर्थात्

शिक्षा, कल्प, व्याकरण, नित्य, ज्योतिष,  
 छन्दःप्रबन्ध ।  
 पट्टगसमाधि० ना० स्त्री० समाधि के छः अंग  
 अर्थात् राम, दम, उपराम, विषय, सुख, दुःख,  
 सामान, वेद, आचार्य, का, शाशाकरी, रोना,  
 एकामचित्त ।  
 पट्टानन० ना० पु० स्वामिकौस्तिक ।  
 पट्टद० ना० पु० गुणसक ।  
 पट्टमास० ना० पु० छः मास ।  
 पट्टमुख० ना० पु० स्वामिकौस्तिक ।  
 पट्टगु० गु० छः, ६, अठवा ।  
 पट्टि० गु० साठ, १० ।  
 पट्टी० ना० स्त्री० दुर्गानी, अठवा विधि, कारका ।  
 पट्टयन्त० गु० नित्यके अन्त में पठेका प्र-  
 त्यय है ।  
 पोट्टश० गु० सोलह, १६ ।  
 पीट्टराचन्द्रकला० ना० स्त्री० चन्द्रमा की १६  
 कला अर्थात् अमृता, मानदा, पूषा, सुधि,  
 तुष्टि, रति, धृति, शशिनी, चन्द्रिका, कान्ति,  
 जोस्ता, श्री, प्रीति, अंगदा, पूषा, पूष्य  
 अमृता १६ ।  
 पीट्टशविधपूजा० ना० स्त्री० सोलह प्रकार  
 से पूजा अर्थात् आवाहन, स्थापन, वाद्य,  
 सिंहासन, अर्घ्य, आचमन, स्नान, चन्दन, फूल,  
 धूप, दीप, नेत्रव, ताम्बूल, प्रदक्षिणा, नमस्-  
 कार, आरती १६ ।  
 पीट्टशष्टिकार० ना० पु० सोलह प्रकार के अर्थात्  
 शुक्ति, स्नान, निर्मलपद, महविद, वैशेषिक,  
 मानसिन्धु, भोक्तरीदि, निलकण्ठ, केसर-  
 मदन, महदीनग, कुण्डामारण्य, हेमामारण्य,  
 लवणादि आमरण्य, दातोमें मिरली, ताम्बूली,  
 आंती में सुरमा १६ ।  
 पीट्टशो० ना० स्त्री० मृतकका क्रम विशेष ।  
 [स.]  
 सं० अन्व० नित्यराम के आदि में इतको

प्रयोग होने उत्तरा अर्थ सहित, समान, से होता है ।

संई० ना० स्त्री० नदी विशेष ।

सै० अर्थ० सम, सहित, से ।

संभ्रन्दन० ना० पुं० शय्या, इत्र ।

सयम० ना० पुं० युगादि नियम, वार, परहेज ।

संयमनी० ना० स्त्री० यमपुत्री ।

संयमनीपति० ना० पुं० यमराज ।

संयमी० गु० नियमी, मध्यम ।

सयुक्त० गु० मिलाइया, संलग्न, लग्न ।

सयुग० ना० पुं० युद्ध, समर, लण, पर्व ।

संयुक्त० गु० समुक्त ।

संयोग० ना० पुं० मिलान, प्रव्यका मेल, संगठ, देनागत इतिहास ।

संयोगी० ना० पुं० मिलित, मिलाइया, संगी ।

संरक्त० गु० अक्षय, लालरंग ।

संरम्भे० ना० पुं० शेष, शेष, अद्धार ।

संलग्न० गु० समुक्त, संगत ।

संलग्नी० गु० मिलित, लगाइया, संगी, सयोगी ।

संलाप० ना० पुं० परस्पर बातचीत ।

संवत्० ना० पुं० वर्ष, शाका, साल, सङ्क ।

सवत्सर० ना० पुं० वर्ष, साल ।

सवत्सरी० ना० पुं० वर्षका व्यवहार ।

संवरण० ना० पुं० आवरण, आच्छादन ।

संवरना० अ० क्रि० समना, रीतिभित होना, मन्ना ।

संवर्त्त० ना० पुं० स्मृति प्रथिविशेष ।

संवर्त्तक० ती० पुं० नदेश ।

संवल० ना० पुं० दैवविशेष; जाता मार्गका ।

संवलारि० ना० पुं० कामदेव, प्रपुनजी ।

संवल० ना० पुं० धूम्रवर्ण ।

सयाद० ना० पुं० नर्तकी, प्रनोतर, चर्चा ।

संवाया० स्त्री० स्त्री० विपत्ति, कैरा, आवत ।

संवार० ना० रात्री, समाव, बनान, रीभा ।

संवारना० अ० क्रि० समना, बनाना, शृङ्गार करता ।

संशय० ना० पुं० चिन्ता, सन्देह, भय ।

सशयापन्न० गु० सदेही, चिन्तायुक्त, भयभीत ।

संसक्त० गु० समाप, मिला, युक्त ।

संसर्ग० ना० पुं० संगति, भेद, दर्शन, मेल, पड़ोस, समीप ।

संसर्गी० गु० मिलनसार, चिहारी, पड़ोसी, संगती ।

ससवा० ना० स्त्री० पत्नी ।

संसार० ना० पुं० जगत्, शृदाथम, दुनिया ।

संसारी० गु० लौकिक, जी सत्कारा है ।

संसृत० गु० संसारी, दुनियावी ।

संस्वार० ना० पुं० स्मरण के हेतु, ध्येनहार यथा गर्भोधानादि १० पवित्रता ।

संस्वृत० ना० पुं० दसपायी ।

संस्क्रितानुयायी० गु० देवतापी के अनुगार ।

संस्वृताभिदा० गु० संस्कृत भाषा जाननेवाले लोग ।

संस्थान० ना० पुं० टन, रूप, बनान, चतुष्पथ ।

संस्पर्श० ना० पुं० छुआइ, सत, लगाव ।

संहत० गु० टोस, इकट्ठा ।

संहति० ना० स्त्री० समूह, टेर ।

संहरण० ना० पुं० बध, हनन, मरण, हरन ।

संहरना० अ० क्रि० बधहोना, हरहोना, मारना ।

संहार० ना० पुं० नारा, बध, इया, गुं मारा, बधा ।

संहारक० अ० नाराक, नथिन ।

संहारना० अ० क्रि० बनना, नारा करना ।

संक्षेप० ना० पुं० सार, विशेष कथन, शोध, सारा, शुनाइया, मुल्लसर ।

संक्षिप्त० गुं० क्षु, क्षिपा, अक्षय ।

सक्षक० ना० पुं० नामी, नामक ।

संज्ञा० ना० स्त्री० नाम, शब्द, शक्ति, शक्ति ।

सकट० ना० पु० । छकड, खदी, गधेरानिका ।  
सकटाख्यं ना० पु० धक्कुर ।

सकटासुर० ना० पु० देवविशेष ।  
कृष्णजीने मारा था ।

सकटी० ना० स्त्री० खदी, गधी ।  
सकत० ना० पु० शक्ति ।

सकना० ध० कि० सामार्थ्य होना ।  
सकरा० शु० संकेत, छोट, तंग ।

सकराई० ना० स्त्री० संकेती, तंगी, छोट्यादि ।  
सकराना० स० कि० संकेत करेना, संकेतना, स्विकार करेना, कर्तूल करेना ।

सकरणा० शु० देवायुत, क्षिप्रता से ।  
सकर्मक० शु० कर्म सहित कियो ।

सकल० शु० सात, संमस्त, सर्व, सर्गरी ।  
सकाना० अ० कि० उदासहर्षिता, धकना, हर्षना ।

सकानी० शु० स्त्री० उदास हो गई, लज्जित, दयगई ।  
सकाम० ना० पु० काम वा कामना सहित ।

सकारना० स० कि० दुष्टी को लेखना, मूख करना, रोक करे करना, कर्तूलना ।  
सकारे० ना० पु० प्रातःकाल, संवे ।

सकिलना० अ० कि० समिठना, हटना ।  
सकिलाना० स० कि० समिठाना, हटाना ।

सकुचना० अ० कि० बरना, संशय करना, बुरना ।  
सकुचाना० स० कि० लजाना, डगमग ।

सकुचिन० शु० लज्जित ।  
सकुल० ना० पु० पसी, कुलसमेत, कंद ।

सकुलादानी० ना० स्त्री० संवृद्ध ।  
सकेत० शु० सकरा, तंग, छोट, ना० स्त्री० प्राण, दुमिष ।

सकेतना० स० कि० संवृद्ध, संवृद्ध करेना ।  
सकेलना० प० कि० सुवृद्ध, संवृद्ध, संवृद्धना ।

सकेला० ना० पु० संवृद्ध ।

सकोच० ना० पु० श्रद्धा सिमाना ।  
सकोरना० स० कि० समेटना, संकोचना, प्रेम करना ।

सकोरा० ना० पु० चटोया, मिठी वा उखावकी छोट वस्तु ।  
सकोरी० ना० स्त्री० घाली, विरिच ।

सकोध० शु० कोषसमेत ।  
सखर० ए० अधिक, खरयुत ।

सखा० ना० पु० मित्र, बंधु, प्रियतम ।  
सखी० ता० स्त्री० मित्रिणी, सहोत्री, संगित्री ।

सख्य० ना० स्त्री० मित्रता, प्रीति ।  
सखंड० ना० पु० सखंड, शखंड ।

सगर० ना० पु० अयोध्या के राजा ।  
सगरे० शु० सप, समल ।

सगर्भ० शु० गर्भिणी, गर्भवती ।  
सगपहिता० ना० पु० नगपहिता ।

सगा० शु० कां बुरा कर्तने वाला ।  
सगार्ड० ना० क० सखेना, खलु, निगाई, मंगेरी, दि कोरी, खेक, खुर, रिवाह, रिताह ।

सगुन० ना० पु० गुन ।  
संगे० ना० पु० समानगण, दूर दूरी ।

संगे० ना० स्त्री० माता ।  
संगानि० शु० निवार, शक्ति ।

संगेन० शु० भेग, वंशना, गुंजना ।  
सगाची० ना० स्त्री० सखी, सहोत्री ।

संकट० ना० पु० रिपति, दुःख, गल, प्राण ।  
संकटा० ना० स्त्री० संकट, दशाविशेष ।

संकर० ना० पु० देवपुत्र, मिश्रित-रत्ना ।  
संकरण० ना० पु० श्रीवन्देवकी, स्त्री ।

संकरण० ना० पु० संमद, देह, शक्ति, शीघ्र ।  
संकरन० ना० पु० संमद, शीघ्र, शीघ्र, शीघ्र ।

संकरित० ए० ना० जो बायबा, जो सुखद, शीघ्र-भिरासागपा, मा० पु० शक्ति ।  
संकरण० ना० पु० मंगरी, शीघ्र, शीघ्र ।

स्त्रीय कर्म में प्रतिज्ञाविशेष, दान महाना ।  
 संकल्पना० स० कि० दानदेना, नियम व प्र-  
 विज्ञा करना ।  
 संकाश० ना० पु० दृश्य, प्रकाशपुत्र ।  
 संकीर्ण० य० मन्नामच, पना ।  
 संकीर्तन० ना० पु० श्रुतों का गान ।  
 संकुचित० य० सङ्क्राम्या, सन्नित ।  
 संकुल० य० मन्नामच, पना, भरा हुआ, पूरा ।  
 संकुलित० गु० भरा, युक्त ।  
 संकेत० ना० पु० वचन, ध्वनि, सैन, शक्ति,  
 सलाह, इशारा, प्रकार ।  
 संकोच० ना० पु० सान, सन्ना, केशर, कानि,  
 चिलगोना, सिपट ।  
 संकोचन० ना० पु० सेंच, निमटाइ ।  
 संकोचना० स० कि० बधोरना, समेटना, लुनाना,  
 कानिकरना ।  
 संकोची० य० सनीला, सानवन् ।  
 संक्रम० ना० पु० सचार, समन ।  
 संक्रान्त० य० जो नीदगया, जो एकसे दूसरे को  
 सौपागया ।  
 संक्रान्ति० स्त्री० एक राशे से दूसरी राशि में  
 सर्षका जाना ।  
 संक्रिया० ना० स्त्री० विषविशेष ।  
 संख्या० ना० स्त्री० मूकदो घादिभिन्ती, शुभा ।  
 संग० ना० पु० सयोग, मेल, लीलाशोभा, धन्य०  
 । सत्य, इहित ।  
 संगपिछ० ना० पु० मोचरस ।  
 संगति० ना० स्त्री० मैथुन, भेट, मेल, मिलान ।  
 संगम० ना० पु० मेल, मिलान, मैथुन ।  
 संगर० ना० पु० युद्ध, सशर, धारदा, ध्वज,  
 धाननी, लरकर ।  
 संगसी० ना० स्त्री० सवसी ।  
 संगी० ना० पु० साथी, हमराही, मिलापी ।  
 संगीत० ना० पु० रागभेद, गान, गानेकी विद्या ।  
 संगीतदर्पण० ना० पु० रागविद्या का प्रय-  
 विशेष ।

संगोपन० ना० पु० विपात्र, गोपन ।  
 संग्रह० ना० पु० बधोर, संघेपन, सारार्थ लेना ।  
 संग्रहण० ना० पु० स्वीकार, करना, लेना ।  
 संग्रहणी० ना० स्त्री० अर्थात्सारविशेष ।  
 संगृहीत० गु० जो संग्रह किया गया जो ईकट्टी  
 किया गया ।  
 संग्राम० ना० युद्ध, समर, रथ ।  
 संघ० ना० पु० ऊपट, समूह, मेला, ढेर, संग ।  
 संघट० ना० पु० सयोग, मिलान, रगड ।  
 संघटन० ना० पु० रगडन, विसन ।  
 संघात० ना० पु० मारना, समूह, नदकविशेष ।  
 संघार० ना० पु० सघार ।  
 संघारक० ना० पु० संघारक, काल, भय ।  
 संघारना० स० कि० सद्धारना ।  
 सच० य० सत्य, सौच, धन्य० इ, ठीक ।  
 सचमुच० धन्य० सचवर ।  
 सचल० ना० पु० चलनेकी शक्ति, समेत, गु०  
 जो चत क्रिसके यथा मनुष्य, पशु, मर्षी ।  
 सचार्थ० ना० स्त्री० सत्यता ।  
 सचिव० ना० पु० मर्षी, वकीर ।  
 सचिवज० ना० पु० मैनीका पुत्र, वकीरताइ ।  
 सच्चु० ना० पु० ध्यानद, सत्य, सार्थ ।  
 सचेत० } गु० सचेत, चौकस, चेतन्य, सत्ता ।  
 सचेतन० }  
 सचेष्ट० गु० चेष्टापुत्र, उदयुक्त ।  
 सचीटी० ना० स्त्री० सचार्थ, सचइनेकीपाव ।  
 सद्य० } य० सत्य, ठीक, सार्थ ।  
 सद्यो० }  
 सचार्थ० ना० स्त्री० सचार्थ ।  
 सञ्जिदानः० ना० पु० मल, ईश्वर ।  
 सञ्छास्त्र० ना० पु० ज्योतिषशास्त्र ।  
 सज० ना० स्त्री० बीज, दण, सिंगार, शोभा,  
 रूप ।  
 सजक० ना० पु० श्यामा ।  
 सजग० य० शोभाकार, खबरदार, खनाई,  
 चौकस, चेतन्य ।



सजधज० ना० स्त्री० बनावट, रूप, सज्जना ।  
 सजन० ना० पु० पति, प्रियतम ।  
 सजना० अ० कि० बतना, फयना, साहना,  
 परिना, सुधरना, ना० पु० सजन, सजन ।  
 सजनी० ना० स्त्री० सती, सेहली ।  
 सजल० अ० जो जल से भरना ।  
 सजटा० ना० पु० सभिला, भाई, चरभाइयों  
 में से जो तीव्रता भाई हो उसका उपनाम ।  
 सजार्द० ना० स्त्री० बनावट, बनावट, राजाय,  
 रामायणे यथा तौ विधिदेहि माहि सजार्द ।  
 सजातीय० अ० समात, सम, जातिवा, एक  
 जाति का ।  
 सजाना० अ० कि० बनाना, रचाना ।  
 सजावट० ना० स्त्री० बनावट रचावट ।  
 सजीला० गु० सुदल सुदन, सुदर ।  
 सजीव० अ० जीवन, जीवधारी, जाव समेत,  
 धातु में ।  
 सजीवनि० ना० स्त्री० बृथविशेष ।  
 सजोयल० गु० बरतर समेत, इधियारवद ।  
 सज्जन० गु० सुभाव, आदरी, साधु, शीर  
 अज्ञा मनुष्य ना० पु० प्रियतम, प्याता ।  
 सज्जना० अ० कि० सजना ।  
 सज्जी० ना० स्त्री० स्वारविशेष ।  
 सभिक्या० ना० स्त्री० सभिक्या सतथादि ।  
 सभिक्यार० ना० पु० सभिक्या, शरीक ।  
 सभिक्यार० ना० पु० सभिक्या, शरारत ।  
 सचय० ना० पु० सप्रह, दर, समूह ।  
 सचयी० गु० सचय करनेहारा ।  
 सचार० ना० पु० संक्रमण, श्रुता सजी चक्रान,  
 मार्ग, राह, ज्ञान, चक्रान, निशान ।  
 सचारिका० ना० स्त्री० कुर्गी ।  
 सचारिणी० अ० स्त्री० चलानेवाली ।  
 सञ्चित० अ० जो ब्यारामया, प्रकृत धर्मा  
 सचेत० अ० सचेत ।  
 सक्षित० अ० क्षिप, शम ।

सजात० कि० उत्पन्न पैदा ।  
 सकट० ना० पु० लचीली छड़ी, भगान, मैत्र  
 मान इकारा नय ।  
 सटकना० अ० कि० भागाना, क्षिपना, अलग  
 होना ।  
 सटकार्द० ना० स्त्री० उतार, उदाह ।  
 सटकाना० अ० कि० निरस करना, क्षिपाना,  
 भगाना, बालाना ।  
 सटना० अ० कि० मिलना, उड़ना, क्षिपना ।  
 सटपटाना० अ० कि० श्रवणाना, उड़ना ।  
 सटा० ना० श्रवण गलक बाल, जटा ।  
 सटाना० अ० कि० क्षिपकाना, जोड़ना, लगाना ।  
 सटासट० ना० स्त्री० लगलगा ।  
 सटिया० ना० स्त्री० छड़ी ।  
 सटीक० अ० टीकासमेत, तिलकसमुक्त ।  
 सट्टियाना० अ० कि० सठ वर्षका आयुसे  
 अधिक हाना बुद्धिवल घटना ।  
 सट्टेका० ना० पु० पुष्ट, निशान, आवृत्त का  
 दिया जाता है ।  
 सट्टक० ना० स्त्री० राजमार्ग पथ, पैदा ।  
 सट्टन० ना० स्त्री० सत्पथ, गलना ।  
 सट्टना० अ० कि० गलना, उबलना ।  
 सट्टा० अ० गला, उबला ।  
 सट्टाप्र० ना० स्त्री० सट्टेको ड ।  
 सट्टाना० अ० कि० गला, उबलना ।  
 सट्टियल० गु० निबल, सट्टाका ।  
 सट्टेया० गु० सट्टियन ।  
 सट्टसी० ना० स्त्री० महान, समी साही ।  
 सट्टा० गु० पैदा मया ।  
 सट्टास० ना० पु० गायसाना, धाधार्म ।  
 सट्टासा० ना० पु० बर्दा मन्सी ।  
 सट्टासी० ना० स्त्री० सुपुत्री ।  
 सत्त्वं अ० स्वयं, ना० पु० धर्म, कर्म, मन्  
 मन्शन, रस, शक्ति, मन्वा ।  
 सतममा० ना० पु० सत्त्व, मन्वा ।

की पूजा विशेष वा ज्योतिर ।  
 सतमी० ना० स्त्री० सप्तमी ।  
 सतर० ना० स्त्री० तिथी, टेढ़ी ।  
 सतराना० घ० । १०० खोपित होना, कुदना ।  
 सतरौही० ना० स्त्री० टेढ़ी, तिथी ।  
 सतरक० गु० सावधान ।  
 सतलज० ना० स्त्री० पञ्चानकी नदी विशेष ।  
 सतलडा० गु० सतगुना, जिसमें सातलड है ।  
 सतसठ० गु० साठि और सात, ६० ।  
 सतसैया० ना० स्त्री० विहारीलास का विष्टव  
 ग्रथ विशेष ।  
 सतहत्तर० गु० सत्तर घोर सात, ७७ ।  
 सताना० स० क्रि० दु स देना, खेदना ।  
 सती० ना० स्त्री जो स्त्री पति के साथ अग्नि में  
 जलती है, पतिव्रता, दससुता ।  
 सतीमठ० ना० पु० स्थान जहा सती के शक्ति  
 आदिस्थापन करते है ।  
 सतीर्थ० ना० पु० जिन्हीं एक गुरु से अध्ययन  
 किया है, गुरुभार्य, सायापी, एक साथ के  
 पदनेहारे ।  
 सतीला० गु० पराक्रमी ।  
 सतीयाद० ना० पु० रथा निसमें सती हुई है ।  
 सतुया० } ना० पु० सत् ।  
 सतुआ० }  
 सतरुम० ना० पु० मलोकमें, ठीक काम ।  
 सतकार० ना० पु० समान, खोपत्र जलाना ।  
 सतकारि० ना० पु० सुदेवा जलानाला, समील  
 वा आदर करेहारा ।  
 सत्रिया० ना० स्त्री० मृतककी सुगति, उत्तम कर्म,  
 धानमगति ।  
 सत्तम० गु० श्रेष्ठ, बड़ा, मर्णादिक, साबुधों में  
 जो सब स अच्छा ।  
 सत्तर० गु० सातदहाई, ७० ।  
 सत्तरह० गु० दश घोर सात, ७७ ।  
 सत्ता० ना० स्त्री० बेल पराक्रम, मनीषा में जो  
 खान, आहार, वैद्य ।

सत्ताईस० गु०, शीस घोर सात, २७ ।  
 सत्तानवे० गु० नवे घोर सात, २७ ।  
 सत्तावन० गु० पचास घोर सात, ५७ ।  
 सत्तासी० गु० अरुमी और सात, ८७ ।  
 सत्तु० ना० पु० भूनेयव आदिका वृत्त ।  
 सत्पय० ना० पु० सुमार्ग, अष्टमार्ग ।  
 सत्पुन० ना० पु० सुपुन, मलापुन ।  
 सत्य० गु० यथार्थ, ठीक, निश्चय, साच ।  
 सत्यकेतु० ना० पु० रागाविशेष, सत्यकी  
 पताका ।  
 सत्यतु० ना० स्त्री० भलाई, सवाई ।  
 सत्ययुग० ना० पु० प्रथमयुग जो सप्तह लास  
 अर्द्धसहस्रवर्ष का प्रमाण है ।  
 सत्यभामा० ना० स्त्री० श्रीकृष्णकी स्त्री विशेष ।  
 सत्यभार० ना० पु० सीधा स्वभाव ।  
 सत्यलोक० ना० पु० ब्रह्मलोक स्वर्गविशेष ।  
 सत्यवचन० ना० पु० यथार्थ कहना, ठीक ।  
 सत्यवती० ना० स्त्री० वेदव्यास की माता, धर्मि-  
 व्रता स्त्री ।  
 सत्यवाद० ना० पु० सत्यवचन, ठीकवाली ।  
 सत्यवादी० गु० सच्चा, सच कहनेहारा ।  
 सत्यसिन्धु० गु० बड़ासच्चा ।  
 सत्यभोश० ना० पु० समूहभोश, निर्गमना ।  
 सत्यानाशी० ना० स्त्री० बटीला पोषाविशेष, गु०  
 जा निर्गमना, नष्ट ।  
 सत्यानृत० ना० पु० वाचि, व्यापार ।  
 सत्ययुग० ना० पु० मधुन, सत्ययुग ।  
 सत्य० }  
 सत्यगुण० } ना० पु० भलाई वा गुण ।  
 सत्यन्ता० गु० मला कीतिमान् ।  
 सत्यर० अर्थ० तुरन्त, शीघ्र, जल्द ।  
 सद्यराव० ना० पु० बुद्धिमें जो मीरगय उनेके  
 देर ।  
 सधिया० ना० पु० अथ वैद्य, जरीर, विद  
 विशय जो महानन लोग सतिके प्रथमपत्र में  
 करत है ।

सद० अन्य० सद्यः, तत्काल्य गु० श्रेष्ठ । ०।  
 सदन० ना० पु० स्थान, घर, मकान । ०।  
 सदय० गु० दयायुत, दयासहित । ०  
 सदया० ना० स्त्री० धर्मदयत्, पत्नी कीर्ती ।  
 सदस्य० ना० पु० त्रयं करो में जो व्युत्पादिक  
 का विचार करे वा सुभारे, देखनेवा । ०।  
 सदा० } अन्य० सर्वदा, निय, हमराह ।  
 सदाई० }  
 सदाकार० ना० पु० धाम का वृक्ष वा धर्म । ०।  
 सदागति० गो० पु० पवन, वायु । ०।  
 सदाचार० ना० पु० सर्वदाकाल ध्याचार करना,  
 श्रेष्ठचार, पनन, वायु, हवा । ०।  
 सदानन्द० ना० पु० सर्वत्र वा सर्वदाकाल  
 प्रसन्न, आनन्द । ०।  
 सदापुष्प० ना० पु० मेदारवृक्ष, कुन्दवृक्ष, नृक्ष,  
 जिसमें सर्वदाकाल फूल लगते हैं ।  
 सदाफल० ना० पु० नारियलवृक्ष, बेलवृक्ष  
 गुलरवृक्ष, पटहल, गु० वृक्ष जिसमें सदाकाल  
 मिलत हो । ०।  
 सदाव्रत० ना० पु० अतिथी और सतीदि की  
 नित्य भोजनदर्ता । ०।  
 सदाशिष्य० ना० पु० श्रीशिवजी का एकनाम ।  
 सदासुहागन० स्त्री० पत्नीविशेष, सुल  
 विशेष, प्रकीर वा भिक्षुक, जा स्त्री का भेष  
 करता है । ०।  
 सदैह० गु० देहसमेत । ०।  
 सदैश० भरावर, तुल्य, समान । ०।  
 सदैश० गु० समीप, पास । ०।  
 सदैव० अन्य० सदा, सर्वदा । ०।  
 सदैविक० गु० सत्रदिनवा, नित्यकाल । ०।  
 सद्योप० गु० दोषसमेत । ०।  
 सद्गति० ना० स्त्री० निस्तार, मुक्ति, प्राण ।  
 सगन्द० ना० स्त्री० सुगन्ध । ०।  
 सङ्गल० ना० पु० समूह, गिरोह । ०।  
 सङ्ग० ना० पु० घात, स्थान, मकान । ०।

सद्य० } अन्य० तुरंत, तुरन्त ।  
 सद्य० }  
 सङ्कता० गु० सत्य बहनेद्वारा । ०।  
 सद्दिवेक० ना० पु० सयविवेक, उत्तमज्ञान । ०।  
 सद्दिवेचक० ना० पु० जो यथार्थ का विचार ।  
 सधन० ना० पु० धन समेत । ०।  
 सधना० अ० कि० बनगा, हिलना, ठहरना,  
 थंभा । ०।  
 सधवा० ना० स्त्री० सुहागिनी, पतिवती स्त्री ।  
 सधाना० स० कि० मिलाना, बनाना, हिलाना,  
 पूराकरना, ठहराना, थंभा । ०।  
 सधी० गु० बुद्धिमत्, 'क्यासमेत', हिलो,  
 ठहरीहुई, सीखीहुई । ०।  
 सन० ना० पु० पीधाविशेष जिसकी लंबाई  
 रस्ती बनाते हैं, अन्य० से । ०।  
 सनकार० ना० पु० सेन, इशारह । ०।  
 सनकारना० स० कि० सैन्यना इशारह  
 करना । ०।  
 सनकारा० गु० इशारहकिया गया, जा सेन  
 दिया हुआ । ०।  
 सनत० ना० पु० सुनि विशेष । ०।  
 सनतकुमार० ना० पु० ब्रह्मा के चार पुत्र में से  
 एक जो आदि पुरुष था । ०।  
 सनना० अ० कि० गर्भणा होता, भरना, मूलागा,  
 गुथना । ०।  
 सन्निपात० ना० पु० रोगविशेष, जो बक पित्त  
 वात के मिगड़ने से होता है । ०।  
 सना० ना० पु० स्त्री० ओषधि विशेष, साय । ०।  
 सनाढ्य० ना० पु० ब्राह्मणजाति विशेष । ०।  
 सनातन० गु० जिसका आरम्भ और अतनही है  
 जो नित्य रहेगा । ०।  
 सनाथ० गु० नाथ सहित, निहाल, कुंठारि । ०।  
 सनाह० ना० पु० बरतार, गु० पतिसमेत । ०।  
 सनिया० ना० पु० टसरका बख विशेष । ०।  
 सनीचर० ना० पु० शनैरचर । ०।  
 सनीचरा० गु० अभागा, अपयशी, ना० पु०

गालिरर क निकृपर्वत विंशोपु जिसपर सतीचर की मूर्ति है ।

सनेह० ना० पु० तल, गु० स्नेह ।

सन्त० ना० पु० 'सायुवेगेष, ईशरत्नेन, गु० अन्धाधनो, भन्ता ।

सन्तत० अने० निर्दल, निरतर ।

सन्तति० ना० स्वा० सतान, वरी, पुत्रादि धी लाद ।

सन्तप्त० पु० पाकित, इ सिने, सत्पायगु, स तारसहित ।

सन्तरण० ना० पु० तरया, मह हावा ।

सन्ता० गु० विगडा ।

सन्तान० ना० पु० यम, लङ्कन ल कल्पवृक्ष ।

सन्ताप० ना० पु० शक, पीडा, दुःख ।

सन्तापित० गु० सतप्त, झुठान गवा, पीडित ।

सन्तापी० गु० शोभसमुक्त, उद स, इ ली ।

सन्ती० ना० पु० बदला, अन्य० बदल, पल, लिप ।

सन्तुष्ट० गु० धीरनी सत्तपी, तृप्त, मनमय हर्षित ।

सत्तोप० ना० पु० आन्द, बीज, हृष, सुस ।

सन्तापी० गु० परतज्ञान अन्दी, हर्षित ।

सन्या० ना० स्त्री० पल सव ।

सन्दर्श० ना० स्त्री० सपडसी, ससा ।

सन्दर्शन० ना० पु० साधारण ।

सदान० ना० पु० दानदानी, देही जा बीडा धार क पीवम बेपेते है, हुनारों का हर्षितार विशेष ।

सन्दिग्ध० गु० अन्वय, भ्रमीनी ।

सन्दिग्धभूत० ना० पु० जिसके नीक में स, उह है ।

सन्देह० ना० पु० सन्देह, शक, चिन्ता, शक ।

सन्दिशा० ना० पु० सन्देह, शक, चिन्ता, शक ।

सन्देसा० ना० पु० सन्देह, शक, चिन्ता, शक ।

सन्देसी० ना० पु० दूत, पगम्बर ।

सन्देह० ना० पु० शक, शक, चिन्ता, शक ।

सन्देहिक० गु० जिसमें सन्देहो ।

सन्देही० ना० पु० शक, चिन्ता, शक ।

सन्दोह० ना० पु० समूह, बहुतायत ।

सन्धान० ना० पु० अन्वेषण, खान, भाक, ल- गान, लगाव, मिलाव ।

सन्धानना० सं० वि० जोड़ना, लगाव, जोड़ना ।

सन्धाना० ना० पु० आचार ।

सन्धि० ना० स्त्री० मेल, सयोग मिलाव, खिद, दार, मिला ।

सन्ध्या० ना० स्त्री० संध्याकाल, गोमूत्र, साक, निकाने म उषामा समयका नाम, यथा मूष्यो दय, मध्यक, स्यात् ।

सन्नाटा० ना० पु० जलमी उदरोंका जो सन्द, वायु या भरी, स जा शब्द हाव है ।

सन्निर्दय० ना० पु० समीप समीची, निक- दया, समीपहीना ।

सन्निधान० ना० पु० समीप समीची, निक- दया, समीपहीना ।

सन्निधि० ना० स्त्री० समीप समीची, निक- दया, समीपहीना ।

सन्निपात० ना० पु० रागविशेष, ससम ।

सन्निहित० गु० निक, समीप, पास ।

सन्मान० ना० पु० अन्तर, इत्कार, मुर्खाता ।

समानार्थ० गु० जिस शब्द से प्रतिष्ठापार्थ, जोती है ।

सन्मानी० गु० शिष्टाचारी, आदरी, सन्कारी ।

सन्मुद० ना० पु० हृष, प्रीति, अन्वय, सुख ।

सन्प्राप्त० ना० पु० चौथा आक्षय, दिग्गन्ध ।

सन्प्राप्ती० ना० पु० चौथा आक्षय, दिग्गन्ध ।

सपदि० अय० लक्षण, तुम्ह, अर्थात् ।

सपना० ना० पु० स्वप्न ।

सपह्य० पु० मोहित पडन, यसेसहित ।

सपह्य० ना० पु० सहायक, समीप, गु० पल- स्मेत ।

सपीतक० ना० पु० पायासुर ।

सपुत्र० ना० पु० लड़के सहित ।

सपुत्र्या० ना० स्त्री० सपुत्री ।

सपूत० ना० पु० सपूत ।

सपूतार्द्र० } ना० स्त्री० सतुवता, सपूती ।  
सपूती० }

सपेला० ना० पु० } सापरावधा, छोटा  
सपोला० ना० पु० } साप, जमता साप  
सपोलिया० ना० स्त्री० } का बच्चा ।

सप्त० गु० सात ७ ।

सप्तार्द्रि० ना० स्त्री० साप्तार्द्रि अर्थात् अनादृष्टि  
१ अतिवृष्टि २ दीर्घा ३ मूषक ४ शुक्र ५  
स्वर्षेय ६ परसेय ७ ।

सप्तश्रुति० ना० पु० सातश्रुति अर्थात् पश्यप १  
अग्नि २ भरद्वाज ३ विश्वामित्र ४ ऋतम ५  
जमदग्नि ६ वशिष्ठ ७ ।

सप्तजिह्वाग्नि० ना० पु० अग्नि की सातजिह्वा  
अर्थात् काली १ कराली २ जयवती ३ रत्न  
शिखा ४ अवलनी ५ धूमपुत्रा ६ धूमराशि ७ ।

सप्तति० गु० सत्तर ७० ।

सप्तदश० गु० सत्तरह १७ ।

सप्तदेवपुरी० ना० स्त्री० सात देवपुरी अर्थात्  
विष्णुपुरी १ शिवपुरी २ ब्रह्मपुरी ३ अमरावती ४  
अलकावती ५ वरुणवती ६ ओर यमपुरी ७ ।

सप्तद्वीप० ना० पु० सातद्वीप अर्थात् जम्बू १  
सप्त २ कृश ३ क्रीच ४ शाक ५ शाल्माल ६  
पुष्कर ७ ।

सप्तपाताल० ना० पु० सात पाताल अर्थात् अत  
ल, वितल, रसातल, तलातल, महातल, पाताल,  
सुतल, ७ ।

सप्तपुरी० ना० स्त्री० अयोध्या, मथुरा, माया,  
वाशी, काची, अयतिका, द्वारका ७ ।

सप्तम० गु० सातवा ।

सप्तमी० ना० स्त्री० सप्तमीतिथि, अधिकरण ।

सप्तम्यन्त० गु० जिसके अन्तमें, सप्तमी का प्र  
त्यय है ।

सप्तमुख्यअक्षरा० ना० स्त्री० श्रुताची १ में

नका २ रश्मा ३ उर्वशी ४ तिलोत्तमा ५ सुकेरी ६  
महषोषा ७ ।

सप्तमुख्यवायु० ना० पु० सातमुख्यवायु अर्थात्  
श्रावाह, प्रवाह, अनुवह, सवह, दिवह, परावह,  
परिवाह ७ ।

सप्तयुद्ध० ना० पु० सात प्रकारका समर अर्थात्  
पथप, चक्र, कुत, स्रव, गदा, छुरिका, मस ७ ।

सप्तराज्यांग० ना० पु० राज्य के सात अंग अ-  
र्थात् स्वामी, मन्त्री, देश, फारा, मित्र, गद,  
सैन्य, ७ ।

सप्तविंशति० गु० सत्तारह २७ ।

सप्तविंशतितम० गु० सत्तारहवा ।

सप्तसिंधु० ना० पु० सात समुद्र अर्थात् लवणा  
द, रसोद, सरासि, पृथ्वीनिधि, दधिनिधि, घीर-  
निधि, जलनिधि ७ ।

सप्तस्वर० ना० पु० सातस्वर अर्थात् गहन, ऋ  
षभ, गूथार, मध्यम, धैवत, निषाद, पचम ७ ।

सप्तस्वर्ग० ना० पु० सातस्वर्ग अर्थात् भूलोक,  
भुवलोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक,  
सत्यलोक ७ ।

सप्ताश्व० ना० पु० सूर्य ।

सप्ताह० ना० पु० अठवारा, हफ्तह ।

सप्ति० ना० पु० घोड़ा, यथा धाजिनारार्थं गधर्व  
यह सेधन सप्तय इयमर ।

सफरी० ना० स्त्री० मस्य, मछली ।

सय० गु० सर्व, सारा, ना० स्त्री० रात ।

सयरस० ना० पु० जल, पानी ।

सयल० गु० बलवान्, प्रौढ़, पहलवान ।

सयलता० } ना० स्त्री० बल, प्रौढ़ता, पहल  
सयलार्द्र० } वानी ।

सथेर० गु० समय स पहले, ठीक वा अर्ध  
समय ।

सथेरा० ना० पु० भोर, शान्ति, तड़का ।

सथेरे० अव्य० तड़के, भोरहै ।

सपोतर० ह० सर्तः ।  
 सभय० गु० भयसमेत, भयर्मत ।  
 सभव० ग० पु० ज.म, गु० प्रियव सुभत् ।  
 समा० ना० स्त्री० बचइरी, मण्डली ।  
 समासद० ना० पु० दरवारी, सभामें बैसनेहारा  
 वा विचारवनेहारा ।  
 समीत० गु० डराभवा, भययुत ।  
 सभ्य० ग० पु० सभा के कार्य में जा सहायक  
 है, गु० जा सभा के योग्य है ।  
 समम० ना० पु० भूत, गु० भूत से कम स  
 हित ।  
 सम० गु० तुल्य सब, बराबर, व सना सिगिहृषि ।  
 समकटिवन्ध० ना० पु० श्वी-का यह भाग  
 जो शीतवन्ध और मयरेखा हूष बीच  
 ४९३-अक्ष है ।  
 समग्र० गु० समस्त, सारा ।  
 समप्रता० ना० स्त्री० सम्पूर्णता ।  
 समगा० ना० स्त्री० स्त्रिरुप ।  
 समगी० ग० स्त्री० मनीठ लज्जारू ।  
 समभ० ना० स्त्री० पूरुणा, विचार ।  
 समभना० अ० कि० वृद्धता, विचारना ।  
 समभकार० गु० विचारवार प्याती शानी ।  
 समभाना० स० रि० वृद्धता, जाना बताना ।  
 समभारती० } ग० स्त्री० समभान का काम ।  
 समभावा० }  
 समजस० ना० पु० याग्यता, उचितता गु०  
 याग ।  
 समता० ग० स्त्री० समभान एकता बराबरी ।  
 समदर्शी० गु० मध्यमनी तुल्यदृष्टि, सबका  
 समनानि ।  
 समधिवादु० गु० निसर्ग दो भुना तुल्यहो ।  
 समधिन० ना० स्त्री० अग्रे पुत्र का पुत्री  
 की तरह ।  
 समधियाना० ना० पु० समधी का घर घराना ।  
 समधी० ना० पु० अग्रे पुत्र व पुत्रीका लक्ष्य,  
 ग० समशुद्धि ।

समन्त० ना० पु० सेंहुकवृत्त ।  
 समन्वय० ना० पु० आपस में बहुतों का मेल ।  
 समन्वित० गु० आपसम मिलित, संयुक्त ।  
 समभाव० ना० पु० समता, बराबरी ।  
 समय० ग० पु० कार्य, अग, अगसर, वस्त,  
 सावकास, अ-वेदिनी ।  
 समर० ग० पु० युद्ध, लड़ाई, रण, कामुदेव ।  
 समररस० ग० पु० वारन, पहेंडुरी ।  
 समर्थ० गु० बलवान, योग्य, हिमतर ।  
 समर्थी० गु० सामर्थी, ताकतवर ।  
 समर्पण० ग० पु० सौंपना, अर्पण, योग, देना ।  
 समर्पित० गु० सौंपगया, अर्पित, त्यागित ।  
 समल० गु० पापी, मैला ।  
 समवाय० ना० पु० भाव, समुह, व्यापशास्त्र  
 ग सम्बन्धनियम ।  
 समशील० गु० तुल्यभाव, सममान, समता ।  
 समसूत्र० गु० तीधामृत ।  
 समसुत्रपात० ग० पु० सी गतुका पढ़ना वा  
 चलना ।  
 समस्त० गु० सबल, सारा, सब ।  
 समस्या० ग० स्त्री० समासार्थ, श्लोक क  
 पूर्वादि एतदशना कहता ।  
 समश्रु० गु० साकार, साम्ने ।  
 समत्रिबाहु० गु० जिस त्रिभुज की तीनों भुजायें  
 समान हों ।  
 समा० ग० पु० समय, बहुतान, दिशा,  
 मिलाप ।  
 समारं० ग० स्त्री० सत्ताप, धैर्य, शक्ति ।  
 समाहृत० ग० पु० पित्तमवा ।  
 समागत० ना० पु० संयाग, अर्वा, पहेंच ।  
 समागम० ग० पु० संयाग, मिलाप, अ  
 वाद ।  
 समाचार० ना० पु० सदेरा, वृत्ता त, चर्चा ।  
 समाचारपथ० ना० पु० चिह्नी, अतवार ।

सम्पन्न० गु० परिपूर्ण, जो पूरा होइका, भाग्य-  
वान्, भराहुथा ।

सम्पर्क० ना० पु० सम्बन्ध, मिलान, सयोग,  
धैयुन

सम्पात्त० ना० पु० छुधावट, गिरना, शरीर ।

स० गति० ना० पु० गिद्धविशेष ।

सम्पादक० ना० पु० सम्पादन करने हारा ।

सम्पादन० ना० पु० प्राप्ति ।

सम्पादित० गु० प्राप्त ।

सम्पुट० ना० पु० उष्ण, उक्षान, कषाव ।

सम्पूर्ण० } परिपूर्ण, सारा, समस्त ।  
सम्पूर्ण० }

सम्प्रति० अन्य० अभी ।

सम्प्रदान० ना० पु० चतुर्था, कारकविशेष जि-  
सके लिये कर्ता क्रिया सिद्धकरे ।

सम्प्रदाय० ना० पु० परम्परा का धर्म ।

सम्पुल्ल० गु० पूजा विकसा ।

सम्बद्ध० गु० सयुक्त, जो बाधायता, जो धरा  
गया ।

सम्बन्ध० ना० पु० सम्पर्क, नाता, लगाव,  
तुक, शरारह, कारकविशेष, पत्नी ।

सम्बन्धी० गु० नादेदार, रिश्तेदार, ना० पु०  
गोत्री, समर्थ ।

सम्बर० ना० पु० दैत्य विशेष, सम्बल, पानीमैल ।

सम्बरारि० ना० पु० कामदेव, प्रसुमनी ।

सम्बल० ना० पु० जानना मार्ग का, दैत्य  
विशेष ।

सम्बुक० } ना० पु० घोषा, चौकी, शर ।  
सम्बुक० }

सम्बोधन० ना० पु० समुत्तर करने के लिये जो  
शब्द यथा हे, ओं, धीरजकरना ।

सम्बलना० अ० क्रि० धमना, सुधारना, सदा  
होना ।

सम्भय० ना० पु० योग्यता हानहार उद्भव, गु०  
हाने के योग्य ।

सम्भया० ना० स्त्री० गौरीचन ।

सम्भार० } ना० पु० धमान, सुधान, रक्षा ।  
सम्भाल० }

सम्भालना० स० क्रि० धामना, सुधारना, रक्षा  
करना ।

सम्भायना० ना० स्त्री० होने की योग्यता,  
क्रिया के शक्यते नियमका अभिप्राय, इच्छा ।

सम्भायनीय० गु० हानहार ।

सम्भावित० गु० नशामान्य ।

सम्भाषण० ना० पु० बोलचाल, बातचीत ।

सम्भूत० ना० पु० उत्पन्न, पैदा ।

सम्भोग० ना० पु० सुल, हर्ष, स्त्री प्रसंग ।

सम्भ्रम० ना० पु० आदर, समान, उतावली,  
डर, डनडनाइट ।

सम्मत० } ना० स्त्री० इच्छा, स्वीकार, नि-  
सम्मति० } चार, समानता, सलाह, राय ।

सम्भोक० ना० पु० समर, युद्ध, रण ।

सम्भूक० अन्य० सब, योग्यता से, ठीक रीतिसे,  
अर्थात्तरह ।

सयन० ना० पु० शयन, शरारह, सकेत ।

सयान० ना० पु० चतुर्दश, प्रवृत्तता, छल ।

सयानार्थ० गु० चतुर, प्रवीण, धर्मी, पक्का ।

सर० ना० पु० ताल, कुण्ड, शर ।

सरकण्डा० ना० पु० नरकविशेष ।

सरकना० अ० क्रि० हटना, भागना ।

सरकाना० स० क्रि० सिसकाना, भागना ।

सरयू० ना० स्त्री० नदीविशेष ।

सरट० ना० पु० गिरिगिट, गिरगिदाना ।

सरद० ना० पु० शरद ऋतु ।

सरद० ना० गु० फलविशेष ।

सरन० ना० स्त्री० शरण ।

सरना० अ० क्रि० बनना, चलना, निकलना,  
सड़ना शरण ।

सरनागत० ना० पु० शरणागत ।

सरणागतवत्सल० गु० शरण्यामतो मर जो  
दयाल अर्थात् ईश्वर ।

सरपट० ना० पु० बगदूर ।

सरपत० ना० पु० पतलो, पतावर, सेंडा,  
कण्डा ।

सरम० ना० पु० बन्दर विशेष, ध्व्य० शीघ्रता ।

सरल० गु० सीधा, साम्ना, साधारण, वास्तवी  
पौधा विशेष ।

सरला० गु० सीधा, ऊचा, दीर्घ ।

सरलाशिता० ना० स्त्री० निसीत ।

सरवरि० ना० स्त्री० बरानरी ।

सरस० गु० श्रेष्ठ, अधिक, बहुत, रससमेत ।

सरसई० ना० स्त्री० सरस्वती नदी ।

सरसई० ना० स्त्री० अधिकार्थ, बहुतात ।

सरसाना० अ० क्रि० बदना, अधिकहोना ।

सरसी० ना० स्त्री० तालाव ।

सरसौ० ना० स्त्री० सर्पप, राई विशेष ।

सरस्वती० ना० स्त्री० नदी विशेष, वाणी की  
देवता और राग और विद्या को प्रतिपासक,

सरस्वती भाषा की बनाने वाली ।

सरा० ना० पु० शरान, चिंता ।

सराई० ना० स्त्री० शींगलरा ।

सराप० ना० पु० शाप, धाप ।

सरापना० स० क्रि० शापदना ।

सरापक० ना० पु० जाति विशेष, जनी ।

सरावन० ना० पु० हेंगा, पटेला, जिसका कि  
राकर सेत क दले तोड़त है ।

सराह० ना० स्त्री० स्तुति बर्णन, महिमा ।

सराहना० स० क्रि० स्तुति करना, बर्णनकरना ।

सरिगम० ना० पु० गान विद्या में स्वर बनाने क  
लिये पहिलापद ।

सरिणी० ना० स्त्री० ग धपसारन ।

सरित० ना० स्त्री० नदी ।

सरिता० ना० स्त्री० नदी ।

सरित्पति० ना० पु० समुद्र ।

सरिस० गु० बराबर, तुल्य ।

सरी० ना० स्त्री० विनाफलका शर, सरकण्डा  
जिससे तीर बनाने हैं ।

सरीखा० गु० सदृश, समान, तुल्य ।

सरुज० गु० रोगी, मरीज ।

सरुट० } गु० क्रोधयुत, क्रोधसमेत ।

सरुप० ना० पु० स्वरूप ।

सरुप्य० ना० पु० सारूप्य ।

सरेखा० ना० स्त्री० श्लेषा ।

सरेश० न० पु० काठ आदि जोड़ने क लिये  
लाता ।

सरोज० ना० पु० कमल ।

सरोता० ना० पु० सुपारी काटने का हथियार ।

सरोवर० ना० पु० तालाव, तझग ।

सरोप० गु० क्रोधयुत, रोष सहित ।

सरोही० ना० स्त्री० सङ्ग विशेष ।

सर्करा० ना० स्त्री० खाइ, शकर, बाल, धूलि ।

सर्ग० ना० पु० स्वभाव, मोक्ष, उत्पत्ति ।

सर्ज्ज० } ना० पु० राल ।

सर्ज्जरस० } ना० पु० राल ।

सर्ज्जिका० ना० स्त्री० सर्जा ।

सर्प० ना० पु० साप ।

सर्पदष्टा० ना० स्त्री० मद्रासिगी ।

सर्पपति० } ना० पु० शिवजी नागराज ।

सर्पराज० } ना० पु० शिवजी नागराज ।

सर्पाणि० ना० पु० बौला, गरुड, मयूर ।

सर्व० गु० सब, समस्त ना० पु० वृक्ष वृषास ।

सर्वकाल० ना० पु० निय, सदा, हमेशाह ।

सर्वगत० गु० सर्वत्र, व्याप्त, सबजगह मौजूद ।

सर्वतोभद्र० ना० पु० नविवृक्ष, मण्डल विशास ।  
चारों वाण का मंदिर वा राजघर जिस में  
चार द्वार हैं ।

सर्वत्र० अर्थ० सबठार, सबजगह ।

सर्वथा० अर्थ० सब विधि, सब प्रकार स ।



सर्वदा० ध्व्य० सदा, इतिराह, नियमिताः ।  
 सर्वनाम० ना० पु० सर्वं विश्वं आदि पौनम्य शब्द,  
 बहु शब्द जो सत्ताका आदेशादी ।  
 सर्वनाश० ना० पु० सत्यानारा ।  
 सर्वनाशक० गु० सनका नारा करनेहारा ।  
 सर्वमक्षक० } ना० पु० सन बुद्ध सानेवाला  
 सर्वमक्षी० } सर्वांगी, धर्महीन, अष्ट ।  
 सर्वमक्ष० ना० स्त्री० नकरी ।  
 सर्वमंगला० ना० स्त्री० भवानी, पार्वती, दुर्गा ।  
 सर्वमय० गु० जो सर्वत्रपेलेगयाहो, सम्पूर्ण ।  
 सर्वव्यापक० } गु० सर्वत्र पडुचनहारा ।  
 सर्वव्यापी० }  
 सर्वस० }  
 सर्वसु० } ना० पु० सम्पूर्णद्रव्य, सर्वसम्पदा ।  
 सर्वस्व० }  
 स्वहृत् } ना० पु० श्रीविष्णुनामयण,  
 स्वध्यानी० } अशिवनी, गु० सधरा ज्ञानने  
 हारा ।  
 स्वार्हा० ना० पु० सारा शरीर, मत्र विशेष, सब  
 मनोका सारार्थ धर्म ।  
 स्वार्ही० गु० सर्वांग का शाता वा वारक ।  
 स्वार्जी० ना० स्त्री० श्रीपार्वती ।  
 स्वार्भाष्ट० ना० पु० सन मनोवृत्ति और सकल  
 इच्छा ।  
 स्वोपरि० ध्व्य० सन क ऊपर ।  
 स्वोपघ्न० ना० स्त्री० जगामनी, मुरा इत्यादि  
 दग थापध ।  
 स्वपप० ना० पु० सरसों ।  
 स्वकी० ना० स्त्री० कमलकी जड़ ।  
 स्वज्ज० गु० लाजेसुल, सज्जासहित ।  
 स्वना० ना० पु० मीनी, बाहुनाहुकी धानी,  
 ध० कि० दिदना, गदना ।  
 स्वभ० ना० पु० पनगा, वीकी, गिरी, शलभ ।  
 स्वसलाना० ध० कि० सरसराना ।  
 स्वारा० }  
 स्वारा० } ना० स्त्री० शलाका ।

सखिल० ना० पु० जल, पानी ।  
 सल्लो० ना० स्त्री० सावन की पूनी जिस में  
 रा भी शायत है ।  
 सल्लूप० ना० पु० थोडासा ।  
 सल्लूपी० ना० पु० विल्व, बेल ।  
 सल्लोत० गु० लौन सहित, कटीला, देशसख,  
 विशेष, नमकीन ।  
 सलोना० गु० सारा, सावला, स्वादिक ।  
 सलोनी० गु० रुचक, स्वादिष्ट, सुदर ।  
 सल्लकी० ना० स्त्री० पशु विशेष जिसके सारे  
 शरीर में बटि होते हैं, सारी, सेही ।  
 सल्लभ० ना० पु० मोग कपडा विशेष ।  
 सल्लू० ना० पु० चमके का दुर्बल जिससे जूता  
 आदि सीते हैं, सर्प विशय ।  
 सल्लो० गु० स्त्री० बादली स्त्री ।  
 सवति० ना० स्त्री० एक मनुष्यकी दो बाँवियों में  
 से एक दूसर की सवति कहानी है ।  
 सवर० ना० पु० भील, बील ।  
 सवरस० ना० पु० जल, पानी ।  
 सवरी० ना० स्त्री० भीखिनी विशेष जिस के  
 फल रामचंद्रने खाए थे ।  
 सवृष्टं० गु० एक जातिकर एकगुण, सवृष्ट,  
 समानवर्ष ।  
 सवल० गु० सवत ।  
 सवा० गु० जिस गिनती के प्रथम में संयुक्त होने  
 उत्तम चौथाईदत्तये यथा संसारी, २३ ।  
 सवारं० ना० पु० जयपुरके राजाजी पदवी ।  
 सवाचना० सं० कि० जाचना, परतना ।  
 सवाया० गु० एक और एककी भीषाई ।  
 सवार० ना० पु० धरनवार, बुद्धवा ।  
 सवारी० ना० स्त्री० चंडी, बाहन ।  
 सचिकार० गु० जिसमें कुछ नदल हुई ।  
 सविता० ना० पु० सूर्य ।  
 सर्वव्यं० गु० नीज समेत ।  
 सर्वया० गु० सवाया, ना० पु० सव विशेष,  
 बाट जो एकमेर आर पावभर का होता है ।

सभ्य० गु० नाया ।  
 सशंक० गु० सभय ।  
 सशब्दयोगि० गु० शब्दयोगी अव्यय सहित ।  
 सशोक० गु० दुःखित भयभीत ।  
 ससक० ग० पु० प्ररगोरा, चौगडा ।  
 ससता० गु० जो महंगा नहीं है ।  
 ससताई० ना० स्त्री० ससतापन ।  
 ससा० ग० पु० शरा, चौगडा, प्ररगोरा ।  
 ससापत्री० ना० स्त्री० लुआरु ।  
 ससुर० ग० पु० शशुर ।  
 ससुराल० ना० स्त्री० श्वशुरका घर ।  
 ससुराली० गु० जो श्वशुरकाई, जो ससुराल  
 का है ।  
 सस्य० ग० पु० फल, अन्न, धान ।  
 सह० अर्थ० साथ, सहित, गु० जो सहने के  
 योग्य है ।  
 सरकार० ग० पु० आभविशेष, सहायता ।  
 सहकारी० गु० सहायक ।  
 सहगामिनी० ना० स्त्री० सती स्त्री ।  
 सहचर० ग० पु० पियावासा, साथी, सगी ।  
 सहचरी० ना० स्त्री० सली, सहेली, अयुगा  
 मिणी ।  
 सहज० गु० सामान्य, निजल, स्पष्ट, सगम् ।  
 सहजना० ना० पु० वृक्ष विशेष ।  
 सहदेवी० ना० स्त्री० पौराणिक विशेष, सहतरह ।  
 सहन० ग० पु० कष्ट विशेष, सहने शक्ति ।  
 सहनहार० गु० सतापी, सहैया ।  
 सहना० अ० वि० निवाहकर्ता, स तोपुत्रता,  
 एनलेग, वरदारत करण ।  
 सहमना० अ० वि० डरना, भयभीत होना ।  
 सहमरण० ना० पु० मृतकपतिके साथ जलने ।  
 सहनाना० अ० वि० धरना, सहना ।  
 सहस्राघन० ना० स्त्री० गुदगुदी, सरसरी ।  
 सहरी० ना० स्त्री० कौर्सी, दूधरी, मक्खली,  
 विशेष, भूरे मक्खनी ।  
 सहरोप० ग० रोप सहित, घोर से ।

सहलाना० अ० वि० गुदगुदाना, पुलपुलाना ।  
 सहलाहट० ना० स्त्री० शुकगदाहट, पुलपुला  
 हट ।  
 सहयास० ना० पु० पडास ।  
 सहयासी० गु० पडोसी ।  
 सहवैया० गु० सहनहार ।  
 सहस० गु० सहस, हजार, १००० ।  
 सहसकर० ग० पु० वर्ष, बाष्पाकर, नागाई ।  
 सहसघदन० ना० पु० शपुजी, सहसदन ।  
 सहसयाहु० ना० पु० सहसवाहु, रानाविराज ।  
 सहसनयन० ना० पु० सहसनयन, इन्द्र ।  
 सहसा० अर्थ० विनाविचार किये, उता-  
 वली से ।  
 सहसंखी० ग० पु० सहसयासी, इन्द्र ।  
 सहसाखी० गु० गदासमेत, साखीसहित ।  
 सहमानन० ग० पु० शेषजी ।  
 सहस्र० गु० हजार, १००० ।  
 सहस्रनयन० ना० पु० इन्द्र ।  
 सहस्रमुखी० ना० स्त्री० धीगगाजी ।  
 सहस्रवदन० ग० पु० शेषजी ।  
 सहस्रवाहु० ग० पु० बाष्पाकर, नागाई ।  
 सहस्रवीर्य० ग० पु० बड़ी सनातन ।  
 सहस्रशिर० ग० पु० राक्षस विशेष, गिस्तरी  
 थीसीतानी व शिवा था ।  
 सहस्रा० } ना० स्त्री० पीतुल ।  
 सहस्रांगी० }  
 सहस्राई० ना० स्त्री० सहाय, बटक, ग० पु०  
 सहायक ।  
 सहाऊ० गु० जो सहन के योग्य है ।  
 सहाना० ना० पु० रागविराज, म० वि० नि-  
 वाहकराना, सन्तापकराना, वरदारत कराना ।  
 सहाय० ना० स्त्री० सहाय, सैन, मदद, साथ ।  
 सहायक० ना० पु० निय, सहाय करनेवाला ।  
 सहायता० ना० स्त्री० }  
 सहारा० ना० पु० } उपराजा, उपकार, मदद ।

सहित० ध्व्य० सग, संधि, समेद, गु० हित  
समेत ।

सही० ना० स्त्री० खानाविशेष, नदी, ध्व्य०  
निश्चयबोधक ।

सहेजना० स० क्रि० जाचना, परतना, सैतना,  
बनाना, बनावा, ठहरा, रतना ।

सहेली० ना० स्त्री० सखी, आली, सगरी स्त्री ।

सहोदर० गु० जो एक माता से उत्पन्न भया,  
यथा सगाभाई ।

सहोदरभाई० }  
सहोदरभाता० } ना० पु० सगाभाई ।

सहीटी० ना० स्त्री० सहोदी, भीलट, विशेष ।

सह्य० ध० सहने के योग्य ।

सक्षत० गु० सखित, पावपुत्र ।

सा० ध्व्य० सादर्यबोधक यथा छोटासा,  
पीलासा ।

साऊ० ध० सोपनहार, शिट ।

साऊंगी० ना० स्त्री० सागी ।

साईं० ना० पु० स्वामी, भगवान् ।

सांक० ना० स्त्री० राका, वासरास ।

सांकर० ना० स्त्री० सासल, गु० गाद, निपत्ति,  
कठिनाता ।

सांकरो० } ना० स्त्री० सजल, सिकली, भूषण ।  
सांकरल० } विशेष, खनीर ।

सांखु० } ना० पुल, सेन, बाध, वाद  
सांखो० } विशेष ।

सांगी० ना० स्त्री० गांधी में स्थान विशेष जिस  
में गठरी आदि रखते हैं, नदी ।

सांगूस० ना० स्त्री० मखली विशेष, राक ।

सांघर० ना० पु० अशिलेपतिका पुत्र ।

सांच० ध० सय, सध, सधा ।

सांथा० ना० पु० डालने वा भरने का घर,  
प्रदगी, ध० सधा, सयवसा ।

सांभ० ना० स्त्री० सप्या, सायफस ।

सांभो० ना० पु० } भोरी जो निवृत्त में  
सांभो० ना० स्त्री० } बनाने हैं पुनर्लिया जा  
खरके निवृत्त में बनाने हैं ।

सांटा० ना० पु० कोंडा, ढँद, छपरखी कमरका  
वास ।

सांटी० ना० स्त्री० धड़ी, लग ।

सांटो० ना० पु० नदला, पलग० रामचंद्रिका-  
या (यहसाथेलयष्ट्यावतार, तब हीही तुम  
ससारपार) ।

सांठ० ना० स्त्री० योग, सयोग, गुष्ट, अन्न पी  
ठने के लिये लम्बा लवेदा ।

सांठगांठ० ना० पु० साठ बाट, मेल सयोग ।  
सांठना० स० क्रि० सटाना, लगाना,  
बुटाना ।

सांठो० ना० पु० शयड ।

सांठनी० ना० स्त्री० उँटनी, शयडनी स्त्री ।

सांठो० ना० पु० द्विपक्षी के मुलजन्तुविशेष ।  
सांती० ध्व्य० सती ।

सांप० ना० पु० सर्प ।

सांपन० ना० स्त्री० साप की स्त्री ।

सांभर० ना० पु० खवविशेष, नगरविशेष,  
कूलविशेष जो जयपुर और जोधपुर के म  
ध्य में है ।

सांयला० गु० वृष्य सदरा जो वर्य ।

सांघा० ना० पु० अन्नविशेष ।

सांघ्यिक० ध० संदेशयुक्त, चिन्तायुक्त ।

सांस० ना० स्त्री० श्यास, दम ।

सांसना० स० क्रि० बाटना, कुट्टि देतना ।

सांसभरना० अ० क्रि० आहभरना ।

सांसा० ना० पु० सराय ।

सांसारिक० ध० जो ससारका है ।

साफ० ना० पु० शार, साय ।

साक्यणिक० ना० पु० छराऊ, कचकिया ।

साका० ना० पु० राका ।

साकार० ध्व्य० आकार सहित ।

साकलय० ना० पु० साकलय, साकल ।

साक्यन्ध० ना० पु० राका जिससे राका  
बाधा है ।

साक्ष० } ना० स्त्री० धाक, भरम, नाम,  
साक्षि० } मर्याद, धीति, प्रतीति, पुस्तान् ।  
साक्षी० ना० स्त्री० साक्षी, गवाही ना० पु०  
वृक्षगवाह ।  
साक्षोच्चार० ना० पु० वसवर्षन ।  
साक्षोटक० ना० पु० सहोरावृक्ष ।  
साख्य० ना० पु० साखान् ।  
साग० } ना० पु० शाग ।  
सागपात० }  
सागर० ना० पु० समुद्र, बङ्गालासागर, मरुत  
सपङ्क नगरविशेष ।  
सागरा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।  
सागून० ना० पु० काष्ठविशेष याँ उसीसावुल ।  
सांख्य० ना० पु० शास्त्रविशेष ।  
सांग० गु० समाप्त, सादितधैर्य ।  
सांगोपांग० गु० सम्पूर्ण, समस्त, उद्योग ल्यो ।  
साज० ना० पु० अस्त्रादि के पदों की सामग्री,  
समर्थ, सजान, शाखा ।  
साजन० ना० पु० सम्जन पति, स्वामी ।  
साजना० स० णि० पाहाया, सैजारा, सजा  
ना, साजना ।  
साजी० ना० स्त्री० जा पूर्ण दूना नहीं है ।  
साझा० ना० पु० व्यापारादि म क, मनुष्या का  
मल, शरान्त ।  
सासी० ना० पु० साथा, भागी, अशिा ।  
साठ० गु० स दहाई ६० ।  
साठी० ना० पु० धात वा मात्रविशेष ।  
साइसातो० गु० शीतल जो साइसातो नाम  
तर रहता है ।  
साढा० गु० सा ।  
साहू० ना० पु० जोरुनी बाहन का पति ।  
साहू० गु० नित्त गिनी की आदि में यह लगाने  
हैं उत्तर एकका आधा कृषि कृषिज हो  
साह, ३ ॥  
सात० सा, ७ ।  
सायकिक० ना० पु० मनविशेष, नारदविशार ।

सात्विक० गु० अतोमुष्णी, उत्तमदान ।  
साथ० अव्य० सम ।  
साथरी० ना० स्त्री० आसनी, विधौना ।  
साथी० गु० संगी, सगनाला ।  
सादर० गु० आदरसमेत ।  
सादरा० ना० पु० भीतविशेष ।  
सादृश्य० ना० पु० समानता, उपमा, तुल्यता,  
ध्यात ।  
साध० ना० स्त्री० इच्छा, चाह, चीज गु० साधु,  
श्रद्धामनुष्य ।  
साधक० ना० पु० तपस्वी, साधु, साधन करने  
हार ।  
साधन० ना० पु० श्रम्यास, धितन, परमार्थ  
का अनुष्ठान, बनारस, उपाय, नित्यक्रिया ।  
साधनभिया० ना० स्त्री० हृष्यननिवा नाम ।  
साधना० स० णि० हिलाया, सितलाना, सी-  
लगा, सुधारना, श्रम्यास करना, साजना, नि-  
वाहना, ना० स्त्री० श्रम्यास, रिवाज, बनारस,  
उपाय, नित्यक्रिया, तदनीर ।  
साधनिका० ना० स्त्री० साजना, उपाय, तद-  
नीर ।  
साधस० ना० पु० उर, भय, राजा ।  
साधारण० गु० सामान्य, सीधा ।  
साधी० गु० धौर्भाग्य, उदरार्थ भई ।  
साधु० गु० निगता व्यरहर उत्तम है, धाय,  
गुदर ना० पु० सत, सादकार ।  
साधुना० ना० स्त्री० साधुका कर्म वा चाल ।  
साधुमन० ना० पु० सिद्धाकार, आदर, गु०  
य समत ।  
साधुसाधु० गु० धन धन्य ।  
साधू० ना० पु० साधु गु० उपासी, क्रियमात्र,  
सात ।  
साध्य० गु० जान स जा हान, साधना के योग्य,  
सी, जा शीघ्र के योग्य है ।  
साध्या० ना० स्त्री० पवित्रा स्त्री ।  
सान० ना० भ० साय, धार ।

सानना० स० कि० मिलना, मिलाना, मूषना ।  
 सानन्द० गु० आनन्द सहित ।  
 सानुभूताना० स० कि० सैन से सम्भूताना ।  
 सानी० ना० स्त्री० भूसा खलीवी मिलीनी ।  
 सानुकूल० श्र० प्रसन्न, राशी, कृपालु ।  
 सान्त्वयन० ना० पु० विलाप ।  
 सान्निध्य० ना० पु० सामीप्य, समीची ।  
 सापन० ना० पु० रोगविशेष जिससे कालक्रम  
 क्रम से गिरजाते हैं ।  
 सापरघ० गु० जो दण्ड के योग्य कामकरे ।  
 साबर० ना० पु० नारदसिंघा वा उसका चर्म, सि-  
 द्धमन्त्र, चोरोका हथियार जिससे संध लगता है,  
 शिवकृत्र मन्त्राज्ञ ।  
 साबरमन्त्र० ना० पु० भाषा में मन्त्रविशेष ।  
 साम० ना० पु० वीसरा वेद, जो मूसल वा लाठी  
 वा नेत्र आदि के अन्त में पीतल आदि ल  
 गाते हैं ।  
 सामग्री० ना० स्त्री० वस्तु, सामान ।  
 सामज्ञ० ना० पु० समय, बाल ।  
 सामघ० ना० पु० सम्पत्ता, सम्पत्तियों वा  
 भित्तना ।  
 सामर० ना० पु० लक्षणविशेष ।  
 सामर्थ्य० श्र० बलवान्, शक्तिमान् ।  
 सामर्थ्य० ना० स्त्री० सामर्थ, तन्त्र, शक्ति ।  
 सामा० ना० स्त्री० नानाप्रकार वा भाजा,  
 सामग्री ।  
 सामाजिक० ना० पु० सभाआदि क काम में जो  
 धनुर व दित्तवैवा वा सहायक ।  
 सामान्य० श्र० संप्रसारण, जगिवाचक ।  
 सामान्यतः० ना० स्त्री० सामान्यतः ।  
 सामी० ना० पु० साम, सामने, सामनेही ।  
 सामीप्य० ना० पु० पास के योग्य, सुक्तिविशेष  
 जिसमें हृदय के प म बनता है ।  
 सामुद्रि० ना० पु० समुद्रप्रेत ।  
 सामुद्रिक० ना० स्त्री० त्रिशाविशेष, मयूरी  
 विषा जिसमें हस्मादि रस्ता विचारते हैं ।

सामुद्दे० श्र० सामने, समुद्दे ।  
 साम्रा० ना० पु० समुद्र ।  
 साम्रे० श्र० समुद्र, धामे ।  
 सामहना० श्र० सामना ।  
 सायक० ना० पु० नाथ, तीर ।  
 सायंकाल० ना० पु० सन्ध्यासमय ।  
 सायुज्य० ना० पु० सुक्तिविशेष जिसमें ईश्वर  
 लीन होना है ।  
 सार० ना० पु० खाद, लोहा, यदा, हीर, मोल,  
 सर, वीर्य, धीरज, धर्म, वज्र, धर, अन्न,  
 बाटका सार ।  
 सारक० ना० पु० बौत, मैगापची ।  
 सारंग० ना० पु० रागविशेष, मयूर, मेघ, सर्प  
 मोर वा शब्द, मृग, सूर्य, घोडा, चन्द्रमा,  
 हाथी, आकाश, पर्वत, सिंह, कुन्, पपीहा,  
 मेरुक, दीपक, ज्योति, कोयल, चामर, बाल,  
 हस्त, कुश, सज्जन, कमल, कामदेव, धरती,  
 तालाव, सुदर, पत्नी, पागी, विष्णु का धनुष,  
 कपड, राति, स्त्री, भ्रमर, मधुमारी, देश-  
 विशेष ।  
 सारंगिया० ना० पु० सारंगी वजनिहाता ।  
 सारंगी० ना० स्त्री० नानाविशेष, किमरी ।  
 सारथी० ना० पु० रथचाल ।  
 सारदा० ना० स्त्री० शारदा, सारवती, वाग्दे-  
 वता ।  
 सारना० स० कि० करना, निवाहना, विवेचना,  
 सुधारना, पासना, पूराकरना ।  
 सारस० ना० पु० पक्षीविशेष, कमल ।  
 सारसजात० ना० पु० ब्रह्म ।  
 सारस्वत० ना० पु० देशविशेष, मातृप्य जाति  
 विशेष ।  
 सार्य० श्र० सम्पूर्ण, समस्त, सार्व ।  
 सार्य० ना० पु० सक्षेप ।  
 सारासार० श्र० सत्यासत्य, साधुभूट ।  
 सारिका० ना० स्त्री० मैगापची ।  
 सारी० ना० स्त्री० महारि, मैगा, पत्नी, सारी,

जोरु की बहा ।  
 सारु० ना० पु० पत्नीविशेष ।  
 सारूप्य० ना० पु० इष्ट वा रूप बानाना, धृति  
 विशेष ।  
 सार्थ० यु० जिसमें अर्थ पाया जावे, जा अर्थ  
 समतरो ।  
 सार्थक० यु० सफल, अर्थवाला ।  
 सार्वभौम० ता० पु० सर्वपृथ्वी का राजा, इन्द्रे  
 का हस्तीविशेष ।  
 साल० ना० पु० बाघविशेष, काँटा, छद, शाला,  
 सियार ।  
 सालतीस्रुत० ना० पु० जायफल ।  
 सालन० ना० पु० तरकारी, छदन ।  
 सालनिर्घास० ता० पु० राल, गुग्गुलु ।  
 सालना० स० कि० छेदना, वेधना, अ० कि०  
 दु सना, पाङ्कित होना ।  
 सालसा० ता० पु० औषधविशेष ।  
 साला० ता० पु० पत्नीका भाई, शाला, ना० स्त्री०  
 पिप्पली ।  
 सालिग्राम० ता० पु० त्रिच्युरूपी पापण्यविशेष ।  
 साली० ना० स्त्री० बीबीकी बहा ।  
 सालू० ता० पु० लालवर्ण वधविशेष ।  
 सालूक० ना० पु० जायफल ।  
 सालोक्य० ता० पु० धृतिविशेष, इष्टदेव के  
 लक्ष में वास पाया ।  
 सालोत्तरी० ना० पु० पादों का धैर्य ।  
 सावक० ना० पु० बालक, बच्चा ।  
 सावकाशा० } ना० पु० अवकाश, सुई, }  
 सावकास० } धान, अन्तर, छुटी, पुस्तक । }  
 सायज० यु० बनेला, जगलीनीन, मृग, ता० पु०  
 परे ।  
 सायधान० यु० चीन्हा, सुनी, इन्दी ।  
 सायधानी० ना० स्त्री० चीन्हा, सुनी ।  
 सायन० ना० पु० श्रावण ।  
 सायन्त० यु० रथ, घोडा, बर ।  
 सायन्ती० ना० स्त्री० सुतल, बर, सुदी ।

सावयव० यु० साग, अवयव सहित ।  
 सावर० ना० पु० सावर ।  
 सावर्णि० ना० पु० दूसरामत्रविशेष ।  
 सावित्री० ना० स्त्री० माता, महतारी ।  
 सास० ना० स्त्री० पत्नी वा पतिकी माता ।  
 सासन० ना० पु० शासना ।  
 सासना० स० कि० ताड़ना, डाटना ।  
 सासु० ना० स्त्री० सास ।  
 साह० ना० पु० बनिया, मद्दानन, सीधु ।  
 साहचर्य० ना० पु० संगति, साथ ।  
 साहन० ना० स्त्री० साहकी स्त्री ।  
 साहनी० ना० स्त्री० सी, कीन ।  
 साहस० ना० पु० बरबस, बलाघर, वीर्य,  
 दादस, विाविचार ।  
 साहसी० यु० बरबसिया, निडर, वीर ।  
 साहाय्य० ना० पु० मित्रता, प्रीति ।  
 साहित्य० ता० पु० संगत, रस ।  
 साही० ना० पु० जन्तुविशेष जिसे साहरी  
 में कहा होते है ।  
 साहू० } ता० पु० साहूकार ।  
 साहूकार० }  
 साहूकारी० ता० पु० साहूकार ।  
 साहाय्य० ता० पु० मित्रता, प्रीति ।  
 साहय्य० ता० पु० मित्रता, प्रीति ।  
 साही० ना० पु० जन्तुविशेष जिसे साहरी  
 में कहा होते है ।  
 साहू० } ता० पु० साहूकार ।  
 साहूकार० }  
 साहूकारी० ता० पु० साहूकार ।  
 साहाय्य० ता० पु० मित्रता, प्रीति ।  
 साहय्य० ता० पु० मित्रता, प्रीति ।  
 साही० ना० पु० जन्तुविशेष जिसे साहरी  
 में कहा होते है ।

शब्द, मिहना शब्द ।

सिहनी० ना० स्त्री० मिहनी स्त्री ।

सिहपीर०

सिहपीरि० } ना० स्त्री० सिहपीर, स्त्री ।

सिहपीरि०

सिहमुखी० ना० पु० वाम ।

सिहच० ना० पु० सिहचर्मा ।

सिहचक्र० ना० पु० पीतल ।

सिहचक्रा० ना० पु० भरतारण्य क दक्षिण में उपर्यपरिचित ।

सिहासन० ना० पु० देवता और राजाओं का आसन, पाद, श्रेयसाण, तन्त्रशाही ।

सिहिका० ना० स्त्री० निराश्रयताविशेष ।

सिकटा० ना० पु० टिकटा ।

सिकता० ना० स्त्री० मिकता, मान्, रेत ।

सिकरा०

सिकली० } ना० स्त्री० बुयडनी, सरत ।

सिख० ना० पु० शिख, मानकशाही, ना० स्त्री० शीत ।

सिखनायक० ना० स्त्री० शिखा, सिलान्त ।

सिखर० ना० पु० शीखा, शिखर ।

सिखरत० ना० पु० दक्षी और उरुमी मिलनी ।

सिखलाना० स० कि० पद्मा, सिलकाना, बाणना, ताइनकरना ।

सिखा० ना० स्त्री० चापी ।

सिखाना०

सिखयना० } स० कि० सिखाना ।

सिखिकरुट० ना० पु० नाकधाषा ।

सिखरो० गु० सन, छाया, सपन ।

सिखरीर० ना० पु० श्खरीर ।

सिखा० ना० पु० तुरही ।

सिखार० ना० पु० शोभा, सजावट, आभरण, शृंगार ।

सिखारना० स० कि० सजावट, शृंगार कराना ।

सिखारिया गु० देवता का शृंगारकरनेहारा ।

सिखौडी० ना० स्त्री० सौंस बनाइया धैटना,

बैठके शिंगार शृंगारविशेष ।

सिखाइ० ना० पु० मीठा जो जल में होकर या उभीना फल, शृंगारविशेष ।

सिखागु० ना० पु० गजना मंत्र ।

सिखा० ना० स्त्री० नदी कर्क ।

सिखाना० स० कि० पराना ।

सिख० ना० स्त्री० बीगाइ, बीहाना ।

सिखन० ना० स्त्री० बावनी, बाइही ।

सिखपन० ना० पु० बीहानन ।

सिखा० } गु० बाणा, बीहदा ।

सिखी० }

सित० गु० शान, शब्द, उदला ।

सितकरुट० ना० पु० मह देवता ।

सितरी० ना० स्त्री० श्वेत, पशीया ।

सिताम्भोज० ना० पु० सकेतकमल, श्वेत-कमल ।

सिद्ध० ना० पु० दायाव निविशेष जो उरु लोक में नष्ट हो, साडु अर्थान् जो अष्टासीदि के पशों हैं म० महात्मा, श्रेयसा, शृंगार, पत्र, बना, लस, पूर्ण, कामिल, कारी ।

सिद्धरूप० ना० पु० प्रथमही से भिन्नता रूप बाई, जो दूसरे से नहीं बटा ।

सिद्धान्त० ना० पु० वादी प्रसिद्धी से निर्णय जो अर्थ, बीहदाविशेष ।

सिद्धान्तशिरोमणि० ना० स्त्री० ज्योतिष का ग्रन्थ विशेष ।

सिद्धान्ती० ना० पु० मीनाशाखा, मनावलनी ।

सिद्धि० ना० स्त्री० वाञ्छितार्थ की प्राप्ति, देवता की पूजा वा तररा का फल, मन्त्रदि जपने से जो पराक्रम, धर्म, शुद्धता, अविनादिक फल, फल, कर्मित, करामत ।

सिद्धिदा० ना० स्त्री० भावती, गु० सिद्धि-दाता ।

सिद्धिदाता० ना० पु० धीगणेशानी, गु० सिद्धि-देनेहारा ।

सिद्धिरूपी० गु० जो अथवा सिद्धि होवे ।

सिधाना० अ० क्रि० दौक्या, जाग, चरा  
जाना ।

सिधारना० } अ० क्रि० चलागाना, उठजाना,  
सिधाना० } स० क्रि० सुगारना, टीक करना ।

सिनक० ना० पु० रेंदा, पोग, नेग ।

सिनकना० स० क्रि० गक भाङ्गना ।

सिन्दु० ना० पु० समालू पीषा ।

सिन्दुवारक० ना० पु० समालूपीषा ।

सिन्दूरक० ना० पु० वृष विशेष ।

सिन्दूर० ना० पु० लार्परथ रूषिरीशेप जो  
प्रिया मागमें लाती है ।

सिन्दु० ना० पु० समुद्र दस विशेष, गदी  
विशेष ।

सिन्दुज० ना० पु० सैधनली, १४ रत्न ।

सिन्दुर० ना० पु० हाथी ।

सिन्दुरगामी० गु० गजगामी ।

सिपाह० ना० स्त्री० सेना, यह शब्द फारसी का  
है ।

सिपाहसालार० ना० पु० सेनापति, फारसी  
शब्द ।

सिपाही० ना० पु० पैदल, चपरासी, यह भी  
शब्द फारसी का है ।

सिम० ना० पु० मडली ।

सिमट० ना० स्त्री० लकौच, सिमोर ।

सिमटजाना० } अ० क्रि० सिडुरना, बडुरना ।  
सिमटना० }

सिमाना० ना० पु० पिताना, धूरा ।

सिम्बल० ना० पु० समानवृत्त ।

सिय० ना० स्त्री० श्रीसीतानी ।

सियनि० ना० स्त्री० सीपनी ।

सियनिन्दक० ना० पु० रजक विशेष जो अयो  
प्यापुत्र में बसना या चौर श्रीसीतानी को  
शास्त्रन लगाया था ।

सियरा० अ० डंढा, कथा ।

सियरी० ना० स्त्री० टडी, कयी ।

सिया० ना० स्त्री० श्रीसीतानी ।

सियार० } ना० पु० श्मशान, गीदक ।  
सियाल० }

सिर० ना० पु० शिर मस्तक ।

सिरकी० ना० पु० खडीवस्तु विशेष जो भीटे  
से बनती है ।

सिरकी० ना० स्त्री० सरकण्डाविशेष, सेंडाका  
उपरी भाग या उसीकी बनीवस्तु जो पानी  
राफो के लिये होती है ।

सिरपप० गु० माचला ।

सिरखपी० ना० स्त्री० जोशिम, दादरा ।

सिरजन० ना० पु० रचाव, उपनि, वापार ।

सिरजाहार० ना० पु० ईश्वर, रचनेहारा,  
उपजानेहारा ।

सिरजना० स० क्रि० रचना, उपज करना  
हुनना ।

सिरजा० गु० बनाया हुआ, उपजाया गया ।

सिरसिंग० अ० गुडकरोहारा, दणेत ।

सिरहाना० ना० पु० तन्धिया, खाटका मिथर  
सिराहो ।

सिरात० गु० टडा, बीदा ।

सिराना० स० क्रि० टगना, बहाग, पठाना,  
व्यतात करना ।

सिरानी० अ० स्त्री० भीतर्द, राणी भई ।

सिरिस० ना० पु० वृषविराज, शिरीष ।

सिरोधी० ना० पु० कठ, गल्ला, गर्दन ।

सिल० ना० पु० शिला ।

सिलपट० गु० चीपट ।

सिलधटा० ना० पु० मिलका बटा ।

सिलवाना० स० क्रि० सिलाना ।

सिल्या० ना० स्त्री० शिला, पाषाण विशेष जिस  
पर मसाना पंमते है ।

सिलार्द० ना० स्त्री० सिलाने का काम या  
पसा ।

सिलजीत० ना० पु० श्मशान, चीपट  
विशेष ।



शब्द, मिहना शब्द ।

सिहनी० ग० स्त्री० सिहर्क सी ।

सिहपौर०  
सिहपौरि० } ग० स्त्री० सिहमार, झाड़ा ।  
सिहपौव०

सिहमुखी० ग० पु० बाम ।

सिहल० ग० पु० सिहलदीप ।

सिहलक० ग० पु० पीतव ।

सिहलद्वीप० ग० पु० भरतमण्डल क दाण्ड्य म  
उपद्वीपविशेष ।

सिद्धासना० ग० पु० दत्तों और रामार्था का  
आसन, पाद, श्रद्धासन, सत्त्वशाहा ।

सिद्धिका० ना० स्त्री० निशाचरविशेष ।

सिद्धटा० ग० पु० पित्त ।

सिद्धता० ग० स्त्री० सिद्धा, बालू, रत ।

सिद्धरा० } ना० स्त्री० सुखदना, सकल ।  
सिद्धली०

सिध्य० ग० पु० शिष्य, गानकराही ना० स्त्री०  
रीत ।

सिखनासट्ट० ना० स्त्री० शिष्या, सिद्धा ।

सिखर० ना० पु० बीना, शिखर ।

सिखरन० ना० पु० दही और शुद्ध मिल्कीना ।

सिखलाना० स० एक० पद्मना सिखलना,  
बाणा, ताड़नकरना ।

सिखा० ना० स्त्री० चाप ।

सिखाना० } स० कि० सिखानना ।  
सिखवना०

सिखिकण्ड० ना० पु० नाल थावा ।

सिखरो० गु० सब, एका, सपत्न ।

सिखरौर० ना० पु० शूकरपुर ।

सिखा० ना० पु० तुलसी ।

सिखार० ना० पु० शाणा, सजब, आमरख,  
शुगर ।

सिखारना० स० कि० सखाना, शूगर कराना ।

सिखारिया गु० दत्तवा का शूगरकरनेहरा ।

सिखौडी० ना० स्त्री० सींगस बनाया घंटा,

बेलके सींगर भूषणारोप ।

सिखाङ्गा० ना० पु० पीथा जो जल में होनाई वा  
उभीना फल, शूषणविशेष ।

सिखाणु० ग० पु० गजना भैर ।

सिखी० ग० स्त्री० बड़ी कर्पा ।

सिखाना० स० कि० पराना ।

सिख० ग० स्त्री० बीराह, बीघना ।

सिखन० ग० स्त्री० बामनी, बीकही ।

सिखपन० ग० पु० वैश्यापन ।

सिखा० } गु० बाला बीरहा ।  
सिखी०

सिख० गु० शन, मरुद, उमला ।

सिखकण्ड० ना० पु० मह दाना ।

सिखरी० ना० स्त्री० रोद, पभागा ।

सिखाभोज० ग० पु० सकण्डमल, स्नेह  
वज ।

सिख० ना० पु० देवतावनिविशेष ना इ  
सात में बसने हैं, सातु अर्थात् जा अष्टासिद्धि क  
वराों हैं म० मद्रामा, श्रद्धा, श्रुतार्थ, पद,  
बना, लस, पूर्ण, कामिल, कार्पी ।

सिखरूप० ना० पु० प्रथमहा से निरुता रूप  
बाहे, जो दूसर से नहा क्या ।

सिखान्त० ना० पु० वादा प्रसिद्धि से निर्णित  
जो अर्थ, कौटुहलविशेष ।

सिखान्तशिखामणि० ना० स्त्री० यातिप का  
प्रथम विशय ।

सिखान्ती० ना० पु० मामामाहा मतामलम्बी ।

सिखि० ना० स्त्री० चापिचार्थ की प्राप्त, दत्तों  
की पूजा वा तररा का फल, मूनपदि जपनस  
जो पराक्रम, सुत, उद्योग, अधिनादिक अष्ट,  
फल कारित, करामत ।

सिखिदा० ग० स्त्री० भगवती, गु० सिद्धि  
दाना ।

सिखिदाता० ना० पु० श्रीगणेशजी, गु० सिद्धि  
दनेहार ।

सिखिदारी० गु० जा अ परो सिद्धि होने ।

सिधाना० अ० क्रि० दोड़ना, जाना, चग  
जाना ।

सिधारना० } अ० क्रि० चलागना, उठजाना,  
सिधाना० } स० क्रि० सुधारना, ठीक करना ।

सिनक० ग० पु० रेंटा, पोग, नेग ।

सिनकना० स० क्रि० गक भाङ्गना ।

सिन्दुक्० ग० पु० सभानू पावा ।

सिन्दुवारक० ग० पु० रागालूपीधा ।

सिन्दूरक० ग० पु० घृष विशेष ।

सिन्दूर० ग० पु० खानगर्थ पूर्णविशेष जो  
प्रिया मागमें लाती है ।

सिन्दु० ग० पु० समुद्र दत्त विशेष, ग्दी  
विशेष ।

सिन्दुज० ना० पु० सेंपल्लो, रं४ रत्न ।

सिन्दुर० ग० पु० हाथी ।

सिन्दुरगामी० गु० गानामी ।

सिपाह० ना० स्वा० सेना, यह शब्द फारसी का  
है ।

सिपाहसालार० ना० पु० सापति, फारसी  
शब्द ।

सिपाही० ग० पु० पदब्र, चपरसी, यह भी  
शब्द फारसी का है ।

सिम० ग० पु० मछली ।

सिमट० ग० स्त्री० समोच, सिमोर ।

सिमटजाना० } अ० क्रि० सिङ्करना, बढरना ।  
सिमटना० }

सिमाना० ना० पु० सिवाग, धूस ।

सिम्यत० ग० पु० समोच ।

सिय० ग० स्त्री० श्रीसीतानी ।

सियनि० ग० स्त्री० संरति ।

सियनिन्दक० ग० पु० रजक विशेष जो श्रयो  
प्राप्त म बसना या श्री श्रीसीतानी को  
काम्बधन लगाया था ।

सियरा० उ० टडा, बन्दा ।

सियरी० ग० स्त्री० टडी, दही ।

सिया० ना० स्त्री० श्रीसीतानी ।

सियार० } ग० पु० शृगाल, गीदठ ।  
सियाल० }

सिर० ग० पु० शिर मस्तक ।

सिरकी० ग० पु० सद्दीवस्तु विशेष जो माडे  
से बाती है ।

सिरकी० ग० स्त्री० सरकणाविशेष, सेंडाका  
ऊपरी भाग वा उसकी बनीवस्तु जो पानी  
रागों के लिये होनी है ।

सिरखप० गु० माचला ।

सिरखपी० ग० स्त्री० जाखिम, दादरा ।

सिरजन० ग० पु० रचाव, उपनि, वापन ।

सिरजनहार० ग० पु० ईशर, रचनेहार,  
उपानेहार ।

सिरजना० स० क्रि० रचना, उपन, करना  
गुनाग ।

सिरजा० गु० बाया हुआ, उपाया गया ।

सिरसिंग० उ० गुष्ठकरोहार, द्योत ।

सिरहाना० ना० पु० तफिया, साटका मिथर  
सिराहो ।

सिरात० गु० टडा, बंता ।

सिराग० स० क्रि० टगना, बहाग पटना,  
व्यतीत करना ।

सिरानी० उ० स्त्री० बीतग, रानी भई ।

सिरिस० ना० पु० वृक्षविशेष, शिरीष ।

सिरोधी० ग० पु० कठ, गला, गर्दन ।

सिल० ग० पु० शिला ।

सिलपट० गु० चौकर ।

सिलपट्टा० ना० पु० सिलका बहा ।

सिलवाना० स० क्रि० सिलाना ।

सिला० ग० स्त्री० शिला, पुराण विशेष जिस  
पर मस्तका पीमते हैं ।

सिलार्द० ना० स्त्री० मिलाने का काम या  
पैसा ।

सिलाजीत० ना० पु० अरमज, धीप  
विगा ।

सीपी के समान होती है, सीपी ।  
 सीपसुत० ना० पु० मोती ।  
 सीपी० ना० स्त्री० जलजन्तुविरोध ।  
 सीमती० } ना० स्त्री० स्त्री, बाला ।  
 सीमन्ती० }  
 सीमा० ना० स्त्री० हृद, बाडा, धूरा, मर्याद,  
 सियाना, अवधि ।  
 सिय० } ना० स्त्री० श्रीजानकी जी ।  
 सिया० }  
 सीर० ना० पु० हल, खेती निजकी ।  
 सीरपाणि० ना० पु० श्रीवलदवनी ।  
 सीरा० गु० शीतल, ना० पु० मोहामोग, सीरा ।  
 सील० ना० पु० शील ।  
 सीला० गु० गीला, शीतल, ना० पु० अचका  
 बीनना ।  
 सीघ० ना० पु० सैन, मर्याद, सीम ।  
 सीघली० ना० पु० जातिविशेष ।  
 सीस० ना० पु० शीर्ष, शिर, शिला ।  
 सीसक० } ना० पु० धातुविशेष ।  
 सीसा० }  
 सीसों० ना० पु० शीशम वृक्षविशेष ।  
 सु० अव्य० इसका प्रयोग जिस शब्द के प्रथम में  
 हा उसके अर्थ में अधिकार वा भलाई वा  
 उत्तमता सम्झी जाती है यथा सुखि सुखमें  
 चादि और स यथा जासु अर्थात् जिस  
 से, सो ।  
 सुंघाना० स० कि० महकाना ।  
 सुघाघट० ना० पु० महक, गन्धि, नास ।  
 सुभ्रजन० ना० पु० अर्द्धा भ्रजा, सिद्धात ।  
 सुभ्रर० ना० पु० शहर ।  
 सुभ्रार० ना० पु० रसोदया, बावची, रसों  
 कराहारा ।  
 सुभ्रसिन० ना० स्त्री० माय, नातदारकी स्त्री ।  
 सुक्चाना० अ० कि० ढरना, सकाचितहाना ।  
 सुक्टा० अ० एता, दुस्ता ।  
 सुक्टी० गु० स्त्री० दुवैल, दुवना, सूती ।

सुकडना० अ० कि० सिडुडना, बडरना,  
 समिटना ।  
 सुकण्टक० ना० पु० पिरडसज्वर ।  
 सुकंठ० ना० पु० सुमीत्र, अ० अर्द्धागला ।  
 सुकनाश० ना० पु० स्योनावृक्ष ।  
 सुकर० अ० सहज, करने के साम्य ।  
 सुकचार० गु० कौमल, निर्मल ।  
 सुकसारण० ना० पु० रावण के दूत ।  
 सुकाल० ना० पु० अच्छीसनु, बहुसात, अर्द्धा  
 समय डर ।  
 सुकांटक० ना० पु० करेला तरकारी ।  
 सुकुचना० अ० कि० सुक्चाना ।  
 सुकुमार० अ० सुक्चार, नर्म, कमिहात,  
 ना० पु० चम्पा, केला, गन्ना, मालक ।  
 सुकृत० ना० पु० भलाई, पुण्य, कीर्ति, सवाव,  
 गु० अच्छी रीति से किया गया, अर्द्धा कम ।  
 सुकृती० गु० पुण्यवान्, भाग्यवान्, धर्मीमा,  
 दाता ।  
 सुकेत० ना० पु० दक्षजातिका देवताविशेष ।  
 सुकेतसुता० ना० स्त्री० ताडका निशाचरी ।  
 सुकेयी० ना० स्त्री० अस्तरविशेष ।  
 सुकृ० ना० पु० चैन, कल, साताप, आनन्द ।  
 सुकचैन० ना० पु० विश्राम, सागरास ।  
 सुकतला० ना० पु० जूत म दूसरातला ।  
 सुकद० अ० सुलदायन, अर्द्धा ।  
 सुकदर्शन० ना० पु० पाषाणविशेष जिसका रस  
 वात म पीडा के समय डालने है ।  
 सुकदाता० अ० एता दनहारा ।  
 सुकदान० ना० पु० एतका दाता ।  
 सुकदानी० } गु० सुतका दनहारा ।  
 सुकदायक० }  
 सुकदास० ना० पु० धानकी एक जाति ।  
 सुकदेय० ना० पु० दाताका सुत ।  
 सुकपाल० ना० पु० पालकी विशय ।  
 सुकपूयक० अ० सुत स ।  
 सुकमा० ना० स्त्री० शाभा, कानिन, चणक ।

सिलाना० स० क्रि० सिलाना, तगाना ।  
 सिलारस० ना० पु० शिलानीन ।  
 सिलौ० ना० स्त्री० पयरी, शाण ।  
 सिल्खामुख० ना० पु० बाण, भ्रमर ।  
 सियाना० ना० पु० सीमा, डाडा, धूरा, हृद ।  
 सिविका० ना० स्त्री० पालकी विशेष ।  
 सिष्ट० गु० बुद्धिमान्, अच्छा ।  
 सिसकना० अ० क्रि० विहरना ।  
 सिसकी० ना० स्त्री० वृष ।  
 सिस्न० ना० पु० लिंग, मदनानुश ।  
 सिहरा० ना० पु० मौर ।  
 सिहराऊ० अ० धमाऊ, उच्चार ।  
 सिहराना० स० क्रि० धरना, उच्चाट करना,  
 सहलाग ।  
 सिहनी० अ० क्रि० कापना ।  
 सिहाना० अ० क्रि० प्रसन्नहोना, छुसारीग ।  
 सीक० ना० स्त्री० तृणविशेष जिसका झाड़ू  
 बनती है ।  
 सीकर० ना० पु० सीकका फूल ।  
 सीका० ना० पु० घर, घाँस ।  
 सीकिया० गु० बख्शीरान्, धारीदार, छहरिया,  
 डेरिया ।  
 सींग० ना० पु० शूद्र ।  
 सींगड़ा० ना० पु० बरूद रखन का सींग ।  
 सींगा० ना० पु० नरसिंगा ।  
 सींगिया० ना० पु० विष विशेष ।  
 सींगी० ना० स्त्री० छोटेनरसिंगा, मकली विशेष,  
 तोमड़ी ।  
 सींच० ना० स्त्री० पानी की चाह ।  
 सींचना० स० क्रि० सींचना, पाटना, पानीदेना ।  
 सींचाई० ना० स्त्री० सींचन का पैसा वा काम ।  
 सींची० ना० स्त्री० सींचने का समय ।  
 सींचा० ना० पु० सीमा, मर्यादा ।  
 सीकर० ना० पु० क दविराण ।  
 सीख० ना० स्त्री० शिष्या, पाठ, विद्या, दाइना,  
 निलाना ।

सीखना० स० क्रि० विद्याया उपार्जन करना,  
 पाठ ।  
 सींचना० स० क्रि० सींचना, पानीदेना ।  
 सीङ्ग० ना० पु० पीयाविशेष ।  
 सीङ्गना० अ० क्रि० रिसना, निकलना, उफाना,  
 उबलना ।  
 सीटी० ना० स्त्री० मृद से बनावट ।  
 सीठ० ना० स्त्री० फांग, मृद, धानम ।  
 सीठना० ना० पु० } विनाइ में गाली समत गीत  
 सीठनी० ना० स्त्री० } शिष्या गाती है ।  
 सीटा० गु० नीरस, रसहीन, पौधा, असार,  
 रोगह ।  
 सीठी० ना० स्त्री० सीठ, सींगी ।  
 सीड़ी० ना० स्त्री० नसेनी, सोपा, चारोदण,  
 चीना ।  
 सीत० ना० पु० शीत, ओस ।  
 सीतरस० ना० पु० मुहपटका रोग ।  
 सीतलचीनी० ना० स्त्री० शोषणविशेष ।  
 सीतसपाटी० ना० स्त्री० चर्दविशेष ।  
 सीतला० ना० स्त्री० माता, गोटी, चिचक ।  
 सीता० ना० स्त्री० निधि, धमा, गमा, धीमान्,  
 की जी ।  
 सीताकरण्ड० ना० पु० सुगर के पास तर्पण  
 विशेष ।  
 सीतांग० ना० पु० शीतान्, लड्डूना ।  
 सीताफल० ना० पु० आता, सीरा, कद्दू ।  
 सीताश्रम० ना० पु० सीताका आश्रम ।  
 सीदना० अ० क्रि० इ स्त्री हान्य, इ खपाना ।  
 सीधा० गु० सोभा, निखल, भाला, सरा, सूधा,  
 ना० पु० भोजन की सामग्री ।  
 सीधार्ड० ना० स्त्री० सोरु, भोलापन, सरार,  
 सुधार्ड ।  
 सीना० स० क्रि० तगना, तागना, टाकी,  
 धुरपना ।  
 सीप० ना० स्त्री० धान विराण जिसकी शूठली

सीपी के समान होती है, सीपी ।  
 सीपसुत० ना० पु० मोती ।  
 सीपी० ना० स्त्री० जलजन्तुविशेष ।  
 सीमती० } ना० स्त्री० स्त्री, बाला ।  
 सीमन्ती० }  
 सीमा० ना० स्त्री० हृद, बांहा, धूरा, मर्याद,  
 सिवाना, श्रवण ।  
 सिय० } ना० स्त्री० श्रीजानकी जी ।  
 सिया० }  
 सीर० ना० पु० हल, खेती निजकी ।  
 सीरपाणि० ना० पु० श्रीवलदेवजी ।  
 सीरा० गु० शीतल, ना० पु० मोहनभोग, सीरा ।  
 सील० ना० पु० शील ।  
 सीला० गु० गीला, शीतल, ना० पु० अम का  
 बीनना ।  
 सीय० ना० पु० सँव, मर्याद, सीम ।  
 सीवली० ना० पु० जातिविशेष ।  
 सीस० ना० पु० शीर्ष, शिर, शिला ।  
 सीसक० } ना० पु० धातुविशेष ।  
 सीसा० }  
 सीसों० ना० पु० श्रीराम वृक्षविशेष ।  
 सु० अव्य० इसका प्रयाग जिस शब्द के प्रथम में  
 हो उसके अर्थ में अधिकारि वा भलाई वा  
 उत्तमता समझी जाती है यथा सुजि सुकम  
 आदि, और से यथा जास अर्थात् जिस  
 से, सो ।  
 सुंघाना० स० कि० महकाना ।  
 सुंघावट० ना० पु० महक, गन्धि, वास ।  
 सुअजन० ना० पु० अच्छा अंजन, सिद्धान्त ।  
 सुअर० ना० पु० शर ।  
 सुआर० ना० पु० रसोइयां, बावर्ची, रसों  
 करनेहारा ।  
 सुअसिन० ना० स्त्री० मान्य, नातेदारकी स्त्री ।  
 सुअचाना० अ० कि० डरना, संकोचितहोना ।  
 सुअटा० अ० सूखा, दुबला ।  
 सुअटी० गु० स्त्री० दुबल, दुबली, सूती ।

सुकड़ना० अ० कि० सिकुड़ना, बट्टरना,  
 समिटना ।  
 सुकएटक० ना० पु० पियङ्गुसुत्र ।  
 सुकंठ० ना० पु० समीप, अ० अच्छागला ।  
 सुकनाश० ना० पु० स्योनावृक्ष ।  
 सुकर० अ० सहज, करने के योग्य ।  
 सुकवार० गु० कोमल, निर्मल ।  
 सुकसारण० ना० पु० रावण के दूत ।  
 सुकाल० ना० पु० अच्छीयजु, बुढ़वात, अच्छा  
 समय देर ।  
 सुकांटक० ना० पु० करेला तरकारी ।  
 सुकुचना० अ० कि० सुकचना ।  
 सुकुमार० अ० सुकवार, नर्म, कममिहनत,  
 ना० पु० चम्पा, केला, गन्ना, बालक ।  
 सुकृत० ना० पु० भलाई, पुण्य, कीर्ति, सवाव,  
 गु० अच्छी रीति से किया गया, अच्छा काम ।  
 सुकृती० गु० पुण्यवान्, भाग्यवान्, धर्मत्मा,  
 दाता ।  
 सुकेत० ना० पु० दक्षजातिका देवताविशेष ।  
 सुकेतसुता० ना० स्त्री० ताड़का निशाचरी ।  
 सुकेरी० ना० स्त्री० अस्सराविशेष ।  
 सुख० ना० पु० चैन, कल, सन्तोष, आनन्द ।  
 सुखचैन० ना० पु० विश्राम, सावकाश ।  
 सुखतला० ना० पु० जूते में दूसरातला ।  
 सुखद० अ० सुखदायक, अच्छा ।  
 सुखदर्शन० ना० पु० पौधाविशेष जिसका  
 कान में पीड़ा के समय डालते हैं ।  
 सुखदाता० अ० सुख देनेहारा ।  
 सुखदान० ना० पु० सुखका दाग ।  
 सुखदानी० } गु० सुखका देनेहारा ।  
 सुखदायक० }  
 सुखदास० ना० पु० धानकी एक जाति ।  
 सुखदेव० ना० पु० देवताका सुख ।  
 सुखपाल० ना० पु० पालकी विशेष ।  
 सुखपूर्वक० अव्य० सुख से ।  
 सुखमा० ना० स्त्री० शोभा, कान्ति, चमक ।

सुखलाना० स० क्रि० सुखाना, जलाना ।  
 सुखवक्त्रा० गु० सुखदेता कहनेहारा ।  
 सुखाना० स० क्रि० सुखलाना ।  
 सुखारी० गु० आनन्द, सुख, आनन्दित ।  
 सुखाला० गु० सहज ।  
 सुखासन० ना० पु० सुखपाल ।  
 सुखित० गु० आनन्दित, चैन स युक्त ।  
 सुखिया० } गु० आनन्दित, चैनी, सुरी,  
 सुखी० } सतोषा ।  
 सुखेन० ना० पु० सुख से, वैयविशेष जो लना  
 में धनतरिका प्रथा ।  
 सुखेनी० ना० स्त्री० काला निर्रात और बड़ा  
 बरौदा ।  
 सुगज० ना० पु० बार विशेष जो रामदल में  
 था, गु० अन्धाहाथी ।  
 सुगन्धक० ना० पु० पुष्करमूल ।  
 सुगन्धयन्धु० ना० पु० हीम, यश ।  
 सुगन्धि० ना० स्त्री० भली नास महक, गु०  
 महकीला ।  
 सुगन्धिक० ना० पु० कालानीरा ।  
 सुगम० गु० जाने के योग्य, चढ़ने के योग्य, सहज,  
 सहज, करने के योग्य, मला ।  
 सुगर्भ० ना० स्त्री० रानिर्भावविशेष ।  
 सुगाना० अ० क्रि० राककरना, चित्तदाज्ञा,  
 स० क्रि० लगाना ।  
 सुग्रीव० ना० पु० कारोंका राजाविराज, श्रीकृष्ण  
 क रफका एकपोषा विशेष, गु० अन्धा कण्ठ ।  
 सुघटित० गु० अ द्य वनायागया, पूरामया ।  
 सुघड़० गु० सुजैल, सुशाल, सुदर ।  
 सुघड़ई० ना० स्त्री० सुशीलता, सुदरता ।  
 सुघाट० ना० पु० भलापाट, अन्धाजैल, गरुण ।  
 सुच० गु० शुच, कर्चा, निर्मल ।  
 सुचक० गु० तावी, सुचता, चौकस ।  
 सुचरिषा० ना० स्त्री० परिश्रवा ।  
 सुचिन्त० } गु० चौकस, चिन्तारहित, धरें स  
 सुचित० } राह, भिर, निनासक ।

सुचिन्तित० गु० अति विचार, अन्धा मगवद ।  
 सुचंत० गु० सुती, चोरस, होगियात ।  
 सुजन० गु० सजन, मना, आदरी, सातु ।  
 सुजसी० गु० प्रवेष्टित, फीनिमर्द ।  
 सुजान० गु० प्रवीण, ज्ञानी, चतुर, बुद्धिमत् ।  
 सुजाना० स० क्रि० पुलाना ।  
 सुमाना० स० क्रि० दिसलगा, समझना ।  
 सुदशुन० ना० स्त्री० लट, धरौ ।  
 सुडाम० गु० अन्धामवा ।  
 सुठि० ना० स्त्री० सोति, अन्ध० अति, निहायत,  
 नहत, अधिक ।  
 सुडही० ना० स्त्री० गुडही की टोरी, अचानक से  
 दौलना ।  
 सुडप० ना० स्त्री० उमकी, यौग ।  
 सुडपना० अ० क्रि० सुसकना, चटना, चूसना ।  
 सुडकना० स० क्रि० सुडकना, लीना ।  
 सुडौल० } गु० सुदर, सुधरा ।  
 सुडव० }  
 सुडाल० }  
 सुरिड० ना० स्त्री० हाथी की सुड, सुड ।  
 सुराडी० ना० स्त्री० पिण्णी, पिपरी ।  
 सुत० ना० पु० लहज, वेग ।  
 सुतरा० ना० पु० बड़ा जो हाथ में पहनत है ।  
 सुता० ना० स्त्री० बगी, पुथी ।  
 सुतान० ना० पु० सुतका बहुवचन ।  
 सुतार० ना० पु० बर्ष, समय, पात, दाग ।  
 सुतारी० ना० स्त्री० सुध, सुधा ।  
 सुतीक्ष्ण० ना० पु० सुनिविशेष ।  
 सुतुष्टि० ना० स्त्री० कला चन्द्रमाकी विशय ।  
 सुभाम० ना० पु० इद ।  
 सुधन० ना० पु० तम्बान, पायनामा ।  
 सुधनी० ना० स्त्री० बन्दविशय ।  
 सुधरा० गु० अन्धा, सुदर, प्रदूष, ना० पु०  
 नावानामक का एक शिष्य ।  
 सुधराई० ना० स्त्री० सुदरता, भलाई ।  
 सुधरासाही० ना० पु० भिक्षुविशेष ।

सुथल० } ना० पु० अर्द्धा स्थान, पञ्चमकान ।  
सुथान० }

सुदती० } ना० स्त्री० वह स्त्री जिसके दात  
सुदन्ती० } अर्द्ध हों, अर्द्ध हाथी ।

सुदर्शन० ना० पु० श्री विष्णु के चक्रवा नाम,  
वृक्षविशेष जिसको गुलावनामून कहते हैं, नाम  
एकचूर्ण का है, गु० दिम्बनीट ।

सुदक्षिणा० ना० स्त्री० रागादिलीपकी स्त्री का  
नाम, अर्द्धा अपूर्वदक्षिणा वा दाा ।

सुदामा० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का गुरुनायु ।

सुदी० ना० स्त्री० उजियाला पाल ।

सुदुर्लभ० गु० अत्यन्त दुर्लभ ।

सुदृश्य० गु० सुदर, दिसनीट ।

सुदृष्टि० ना० स्त्री० अर्द्धादृष्टि ना० पु० गिद्ध  
पत्नी, गु० निशानी ।

सुदेश० ना० पु० अर्द्धादेश, गु० अग, सुदर,  
नेक ।

सुध० ना० स्त्री० स्मरण, चेत, सुधि, गु० शुद्ध ।

सुधवुध० ना० स्त्री० चेत, पहिचान, बूझ ।

सुधरना० अ० क्रि० बनना, समलना, सजना ।

सुधर्म० ना० पु० सत्यधर्म, अर्द्धाधर्म ।

सुधर्मा० ना० स्त्री० देवता, सुसमाज ।

सुधा० ना० स्त्री० अमृत, जल ।

सुधा० अन्व० समेत, सहित ।

सुधांशु० }  
सुधाकर० } ना० पु० चन्द्रमा ।  
सुधाधर० }

सुधाना० स० क्रि० चिताना, स्मरण देना ।

सुधारना० स० क्रि० सवारना, बनाना, सतना ।

सुधावास० ना० पु० चन्द्रमा, खारकल ।

सुधि० ना० स्त्री० स्मरण, चेत, याद, स्मरण ।

सुधी० गु० सुदृष्टि, पण्डित ।

सुन० गु० शय्य ।

सुनकातर० ना० पु० सर्पविशेष ।

सुनवहरी० ना० स्त्री० रोगविशेष ।

सुनयना० गु० अर्द्धा आखोंवाली ना० स्त्री०  
शीगनकीनीकी माता ।

सुनसर० ना० पु० भूषणविशेष ।

सुनसान० गु० उपचाप, उमाङ्ग ।

सुनहरा० गु० सुनहला, सोनेका ।

सुनाना० स० क्रि० जताना, बतलाना, बहना,  
समझाना ।

सुनाट० ना० स्त्री० सुनाहट, मोन ।

सुनार० ना पु० स्वर्णकार, सोनार ।

सुनारिन्० ना० स्त्री० सुनार की स्त्री ।

सुनारी० ना० स्त्री० सोनार का काम, रूपवती,  
गु० प्रवीण, चतुर ।

सुनावनि० } ना० स्त्री० विदेश में मरे का  
सुनावनी० } समाचार ।

सुनियांस० ना० पु० जिगनावृक्ष ।

सुनीति० ना० स्त्री० भली रीति, शिष्टाचार ।

सुन्दर० गु० सुरूप, सुबोल, अर्द्धा, भला ।

सुन्दरता० ना० स्त्री० सुधरार्थ, भलाई ।

सुन्दरी० ना० स्त्री० स्त्री, सुन्दर स्त्री, अर्द्धा ।

सुज्ञा० स० क्रि० कान धरना, श्रवण करना ।

सुपच० गु० जो अर्द्धा विधि से पचजाये ।

सुपट० ना० पु० अर्द्धा यज्ञ ।

सुपंध० ना० पु० अर्द्धामार्ग ।

सुपर्य० ना० पु० गगादि का नहान ।

सुपत्त० ना० पु० सुचापण, शुकुपण ।

सुपत्ती० गु० अर्द्धा पत्र करनेवाली, सत्सही-  
यक ।

सुपात्र० गु० योग्य, भलामानस ।

सुपारी० ना० स्त्री० पूर्णफल, डकी ।

सुपास० ना० पु० आराम, सुनीता, सुल ।

सुपुत्र० } गु० योग्य पुत्र, भला पुत्र, पुत्र,  
सुपूत० } आज्ञाकारी पुत्र ।

सुप्त० ना० पु० निद्रा, गु० सुता, निद्रित ।

सुप्तोत्थित० गु० नींद से हृदयभङ्गायकर उठा ।

सुप्रभा० ना० स्त्री० पदमाक ।

सुप्रलाप० ना० पु० सुवचन, अर्द्धावातर्चति ।

सुफल० गु० जो अर्घ्याफल देना है, वाम वा  
 उपार्जनी, पूजा, ना० पु० अर्घ्याफल, मिद्धि ।  
 सुफला० ना० स्त्री० विण्डलज्वर ।  
 सुयत्० ना० पु० सङ्क, अर्घ्या मार्ग ।  
 सुमग० गु० सुदर, अर्घ्या भाग्य ।  
 सुभगा० ना० स्त्री० जिस स्त्री का पति बहुत  
 प्रेमसे, जो स्त्री बहुत पुत्र ज माये, सुहागिनी ।  
 सुमट० } ना० पु० योम, बर, बहादुर, बल  
 सुमट्ट० } वान्, रथ ।  
 सुमार्गी० गु० भाग्यवान्, नेकालीन ।  
 सुमारय० ना० पु० अर्घ्याभाग, नेकसरती ।  
 सुमीता० ना० पु० सुवीता, सायकाश ।  
 सुभुज० ना० पु० सुवाद, देवविशेष ।  
 सुमति० ना० स्त्री० भलमनस्वी, सत्त्वगुण, सुन्दर  
 बुद्धि, ना० पु० बर्दाविशेष, राजा जाकका  
 दितीथी ।  
 सुमन० ना० पु० गेहूअन, धन्ना, पुत्रविशेष  
 गु० जिसका मन शुद्ध हो, शीलवान् ।  
 सुमनस० ना० पु० देवता, पूल, वसत ।  
 सुमना० ना० स्त्री० मालती, सुदिता, स्त्री, रति,  
 अनेकार्थे यथा ( सुमना कहिये मालती सुमना  
 सुदिता तीय )  
 सुमनासुत० ना० पु० फूल आदि उवग्न ।  
 सुमन्त० ना० पु० राजादशरथका मन्त्रीविशेष ।  
 सुमन्त्र० ना० पु० अजमन्त्र, नेकसलाह, अर्घ्या  
 मता ।  
 सुमरना० स० द्वि० स्मरण करना, नामलेना ।  
 सुमरन० ना० पु० स्मरण, चत, सुधि, समझौनी,  
 सुमरनी ।  
 सुमित्र० ना० पु० सूर्य, अर्घ्यामित्र ।  
 सुमित्रा० ना० स्त्री० लक्ष्मणजी की माता ।  
 सुमिल० गु० विकारी, विकन ।  
 सुमृति० ना० स्त्री० स्मृति ।  
 सुमेरु० ना० पु० देवताओं के बरने का पर्वत  
 विशेष ज्योतिष में उत्तर ध्रुव ।

सुमेरु० गु० योगमिलसागर, अर्घ्यामेल ।  
 सुयश० } ना० पु० सुख्याति, नेकनामी ।  
 सुयशः० }  
 सुयोग० गु० अर्घ्या योग ।  
 सुर० ना० पु० देवता, स्वर ।  
 सुरआपगा० ना० स्त्री० क्षीरगात्री, रामचन्द्रि  
 वाया यथा ( उपर्जित उन्वत्तशोभिने उर  
 देतियोमनसये, सुरआपगानपसितुमें जन स्वैत  
 श्रीदर्शयव )  
 सुररूपि० ना० पु० सुरभि, नारदनी ।  
 सुररुना० स० द्वि० सुदरुना ।  
 सुररुक्म० ना० पु० माणिक ।  
 सुरगन्धज० ना० पु० पद्म वृक्ष ।  
 सुरगन्धनी० ना० स्त्री० स्वर्णकेतकी ।  
 सुरगुरु० ना० पु० बृहस्पति ।  
 सुरंग० ना० पु० सेंध, धद, ईश्वर, अन्तरग ।  
 सुरचाप० ना० पु० इन्द्रधनुष जो मेघकी वृत्तों  
 पर सूर्यकी किरणें पड़ने से प्रकटता है ।  
 सुरत० ना० स्त्री० सुधि, स्मृति, मैथुन ।  
 सुरता० गु० सुरतीला ।  
 सुरती० ना० स्त्री० तमाकू खाने की ।  
 सुरतीला० गु० विचारस्थान् प्यानी, चीरस ।  
 सुरथ० ना० पु० राजाविशेष, अर्घ्यारथ ।  
 सुरम० ना० पु० देवदास, कल्पवृक्ष ।  
 सुरपति० ना० पु० इन्द्र ।  
 सुरभि० ना० स्त्री० सुगधि, महक, वसन्तकस्तु,  
 गाय, ना० पु० जायफल, मृग, नेल, केला ।  
 सुरभोग० ना० पु० अमृत ।  
 सुरमणि० ना० पु० चिंतामणि, इन्द्र ।  
 सुरमा० ना० पु० अन्न, यद्दशब्दकारसीका है ।  
 सुरमुनि० ना० पु० नारदमुनि ।  
 सुरमृत्तिका० ना० स्त्री० पट्टकी ।  
 सुरराज० ना० पु० इन्द्र ।  
 सुररूप० ना० पु० मदारवृक्ष, कल्पवृक्ष ।  
 सुररिपि० ना० पु० नारदजी ।  
 सुरवीर्या० ना० स्त्री० देवमार्ग ।



सुरसर० ना० पु० मानसरोवर ।  
 सुरसरि० } ना० स्त्री० शीर्षगात्री ।  
 सुरसरिता० }  
 सुरश्रेष्ठ० ना० पु० ब्रह्मा, इन्द्र ।  
 सुरस० शु० सुसाद ।  
 सुरसी० ना० स्त्री० तुलसी पौधा ।  
 सुरसुराना० अ० कि० सरसराना, गुदगुदाना ।  
 सुरसुराहट० ना० स्त्री० सरसराहट, गुदगुदी ।  
 सुरसुरी० ना० स्त्री० गुदगुदी, चण्डीविशेष ।  
 सुरसेनप० ना० पु० स्वाभिकार्त्तिक ।  
 सुरा० ना० स्त्री० मदिरा, दारू, शराव ।  
 सुराई० ना० स्त्री० बहादुरी ।  
 सुराह० ना० पु० देवदारु ।  
 सुराहा० ना० स्त्री० शोरकाकोला ।  
 सुरापान० ना० पु० मदिरा पीना ।  
 सुरारि० ना० पु० दैत्य, राक्षस ।  
 सुरालय० ना० पु० सुमेरु, स्वर्ग, देवालय,  
 सुरभवन ।  
 सुराष्ट्र० ना० पु० गुजरात के समीप देश  
 विशेष ।  
 सुरकना० स० कि० सुकना ।  
 सुरूप० शु० सुन्दर, दिगन्ती, अक्षरूप ।  
 सुरेन्द्र० ना० पु० सुरेण, निर्माकन्द, इन्द्र ।  
 सुरेश० ना० पु० इन्द्र ।  
 सुरैत० } ना० स्त्री० अग्निवाहिता, उड़ली,  
 सुरैतिन० } रत्ननी, परवेठी, उड़री ।  
 सुलगना० अ० कि० बरना, जलना, आंच उ-  
 टना, धीरे धीरे जलना ।  
 सुलगाना० स० कि० शरना, सुवालमाना,  
 जलाना, परचाना ।  
 सुलभना० अ० कि० सुलना, निवहना ।  
 सुलभाना० स० कि० उभयना, उकेलना,  
 संलना ।  
 सुलभ० शु० सहजसे जो पायाजाये, साधारण ।  
 सुलक्षण० ना० पु० शुभ के सूचक-विशेष,  
 सुदरता ।

सुलाना० स० कि० शयन कराना, पौदाना, बंध-  
 करना ।  
 सुलोक० ना० पु० नेकनामी, सुयश, अच्छा  
 लोक, अच्छा मनुष्य ।  
 सुलोचना० ना० स्त्री० चकोरपत्नी, मेघनाद की  
 स्त्री, अच्छी-आँखोंवाली ।  
 सुलोमण० ना० स्त्री० काक जंपा बूटी ।  
 सुवक्ता० शु० भला कहनेहारा, अच्छापाठक ।  
 सुवचन० ना० पु० विरादवाणी, अच्छीभाती ।  
 सुवन० ना० पु० पुत्र, लड़का ।  
 सुवर्चि० } ना० स्त्री० सज्जी लंबल ।  
 सुवर्चिका० }  
 सुवर्ण० ना० पु० कनक, सोना, सुजाति, सुर्ग ।  
 सुवर्णद्रुमा० ना० स्त्री० किरवाली ।  
 सुवर्त्त० ना० पु० आकाश, नाममात्रायां ( अ-  
 म्बर पुत्रक बहुतनम अन्तरित धनवास, अमोम  
 अन्नत विहायसी सं सुवर्त्त आरास )  
 सुवल० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का एक सत्ता ।  
 सुवाना० स० कि० सुलाना ।  
 सुवार० ना० पु० रसायना, नावर्ची, रसायने-  
 यथा ( विविध पाति वेदी व्यवहार, लगे परी-  
 तन चतुर सुतारा )  
 सुवाह० ना० पु० दैत्यविशेष ।  
 सुविस्तरा० ना० स्त्री० गन्धपसारण ।  
 सुवेल० ना० पु० समुद्रतट पर्यटनविशेष ।  
 सुवैला० ना० स्त्री० अच्छीसायत, अच्छाकाव ।  
 सुवैया० ना० पु० सोनेहार ।  
 सुशिक्षा० ना० स्त्री० भली शिक्षा, अच्छी  
 शास्त्र ।  
 सुशिक्षित० शु० प्रज्ञान, अच्छी शिक्षापावे-द्वये ।  
 सुशील० शु० निराम राज अक्ष्णा है-सख-  
 भाव, मातु, शिक्षाचार ।  
 सुशीलता० ना० स्त्री० शिक्षाचार, स्वभाव में  
 नम्रता ।  
 सुशी० ना० स्त्री० शोभा ।  
 सुश्रूपा० ना० स्त्री० शोभा, आदर, सिद्धपत ।

सुधेनी० ना० स्त्री० माँ, नाट, राह ।  
 सुपुत्रि० ना० स्त्री० सुपुत्रि, धनरक्षारिण ।  
 सुसकारना० ध० क्रि० धनरक्षणा ।  
 सुमताना० ध० क्रि० विधायन करना, शान  
 लेना ।

सुसमय० ना० पु० अर्थात् समय, वदती का  
 समय ।

सुसम्बद्ध० गु० निबुद्धी अर्थे प्रकार रचनाधी  
 गई है ।

सुसर० } ना० पु० सहर ।  
 सुसरा० }

सुसराल० ना० स्त्री० सधराल ।

सुस्थ० गु० अयोगी, भला, बगा ।

सुस्थिर० गु० निरचल, चटल ।

सुस्मृति० ना० स्त्री० चेतयता, अस्मृति ।

सुस्तवा० ना० स्त्री० बखौनी ।

सुस्राद० गु० सरस, रसीला ।

सुहाग० ना० पु० सौभाग्य, मलाभतय, पतिवा  
 पार, स्त्री का भूषणरिण, जो पति के जीवन  
 का विर, धरिना ।

सुहागन० ना० स्त्री० विवाहिता स्त्री, जिस स्त्री  
 का पति जीता हो ।

सुहागा० ना० पु० श्रीपरिणेश, निमित्त सुखी  
 आदि गणता है ।

सुहाता० गु० सोहना, चाहता, भला ।

सुहाना० } गु० भावित, अर्थात्, सोहना,  
 सुहावना० } चाहता, अ० क्रि० अर्थात् लगना,  
 रचना, मानना ।

सुहास० ना० पु० } पदवाणरिण ।  
 सुहासी० ना० स्त्री० }

सुहौटी० ना० स्त्री० जो पदवी चीतट वा धन्ने  
 क ऊपर लगाते हैं ।

सुहृद० ना० पु० मित्र, प्रियतम ।

सुभ्रर० ना० पु० } शर, बराह ।  
 सुभ्ररी० ना० स्त्री० }

सुभ्रा० ना० पु० तोता, सूना ।

सुई० ना० स्त्री० बरत सीरी की बन्धुपरिण ।

सुंगरा० ना० पु० भैरवा बन्धु, पक्षी ।

सुंगा० ना० पु० टगा, टीठा ।

सुंग० ना० स्त्री० गंध, बाण ।

सुंगन० ना० स्त्री० सुगने की बरतु ।

सुंगना० स० क्रि० बामलेना, गंधिमदना ।

सुंगनी० ना० स्त्री० नाम, दुलार ।

सुंठ० ना० स्त्री० सुंठी, मीठा ।

सुंठ० ना० स्त्री० हाथी की नाक ।

सुंटा० ना० पु० सुगरीण, कीटा ।

सुंठी० ना० स्त्री० बहार, बखवार ।

सुंतनी० } स० क्रि० बाँझा, सेबा, टही  
 सुंतनी० } से पत्ती की निवाला या भिनी  
 करना ।

सुंम० ना० पु० एम ।

सुकटा० गु० दुबला, निर्बल, सूना ।

सुकर० ना० पु० शर ।

सुकथ० ना० पु० किमारी, शुक्र ।

सुकथार० ना० पु० सुकथार ।

सुका० ना० पु० } चौप्रती ।  
 सुकी० ना० स्त्री० }

सुक्यपाक्य० ना० पु० जवाहार ।

सुसुसुडी० ना० स्त्री० सुसुसु, सुसुसु ।

सुपना० ध० क्रि० सुना होना, गणना, लिख  
 बना, मूरभाना ।

सुखा० गु० शुक्ल, रसहीन ।

सुग० ना० स्त्री० दुविधा, चिन्ता, शक ।

सुगा० ना० पु० तोता ।

सुचक० गु० शपक, बोरक, शिचक, प्रकारक ।

सुचना० ना० स्त्री० जनावना ।

सुचनिषा० ना० स्त्री० बिनक, केहरित ।

सुचबा० ना० स्त्री० केतवा ।

सुचित० गु० बाधित, सूचना क्रियागया ।

सुचिमुखी० ना० स्त्री० माँ दत्ता ।

सुची० ना० स्त्री० सुई, दती ।

सुचीपत्र० ना० पु० पत्र जिसमें सुनक के अ

प्याय वां प्रकरणे लिखेजति है ।  
 सूच्याकार० ना० पु० सूई के डौल ।  
 सूज० } ना० पु० कुलाव, शोष ।  
 सूजन० }  
 सूजना० अ० त्रि० पुलना ।  
 सूजा० ना० पु० बर्मा, वैधी, सुतारी ।  
 सूजी० ना० पु० सीनेहारा, दर्जी, दरदराआटा,  
 सूई ।  
 सूक्त० ना० स्त्री० दृष्टि ।  
 सूक्तना० अ० त्रि० गोचरीहोना, देखपड़ना ।  
 सूत० ना० पु० धागा, तागा, रथवान्, भाग,  
 बर्दई, पाराशिक, व्यासनी का शिष्य जो नेपि  
 पारण्य में शोनाकादिकन को पुराण सुनाता था,  
 पारा, व्यवहार, रीति, प्रीति ।  
 सूतक० ना० पु० अशोच, अशुचिता जो मंसव  
 वा मृत्यु के दिन से दस दिनतक मंगते हैं  
 उसके दो नाम हैं वृक्षपुत्र, मृत्युपुत्र ।  
 सूतना० अ० कि० सीमा, नदिना, सा० कि०  
 ताकना, उपायकरना, सुतलगाणा, ताङ्गा ।  
 सूतली० ना० स्त्री० डोरी, पतनी रस्ती ।  
 सूतिका० न० स्त्री० जन्मा, प्रसूतिवा, प्रसूति ।  
 सूती० पु० जो सूती से बना, सूतिका  
 सूतीहुई ।  
 सूतू० पु० गेहूँ ।  
 सूत्र० ना० पु० तागा सेपेपम अनेकार्थ क  
 वा बोरक श्रधा ।  
 सूत्रधर० ना० पु० गड, काकाग ।  
 सूत्रनामि० } ना० स्त्री० मङ्गल ।  
 सूत्रा० }  
 सूत्रन० ना० पु० जन्म, प्रायजानह ।  
 सूत्रनी० ना० स्त्री० जन्म, प्रायजानह, सूत्रनी ।  
 सूत्र० } पु० भीमा, सुत, सुतपथ, भाऊ,  
 सूत्रा० } निष्कार ।  
 सूत्रार्थ० ना० स्त्री० सूत्रार्थ, भाषणा ।  
 सूत्र० पु० सुत ।

सूना० पु० सुखा, उजाक, जहा कोई न हो ।  
 सूनु० ना० पु० पुन, बैदा ।  
 सूनी० पु० शय ।  
 सूप० ना० पु० शय, धान ।  
 सूपकार० ना० पु० रोगी करने हारा, बाधची ।  
 सूपायेना० ना० पु० पथीविशेष ।  
 सूपार० ना० पु० सुपार ।  
 सूपियारी० ना० स्त्री० सुपारी ।  
 सूम० ना० पु० शय, कृपय, कैजसे ।  
 सूर० ना० पु० वीर, हगात, सूर्य, सूरदास, सु०  
 अथा ।  
 सूरज० ना० पु० सूर्य सुभ्रत, रात्रि सुभ्रत  
 नेशचर, यमराज ।  
 सूरजगहन० ना० पु० सूर्यगहन ।  
 सूरजमुखी० ना० स्त्री० सूर्यमुखी ।  
 सूरजपल्लव० ना० पु० सूर्यपल्लव ।  
 सूरिका० ना० स्त्री० सूरिका ।  
 सूरक० ना० स्त्री० सूरक ।  
 सूरदास० ना० पु० सूरदास, सूरदास के  
 सूरदास ।  
 सूरदास० ना० पु० वीर, मावत, रात्रि ।  
 सूरदास० ना० पु० रात्रिशीविशेष ।  
 सूमा० पु० बर, सावत, मनचला ।  
 सूमारन० ना० पु० वारता, सतिती,  
 सुदही ।  
 सूसुत० ना० पु० सुभ्रत, रात्रि सुभ्रत, करण,  
 यमराज ।  
 सूरा० ना० पु० सावत, बखवान्, गीता ।  
 सूरी० ना० स्त्री० सुरी, सुनी ।  
 सूर्य० ना० पु० सूर्य, सप ।  
 सूर्यनक्षत्रा० ना० स्त्री० सूर्यनक्षत्र, सूर्य की  
 सुदही ।  
 सूर्य० ना० पु० सूर्यपापु, दिनमणि, रवि,  
 सूर्य ।  
 सूर्यक० ना० पु० नावशुभ ।

सूर्यकान्ति० ना० स्त्री० सूर्यमणि ।  
 सूर्यग्रहण० ना० पु० सूर्य का ग्रहण ।  
 सूर्यमणि० ना० स्त्री० मणि विशेष ।  
 सूर्यमुखी० ना० स्त्री० सूर्यविशेष ।  
 सूर्यप्रिय० ना० पु० तावाधात् ।  
 सूर्यवशी० ना० पु० सूर्य वश का शस्त्री ।  
 सूर्यबलम० ना० पु० भ्रगतान, भगता पोषा ।  
 सूर्यारथ० ना० पु० सूर्यमणि ।  
 सूर्याह्वय० ना० पु० मदारवृक्ष ।  
 सूर्यास्त० ना० पु० सप्या, साम, सूर्य का  
 अस्त अर्थात् छुपना ।  
 सूर्येन्दुसंगमा० ना० पु० अमावस्य ।  
 सूर्योदय० ना० पु० सूर्य का उदय, तड़का,  
 सनेरा ।  
 सूड० ना० पु० शूल, फुरपुरी, मालाकी छुनि,  
 काग, अस्त्रविशेष ।  
 सूक्ष्मी० ना० पु० श्ली, ना० स्त्री० फासी ।  
 सूवा० न० पु० तावा, मोटी धई ।  
 सूख० } ना० पु० जल जन्तुविशेष ।  
 सूखमार० }  
 सूखी० ना० स्त्री० वस्त्रविशेष ।  
 सूहा० गु० लाल, अरुण, ना० पु० रागविशेष ।  
 सूक्ष्म० ना० पु० जो बस्तु अथवा अर्थात् हलकी  
 पत्रली बारीक हो ।  
 सूक्ष्मता० ना० स्त्री० हलकापन, पतलाई,  
 बारीकी ।  
 सूक्ष्मदर्शी० गु० चतुर, सुता, श्रवीण, ज्ञानी ।  
 सूक्ष्मपत्र० ना० पु० कर्तादा ।  
 सूजना० स० कि० सिरजना ।  
 सूजित० श० जो सिरजागथा ।  
 सूष्टि० ना० स्त्री० उत्पत्ति, जगत्, वृष्टि ।  
 सूष्टिकर्त्ता० ना० पु० ब्रह्मा, परमात्मा ।  
 से० अर्थ० अयादान करक वा करण का जो  
 धरु विद्, साध, लग ।  
 सैक० ना० पु० सैकने का काम, कतार ।  
 सैकदा० श० सी, शान, १०० ।

सैकना० स० कि० तताना, गर्माना ।  
 सैंगरी० ना० स्त्री० फली, धमी ।  
 सैठा० ना० पु० } सरकण्डा जिससे मोटा  
 सैठी० ना० स्त्री० } बनाते हैं, सरपत, पतली  
 पूजका पोषा ।  
 सैत० अर्थ० विनामोल, सुप्त, सैतमेत ।  
 सैतना० स० कि० सुधारना, बनाना, स्वप्न  
 करना ।  
 सैद० ना० पु० सौराविशेष ।  
 सैदुर० ना० पु० शेर ।  
 सैघ० ना० पु० चोरी करने के लिये चोरलोग  
 जो भीष में वेद करते हैं सुरग ।  
 सैघना० स० कि० लोदना, टाना ।  
 सैघा० ना० पु० लक्ष्यविशेष जिसको साहसी  
 लोन कहते हैं ।  
 सैधिया० ना० पु० विष, जातिविशेष, चोर जो  
 संध में पेटता है ।  
 सैधी० ना० स्त्री० सञ्चरका रस, ताहीविशेष ।  
 सैह्यां० ना० पु० दादविशेष, दिनाई ।  
 सैगुन० ना० पु० काष्ठविशेष जो पैशू देश से  
 आता है ।  
 सैचन० ना० पु० द्विद्वकव ।  
 सैज० ना० स्त्री० शप्या, शिखर, पलग, मना ।  
 सैजरेन्द० ना० पु० सैन्यर विद्युना बाधने के  
 लिये टोरीविशेष ।  
 सैठ० ना० पु० बहा साहकार ।  
 सैठन० ना० स्त्री० सैठकी स्त्री ।  
 सैत० ना० पु० पुल, सेतु, गु० श्वेत ।  
 सैतना० स० कि० उगवना, सैतना ।  
 सैतु० ना० पु० पुल, बाध, मर्त्यादा ।  
 सैतुबन्ध० ना० पु० तीर्थविशेष, पुल जो सजा  
 धार परतसरक के मध्य समुद्र में हनुमान् आदि-  
 कनने बनाया था ।  
 सैदना० स० कि० सैकना, ततारना ।  
 सैन० ना० स्त्री० } कटक, फौज, नाम एक  
 सैना० ना० पु० } भत नाईका है ।

सेनानी० } ना० पु० चम्पाल, दलपति,  
सेनापति० } स्वामिकार्तिक ।

सेव० ना० पु० फलविशेष ।

सेम० ना० स्त्री० तरकारी विशेष का पोधा वा  
उसकी पत्नी ।

सेमर० ना० पु० सेमल वृक्ष विशेष वा उसकी  
रई ।

सेर० ना० पु० ताल विशेष १६ छाककी ।

सेराना० अ० क्रि० टटा होना, स० वि० टगर  
राग, बहाग, भसाना ।

सेल० ना० पु० बर्बा ।

सेलखड़ी० ना० स्त्री० पर्वतकी मिट्टीविशेष ।

सेला० ना० पु० वरन विशेष, नाथ विशेष ।

सेलिया० ना० पु० मार्जार, सेलीनाला ।

सेली० ना० स्त्री० बर्बा, रामायणे यथा  
(तुरत विभीषण पाद्ये मली, समुत्त सही  
राम सा सली) घृतकी बनी माला जो उगमा  
पहाते हैं, जालमर्दी ।

सेव० ना० पु० परनाविशेष, सन ना० छा०  
सेना, सुभूषा ।

सेवई० ना० स्त्री० खाकी वस्तु विशेष ।

सेवऊ० ना० पु० नीर पुनारा, सेवऊ नहर,  
झिदमतगार ।

सेवकाई० ना० स्त्री० नोकरी, पूना, म्वा, ग्दत,  
झिदमतगारी ।

सेवटि० ना० स्त्री० नदीका सेत, दलदल ।

सेवड़ा० ना० पु० जनमवस्था विशेष ।

सेवती० ना० स्त्री० पुत्र विशेष वा उन्का पत्नी ।

सेवन० ना० पु० पालन, पोषण, सेवा करना ।

सेवना० स० वि० किसी करना, पालन, सेवा  
का अन्तर करना ।

सेया० ना० स्त्री० नोकरी, दूत, दूत, विप्रम  
गारी ।

सेयवीर० ना० पु० धृष्टस ।

सेस० ना० पु० सेत ।

सेसर० ना० पु० दस में सठ विशेष ।

से० गु० सौ० ना० स्त्री० भागवानी, बरकत,  
लहर बहर ।

सेकड़ा० गु० सौ० रात ।

सेगर० ना० स्त्री० शमीवृक्ष की पत्नी, बूझ  
की पत्नी ।

सेतालीस० गु० चालीस और सात ४० ।

सेतीस० गु० तीस और सात ३० ।

सेहिकेय० ना० पु० रतु, केतु ।

सेन० ना० स्त्री० सेना, श्रेय, मन्त्र, शरण,  
चिद, इशारत, ग्दत, ग्दत ।

सेनप० ना० पु० सेना, सेनापति, स्वामि-  
वार्तिक ।

सेना० ना० स्त्री० सेना, दंड, श्रेय ।

सेनापति० } ना० पु० सेनापति, निपट-  
सेनापाल० } लडा ।

सेनासेनी० ना० स्त्री० मगर सेनकरना ।

सेन्वव० ना० पु० टिठुय का पोधा वा  
लगा होना ।

सेन्द० ना० स्त्री० सेना, दल, कटक ।

सेरन० ना० पु० मेठा ।

सेसंन० अन्व० स क के आरम्भ में ।

सेहरन० ना० स्त्री० समई ।

सेहरनी० गु० मर्दवीया ।

सेह० स्त्री० समनाचक्र, सर्पनाम ।

सेहरन० ना० पु० आर्या निरुद्ध मन्त्री रहती है ।

सेया० ना० पु० पोषणविशेष ।

सेया० स्त्री० बर, धार ।

सेया० अन्व० में ।

सेया० ना० पु० गन्ध, ममक, छिरीया ।

सेया० ना० स्त्री० मूर्त्त अन्व ।

सेयाना० स० वि० बने के छिरी गी की मिट्टी  
स कपका मटना, भग्ना, सुगाना ।

सेया० ना० पु० नाया का मसाला, नई मूर्त्तिका  
पार मिनी से ना गंध, सुगन्धित ।

सेयाहट० ना० स्त्री० सुगन्ध, सुगन्ध ।

सेया० ना० स्त्री० क्रिया, शयन ।

सौही० अर्थ० सामने, सम्मुख ।  
 सोखना० स० वि० सोचना, चूटना, पीलेना ।  
 सोच० ना० पु० प्या, वृक्ष, शोच ।  
 सोचना० स० कि० प्यानकरना, चूटना, शो  
 चना ।  
 सोज० ना० पु० सूक्ष्म ।  
 सोझ० ना० स्त्री० सीधाई ।  
 सोझा० गु० सीधा ।  
 सोत० } ना० पु० भूर, गुण्ड, जलवा निवास,  
 सोता० } वेद, धारा, झरना, समुद्रका खाल ।  
 सोत्साह० गु० उत्साह समेत, आनन्दयुक्त ।  
 सोध० ना० स्त्री० सूज ।  
 सोदर० ना० पु० सहोदर, सगाभार ।  
 सोदरा० ना० स्त्री० सगाभार, रामचन्द्रिकाया  
 (सुधा सोदरा यद्यपि आप, सवहीते अनिन्द्य  
 प्रताप) ।  
 सोध० ना० स्त्री० साध, सान ।  
 सोधना० स० क्रि० सोधन करना, ऋण भरना,  
 मिलना, निर्मूल करना, शुद्ध करना ।  
 सोन० ना० पु० शाय, छरण पुष्प विशेष ।  
 सोनहरा } गु० सोने का, सोने का सा  
 सोनहला } रंग ।  
 सोना० ना० पु० स्वर्ण, वनक लिंग, अ० क्रि०  
 नोदलेना, भरना ।  
 सोनार० ना० पु० जातिवशात्, राखवार ।  
 सोनिया० ना० पु० रात से सोना भिन्न करी  
 शरा, न्यारिया, दागलिंग बालक का ।  
 सोपान० ना० पु० सीढ़ी, जीनह ।  
 सोफालिका० ना० स्त्री० समलुपीया ।  
 सोमना० अ० क्रि० सोहना, सजना ।  
 सोमा० ना० स्त्री० शामा ।  
 सोम० ना० पु० चन्द्रमा ।  
 सोमनाथ० ना० पु० महादेव जो गुजरातमें है ।  
 सोमपादप० ना० पु० वायव्य ।

सोमरजन० ना० पु० लाडलदान ।  
 सोमराज० ना० पु० श्रीपति, पीथाविशेष ।  
 सोमराजो० ना० स्त्री० बाहुची ।  
 सोमवहक० ना० पु० वायव्य ।  
 सोमवह्यो० ना० स्त्री० नाहुची ।  
 सोमधार० ना० पु० चन्द्रार, दूसरा दिन ।  
 सोमधारी० ना० स्त्री० सोमधारी अमानस ।  
 सोमक्षीरो० ना० स्त्री० सोमक्षी ।  
 सोरठ० ना० स्त्री० रागिनीविशेष ।  
 सोरठा० ना० स्त्री० छदविशेष ।  
 सोह० ना० स्त्री० शाभा ।  
 सोह० ना० पु० मन्त्रविशेष ।  
 सोहन० गु० शामादेनेहार, प्यारा, चाहता,  
 ग० पु० सजन, रेती, ना० स्त्री० मिठारी  
 विशेष ।  
 सोहना० अ० क्रि० सजना, शोभादेना ।  
 सोहागा० ग० पु० सुहागा ।  
 सोहिल० ग० पु० रागविशेष ।  
 सोही० अर्थ० सोही, समुत् ।  
 सो० गु० शान, १०० ।  
 सो० ना० पु० शाय, सोह, सोगद, अर्थ० से ।  
 सोकरी० ना० स्त्री० बर्तुहीकन्द ।  
 सोकूता० अ० क्रि० शानोदत्त जल से युक्त  
 धोना ।  
 सोप० ना० स्त्री० धरोहर, थानी, सुपुर्गी ।  
 सोपना० स० क्रि० पड़ना, सुपुर्द करना,  
 धरना, रखना ।  
 सोफा० ना० स्त्री० श्रीपतिविशेष ।  
 सोरा० ना० पु० कालस, कानल गु० सारवा ।  
 सोर० ना० पु० मङ्गलीविशेष ।  
 सोरि० ना० स्त्री० वृद्धिप्रकृ ।  
 सोरी० ना० स्त्री० जथा, प्रवृत्ती ।  
 सोह० ना० स्त्री० किया, शाय, सोगद ।  
 सोथय० ना० पु० सुत, प्राराम ।  
 सोगन्द० ना० स्त्री० शाय, किया, सोह, यह  
 शब्द कारसी का है भाषा में प्रचलित है ।

सौच० ता० पु० सौच, जो किया करने से प-  
वित्रहो ।

सौचेती० ना० स्त्री० रवा, बचाव ।

सौजन्य० ना० पु० सजनता ।

सौत०

सौतन०

सौति०

सौतिन०

ना० स्त्री० एकमतुष्यकी दो  
क्षिप्या चापस में एक दूसरे की  
सौत कहलानी है ।

सौतिया० ना० स्त्री० सौति ।

सौतियादाह० ना० पु० सौति का दाह ।

सौतेला० गु० जो सौतिरा जाया है ।

सौध० ना० पु० महल, ऊचा मकान ।

सौन्दर्य० ना० पु० सुंदरता ।

सामाग्य० ना पु० सुभाग, भाग्यमानी, सुहाग ।

सौभाग्यवती० ना० स्त्री० सुहागिन ।

सौमित्र० ना० पु० सुमित्रा सुत, लक्ष्मणनी ।

सौम्य० ना० पु० बुधमह, बुधवार, चंद्रपुत्र, यु०  
उजला, सुंदर ।

सौम्या० ना० स्त्री० शालपर्णी ।

सौर० ना० पु० शनैश्चर, सूर्य सप्तकी ना०  
स्त्री० मछली विशेष ।

सौरभ० ना० पु० वसर, सुगंध, अमृत ।

सौरमास० ना० पु० सूर्यका एक राशि में रहने  
का काल, एक सकाति से दूसरी तक ।

सौरवर्ष० ना० पु० बारह सकातों का समय ।

सौरि० ना० पु० शनैश्चर, सृष्टिा विशेष ।

सौर्येय० { ना० पु० विद्यावमा ।

सौर्येयक० {

सौहार्द० ना० पु० मित्रता, मित्रता ।

स्कन्द० ना० पु० रामिकार्तिक ।

स्फुन्ध० ना० पु० कबा, कापड़ ।

स्वस्तन० ना० पु० पत्तन ।

स्तन० ना० पु० कुच, उठान, धन ।

स्तब्ध० गु० रुता ।

स्तम्भ० ना० पु० सग्गा, बम्बन, दण्ड ।

स्तम्भन० ना० पु० रुकाव, धमान, रोक, ठोक ।

स्तम्भित० गु० जो रोका वा पाभागया ।

स्तव० ना० पु० स्तुति, विपयकी पोपी ।

स्तायक० ना० पु० स्तुति करोहारा ।

स्तुति० ना० स्त्री० सराह, तर्कार, मना, विनय ।

स्तुतिपाठक० ना० पु० एत, बन्दीजन ।

स्तेन० ना० पु० चोर ।

स्तेय० ना० पु० चोरी ।

स्तोत्र० ना० पु० स्तव, स्तुति ।

स्त्री० ना० स्त्री० नारी, सुगाई, धीरत ।

स्त्रीण० ना० स्त्री० के परा या स्त्री के

स्वभाववर ।

स्थ० गु० गिर, टहरा, बागम ।

स्थगित० गु० धका, धया ।

स्थल० ना० पु० स्थान, भूमि, जगह, घर, भूमि

• जो स्त्री है निगपर मतुष्यादि बतलै है ।

स्थाणु० ना० पु० श्रीमहादेवनी ।

स्थान० ना० पु० ठौर ठिकाण, घर, ग्राम ।

स्थानापन्न० गु० जगहपर, उत्तरेपर, गिरी

के स्थानपर प्रतिष्ठित होता ।

स्थानी० गु० परवाला, मुकामी ।

स्थापन० ना० पु० रचना, परा, बैठाया ।

स्थापना० ना० स्त्री० प्रतिष्ठा, स्थापनकरना ।

स्थापित० गु० प्रतिष्ठित, रचतागया, निर्णय,

गिर, अचय, जो स्थापन कियागया ।

स्थाली० ना० स्त्री० शार्दी, टैकनी ।

स्थायर० गु० अचल दया वृथादि, जय ।

स्थित० गु० टरगृथा ।

स्थिति० ना० स्त्री० ठिकान, टरगा ।

स्थिर० गु० अचल, अचल, शात्र ।

स्थिरता० ना० स्त्री० शांति, धीमापना ।

स्थूल० गु० मीठा, मीठा, बडा, कठान ।

स्थूलदर्भ० ना० पु० मूत्र, छेडा, पत्ता ।

स्थूलवृत्ता० ना० स्त्री० समानवृत्त ।

स्यूतैला० ना० स्त्री० बही इलायची ।  
 स्थैर्य० ना० पु० स्थिरता ।  
 स्थौल्य० ना० पु० मोटापा, मोटाई ।  
 स्नान० ना० पु० नहान ।  
 स्नानीय० ना० पु० जल जो नहाने के योग्य है ।  
 स्नुही० ना० पु० सेंदूर ।  
 स्नेह० ना० पु० प्रेम प्रीति, प्यार, तेल ।  
 स्नेहवृत्त० ना० पु० देवदाह ।  
 स्पर्शा० ना० स्त्री० स्पर्श, दाह, अथवा अपमा  
 करनेकी इच्छा ।  
 स्पर्श० ना० पु० छुआउ, छूने का काम ।  
 स्पर्शेन्द्रिय० ना० स्त्री० त्वचा, चर्म ।  
 स्पष्ट० ना० पु० सुखा, सहज, ठीक, दृग्गत ।  
 स्पष्टीकरणार्थ० अथ० स्पष्ट करने के लिये ।  
 स्तिरा० ना० स्त्री० शालपर्णी ।  
 स्पृश्य० गु० स्पर्श करने के योग्य ।  
 स्पृष्ट० श० छुआगया ।  
 स्तूहा० ना० स्त्री० इच्छा, चाह ।  
 स्फुटक० } ना० पु० रश्मि पाषाणविशेष,  
 स्फुटिक० } विहार पत्थर, चन्द्रकातमणि,  
 और कपूर ।  
 स्फटिकाक्षर० ना० स्त्री० कटकरी ।  
 स्फटिकोपल० ना० पु० चन्द्रकातमणि,  
 विहार ।  
 स्फुट० श० विला, सुला, व्यक्त, प्रकट ।  
 स्फुरत्० अ० वि० प्रकाशित, शोभित, डोलत ।  
 स्फूर्ति० ना० स्त्री० दीप्त पक्वकाष्ठ, डोल,  
 इलाय ।  
 स्फोटक० ना० पु० फोड़ ।  
 स्मय० ना० पु० अभिमान, अहङ्कार, गरूर ।  
 स्मर० ना० पु० शीमहादेवजी, कामदेव ।  
 स्मरण० ना० पु० स्मृति, चेत, स्मृति, याद,  
 प्यार ।  
 स्मारक० श० जो स्मरण करावे ।  
 स्मार्त्त० ना० पु० स्मृति का शास्त्र ।

स्मृति० ना० स्त्री० शास्त्र विशेष, स्मरण, चेत,  
 याद ।  
 स्मृतीहिता० ना० स्त्री० शताहली ।  
 स्मृद्धि० ना० स्त्री० बढ़ती, अधिक, चाहना ।  
 स्यन्दन० ना० पु० रथ, पाणी, चित्ततरंग, तेंदूह ।  
 स्यान० } ना० पु० चतुराई, चालाकी ।  
 स्यानपन० }  
 स्याना० श० चतुर, चालाक ।  
 स्यार० ना० पु० श्याल, गीदड़ ।  
 स्योना० } ना० पु० वृषविशेष ।  
 स्योनाक० }  
 स्निग्धवृद्धा० ना० स्त्री० बेरीवृद्ध ।  
 स्निग्धपर्णी० ना० स्त्री० सुरदरी ।  
 सुय० ना० पु० भुजा ।  
 स्रोत० ना० पु० सोत, सोना ।  
 स्रोत० ना० पु० सोता ।  
 स्रोतस्वती० ना० स्त्री० नदी ।  
 स्व० सर्व० अपना, निजका बोधक, ना० पु० धन,  
 धाम ।  
 स्व० ना० पु० स्वर्ग ।  
 स्वकीय० ना० पु० अपना, संगी ।  
 स्वकीया० ना० स्त्री० स्निग्ध, अपनी ।  
 स्वहृत्० गु० निर्मल, साफ, पवित्र ।  
 स्वच्छता० ना० स्त्री० निर्मलता, पवित्रता,  
 सफाई ।  
 स्वच्छन्द० श० अपनी इच्छा के अनुसार, स्वैरी  
 रीतिमान, ना० पु० ईश्वर ।  
 स्वच्छन्दचारी० ना० पु० सयासी, भोगवान् ।  
 स्वच्छफल० ना० पु० नारियल ।  
 स्वजन० ना० पु० अपनेलोग, नैतन ।  
 स्वजातीय० श० एकवर्षका, निजजाती ।  
 स्वत० अन्व० आपसे ।  
 स्वतन्त्र० श० स्वार्थिन, निजवरा ।  
 स्वतन्त्रता० ना० स्त्री० स्वार्थीनता ।  
 स्वधर्म० ना० पु० अपना धर्म ।  
 स्वयं० ना० पु० निद्रावस्था, द्वितीयावस्था, नौदमें



जो कुछ दिसाई देता है ।  
 स्वप्रकथा० ना० स्त्री० स्वप्रका वृत्तात्, सप्ता  
 सुख ।  
 स्वप्रफल० ना० पु० तापीर खाव, स्वप्रकाधर्म  
 वा फल ।  
 स्वप्रवदकला० ना० स्त्री० तेजवत् ।  
 स्वप्रकाश० गु० जो आपही प्रकाश वा प्रका  
 शित है ।  
 स्वभाव० ना० पु० चरित्र, प्रकृति, आदत् ।  
 स्वयंसिद्ध० ना० स्त्री० सिद्धरूपी, जो आपही  
 सिद्ध ।  
 स्वयम्भूर० ना० पु० स्त्रीका निज इच्छानुत्तर  
 फलेना, समान विशेष जहा कया निजवर  
 दूदती है ।  
 स्वयम्भू० ना० पु० ब्रह्मा ।  
 स्वर० ना० पु० शब्द, धुनि, श्वास और अवा  
 रादि १६ वर्ण ।  
 स्वरंर्षिणी० ना० स्त्री० गोभी, पौधा ।  
 स्वराह्वया० ना० स्त्री० अजमोद ।  
 स्वरूप० ना० पु० अपनारूप, समानता, व्यति ।  
 स्वर्गपताली० ना० पु० भेंगा, देरा ।  
 स्वर्गीय० } गु० स्वर्ग न है ।  
 स्वर्ग० }  
 स्वर्ण० ना० पु० सुवर्ण, कनक, सोना ।  
 स्वर्णपर्णी० ना० स्त्री० निरवाली ।  
 स्वर्णमुद्रा० ना० पु० अशरभी, मुहर ।  
 स्वर्णवर्ण० ना० पु० गेरू ।  
 स्वर्णवर्णा० ना० स्त्री० दासहल्दी ।  
 स्वर्णसौ० } ना० स्त्री० निरवाली ।  
 स्वर्णस्थव्या० }  
 स्वल्प० गु० अल्पत छोटा, थोडा, ना० पु०  
 गीदड़ ।  
 स्वल्पकन्द० ना० पु० कसरू ।  
 स्वल्पाहार० ना० पु० थोडा आहार, कमलाग ।  
 स्वयम्भू० ना० पु० अपनानाम ।  
 स्वयंभू० गु० अपनेवर्गना कथितस्थान ।

स्ववर्ण० ना० पु० निजगोन, अपनावर्ण ।  
 स्ववर्णी० गु० निजगोनी, एक जातिकी ।  
 स्वयश० ना० पु० स्वाधीन, स्वुत्तर, निजवश ।  
 स्वसेवक० ना० पु० अपना सेवक ।  
 स्वसेव्य० गु० आत्मपूजक ।  
 स्वस्ति० अर्थ० मंगल, कल्याण, तथास्तु ।  
 स्वस्तिवाचन० ना० पु० शास्त्रीक कर्मकेआदि  
 में न्यवहार विशेष ।  
 स्वस्वामिभाव० गु० स्वामी और उत्तरी वस्तु  
 का सम्बन्ध ।  
 स्वार्ह० } ना० पु० स्वामी, मालिक ।  
 स्वार्ह० }  
 स्वांग० ना० पु० भाडेती, तमाशा ।  
 स्वांगी० ना० पु० स्वांग बनानेहारा ।  
 स्वागत० ना० पु० कुशल, वेम, मित्रानुपूजना,  
 स्वाति० } ना० स्त्री० पद्महवा नक्षत्र ।  
 स्वाती० }  
 स्वाद० ना० पु० सवाद, रस, मजह, मधुक-  
 कड़ी ।  
 स्वादु० ना० पु० गोसुरू ।  
 स्वादुक० } गु० जिसमें स्वाद हो मीठा  
 स्वादिष्ट० } स्वाद ।  
 स्वादी० गु० स्वाद करेहारा, जिसमें स्वादहो  
 ना० पु० अमर ।  
 स्वादु० गु० मीठा स्वादिष्ट, स्वादि ।  
 स्वादुककण्टक० ना० पु० गोसुरू ।  
 स्वादुपुष्पिका० ना० स्त्री० दुडी पौधा ।  
 स्वादुमो० ना० स्त्री० काकोली ।  
 स्वाधिष्ठान० ना० पु० चैत्र विशेष ।  
 स्वाधीन० गु० स्वतंत्र, निजवश, खुद सुत-  
 तार ।  
 स्वाधीनतः० } ना० स्त्री० स्वतंत्रता ।  
 स्वाधीनी० }  
 स्वामाधिक० गु० जा स्वामान स है, प्रकृती  
 जमी ।  
 स्वामिकास्ति० ना० पु० शिवनीने पत्रविशेष ।

स्वामित्व० ना० पु० अधिकार, प्रभुता, मा  
बित्री ।

स्वामी० ना० पु० प्रभु, राजा, मालिक, गुरुदेव,  
पति ।

स्वाराम० ना० पु० निज, उपवन, अर्पणविता ।

स्वार्थ० ना० पु० सारिक काम, संसार की  
इच्छा, निजें अर्थ वा लाभ, आत्मपालन ।

स्वार्थिक० गु० जो अपने को पूराकरे, काम वा  
कृतार्थ ।

स्वार्थी० गु० आत्मपालक, अपना मतलबी ।

स्वास० } ना० स्त्री० स्वास ।  
स्वासा० }

स्वाहा० ना० स्त्री० अग्निदेवकी स्त्री, जोहवनादि  
में मंत्र पूरे होने के पीछे बोलते हैं ।

स्वीकार० } ना० पु० श्रमीकार, कूल, मंत्र ।  
स्वीकृत० }

स्वेच्छक० गु० स्वाभिन, ठठाला ।

स्वेच्छा० ना० स्त्री० स्वाधीनता, दृढ, निजिच्छा ।

स्वेच्छाचारी० गु० स्वाधीनकर्ता, निजिच्छा  
समान वारक ।

स्वेत्त० गु० स्वेत, सफेद ।

स्वेद० ना० पु० प्रवेद, पक्षीना, तप ।

स्वेदज० ना० पु० जो पसीना से उपने यथा  
जुग, पीलहादि ।

स्वैरण० ना० गु० स्वाधीन, परदारिक ।

स्वैरिणी० ना० स्त्री० कुलग, विनाल ।

स्वैरी० गु० स्वाधीन, स्वैरिन, सुदुल्लार ।

स्वोपकारी० गु० निज उपकारी, स्वार्थी ।

[ ह ]

हंजाना० स० कि० निवालना, हाकना, चलाना ।

हकार० ना० पु० हान, पुगार, बिहाइ ।

हकारना० स० कि० हाका, पुकारना, पाल  
बदना ।

हंफैरा० गु० हाफनेहारा ।

हंस० ना० पु० पक्षी विशेष, थाया जीव, राजा,  
धर्म, घोडा, सुरज, परमहंस ।

हंसक० ना० पु० विद्युच्छा, जो शिखा पाव में  
पहनती हैं ।

हंसध्वज० ना० पु० मद्रा, राजा विशेष, गु०  
निसर्की ध्वजा में हंस बना हो ।

हंसना० स० कि० हास्य करना, ठट्टामारना ।

हंसपद० ना० पु० हंसका चरण, सिंह विशेष,  
जो ससत लोग मूलके स्थान पर लगाते हैं ।

हंसपदी० } ना० स्त्री० पीथा विशेष ।  
हंसपादी० }

हंसमुख० गु० आनन्दी, मगन, हंसोड ।

हंसा० ना० पु० हास्य ।

हंसाई० ना० स्त्री० हँसी, ठठाली ।

हंसाना० स० कि० हास्यकराना, रिक्ताना ।

हंसिनी० ना० स्त्री० हंसकी स्त्री ।

हंसिया० ना० पु० हंसया ।

हंसी० ना० स्त्री० हास्य, ठठाली ।

हंसूया० ना० पु० अचादिकाठने का हथियार ।

हंसेश० ना० पु० मद्रा ।

हंसोड० गु० ठठाल, हंसमुख ।

हंसोडपन० ना० पु० ठठाली ।

हकयकाना० अ० कि० धनदाना, व्याकुल  
होना ।

हकला० गु० जो गल से अटकके बोले, निसर्की  
जीम जल्दी न चले ।

हकलाना० अ० कि० जीम वा हकलाना नात  
वा अकना ।

हकलाहा० गु० लडकहाहा ।

हकारना० स० कि० पैसादि का घुमाना ।

हकाथका० गु० धनडा, व्याकुल ।

हगना० अ० कि० गुदकरना, जमल किरना  
काफे जाना ।

हगनेटी० } ना० स्त्री० हगने की हृदय वि  
हगनेटी० } राप, यदा, गाफ ।

हगभरना० अ० कि० गुदकरना, बिछाकर  
रहना ।

गाना० स० कि० नीटकराना, गुहकराना ।  
 गाल० ना० स्त्री० हगने की इच्छा, श्लः ।  
 चकोला० ना० पु० धका, भोंका ।  
 ट० ना० स्त्री० हट ।  
 टकना० } घ० कि० अटकाना, रोकना, मने  
 टकाना० } कराना, रोमाना, मीकराना ।  
 हटना० अ० कि० अलगहोना, चलेजाना, टलना,  
 पीछे वा आगे की बढना ।  
 हटवा० ना० पु० अघादि मापने के लिये हाथमें  
 बैठनेहारा ।  
 हटवार० ना० स्त्री० हाथका काम ।  
 हटाना० स० कि० टालदेना, रोकदेना, रोक-  
 वाना ।  
 हटख० ना० स्त्री० अधिर के कारण दुकानबन्द  
 करना ।  
 हटिया० } ना० स्त्री० हाट ।  
 हट्ट० }  
 हट्टाकट्टा० शु० पोदा, चर्करा, अख्खा ।  
 हट्ट० ना० पु० मगराई, रारि, मचलाई, अर्द ।  
 हट्टना० अ० कि० हठीला वा मचला वा टेदाहो  
 ना, निदकरा ।  
 हठात्० अ० अकरम ।  
 हठी० } गु० हट करनेहारा, मङ्गल,  
 हठीला० } मगरा ।  
 हड्ड० ना० स्त्री० फलविशेष ना० पु० वाट ।  
 हड्डकत० ना० पु० पीधानिशेष ।  
 हड्डगोला० ना० पु० पत्ताविशेष ।  
 हड्डजोड़ा० ना० पु० पीधानिशेष ।  
 हड्डफूटन० ना० पु० हड्डी में पीड़ा ।  
 हड्डफुटाना० अ० कि० धवराग, व्याकुलहोना,  
 हलबलाना ।  
 हड्डयड्डिया० शु० चिदपेड़ा ।  
 हड्डयड्डी० ना० स्त्री० खलबली, हुलड ।  
 हड्डहड्डाना० अ० कि० धर्यराना, पापना, धड-  
 धडाना, खडखडाना ।  
 हड्डहड्डाहट्ट० ना० स्त्री० कडाका, चटाका ।

हड्डहड्डी० ना० स्त्री० टकार ।  
 हड्डा० ना० पु० चात्वात् श्यादि इस शब्द को  
 कहकर चिदिया उफाते हैं ।  
 हड्डाना० स० कि० चिदिया उफाना ।  
 हड्डाहड्डी० ना० स्त्री० हड्डहड्डी ।  
 हड्डा० ना० पु० मोगहाड, निर्ना, मोषरा ।  
 हड्डी० ना० स्त्री० अरिष, हाड ।  
 हड्डीला० गु० अरिषवान् ।  
 हड्डनी० ना० स्त्री० कुचला वा कुलया स्त्री ।  
 हड्डा० ना० पु० तारे वा पीनल वा मिट्टी का  
 बड़ावर्तन ।  
 हंडाना० स० कि० देश वा गुरसे निवालदेना,  
 मुह बालाकरके गधेपर चढाकर पुमाना ।  
 हंडिका० } ना० स्त्री० हाडी ।  
 हंडी० }  
 हड्ड० अ० अ० इत्, नास ।  
 हड्डन० ना० पु० मारण, बधन ।  
 हड्डना० स० कि० बधकरना, मारडालना ।  
 हड्डादर० ना० पु० समाहीन, निरादर ।  
 हड्डा० अ० अ० धी, रूँ, ना० स्त्री० मारीगाई ।  
 हड्डथ० ना० पु० हाथ ।  
 हड्ड्या० ना० पु० हाथ ।  
 हड्ड्या० ना० स्त्री० यध, हिंसा, बधदोष ।  
 हड्ड्यारा० ना० पु० हिंसक, भषिक, बधदोषी ।  
 हड्ड्यारिन० } ना० स्त्री० हिंसक स्त्री ।  
 हड्ड्यारी० }  
 हड्डथ० ना० पु० हाथ ।  
 हड्डथकड्डा० ना० पु० पकड़, हाथ से पकड़ने की  
 वस्तु ।  
 हड्डथकड्डी० ना० स्त्री० हाथ में डालने की बेडी ।  
 हड्डथकड्डा० } ना० पु० टेव, टव, रीया ।  
 हड्डथखेडा० }  
 हड्डथचपूना० ना० पु० भाड़ा, धर्य ।  
 हड्डथड्डुट० } ना० पु० पीटोहारा, लड़ाका ।  
 हड्डथड्डुट० }  
 हड्डथनाल० ना० स्त्री० हाथी परकी तोपखोपी ।

हथनी० ना० स्त्री० हस्तिनी ।  
 हथकेर० ना० पु० रुपया परखने में ठगनिया,  
 उधारलेना ।  
 हथरस० ना० पु० } चूमावादी, मठोली ।  
 हथरसी० स्त्री० }  
 हथरी० ना० स्त्री० रहटेका हथकड़ा ।  
 हथल० } ना० पु० पीतलका हथकड़ा ।  
 हथवास० }  
 हथा० ना० पु० चकीरा हथकड़ा ।  
 हथिया० ना० स्त्री० हस्त नखत्र, वर्षाकालका  
 अन्त, हथकड़ा ।  
 हथियाना० स० कि० पकड़ना, ग्रहणकरना ।  
 हथियार० ना० पु० साहसर, बलकाग, अस्त्र ।  
 हथी० ना० स्त्री० घोड़ेके मलने की वस्तु बालों  
 की बनी ।  
 हथेला० ना० पु० चोर ।  
 हथेली० ना० स्त्री० हाथके बीचका स्थान ।  
 हथौटी० ना० स्त्री० बखत, बिया, प्रवीणता ।  
 हथौड़ी० ना० स्त्री० छोटा पन ।  
 हथियाना० अ० कि० आगारिद्या, छ पाचकरना,  
 धराना, स० कि० हुलसाना, पुसलाना, चाप  
 दिलाना, जाचना, बरवस कराना ।  
 हथियाहट० ना० स्त्री० भोलान, मुहचैरी,  
 धरहाट, बरवसाव, जचाव, चार ।  
 हथियाहा० गु० भोला, मुहचौर, स देही ।  
 हथन० ना० पु० बर, हता ।  
 हथना० स० कि० बधकरना, मारडालना, मारना,  
 जकड़ना ।  
 हथा० गु० पारिगर्भ, दनागर्भ ।  
 हनु० ना० पु० दुर्गा, हनुमान्नी ।  
 हनुमत् ० } ना० पु० यापुत्र, रश्मिगत,  
 हनुमन्त० } भीतमसेवक, महावीर ।  
 हनुमान् ० }  
 हन्तक० } ना० पु० बरकरी, मारना ।  
 हन्ता० }  
 हन्ती० ना० स्त्री० नाराज या बधकारी स्त्री ।

हप० ना० पु० फरसे मुह में डाल के  
 निगलना ।  
 हपभप० गु० दुर्तीला, चर्करा, अन्व० भ्रमण  
 हपहफाना० अ० कि० हाकना ।  
 हपडा० गु० पूरक, हपिला ।  
 हथिला० गु० जिसके आगे के दातबच्चे २ हों ।  
 हमारा० } सर्व० उत्तम पुत्र बहुवाक्यसमं व  
 हमारो० } बोधक शब्द ।  
 हमेव० ना० पु० अहकार, अहमाव ।  
 हय० ना० पु० घोड़ा ।  
 हयमेघ० ना० पु० अरवमेघ ।  
 हयशाला० ना० स्त्री० पुइसाल, तनेला ।  
 हयहय० ना० पु० नागाहैन ।  
 हये० कि० नारो, मारे, मियाये ।  
 हर० ना० पु० श्रीमहादेवनी, हल, सीर, अन्व०  
 यह जिस शब्दके अन्तमें हो उसका, अर्थ हरय  
 का माना जावे यथा, पापहर, तापहर ।  
 हरगिरि० ना० पु० कैलास ।  
 हरण० ना० पु० बरवस वा चारी से किसी  
 की वस्तुका लेना, चोरी, लूट, नशावृत्त,  
 हरिण ।  
 हरता० ना० पु० चौर, लुटाना नाराज ।  
 हराद० न० पु० हल्दी ।  
 हरदेस्त० गु० जो शिवकी वा दियाहुष्या है ।  
 हरना० स० कि० बरवस लेलेना, चोरी करना,  
 हाना, उठालेना, हरिण ।  
 हरनौट० ना० पु० हरिणका बच्चा ।  
 हरफारेचकी० ना० पु० फलविशेष ।  
 हरवराना० अ० कि० हकडाना, धवडाना ।  
 हरनिघाह० } ना० पु० वृत्त वा उसका पूल  
 हरनिघार० } विशय, तीस विशेष ।  
 हरचार्य० ना० पु० पारा ।  
 हरहार० ना० पु० सर्प, शिवकी माला ।  
 हरा० गु० वर्षविशेष, यथा घासकी सम्झी ।  
 हराई० ना० स्त्री० हरियाली ।  
 हराना० स० कि० नीतलेना, धकाया ।

हरावल० ना० पु० दलने अगाड़ी चलनेवाला ।  
हरि० ना० पु० ईश्वर, पानी, अग्नि, वायु मार्ग,  
हाथी, परंत, सर्प, सिंह, इन्द्र, यानर, सूर्य,  
धन, आकाश मनु, हरिण, पपाहा कौयल,  
प्राण, मोती, अमर, अमृत, चंद्रमा, कमल,  
सुरर्ण, कामदेव, खड, घोडा ।

हरिजन० ना० पु० साधु भक्त, सत ।  
हरित० गु० हरा, डहडहा, चोरायागया ।  
हरिताल० ना० पु० उपधातुविशेष ।  
हरितालिका० ना० स्त्री० भाद्री सुदी तीर्ण  
का व्रत ।

हरिद्रा० ना० स्त्री० हल्दी ।  
हरिद्वार० ना० पु० तीर्थविशेष ।  
हरिन्मणि० ना० पु० पन्ना ।  
हरिप्रिया० ना० स्त्री० लक्ष्मी, तुलसी ।  
हरिभक्त० ना० पु० विष्णुका उपासक, वैष्णव ।  
हरिभजन० ना० पु० भगवान् का भजन या  
ध्यान करना ।

हरिभद्रक० ना० पु० कूर ।  
हरियल० ना० पु० पर्वविशेष कपोतविशेष ।  
हरियाण० ना० पु० दिल्ली का पश्चिम देश  
विशेष ।

हरियान० ना० पु० गरुड ।  
हरियाना० अ० त्रि० जमाना, बदना, डहडहा  
होना, शास्त्र निकलना ।

हरियाला० गु० हरा, सम्प्री ।  
हरियाली० ना० स्त्री० हराई ।  
हरियलुक० ना० पु० एलुवा, सुसगर ।  
हरियास० ना० पु० पीपलवृक्ष ।  
हरियासर० ना० पु० एकादशी, जमाष्टमी ।  
हरिश्चन्द्र० ना० पु० राजा विशेष जो श्रुयोप्या  
भ महादानी हुआ है ।

हरीत० } ना० स्त्री० हई, हफ ।  
हरीतकी० }  
हरीटा० } गु० हरा, भगाडा ना० पु० भजन  
हरीता० } जो जथाको प्रथम लिखते है ।

हरीना० ना० पु० तोताविशेष ।  
हरु० गु० हलका ।  
हरये० अ० धारे धीरे, हाले मनविलास  
यथा, दाहा, लै पौण्य सेनपर हर्य यशुमति  
माय, अति विक्रमानो आठ हरि यह वहि वहि  
पधिताय ।

हरव० गु० हलका, रामायण यथा, निजजइता  
लोगन पर डारी, हाडु हरव रघुपतिहि  
विहारी ।

हरेरा० गु० हरा ।  
हरौटी० ना० स्त्री० धडा बत, हलचलाने का  
समय ।

हर्ष० ना० पु० आनंद, सुख, आह्लाद, खुशा ।  
हर्षण० ना० पु० योग, विशेष, सुखमात्र ।  
हर्षना० अ० कि० फूलना, खिलना, आनंद  
हाना ।

हर्षिन० गु० आनंदित, प्रसन्न, मग्न ।  
हल० ना० पु० लागल, खेत जोतने का यंत्र,  
अर्द्धाक्षर वा उसका चिह्न ।

हलका० गु० फुलना, नीच, बिछारा, ओछा,  
पोला, सस्ता, अगुरु ।

हलकाई० ना० स्त्री० हलकान, निर्मलता ।  
हलाकाना० अ० कि० सहायदेना, सहारा  
करना ।

हलकोरना० अ० कि० बगोरना, समटना,  
हिलाना ।

हलचल० ना० पु० हलबडी, घबराहट, रौला,  
अधर ।

हलादिया० ना० पु० विषविशेष, कम्बल  
रोग, गु० पीला ।

हलधर० ना० पु० श्रीबलदेव, किसान ।

हलन्त० गु० जिस शब्दके अंतमें हल का  
चिह्न है ।

हलरना० अ० त्रि० लोपण होता ।

हलफल० ना० स्त्री० शिष्टाचार ।

हलरा० ना० पु० तरंग, लहर, हिलकोर ।

हलरायना० स० कि० बदलाना, रेलाना, हिलाना ।

हलरार्ण० ना० पु० व्यनन, स्तररहित अक्षर ।

हलवादा० ना० पु० जोषदा, निस्तान ।

हलाहल० ना० पु० हलाहल ।

हलहलाइष्ट० ना० पु० पर वा डसेकपकपी ।

हलहलाना० अ० कि० श्वरादि से कापना, स० कि० हिलाना, कथाना ।

हलहन्त्रिया० ना० पु० निष ।

हलहली० ना० स्त्री० रोग, व्याधि, जड़ी ।

हला० स्त्री० ना० मदिदा, साराव ।

हलार्द्रि० ना० स्त्री० जीतार्द्रि ।

हलामुध० ना० पु० शीवलरामजी ।

हलानाहु० ना० स्त्री० नदीविशेष ।

हलाहल० ना० पु० महाविष ।

हलिया० ना० पु० बैलौका ऊषड ।

हलियाना० अ० त्रि० जीमतताना ।

हली० ना० पु० शीवलदेवजी, घ० किसान ।

हलोरना० स० कि० बघोरना ।

हलुक० ना० पु० लालरुमल, यथा सोमधि कतुकहार हलुक रक्तसिधिरुम स्तमर ।

हल्ला० ना० पु० रोला, हुल्लक, धाना, यह शब्द पारसी का है ।

हलन० ना० पु० होम, अग्नि प्रसिद्धकरना ।

हलि० ना० स्त्री० यज्ञविशेष, स्त्रीत्यक्तनी ।

हलि० ना० पु० होमकी सामग्री ।

हलिपाठी० ना० पु० शीता ।

हलिष्य० ना० पु० पृत, घासमिलित भात ।

हलुपा० ना० स्त्री० आह्वर ।

हल्य० ना० पु० दन्तार्थों के हेतु भ्रू, हलि ।

हल्यदाहन० ना० पु० अग्नि ।

हस्त० ना० पु० हाथ, तेरहवा नक्षत्र पुरु ।

हस्तकरण० ना० पु० करण दानों ।

हस्ताक्षर० ना० पु० हाथका लिखा, दासप्रत ।

हस्थिघोषा० ना० स्त्री० नदीपुरई ।

हस्तिदन्तक० ना० पु० मूली, मलीनरकारी ।

हस्तिनापुर० ना० पु० प्राचीनदिल्ली, वीरकी की राजधानी ।

हस्तिनी० ना० स्त्री० हथिनी, स्तीरा, स्त्री-विशेष ।

हस्तिपाल० ना० पु० हाथीपाल, पीलवार ।

हस्तिमागधी० ना० स्त्री० गजपीपर ।

हस्ती० ना० पु० हाथी ।

हसली० ना० स्त्री० गले के पामकी एक हड्डी, गले का ह्यनाविशेष ।

हहरना० अ० त्रि० घडराना ।

हहराना० अ० त्रि० परान प्रचण्ड का शब्द ।

हा० अर्थ० हु लका सूचकशब्द ।

हाऊ० ना० पु० थोरतें नालक के डराने को पश्चिममें बोलतीहै, मजबिलाघे यथा, कहत आड बनहाऊघायो ।

हां० अर्थ० स्वीकारका सूचक शब्द ।

हांक० ना० स्त्री० पुकार, निवाल, डेर ।

हांकना० स० कि० निमालना, पुकारना, चलाय ।

हांकी० ना० स्त्री० पत्र जिसपर रोमई बनते हैं

हांगर० ना० पु० समुद्रकी मडलाविशेष ।

हांडना० अ० त्रि० भुका फिरना ।

हांपी० ना० स्त्री० मिट्टी का पात्रविशेष ।

हांपना० } अ० कि० हकहकाना और हानना ।

हांस० ना० पु० हस, हसी ।

हांसी० ना० स्त्री० हारस ।

हांही० अर्थ० हासही ।

हाजालिनी० ना० स्त्री० बाली ।

हाट० ना० स्त्री० दुकान, बयनिक्रयका रथा चौक, कटरा, पंग, घरख ।

हाटक० ना० पु० सूर्य, बाक ।

हाटू० ना० पु० जो हाट में बयनिक्रय करे ।

हाड़० ना० पु० हड्डी ।

हात० } ना० पु० कट, हस, नागविशेष, हाथ० } बरा ।

हाथखेंचना० अ० त्रि० अथसप्रता म सुह केरना  
वा छोड़देना ।  
हाथचाटना० स० कि० खादिष्ट भोजन को  
बहुत मसप्रतासे खाना ।  
हाथजोड़ना० स० कि० विनती करना, विधि  
याना, दोनों हाथ मिलाना ।  
हाथडालना० स० कि० किसी काम में उसना  
वा पैठना, अपनाना ।  
हाथपसारना० स० कि० किसी से उच्च  
मागना ।  
हाथफेरना० स० त्रि० प्यारकरना, कृपाकरना,  
फुसलाना ।  
हाथमलना० अ० कि० परचात्तार करना, नि  
लाप करना ।  
हाथमारना० स० त्रि० वचन देना, लूटना,  
लह से धायलकरना ।  
हाथां० ना० पु० हाथ बुदिया नागो का यत्र ।  
हाथी० ना० पु० गज, मतग ।  
हाथीवान० ना० पु० फीलवान, महावा ।  
हान० } ना० स्त्री० योग, घटी, विगाह,  
हानि० } अथेर ।  
हाय० } अन्व० इ ल वा शोक का सूचक  
हायहाय० } शब्द, ना० स्त्री० सात ।  
हायन० ना० पु० वर्ष ।  
हार० ना० पु० मत्ता आदिकी मासा, तजग,  
वालोक भुण्ड, चरी, चराऊ खेत, जगल, अन्न ।  
हारक० ना० पु० निससे हरिये, हरनेहार ।  
हारजीत० ना० पु० जूया, घूव ।  
हारना० अ० कि० परानित होना, अट्टार्ष  
होग, धरना, स० कि० हराग, हारजाना  
बुद्ध वस्तु ।  
हारमानना० स० कि० निरास हाके छोड़ना,  
विवाद को छोड़ना ।  
हारो० अन्व० यहशब्द दूसरे शब्द के अउ में  
आकर कर्ता का वा बालाका सूचक है ।  
हारीत० ना० पु० स्मृतिविशेष ।

हारू० ना० पु० हरवेया ।  
हारिं० ना० पु० स्नेह, छोह, माया ।  
हार्य० गु० हरण करने के योग्य, ना० पु०  
नहेहा ।  
हाल० गु० उतानला, फुताला ।  
हालना० अ० कि० हिलाग ।  
हाला० ना० स्त्री० मदिरा, मद्य, शराब ।  
हालाडोला० ना० पु० हिलान, डगमाव,  
भूचाल, भूकम्प ।  
हालि० ना० स्त्री० पतनार ।  
हाप० ना० पु० स्त्री लोमाकी भर्गाविराग,  
भावला ।  
हावभाय० ना० पु० आकर्ष, खिचाव, आदर  
मान, बटार, मान सम्मान, बनावट ।  
हास्य० ना० पु० आनन्दमय, छरती एक  
अवस्था, हँसी, रसविशेष ।  
हाहा० अन्व० हायहाय, आर्त्तवाणी ।  
हाहाकार० ना० पु० युद्धमें जो शब्द, बचराहट,  
इ लयुत, पुकार, शोर ।  
हाहाखाना० अ० कि० गिड़गिड़ाना, गिरि-  
याना ।  
हि० अन्व० ही ।  
हिडोला० ना० पु० पाला, भूला, गीतविशेष ।  
हिंसक० ना० पु० बधिक गु० जो हिंसकरी घूना,  
अपकारी, दुर्जन, बजेर ।  
हिंसा० ना० स्त्री० हत्या, बध, बुराकरा की  
चिन्ता, अपनार, गाली, दुर्जनता, मात ।  
हिंसा० गु० हिंसा ।  
हिंसा० ना० स्त्री० झोंक, हिचकी ।  
हिंस्र० ना० स्त्री० हाँग ।  
हिचकना० अ० हि० हटना, दचना, आगा  
पीठा करना ।  
हिचकाना० स० कि० धकादिना, भोकना,  
दबाना ।  
हिचकिचाना० अ० कि० स दर में होना,  
डगमगाना, हकलाना ।

द्विचक्रिणी० ना० रवी० दुभिमा, मित्रा, शक्रा ।  
 द्विदम्ब्य० ना० पु० सिलहट से टंक पूर्वेरा, स  
 षष्ठविशेष ।  
 द्वित० ना० पु० भेम, मित्रता, माया, उपहार,  
 धन्य० निमित्त, अर्थ, वारण, शिव, गु० उचित,  
 वाग्य, मित्त, मायाव त ।  
 द्वितकार० ना० पु० मित्र, उपकारी, सम्मान ।  
 द्वितकारी० ना० पु० मित्र, उपकारी ।  
 द्वितु० } ना० पु० मित्र, वाग्य, सहायक ।  
 द्वितु० }  
 द्वितैयी० ना० पु० मित्ररा की इच्छा जिसके  
 होने, द्वितकारी ।  
 द्वितोपदेश० ना० पु० योग्य वा उचित उपदेश,  
 नीतिरा एक प्रथविशेष ।  
 द्विनद्विनाना० थ० मि० पुकारना पाईना ।  
 द्विनौती० ना० रवी० चिन्ती, आधीनता ।  
 द्विन्ताल० ना० पु० सन्नविशेष ।  
 द्विन्दी० ना० स्त्री० द्विद्वस्तान की बली वा  
 अवर ।  
 द्विन्दू० ना० पु० लाग जो वेदादि शास्त्रानुसार  
 चलते हैं, चातुर्वर्ण्यलोग ।  
 द्विन्दूस्थान० ना० पु० देश विशेष जो उत्तर  
 । व अश से पर्वत अक्षाशवक स्थीर पूर्व पश्चिम  
 में ६७ अक्षांश स ६३ तक फैला है,  
 भरतखण्ड ।  
 द्विम० ना० पु० पक्षा, शत, गुण, अतु  
 विशेष ।  
 द्विमठपल० ना० पु० चोला, पत्थर, रमिायणे  
 यथा, निमि द्विम उपल कृषीदलि गरहीं, पर अ  
 काम लागि तनु परिहरहीं ।  
 द्विमकर० ना० पु० चन्द्रमा, कपूर ।  
 द्विमरोम० } ना० पु० चन्द्रमा विषु, चाद ।  
 द्विमांशु० }  
 द्विमाचल० } ना० पु० हिमालय पर्वत ।  
 द्विमाचल० }  
 द्विमाह्वय० ना० पु० कपूर, कर्पूर, काहूर ।

द्विमालय० ना० पु० पर्वत विशेष, पाश्चात्तर ।  
 द्विमोपम० ना० पु० कपूर, कर्पूर ।  
 द्विमोपरा० ना० पु० चोला, पत्थर ।  
 द्विय० } ना० पु० हृदय ।  
 द्विया० }  
 द्वियाव० ना० पु० सुरमापा, वीरता, आद ।  
 द्वियो० } ना० पु० गाय भैम युवानि वा रोकने  
 द्वियो० } वा शब्द, हृदय ।  
 द्विरम्भय० } गु० जो सोने से बना, ना० पु०  
 द्विरम्भय० } मन्ना ।  
 द्विरम्भय० ना० पु० काक, सरण, नरत्तयजुषी  
 में शु एर का नाम ।  
 द्विरम्भयवाहू० ना० पु० सोनभद्र नदी ।  
 द्विरम्भयवाहू० ना० पु० प्रसाद वा चचा ।  
 द्विरद० ना० पु० हृदय ।  
 द्विरन० ना० पु० हरिण, मृग ।  
 द्विरनौटा० ना० पु० हरिणका बुचा ।  
 द्विराना० स० मि० खोना, रत्तकर मूलनामा,  
 थ० मि० खोना, सुमरीना ।  
 द्विर्की० ना० रवी० धार, बावली ।  
 द्विलकना० थ० मि० ऐटाग, मङ्गोडना ।  
 द्विलकोर० ना० रवी० हिलाक, लहरान,  
 हिलोर ।  
 द्विलवीरना० स० मि० लहराना, हिलाना,  
 थ० मि० हिलाना, धनका ।  
 द्विलकोरा० ना० पु० लहर, तरङ्ग ।  
 द्विलगना० थ० मि० लकना, उलकना, विप-  
 यना, अगना ।  
 द्विलगाना० स० मि० लटकाना, उलकाना,  
 विपगाना, अगाना ।  
 द्विलना० थ० मि० डालना, टलना ।  
 द्विलमिल० थन्य० मिलकर ।  
 द्विलमिपजाना० थ० मि० मिमित्त होना,  
 मिलावला रचना ।  
 द्विलमे चिका० ना० पु० शाकविशेष ।  
 द्विलसा० ना० रवी० मङ्गलविशेष ।



हिला० यु० पाला, पोसनां ।  
 हिलाना० स० कि० डोलाना, अपने धरा में करना ।  
 हिलोरना० अ० कि० लहराना ।  
 हिलोरा० ना० पु० तरंग, लहर ।  
 हिलोरामारना० अ० कि० लहर मारना ।  
 हिशत० अ० अ० उपेक्ष, इत ।  
 हिस्का० ना० पु०, उतराइट, अनुकार, रिसा, फल ।  
 हिस्काहिस्की० ना० स्त्री० परस्पर, हिस्का करना ।  
 हिसाय० ना० पु० गणित, लेखा, यह शब्द अरबीका भाषा में अतिप्रचलित है ।  
 ही० अ० अ० निश्चय करनेका, बोधक, ना० पु० हृदय ।  
 हीं० अ० अ० निश्चय करने का बोधक ।  
 हींग० ना० स्त्री० औषधविशेष ।  
 हींगहंगना० अ० कि० इच्छारहित हंगना अथ इत्त भोगना ।  
 हींसना० अ० कि० दिनहिनाना ।  
 हीक० ना० स्त्री० उबकाई, मतलार, घृणा, अटकल, दुर्गन्धि ।  
 हीजड़ा० ना० पु० हिजड़ा ।  
 हीन० यु० रहित, निना, छोटा, नीच ।  
 हीनजाति० ना० स्त्री० नीचजाति ।  
 हीनता० ना० स्त्री० न्यूनता, घटी ।  
 हीननिमेष० ना० पु० एकटक ।  
 हीना० यु० नीचा, छोटा, नीच ।  
 हीर० ना० पु० रांभा, सार, यरा, यु० चोला ।  
 हीरक० ना० पु० हीरा ।  
 हीर्युक्तिका० ना० स्त्री० काकोली ।  
 हीरा० ना० पु० रत्नविशेष, कम्भारी ।  
 हीरामन० ना० पु० ताताविशेष, छोटासपे-  
 विशेष ।  
 हीरावल० } ना० पु० कम्बल, जो योगी यो-  
 हीरावलि० } धी है ।

हीरा० } ना० स्त्री० चहला, फीचड़ ।  
 हीला० }  
 हुंकार० } ना० पु० पुकार, डरवाने के लिये  
 हुंकारा० } हुं शब्दका पुकारना ।  
 हुड़दंगा० यु० दंगैत ।  
 हुड़दंगी० ना० स्त्री० दंगा दंगैत ।  
 हुड़हुड़ाना० अ० कि० टंकीरना ।  
 हुड़हुड़ी० ना० स्त्री० टंकीर ।  
 हुड़क० ना० पु० नागाविशेष ।  
 हुड़वी० ना० स्त्री० हुड़ी ।  
 हुंडाभाड़ा० ना० पु० किराया ।  
 हुंडार० ना० पु० भेड़ियाविशेष ।  
 हुंडावन० ना० पु० हुण्डीका बड़ा ।  
 हुंडी० ना० स्त्री० निसपत्र में पुरदरा से रूपया लिखाये उसका नाम ।  
 हुंडीवाल० ना० पु० साहूकार, जो हुण्डीलिखे  
 हुत० यु० जो होम किया गया ।  
 हुतना० स० कि० होमकरना, होममें जलाना ।  
 हुतभुक् } ना० पु० आग्नि ।  
 हुतायन० }  
 हुति० अ० अ० पलटे, बदले, खोरसे ।  
 हुती० स्त्री० }  
 हुतो० पु० } कि० हुआ, अ० धी, धा, रहे  
 हुती० पु० }  
 हुमकना० अ० कि० कृदना, मारने के समे  
 हुकारना ।  
 हुमे० कि० जलाये ।  
 हुरगुंडा० ना० पु० तरकारीविशेष ।  
 हुरमई० ना० स्त्री० नृत्यभेद ।  
 हुरदुर० } ना० पु० पावाविशेष ।  
 हुरदुरा० }  
 हुरकनी० ना० स्त्री० कंवनी, बैर्या ।  
 हुरी० ना० पु० फूट, फटक, विषय ।  
 हुसा० ना० पु० चन्दन मिलनेका पापविशेष  
 जो पाटासा होता है ।  
 हुलकारना० स० कि० उगाने, हुनकाना,  
 लहाना ।

हुलसन० घ० क्रि० अनदित होना, मुदित होना ।

हुलसाना० स० क्रि० रिक्ताना, प्रसन्नकरना ।

हुलास० ना० पु० संपत्ती, आनंद, विलास ।

हुल्लड० ना० पु० रीठा, बसेड़ा ।

हुं० अन्व० हा, भी, हो ।

हुक० ना० स्त्री० शब्द विशेष ।

हुंकरना० स० क्रि० कोप हो वा भय से वा आह भूक से हु शब्द बोलना ।

हुठ० ना० पु० सादेतीन ३॥ ।

हुठा० ना० पु० सादरीन का पहारा ।

हुहां० ना० पु० भूमधाम, गोलमोल उत्तरदेना ।

हुक० ना० स्त्री० पीडा, टसक, झटक ।

हुचना० स० क्रि० चूकना, भूलना ।

हुठना० स० क्रि० धका देना ।

हुडू० } ना० स्त्री० खेचालेंची ।  
हुडाहुडीं }

हुण० ना० पु० कडार मनुष्य ।

हुन० ना० पु० मदरानी, सुप्ताविशेष ।

हुल० ना० स्त्री० भोंक, खोंचा ।

हुलना० स० क्रि० भोंकना, खोंसना ।

हुदा० ना० पु० शर्चा, आधी, भूमधाम, धीमधाम ।

हुदय० ना० पु० वच स्थल, छाती, अंत करण, मन ।

हुदयनिकेत० ना० पु० कामदेव ।

हुपीक० ना० पु० शद्रिया ।

हुपीकेश० ना० पु० शद्रियपति विशेष, धी वृष्यचंद्रका एक नाम ।

हुष्ट० गु० हंसित, प्रसन्न ।

हुं० अन्व० सम्भाषनका सूचक, यथा हे भगवन्, हे नारायण ।

हुंगा० ना० पु० सरावण, फेला, हुंगा ।

हुंठ० अन्व० नीचे स्त्री० काच जो श्वा में निकलती है ।

हुंटा० पु० आउली, नीच, दरपोकना ।

हुंटापन० ना० पु० गर्पुसकना, नीचता, पिघार ।

हुंत० } ना० पु० अर्थ, कारण, प्रकरण, प्रवीचन,  
हुंतुं } निमित्त, प्रीति, प्रेम ।

हुंति० अन्व० हा इति ।

हुंम० ना० पु० स्वर्ण, कषा, सोना ।

हुंमनिधि० ना० पु० पारा, स्वर्णकी खानि ।

हुंमन्त० ना० पु० शत्रुविशेष, मित्रमें अगहन और पीपमास गिना जाता है ।

हुंमपुष्पा } ना० स्त्री० अम्पावृक्ष ।  
हुंमपुष्पिका }

हुंमलटा० ना० स्त्री० सोडाही ।

हुंमवती० ना० स्त्री० हर्, हक ।

हुंमप्रता० ना० स्त्री० वच औषध ।

हुंमाचल० } ना० पु० समुद्र पर्वत ।  
हुंमाद्रि० }

हुंरना० स० क्रि० निरिक्ता, देतना, हुंरना, रगेदना खदेडना ।

हुंरम्ब० ना० पु० धीगवेशमी ।

हुंरी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, जो अहीरगति है ।

हुंल० ना० स्त्री० नोक्, भार, दोकराभरगावर ।

हुंलना० अ० क्रि० पैरना, निरना, स० क्रि० धकपूटेना, हुंलना ।

हुंला० ना० स्त्री० अचसा, प्रवाद, रेसा, कीडा रोगा, सदन ।

हुंलमारना० स० क्रि० टकेलना, टेलना ।

हुंक० ना० पु० हुय ।

हुंहराज० ना० पु० हुयहुय, सदसवाहु ।

हुं० अन्व० सम्बोधन का विद ।

हुंभाना० अ० क्रि० होकर घाना ।

हुंफना० अ० क्रि० हाफना ।

हुंठ० ना० पु० घोड, खन ।

हुंठा० ना० स्त्री० लपाम, दराना ।

हुंठे० अन्व० द्वारा, से ।

हुंठुदना अ० क्रि० सम्पूर्ण होना, निपटना ।

होजाना० घ० कि० होना, पढ़ना ।  
होठ० ना० पु० होंठ ।  
होड़० ना० स्त्री० प्रथ, वचन, दाव, शर्त ।  
होड़ल० ना० पु० अन्नक, अवरक ।  
होड़ाचक्र० ना० पु० निसके द्वारा ज्योतिषी लोग राशि विचारते हैं ।  
होत० ना० स्त्री० वरा, शक्ति ।  
होतव० ना० पु० वदा, प्रारम्भी ।  
होतव्य० ना० पु० भवितव्य, होनहार ।  
होतव्यता० ना० स्त्री० भवितव्यता, होनहार ।  
होता० ना० पु० होमकरनहार ।  
होते० अव्य० रहते, में ।  
होतेहोते० अव्य० क्रम क्रम से  
होत्र० ना० पु० पूजन, हुतन ।  
होत्री० गु० पूजक ।  
होनहार० ना० गु० जो होसके, सम्भव ।  
होना० घ० कि० रहना, बाना, जो कुछहीना ।  
होम० ना० पु० अग्यारी, घृतादि अग्नि में होमना ।  
होमना० स० कि० होमका यज्ञकरना, जलाना ।  
होला० ना० पु० नावविजय, वृत्, भूनीपत्नी ।  
होलाएक० ना० पु० होला का समय ।  
होलिका० ना० स्त्री० होली ।  
होलिहा० ना० पु० होली खेलनेहार ।  
होली० ना० स्त्री० पाल्शु की पूषेमासी का उत्तर ।  
ह्रीभा० ना० पु० हाऊ, हीवा ।  
ह्री० नि० ह, सर्व० में, सम ।  
ह्रीत० ना० स्त्री० इच्छा, चाह ।  
ह्रीका० ना० पु० लोग, सालख, वापसमेतम्हरी ।  
ह्रीले० अव्य० धीमे धारे ।  
ह्रीलेह्रीले० अव्य० धी धीरे ।  
ह्रीवा० ना० पु० भोदस, भुगा ।  
हृद० ना० पु० विगासीद, बहानसाराय, रागाय, नील, अगपना ।

ह्रस्व० गु० अदीर्घ, छोटा, एक भाविकावर ।  
ह्रस्वमूल० ना० पु० ऊत, गणा, गांहा ।  
हृदिनी० ना० स्त्री० नदी ।  
ह्री० ना० स्त्री० लगना, हया ।  
ह्रीण० } गु० लजित, शरमायाइया ।  
ह्रीत० }  
ह्री० कि० होकर ।  
ह्रीह्री० नि० होना ।

[ क्ष ]

क्षई० ना० स्त्री० क्षयरोग जिसमें एक और रक्त गुलस गिरता है और खाती भी खाती है ।  
क्षण० ना० पु० तीस फटाफ एकष्य होताहै, योर्ददिर, तिल ।  
क्षणक० ना० पु० क्षण, राल ।  
क्षणप्रति० अव्य० वारवार ।  
क्षणक्षि० ना० स्त्री० बिजली, बौधा ।  
क्षधिक० गु० अस्थिर, कत्यानारी ।  
क्षणैक० अव्य० थोड़ेकाल में ।  
क्षत० ना० पु० फोड़ा, घाव ।  
क्षतज० ना० पु० रुधिर, लोह, रक्त ।  
क्षति० ना० स्त्री० हानि, घटी ।  
क्षत्र० ना० पु० सुदृढ, ताज, छाता, छतुरी, पविषरा ।  
क्षत्रक० ना० पु० भुदभावा, निते सुदुरमुत्ता कहत है ।  
क्षत्रधारी० ना० पु० राना, वृषति, महीपति ।  
क्षत्रधनु० ना० पु० आ जिनियों में नीचहा ।  
क्षत्रिय० ना० पु० इस्तीववर्षे, तिरनी ।  
क्षपा० ना० स्त्री० रत ।  
क्षपाकर० } ना० पु० क्षत्रमा ।  
क्षपान(ध०) }  
क्षम० ना० पु० योग्यता, गु० समर्थ, योग्य ।  
क्षमता० ना० स्त्री० योग्यता ।  
क्षमना० स० कि० क्षमाकरना, छोड़ना ।  
क्षमा० ना० स्त्री० मोक्ष, मुक्ति, मोक्षा, छलसी, दाता, परती ।

हुलसाना० अ० क्रि० नैनन्दित हागा, मुदित  
हीना ।

हुलसाना० स० क्रि० रिभाना, प्रसन्नकरना ।

हुलास० ना० पु० सुंपनी, आनाद, विलास ।

हुल्लङ्ग० ना० पु० सीला, बलेका ।

हुं० अन्व० हा, मी, हो ।

हुक० ना० स्त्री० शब्द विशेष ।

हुंकरना० स० क्रि० बोध हो वा भय से वा भाव  
फूक से हु शब्द बोलना ।

हुंठ० ना० पु० सादेतीन ३॥

हुंठा० ना० पु० सादेतीन का पहारा ।

हुंहां० ना० पु० भूमधाम, गोलमोल उत्तरदेना ।

हुक० ना० स्त्री० पीडा, टटक, भटक ।

हुचना० स० क्रि० चुकना, भूलना ।

हुठना० स० क्रि० धका देना ।

हुङ्ग० } ना० स्त्री० खेंचालेंची ।  
हुङ्गाहुङ्गी० }

हुण० ना० पु० कठोर मनुष्य ।

हुन० ना० पु० मादरली, मुद्राविशेष ।

हुल० ना० स्त्री० भोंक, खोंचा ।

हुलना० स० क्रि० भोंकना, खोंसना ।

हुहा० ना० पु० चर्चा, आरी, भूमधाम, दीमटाम ।

हुदय० ना० पु० वक्षस्थल, छाती, अत करण,  
मन ।

हुदनिकेत० ना० पु० कामदेव ।

हुपीक० ना० पु० इन्द्रिया ।

हुपीकेश० ना० पु० इन्द्रियपतिविशेष, श्री  
कृष्णचन्द्रका एक नाम ।

हुष्ट० पु० हर्षित, प्रसन्न ।

हुं० अन्व० सम्बोधनदा सूचक, यथा हे मगधन्,  
हे नारायण ।

हुंगा० ना० पु० सरावा, परेला, हुंगा ।

हुठ० अन्व० नोचे स्त्री० काच जो उदा में निक  
सती है ।

हुंटा० पु० चालसी, नीच, दरपोकना ।

हुंटापन० ना० पु० नपुंसकता, नीचता, निचार् ।

हुत० } ना० पु० अर्ध, वारण, प्रवरण, प्रयोजन,  
हुतु० } निमित्त, प्रीति, प्रेम ।

हुति० अन्व० हा इति ।

हुम० ना० पु० रर्य, कचन, सोगा ।

हुमनिधि० ना० पु० पारा, स्वर्षी तानि ।

हुमन्त० ना० पु० शत्रुविशेष, जिसमें अगहन  
धौर पौषमास गिनानाउा है ।

हुमपुष्पा० } ना० स्त्री० अम्पावृक्ष ।  
हुमपुष्पिका० }

हुमलटा० ना० स्त्री० सोनदही ।

हुमवती० ना० स्त्री० हर्, ह्व ।

हुमवता० ना० स्त्री० वच औषध ।

हुमाचल० } ना० पु० एमेरु पर्वत ।  
हुमाद्रि० }

हुरना० स० क्रि० निरेखना, देसना, हुदना,  
रगेदना, खदेइना ।

हुरन्व० ना० पु० श्रीगणेशमी ।

हुरी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, जो अहीरगातिहै ।

हुल० ना० स्त्री० नोभ, भार, दोकराभरगोवर ।

हुलना० अ० क्रि० पीरना, निरना, स० क्रि०  
धक्का देना, हथाना ।

हुला० ना० स्त्री० अवज्ञा, प्रवाह, रेखा, मीठा  
संगा, सहज ।

हुलमारना० स० क्रि० टकेलना, टेलना ।

हुक० ना० पु० ह्य ।

हुहैराज० ना० पु० ह्यह्य, सहस्रवाहु ।

हु० अन्व० सम्बोधन का चिह्न ।

हुआना० अ० क्रि० होकर आना ।

हुंकना० अ० क्रि० हाकना ।

हुंठ० ना० पु० ओठ, लज ।

हुंठा० ना० स्त्री० खपाम, दराना ।

हुये० अन्व० द्वारा, से ।

हुंचुक्ना अ० क्रि० सम्पूर्ण होना, गिपटना ।

होजाना० ध० कि० होना, पदना ।  
होठ० ना० पु० होंठ ।  
होड़० ना० स्त्री० प्रण, वचन, दांव, शक्ति ।  
होड़ल० ना० पु० धन्नक, धवरक ।  
होड़ाचक्र० ना० पु० जिसके द्वारा ज्योतिषी लोग राशि विचारते हैं ।  
होत० ना० स्त्री० परा, राशि ।  
होतव० ना० पु० वदा, प्रारम्भी ।  
होतव्य० ना० पु० भवितव्य, होनहार ।  
होतव्यता० ना० स्त्री० भवितव्यता, होनहार ।  
होता० ना० पु० होमकरनेहार ।  
होते० अव्य० रहते, में ।  
होतेहोते० अव्य० क्रम क्रम से  
होत्र० ना० पु० पूजन, हुतन ।  
होत्री० गु० पूजक ।  
होनहार० ना० गु० जो होसके, सम्भव ।  
होना० ध० कि० रहना, बनना, जो कुछ होगा ।  
होम० ना० पु० अग्यारी, घृतादि अग्नि में होमना ।  
होमना० स० कि० होमका यज्ञकरना, जलाना ।  
होला० ना० पु० नावविशेष, बूट, भूनीफली ।  
होलाष्टक० ना० पु० हीला का समय ।  
होलिका० ना० स्त्री० होली ।  
होलीहा० ना० पु० होली खेलनेहार ।  
होली० ना० स्त्री० फाल्गुन की, पूर्यमासी का उत्सव ।  
होआ० ना० पु० हाऊ, होवा ।  
हों० कि० हूं, सर्वे में, हम ।  
होंस० ना० स्त्री० इच्छा, चाह ।  
होका० ना० पु० लोभ, लालच, वायुसमेतकधी ।  
होले० अव्य० धीमे धीरे ।  
होलेहोले० अव्य० धीरेधीरे ।  
होवा० ना० पु० भोरस, भुतगा ।  
हृद० ना० पु० विनालोदा, नडानलाशय, तालाव, भूल, अगाधता ।

ह्रस्व० गु० अदीर्घ, छोटा, एक मात्रकार ।  
ह्रस्वमूल० ना० पु० ऊल, गधा, गाँवा ।  
हृदिनी० ना० स्त्री० नदी ।  
ही० ना० स्त्री० सज्जा, ह्या ।  
हीण० } गु० लजित, शरमाया हुआ ।  
हीत० }  
ही० कि० होकर ।  
हीहै० कि० होगा ।  
[क्ष]  
क्षई० ना० स्त्री० धरोग जिसमें फेफ और रक्त मुखसे गिरता है और खांसी भी आती है ।  
क्षण० ना० पु० तीस कणिका एकक्षण होता है, मोड़ीदेर, तिल ।  
क्षणक० ना० पु० क्षण, राल ।  
क्षणप्रति० अव्य० वारंवार ।  
क्षणवचि० ना० स्त्री० विजली, कौधा ।  
क्षणिक० गु० अस्थिर, सत्यानारी ।  
क्षणैक० अव्य० थोड़ेकाल में ।  
क्षत० ना० पु० फोड़ा, घाव ।  
क्षतज० ना० पु० क्षति, लोह, रक्त ।  
क्षति० ना० स्त्री० क्षानि, घटी ।  
क्षत्र० ना० पु० मकुट, तान, छाता, धतुरी, अत्रियवरा ।  
क्षत्रक० ना० पु० सुरांका, गिसे कुकरपुता कहते हैं ।  
क्षत्रधारी० ना० पु० राना, वृषति, मदीपति ।  
क्षत्रघ्न्यु० ना० पु० जो क्षत्रियों में निबहो ।  
क्षत्रिय० ना० पु० द्वितीयवर्ण, क्षित्री ।  
क्षपा० ना० स्त्री० रात ।  
क्षपाकर० } ना० पु० चन्द्रमा ।  
क्षपानाथ० }  
क्षम० ना० पु० योग्यता, गु० समर्थ, योग्य ।  
क्षमता० ना० स्त्री० योग्यता ।  
क्षमना० स० कि० क्षमाकरना, छोड़ना ।  
क्षमा० ना० स्त्री० मोह, मुक्ति, मोहन, अलसी, दया, धरती ।

हुलसना० अ० कि० अनिदित होना, प्रदित होना ।

हुलसाना० स० कि० रिभाना, प्रसन्नकरणा ।

हुलास० ना० पु० सुंघनी, आनाद, विलास ।

हुलङ्ग० ना० पु० शीला, बलेंदा ।

हुं० अन्व० हा, भी, हा ।

हुफ० ना० शी० शब्द विशेष ।

हुंकरना० स० कि० क्रोध से वा भय से वा भाङ्ग पूरु से हु शब्द बोलना ।

हुठ० ना० पु० सादेनीन शा ।

हुठा० ग० पु० सादेनीन का पहाडा ।

हुहां० ना० पु० धूमधाम, गालमोल उत्तरदना ।

हुक० ना० स्त्री० पीका, टसक, झुक ।

हुचना० स० कि० चूकना, भूलना ।

हुटना० स० कि० धका देना ।

हुङ्ग० } ना० स्त्री० खेंचालेंची ।  
हुङ्गाहुङ्गी० }

हुण० ना० पु० कटार मनुष्य ।

हुन० ना० पु० मन्दरानी, सुद्राविशेष ।

हुल० ना० स्त्री० भोक, खोंचा ।

हुलना० स० कि० भोकना, खोंसना ।

हुहा० ना० पु० चर्चा, आधी, धूमधाम, दीपधाम ।

हुदय० ना० पु० वर स्थल, छाती, अत करण, मन ।

हुदनिकेत० ना० पु० कामदव ।

हुपीक० ना० पु० इन्द्रिया ।

हुपीकेश० ना० पु० इन्द्रियपतिविशेष, शी कृष्णचन्द्रका एक नाम ।

हुष्ट० गु० हावत, प्रसन्न ।

हुं० अन्व० सम्भाषनका सूचक, यथा हे भगवन्, हे नारायण ।

हुंगा० ना० पु० सरावर, पण्डा, हुंगा ।

हुठ० अन्व० नीचे स्त्री० काच जो गुदा में निकलती है ।

हुटा० अ० घालसी, गिच, दरपोकना ।

हुटापन० ना० पु० तुमुकना, नीचता, निधारी ।

हुत० } ना० पु० अर्थ, कारण, प्रकरण, प्रवीजन,

हुतु० } निमित्त, प्रीति, प्रेम ।

हुति० अन्व० दासि ।

हुम० ना० पु० स्वर्ण, चन्दन, सोना ।

हुमनिधि० ना० पु० पारा, स्वर्णकी स्थापि ।

हुमन्ठ० ना० पु० श्वनुविशेष, जिसमें अगद्वन और पीपमास गिनाजाता है ।

हुमपुण्या० } ना० स्त्री० चम्पावृक्ष ।  
हुमुपुष्पिका० }

हुमलटा० ना० स्त्री० सोनहरी ।

हुमवती० ना० स्त्री० हरे, हरे ।

हुमवता० ना० स्त्री० बच औषध ।

हुमाचल० } ना० पु० उमेश पर्वत ।  
हुमाद्रि० }

हुरना० स० कि० निरेस्ता, देसना, हुदना, रगेदना खदेदना ।

हुरम्ब० ना० पु० शीगपेशानी ।

हुरी० ना० स्त्री० रागिनीविशेष, जो अहीरगातेहै ।

हुल्ल० ना० स्त्री० नोक, भार, टोकराभरगावर ।

हुलना० अ० कि० पेरना, निरना, स० कि० धरुण्डेना, हुदना ।

हुला० ना० स्त्री० आसा, प्रवाद, रेला, मीठा रोगा, सहन ।

हुलमारना० स० कि० टकेलना, ठेला ।

हुक० ग० पु० हुय ।

हुहुराज० ना० पु० हुयहुय, सद्भवगु ।

हुो० अन्व० सम्भाषन का चिह्न ।

हुोभ्राना० अ० कि० होकर आना ।

हुोकना० अ० कि० दाफना ।

हुोट० ना० पु० आठ, लव ।

हुोटा० ना० स्त्री० लघाम, दहाना ।

हुोये० अन्व० द्वारा, से ।

हुोचुवना ग० कि० सम्पूर्ण होना, गिपटना ।

होजाना० ध० कि० होना, पदना ।  
होड० ना० पु० होड ।  
होड़० ना० स्त्री० प्रण, वचन, दास, शक्ति ।  
होड़ल० ना० पु० अन्नक, अन्नकर ।  
होड़ाचक्र० ना० पु० जिसके द्वारा ज्योतिषी लोग राशि विचारते हैं ।  
होत० ना० स्त्री० वरा, शक्ति ।  
होतव० ना० पु० वदा, प्रारम्भी ।  
होतव्य० ना० पु० भवितव्य, होनहार ।  
होतव्यता० ना० स्त्री० भवितव्यता, होनहार ।  
होता० ना० पु० होमकरनहार ।  
होते० अव्य० रहते, में ।  
होतेहोते० अव्य० क्रम क्रम से  
होत्र० ना० पु० पूजन, हुतन ।  
होत्री० गु० पूजक ।  
होनहार० ना० गु० जो होसरे, सम्भन ।  
होना० अ० क्रि० रहना, पाना, जो कुछहोगा ।  
होम० ना० पु० अग्नारी, घृतादि अग्नि में होमना ।  
होमना० स० क्रि० होमका यज्ञकरना, जलाना ।  
होला० ना० पु० नानविशेष, वृत्, भूनीपत्नी ।  
होलाष्टक० ना० पु० होली का समय ।  
होलिका० ना० स्त्री० होली ।  
होलिहा० ना० पु० होली खेलनेहार ।  
होली० ना० स्त्री० पाल्या की पूष्यमासी का उत्सव ।  
होआ० ना० पु० हाऊ, होना ।  
हो० कि० हु, सर्व में, इम ।  
होस० ना० स्त्री० इच्छा, चाह ।  
होका० ना० पु० लोभ, सालाच, वापुसमेंनक्रमी ।  
होले० अव्य० धीमें धीरे ।  
होलेहोले० अव्य० धीरधीरे ।  
होवा० ना० पु० भोक्त, भुगत ।  
हद० ना० पु० निरासोद, नदानलासय, तालाव, अल, श्यापना ।

हस्व० गु० अदीर्घ, छोटा, एक मात्रकार ।  
हस्वमूल० ना० पु० ऊत, गणा, गांवा ।  
हृदिनी० ना० स्त्री० नदी ।  
ह्रीं ना० स्त्री० लज्जा, ह्या ।  
ह्रीण० } गु० लज्जित, शरमायाइया ।  
ह्रीत० }  
ह्रीं कि० हाकर ।  
ह्रीह्रीं कि० होना ।  
[ 'स्त ]  
क्षई० ना० स्त्री० अयोम जिसमें एक और रत्न मुखसे गिरता है और खाती भी खाती है ।  
क्षण० ना० पु० तीस वटाका एकक्षण होताहै, पाईदेर, तिल ।  
क्षणक० ना० पु० क्षण, राल ।  
क्षणप्रति० अव्य० बारवार ।  
क्षखचि० ना० स्त्री० बिनली, चौपा ।  
क्षथिक० गु० अस्थिर, रत्यानारी ।  
क्षणैक० अव्य० थोड़ेबाब में ।  
क्षत० ना० पु० फोडा, घात ।  
क्षतज० ना० पु० रुधिर, लोह, रत्न ।  
क्षति० ना० स्त्री० हानि, पटी ।  
क्षत्र० ना० पु० छुट, ताज, छाता, छतुरी, अनियवरा ।  
क्षत्रक० ना० पु० सुरभावा, जिसे कुशुरमुत्ता कहत है ।  
क्षत्रधारी० ना० पु० राजा, नृपति, महीपति ।  
क्षत्रधनु० ना० पु० जो क्षत्रियों में नरहो ।  
क्षत्रिय० ना० पु० इतीयवर्ष, खिरनी ।  
क्षपा० ना० स्त्री० रात ।  
क्षपाकर० } ना० पु० चद्रमा ।  
क्षपानाथ० }  
क्षम० ना० पु० योग्यता, गु० समर्थ, योग्य ।  
क्षमता० ना० स्त्री० योग्यता ।  
क्षमना० स० क्रि० क्षमाकरना, छोड़ना ।  
क्षमा० ना० स्त्री० मोल, मुक्ति, मोचा, अलसी, दास, धरता ।

क्षमापन० ना पु० क्षमा करनेका स्वभाव ।  
 क्षमायोग्य० गु० जो क्षमा के योग्य होवे ।  
 क्षमिय० क्रि० क्षमा करनेके ।  
 क्षमित० गु० क्षमा किया गया ।  
 क्षय० ना० पु० क्षयरोग, विनाश, प्रलय ।  
 क्षयमास० ना० पु० जिस चाद्रमास में सूर्यका  
 दो राशि में संचार हो ।  
 क्षयरोग० ना० पु० सूखा, शोष, क्षयी ।  
 क्षर० ना० पु० भारी, स्थूल ।  
 क्षान्त० ना० पु० सन्तोषी, धैर्यवान् ।  
 क्षान्ति० ना० स्त्री० सन्तोष, धीरज ।  
 क्षार० ना० पु० खार, रास, भरम, धूलि ।  
 क्षारपत्र० ना० पु० कपुधा, भाजीविशेष ।  
 क्षारधेनु० ना० पु० दासवृद्ध ।  
 क्षादी० ना० पु० श्रीमहादेवनी ।  
 क्षिण्यत० ना० पु० भेदसिगी ।  
 क्षिति० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती ।  
 क्षितिज्ञ० ना० पु० भौमासुर, मगल ।  
 क्षितिनाथ० } ना० पु० राजा, महीपति ।  
 क्षितिपाल० }  
 क्षितिमण्डन० ना० पु० प्रज्ञा ।  
 क्षितीश० ना० पु० राजा, गद्दीश ।  
 क्षिप्र० गु० शीघ्र, उदात्त ।  
 क्षीण० गु० इपला, पतला, ना० पु० प्रभेदरोग ।  
 क्षीर० ना० पु० दूध, क्षीर, पानी, स्तरीलेन ।  
 क्षीरगन्धा० ना० स्त्री० निदारीकन्द ।  
 क्षीरद० ना० पु० मेघ, गाध ।  
 क्षीरपत्रा० ना० स्त्री० जामन, फलेद ।  
 क्षीरवृक्ष० ना० पु० पीतवृक्ष, धूलवृक्ष ।  
 क्षीराई ना० स्त्री० सदा ।  
 क्षीरिणी० ना० स्त्री० दुग्दी, वृद्धी ।  
 क्षीरी० ना० पु० बरातचन, तिरनी, सींग, धर ।  
 क्षीरोद० ना० पु० समुद्रविशेष ।  
 क्षुब्धिपास० ना० स्त्री० धर, धारा ।  
 क्षुद्र० गु० छोटा, नीच, कमीना, ना० पु०  
 नर शिकारी वीर ।

क्षुद्रजम्बू० ना० पु० जामन, फलेद ।  
 क्षुद्रतन्दुला० ना० स्त्री० निङ्गु ।  
 क्षुद्रता० ना० स्त्री० नीचता, नीचपन ।  
 क्षुद्रपनस० ना० पु० बड़ह ।  
 क्षुद्रकला० ना० स्त्री० इन्द्रवादणी, जामन ।  
 क्षुद्रवर्षा० ना० स्त्री० तालपुनर्नवा, धोई  
 बरसात ।  
 क्षुद्रा० } ना० स्त्री० छोपी कटाई ।  
 क्षुद्रो० }  
 क्षुधा० ना० स्त्री० भूत ।  
 क्षुधाई० } गु० भूता, बहुत भूता ।  
 क्षुधावन्त० }  
 क्षुधित० गु० भूता ।  
 क्षुर० ना० पु० छुरा, उतरा, मूज ।  
 क्षुरक० ना० पु० गोखरु, तिलकवृक्ष ।  
 क्षुल्लक० ना० पु० कौड़ी ।  
 क्षेत्र० ना० पु० भूमिपुण्य, खेत, तीर्थ शीर ।  
 क्षेत्रज० ना० पु० जो क्षेत्रमें उत्पन्न हो ।  
 क्षेत्रज्ञ० ना० पु० आत्मा, जीव, पु० किसान  
 मापक ।  
 क्षेत्रफल० ना० पु० खेतका फल, अर्थात् वि-  
 गद्दी ।  
 क्षेत्रज्ञोव० ना० पु० किसान, खेतीवाला ।  
 क्षेत्रम० ना० स्त्री० बुराल ।  
 क्षेत्रमकरी० ना० स्त्री० पक्षीविशेष ।  
 क्षेत्रकुशल० ना० स्त्री० आरोग्य, भलाई, कल्याण,  
 बुरालता, खेरथानियत ।  
 क्षेत्राणिज० ना० पु० विनिम, महलादि ।  
 क्षेत्राधिप० ना० पु० राजा, महीपति ।  
 क्षेत्राधिदेव० ना० पु० मात्रध ।  
 क्षेत्री० ना० स्त्री० क्षिति, पृथ्वी, धरती ।  
 क्षेत्रम० ना० पु० खेत, धोष, सभा, अर्थ  
 म ।  
 क्षेत्रम० ना० पु० मनु, राद ।  
 क्षेत्र० ना० पु० छुरकन, धोई वा धर ।  
 क्षेत्रक० ना० पु० छुरा वा नई



दमा० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती, भूमि ।  
 दमापति० ना० पु० राजा, भूपाल ।  
 [ क्ष ]  
 क्षा० अय० शब्दात्तर्मे वर्त्ता वा वारक वा चिह्न,  
 यथा, धर्मक्ष, कृतक्ष ।  
 क्षात्ता० शु० जाननेहारा, शास्त्रयक्ता ।  
 क्षाति० ना० स्त्री० पिता, असपिण्ड, वर्षजाति ।  
 क्षान० ना० पु० समभ, बुद्धि, व्यक्त और धर्मकी  
 वृद्धि गिसकरने आत्मा आरागमन से रहित

होता है ।  
 क्षानत० ना० पु० समभ, टीम्बुद्धि ।  
 क्षानवान्० } शु० बुद्धिमान्, पण्डित, समभ,  
 क्षानी० } दार ।  
 क्षापक० गु० जाननेहारा ।  
 क्षापन० ना० पु० जताया ।  
 क्षेय० गु० जो जानने के योग्य ।  
 क्षेया० ना० स्त्री० मदा ।

दो० । श्रीपरमामा जगतगुरु कृपात्तानिविभु एष । जासुदयापूरणभयो मङ्गलकोप विवेक १ ॥  
 विविधदेशभाषामिलित भाषाप्रथमिमाहि । यथासरकृतकारसी आदिकपदअवगाहि २ ॥  
 अर्थलिखेनिजमुद्रिसम निपुलप्रथमतधारि । बोधकारणीमूढता तजिमुधपदैविचारि ३ ॥  
 शब्द समूह सप्रवृत्त नोका कोपप्रमा । पारजाहिचदिनालजुनि विनसदेहसजा ४ ॥  
 वर्षाऋतु गुरु रवेती भाद्रअसिततिथिचारि । अहचषनमहिंसहितशुभसवतविक्रमधारि ५ ॥  
 कोप भयो पूरण तर्षे पतेपुर शुचि ठाम । बोधकार सानदलित कापसमङ्गलनाम ६ ॥  
 जोगुणगाहक सुजनजन विद्याशील प्रवीन । ते जलि कौष सराहिहैं हंसिहैं बुद्धिमलीन ७ ॥

इति ॥